मत्ती

यीशु की वंशावली

1 इब्राहीम के वंशज दाऊद के पुत्र यीशु मसीह की वंशावली इस प्रकार है:

2 इब्राहीम का पुत्र था इसहाक
और इसहाक का पुत्र हुआ याकूब।
फिर याकूब के यहूदा
और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 यहूदा के बेटे थे फिरिस और जोरह।
(उनकी माँ का नाम तामार था।)
फिरिस, हिस्रोन का पिता था।
हिस्रोन राम का पिता था।
4 राम अम्मीनादाब का पिता था।
आम्मीनादाब से नहशोन
और नहशोन से सलमोन का जन्म हुआ।
5 सलमोन से बोअज का जन्म हुआ।
(बोअज की माँ का नाम राहब था।)
बोअज और रूथ से ओबेद पैदा हुआ,
ओबेद यिशै का पिता था।
6 और यिशै से राजा दाऊद पैदा हुआ।
(सुलैमान दाऊद का पुत्र था)
जो उस स्त्री से जन्मा जो पहले
उरिय्याह की पत्नी थी।
7 सुलैमान रहबाम का पिता था
और रहबाम अबिय्याह का पिता था।
अबिय्याह से आसा का जन्म हुआ।
8 और आसा यहोशाफात का पिता बना।
फिर यहोशाफात से योराम
और योराम से उज्जिय्याह का जन्म हुआ।
9 उज्जिय्याह योताम का पिता था
और योताम, आहाज का।
फिर आहाज से हिजकिय्याह।
10 और हिजकिय्याह से मनश्शिह का जन्म हुआ।
मनश्शिह आमोन का पिता बना
और आमोन योशिय्याह का।
11 फिर इस्राएल के लोगों को बंदी बना कर
बेबिलोन ले जाते समय योशिय्याह से
यकुन्याह और उसके भाईयों ने जन्म लिया।
12 बेबिलोन में ले जाये जाने के बाद यकुन्याह
शालतिएल का पिता बना।
और फिर शालतिएल से जरुब्बाबिल।
13 तथा जरुब्बाबिल से अबीहूद पैदा हुए।
अबीहूद इल्याकीम का
और इल्याकीम अजोर का पिता बना।
14 अजोर सदोक का पिता था।
सदोक से अखीम
और अखीम से इलीहूद पैदा हुए।
15 इलीहूद इलियाजार का पिता था
और इलियाजार मत्तान का।
मत्तान याकूब का पिता बना।
16 और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ।
जो मरियम का पति था।
मरियम से यीशु का जन्म हुआ
जो मसीह कहलाया।

17 इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ
हुई। और दाऊद से लेकर बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये
जाने तक की चौदह पीढ़ियाँ, तथा बंदी बना कर बाबुल
पहुँचाये जाने से मसीह के जन्म तक चौदह पीढ़ियाँ और हुई।

यीशु मसीह का जन्म

18 यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी
माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह होने
से पहले ही पता चला कि वह पवित्र आत्मा की शक्ति से

गर्भवती है। [19]किन्तु उसका भावी पति यूसुफ एक अच्छा
व्यक्ति था। और इसे प्रकट करके लोगों में उसे बदनाम
करना नही चाहता था। इसलिये उसने निश्चय किया कि
चुपके से वह सगाई तोड़ दे।

[20]किन्तु जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में
उसके सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा,
"ओ! दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से
मत डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र
आत्मा की ओर से है। [21]वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू
उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को
उनके पापों से उद्धार करेगा।"

[22]यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता
द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: [23]"सुनो, एक कुँवारी
कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम
इम्मानुएल रखा जायेगा।" (जिसका अर्थ है 'परमेश्वर
हमारे साथ है।')* [24]जब यूसुफ नींद से जागा तो उसने वही
किया जिसे करने की प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह
मरियम को ब्याह कर अपने घर ले आया। [25]किन्तु जब
तक उसने पुत्र को जन्म नही दे दिया, वह उसके साथ नही
सोया। यूसुफ ने बेटे का नाम यीशु रखा।

पूर्व से विद्वानों का आना

2 हेरोदेस जब राज्य कर रहा था, उन्हीं दिनों यहूदिया
के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ। कुछ ही समय
बाद कुछ विद्वान जो सितारों का अध्ययन करते थे, पूर्व से
यरूशलेम आये। [2]उन्होंने पूछा, "यहूदियों का नवजात राजा
कहाँ है? हमने उसके सितारे को, आकाश में देखा है।
इसलिए हम पूछ रहे हैं। हम उसकी आराधना करने आये हैं।"

[3]जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह बहुत बेचैन हुआ
और उसके साथ यरूशलेम के दूसरे सभी लोग भी चिंता
करने लगे। [4]सो उसने यहूदी समाज के सभी प्रमुख याजकों
और धर्मशास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि
मसीह का जन्म कहाँ होना है। [5]उन्होंने उसे बताया, "यहूदिया
के बैतलहम में। क्योंकि भविष्यवक्ता द्वारा लिखा गया है
कि:

[6] 'ओ, यहूदा की धरती पर स्थित बैतलहम,
तू यहूदा के अधिकारियों में
किसी प्रकार भी सबसे छोटा नहीं
क्योंकि तुझ में से एक शासक प्रकट होगा
जो मेरे लोगों इस्राएल की, करेगा देखभाल।"

मीका 5:2

[7]तब हेरोदेस ने सितारों का अध्ययन करने वाले उन
विद्वानों को बुलाया और पूछा कि वह सितारा किस समय
प्रकट हुआ था। [8]फिर उसने उन्हें बैतलहम भेजा और
कहा "जाओ उस शिशु के बारे में अच्छी तरह से पता
लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाये तो मुझे बताओ ताकि
मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।"

[9]फिर वे राजा की बात सुनकर चल दिये। वह सितारा
भी जिसे आकाश में उन्होंने देखा था उनके आगे आगे जा
रहा था। फिर जब वह स्थान आया जहाँ वह बालक था,
तो सितारा उसके ऊपर रुक गया। [10]जब उन्होंने यह देखा
तो वे बहुत आनन्दित हुए। [11]वे घर के भीतर गये और
उन्होंने उसकी माता मरियम के साथ बालक के दर्शन
किये। उन्होंने साष्टांग प्रणाम करके उसकी उपासना की।
फिर उन्होंने बहुमूल्य वस्तुओं की अपनी पिटारी खोली
और सोना, लोबान और गन्धरस के उपहार उसे अर्पित
किये। [12]किन्तु परमेश्वर ने एक स्वप्न में उन्हें सावधान
कर दिया, कि वे वापस हेरोदेस के पास न जायें। सो वे एक
दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गये।

यीशु को लेकर माता-पिता का मिस्र जाना

[13]जब वे चले गये तो यूसुफ को सपने में प्रभु के एक
दूत ने प्रकट हो कर कहा, "उठ, बालक और उसकी माँ
को लेकर चुपके से मिस्र चला जा और मैं जब तक तुझ से
न कहूँ, वहीं ठहरना। क्योंकि हेरोदेस इस बालक को
मरवा डालने के लिए ढूँढ़ेगा।"

[14]सो यूसुफ खड़ा हुआ तथा बालक और उसकी माता
को लेकर रात में ही मिस्र के लिए चल पड़ा। [15]फिर
हेरोदेस के मरने तक वह वहीं ठहरा रहा। यह इसलिये
हुआ कि प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कहा था, पूरा हो
सके: "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर आने को कहा"*

बैतलहम के सभी बालकों का हेरोदेस के द्वारा मरवाया जाना

[16]हेरोदेस ने जब यह देखा कि सितारों का अध्ययन
करने वाले विद्वानों ने उसके साथ चाल चली है, तो वह

सुनो ... जायेगा यशा. 7:14

मैंने ... कहा देखें होशे 11:1

आग बबूला हो उठा। उसने आज्ञा दी कि बैतलहम और
उसके आसपास में दो वर्ष के या उससे छोटे सभी बालकों
की हत्या कर दी जाये। (सितारों का अध्ययन करने वाले
विद्वानों के बताये समय को आधार बना कर) **17**तब
भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा कहा गया यह वचन पूरा हुआ:

18 "रामाह में दु:ख भरा एक शब्द सुना गया,
शब्द रोने का, गहरे विलाप का था।
राहेल अपने शिशुओं के लिए रोती थी
चाहती नहीं थी कोई उसे धीरज बँधाए,
क्योंकि उसके तो सभी बालक मर चुके थे।"

यिर्मयाह 31:15

यीशु को लेकर यूसुफ और मरियम का मिस्र लौटना

19फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र में यूसुफ के
सपने में प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ **20**और उससे
बोला, "उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल
की धरती पर चला जा क्योंकि वे जो बालक को मार
डालना चाहते थे, मर चुके हैं।"

21तब यूसुफ खड़ा हुआ और बालक तथा उसकी माता
को लेकर इस्राएल जा पहुँचा। **22**किन्तु जब यूसुफ ने यह
सुना कि यहूदिया पर अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर
अरखिलाउस राज्य कर रहा है तो वह वहाँ जाने से डर
गया किन्तु सपने में परमेश्वर से आदेश पाकर वह गलील
प्रदेश के लिए **23**चल पड़ा और वहाँ नासरत नाम के नगर
में घर बना कर रहने लगा ताकि भविष्यवक्ताओं द्वारा
कहा गया वचन पूरा हो कि: 'वह नासरी* कहलायेगा।'

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का कार्य

3 उन्ही दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश
देता हुआ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया।
2वह प्रचार करने लगा, "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का
राज्य आने को है।" **3**यह यूहन्ना वही है जिसके बारे में
भविष्यवक्ता यशायाह ने चर्चा करते हुए कहा था:

"जंगल में एक पुकारीवाले की आवाज है:
'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो
और उसके लिए राहें सीधी करो।'"

यशायाह 40:3

4यूहन्ना के वस्त्र ऊँट की ऊन के बने थे और वह
कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे था। टिड्डियाँ और जँगली
शहद उसका भोजन था। **5**उस समय यरुशलेम, समूचे
यहूदिया क्षेत्र और यर्दन नदी के आसपास के लोग उसके
पास आ इकट्ठे हुए। **6**उन्होंने अपने पापों को स्वीकार
किया और यर्दन नदी में उन्हें उसके द्वारा बपतिस्मा दिया
गया।

7जब उसने देखा कि बहुत से फरीसी* और सदूकी*
उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे हैं तो वह उनसे बोला,
"ओ, साँप के बच्चो! तुम्हें किसने चेता दिया है कि तुम
प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो? **8**तुम्हें प्रमाण देना
होगा कि तुममें वास्तव में मन फिराव हुआ है। **9**और मत
सोचो कि अपने आप से यह कहना ही काफी होगा कि
'हम इब्राहीम की संतान हैं।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर
इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता
है। **10**पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। और
हर वह पेड़ जो उत्तम फल नही देता काट गिराया जायेगा
और फिर उसे आग में झोंक दिया जायेगा।

11"मैं तो तुम्हें तुम्हारे मन फिराव के लिये जल से
बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है,
मुझसे महान है। मैं तो उसके जूतों के तस्मे खोलने योग्य
भी नही हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा
देगा। **12**उसके हाथों में उसका छाज है जिससे वह अनाज
को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान से वह साफ
किये समस्त अनाज को उठा, इकट्ठा कर, कोठियों में
भरेगा और भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी
बुझाए नही बुझेगी।"

यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना

13उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे
यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। **14**किन्तु यूहन्ना
ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, "मुझे तो

नासरी एक व्यक्ति जो नासरत का रहने वाला हो। नासरत का अर्थ संभवत: शाखा या मूल है। देखें यशा.11:1 और 53:2

फरीसी एक यहूदी धार्मिक समूह, जो 'पुराना धर्म नियम' और दूसरे यहूदी नियमों तथा रीति-रिवाजों का कट्टरता से पालन करने का दावा करता है।

सदूकी एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो 'पुराना धर्म नियम' की केवल पहली पाँच पुस्तकों को ही स्वीकार करता है और किसी के मर जाने के बाद उसका पुनरुत्थान नहीं मानता।

स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?"

15उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा ही होने दिया।

16और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर के आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा। 17तभी यह आकाशवाणी हुई:

"यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

यीशु की परीक्षा

4 फिर आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसे परखा जा सके। 2चालीस दिन और चालीस रात भूखा रहने के बाद जब उसे भूख बहुत सताने लगी 3तो उसे लुभाने वाला उसके पास आया और बोला "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह कि ये रोटियाँ बन जायें।"

4यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है:

'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता
बल्कि वह प्रत्येक उस शब्द से जीता है
जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'"

व्यवस्थाविवरण 8:3

5फिर शैतान उसे यरुशलेम के पवित्र नगर में ले गया। वहाँ मंदिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा करके 6उसने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो नीचे कूद पड़ क्योंकि शास्त्र में लिखा है:

'वह तेरी देखभाल के लिये अपने दूतों को
आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे
ताकि तेरे पैरों में कोई पत्थर तक न लगे।'"

भजन संहिता 91:11−12

7यीशु ने उत्तर दिया, "किन्तु शास्त्र यह भी कहता है,
'अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में मत डाल।'"

व्यवस्थाविवरण 6:16

8फिर शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया। और उसे संसार के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। 9शैतान ने तब उससे कहा, "ये सभी वस्तुएँ मैं तुझे दे दूँगा यदि तू मेरे आगे झुके और मेरी उपासना करे।"

10फिर यीशु ने उससे कहा, "शैतान, दूर हो। शास्त्र कहता है:

'अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर
और केवल उसी की सेवा कर।'"

व्यवस्थाविवरण 6:13

11फिर शैतान उसे छोड़ कर चला गया। और स्वर्गदूत आकर उसकी देखभाल करने लगे।

यीशु के कार्य का आरम्भ

12यीशु ने जब सुना कि यूहन्ना पकड़ा जा चुका है तो वह गलील लौट आया। 13परन्तु वह नासरत में नहीं ठहरा और जाकर कफरनहूम में, जो जबूलून और नपताली के क्षेत्र में गलील की झील के पास था, रहने लगा। 14यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा जो कहा, वह पूरा हो:

15 "जबूलून और नपताली के देश सागर के रास्ते
पर, यर्दन नदी के पश्चिम में,
ग़ैर यहूदियों के देश गलील में
16 जो लोग अँधेरे में जी रहे थे
उन्होंने एक महान ज्योति देखी
और जो मृत्यु की छाया के
देश में रहते थे उन पर,
ज्योति के प्रभात का एक प्रकाश फैला।"

यशायाह 9:1−2

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

17उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया: "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

18जब यीशु गलील की झील के पास से जा रहा था उसने दो भाइयों को देखा शमौन (जो पतरस कहलाया) और उसका भाई अंद्रियास। वे झील में अपने जाल डाल रहे थे। वे मछुआरे थे। 19यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये मछलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछलियाँ कैसे पकड़ी जाती हैं।" 20उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे हो लिये।

21फिर वह वहाँ से आगे चल पड़ा। और उसने देखा कि जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना अपने

पिता के साथ नाव में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर
रहे हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया। 22और वे तत्काल नाव और
अपने पिता को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

यीशु का लोगों को उपदेश और उन्हें चंगा करना

23यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी प्रार्थनालय में स्वर्ग
के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देता और हर प्रकार
के रोगों और संतापों को दूर करता घूमने लगा। 24समस्त
सीरिया देश में उसका समाचार फैल गया। इसलिये लोग
ऐसे सभी व्यक्तियों को जो संतापी थे, या तरह तरह की
बीमारियों और वेदनाओं से पीड़ित थे, जिन पर दुष्टात्माएँ
सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे
थे, उसके पास लाने लगे। यीशु ने उन्हें चंगा किया।
25इसलिये गलील, दस नगर, यरुशलेम, यहूदिया और यर्दन
नदी–पार के लोगों की बड़ी–बड़ी भीड़ उसका अनुसरण
करने लगीं।

यीशु का उपदेश

5 यीशु ने जब यह बड़ी भीड़ देखी तो वह एक
पहाड़ पर चला गया। वहाँ वह बैठ गया और उसके
अनुयायी उसके पास आ गये। 2तब यीशु ने उन्हें उपदेश
देते हुए कहा:

3 "धन्य हैं वे जो ह्रदय से दीन हैं,
स्वर्ग का राज्य उनके लिए है।
4 धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि
परमेश्वर उन्हें सांतवन देता है
5 धन्य हैं वे जो नम्र हैं
क्योंकि यह पृथ्वी उन्हीं की है।
6 धन्य हैं वे जो नीति के प्रति भूखे और प्यासे
रहते हैं! क्योंकि परमेश्वर
उन्हें संतोष देगा, तृप्ति देगा।
7 धन्य हैं वे जो दयालू हैं क्योंकि
उन पर दया गगन से बरसेगी।
8 धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं क्योंकि
वे परमेश्वर के दर्शन करेंगे।
9 धन्य हैं वे जो शान्ति के काम करते हैं।
क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।
10 धन्य हैं वे जो यातनाएँ भोगते नीति के हित।
स्वर्गा का राज्य उनके लिये ही है।

11"और तुम भी धन्य हो क्योंकि जब लोग तुम्हारा
अपमान करें, तुम्हें यातनाएँ दें, और मेरे लिये तुम्हारे
विरोध में तरह तरह की झूठी बातें कहें, बस इसलिये कि
तुम मेरे अनुयायी हो, 12तब तुम प्रसन्न रहना, आनन्द से
रहना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। यह
वैसा ही है जैसे तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं को लोगों
ने सताया था।

तुम नमक के समान हो: तुम प्रकाश के समान हो

13"तुम समूची मानवता के लिये नमक हो। किन्तु यदि
नमक ही बेस्वाद हो जाये तो उसे फिर नमकीन नहीं बनाया
जा सकता है। वह फिर किसी काम का नही रहेगा। केवल
इसके, कि उसे बाहर, लोगों की ठोकरों में फेंक दिया
जाये।

14"तुम जगत के लिये प्रकाश हो। एक ऐसा नगर जो
पहाड़ की चोटी पर बसा है, छिपाये नहीं छिपाया जा
सकता। 15लोग दीया जलाकर किसी बाल्टी के नीचे उसे
नहीं रखते बल्कि उसे दीवट पर रखा जाता है और वह
घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। 16"लोगों के सामने
तुम्हारा प्रकाश ऐसे चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को
देखें और स्वर्ग में स्थित तुम्हारे परम पिता की महिमा का
बखान करें।"

यीशु और यहूदी धर्म–नियम

17"यह मत सोचो कि मैं मूसा के धर्म–नियम या
भविष्यवक्ताओं के लिखे को नष्ट करने आया हूँ। मैं
उन्हें नष्ट करने नहीं बल्कि उन्हें पूर्ण करने आया हूँ।
18मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि जब तक धरती और आकाश
समाप्त नहीं हो जाते, मूसा की व्यवस्था का एक एक शब्द
और एक एक अक्षर बना रहेगा, वह तब तक बना रहेगा
जब तक वह पूरा नहीं हो लेता। 19इसलिये जो इन आदेशों
में से किसी छोटे से छोटे बिना को भी तोड़ता है और लोगों
को भी वैसा ही करना सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में
कोई महत्त्व नहीं पायेगा। किन्तु जो उन पर चलता है और
दूसरों को उन पर चलने का उपदेश देता है, वह स्वर्ग के
राज्य में महान समझा जायेगा। 20मैं तुमसे सत्य कहता हूँ
कि जब तक तुम व्यवस्था के उपदेशकों और फ़रीसियों
से धर्म के आचरण में आगे न निकल जाओ, तुम स्वर्ग के
राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे।

क्रोध

21“तुम जानते हो कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था
‘हत्या मत करो* और यदि कोई हत्या करता है तो उसे
अदालत में उसका जवाब देना होगा।’ **22**किन्तु मैं तुमसे
कहता हूँ कि जो व्यक्ति अपने भाई पर क्रोध करता है,
उसे भी अदालत में इसके लिये उत्तर देना होगा। और जो
कोई अपने भाई का अपमान करेगा उसे सर्वोच्च संघ के
सामने जवाब देना होगा। और यदि कोई अपने किसी बन्धु
से कहे ‘अरे असभ्य, मूर्ख।’ तो नरक की आग के बीच
उस पर इसकी जवाब देही होगी।

23“इसलिये यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा है
और वहाँ तुझे याद आये कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए
कोई विरोध है **24**तो तू उपासना की भेंट को वहीं छोड़ दे
और पहले जा कर अपने उस बन्धु से सुलह कर। और
फिर आकर भेंट चढ़ा।

25“तेरा शत्रु तुझे न्यायालय में ले जाता हुआ जब रास्ते
में ही हो, तू झटपट उसे अपना मित्र बना ले कहीं वह तुझे
न्यायी को न सौंप दे और फिर न्यायी सिपाही को। जो तुझे
जेल में डाल देगा। **26**मैं तुझे सत्य बताता हूँ तू जेल से तब
तक नहीं छूट पायेगा जब तक तू पाई–पाई न चुका दे।

व्यभिचार

27“तुम जानते हो कि यह कहा गया है, ‘व्यभिचार मत
करो।’* **28**किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई किसी
स्त्री को वासना की आँख से देखता है तो वह अपने मन में
पहले ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका है। **29**इसलिये
यदि तेरी दाहिनी आँख तुझ से पाप करवाये तो उसे निकाल
कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे
शरीर का कोई एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि
तेरा सारा शरीर ही नरक में डाल दिया जाये। **30**और यदि
तेरा दाहिना हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट कर
फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का
एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सम्पूर्ण शरीर
ही नरक में चला जाये।

तलाक

31“कहा गया है,‘जब कोई अपनी पत्नी को तलाक
देता है तो अपनी पत्नी को उसे लिखित रूप में तलाक देना
चाहिये।’* **32**किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह व्यक्ति
जो अपनी पत्नी को तलाक देता है, यदि उसने यह तलाक
उसके व्यभिचारी आचरण के कारण नहीं दिया है तो जब
वह दूसरा विवाह करती है, तो मानो वह व्यक्ति ही उससे
व्यभिचार करवाता है। और जो कोई उस छोड़ी हुई स्त्री से
विवाह रचाता है तो वह भी व्यभिचार करता है।

शपथ

33“तुमने यह भी सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा
गया था, ‘तू शपथ मत तोड़ बल्कि प्रभु से की गयी
प्रतिज्ञाओं को पूरा कर।’* **34**किन्तु मैं तुझसे कहता हूँ कि
शपथ ले ही मत। स्वर्ग की शपथ मत ले क्योंकि वह
परमेश्वर का सिंहासन है। **35**धरती की शपथ मत ले
क्योंकि यह उसकी पाँव की चौकी है। यरुशलेम की शपथ
मत ले क्योंकि यह महा सम्राट का नगर है। **36**अपने सिर
की शपथ भी मत ले क्योंकि तू किसी एक बाल तक को
सफेद या काला नहीं कर सकता है। **37**यदि तू ‘हाँ’
चाहता है तो केवल ‘हाँ’ कह और ‘ना’ चाहता है तो केवल
‘ना’। क्योंकि इससे अधिक जो कुछ है वह उससे है जो बद
है।

बदले की भावना मत रख

38“तुमने सुना है: कहा गया है, ‘आँख के बदले आँख
और दाँत के बदले दाँत’* **39**किन्तु मैं तुझ से कहता हूँ कि
किसी बुरे व्यक्ति का भी विरोध मत कर। बल्कि यदि
कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी
उसकी तरफ़ कर दे। **40**यदि कोई तुझ पर मुकदमा चला
कर तेरा कुर्ता भी उतरवाना चाहे तो तू उसे अपना चोगा
तक दे दे। **41**यदि कोई तुझे एक मील चलाए तो तू उसके
साथ दो मील चला जा। **42**यदि कोई तुझसे कुछ माँगे तो
उसे वह दे दे। जो तुझसे उधार लेना चाहे, उसे मना मत
कर।

हत्या मत करो देखे निर्गमन 20:13 और व्यवस्था. 5:17
व्यभिचार मत करो देखें निर्गमन 20:14 और व्यवस्था. 5:18
जब कोई ... देना चाहिए देखें व्यवस्था. 24:1
तू शपथ ... पूरा कर देखें लैव्य. 19:12; गिनती 30:2; व्यवस्था. 23:21
आँख के ... दाँत देखें निर्गमन 21:24; लैव्य. 24:20

सबसे प्रेम रखो

43"तुमने सुना है: कहा गया है 'तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर* और शत्रु से घृणा कर।' 44किन्तु मैं कहता हूँ अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। 45ताकि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको। क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश चमकाता है। पापियों और धर्मीयों, सब पर वर्षा कराता है। 46यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा। क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नही करते? 47यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी भी नहीं करते? 48इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे तुम्हारा स्वर्ग–पिता–परिपूर्ण है।

दान की शिक्षा

6 "सावधान रहो! और परमेश्वर चाहता है उन कामों का लोगों के सामने दिखावा मत करो। नहीं तो तुम अपने परम–पिता से, जो स्वर्ग में है, उसका प्रतिफल नहीं पाओगे।

2"इसलिये जब तुम किसी दीन–दुखी को दान देते हो तो उसका ढोल मत पीटो, जैसा कि धर्म–सभाओं और गलियों में कपटी लोग औरों से प्रशंसा पाने के लिए करते हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो इसका पूरा फल पहले ही दिया जा चुका है। 3किन्तु जब तू किसी दीन दुखी को देता है तो तेरा बायाँ हाथ न जान पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। 4ताकि तेरा दान छिपा रहे। तेरा वह परम पिता जो तू छिपाकर करता है उसे भी देखता है, वह तुझे उसका प्रतिफल देगा।

प्रार्थना का महत्त्व

5"जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों की तरह मत करो। क्योंकि वे यहूदी प्रार्थना–सभाओं और गली के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो उसका फल पहले ही मिल चुका है। 6किन्तु जब तू प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द करके गुप्त रूप से अपने परम–पिता से प्रार्थना कर। फिर तेरा परम–पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।

7"जब तुम प्रार्थना करते होवो तो विधर्मियों की तरह यूँ ही निरार्थक बातों को बार–बार मत दुहराते रहो। वे तो यह सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुन ली जायेगी। 8इसलिये उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा परम पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी आवश्यकता क्या है। 9इसलिए इस प्रकार प्रार्थना करो:

'स्वर्ग धाम में हमारे पिता, पवित्र रहे तव नाम।
10 जग में तेरा राज्य आवे ।
जो चाहे तू पूरा हो सब वैसे ही धरती पर,
जैसे वह सदा स्वर्ग में पूरा होता रहता है।
11 दिन प्रतिदिन का आहार तू आज हमें दे,
12 अपराधों को क्षमा दान कर
जैसे हमने अपने अपराधी क्षमा किये।
13 भारी कठिन परीक्षा मत ले
हमें उससे बचा जो बुरा है।'
[क्योंकि राज्य और महिमा
सदा तेरी है। आमीन।]*

14इसलिये यदि तुम लोगों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग–पिता भी तुम्हे क्षमा करेगा। 15किन्तु यदि तुम लोगों को क्षमा नही करोगे तो तुम्हारा परम पिता भी तुम्हारे पापों के लिए क्षमा नही देगा।

उपवास की व्याख्या

16"जब तुम उपवास करो तो मुँह लटकाये कपटियों जैसे मत दिखो। क्योंकि वे तरह तरह से मुँह बनाते हैं ताकि वे लोगों को जतायें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ उन्हें तो पहले ही उनका प्रतिफल मिल चुका है। 17किन्तु जब तू उपवास रखे तो अपने सिर पर सुगंध मल और अपना मुँह धो 18ताकि लोग यह न जानें कि तू उपवास कर रहा है। बल्कि तेरा परम पिता जिसे तू देख नहीं सकता, देखे कि तू उपवास कर रहा है। तब तेरा परम पिता जो तेरे छिपकर किए गए सब कर्मों को देखता है, तुझे उनका प्रतिफल देगा।

'तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर' लैव्य. 19:18

क्योंकि राज्य ... आमीन कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

परमेश्वर धन से बड़ा है

19“अपने लिये धरती पर भंडार मत भरो। क्योंकि उसे
कीड़े और जंग नष्ट कर देंगे। चोर सेंध लगाकर उसे चुरा
सकते हैं। 20बल्कि अपने लिये स्वर्ग में भण्डार भरो जहाँ
उसे कीड़े या जंग नष्ट नहीं कर पाते। और चोर भी वहाँ
सेंध लगा कर उसे चुरा नहीं पाते। 21याद रखो जहाँ तुम्हारा
भंडार होगा वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

22“शरीर के लिये प्रकाश का स्रोत आँख हैं। इसलिये
यदि तेरी आँख ठीक है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशवान
रहेगा। 23किन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो जाए तो तेरा सारा
शरीर अंधेरे से भर जायेगा। इसलिये वह एकमात्र प्रकाश
जो तेरे भीतर है यदि अंधकारमय हो जाये तो वह अंधेरा
कितना गहरा होगा।

24“कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो
सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम।
या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का तिरस्कार
करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की एक साथ सेवा
नहीं कर सकते।

चिंता छोड़ो

25“मैं तुमसे कहता हूँ अपने जीने के लिये खाने–पीने
की चिंता छोड़ दो। अपने शरीर के लिये वस्त्रों की चिंता
छोड़ दो। निश्चय ही जीवन भोजन से और शरीर कपड़ों से
अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। 26देखो! आकाश के पक्षी न तो
बुआई करते हैं और न कटाई, न ही वे कोठारों में अनाज
भरते हैं किन्तु तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनका भी पेट भरता
है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो? 27तुम
में से क्या कोई ऐसा है जो चिंता करके अपने जीवन काल
में एक घड़ी भी और बढ़ा सकता है?

28“और तुम अपने वस्त्रों की क्यों सोचते हो? सोचो
जंगल के फूलों की वे कैसे खिलते हैं। वे न कोई काम
करते हैं और न अपने लिए कपड़े बनाते हैं। 29मैं तुमसे
कहता हूँ कि सुलेमान भी अपने सारे वैभव के साथ उनमें
से किसी एक के समान भी नहीं सज सका। 30इसलिये
जब जँगली पौधो को जो आज जीवित हैं पर जिन्हें कल ही
भाड़ में झोंक दिया जाना है, परमेश्वर ऐसे वस्त्र पहनाता
है तो अरे ओ कम विश्वास रखने वालो, क्या वह तुम्हें
और अधिक वस्त्र नहीं पहनायेगा? 31इसलिये चिंता
करते हुए यह मत कहो कि ‘हम क्या खायेंगे या हम क्या
पीयेंगे या क्या पहनेंगे?’ 32विधर्मी लोग इन सब वस्तुओं
के पीछे दौड़ते रहते हैं किन्तु स्वर्ग धाम में रहने वाला
तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की
आवश्यकता है। 33इसलिये सबसे पहले परमेश्वर के राज्य
और तुमसे जो धर्म भावना वह चाहता है, उसकी चिंता
करो। ये सब वस्तुएँ तो तुम्हें आप ही रूँगे में दे ही दी
जायेंगी। 34कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की तो
अपनी और चिंताएँ होंगी। हर दिन की अपनी ही
परेशानियाँ होती हैं।

यीशु का वचन: दूसरों को दोषी ठहराने के प्रति

7 “दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि
तुम पर भी दोष न लगाया जाये। 2क्योंकि तुम्हारा
न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने
दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर तुम्हें
उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा है। 3तू
अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों देखता है?
जबकि तुझे अपनी आँख का लट्ठा भी दिखाई नहीं देता।
4जब तेरी अपनी आँख में लट्ठा समाया है तो तू अपने
भाई से कैसे कह सकता है कि तू मुझे तेरी आँख का
तिनका निकालने दे। 5ओ कपटी! पहले तू अपनी आँख
से लट्ठा निकाल, फिर तू ठीक तरह से देख पायेगा और
अपने भाई की आँख का तिनका निकाल पायेगा।

6“कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। और सुअरों के आगे
अपने मोती मत बिखेरो। नहीं तो वे सुअर उन्हें पैरों तले
रौंद डालेंगें। और कुत्ते पलट कर तुम्हारी भी धज्जियाँ
उड़ा देंगे।

जो कुछ चाहते हो, उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो

7“परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा।
खोजते रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो तुम्हारे लिए
द्वार खोल दिया जायेगा। 8क्योंकि हर कोई जो माँगता ही
रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और जो
खटखटाता ही रहता है उस के लिए द्वार खोल दिया जाएगा।

9“तुममें से ऐसा पिता कौन सा है जिसका पुत्र उससे
रोटी माँगे और वह उसे पत्थर दे? 10या जब वह उससे

मछली माँगे तो वह उसे साँप दे दे। बताओ क्या कोई देगा?
ऐसा कोई नहीं करेगा! 11इसलिये यदि चाहे तुम बुरे ही
क्यों न हो, जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार
कैसे दिये जाते हैं। सो निश्चय ही स्वर्ग में स्थित तुम्हारा
परम पिता माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देगा।

व्यवस्था की सबसे बड़ी शिक्षा

12“इसलिये जैसा व्यवहार अपने लिये तुम दूसरे लोगों
से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ करो।’
व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ताओं के लिखे का यही
सार है।

स्वर्ग और नरक का मार्ग

13“सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये बता
रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश की
ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल रहे हैं।
14किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी सीमित है
वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत थोड़े से हैं वे
लोग जो उसे पा रहे हैं।

कर्म ही बताते हैं कि कोई कैसा है

15“झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो! वे तुम्हारे पास सरल
भेड़ों के रूप में आते हैं किन्तु भीतर से वे खूँखार भेड़िये
होते हैं। 16तुम उन्हें उन के कर्मों के परिणामों से पहचानोगे।
कोई कँटीली झाड़ी से न तो अंगूर इकट्ठे कर पाता है
और न ही गोखरु से अंजीर। 17ऐसे ही अच्छे पेड़ पर अच्छे
फल लगते हैं किन्तु बुरे पेड़ पर तो बुरे फल ही लगते हैं।
18एक उत्तम वृक्ष बुरे फल नहीं उपजाता और न ही कोई
बुरा पेड़ उत्तम फल पैदा कर सकता है। 19हर वह पेड़
जिस पर अच्छे फल नहीं लगते हैं, काट कर आग में
झोंक दिया जाता है। 20इसलिए मैं तुम लोगों से फिर दोहरा
कर कहता हूँ कि उन लोगों को तुम उनके कर्मों के
परिणामों से पहचानोगे।

21“प्रभु–प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य
में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परम
पिता की इच्छा पर चलता है वही उसमें प्रवेश पायेगा।
22उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे ‘प्रभु! हे प्रभु! क्या
हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? क्या तेरे नाम से
हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या हमने तेरे नाम से
बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये?’ 23तब मैं उनसे खुल
कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता, ‘अरे कुकर्मियों,
यहाँ से भाग जाओ।’

एक बुद्धिमान और एक मूर्ख

24“इसलिये जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है
और इन पर चलता है उसकी तुलना उस बुद्धिमान मनुष्य
से होगी जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया, 25वर्षा
हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और ये सब उस मकान से
टकराये पर वह गिरा नहीं। क्योंकि उसकी नींव चट्टान
पर रखी गयी थी। 26किन्तु वह जो मेरे शब्दों को सुनता है
पर उन पर आचरण नहीं करता, उस मूर्ख मनुष्य के
समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया। 27वर्षा हुई,
बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस मकान से टकराईं,
जिससे वह मकान पूरी तरह ढह गया।”

28परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह कर
पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर भीड़ के लोगों को बड़ा
अचरज हुआ। 29क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं के
समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा दे रहा
था।

यीशु का कोढ़ी को ठीक करना

8 यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा
जन समूह उसके पीछे हो लिया। 2वहीं एक कोढ़ी
भी था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक
कर बोला, “प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता
है।”

3इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को छुआ
और कहा, “निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो जा!” और
तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा। 4फिर यीशु ने उससे
कहा, “देख इस बारे में किसी से कुछ मत कहना। पर
याजक के पास जा कर उसे अपने आप को दिखा। फिर
मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे
ठीक होने की साक्षी मिले।”

5फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेना
नायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये
विनती करता हुआ बोला, 6“प्रभु, मेरा एक दास घर में
बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार गया है। उसे बहुत पीड़ा हो
रही है।”

7तब यीशु ने सेना नायक से कहा, "मैं आकर उसे
अच्छा करूँगा।"

8सेना नायक ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैं इस योग्य नहीं हूँ
कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे, बस
मेरा दास ठीक हो जायेगा। 9यह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी
एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के नीचे काम
करता हूँ। और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही हैं। जब मैं एक
सिपाही से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है और दूसरे से
कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है। मैं अपने दास से कहता
हूँ कि 'यह कर' तो वह उसे करता है।"

10जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो
लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी में
नही पाया। 11मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से पूर्व
और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम, इसहाक
और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में अपना-अपना
स्थान ग्रहण करेंगे। 12किन्तु राज्य की मूलभूत प्रजा बाहर
अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे लोग चीख-पुकार
करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।"

13तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, "जा वैसा ही
तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।" और तत्काल उस
सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

यीशु का बहुतों को ठीक करना

14यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की
सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। 15सो यीशु
ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार उतर गया।
फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने लगी।

16जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे लोगों
को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक ही आज्ञा
से उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। इस तरह उसने
सभी रोगियों को चंगा कर दिया। 17यह इसलिये हुआ ताकि
परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा जो कुछ कहा
था, पूरा हो:

> "उसने हमारे रोगों को ले लिया
> और हमारे संतापों को ओढ़ लिया।"
>
> *यशायाह 53:4*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

18यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने
अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले
किनारे चले जायें। 19तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके
पास आया और बोला, "गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं तेरे
पीछे चलूँगा।"

20इस पर यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों की खोह
और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य
के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान नहीं है।"

21और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "प्रभु, पहले
मुझे जा कर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।"

22किन्तु यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ और
मरे हुवों को अपने मुर्दे आप गाड़ने दे।"

यीशु का तूफान को शांत करना

23तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी भी
उसके साथ थे। 24उसी समय झील में इतना भयंकर तूफान
उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु यीशु सो
रहा था। 25तब उसके अनुयायी उसके पास पहुँचे और
उसे जगाकर बोले, "प्रभु! हमारी रक्षा कर। हम मरने को
हैं!"

26तब यीशु ने उनसे कहा, "अरे अल्प विश्वासियों!
तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" तब उसने खड़े होकर तूफान
और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा गयी।

27लोग चकित थे। उन्होंने कहा, "यह कैसा व्यक्ति है?
आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते हैं!"

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

28जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश पहुँचा,
तो उसे कब्रों से निकल कर आते दो व्यक्ति मिले, जिन में
दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि उस राह से कोई
निकल तक नहीं सकता था। 29वे चिल्लाये, "हे परमेश्वर
के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू यहाँ निश्चित
समय से पहले ही हमें दंड देने आया है?"

30वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़
चर रहा था। 31सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती करते
हुए कहा, "यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है, तो हमें
सुअरों के उस झुंड में भेज दे।"

32सो यीशु ने उनसे कहा, "चले जाओ।" तब वे उन
व्यक्तियों में से बाहर निकल आए और सुअरों में जा
घुसे। फिर वह समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते
दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब
कर मर गये। 33सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से
दौड़ते हुए नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट
आत्माओं से ग्रस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ
था, कह सुनाया। 34फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से
मिलने बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो
उससे विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला
जाये।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

9 फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के
पार अपने नगर आ गया। 2लोग लकवे के एक
रोगी को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने
जब उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से
कहा, "हिम्मत रख हे! बालक, तेरे पाप क्षमा हुए।"

3तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे,"यह
व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का
अपमान करता है।"

4यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं,
उनसे बोला, "तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने देते
हो? 5अधिक सहज क्या है? यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा
हुए' या यह कहना 'खड़ा हो और चल पड़?' 6ताकि तुम
यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की
शक्ति मनुष्य के पुत्र में है।" यीशु ने लकवे के मारे से
कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा।"
7वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर अपने घर चला गया।
8जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो वे श्रद्धामय विस्मय से
भर उठे। और परमेश्वर की स्तुति करने लगे जिसने
मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

यीशु का मत्ती को चुनना

9यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की चौकी
पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती था। यीशु
ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" इस पर मत्ती खड़ा
हुआ और उसके पीछे हो लिया।

10ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी
वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों समेत
भोजन कर रहा था 11तो उसे फ़रीसियों ने देखा। वे यीशु
के अनुयायियों से पूछने लगे, "तुम्हारा गुरु चुंगी वसूलने
वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा है?"

12यह सुनकर यीशु उनसे बोला, "स्वस्थ लोगों को नहीं
बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता होती
है। 13इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के
इस वचन का अर्थ क्या है 'मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि
दया चाहता हूँ।'* मैं धर्मीयों को नहीं, बल्कि पापियों को
बुलाने आया हूँ।"

यीशु दूसरे यहूदी धर्म-नेताओं से भिन्न है

14फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के
पास गये और उससे पूछा, "हम और फ़रीसी बार-बार
उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते?"

15फिर यीशु ने उन्हें बताया, "क्या दूल्हे के साथी, जब
तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं? किन्तु वे
दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा। फिर उस
समय वे दुखी होंगे और उपवास करेंगे।

16"बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक
पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को और
अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़ जायेगी।
17नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा जाता नहीं तो
मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर बिखर जाता है।
और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये लोग नया दाखरस,
नयी मशकों में भरते हैं जिससे दाखरस और मशक दोनों
ही सुरक्षित रहते हैं।"

मृत लड़की को जीवन दान और रोगी स्त्री को चंगा करना

18यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था, तभी
यहूदी धर्म-सभा भवन का एक मुखिया उसके पास आया
और उसके सामने झुक कर विनती करते हुए बोला,
"अभी-अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल कर यदि उस
पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी उठेगी।"

19इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत उसके
साथ चल दिया।

मैं … चाहता हूँ देखें होशे 6:6

20वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत अधिक
रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट आयी और
उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। 21वह मन में सोच रही थी
"यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ, तो ठीक हो
जाऊँगी।"

22मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, "स्त्री, हिम्मत
रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।" और वह
स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

23उधर यीशु जब यहूदी धर्म-सभा भवन के मुखिया
के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए
बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की की मृत्यु
पर शोर कर रहे हैं। 24तब यीशु ने लोगों से कहा, "यहाँ से
बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो रही है।" इस
पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। 25फिर जब भीड़ के
लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने लड़की के
कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी।
26इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल गया।

यीशु द्वारा बहुतों का उपचार

27यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति उसके
पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे "हे दाऊद के पुत्र, हम पर
दया कर।"

28यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके
पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हें विश्वास है
कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?" उन्होंने उत्तर
दिया, "हाँ प्रभु।"

29इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा,
"तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।"

30और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें
चेतावनी देते हुए कहा, "इसके विषय में किसी को पता
नहीं चलना चाहिये।" 31किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर इस
समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

32जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के
पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा समाई
हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता था।

33जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह गूँगा,
जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने लगा। तब
भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा, "इस्राएल में
ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।"

34किन्तु फरीसी कह रहे थे, "वह दुष्टात्माओं को शैतान
की सहायता से बाहर निकालता है।"

यीशु को लोगों पर खेद

35यीशु यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देता, परमेश्वर
के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों
और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में
गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमता रहा था।

36यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा
से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए और
असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होतीं हैं जिनका कोई चरवाहा
नहीं होता। 37तब यीशु ने अपने अनुयायिओं से कहा,
"तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मज़दूर कम हैं। 38इसलिए
फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को
काटने के लिये मज़दूर भेजे।"

सुसमाचार के प्रचार के लिए शिष्यों को भेजना

10 सो यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाकर
उन्हें दुष्टात्माओं को बाहर निकालने, और हर
तरह के रोगों और संतापों को दूर करने की शक्ति प्रदान
की। 2उन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं:-सबसे पहला शमौन,
जो पतरस कहलाया, और उसका भाई अंद्रियास, जब्दी
का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना। 3फिलिप्पुस,
बरतुल्मै, थोमा, कर वसूलने वाला मत्ती, हलफै का बेटा
याकूब और तद्दै। 4शमौन ज़िलौती* और यहूदा
इस्करियोती, जिसने उसे धोखे से पकड़वाया था। 5यीशु ने
इन बारहों को बाहर भेजते हुए आज्ञा दी कि वे "ग़ैर यहूदियों
के क्षेत्र में न जायें तथा किसी भी सामरी-नगर में प्रवेश न
करें। 6बल्कि वे इस्राएल के परिवार की खोई हुई भेड़ों के
पास ही जायें 7और उन्हें उपदेश दें कि 'स्वर्ग का राज्य
निकट है।' 8वे बीमारों को ठीक करें, मरे हुओं को जीवन
दें, कोढ़ियों को चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकालें।
तुमने बिना कुछ दिये प्रभु की आशीष और शक्तियाँ पाई
हैं, इसलिये उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुक्त भाव से
बाँटो। 9अपने पटुके में सोना, चाँदी या ताँबा मत रखो।
10यात्रा के लिए कोई झोला तक मत लो। कोई फालतू

ज़िलौत एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था। जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

कुर्ता, चप्पल और छड़ी मत रखो। क्योंकि मज़दूर का उसके खाने पर अधिकार है।

11"तुम लोग जब कभी किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता करो कि वहाँ विश्वासयोग्य कौन है। फिर तब तक वहीं ठहरे रहो जब तक वहाँ से चल न दो। 12जब तुम किसी घर बार में जाओ तो परिवार के लोगों का सत्कार करते हुए कहो, 'तुम्हें शांति मिले।' 13यदि घर बार के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके साथ साथ रहेगा और यदि वे इस योग्य न होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।

14"यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो। 15मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस नगर की स्थिति से सदोम और अमोरा* नगरों की स्थिति कहीं अच्छी होगी।"

अपने प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

16"सावधान! मैं तुम्हें ऐसे ही बाहर भेज रहा हूँ जैसे भेड़ों को भेड़ियों के बीच में भेजा जाये। सो साँपों की तरह चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। 17लोगों से सावधान रहना क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी पंचायतों को सौंप देंगे और वे तुम्हें अपने धर्म–सभा भवनों में कोड़ों से पिटवायेंगे। 18तुम्हें शासकों और राजाओं के सामने पेश किया जायेगा, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनको और ग़ैरयहूदियों को मेरे बारे में गवाही दो। 19जब वे तुम्हें पकड़ें तो चिंता मत करना कि, तुम्हें क्या कहना है और कैसे कहना है। क्योंकि उस समय तुम्हें बता दिया जायेगा कि तुम्हें क्या बोलना है। 20याद रखो बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे परम पिता का आत्मा तुम्हारे भीतर बोलेगा।

21"भाई अपने भाइयों को पकड़वा कर मरवा डालेंगे, माता–पिता अपने बच्चों को पकड़वायेंगे और बच्चे अपने माँ–बाप के विरुद्ध हो जायेंगे। वे उन्हें मरवा डालेंगे। 22मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा।

23वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र दुबारा आ जाएगा।

24"शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही कोई दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। 25शिष्य को गुरु के बराबर होने में और दास को स्वामी के बराबर होने में ही संतोष करना चाहिये। जब वे घर के स्वामी को ही बैल्ज़ाबुल कहते हैं तो, उसके घर के दूसरे लोगों के साथ तो और भी बुरा व्यवहार करेंगे!"

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं

26"इसलिये उनसे डरना मत क्योंकि जो कुछ छिपा है, सब उजागर होगा। और हर वह वस्तु जो गुप्त है, प्रकट की जायेगी। 27मैं अँधेरे में जो कुछ तुमसे कहता हूँ, मैं चाहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो। मैंने जो कुछ तुम्हारे कानों में कहा है, तुम उसकी मकान की छतों पर चढ़कर, घोषणा करो। 28उनसे मत डरो जो तुम्हारे शरीर को नष्ट कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी आत्मा को नहीं मार सकते। बस उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा को नरक में डाल कर नष्ट कर सकता है। 29एक पैसे की दो चिड़ियाओं में से भी एक तुम्हारे परम पिता के जाने बिना और उसकी इच्छा के बिना धरती पर नहीं गिर सकती। 30अरे तुम्हारे तो सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। 31इसलिये डरो मत तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक चिड़ियाओं से कहीं अधिक है।"

यीशु में विश्वास

32"जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम–पिता के सामने अपनाऊँगा। 33किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम पिता के सामने नकारूँगा।

34"यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ। शांति नहीं बल्कि मैं तलवार का आवाहन करने आया हूँ।

35–36 'मैं मनुष्य को उसके पिता के विरोध में,
पुत्री को माँ के विरोध में,
बहू को सास के विरोध में करने आया हूँ।

सदोम और अमोरा ये उन दो नगरों के नाम हैं जिन्हें वहाँ के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिये प्रभु ने नष्ट कर दिया था।

मनुष्य के शत्रु, उसके अपने
घर के ही लोग होंगे।

मीका 7:6

37“जो अपने माता–पिता को मुझ से अधिक प्रेम
करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे
बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के
योग्य नहीं है। 38वह जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं
उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं
है। 39वह जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है, अपने
प्राण खो देगा। किन्तु जो मेरे लिये अपनी जान देगा, वह
जीवन पायेगा। 40जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे अपनाता
है और जो मुझे अपनाता है, वह उस परमेश्वर को अपनाता
है, जिसने मुझे भेजा है। 41जो किसी नबी को इसलिये
अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही प्रतिफल मिलेगा जो
कि नबी को मिलता है। और यदि तुम किसी भले आदमी
का इसलिये स्वागत करते हो कि वह भला आदमी है, उसे
सचमुच वही प्रतिफल मिलेगा जो किसी भले आदमी को
मिलना चाहिए। 42और यदि कोई मेरे इन भोले–भाले शिष्यों
में से किसी एक को भी इसलिये एक गिलास ठंडा पानी
तक दे कि वह मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ कि उसे इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं
रहेगा।”

यीशु और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना

11 अपने बारह शिष्यों को इस प्रकार समझा चुकने
के बाद यीशु वहाँ से चल पड़ा और गलील प्रदेश
के नगरों में उपदेश देता घूमने लगा।

2यूहन्ना ने जब जेल में यीशु के कामों के बारे में सुना
तो उसने अपने शिष्यों के द्वारा संदेश भेजकर 3पूछा कि
“क्या तू वही है ‘जो आने वाला था’ या हम किसी और
आने वाले की बाट जोहें?”

4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “जो कुछ तुम सुन रहे
हो, और देख रहे हो, जाकर यूहन्ना को बताओ कि,
5अंधों को आँखें मिल रही हैं, लूले–लंगड़े चल पा रहे हैं,
कोढ़ी चंगे हो रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और मरे हुए
जिलाये जा रहे हैं। और दीन दुखियों में सुसमाचार का
प्रचार किया जा रहा है। 6वह धन्य है जो मुझे अपना
सकता है।”

7जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से जा रहे थे तो यीशु भीड़
में लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने लगा, “तुम लोग इस
बियाबान में क्या देखने आये हो? क्या कोई सरकंडा? जो
हवा में थरथरा रहा है। नहीं! 8तो फिर तुम क्या देखने
आये हो? क्या एक पुरुष जिसने बहुत अच्छे वस्त्र पहने हैं?
देखो जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं, वे तो राज भवनों में ही पाये
जाते हैं। 9तो तुम क्या देखने आये हो? क्या कोई नबी? हाँ,
मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे तुमने देखा है वह किसी नबी से
कहीं ज्यादा है। 10यह वही है जिसके बारे में शास्त्रों में
लिखा है:

‘देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ।
वह तेरे लिये राह बनायेगा।’

मलाकी 3:1

11“मैं तुझसे सत्य कहता हूँ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना
से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ। फिर भी स्वर्ग के
राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है।
12बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के समय से आज तक स्वर्ग
का राज्य भयानक आघातों को झेलता रहा है और हिंसा
के बल पर इसे छीनने का प्रयत्न किया जाता रहा है।
13यूहन्ना के आने तक सभी भविष्यवक्ताओं और ‘मूसा
की व्यवस्था’ ने भविष्यवाणी की थी, 14और यदि तुम
व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ कहा, उसे
स्वीकार करने को तैयार हो तो जिसके आने की
भविष्यवाणी की गयी थी, यह यूहन्ना वही एलिय्याह है।
15जो सुन सकता है, सुने!

16“आज की पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किन से
करूँ? वे बाज़ारों में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक
दूसरे से पुकार कर कह रहे हैं,

17 ‘हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी,
पर तुम नहीं नाचे।
हमने शोकगीत गाये
किन्तु तुम नहीं रोये।’

18बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया। जो न औरों की
तरह खाता था और न ही पीता था। पर लोगों ने कहा था
कि उस में दुष्टात्मा है। 19फिर मनुष्य का पुत्र आया। जो
औरों के समान ही खाता–पीता है, पर लोग कहते हैं ‘इस
आदमी को देखो, यह पेटू है, पियक्कड़ है। यह चुंगी वसूलने
वालों और पापियों का मित्र है।’ किन्तु बुद्धि की उत्तमता
उसके कामों से सिद्ध होती है।”

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

20फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें उसने
बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के लोगों ने
पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं फिराया था।
21"अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे बैतसैदा* तुम में
जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर और सैदा में किये
जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से ही टाट के शोक वस्त्र
ओढ़ कर और अपने शरीर पर राख मल* कर खेद
व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके होते।' 22किन्तु मैं तुम
लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन सूर और सैदा* की स्थिति
तुमसे अधिक सहने योग्य होगी। 23और अरे कफरनहूम,
क्या तू सोचता है कि तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा
उठाया जायेगा? तू तो अधोलोक में नरक को जायेगा।
क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में
किये जाते तो वह नगर आज तक टिका रहता। 24पर मैं
तुम्हें बताता हूँ कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से
सदोम की हालत कहीं अच्छी होगी।"

यीशु को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

25उस अवसर पर यीशु बोला, "परम पिता, तू स्वर्ग
और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि
तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और समझदार हैं,
छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं उनके लिए
प्रकट किया है। 26हाँ परम पिता यह इसलिये हुआ क्योंकि
तूने इसे ही ठीक जाना।

27"मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है और
वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं
जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को नहीं
जानता। और हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है,
जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।

28"अरे, ओ थके-माँदे, बोझ से दबे लोगों! मेरे पास
आओ, मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। 29मेरा जुआ लो और उसे
अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझ से सीखो क्योंकि मैं सरल
हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये सुख-चैन
मिलेगा। 30क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ बहुत
सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल रहा हूँ, हल्का
है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

12 लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन
अनाज के खेतों से होकर जा रहा था। उसके
शिष्यों को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर
खाने लगे। 2फरीसियों ने ऐसा होते देख कहा, "देख, तेरे
शिष्य वह कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना
मूसा की व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है।"

3इस पर यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि
दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी, क्या
किया था? 4उसने परमेश्वर के घर में घुस कर परमेश्वर
को चढ़ाई पवित्र रोटियाँ कैसे खाई थीं? यद्यपि उसको
और उसके साथियों को उनका खाना मूसा की व्यवस्था
के विरुद्ध था। उनको केवल याजक ही खा सकते थे।
5या मूसा की व्यवस्था में तुमने यह नहीं पढ़ा कि सब्त के
दिन मंदिर के याजक ही वास्तव में सब्त को बिगाड़ते हैं।
और फिर भी उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। 6किन्तु मैं
तुमसे कहता हूँ, यहाँ कोई है जो मन्दिर से भी बड़ा है।
7यदि तुम शास्त्रों में जो लिखा है, उसे जानते कि, 'मैं लोगों
में दया चाहता हूँ, पशुबलि नहीं' तो तुम उन्हें दोषी नहीं
ठहराते, जो निर्दोष हैं।

8"हाँ, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

यीशु द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

9फिर वह वहाँ से चल दिया और यहूदी धर्म सभागार में
पहुँचा। 10वहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख चुका
था। सो लोगों ने यीशु से पूछा, "मूसा के विधि के अनुसार
सब्त के दिन किसी को चंगा करना, क्या उचित है?"
उन्होंने उससे यह इसलिए पूछा था कि, वे उस पर दोष
लगा सकें।

11किन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "मानों तुममें से किसी
के पास एक ही भेड़ है, और वह भेड़ सब्त के दिन किसी
गढ़े में गिर जाती है, तो क्या तुम उसे पकड़ कर बाहर
नहीं निकालोगे? 12फिर आदमी तो एक भेड़ से कहीं

खुराजीन, बैतसैद, कफ़रनहूम झील गलील के किनारे बसे नगर जहाँ यीशु ने उपदेश दिये थे।

टाट के शोक ... राख मल उन दिनों लोग शोक व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के मोटे कपड़े पहना करते थे, और अपने शरीर पर राख मला करते थे।

सूर और सैदा उन नगरों के नाम हैं जहाँ बहुत बुरे लोग रहा करते थे।

अधिक महत्त्वपूर्ण है। सो सब्त के दिन 'मूसा की व्यवस्था'
भलाई करने की अनुमति देती है।"
13तब यीशु ने उस सूखे हाथ वाले आदमी से कहा,
"अपना हाथ आगे बढ़ा" और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा
दिया। वह पूरी तरह अच्छा हो गया था। ठीक वैसा ही जैसा
उसका दूसरा हाथ था। 14फिर फरीसी वहाँ से चले गये
और उसे मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की तरकीब
सोचने लगे।

यीशु वही करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना

15यीशु यह जान गया और वहाँ से चल पड़ा। बड़ी भीड़
उसके पीछे हो ली। उसने उन्हें चंगा करते हुए 16चेतावनी
दी कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न बतायें। 17यह
इसलिए हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा प्रभु ने जो
कहा था, वह पूरा हो:

18 "यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है।
यह मेरा प्यारा है, मैं इससे आनन्दित हूँ,
अपना 'आत्मा' इस पर मैं रखूँगा
सब देशों के सब लोगों को
यही न्याय घोषणा करेगा
19 यह कभी नहीं चीखेगा या झगड़ेगा ही
लोग इसे गलियों कूचों में नहीं सुनेगे।
20 यह झुके सरकंडे तक को नहीं तोड़ेगा
यह बुझते दीपक तक को नहीं बुझाएगा
डटा रहेगा तब तक
जब तक न्याय-वजय हो
21 तब फिर सभी लोग अपनी
आशाएँ उसमें बाँधेंगे
बस केवल उसी नाम में।"

यशायाह 42:1-4

यीशु में परमेश्वर की शक्ति है

22फिर यीशु के पास लोग एक ऐसे अन्धे को लाये जो
गूँगा भी था क्योंकि उस पर दुष्ट आत्मा सवार थी। यीशु ने
उसे चंगा कर दिया और इसीलिये वह गूँगा अंधा बोलने
और देखने लगा। 23इस पर सभी लोगों को बहुत अचरज
हुआ और वे कहने लगे, "क्या यह व्यक्ति दाऊद का पुत्र
हो सकता है?"

24जब फ़रीसियों ने यह सुना तो वे बोले, "यह दुष्टात्माओं
को उनके शासक बैल्ज़ाबुल* के सहारे बाहर निकालता
है।"
25यीशु को उनके विचारों का पता चल गया। वह उनसे
बोला, "हर वह राज्य जिसमें फूट पड़ जाती है, नष्ट हो
जाता है। वैसे ही हर नगर या परिवार जिसमें फूट पड़ जाये
टिका नहीं रहेगा। 26तो यदि शैतान ही अपने आप को
बाहर निकाले फिर तो उसमें अपने ही विरुद्ध फूट पड़
गयी है। सो उसका राज्य कैसे बना रह सकेगा। 27और
फिर यदि यह सच है कि मैं बैल्ज़ाबुल के सहारे दुष्ट
आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी किसके
सहारे उन्हें बाहर निकालते हैं? सो तुम्हारे अपने अनुयायी
ही सिद्ध करेंगे कि तुम अनुचित हो। 28मैं दुष्टात्माओं को
परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से निकालता हूँ। इससे यह
सिद्ध है कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट ही आ
पहुँचा है।
29"फिर कोई किसी बलवान के घर में घुस कर उसका
माल कैसे चुरा सकता है, जब तक कि पहले वह उस
बलवान को बाँध न दे। तभी वह उसके घर को लूट सकता
है।
30"जो मेरे साथ नहीं है, मेरा विरोधी है। और जो बिखरी
हुई भेड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद नहीं करता, वह
उन्हें बिखरा रहा है। 31इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि
सभी की हर तरह की निन्दा और पाप क्षमा कर दिये
जायेंगे किन्तु 'आत्मा' की निन्दा करने वाले को क्षमा नहीं
किया जायेगा। 32कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में यदि
कुछ कहता है तो उसे क्षमा किया जा सकता है, किन्तु
'पवित्र आत्मा' के विरोध में कोई कुछ कहे तो उसे क्षमा
नहीं किया जायेगा। न इस युग में और न आने वाले युग में।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

33"तुम लोग जानते हो कि अच्छा फल लेने के लिए
तुम्हें अच्छा पेड़ ही लगाना चाहिये। और बुरे पेड़ से बुरा ही
फल मिलता है। क्योंकि पेड़ अपने फल से ही जाना जाता
है। 34अरे ओ साँप के बच्चो! जब तुम बुरे हो तो अच्छी
बातें कैसे कह सकते हो? व्यक्ति के शब्द, जो उसके मन
में भरा है, उसी से निकलते हैं। 35एक अच्छा व्यक्ति जो
अच्छाई उसके मन में इकट्ठी है, उसी में से अच्छी बातें

बैल्ज़ाबुल यह दुष्टात्माओं के राजा 'शैतान' का नाम है।

निकालता है। जबकि एक बुरा व्यक्ति जो बुराई उसके
मन में है, उसी में से बुरी बातें निकालता है। 36किन्तु मैं
तुम लोगों को बताता हूँ कि न्याय के दिन प्रत्येक व्यक्ति
को अपने हर व्यर्थ बोले शब्द का हिसाब देना होगा। 37तेरी
बातों के आधार पर ही तुझे निर्दोष और तेरी बातों के
आधार पर ही तुझे दोषी ठहराया जायेगा।"

यीशु से आश्चर्य चिन्ह की माँग

38फिर कुछ यहूदी धर्म शास्त्रियों और फ़रीसियों ने
उससे कहा, "गुरु, हम तुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते
देखना चाहते हैं।"

39उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "इस युग के बुरे और
दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं।
भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें
और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 40"और
जैसे योना तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के पेट
में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन
रात धरती के भीतर रहेगा। 41न्याय के दिन नीनेवा के
निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होंगे
और उन्हें दोषी ठहरायेंगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों ने
योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो कोई
योना से भी बड़ा मौजूद है! 42न्याय के दिन दक्षिण की
रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और उन्हें
अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे छोर से
सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और यहाँ तो कोई
सुलैमान से भी बड़ा मौजूद है!

लोगों में शैतान

43"जब कोई दुष्टात्मा किसी व्यक्ति को छोड़ती है तो
वह आराम की खोज में सूखी धरती ढूँढती फिरती है,
किन्तु वह उसे मिल नहीं पाती। 44तब वह कहती है कि
जिस घर को मैंने छोड़ा था, मैं फिर वहीं लौट जाऊँगी। सो
वह लौटती है और उसे अब तक खाली, साफ सुथरा तथा
सजा–सँवरा पाती है। 45फिर वह लौटती है और अपने
साथ सात और दुष्टात्माओं को लाती है जो उससे भी बुरी
होती हैं। फिर वे सब आकर वहाँ रहने लगती हैं। और
उस व्यक्ति की दशा पहले से भी अधिक भयानक हो जाती
है। आज की इस बुरी पीढ़ी के लोगों की दशा भी ऐसी ही
होगी।"

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार

46वह अभी भीड़ के लोगों से बातें कर ही रहा था कि
उसकी माता और भाई–बन्धु वहाँ आकर बाहर खड़े हो
गये। वे उससे बात करने को बाट जोह रहे थे। 47किसी ने
यीशु से कहा "सुन तेरी माँ और तेरे भाई–बन्धु बाहर खड़े
हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।"

48उत्तर में यीशु ने बात करने वाले से कहा, "कौन है
मेरी माँ? कौन हैं मेरे भाई–बंधु?" 49फिर उसने हाथ से
अपने अनुयायिओं की तरफ इशारा करते हुए कहा, "ये
हैं मेरी माँ और मेरे भाई–बन्धु। 50हाँ स्वर्ग में स्थित मेरे
पिता की इच्छा पर जो कोई चलता है, वही मेरा भाई,
बहन और माँ है।"

किसान और बीज का दृष्टान्त

13 उसी दिन यीशु उस घर को छोड़ कर झील
के किनारे उपदेश देने जा बैठा। 2बहुत से लोग
उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। सो वह एक नाव पर
चढ़ कर बैठ गया। और भीड़ किनारे पर खड़ी रही। 3उसने
उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें बतायीं।
उसने कहा कि "एक किसान बीज बोने निकला। 4जब
वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के किनारे जा
पड़े। चिड़ियाएँ आयीं और उन्हें चुग गयीं। 5थोड़ें बीज
चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी बहुत उथली थी।
बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो गहरी थी नहीं;
6इसलिये जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे झुलस गये। और क्योंकि
उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं थीं इसलिए वे सूख कर
गिर गये। 7बीजों का एक हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा
गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई, और उन्होंने उन पौधों को दबोच
लिया। 8पर थोड़े बीज जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी
फसल देने लगे। फसल, जितना बोया गया था, उससे कोई
तीस गुना, साठ गुना यासौ गुना से भी ज़्यादा हुई। 9जो सुन
सकता है, वह सुन ले।"

दृष्टान्त–कथाओं का प्रयोजन

10फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर उससे
पूछा, "तू उनसे बातें करते हुए दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग
क्यों करता है?"

11उत्तर में उसने उनसे कहा, "स्वर्ग के राज्य के भेदों
को जानने का अधिकार सिर्फ तुम्हें दिया गया है, उन्हें

नहीं। 12क्योंकि जिसके पास थोड़ा बहुत है, उसे और भी दिया जायेगा और उसके पास बहुत अधिक हो जायेगा। किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे जितना सा उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। 13इसीलिये मैं उनसे दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए बात करता हूँ। क्योंकि यद्यपि वे देखते हैं, पर वास्तव में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता, वे यद्यपि सुनते हैं पर वास्तव में न वे सुनते हैं, न समझते हैं। 14इस प्रकार उन पर यशायाह की यह भविष्यवाणी खरी उतरती है:

‘तुम सुनोगे और सुनते ही रहोगे
पर तुम्हारी समझ में कुछ भी न आयेगा,
तुम बस देखते ही रहोगे
पर तुम्हें कुछ भी न सूझ पायेगा
15 क्योंकि इनके हृदय जड़ता से भर गये
इन्होंने अपने कान बन्द कर रखे हैं
और अपनी आखें मूँद रखी हैं ताकि
वे अपनी आँखों से कुछ भी न देखें
और वे कान से कुछ न सुन पायें
या कि अपने हृदय से कभी न समझें
और कभी मेरी ओर मुड़कर आयें
और जिससे मैं उनका उद्धार करूँ।’

यशायाह 6:9-10

16किन्तु तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान भाग्यवान् हैं क्योंकि वे देख और सुन सकते हैं। 17मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों को देखना चाहते थे, उन्हें तुम देख रहे हो। वे उन्हें नहीं देख सके। और जिन बातों को वे सुनना चाहते थे, उन्हें तुम सुन रहे हो। वे उन्हें नहीं सुन सके।

बीज बोने की दृष्टान्त-कथा का अर्थ

18“तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त-कथा का अर्थ सुनो। 19वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था, उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनता है और उसे समझता नहीं है तो बदी आकर, उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाती है। 20वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आनन्द के साथ तत्काल ग्रहण भी करता है 21किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ें नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं तो वह जल्दी ही डगमगा जाता है। 22काँटों में गिरे बीज का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता। 23अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह सफलता बोये बीज से तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना तक होती है।”

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

24यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा रखी: “स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। 25पर जब लोग सो रहे थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच खरपतवार बो गया। 26जब गेहूँ में अंकुर निकले और उस पर बालें आयी तो खरपतवार भी दिखने लगी। 27तब खेत के मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा, ‘मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था न? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई?’

28“तब उसने उनसे कहा, ‘यह किसी शत्रु का काम है।’ उसके दासों ने उससे पूछा, ‘क्या तू चाहता है कि हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें?’

29“वह बोला, ‘नही, क्योंकि जब तुम खरपतवार उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे।

30जब तक फसल पके दोनों को साथ साथ बढ़ने दो, फिर कटाई के समय में फसल काटने वालों से कहूँगा कि पहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें जला दो, और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरी खत्ती में रख दो।’”

कई अन्य दृष्टान्त-कथाएँ

31यीशु ने उनके सामने और दृष्टान्त-कथाएँ रखी। “स्वर्ग का राज्य राई के छोटे से बीज के समान होता है, जिसे किसी ने लेकर खेत में बो दिया हो। 32यह बीज छोटे से छोटा होता है किन्तु बड़ा होने पर यह बाग के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। यह पेड़ बनता है और आकाश के पक्षी आकर इसकी शाखाओं पर शरण लेते हैं।”

33उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा और कही—“स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने तीन

भार आटे में मिलाया और तब तक उसे रख छोड़ा जब तक वह सब का सब खमीर नहीं हो गया।"

34यीशु ने लोगों से यह सब कुछ दृष्टान्त–कथाओं के
द्वारा कहा। वास्तव में वह उनसे दृष्टान्त कथाओं के बिना
कुछ भी नहीं कहता था। 35ऐसा इसलिये था कि परमेश्वर
ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कुछ कहा था वह पूरा हो:
परमेश्वर ने कहा कि,

"मैं दृष्टान्त कथाओं के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा।
सृष्टि के आदिकाल से जो बातें
छिपी रही हैं, उन्हें उजागर करूँगा।"

भजन संहिता 78:2

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

36फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला आया।
तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, "खेत के
खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"

37उत्तर में यीशु बोला, "जिसने उत्तम बीज बोया था,
वह है मनुष्य का पुत्र। 38और खेत यह संसार है। अच्छे
बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार का
अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान हैं। 39वह शत्रु
जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई का
समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले
हैं स्वर्गदूत।

40"ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके
आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा।
41मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके
राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को पाप
के लिये प्रेरित करते हैं, 42इकट्ठा करके धधकते भाड़
में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही रोना
होगा। 43तब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में सूरज की
तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले!"

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

44"स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन जैसा है। जिसे किसी
मनुष्य ने पाया और फिर उसे वहीं गाड़ दिया। वह इतना
प्रसन्न हुआ कि उसने जो कुछ उसके पास था, जाकर
बेच दिया और वह खेत मोल ले लिया।

45"स्वर्ग का राज्य एक ऐसे व्यापारी के समान है जो
अच्छे मोतियों की खोज में हो। 46जब उसे एक अनमोल
मोती मिला तो जाकर जो कुछ उसके पास था, उसने बेच
डाला, और मोती मोल ले लिया।

मछली पकड़ने का जाल

47"स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में
फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह
की मछलियाँ पकड़ी गयी। 48जब वह जाल पूरा भर गया
तो उसे किनारे पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर
अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयीं किन्तु
बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी। 49सृष्टि के अन्त में ऐसे ही
होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से पापियों को छाँट
कर 50धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस रोना और दाँत
पीसना होगा।"

51यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "तुम ये सब बातें समझते
हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ!"

52यीशु ने उनसे कहा, "देखो, इसीलिये हर धर्मशास्त्री
जो परमेश्वर के राज्य को जानता है, एक ऐसे गृहस्वामी
के समान है, जो अपने कोठार से नई–पुरानी वस्तुओं को
बाहर निकालता है।"

यीशु का अपने देश लौटना

53इन दृष्टान्त कथाओं को समाप्त करके वह वहाँ से
चल दिया 54और अपने देश आ गया। फिर उसने यहूदी
धर्म सभाओं में उपदेश देना आरम्भ कर दिया। इससे हर
कोई अचरज में पड़ कर कहने लगा, "इसे ऐसी सूझबूझ
और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली? 55क्या यह वही
बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माँ का नाम मरियम
नहीं है? याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा इसी के तो भाई
हैं न? 56क्या इसकी सभी बहनें हमारे ही बीच नहीं हैं? तो
फिर उसे यह सब कहाँ से मिला।" 57सो उन्होंने उसे स्वीकार
नहीं किया। फिर यीशु ने कहा, "किसी नबी का अपने
गाँव और घर को छोड़ कर, सब आदर करते हैं।"

58सो उनके अविश्वास के कारण उसने वहाँ अधिक
आश्चर्य कर्म नहीं किये।

हेरोदेस का यीशु के बारे में सुनना

14 उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब
यीशु के बारे में सुना 2तो उसने अपने सेवकों से
कहा, "यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो मरे हुओं में

से जी उठा है। और इसी लिये ये शक्तियाँ उसमें काम कर
रही हैं। जिनसे यह इन चमत्कारों को करता है।"

यूहन्ना की हत्या

3यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को बंदी बना, जंजीरों
में बाँध, जेल में डाल दिया था। यह उसने हिरोदियास के
कहने पर किया था, जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस की
पत्नी थी। **4**यूहन्ना प्राय: उससे कहा करता था कि "तुझे
इसके साथ नहीं रहना चाहिये।" **5**सो हेरोदेस उसे मार
डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था क्योंकि लोग
यूहन्ना को नबी मानते थे। **6**पर जब हेरोदेस का जन्म दिन
आया तो हिरोदियास की बेटी ने हेरोदेस और उसके मेहमानों
के सामने नाच कर हेरोदेस को इतना प्रसन्न किया **7**कि
उसने शपथ ले कर, वह जो कुछ चाहे, उसे देने का वचन
दिया।

8अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने कहा, "मुझे
थाली में रख कर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का शीष दे।"
9यद्यपि राजा बहुत दुखी था किन्तु अपनी शपथ और अपने
मेहमानों के कारण उसने उसकी माँग पूरी करने का
आदेश दे दिया। **10**उसने जेल में यूहन्ना का सिर काटने
के लिये आदमी भेजे। **11**सो यूहन्ना का सिर थाली में रख
कर लाया गया और उसे लड़की को दे दिया गया। वह उसे
अपनी माँ के पास ले गयी। **12**तब यूहन्ना के अनुयायी
आये और उन्होंने उसके धड़ को लेकर दफना दिया।
और फिर उन्होंने आकर यीशू को बताया।

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

13जब यीशु ने इसकी चर्चा सुनी तो वह वहाँ से नाव में
किसी एकान्त स्थान पर अकेला चला गया। किन्तु जब
भीड़ को इसका पता चला तो वे अपने नगरों से पैदल ही
उसके पीछे हो लिये। **14**यीशु जब नाव से बाहर निकल
कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। उसे
उन पर दया आयी और उसने उनके बीमारों को अच्छा
किया।

15जब शाम हुई तो उसके शिष्यों ने उसके पास आकर
कहा, "यह सुनसान जगह है और बहुत देर भी हो चुकी है,
सो भीड़ को विदा कर, ताकि वे गाँव में जा कर अपने
लिये खाना मोल ले लें।"

16किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "इन्हें कहीं जाने की
आवश्यकता नहीं है। तुम इन्हें कुछ खाने को दो।"

17उन्होंने उससे कहा, "हमारे पास पाँच रोटियों और
दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है।"

18यीशु ने कहा, "उन्हें मेरे पास ले आओ।" **19**उसने
भीड़ के लोगों से कहा कि वे घास पर बैठ जायें। फिर
उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ले कर स्वर्ग की
ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद
किया। फिर रोटी के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने शिष्यों
को दे दिया। शिष्यों ने वे टुकड़े लोगों में बाँट दिये।
20सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए टुकड़ों से
उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं। **21**स्त्रियों और
बच्चों को छोड़ कर वहाँ खाने वाले कोई पाँच हज़ार
पुरुष थे।

यीशु का झील पर चलना

22इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर
चढ़ाया और जब तक वह भीड़ को विदा करे, उनसे
गलील की झील के पार अपने से पहले ही जाने को कहा।
23भीड़ को विदा करके वह अकेले में प्रार्थना करने को
पहाड़ पर चला गया। साँझ होने पर वह वहाँ अकेला था।
24तब तक नाव किनारे से मीलों दूर जा चुकी थी और
लहरों में थपेड़े खाती डगमगा रही थी। सामने की हवा चल
रही थी।

25सुबह कोई तीन और छ: बजे के बीच यीशु झील पर
चलता हुआ उनके पास आया। **26**उसके शिष्यों ने जब
उसे झील पर चलते हुए देखा तो वह घबराये हुए आपस में
कहने लगे "यह तो कोई भूत है!" वे डर के मारे चीख उठे।

27यीशु ने तत्काल उनसे बात करते हुए कहा, "हिम्मत
रखो! यह मैं हूँ! अब और मत डरो।"

28पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "प्रभु, यदि यह तू
है, तो मुझे पानी पर चल कर अपने पास आने को कह।"

29यीशु ने कहा, "चला आ।"

पतरस नाव से निकल कर पानी पर यीशु की तरफ
चल पड़ा। **30**उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबराया। वह
डूबने लगा और चिल्लाया, "प्रभु, मेरी रक्षा कर।"

31यीशु ने तत्काल उसके पास पहुँच कर उसे सँभाल
लिया और उससे बोला, "ओ अल्प विश्वासी, तूने संदेह
क्यों किया?"

[32]और वे नाव पर चढ़ आये। हवा थम गयी। [33]नाव पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, "तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।"

[34]सो झील पार करके वे गन्नेसरत के तट पर उतर गये। [35]जब वहाँ रहने वालों ने यीशु को पहचाना तो उन्होंने उसके आने का समाचार आसपास सब कहीं भिजवा दिया। जिससे लोग–जो रोगी थे, उन सब को वहाँ ले आये [36]और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र का बस किनारा ही छू लेने दे। और जिन्होंने छू लिया, वे सब पूरी तरह चंगे हो गये।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है

15 फिर कुछ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री यरुशलेम से यीशु के पास आये और उससे पूछा, [2]"तेरे अनुयायी हमारे पुरखों के रीति–रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते? वे खाना खाने से पहले अपने हाथ क्यों नहीं धोते?"

[3]यीशु ने उत्तर दिया, "अपने रीति रिवाजों के कारण तुम परमेश्वर के विधि को क्यों तोड़ते हो? [4]क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था, 'तू अपने माता–पिता का आदर कर'* और 'जो कोई अपने पिता या माता का अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।'* [5]किन्तु तुम कहते हो जो कोई अपने पिता या अपनी माता से कहे, 'क्योंकर मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को अर्पित कर चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।' [6]इस तरह उसे अपने माता पिता का आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम अपने रीति रिवाजों के कारण परमेश्वर के आदेश को नकारते हो। [7]ओ ढोंगियो, तुम्हारे बारे में यशायाह ने ठीक ही भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था:

8 'ये मेरा केवल होठों से आदर करते है;
पर इनके मन मुझ से सदा दूर रहते हैं
9 इनकी अर्पित उपासना मुझ को बिना काम की
क्योंकि ये लोगों को कह सिखाते
मनुष्य के अपने सिद्धान्त, बनाये नियम।'"

यशायाह 29:13

तू ... कर देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16
जो कोई ... जाना चाहिये देखें निर्गमन 21:17

[10]उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "सुनो और समझो कि [11]मनुष्य के मुख के भीतर जो जाता है वह उसे अपवित्र नहीं करता, बल्कि उसके मुँह से निकला हुआ शब्द उसे अपवित्र करता है।"

[12]तब यीशु के शिष्य उसके पास आये और बोले, "क्या तुझे पता है कि तेरी बात का फरीसियों ने बहुत बुरा माना है?"

[13]यीशु ने उत्तर दिया, "हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्ग में स्थित पिता की ओर से नहीं लगाया गया है, उखाड़ दिया जायेगा। [14]उन्हें छोड़ो, वे तो अन्धों के अंधे नेता हैं। यदि एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखाता है, तो वे दोनों ही गढ़े में गिरते हैं।"

[15]तब पतरस ने उससे कहा, "हमें अपवित्रता सम्बन्धी दृष्टान्त का अर्थ समझा।"

[16]यीशु बोला, "क्या तुम अब भी नहीं समझते? [17]क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ किसी के मुँह में जाता है, वह उस के पेट में पहुँचता है और फिर पखाने में निकल जाता है? [18]किन्तु जो मनुष्य के मुँह से बाहर आता है, वह उसके मन से निकलता है। यही उस को अपवित्र करता है। [19]क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, दुराचार, चोरी, झूठ और निन्दा जैसी सभी बुराइयाँ मन से ही आती हैं। [20]ये ही हैं जिनसे कोई अपवित्र बनता है। बिना हाथ धोए खाने से कोई अपवित्र नहीं होता।"

ग़ैर यहूदी स्त्री की सहायता

[21]फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर सूर और सैदा की ओर चल पड़ा। [22]वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी और चिल्लाने लगी, "हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर। मेरी पुत्री पर दुष्ट आत्मा बुरी तरह सवार है।"

[23]यीशु ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, सो उसके शिष्य उसके पास आये और विनती करने लगे, "यह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है, इसे दूर हटा।"

[24]यीशु ने उत्तर दिया, "मुझे केवल इस्राएल के लोगों की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं भेजा गया है।"

[25]तब उस स्त्री ने यीशु के सामने झुक कर विनती की, "हे प्रभु, मेरी रक्षा कर!"

[26]उत्तर में यीशु ने कहा, "यह उचित नहीं है कि बच्चों का खाना लेकर उसे घर के कुत्तों के आगे डाल दिया जाये।"

27वह बोली, "यह ठीक है प्रभु, किन्तु अपने स्वामी
की मेज़ से गिरे हुए चूरे में से थोड़ा बहुत तो घर के कुत्ते
भी खा ही लेते हैं।"

28तब यीशु ने कहा, "स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है।
जो तू चाहती है, पूरा हो।" और तत्काल उसकी बेटी अच्छी
हो गयी।

यीशु का बहुतों को अच्छा करना

29फिर यीशु वहाँ से चल पड़ा और झील गलील के
किनारे पहुँचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ कर उपदेश देने
बैठ गया।

30बड़ी-बड़ी भीड़ लँगड़े-लूलों, अंधों, अपाहिजों,
बहरे-गूंगों और ऐसे ही दूसरे रोगियों को लेकर उसके
पास आने लगी। भीड़ ने उन्हें उसके चरणों में धरती पर
डाल दिया। और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। 31इससे
भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गूंगे बोल रहे हैं,
अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े-लूले चल फिर रहे हैं और
अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे इस्राएल के
परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हज़ार से अधिक को भोजन

32तब यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और कहा,
"मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है क्योंकि ये लोग तीन
दिन से लगातार मेरे साथ हैं और इनके पास कुछ खाने
को भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा ही नहीं भेजना चाहता क्योंकि
हो सकता है कहीं वे रास्ते में ही मुर्छित होकर न गिर
पड़ें।"

33तब उसके शिष्यों ने कहा, "इतनी बड़ी भीड़ के
लिए ऐसी बियाबान जगह में इतना खाना हमें कहाँ से
मिलेगा?"

34तब यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?" उन्होंने कहा, "सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ।"

35यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन
सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर
का धन्यवाद किया 36और रोटियाँ तोड़ीं और अपने शिष्यों
को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे लोगों में
बाँट दिया। 37लोग तब तक खाते रहे जब तक थक न गये।
फिर उसके शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ
भरीं। 38औरतों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ चार हज़ार
पुरुषों ने भोजन किया। 39भीड़ को विदा करके यीशु नाव
में आ गया और मगदन को चला गया।

यहूदी नेताओं की चाल

16 फिर फरीसी और सदूकी यीशु के पास आये।
वे उसे परखना चाहते थे सो उन्होंने उससे कोई
चमत्कार करने को कहा, ताकि पता लग सके कि उसे
परमेश्वर की अनुमति मिली हुई है।

2उस ने उत्तर दिया, "सूरज छुपने पर तुम लोग कहते
हो 'आज मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है'
3और सूरज उगने पर तुम कहते हो 'आज अंधड़ आयेगा
क्योंकि आसमान धुँधला और लाल है।' तुम आकाश के
लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के लक्षणों
को नहीं पढ़ सकते। 4अरे दुष्ट और दुराचारी पीढ़ी के
लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें सिवाय योना के
चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं दिखाया जायेगा।"
फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया।

यीशु की चेतावनी

5यीशु के शिष्य झील के पार चले आये, पर वे रोटी
लाना भूल गये। 6इस पर यीशु ने उनसे कहा, "चौकन्ने
रहो! और फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचे
रहो।"

7वे आपस में सोच विचार करते हुए बोले, "हो सकता
है, उसने यह इसलिये कहा क्यों कि हम कोई रोटी साथ
नहीं लाये।"

8वे क्या सोच रहे हैं, यीशु यह जानता था, सो वह बोला,
"ओ अल्प विश्वासियों, तुम आपस में अपने पास रोटी,
नहीं होने के बारे में क्यों सोच रहे हो? 9क्या तुम अब भी
नहीं समझते या याद करते कि पाँच हज़ार लोगों के लिए
वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने
उठाई थी? 10और क्या तुम्हें याद नहीं चार हज़ार के लिये
वे सात रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने
उठाई थी? 11क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे रोटियों के
बारे में नहीं कहा? मैंने तो तुम्हें फ़रीसियों और सदूकियों
के ख़मीर से बचने को कहा है।"

12तब वे समझ गये कि रोटी के ख़मीर से नहीं बल्कि
उसका मतलब फरीसियों और सदूकियों की शिक्षाओं से
बचे रहने से है।

यीशु मसीह है

13जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो
उसने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं, कि मैं
मनुष्य का पुत्र कौन हूँ?"*
14वे बोले, "कुछ कहते हैं कि तू बपतिस्मा देने वाला
यूहन्ना है, और दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह* है और
कुछ अन्य कहते हैं कि तू यिर्मयाह* या भविष्यवक्ताओं में
से कोई एक है।"
15यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं
कौन हूँ?" 16शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू मसीह है,
साक्षात परमेश्वर का पुत्र।"
17उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "योना के पुत्र शमौन!
तू धन्य है क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं,
बल्कि स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने दर्शाई है। 18मैं
कहता हूँ कि तू पतरस है। और इसी चट्टान पर मैं अपनी
कलीसिया बनाऊँगा। मृत्यु की शक्ति* उस पर प्रबल नहीं
होंगी। 19मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे रहा हूँ।
ताकि धरती पर जो कुछ तू बाँधे, वह परमेश्वर के द्वारा
स्वर्ग में बाँधा जाये और जो कुछ तू धरती पर छोड़े, वह
स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जाये।" 20फिर उसने
अपने शिष्यों को कड़ा आदेश दिया कि वे किसी को यह
न बतायें कि वह मसीह है।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

21उस समय यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि,
उसे यरुशलेम जाना चाहिये। जहाँ उसे यहूदी धर्मशास्त्रियों,
बुजुर्ग यहूदी नेताओं और प्रमुख याजकों द्वारा यातनाएँ पहुँचा
कर मरवा दिया जायेगा। फिर तीसरे दिन वह मरे हुओं में
से जी उठेगा।
22तब पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसकी
आलोचना करता हुआ उससे बोला, "हे प्रभु! परमेश्वर
तुझ पर दया करे। तेरे साथ ऐसा कभी न हो!"
23फिर यीशु उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "पतरस,
मेरे रास्ते से हट जा। अरे शैतान! तू मेरे लिए एक अड़चन
है। क्योंकि तू परमेश्वर की तरह नहीं लोगों की तरह
सोचता है।"
24फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे
पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को भुलाकर,
अपना क्रूस स्वयं उठाये और मेरे पीछे हो ले। 25जो कोई
अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना होगा। किन्तु
जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा, वही उसे बचाएगा।
26यदि कोई अपना जीवन देकर सारा संसार भी पा जाये
तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन को फिर से पाने के लिए
कोई भला क्या दे सकता है? 27मनुष्य का पुत्र दूतों सहित
अपने परमपिता की महिमा के साथ आने वाला है। जो हर
किसी को उसके कर्मों का फल देगा। 28मैं तुम से सत्य
कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक
वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते न देख लें।"

तीन शिष्यों को मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन

17 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब, और उसके
भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे
पहाड़ पर गया। 2वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल
गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और उसके
वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश। 3फिर अचानक
मूसा और एलिय्याह उनके सामने प्रकट हुए और यीशु से
बात करने लगे।
4यह देखकर पतरस यीशु से बोला, "प्रभु, अच्छा है
कि हम यहाँ हैं। यदि तू चाहे तो मैं यहाँ तीन मंडप बना
दूँ–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह
के लिए।"
5पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते
हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और बादल से
आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत
प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!"
6जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि धरती
पर औंधे मुँह गिर पड़े। 7तब यीशु उनके पास गया और

मनुष्य का पुत्र यानी यीशु। यीशु परमेश्वर का पुत्र था किन्तु उसके नाम से लगता है कि वह एक मनुष्य भी था। दानि. 7:13–14 में बताया गया है कि यह 'मसीह' का नाम है।

एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था जो यीशु से सैकड़ों साल पहले हुआ था और लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता जो यीशु से सैकड़ों साल पहले लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

मृत्यु की शक्ति शाब्दिक 'मृत्यु के द्वार।'

उन्हें छूते हुए बोला, “डरो मत, खड़े होवो।” 8जब उन्होंने
अपनी आँखें उठाई तो वहाँ बस यीशु को ही पाया।
9जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आदेश
दिया कि “जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी को मत
बताना जब तक मनुष्य के पुत्र को मरे हुओं में से फिर
जिला न दिया जाय।”
10फिर उसके शिष्यों ने उससे पूछा, यहूदी धर्मशास्त्री
फिर क्यों कहते हैं, एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?”
11उत्तर देते हुए उसने उनसे कहा, “एलिय्याह आ रहा
है, वह हर वस्तु को व्यवस्थित कर देगा। 12किन्तु मैं
तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह तो अब तक आ चुका है।
पर लोगों ने उसे पहचाना नहीं। और उसके साथ जैसा
चाहा वैसा किया। उनके द्वारा मनुष्य के पुत्र को भी वैसे
ही सताया जाने वाला है।” 13तब उसके शिष्य समझे कि
उसने उनसे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के बारे में कहा था।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

14जब यीशु भीड़ में वापस आया तो एक व्यक्ति उसके
पास आया और उसे दंडवत प्रणाम करके बोला, 15“हे
प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर। उसे मिर्गी आती है। वह बहुत
तड़पता है। वह आग में या पानी में अक्सर गिरता पड़ता
रहता है। 16मैं उसे तेरे शिष्यों के पास लाया, पर वे उसे
अच्छा नहीं कर पाये।”
17उत्तर में यीशु ने कहा, “अरे भटके हुए अविश्वासी
लोगों! मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा? कितने
समय मैं यूँ ही तुम्हारी सहता रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास
लाओ।” 18फिर यीशु ने दुष्टात्मा को आदेश दिया और
वह उसमें से बाहर निकल आयी। और वह लड़का तत्काल
अच्छा हो गया।
19फिर उसके शिष्यों ने अकेले में यीशु के पास जाकर
पूछा, “हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकाल पाये?”
20यीशु ने उन्हें बताया, “क्योंकि तुममें विश्वास की
कमी है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यदि तुममें राई के बीज
जितना भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कह सकते हो
‘यहाँ से हट कर वहाँ चला जा’ और वह चला जायेगा।
तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी नहीं होगा।” 21[‘ऐसी दुष्टात्मा
केवल प्रार्थना या उपवास करने से निकलती है।’]*

यीशु का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

22जब यीशु के शिष्य आए और उसके साथ गलील में
मिले तो यीशु ने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के
द्वारा ही पकड़वाया जाने वाला है 23जो उसे मार डालेंगे।
किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।” इस पर यीशु के
शिष्य बहुत व्याकुल हुए।

कर का भुगतान

24जब यीशु और उसके शिष्य कफ़रनहूम में आये तो
मंदिर का दो दरम का कर वसूल करने वाले पतरस के
पास आये और बोले, “क्या तेरा गुरु दो दरम का मंदिर का
कर नहीं देता?” 25पतरस ने उत्तर दिया, “हाँ, वह देता है।”
और घर में चला आया। पतरस से बोलने के पहले ही यीशु
बोल पड़ा, उसने कहा, “शमौन, तेरा क्या विचार है? धरती
के राजा किससे चुंगी और कर लेते हैं? स्वयं अपने बच्चों
से या दूसरों के बच्चों से?”
26पतरस ने उत्तर दिया, “दूसरे के बच्चों से।” तब यीशु
ने उससे कहा, “यानी उसके अपने बच्चों को छूट रहती
है। 27पर हम उन लोगों को नाराज़ न करें इसलिये झील
पर जा और अपना काँटा फेंक और फिर जो पहली मछली
पकड़ में आये उसका मुँह खोलना तुझे चार दरम का
सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे
देना।”

सबसे बड़ा कौन

18 तब यीशु के शिष्यों ने उसके पास आकर पूछा,
“स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?”
2तब यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और
उसे उनके सामने खड़ा करके कहा, 3“मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ जब तक कि तुम लोग बदलोगे नहीं और बच्चों
के समान नहीं बन जाओगे, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं
कर सकोगे। 4इसलिये अपने आपको जो कोई इस बच्चे
के समान नम्र बनाता है, वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा
है।”
5“और जो कोई ऐसे बालक जैसे व्यक्ति को मेरे नाम में
स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है। 6किन्तु जो
मुझमें विश्वास करने वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी
के रास्ते की बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में
एक चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में

पद 21 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 21 जोड़ा गया है।

डुबो दिया जाये। 7बाधाओं के कारण मुझे संसार के लोगों के लिए खेद है पर, बाधाएँ तो आयेंगी ही किन्तु खेद तो मुझे उस पर है जिसके द्वारा बाधाएँ आती है। 8इसलिए यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तेरे लिए बाधा बने तो उसे काट फेंक, क्योंकि स्वर्ग में बिना हाथ या बिना पैर के अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों हाथों और दोनों पैरों समेत तुझे नरक की कभी न बुझने वाली आग में डाल दिया जाये। 9यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों आँखों समेत तुझे नरक की आग में डाल दिया जाए।

खोई भेड़ की दृष्टान्त-कथा

10"सो देखो, मेरे इन मासूम अनुयायिओं में से किसी को भी तुच्छ मत समझना। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके रक्षक स्वर्गदूतों की पहुँच स्वर्ग में मेरे परम पिता के पास लगातार रहती है।11["मनुष्य का पुत्र भटके हुओं के उद्धार के लिये आया।"]*

12"बता तू क्या सोचता है? यदि किसी के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाये तो क्या वह दूसरी निन्यानवें भेड़ों को पहाड़ी पर ही छोड़ कर उस एक खोई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? 13(वह निश्चय ही जाएगा) और जब उसे वह मिल जायेगी, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ तो वह दूसरी निन्यानवें की बजाय-जो खोई नहीं थीं, इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। 14इसी तरह स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता क्या नहीं चाहता कि मेरे इन अबोध अनुयायिओं में से कोई एक भी न भटके।

जब कोई तेरा बुरा करे

15"यदि तेरा बन्धु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता। यदि वह तेरी सुन ले तो तूने अपने बंधु को फिर जीत लिया। 16पर यदि वह तेरी न सुने तो दो एक को अपने साथ ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सकें। 17यदि वह उन की भी न सुने तो कलीसिया को बता दे। और यदि वह कलीसिया की भी न माने तो फिर तू उस से ऐसे व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या कर वसूलने वाला हो।

18"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे स्वर्ग में प्रभु के द्वारा बाँधा जायेगा और जिस किसी को तुम धरती पर छोड़ोगे स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जायेगा।

19"मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि इस धरती पर यदि तुम में से कोई दो सहमत हो कर स्वर्ग में स्थित मेरे पिता से कुछ माँगोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा 20क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ हूँ।"

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त-कथा

21फिर पतरस यीशु के पास गया और बोला, "प्रभु, मुझे अपने भाई को कितनी बार अपने प्रति अपराध करने पर भी क्षमा कर देना चाहिए? यदि वह सात बार अपराध करे तो भी?"

22यीशु ने कहा, "न केवल सात बार, बल्कि मैं तुझे बताता हूँ तुझे उसे सतत्तर बार तक क्षमा करते जाना चाहिये।

23"सो स्वर्ग के राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने की सोची थी। 24जब उसने हिसाब लेना शुरू किया तो उसके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जिस पर दसियों लाख रुपया निकलता था। 25पर उसके पास चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी घर वाली, उसके बाल बच्चों और जो कुछ उसका माल असबाब है, सब समेत बेच कर कर्ज़ चुका दिया जाये।

26"तब उसका दास उसके पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा, 'धीरज धरो, मैं सब कुछ चुका दूँगा।' 27इस पर स्वामी को उस दास पर दया आ गयी। उसने उसका कर्ज़ा माफ करके उसे छोड़ दिया।

28"फिर जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रुपये देने थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका गला घोटते हुए बोला, 'जो तुझे मेरा देना है, लौटा दे!'

29"इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, 'धीरज धर, मैं चुका दूँगा।'

पद 11 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 11 जोड़ा गया है।

30“पर उसने मना कर दिया। इतना ही नहीं उसने उसे
तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न चुका दे,
जेल भी भिजवा दिया। 31दूसरे दास इस सारी घटना को
देखकर बहुत दुखी हुए। और उन्होंने जो कुछ घटा था,
सब अपने स्वामी को जाकर बता दिया।

32“तब उसके स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, ‘अरे
नीच दास, मैंने तेरा वह सारा कर्ज़ माफ कर दिया क्योंकि
तूने मुझ से दया की भीख माँगी थी। 33क्या तुझे भी अपने
साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिये थी जैसे मैंने तुझ
पर दया की थी?’ 34सो उसका स्वामी बहुत बिगड़ा और
उसे तब तक दण्ड भुगतने के लिए सौंप दिया जब तक
समूचा कर्ज़ चुकता न हो जाये।

35“सो जब तक तुम अपने भाई-बंदों को अपने मन से
क्षमा न कर दो मेरा स्वर्गीय परम पिता भी तुम्हारे साथ
वैसा ही व्यवहार करेगा।”

तलाक

19 ये बातें कहने के बाद वह गलील से लौट कर
यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार चला गया।
2एक बड़ी भीड़ वहाँ उसके पीछे हो ली, जिसे उसने चंगा
किया।

3उसे परखने के जतन में कुछ फरीसी उसके पास
पहुँचे और बोले, “क्या यह उचित है कि कोई अपनी पत्नी
को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है?’

4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “क्या तुमने शास्त्र में नहीं
पढ़ा कि जगत को रचने वाले ने प्रारम्भ में, ‘उन्हें एक स्त्री
और एक पुरुष के रूप में रचा था?’* 5और कहा था
‘इसी कारण अपने माता-पिता को छोड़ कर पुरुष अपनी
पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक शरीर होकर रहेगा।’*
6सो वे दो नहीं रहते बल्कि एक रूप हो जाते हैं। इसलिये
जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य को अलग
नही करना चाहिये।”

7वे बोले, “फिर मूसा ने यह क्यों निर्धारित किया है कि
कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। शर्त यह
है कि वह उसे तलाक नामा लिख कर दे।”

8यीशु ने उनसे कहा, “मूसा ने यह विधान तुम लोगों
के मन की जड़ता के कारण दिया था। किन्तु प्रारम्भ में
ऐसी रीति नहीं थी। 9तो मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यभिचार
को छोड़कर अपनी पत्नी को किसी और कारण से त्यागता
है और किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता है तो वह व्यभिचार
करता है।”*

10इस पर उसके शिष्यों ने उससे कहा, “यदि एक स्त्री
और एक पुरुष के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी को ब्याह
ही नहीं करना चाहिये।”

11फिर यीशु ने उनसे कहा, “हर कोई तो इस उपदेश
को ग्रहण नहीं कर सकता। इसे बस वे ही ग्रहण कर सकते
हैं जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है। 12कुछ ऐसे हैं
जो अपनी माँ के गर्भ से ही नपुंसक पैदा हुए हैं। और कुछ
ऐसे हैं जो लोगों द्वारा नपुंसक बना दिये गये हैं। और अंत में
कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के कारण विवाह नहीं
करने का निश्चय किया है। जो इस उपदेश को ले सकता
है, ले।”

यीशु की आशीष : बच्चों को

13फिर लोग कुछ बालकों को यीशु के पास लाये कि
वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे और
उनके लिए प्रार्थना करे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें
डाँटा। 14उस पर यीशु ने कहा, “बच्चों को रहने दो, उन्हें
मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों
का ही है।” 15फिर उसने बच्चों के सिर पर अपना हाथ
रखा और वहाँ से चल दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

16वहीं एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और
बोला, “गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा
काम करना चाहिये?”

17यीशु ने उससे कहा, “अच्छा क्या है, इसके बारे में तू
मुझसे क्यों पूछ रहा है? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही
है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता
है, तो तू आदेशों का पालन कर।”

18उसने यीशु से पूछा, “कौन से आदेश?” तब यीशु
बोला, “हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत
कर। झूठी गवाही मत दे। 19अपने पिता और अपनी माता

रचने वाले ... रचा था देखें उत्पत्ति 1:27; 5:2
इसी कारण ... कर रहेगा देखें उत्पत्ति 2:24

पद 9 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है जो इस
प्रकार है: “और जो छोड़ी हुई स्त्री को ब्याहता है वह व्यभिचार
करता है।”

का आदर कर'* और 'जैसे तू अपने आप को प्यार करता
है, वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।'*"
20युवक ने यीशु से पूछा, "मैंने इन सब बातों का पालन
किया है। अब मुझमें किस बात की कमी है?"
21यीशु ने उससे कहा, "यदि तू संपूर्ण बनना चाहता तो
जा और जो कुछ तेरे पास है, उसे बेचकर धन गरीबों में
बाँट दे ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके। फिर आ और
मेरे पीछे हो ले!"
22किन्तु जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह दुखी
होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।
23यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना
कठिन है। 24हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि किसी धनवान
व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने से एक ऊँट का सूई
के नकुए से निकल जाना आसान है।"
25जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो अचरज से भरकर
पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"
26यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "मनुष्यों के लिए यह
असम्भव है, किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।"
27उत्तर में तब पतरस ने उससे कहा, "देख, हम सब
कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं। सो हमें क्या मिलेगा?"
28यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ
कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्रतापी सिंहासन
पर विराजेगा तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह
सिंहासनों पर बैठ कर परमेश्वर के लोगों का न्याय करोगे।
29और मेरे लिए जिसने भी घर–बार या भाइयों या बहनों
या पिता या माता या बच्चों या खेतों को त्याग दिया है, वह
सौ गुणा अधिक पायेगा और अनन्त जीवन का भी
अधिकारी बनेगा। 30किन्तु बहुत से जो अब पहले हैं,
अन्तिम हो जायेंगे और जो अन्तिम हैं, पहले हो जायेंगे।"

मज़दूरों की दृष्टांत–कथा

20 "स्वर्ग का राज्य एक ज़मींदार के समान है
जो सुबह सवेरे अपने अंगूर के बगीचों के लिये
मज़दूर लाने को निकला। 2उसने चाँदी के एक रुपए पर
मज़दूर रख कर उन्हें अपने अंगूर के बगीचे में काम
करने भेज दिया।
3"नौ बजे के आसपास ज़मींदार फिर घर से निकला
और उसने देखा कि कुछ लोग बाज़ार में इधर उधर यूँ ही
बेकार खड़े हैं। 4तब उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर
के बगीचे में जाओ, मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा, दूँगा।'
5सो वे भी बगीचे में काम करने चले गये।
"फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के आसपास,
उसने वैसा ही किया। 6कोई पाँच बजे वह फिर अपने घर
से गया और कुछ लोगों को बाज़ार में इधर उधर खड़े
देखा। उसने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ दिन भर बेकार ही क्यों
खड़े रहते हो?'
7"उन्होंने उससे कहा, 'क्योंकि हमें किसी ने मजूरी पर
नहीं रखा।'
"उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में
चले जाओ।'
8"जब साँझ हुई तो अंगूर के बगीचे के मालिक ने
अपने प्रधान कर्मचारी को कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर
अंतिम मज़दूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे उन
तक सब की मज़दूरी चुका दो।'
9"सो वे मज़दूर जो पाँच बजे लगाये थे, आये और उनमें
से हर किसी को चाँदी का एक रुपया मिला। 10फिर जो
पहले लगाये गये थे, वे आये। उन्होंने सोचा उन्हें कुछ
अधिक मिलेगा पर उनमें से भी हर एक को एक ही चाँदी
का रुपया मिला। 11रुपया तो उन्होंने ले लिया पर ज़मींदार
से शिकायत करते हुए 12उन्होंने कहा, 'जो बाद में लगे थे,
उन्होंने बस एक घंटा काम किया और तूने हमें भी उतना
ही दिया जितना उन्हें। जबकि हमने सारे दिन चमचमाती
धूप में मेहनत की।'
13"उत्तर में उनमें से किसी एक से जमींदार ने कहा,
'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या
हमने तय नहीं किया था कि मैं तुम्हें चाँदी का एक रुपया
दूँगा? 14जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मैं सबसे बाद
में रखे गये इस को भी उतनी ही मज़दूरी देना चाहता हूँ
जितनी तुझे दे रहा हूँ। 15क्या मैं अपने धन का जो चाहूँ
वह करने का अधिकार नहीं रखता? मैं अच्छा हूँ क्या तू
इससे जलता है?'
16"इस प्रकार अंतिम पहले हो जायेंगे और पहले
अंतिम हो जायेंगे।"

अपने पिता ... आदर कर निर्गमन 20:12–16
वैसे ही ... प्यार कर लैव्य. 19:18

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

17जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ यरुशलेम जा रहा था तो वह उन्हें एक तरफ़ ले गया और चलते चलते उनसे बोला, 18"सुनो, हम यरुशलेम पहुँचने को हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों के हाथों सौंप दिया जायेगा। वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहरायेंगे। 19फिर उसका उपहास करवाने और कोड़े लगवाने को उसे ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे। फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।"

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

20फिर जब्दी के बेटों की माँ अपने बेटों समेत यीशु के पास पहुँची और उसने झुक कर प्रार्थना करते हुए उससे कुछ माँगा।

21यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती है?"

वह बोली, "मुझे वचन दे कि मेरे ये दोनों बेटे तेरे राज्य में एक तेरे दाहिनी ओर और दूसरा तेरे बाईं ओर बैठे।"

22यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह प्याला पी सकते हो, जिसे मैं पीने वाला हूँ?"

उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं!"

23यीशु उनसे बोला, "निश्चय ही तुम वह प्याला पीयोगे। किन्तु मेरे दाएँ और बायें बैठने का अधिकार देने वाला मैं नहीं हूँ। यहाँ बैठने का अधिकार तो उनका है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है।"

24जब बाकी दस शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों भाइयों पर बहुत बिगड़े। 25तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि गैर यहूदी राजा, लोगों पर अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं और उनके महत्त्वपूर्ण नेता, लोगों पर अपना अधिकार जताना चाहते हैं। 26किन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिये। बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहे, तुम्हारा सेवक बने। 27और तुममें से जो कोई पहला बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास बनना होगा। 28तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही होना चाहिये जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती देने आया है।"

अंधों को आँखें

29जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली। 30वहाँ सड़क किनारे दो अंधे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, वे चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

31इस पर भीड़ ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को कहा। पर वे और अधिक चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

32फिर यीशु रुका और उनसे बोला। उसने कहा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?"

33उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, हम चाहते हैं कि देख सकें।"

34यीशु को उन पर दया आयी। उसने उनकी आँखों को छुआ, और तुरंत ही वे फिर देखने लगे। वे उसके पीछे हो लिए।

यीशु का यरुशलेम में भव्य प्रवेश

21 यीशु और उसके अनुयायी जब यरुशलेम के पास जैतून पर्वत के निकट बैतफगे पहुँचे तो यीशु ने अपने दो शिष्यों को 2यह आदेश देकर भेजा कि अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ जाते ही तुम्हें एक गर्धबी बँधी मिलेगी। उसके साथ उसका बछेरा भी होगा। उन्हें बाँध कर मेरे पास ले आओ। 3यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो उससे कहना 'प्रभु को इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।'"

4ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का यह वचन पूरा हो:

5 "सिओन की नगरी से कहो,
'देख तेरा राजा तेरे पास आ रहा है।
वह विनयपूर्ण है, वह गर्धब पर सवार है,
हाँ गर्धब के बछेरे पर जो
एक श्रमिक पशु का बछेरा है।'"

जकर्याह 9:9

6सो उसके शिष्य चले गये और वैसा ही किया जैसा उन्हें यीशु ने बताया था। 7वे गर्धबी और उसके बछेरे को ले आये। और उन पर अपने वस्त्र डाल दिये क्योंकि यीशु को बैठना था। 8भीड़ में बहुत से लोगों ने अपने वस्त्र राह में बिछा दिये और दूसरे लोग पेड़ों से टहनियाँ काट लाये और उन्हें मार्ग में बिछा दिया। 9जो लोग उनके आगे चल

रहे थे और जो लोग उनके पीछे चल रहे थे सब पुकार कर कह रहे थे:

> "होशन्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र!
> जो आ रहा है प्रभु के नाम पर
> धन्य है प्रभु जो स्वर्ग में विराजा!"
>
> *भजन संहिता 118:26*

10सो जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समूचे नगर में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, "यह कौन है?"

11लोग ही जवाब दे रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

यीशु मंदिर में

12फिर यीशु मंदिर के अहाते में आया और उसने मन्दिर के अहाते में जो लोग ले-बेच कर रहे थे, उन सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन-देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। 13वह उनसे बोला, "शास्त्र कहते हैं 'मेरा घर प्रार्थना-गृह कहलायेगा।* किन्तु तुम इसे डाकुओं का अड्डा बना रहे हो।'"

14मंदिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले उसके पास आये। जिन्हें उसने चंगा कर दिया। 15जब प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों ने उन अद्भुत कामों को देखा जो उसने किये थे और मंदिर में बच्चों को ऊँचे स्वर में कहते सुना: "होशन्ना। दाऊद का वह पुत्र धन्य है"

16तो वे बहुत क्रोधित हुए। और उससे पूछा, "तू सुनता है ये क्या कह रहे हैं?"

यीशु ने उनसे कहा, "हाँ सुनता हूँ। क्या धर्मशास्त्र में तुम लोगों ने नहीं पढ़ा-'तूने बालकों और दूध पीते बच्चों तक से स्तुति करवाई है।'"*

17फिर उन्हें वहीं छोड़ कर वह यरुशलेम नगर से बाहर बैतनिय्याह को चला गया। जहाँ उसने रात बिताई।

विश्वास की शक्ति

18अगले दिन अलख सुबह जब वह नगर को वापस लौट रहा था तो उसे भूख लगी। 19राह किनारे उसने अंजीर का एक पेड़ देखा सो वह उसके पास गया, पर उसे उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ नहीं मिला। सो उसने पेड़ से कहा, "तुझ पर आगे कभी फल न लगे!" और वह अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया।

20जब शिष्यों ने यह देखा तो अचरज के साथ पूछा, "यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया?"

21यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। यदि तुम में विश्वास है और तुम संदेह नहीं करते तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने अंजीर के पेड़ का किया। बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, 'उठ और अपने आप को सागर में डुबो दे' तो वही हो जायेगा। 22और प्रार्थना करते तुम जो कुछ माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।"

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

23जब यीशु मंदिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने पास जाकर उससे पूछा, "ऐसी बातें तू किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किसने दिया?"

24उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं ये बातें किस अधिकार से करता हूँ। 25बताओ यूहन्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला? परमेश्वर से या मनुष्य से?"

वे आपस में विचार करते हुए कहने लगे, "यदि हम कहते हैं 'परमेश्वर से' तो यह हमसे पूछेगा 'फिर तुम उस पर विश्वास क्यों नहीं करते?' 26किन्तु यदि हम कहते हैं 'मनुष्य से' तो हमें लोगों का डर है क्योंकि वे यूहन्ना को एक नबी मानते हैं।"

27सो उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, "हमें नहीं पता।"

इस पर यीशु उनसे बोला, "अच्छा तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये बातें मैं किस अधिकार से करता हूँ!"

यहूदियों के लिए एक दृष्टांत-कथा

28"अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते हो? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह बड़े के पास गया और बोला, 'पुत्र आज मेरे अंगूरों के बगीचे में जा और काम कर।'

29"किन्तु पुत्र ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा नहीं है' पर बाद में उसका मन बदल गया और वह चला गया।

मेरा घर ... कहलायेगा यिर्म. 7:11

तूने बालकों ... करवाई है भजन. 8:3

30“फिर वह पिता दूसरे बेटे के पास गया और उससे
भी वैसे ही कहा। उत्तर में बेटे ने कहा, ‘जी हाँ’, मगर वह
गया नहीं।
31“बताओ इन दोनों में से जो पिता चाहता था, किसने
किया?”
उन्होंने कहा, “बड़े ने।”
यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कर
वसूलने वाले और वेश्याएँ परमेश्वर के राज्य में तुमसे
पहले जायेंगे। 32यह मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि बपतिस्मा
देने वाला यूहन्ना तुम्हें जीवन का सही रास्ता दिखाने आया
और तुमने उसमें विश्वास नहीं किया। किन्तु कर वसूलने
वालों और वेश्याओं ने उसमें विश्वास किया। तुमने जब
यह देखा तो भी बाद में न मन फिराया और न ही उस पर
विश्वास किया।”

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

33“एक और दृष्टान्त सुनो: एक ज़मींदार था। उसने
अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर बाड़
लगा दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ लगाने
को एक गढ़ा खोदा और रखवाली के लिए एक मीनार
बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर चला गया।
34जब अंगूर उतारने का समय आया तो बगीचे के मालिक
ने किसानों के पास अपने दास भेजे ताकि वे अपने हिस्से
के अंगूर ले आयें।
35“किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया।
किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और किसी
को तो मार ही डाला। 36एक बार फिर उसने पहले से और
अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उनके साथ भी वैसा ही
बर्ताव किया। 37बाद में उसने उनके पास अपने बेटे को
भेजा। उसने कहा, ‘वे मेरे बेटे का तो मान रखेंगे ही।’
38“किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो
वे आपस में कहने लगे,‘यह तो उसका उत्तराधिकारी है,
आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार हथिया
लें।’ 39सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के बाहर धकेल
दिया और मार डाला।
40“तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का
मालिक आयेगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?”
41उन्होंने उससे कहा, “क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए
वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे को
दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने पर
उसे उसका हिस्सा देंगे।”
42यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने शास्त्र का यह वचन
नहीं पढ़ा:

‘जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने
बेकार समझा, वही कोने का सबसे
अधिक महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया?’
‘ऐसा प्रभु के द्वारा किया गया जो
हमारी दृष्टि में अद्भुत है।’

भजन संहिता 118:22–23

43“इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ परमेश्वर का राज्य
तुमसे छीन लिया जायेगा और वह उन लोगों को दे दिया
जायेगा जो उसके राज्य के अनुसार बर्ताव करेंगे। 44जो
इस चट्टान पर गिरेगा, टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और यदि
यह चट्टान किसी पर गिरेगी तो उसे रौंद डालेगी।”
45जब प्रमुख याजकों और फ़रीसियों ने यीशु की
दृष्टांत-कथाएँ सुनीं तो वे ताड़ गये कि वह उन्हीं के बारे
में कह रहा था। 46सो उन्होंने उसे पकड़ने का जतन किया
किन्तु वे लोगों से डरते थे क्योंकि लोग यीशु को नबी
मानते थे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त-कथा

22 एक बार फिर यीशु उनसे दृष्टान्त कथाएँ कहने
लगा। वह बोला, 2“स्वर्ग का राज्य उस राजा
के जैसा है जिसने अपने बेटे के ब्याह पर दावत दी। 3राजा
ने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को बुला लायें
जिन्हें विवाह भोज पर न्योता दिया गया है। किन्तु वे लोग
नहीं आये।
4“उसने अपने सेवकों को फिर भेजा, उसने कहा कि
जिन लोगों को विवाह-भोज पर बुलाया गया है उनसे कहो,
‘देखो मेरी दावत तैयार है। मेरे साँड़ों और मोटे ताजे पशुओं
को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार है। ब्याह की दावत
में आ जाओ।’
5“पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे
चले गये। कोई अपने खेतों में काम करने चला गया तो
कोई अपने काम धन्धे पर। 6और कुछ लोगों ने तो राजा
के सेवकों को पकड़ कर उनके साथ मार-पीट की
और उन्हें मार डाला। 7सो राजा ने क्रोधित होकर अपने

सैनिक भेजे। उन्होंने उन हत्यारों को मौत के घाट उतार दिया और उनके नगर में आग लगा दी।

8“फिर राजा ने सेवकों से कहा, ‘विवाह भोज तैयार है किन्तु जिन्हें बुलाया गया था, वे अयोग्य सिद्ध हुए। 9इसलिये गली के नुक्कड़ों पर जाओ और तुम जिसे भी पाओ ब्याह की दावत पर बुला लाओ।’ 10फिर सेवक गलियों में गये और जो भी भले बुरे लोग उन्हें मिले वे उन्हें बुला लाये। और शादी का महल महमानों से भर गया।

11“किन्तु जब मेहमानों को देखने राजा आया तो वहाँ उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने थे। 12राजा ने उससे कहा, ‘हे मित्र, विवाह के वस्त्र पहने बिना तू यहाँ भीतर कैसे आ गया?’ पर वह व्यक्ति चुप रहा। 13इस पर राजा ने अपने सेवकों से कहा, ‘इसके हाथ-पाँव बाँध कर बाहर अन्धेरे में फेंक दो। जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते होंगे।’

14“क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।”

यहूदी नेताओं की चाल

15फिर फरीसियों ने जाकर एक सभा बुलाई, जिससे वे इस बात का गणित कर सकें कि यीशु को उसकी अपनी ही कही किसी बात में कैसे फँसाया जा सकता है। 16उन्होंने अपने चेलों को हिरोदियों के साथ उसके पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, “गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है तू सचमुच परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। और तू, कोई क्या सोचता है, तू इसकी चिंता नहीं करता क्योंकि तू किसी व्यक्ति की हैसियत पर नहीं जाता। 17सो हमें बता तेरा क्या विचार है कि सम्राट कैसर को कर चुकाना उचित है कि नहीं?”

18यीशु उनके बुरे इरादे को ताड़ गया, सो वह बोला, “ओ कपटियो! तुम मुझे क्यों परखना चाहते हो? 19मुझे कोई दीनारी दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।” सो वे उसके पास दीनारी ले आये। 20तब उसने उनसे कहा, “इस पर किसकी मूरत और लेख खुदे हैं?”

21उन्होंने उससे कहा, “महाराजा कैसर के।”

तब उसने उनसे कहा, “अच्छा तो फिर जो महाराजा कैसर का है, उसे महाराजा कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को।”

22यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़ कर चले गये।

सदूकियों की चाल

23उसी दिन कुछ सदूकी जो पुर्नजीवन को नहीं मानते थे, उसके पास आये। और उससे पूछा 24कि “गुरु, मूसा के उपदेश के अनुसार यदि बिना बाल बच्चों के कोई मर जाये तो उसका भाई, निकट सम्बन्धी होने के नाते उसकी विधवा से ब्याह करे और अपने भाई का वंश बढ़ाने के लिये संतान पैदा करे। 25अब मानो हम सात भाई हैं। पहले का ब्याह हुआ और बाद में उसकी मृत्यु हो गयी। फिर क्योंकि उसके कोई संतान नहीं हुई, इसलिये उसके भाई ने उसकी पत्नी को अपना लिया। 26जब तक कि सातों भाई मर नहीं गये दूसरे, तीसरे भाइयों के साथ भी वैसा ही हुआ 27और सब के बाद वह स्त्री भी मर गयी। 28अब हमारा पूछना यह है कि अगले जीवन में उन सातों में से वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उसे सातों ने ही अपनाया था?”

29उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, “तुम भूल करते हो क्योंकि तुम शास्त्रों को और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। 30तुम्हें समझना चाहिये कि पुर्नजीवन में लोग न तो शादी करेंगे और न ही कोई शादी में दिया जायेगा। बल्कि वे स्वर्ग के दूतों के समान होंगे। 31इसी सिलसिले में तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर ने मरे हुओं के पुनरुत्थान के बारे में जो कहा है, क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा? उसने कहा था, 32‘मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ, और याकूब का परमेश्वर हूँ।’* वह मरे हुओं का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।”

33जब लोगों ने यह सुना तो उसके उपदेश पर वे बहुत चकित हो गए।

सबसे बड़ा आदेश

34जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से सदूकियों को चुप करा दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए 35उनमें से एक यहूदी धर्मशास्त्री ने यीशु को फँसाने के उद्देश्य से उससे पूछा, 36“गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ा आदेश कौन सा है?”

मैं … परमेश्वर हूँ देखें निर्गमन 3:6

[37]यीशु ने उससे कहा, "सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।"* [38]यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। [39]फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* [40]सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ इन्हीं दो आदेशों पर टिके हैं।"

यीशु का फ़रीसियों से एक प्रश्न

[41]जब फ़रीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछा, [42]"मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो कि वह किसका बेटा है?"

उन्होंने उससे कहा, "दाऊद का।" [43]यीशु ने उनसे पूछा, "फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहते हुए यह क्यों कहा था कि:

44 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा:
'मेरे दाहिने हाथ बैठ कर शासन कर
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को
तेरे अधीन न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[45]फिर जब दाऊद ने उसे प्रभु कहा तो वह उसका बेटा कैसे हो सकता है?" [46]उत्तर में कोई भी उससे कुछ नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ।

यीशु द्वारा यहूदी धर्म-नेताओं की आलोचना

23 यीशु ने फिर अपने शिष्यों और भीड़ से कहा। [2]उसने कहा, "यहूदी धर्म शास्त्री और फरीसी मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी हैं। [3]इसलिए जो कुछ वे कहें उस पर चलना और उसका पालन करना। किन्तु जो वे करते हैं वह मत करना। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे बस कहते हैं पर करते नहीं हैं। [4]वे लोगों के कंधों पर इतना बोझ लाद देते हैं कि वे उसे उठा कर चल ही न सकें और लोगों पर दबाव डालते हैं कि वे उसे लेकर चलें। किन्तु वे स्वयं उनमें से किसी पर भी चलने के लिए पाँव तक नहीं हिलाते।

[5]"वे अच्छे कर्म इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें देखें। वास्तव में वे अपने ताबीज़ों और पोशाकों की झालरों को इसलिये बड़े से बड़ा करते रहते हैं ताकि लोग उन्हें धर्मात्मा समझें। [6]वे उत्सवों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान पाना चाहते हैं। धर्म सभाओं में उन्हें प्रमुख आसन चाहिये। [7]बाज़ारों में वे आदर के साथ नमस्कार कराना चाहते हैं। और चाहते हैं कि लोग उन्हें रब्बी* कहकर संबोधित करें।

[8]"किन्तु तुम लोगों से अपने आप को रब्बी मत कहलवाना क्योंकि तुम्हारा सच्चा गुरु तो बस एक है। और तुम सब केवल भाई बहन हो। [9]धरती पर लोगों को तुम अपने में से किसी को भी 'पिता' मत कहने देना। क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, और वह स्वर्ग में है। [10]न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी कहने देना क्योंकि तुम्हारा स्वामी तो बस एक ही है और वह मसीह है। [11]तुममें सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वही होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा। [12]जो अपने आपको उठायेगा उसे नवा दिया जायेगा और जो अपने आपको नवाएगा उसे उठाया जायेगा।

[13]"अरे कपटी धर्मशास्त्रियो! और फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार है। तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो। न तो तुम स्वयं उसमें प्रवेश करते हो और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। [14]["ओ कपटी, यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो तुम विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हो। दिखाने के लिये लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हो। इसके लिये तुम्हें कड़ा दण्ड मिलेगा।"]*

[15]"अरे कपटी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम किसी को अपने पंथ में लाने के लिए धरती और समुद्र पार कर जाते हो। और जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी दुगुना नरक का पात्र बना देते हो!

[16]"अरे अंधे रहनुमाओं! तुम्हें धिक्कार है जो कहते हो यदि कोई मंदिर की सौगंध खाता है तो उसे उस शपथ को रखना आवश्यक नहीं है किन्तु यदि कोई मंदिर के सोने की शपथ खाता है तो उसे उस शपथ का पालन आवश्यक है। [17]अरे अंधे मूर्खो! बड़ा कौन है? मन्दिर का सोना या वह मंदिर जिसने उस सोने को पवित्र बनाया।

सम्पूर्ण मन ... करना चाहिये व्यवस्था. 6:5
अपने पड़ोसी ... करता है लैव्य.19:18

रब्बी अर्थात् गुरु।
पद 14 कुछ यूनानी प्रतियों में यह पद 14 जोड़ा गया है।

18तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी की सौगंध खाता है
तो कुछ नहीं,' किन्तु यदि कोई वेदी पर रखे चढ़ावे की
सौगंध खाता है तो वह अपनी सौगंध से बँधा है। 19अरे
अंधो! कौन बड़ा है? वेदी पर रखा चढ़ावा या वह वेदी
जिससे वह चढ़ावा पवित्र बनता है? 20इसलिये यदि कोई
वेदी की शपथ लेता है तो वह वेदी के साथ वेदी पर जो
रखा है, उस सब की भी शपथ लेता है। 21वह जो मंदिर है,
उसकी भी शपथ लेता है वह मंदिर के साथ जो मंदिर के
भीतर है, उसकी भी शपथ लेता है। 22और वह जो स्वर्ग
की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो
उस सिंहासन पर विराजमान है उसकी भी शपथ लेता है।

23"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो!
तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक कि
अपने पुदीने, सौंफ और जीरे तक के दसवें भाग को
परमेश्वर को देते हो। फिर भी तुम व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण
बातों यानी न्याय, दया और विश्वास का तिरस्कार करते
हो। तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये बिना इनका पालन
करना चाहिये था। 24ओ अंधे रहनुमाओ! तुम अपने
पानी से मच्छर तो छानते हो पर ऊँट को निगल जाते
हो।

25"ओ कपटी यहूदी धर्म शास्त्रियो! और फरीसियों! तुम्हें
धिक्कार है। तुम अपनी कटोरियाँ और थालियाँ बाहर से
तो धोकर साफ करते हो पर उनके भीतर जो तुमने छल
कपट या अपने लिये रियायत में पाया है, भरा है। 26अरे
अंधे फरीसियो! पहले अपने प्याले को भीतर से माँजो
ताकि भीतर के साथ वह बाहर से भी स्वच्छ हो जाये।

27"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों!
तुम्हें धिक्कार है। तुम लिपी–पुती समाधि के समान हो जो
बाहर से तो सुंदर दिखती है किन्तु भीतर से मरे हुओं की
हड्डियों और हर तरह की अपवित्रता से भरी होती है।
28ऐसे ही तुम बाहर से तो धर्मात्मा दिखाई देते हो किन्तु
भीतर से छलकपट और बुराई से भरे हुए हो।

29"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियो!
तुम नबियों के लिये मक़बरे बनाते हो और धर्मात्माओं
की क़ब्रों को सजाते हो। 30और कहते हो कि 'यदि तुम
अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों को मारने में
उनका हाथ नहीं बटाते।' 31मतलब यह कि तुम मानते हो
कि तुम उनकी संतान हो जो नबियों के हत्यारे थे। 32सो
तुम जो तुम्हारे पुरखों ने शुरू किया, उसे पूरा करो।

33"अरे साँपों और नागों की संतानो! तुम कैसे सोचते
हो कि तुम नरक भोगने से बच जाओगे। 34इसलिये मैं
तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों और
गुरुओं को भेज रहा हूँ। तुम उनमें से बहुतों को मार
डालोगे और बहुतों को क्रूस पर चढ़ाओगे। कुछ एक को
तुम अपनी धर्मसभाओं में कोड़े लगवाओगे और एक
नगर से दूसरे नगर उनका पीछा करते फिरोगे।
35परिणामस्वरूप निर्दोष हाबील से लेकर बिरिक्याह के
बेटे जकरयाह तक जिसे तुमने मन्दिर के गर्भ गृह और
वेदी के बीच मार डाला था, हर निरपराध व्यक्ति की
हत्या का दण्ड तुम पर होगा। 36मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ
इस सब कुछ के लिये इस पीढ़ी के लोगों को दंड भोगना
होगा।"

यरूशलेम के लोगों पर यीशु को खेद

37"ओ यरूशलेम, यरूशलेम! तू वह है जो नबियों की
हत्या करता है और परमेश्वर के भेजे दूतों को पत्थर
मारता है। मैंने कितनी बार चाहा है कि जैसे कोई मुर्गी
अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती है
वैसे ही मैं तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ। किन्तु तुम लोगों ने
नहीं चाहा। 38अब तेरा मंदिर पूरी तरह उजड़ जायेगा।
39सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ तुम मुझे तब तक फिर नहीं
देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: 'धन्य है वह जो प्रभु
के नाम पर आ रहा है!'"*

यीशु द्वारा मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी

24 मंदिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से
होकर जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मंदिर
के भवन दिखाने उसके पास आये। 2इस पर यीशु ने उनसे
कहा, "तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं तुम्हें
सच बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं
रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।"

3यीशु जब जैतून पर्वत* पर बैठा था तो एकांत में उसके
शिष्य उसके पास आये और बोले, "हमें बता यह कब
घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का अंत होने
को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?"

धन्य है ... आ रहा है भजन. 118:26

जैतून पर्वत यरूशलेम के निकट का एक पहाड़ जिस पर जैतून के बहुत से पेड़ थे।

4उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "सावधान! तुम लोगों
को कोई छलने न पाये। 5मैं यह इस लिए कह रहा हूँ कि
ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे 'मैं
मसीह हूँ' और वे बहुतों को छलेंगे। 6तुम पास के युद्धों
की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम
घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं आया
है। 7हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक
राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा। अकाल पड़ेंगे।
हर कहीं भूचाल आयेंगे। 8किन्तु ये सब बातें तो केवल
पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

9"उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे,
और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो,
सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे। 10उस समय
बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग
जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकारियों के हाथों सौंपेंगे
और परस्पर घृणा करेंगे। 11बहुत से झूठे नबी उठ खड़े
होंगे और लोगों को ठगेंगे। 12क्योंकि बदी बढ़ जायेगी सो
बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। 13किन्तु जो
अंत तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा। 14स्वर्ग के
राज्य का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों
को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त
आएगा।

15"इसलिए जब तुम लोग भयानक विनाशकारी वस्तु
को, जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया था,
मंदिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो," (पढ़ने वाला स्वयं
समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) 16"तब जो लोग
यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये। 17जो
अपने घर की छत पर हो, वह घर से बाहर कुछ भी ले
जाने के लिए नीचे न उतरे। 18और जो बाहर खेतों में
काम कर रहा हो, वह पीछे मुड़ कर अपने वस्त्र तक न
ले। 19उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी या जिनके
दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत कष्ट के होंगे। 20प्रार्थना
करो कि तुम्हें सर्दियों के दिनों या सब्त के दिन भागना न
पड़े। 21उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर
ने यह सृष्टि रची है, आज तक कभी नहीं आयी और न
कभी आयेगी। 22और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को
घटाने का निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न
बचता किंतु अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को
कम करेगा। 23उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे,
'देखो, यह रहा मसीह' 24या 'वह रहा मसीह' तो उसका
विश्वास मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह
और कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न
दिखायेंगे और अद्भुत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह
चुने हुओं को भी चकमा दे दें। 25देखो मैंने तुम्हें पहले ही
बता दिया है।

26"सो यदि वे तुमसे कहें, 'देखो वह जंगल में है' तो वहाँ
मत जाना और यदि वे कहें, 'देखो वह उन कमरों के
भीतर छुपा है' तो उनका विश्वास मत करना। 27मैं यह
कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू होकर पश्चिम
के आकाश तक कौंध जाती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी
प्रकट होगा। 28जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध इकट्ठे
होंगे।

29"उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद:

'सूरज काला पड़ जायेगा
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी
आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश
में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4,5

30"उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत आकाश
में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के लोग विलाप
करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति और महिमा के
साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते देखेंगे। 31वह ऊँचे
स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों को भेजेगा। फिर वे
स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने
चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

32"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ
कोमल हो जाती हैं और कोंपलें फूटने लगती हैं तुम लोग
जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं। 33वैसे ही जब तुम
यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना कि वह समय
निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक। 34मैं तुम
लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के लोगों के जीते जी
ही ये सब बातें घटेंगी। 35चाहे धरती और आकाश मिट
जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा।"

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब आएगा

36"उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं
जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वंय पुत्र। केवल परम
पिता जानता है। 37जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही

मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। 38वैसे ही जैसे लोग
जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते–पीते रहे,
ब्याह–शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं
चढ़ा। 39उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जल
प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया।
मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा। 40उस समय
खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को उठा लिया
जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा। 41चक्की
पीसती दो औरतों में से एक उठा ली जायेगी और एक वहीं
पीछे छोड़ दी जायेगी।

42"सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते
कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाये। 43याद रखो यदि घर
का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ जायेगा
तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में सेंध नहीं
लगाने देता। 44इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि तुम जब
उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य का पुत्र आ जायेगा।

45"तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे
स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय
उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है। 46धन्य है वह
सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य करते
पाता है। 47मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे अपनी
समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा। 48दूसरी तरफ
सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता है मेरा
स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है 49सो वह
अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है और
शराबियों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है 50तो
उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके
आने की सोचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक
नहीं। 51और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और
कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ बस
लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस कन्याओं की दृष्टांत–कथा

25 "उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं
के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से मिलने
निकलीं। 2उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच चौकस।
3पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो ले ली पर
उनके साथ तेल नहीं लिया। 4उधर चौकस कन्याओं ने
अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी ले लिया।
5क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी, सभी
कन्याएँ ऊँघने लगीं और पड़ कर सो गयी।

6"पर आधी रात धूम मची आ हा, 'दूल्हा आ रहा है!
उससे मिलने बाहर चलो।'

7"उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुई और अपनी
मशालें तैयार कीं। 8लापरवाह कन्याओं ने चौकस कन्याओं
से कहा, 'हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी मशालें बुझी
जा रही हैं।'

9"उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, 'नहीं! हम
नहीं दे सकती। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए काफी
होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने वाले के
पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।'

10"जब वे मोल लेने जा ही रही थीं कि दूल्हा आ
पहुँचा। सो वे कन्याएँ, जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह
के उत्सव में भीतर चली गई और फिर किसी ने द्वार बंद
कर दिया।

11"आखिरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गई और
उन्होंने कहा, 'स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोलो, हमें भीतर
आने दो।'

12"किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, 'मैं तुमसे सच कह
रहा हूँ: मैं तुम्हें नहीं जानता।'

13"सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को जानते
हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टांत कथा

14"स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने
यात्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी
सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया। 15उसने एक को चाँदी के
सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और तीसरे
को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दे
कर यात्रा पर निकल पड़ा। 16जिसे चाँदी के सिक्कों से
भरी पाँच थैलियाँ मिली थीं, उसने तुरन्त उस पैसे को
काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कमा ली। 17ऐसे
ही जिसे दो थैलियाँ मिली थीं, उसने भी दो और कमा
लीं। 18पर जिसे एक मिली थी उसने कहीं जाकर
धरती में गढ़ा खोदा और अपने स्वामी के धन को गाड़
दिया।

19"बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी
लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। 20वह

व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थी,
अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और थैलियाँ
ले जाकर उससे बोला, 'स्वामी, तुमने मुझे पाँच थैलियाँ
सौंपी थीं। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच थैलियाँ और हैं जो
मैंने कमाई हैं।'

21"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल
हो।'

22"फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दो थैलियाँ मिली
थीं, अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, तूने
मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की ये
दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'

23"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल
हो।'

24"फिर वह जिसे चाँदी की एक थैली मिली थी, अपने
स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, मैं जानता हूँ तू
बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है जहाँ तूने बोया
नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं डाला वहाँ फसल
बटोरता है। 25सो मैं डर गया था इसलिए मैंने जाकर चाँदी
के सिक्कों की थैली को धरती में गाड़ दिया। यह ले जो
तेरा है यह रहा, ले ले।'

26"उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, 'तू एक बुरा
और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये काटता
हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल बटोरता हूँ
27तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा करा देना
चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था सूद के साथ
ले लेता।'

28"इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले लो
और जिसके पास चाँदी के सिक्कों की दस थैलियाँ हैं, इसे
उसी को दे दो। 29क्योंकि हर उस व्यक्ति को, जिसने जो
कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग किया, और
अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे आवश्यकता है,
वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे, जिसने जो कुछ
उसके पास था उसका सही उपयोग नहीं किया, सब कुछ
छीन लिया जायेगा। 30सो उस बेकार के दास को बाहर
अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।"

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

31"मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में अपने
सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर बैठेगा 32तो
सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जायेंगी और वह
एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा, जैसे एक गड़रिया
अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग करता है। 33वह भेड़ों
को अपनी दाहिनी ओर रखेगा और बकरियों को बाँई
ओर।

34"फिर वह राजा, जो उसके दाहिनी ओर हैं, उनसे
कहेगा, 'मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो
राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया
गया है उसका अधिकार लो। 35यह राज्य तुम्हारा है
क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को दिया,
मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। मैं पास
से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे भीतर ले
गये। 36मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार
था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था, और तुम मेरे
पास आये।'

37"फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने
तुझे कब भूखा–देखा और खिलाया या प्यासा देखा और
पीने को दिया? 38तुझे हमने कब पास से जाता हुआ कोई
अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों के
देखकर तुझे कपड़े पहनाए? 39और हमने कब तुझे बीमार
या बंदी देखा और तेरे पास आये?'

40"फिर राजा उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच
कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे भोले–भाले भाइयों में से
किसी एक के लिये भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही
लिये किया।'

41"फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा,
'अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग शैतान
और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस अनंत
आग में जा गिरो। 42यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि मैं भूखा
था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया, 43मैं अजनबी
था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं कपड़ों के बिना
नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाये। मैं बीमार
और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान नहीं रखा।'

44“फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, ‘प्रभु, हमने तुझे भूखा या प्यासा या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।’

45“फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही बरती।’

46“फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।”

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यंत्र

26 इन सब बातों के कह चुकने के बाद यीशु अपने शिष्यों से बोला, **2**“तुम लोग जानते हो कि दो दिन बाद फसह पर्व है। और मनुष्य का पुत्र शत्रुओं के हाथों क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये पकड़वाया जाने वाला है।”

3तब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता कैफ़ा नाम के प्रमुख याजक के भवन के आँगन में इकट्ठे हुए। **4**और उन्होंने किसी तरकीब से यीशु को पकड़ने और मार डालने की योजना बनायी। **5**फिर भी वे कह रहे थे “हमें यह पर्व के दिनों नहीं करना चाहिये नहीं तो हो सकता है लोग कोई दंगा–फ़साद करें।”

यीशु पर इत्र का छिड़काव

6यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था **7**तभी एक स्त्री सफेद चिकने, स्फटिक के पात्र में बहुत कीमती इत्र भर कर लायी और उसे उसके सिर पर उँडेल दिया। उस समय वह पटरे पर झुका बैठा था।

8जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे क्रोध में भर कर बोले, “इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी? **9**यह इत्र अच्छे दामों में बेचा जा सकता था और फिर उस धन को दीन दुखियों में बाँटा जा सकता था।”

10यीशु जान गया कि वे क्या कह रहे हैं। सो उनसे बोला, “तुम इस स्त्री को क्यों तंग कर रहे हो? उसने तो मेरे लिए एक सुन्दर काम किया है? **11**क्योंकि दीन दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। **12**उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधित इत्र छिड़क कर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। **13**मैं तुमसे सच कहता हूँ समस्त संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार–प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में, जो कुछ इसने किया है, उसकी चर्चा होगी।”

यहूदा यीशु से शत्रुता ठानता है

14तब यहूदा इस्करियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया और उनसे बोला, **15**“यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम लोग मुझे क्या दोगे?” तब उन्होंने यहूदा को चाँदी के तीस सिक्के देने की इच्छा जाहिर की। **16**उसी समय से यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ फ़सह भोज

17बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव से पहले दिन यीशु के शिष्यों ने पास आकर पूछा, “तू क्या चाहता है कि हम तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी कहाँ जाकर करें?”

18उसने कहा, “गाँव में उस व्यक्ति के पास जाओ और उससे कहो, कि गुरु ने कहा है, ‘मेरी निश्चित घड़ी निकट है, मैं तेरे घर अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व मनाने वाला हूँ।’”

19फिर शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने बताया था और फ़सह पर्व की तैयारी की।

20दिन ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे पर झुका बैठा था। **21**तभी उनके भोजन करते वह बोला, “मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से पकड़वायेगा।”

22वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने लगा, “प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ! बता क्या मैं हूँ?”

23तब यीशु ने उत्तर दिया, “वही जो मेरे साथ एक थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा। **24**मनुष्य का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिस व्यक्ति के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि उसका जन्म ही न हुआ होता।”

25तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा बोल उठा, “हे रब्बी, वह मैं नहीं हूँ। क्या मैं हूँ?”

यीशु ने उससे कहा, “हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा है।”

प्रभु का भोज

26जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे
आशीष दी और फिर तोड़ा। फिर उसे शिष्यों को देते हुए
वह बोला, "लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है।"
27फिर उसने प्याला उठाया और धन्यवाद देने के बाद
उसे उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसे थोड़ा थोड़ा पिओ।
28क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक नये वाचा की स्थापना
करता है। यह बहुत लोगों के लिए बहाया जा रहा है। ताकि
उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो सके। 29मैं तुमसे
कहता हूँ कि मैं उस दिन तक दाखरस को नहीं चखूँगा
जब तक अपने परम पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया
दाखरस न पी लूँ।"
30फिर वे फ़सह का भजन गाकर जैतून पर्वत पर चले
गये।

यीशु का कथन : सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

31फिर यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब
का मुझमें से विश्वास डिग जायेगा। क्योंकि शास्त्र में लिखा
है:

'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और
रेवड़ की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगी।'

जकर्याह 13:7

32पर फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"
33पतरस ने उत्तर दिया, "चाहे सब तुझ में से विश्वास
खो दें किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।"
34यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ आज
इसी रात मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकार
चुकेगा।"
35तब पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना
भी पड़े तो भी तुझे मैं कभी नहीं नकारूँगा।"
बाकी सब शिष्यों ने भी यही कहा।

यीशु की एकान्त प्रार्थना

36फिर यीशु उनके साथ उस स्थान पर आया जो
गतसमने कहलाता था। और उसने अपने शिष्यों से कहा,
"जब तक मैं वहाँ जाऊँ और प्रार्थना करूँ, तुम यहीं बैठो।"
37फिर यीशु पतरस और जब्दी के दो बेटों को अपने साथ
ले गया। और दुख तथा व्याकुलता अनुभव करने लगा।
38फिर उसने उनसे कहा, "मेरा मन बहुत दुःखी है, जैसे
मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम मेरे साथ यहीं ठहरो और
सावधान रहो।"
39फिर थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक
कर प्रार्थना करने लगा। उसने कहा, "हे मेरे परम पिता,
यदि हो सके तो यातना का यह प्याला मुझसे टल जाये।
फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं बल्कि जैसा तू चाहता
है वैसा ही कर। 40फिर वह अपने शिष्यों के पास गया
और उन्हें सोता पाया। वह पतरस से बोला, 'सो तुम लोग
मेरे साथ एक घड़ी भी नहीं जाग सके। 41जागते रहो और
प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। तुम्हारा मन तो
वही करना चाहता है जो उचित है किन्तु, तुम्हारा शरीर
दुर्बल है।"
42एक बार फिर उसने जाकर प्रार्थना की और कहा,
"हे मेरे परम पिता, यदि यातना का यह प्याला मेरे पिये
बिना टल नहीं सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।"
43तब वह आया और उन्हें फिर सोते पाया। वे अपनी
आँखें खोले नहीं रख सके। 44सो वह उन्हें छोड़ कर फिर
गया और तीसरी बार भी पहले की तरह उन ही शब्दों में
प्रार्थना की।
45फिर यीशु अपने शिष्यों के पास गया और उनसे
पूछा, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? सुनो, समय
आ चुका है, जब मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों सौंपा
जाने वाला है। 46उठो, आओ चलें। देखो मुझे पकड़वाने
वाला यह रहा।"

यीशु को बंदी बनाना

47यीशु जब बोल ही रहा था, यहूदा जो बारह शिष्यों
में से एक था, आया। उसके साथ तलवारों और लाठियों
से लैस प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं की भेजी एक
बड़ी भीड़ भी थी। 48यहूदा ने जो उसे पकड़वाने वाला
था, उन्हें एक संकेत देते हुए कहा कि जिस किसी को मैं
चूमूँ, वही यीशु है, उसे पकड़ लो, 49फिर वह यीशु के पास
गया और बोला, "हे नबी।" और बस उसने यीशु को चूम
लिया।
50यीशु ने उससे कहा, "मित्र जिस काम के लिए तू
आया है, उसे कर।" फिर भीड़ के लोगों ने पास जा कर
यीशु को दबोच कर बंदी बना लिया। 51फिर जो लोग
यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींच ली और

वार करके महा याजक के दास का कान उड़ा दिया।

52तब यीशु न उससे कहा, “अपनी तलवार को म्यान में रखो। जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से ही मारे जायेंगे। 53क्या तुम नहीं सोचते कि मैं अपने परम पिता को बुला सकता हूँ और वह तुरंत स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से भी अधिक मेरे पास भेज देगा? 54किन्तु यदि मैं ऐसा करूँ तो शास्त्रों की लिखी यह कैसे पूरी होगी कि सब कुछ ऐसे ही होना है?”

55उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, “तुम तलवारों, लाठियों समेत मुझे पकड़ने ऐसे क्यों आये हो जैसे किसी चोर को पकड़ने आते हैं? मैं हर दिन मंदिर में बैठा उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। 56किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि भविष्यवक्ताओं की लिखी पूरी हो।” फिर उसके सभी शिष्य उसे छोड़ कर भाग खड़े हुए।

यहूदी नेताओं के सामने यीशु की पेशी

57जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे कैफ़ा नामक महा याजक के सामने ले गये। वहाँ यहूदी धर्मशास्त्री और बुज़ुर्ग यहूदी नेता भी इकट्ठे हुए। 58पतरस उससे दूर–दूर रहते उसके पीछे पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और फिर नतीजा देखने वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ गया। 59महा याजक समूची यहूदी महासभा समेत यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए उसके विरोध में कोई अभियोग ढूँढने का यत्न कर रहे थे। 60पर ढूँढ नहीं पाये। यद्यपि बहुत से झूठे गवाहों ने आगे बढ़ कर झूठ बोले। अंत में दो व्यक्ति आगे आये 61और बोले, “इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना सकता हूँ।”

62फिर महा याजक ने खड़े हो कर यीशु से पूछा, “क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि ये लोग तेरे विरोध में यह क्या गवाही दे रहे हैं?” 63किन्तु यीशु चुप रहा। फिर महायाजक ने उससे पूछा, “मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ, हमें बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?”

64यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं हूँ। किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र ही देखोगे।”

65महायाजक यह सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि वह अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला, “इसने जो बातें कही हैं वे परमेश्वर की निन्दा में जाती हैं। अब हमें और गवाह नहीं चाहियें। तुम सब ने परमेश्वर के विरोध में कहते, इसे सुना है। 66तुम लोग क्या सोचते हो?”

उत्तर में वे बोले, “यह अपराधी है। इसे मर जाना चाहिये।”

67फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे। कुछ ने थप्पड़ मारे और कहा, 68“अरे मसीह! भविष्यवाणी कर कि वह कौन है जिसने तुझे मारा?”

पतरस का यीशु को नकारना

69पतरस अभी नीचे आँगन में ही बाहर बैठा था कि एक दासी उसके पास आयी और बोली, “तू भी तो उसी गलीली यीशु के साथ था।”

70किन्तु सब के सामने पतरस मुकर गया। उसने कहा, “मुझे पता नहीं तू क्या कह रही है।”

71फिर वह ड्योढ़ी तक गया ही था कि एक दूसरी स्त्री ने उसे देखा और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली, “यह व्यक्ति यीशु नासरी के साथ था।”

72एक बार फिर पतरस ने इन्कार किया और कसम खाते हुए कहा, “मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।”

73थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास गये और उससे बोले, “तेरी बोली साफ बता रही है कि तू असल में उन्हीं में से एक है।”

74तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, “मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।” तभी मुर्गे ने बाँग दी। 75तभी पतरस को वह याद हो आया जो यीशु ने उससे कहा था, “मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकारेगा।” तब पतरस बाहर चला गया और फूट फूट कर रो पड़ा।

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

27 अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी बुजुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा। 2फिर वे उसे बाँध कर ले गये और राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा की आत्महत्या

3यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि यीशु
को दोषी ठहराया गया है, तो वह बहुत पछताया और उसने
प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को चाँदी के वे
तीस सिक्के लौटा दिये। **4**उसने कहा, "मैंने एक निरपराध
व्यक्ति को मार डालने के लिए पकड़वा कर पाप किया
है।"

इस पर उन लोगों ने कहा, "हमें क्या! यह तेरा अपना
मामला है।"

5इस पर यहूदा चाँदी के उन सिक्कों को मंदिर के
भीतर फेंक कर चला गया और फिर बाहर जाकर अपने
को फाँसी लगा ली।

6प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा,
"हमारे नियम के अनुसार इस धन को मंदिर के कोष में
रखना उचित नहीं है क्योंकि इसका इस्तेमाल किसी को
मरवाने के लिए किया गया था।" **7**इसलिए उन्होंने निर्णय
करके उस पैसे से यरुशलेम में बाहर से आने वाले लोगों
के मर जाने पर गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल
लिया। **8**इसीलिये आज तक वह खेत 'लहू का खेत' के
नाम से जाना जाता है। **9**इस प्रकार परमेश्वर का,
भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा कहा यह वचन पूरा हुआ:

"उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए, वह रकम जिसे
इस्राएल के लोगों ने उसके लिये देना तय किया था। **10**और
प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेश के अनुसार उससे कुम्हार
का खेत खरीदा।"*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

11इसी बीच यीशु राज्यपाल के सामने पेश हुआ।
राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

12दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता
उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

13तब पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू नहीं सुन रहा है
कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं?"

14किन्तु यीशु ने पिलातुस को किसी भी आरोप का
कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस को इस पर बहुत अचरज
हुआ।

यीशु को छोड़ने में पिलातुस असफल

15फसह पर्व के अवसर पर राज्यपाल का रिवाज़ था
कि वह किसी भी एक क़ैदी को, जिसे भीड़ चाहती थी,
उनके लिए छोड़ दिया करता था। **16**उसी समय बरअब्बा
नाम का एक बदनाम कैदी वहाँ था। **17**सो जब भीड़ आ
जुटी तो पिलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं
तुम्हारे लिये किसे छोड़ूँ, बरअब्बा को या उस यीशु को, जो
मसीह कहलाता है?" **18**पिलातुस जानता था कि उन्होंने
उसे डाह के कारण पकड़वाया है।

19पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा था तो
उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा: "उस सीधे
सच्चे मनुष्य के साथ कुछ मत कर बैठना। मैंने उसके
बारे में एक सपना देखा है जिससे आज सारे दिन मैं बेचैन
रही।"

20किन्तु प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने
भीड़ को बहकाया, फुसलाया कि वह पिलातुस से बरअब्बा
को छोड़ने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें।

21उत्तर में राज्यपाल ने उनसे पूछा, "मुझ से दोनों कैदियों
में से तुम अपने लिये किसे छुड़वाना चाहते हो?"

उन्होनें उत्तर दिया, "बरअब्बा को!"

22तब पितालुस ने उनसे पूछा, "तो मैं, जो मसीह कहलाता
है उस यीशु का क्या करूँ?"

वे सब बोले, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

23पिलातुस ने पूछा, "क्यों, उसने क्या अपराध किया
है?"

किन्तु वे तो और अधिक चिल्लाये, "उसे क्रूस पर
चढ़ा दो।"

24पिलातुस ने देखा कि अब कोई लाभ नहीं। बल्कि
दंगा भड़कने को है। सो उसने थोड़ा पानी लिया और
भीड़ के सामने अपने हाथ धोये, वह बोला, "इस व्यक्ति के
खून से मेरा कोई सरोकार नहीं है। यह तुम्हारा मामला
है।"

25उत्तर में सब लोगों ने कहा, "इसकी मौत की जवाबदेही
हम और हमारे बच्चे स्वीकार करते हैं।"

26तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया
और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए
सौंप दिया।

उन्होंने ... खरीदा जकर्य 11:12−13; यिर्म. 32:6−9

यीशु का उपहास

[27]फिर राज्यपाल के सिपाही यीशु को राज्यपाल निवास के भीतर ले गये। वहाँ उसके चारों तरफ सिपाहियों की पूरी पलटन इकट्ठी हो गयी। [28]उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये और चमकीले लाल रंग के वस्त्र पहना कर [29]काँटों से बना एक ताज उसके सिर पर रख दिया। उसके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमा दिया और उसके सामने अपने घुटनों पर झुक कर उसकी हँसी उड़ाते हुए बोले, "यहूदियों का राजा अमर रहे।" [30]फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका, छड़ी छीन ली और उसके सिर पर मारने लगे। [31]जब वे उसकी हँसी उड़ा चुके तो उसकी पोशाक उतार ली और उसे उसके अपने कपड़े पहना कर क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

[32]जब वे बाहर जा ही रहे थे तो उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उस पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले। [33]फिर जब वे गुलगुता (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान।) नामक स्थान पर पहुँचे तो [34]उन्होंने यीशु को पित्त मिली दाखरस पीने को दी। किन्तु जब यीशु ने उसे चखा तो पीने से मना कर दिया। [35]सो उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया और उसके वस्त्र पासा फेंक कर आपस में बाँट लिये। [36]इसके बाद वे वहाँ बैठ कर उस पर पहरा देने लगे। [37]उन्होंने उसका अभियोग पत्र लिखकर उसके सिर पर टाँग दिया, "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" [38]इसी समय उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाये जा रहे थे एक उसके दाहिने ओर और दूसरा बायीं ओर। [39]पास से जाते हुए लोग अपना सिर मटकाते हुए उसका अपमान कर रहे थे। [40]वे कह रहे थे, "अरे मंदिर को गिरा कर तीन दिन में उसे फिर से बनाने वाले, अपने को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस से नीचे उतर आ।"

[41]ऐसे ही महायाजक धर्मशास्त्रियों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं के साथ उसकी यह कहकर हँसी उड़ा रहे थे: [42]"दूसरों का उद्धार करने वाला यह अपना उद्धार नहीं कर सकता! यह इस्राएल का राजा है। यह क्रूस से अभी नीचे उतरे तो हम इसे मान लें। [43]यह परमेश्वर में विश्वास करता है। सो यदि परमेश्वर चाहे तो अब इसे बचा ले। आखिर यह तो कहता भी था 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।'" [44]उन लुटेरों ने भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसकी ऐसे ही हँसी उड़ाई।

यीशु की मृत्यु

[45]फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक अन्धेरा छाया रहा। [46]कोई तीन बजे के आस–पास यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा "एली, एली, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों बिसरा दिया?"

[47]वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे यह एलिय्याह को पुकार रहा है।

[48]फिर तुरंत उनमें से एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को चूसने के लिए दिया। [49]किन्तु दूसरे लोग कहते रहे कि छोड़ो देखते हैं कि एलिय्याह इसे बचाने आता है या नहीं?

[50]यीशु ने फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार कर प्राण त्याग दिये। [51]उसी समय मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टूकड़े हो गया। धरती काँप उठी। चट्टानें फट पड़ीं। [52]यहाँ तक कि कब्रें खुल गयीं और परमेश्वर के मरे हुए बंदों के बहुत से शरीर जी उठे। [53]वे कब्रों से निकल आये और यीशु के जी उठने के बाद पवित्र नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिये।

[54]रोमी सेना नायक और यीशु पर पहरा दे रहे लोग भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देख कर डर गये थे। वे बोले, "यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था।"

[55]वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। जो दूर से देख रही थीं। वे यीशु की देखभाल के लिए गलील से उसके पीछे आ रही थीं। [56]उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की माता मरियम तथा जब्दी के बेटों की माँ थी।

यीशु का दफ़न

[57]साँझ के समय अरिमतियाह नगर से यूसुफ़ नाम का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी हो गया था। यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। [58]तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये। [59]यूसुफ ने शव ले लिया और उसे एक नयी चादर में लपेट कर [60]अपनी निजी नयी कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर बनवाया था। फिर

उसने चट्टान के दरवाजे पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काया
और चला गया। 61मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री
मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं।

यीशु की कब्र पर पहरा

62अगले दिन जब शुक्रवार बीत गया तो प्रमुख याजक
और फ़रीसी पिलातुस से मिले। 63उन्होंने कहा, "महोदय
हमें याद है कि उस छली ने, जब वह जीवित था, कहा था
कि तीसरे दिन मैं फिर जी उठूँगा। 64तो आज्ञा दीजिये कि
तीसरे दिन तक कब्र पर चौकसी रखी जाये। जिससे ऐसा
न हो कि उसके शिष्य आकर उसका शव चुरा ले जायें
और लोगों से कहें वह मरे हुओं में से जी उठा। यह दूसरा
छलावा पहले छलावे से भी बुरा होगा।"

65पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम पहरे के लिये सिपाही
ले सकते हो। जाओ जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।"
66तब वे चले गये और उस पत्थर पर मुहर लगा कर
और पहरेदारों को वहाँ बैठा कर कब्र को सुरक्षित कर
दिया।

यीशु का फिर से जी उठना

28 सब्त के बाद जब रविवार की सुबह पौ
फट रही थी, मरियम मगदलीनी और दूसरी
स्त्री मरियम कब्र की जाँच करने आईं।

2क्योंकि स्वर्ग से प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ उतरा था,
इसलिए उस समय एक बहुत बड़ा भूचाल आया। स्वर्गदूत
ने वहाँ आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ
गया। 3उसका रूप आकाश की बिजली की तरह चमचमा
रहा था और उसके वस्त्र बर्फ़ के जैसे उजले थे। 4वे
सिपाही जो कब्र का पहरा दे रहे थे, डर के मारे काँपने
लगे और ऐसे हो गये जैसे मर गये हों।

5तब स्वर्गदूत बोला और उसने उन स्त्रियों से कहा,
"डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो
जिसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। 6वह यहाँ नहीं है। जैसा
कि उसने कहा था, वह मौत के बाद फिर जिला दिया गया
है। आओ, उस स्थान को देखो, जहाँ वह लेटा था। 7और
फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से कहो, 'वह मरे
हुओं में से जिला दिया गया है और अब वह तुमसे पहले
गलील को जा रहा है तुम उसे वहीं देखोगे' जो मैंने तुमसे
कहा है, उसे याद रखो।"

8उन स्त्रियों ने तुरंत ही क़ब्र को छोड़ दिया। वे भय
और आनन्द से भर उठीं थीं। फिर यीशु के शिष्यों को यह
बताने के लिये वे दौड़ पड़ीं। 9अचानक यीशु उनसे मिला
और बोला, "अरे तुम!" वे उसके पास आयीं, उन्होंने उसके
चरण पकड़ लिये और उसकी उपासना की। 10तब यीशु
ने उनसे कहा, "डरो मत, मेरे बंधुओं के पास जाओ, और
उनसे कहो कि वे गलील के लिए रवाना हो जायें, वहीं वे
मुझे देखेंगे"

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

11अभी वे स्त्रियाँ अपने रास्ते में ही थीं कि कुछ
सिपाही जो पहरेदारों में थे, नगर में गए और जो कुछ
घटा था, उस सब की सूचना प्रमुख याजकों को जा
सुनाई। 12सो उन्होंने बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं से मिल कर एक
योजना बनायी। उन्होंने सिपाहियों को बहुत सा धन देकर
13कहा कि वे लोगों से कहें कि यीशु के शिष्य रात को
आये और जब हम सो रहे थे उसकी लाश को चुरा ले
गये। 14यदि तुम्हारी यह बात राज्यपाल तक पहुँचती है
तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई आँच नहीं आने
देंगे। 15पहरेदारों ने धन लेकर वैसा ही किया, जैसा उन्हें
बताया गया था। और यह बात यहूदियों में आज तक इसी
रूप में फैली हुई है।

यीशु की अपने शिष्यों से बातचीत

16फिर ग्यारहों शिष्य गलील में उस पहाड़ी पर पहुँचे
जहाँ जाने को उनसे यीशु ने कहा था। 17जब उन्होंने यीशु
को देखा तो उसकी उपासना की। यद्यपि कुछ के मन में
संदेह था। 18फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, "स्वर्ग
में और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं। 19सो,
जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ।
तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और
पवित्र आत्मा के नाम में उन्हें बपतिस्मा दे कर पूरा करना
है। 20वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर
चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं
सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मरकुस

यीशु के आने की तैयारी

1 यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के शुभ संदेश का प्रारम्भ है। 2भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में लिखा है कि:

"सुन! मैं अपने दूत को
तुझसे पहले भेज रहा हूँ।
वह तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।"

मलाकी 3:1

3 "जंगल में किसी पुकारने वाले का शब्द
सुनाई दे रहा है:
'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो।
और उसके लिये राहें सीधी बनाओ।'"

यशायाह 40:3

4यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा* देता आया था। उसने लोगों से बपतिस्मा लेने को कहा कि वे अपने मन फिराव को दिखा सकें और उनके पापों की क्षमा हो।
5फिर समूचे यहूदिया देश के और यरुशलेम के लोग उसके पास गये और उस ने यर्दन नदी में उन्हें बपतिस्मा दिया। क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये थे। 6यूहन्ना ऊँट के बालों के बने वस्त्र पहनता था और कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाया करता था। 7वह इस बात का प्रचार करता था: "मेरे बाद मुझसे अधिक शक्तिशाली एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों के बन्ध तक खोल सकूँ। 8मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह पवित्र–आत्मा से तुम्हें बपतिस्मा देगा।"

यीशु का बपतिस्मा और उसकी परीक्षा

9उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील आया और यर्दन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
10जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश को खुले हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप में आत्मा उस पर उतर रहा है। 11फिर आकाशवाणी हुई: "तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ।"

12फिर आत्मा ने उसे तत्काल बियाबान जंगल में भेज
दिया। 13जहाँ चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा लेता रहा। वह जंगली जानवरों के साथ रहा और स्वर्गदूतों उसकी सेवा करते रहे।

यीशु द्वारा कुछ शिष्यों का चयन

14यहुन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु गलील आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने लगा। 15उसने कहा, "समय पूरा हो चुका है। परमेश्वर का राज्य आ रहा है। मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।"

16जब यीशु गलील झील के किनारे से हो कर जा रहा था उसने शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास को देखा। क्योंकि वे मछुए थे इसलिए झील में जाल डाल रहे थे।
17यीशु ने उनसे कहा, "आओ, और मेरे पीछे हो लो। मैं तुम्हें लोगों को एकत्र करने वाले बनाऊँगा।" 18उन्होंने
तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे चल पड़े।

19फिर थोड़ा आगे बढ़ कर यीशु ने जब्दी के बेटे याकूब और उसके भाई युहन्ना को देखा। वे अपनी नाव में जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20उसने उन्हें तुरंत बुलाया। सो वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़ कर उसके पीछे चल पड़े।

बपतिस्मा यह यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है पानी में गोता देना। यह एक धार्मिक प्रक्रिया है।

दुष्टात्मा के चंगुल से छुटकारा

21और कफरनहूम पहुँचे। फिर अगले सब्त के दिन यीशु प्रार्थनासभा में गया और लोगों को उपदेश देने लगा। 22उसके उपदेशों पर लोग चकित हुए। क्योंकि वह उन्हें किसी शास्त्र-ज्ञाता की तरह नहीं बल्कि एक अधिकारी की तरह उपदेश दे रहा था। 23उनकी यहूदी प्रार्थना सभा में संयोग से एक ऐसा व्यक्ति भी था जिसमें कोई दुष्टात्मा समायी थी। वह चिल्ला कर बोला, 24"नासरत के यीशु! तुझे हम से क्या चाहिये? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"

25इस पर यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप रह! और इसमें से बाहर निकल!" 26दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को झिंझोड़ा और वह ज़ोर से चिल्लाती हुई उसमें से निकल गयी।

27हर व्यक्ति चकित हो उठा। इतना चकित, कि सब आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या है? अधिकार के साथ दिया गया एक नया उपदेश! यह दुष्टात्माओं को भी आज्ञा देता है और वे उसे मानती हैं।" 28इस तरह गलील और उसके आसपास हर कहीं यीशु का नाम जल्दी ही फैल गया।

यीशु द्वारा अनेक व्यक्तियों का चंगा किया जाना

29फिर वे प्रार्थना सभागार से निकल कर याकूब और यूहन्ना के साथ सीधे शमौन और अन्द्रियास के घर पहुँचे। 30शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी इसलिए उन्होंने यीशु को तत्काल उसके बारे में बताया। 31यीशु उसके पास गया और हाथ पकड़ कर उसे उठाया। तुरन्त उसका ज्वर उतर गया और वह उनकी सेवा करने लगी।

32सूरज डूबने के बाद जब शाम हुई तो वहाँ के लोग सभी रोगियों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को उसके पास लाये। 33सारा नगर उसके द्वार पर उमड़ पड़ा। 34उसने तरह तरह के रोगों से पीड़ित बहुत से लोगों को चंगा किया और बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया। क्योंकि वे उसे जानती थीं, इसलिये उसने उन्हें बोलने नहीं दिया।

लोगों को सुसमाचार सुनाने की तैयारी

35अँधेरा रहते, बड़ी सुबह वह घर छोड़ कर किसी एकांत स्थान पर चला गया जहाँ उसने प्रार्थना की। 36किन्तु शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले 37और उसे पा कर बोले, "हर व्यक्ति तेरी खोज में है!"

38इस पर यीशु ने उनसे कहा, "हमें दूसरे नगरों में जाना ही चाहिये ताकि वहाँ भी उपदेश दिया जा सके क्योंकि मैं इसी के लिए आया हूँ।" 39इस तरह वह गलील में सब कहीं उनकी प्रार्थना सभाओं में उपदेश देता और दुष्टात्माओं को निकालता गया।

कोढ़ से छुटकारा

40फिर एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने उसके सामने झुक कर उससे विनती की और कहा, "यदि तू चाहे, तो तू मुझे ठीक कर सकता है।"

41उसे उस पर दया आयी और उसने अपना हाथ फैला कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो जाओ!" 42और उसे तत्काल कोढ़ से छुटकारा मिल गया। वह पूरी तरह शुद्ध हो गया।

43यीशु ने उसे कड़ी चेतावनी दी और तुरन्त भेज दिया। 44यीशु ने उससे कहा, "देख इसके बारे में तू किसी को कुछ नहीं बताना। किन्तु याजक के पास जा और उसे अपने आप को दिखा। और मूसा के नियम के अनुसार अपने ठीक होने की भेंट अर्पित कर ताकि हर किसी को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।" 45परन्तु वह बाहर जाकर खुले तौर पर इस बारे में लोगों से बातचीत करके इसका प्रचार करने लगा। इससे यीशु फिर कभी नगर में खुले तौर पर नहीं जा सका। वह एकांत स्थानों में रहने लगा किन्तु लोग हर कहीं से उसके पास आते रहे।

लकवे के मारे का चंगा किया जाना

2 कुछ दिनों बाद यीशु वापस कफरनहूम आया तो यह समाचार फैल गया कि वह घर में है। 2फिर वहाँ इतने लोग इकट्ठे हुए कि दरवाज़े के बाहर भी तिल धरने तक को जगह न बची। जब यीशु लोगों को उपदेश दे रहा था 3तो कुछ लोग एक लकवे के मारे को चार आदमियों से उठवाकर वहाँ लाये। 4किन्तु भीड़ के कारण वे उसे यीशु के पास नहीं ले जा सके। इसलिये जहाँ यीशु था उसके ऊपर की छत का कुछ भाग उन्होंने हटाया और जब वे खोद कर छत में एक खुला सूराख बना चुके तो उन्होंने जिस बिस्तर पर लकवे का मारा लेटा हुआ था

उसे नीचे लटका दिया। **5**उनके इतने गहरे विश्वास को
देख कर यीशु ने लकवे के मारे से कहा, “हे पुत्र, तेरे पाप
क्षमा हुए।”

6उस समय वहाँ कुछ धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे अपने
अपने मन में सोच रहे थे। **7** “यह व्यक्ति इस तरह बात
क्यों करता है? यह तो परमेश्वर का अपमान करता है।
परमेश्वर के सिवा, और कौन पापों को क्षमा कर सकता
है?”

8यीशु ने अपनी आत्मा में तुरंत यह जान लिया कि वे
मन ही मन क्या सोच रहे हैं। वह उनसे बोला, “तुम अपने
मन में ये बातें क्यों सोच रहे हो? **9**सरल क्या है: इस लकवे
के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना
कि उठ, अपना बिस्तर उठा और चल दे? **10**किन्तु मैं
तुम्हें प्रमाणित करूँगा कि इस पृथ्वी पर मनुष्य के पुत्र को
यह अधिकार है कि वह पापों को क्षमा करे।” फिर यीशु
ने उस लकवे के मारे से कहा, **11**“मैं तुझसे कहता हूँ,
खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और अपने घर जा।” **12**सो
वह खड़ा हुआ, तुरंत अपना बिस्तर उठाया और उन सब
के देखते देखते ही बाहर चला गया। यह देखकर वे अचरज
में पड़ गये। उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा की और बोले,
“हमने ऐसी बातें कभी नहीं देखीं!”

13एक बार फिर यीशु झील के किनारे गया तो समूची
भीड़ उसके पीछे हो ली। यीशु ने उन्हें उपदेश दिया।
14चलते हुए उसने हलफई के बेटे लेवी को चुंगी की चौकी
पर बैठे देख कर उससे कहा, “मेरे पीछे आ” सो लेवी
खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

15इसके बाद जब यीशु अपने चेलों या शिष्यों समेत
उसके घर भोजन कर रहा था तो बहुत से कर वसूलने
वाले और पापी लोग भी उसके साथ भोजन कर रहे थे।
इनमें बहुत से वे लोग थे जो उसके पीछे पीछे चले आये थे।
16जब फ़रीसियों के कुछ धर्मशास्त्रियों ने यह देखा कि
यीशु पापियों और कर वसूलने वालों के साथ भोजन कर
रहा है तो उन्होंने उसके अनुयायिओं से कहा, “यीशु कर
वसूलने वालों और पापियों के साथ भोजन क्यों करता
है?”

17यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, “चंगे-भले लोगों
को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, रोगियों को ही वैद्य
की आवश्यकता होती है। मैं धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों
को बुलाने आया हूँ।”

यीशु अन्य धर्मगुरुओं से भिन्न है

18यूहन्ना के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास
किया करते थे। कुछ लोग यीशु के पास आये और उससे
पूछने लगे, “यूहन्ना और फ़रीसियों के चेले उपवास क्यों
रखते हैं? और तेरे शिष्य उपवास क्यों नहीं रखते?”

19इस पर यीशु ने उनसे कहा, “निश्चय ही बराती
जब तक दूल्हे के साथ हैं, उनसे उपवास रखने की
उम्मीद नहीं की जाती। जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे
उपवास नहीं रखते। **20**किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा
उनसे अलग कर दिया जायेगा और तब, उस समय, वे
उपवास करेंगे।

21“कोई भी किसी पुराने वस्त्र में अनसिकुड़े कोरे कपड़े
का पैबन्द नहीं लगाता। और यदि लगाता है तो कोरे कपड़े
का पैबन्द पुराने कपड़े को भी ले बैठता है और फटे
कपड़े की खोंच और भी बढ़ जाती है। **22**और इसी तरह
पुरानी मशक में कोई भी नयी दाखरस नहीं भरता। और
यदि कोई ऐसा करे तो नयी दाखरस पुरानी मशक को
फाड़ देगी और मशक के साथ साथ दाखरस भी बर्बाद हो
जायेगी। इसीलिये नयी दाखरस नयी मशकों में ही भरी
जाती है।”

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

23ऐसा हुआ कि सब्त के दिन यीशु खेतों से होता हुआ
जा रहा था। जाते जाते उसके शिष्य खेतों से अनाज की
बालें तोड़ने लगे। **24**इस पर फरीसी यीशु से कहने लगे,
“देख सब्त के दिन वे ऐसा क्यों कर रहे हैं जो उचित नही
है?”

25इस पर यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने कभी दाऊद
के विषय में नहीं पढ़ा कि उसने क्या किया था जब वह
और उसके साथी संकट में थे और उन्हें भूख लगी थी?
26क्या तुमने नहीं पढ़ा कि, जब अबियातार महा याजक
था तब, वह परमेश्वर के मन्दिर में कैसे गया और
परमेश्वर को भेंट में चढ़ाई रोटियाँ उसने कैसे खाईं
(जिनका खाना महायाजक को छोड़ कर किसी को भी
उचित नहीं है) कुछ रोटियाँ उसने उनको भी दी थीं जो
उसके साथ थे?”

27यीशु ने उनसे कहा, “सब्त मनुष्य के लिये बनाया
गया है, न कि मनुष्य सब्त के लिये। **28**इसलिये मनुष्य का
पुत्र सब्त का भी प्रभु है।”

सूखे हाथ वाले को चंगा करना

3 एक बार फिर यीशु यहूदी प्रार्थनालय में गया। वहाँ
एक व्यक्ति था जिसका एक हाथ सूख चुका था।
2कुछ लोग घात लगाये थे कि वह उसे ठीक करता है कि
नहीं, ताकि उन्हें उस पर दोष लगाने का कोई कारण
मिल जाये। 3यीशु ने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "लोगों
के सामने खड़ा हो जा।"

4और लोगों से पूछ, "सब्त के दिन किसी का भला
करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना? किसी का
जीवन बचाना ठीक है या किसी को मारना?" किन्तु वे
सब चुप रहे।

5फिर यीशु ने क्रोध में भर कर चारों ओर देखा और
उनके मन की कठोरता से वह बहुत दुखी हुआ। फिर
उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने
हाथ बढ़ाया, उसका हाथ पहले जैसा ठीक हो गया। 6तब
फरीसी वहाँ से चले गये और हेरोदियों के साथ मिल कर
यीशु के विरुद्ध षड्‌यंत्र रचने लगे कि वे उसकी हत्या कैसे
कर सकते हैं!

बहुतों का यीशु के पीछे हो लेना

7यीशु अपने शिष्यों के साथ झील गलील पर चला गया।
उसके पीछे एक बहुत बड़ी भीड़ भी हो ली जिसमें गलील,
8यहूदिया, यरुशलेम, इदूमिया और यर्दन नदी के पार के
तथा सूर और सैदा के लोग भी थे। लोगों की यह भीड़ उन
कामों के बारे में सुनकर उसके पास आयी थी जिन्हें वह
करता था। 9भीड़ के कारण उसने अपने शिष्यों से कहा
कि वे उसके लिये एक छोटी नाव तैयार रखें ताकि भीड़
उसे दबा न ले। 10यीशु ने बहुत से लोगों को चंगा किया था
इसलिये बहुत से वे लोग जो रोगी थे, उसे छूने के लिये भीड़
में ढकेलते रास्ता बनाते उमड़े चले आ रहे थे। 11जब
कभी दुष्टात्माएँ यीशु को देखतीं वे उसके सामने नीचे
गिर पड़तीं और चिल्ला कर कहतीं "तू परमेश्वर का पुत्र
है!" 12किन्तु वह उन्हें चेतावनी देता कि वे सावधान रहें
और इसका प्रचार न करें।

यीशु द्वारा अपने बारह प्रेरितों का चयन

13फिर यीशु एक पहाड़ पर चला गया और उसने
जिनको वह चाहता था, अपने पास बुलाया। वे उसके
पास आये। 14जिनमें से उसने बारह को चुना। और उन्हें
प्रेरित की पदवी दी। उसने उन्हें चुना ताकि वे उसके साथ
रहें और वह उन्हें उपदेश प्रचार के लिये भेजे 15और वे
दुष्टात्माओं को खदेड़ बाहर निकालने का अधिकार रखें।
16इस प्रकार उसने बारह पुरुषों की नियुक्ति की। ये
थे–शमौन (जिसे उसने पतरस नाम दिया); 17जब्दी का
पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना (जिनका नाम
उसने बूअनर्गिस रखा, जिसका अर्थ है "गर्जन का पुत्र");
18अंद्रियास, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का
पुत्र याकूब, तद्दी और शमौन जिलौती या कनानी 19तथा
यहूदा इस्करियोती जिसने आगे चल कर यीशु को धोखे से
पकड़वाया था।

यहूदियों का कथन: यीशु में शैतान का वास है

20तब वे सब घर चले गये। जहाँ एक बार फिर इतनी
बड़ी भीड़ इकट्‌ठी हो गयी कि यीशु और उसके शिष्य
खाना तक नहीं खा सके। 21जब उसके परिवार के लोगों
ने यह सुना तो वे उसे लेने चल दिये क्योंकि लोग कह रहे
थे कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।

22यरुशलेम से आये धर्मशास्त्री कहते थे, "उसमें
बालज़ेबुल यानी शैतान समाया है। वह दुष्टात्माओं के सरदार
की शक्ति के कारण ही दुष्टात्माओं को बाहर निकालता
है।"

23यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और दुष्टान्तों का
प्रयोग करते हुए उनसे कहने लगा, "शैतान, शैतान को
कैसे निकाल सकता है? 24यदि किसी राज्य में अपने ही
विरुद्ध फूट पड़ जाये तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकेगा।
25और यदि किसी घर में अपने ही भीतर फूट पड़ जाये तो
वह घर बच नहीं पायेगा। 26इसलिए यदि शैतान स्वयं अपना
विरोध करता है और फूट डालता है तो वह बना नहीं रह
सकेगा और उसका अंत हो जायेगा। 27किसी शक्तिशाली
के मकान में घुस कर उसके माल–असबाब को लूट कर
निश्चय ही कोई तब तक नहीं ले जा सकता जब तक
सबसे पहले वह उस शक्तिशाली व्यक्ति को बाँध न दे। ऐसा
करके ही वह उसके घर को लूट सकता है। 28मैं तुमसे
सत्य कहता हूँ, लोगों को हर बात की क्षमा मिल सकती
है, उनके पाप और जो निन्दा–बुरा भला कहना–उन्होंने
किये हैं, वे भी क्षमा किये जा सकते हैं। 29किन्तु पवित्र
आत्मा को जो कोई भी अपमानित करेगा, उसे क्षमा कभी
नहीं मिलेगी। वह अनन्त पाप का भागी है।"

30यीशु ने यह इसलिये कहा था कि कुछ लोग कह रहे थे इसमें कोई दुष्ट आत्मा समाई है।

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार

31तभी उसकी माँ और भाई वहाँ आये और बाहर खड़े हो कर उसे भीतर से बुलवाया। **32**यीशु के चारों ओर भीड़ बैठी थी। उन्होंने उससे कहा, "देख तेरी माता, तेरे भाई और तेरी बहनें तुझे बाहर बुला रहे हैं।"

33यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?" **34**उसे घेर कर चारों ओर बैठे लोगों पर उसने दृष्टि डाली और कहा, "ये है मेरी माँ और मेरे भाई! **35**जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।"

बीज बोने का दृष्टान्त

4 उसने झील के किनारे उपदेश देना फिर शुरू कर दिया। वहाँ उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इसलिये वह झील में खड़ी एक नाव पर जा बैठा। और सभी लोग झील के किनारे धरती पर खड़े थे। **2**उसने दृष्टांत देकर उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। अपने उपदेश में उसने कहा, **3**"सुनो! एक बार एक किसान बीज बोने के लिए निकला। **4**तब ऐसा हुआ कि जब उसने बीज बोये तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे। पक्षी आये और उन्हे चुग गए। **5**दूसरे कुछ बीज पथरीली धरती पर गिरे जहाँ बहुत मिट्टी नहीं थी। वे गहरी मिट्टी न होने के कारण जल्दी ही उग आये **6**और जब सूरज उगा तो वे झुलस गये और जड़ न पकड़ पाने के कारण मुरझा गये। **7**कुछ और बीज काँटों में जा गिरे। काटें बड़े हुए और उन्होंने उन्हें दबा लिया जिससे उनमें दाने नहीं पड़े। **8**कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे, उनकी बढ़वार हुई और उन्होंने अनाज पैदा किया। तीस गुणी, साठ गुणी और यहाँ तक कि सौ गुणी अधिक फसल उतरी।"

9फिर उसने कहा, "जिसके पास सुनने को कान हैं, वह सुने!"

यीशु का कथन: वह दृष्टान्तों का प्रयोग क्यों करता है

10फिर जब वह अकेला था तो उसके बारह शिष्यों समेत जो लोग उसके आसपास थे, उन्होंने उससे दृष्टान्तों के बारे में पूछा।

11यीशु ने उन्हें बताया, "तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का भेद दे दिया गया है किन्तु उनके लिये जो बाहर के हैं, सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं:

12 'ताकि वे देखें और देखते ही रहें,
पर उन्हें कुछ सूझे नहीं,
सुनें और सुनते ही रहें
पर कुछ समझें नहीं।
ऐसा न हो जाए कि वे फिरें
और क्षमा किए जाएँ।'"

यशायाह 6:9-10

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

13उसने उनसे कहा, "यदि तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते तो किसी भी और दृष्टान्त को कैसे समझोगे? **14**किसान जो बोता है, वह वचन है। **15**कुछ लोग किनारे का वह मार्ग हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जब वे वचन को सुनते हैं तो तत्काल शैतान आता है और जो वचन रूपी बीज उनमें बोया गया है, उसे उठा ले जाता है **16**और कुछ लोग ऐसे हैं जैसे पथरीली धरती में बोया बीज। जब वे वचन को सुनते हैं तो उसे तुरन्त आनन्द के साथ अपना लेते हैं **17**किन्तु उनके भीतर कोई जड़ नहीं होती, इसलिए वे कुछ ही समय ठहर पाते हैं और बाद में जब वचन के कारण उन पर विपत्ति आती है और उन्हें यातनाएँ दी जाती हैं, तो वे तत्काल अपना विश्वास खो बैठते हैं। **18**और दूसरे लोग ऐसे हैं जैसे काँटों में बोये गये बीज। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं **19**किन्तु इस जीवन की चिंताएँ, धन दौलत का लालच और दूसरी वस्तुओं को पाने की इच्छा उनमें आती है और वचन को दबा लेती है। जिससे उस पर फल नहीं लग पाता। **20**और कुछ लोग उस बीज के समान हैं जो अच्छी धरती पर बोया गया है। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं और ग्रहण करते हैं। इन पर फल लगता है कहीं तीस गुणा, कहीं साठ गुणा तो कहीं सौ गुणे से भी अधिक।"

जो तुम्हारे पास है, उसका उपयोग करो

21फिर उसने उनसे कहा, "क्या किसी दिये को कभी इसलिये लाया जाता है कि उसे किसी बर्तन के या बिस्तर के नीचे रख दिया जाये? क्या इसे दीवट के ऊपर रखने

के लिये नहीं लाया जाता? 22क्योंकि कुछ भी ऐसा गुप्त
नहीं है जो प्रकट नहीं होगा और कोई रहस्य ऐसा नहीं है
जो प्रकाश में नहीं आयेगा। 23यदि किसी के पास कान हैं
तो वह सुने!"

24फिर उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम सुनते हो
उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, जिस नाप से तुम दूसरों
को नापते हो, उसी नाप से तुम भी नापे जाओगे। बल्कि
तुम्हारे लिये उसमें कुछ और भी जोड़ दिया जायेगा।
25जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिस
किसी के पास नहीं है, उसके पास जो कुछ है, वह भी ले
लिया जायेगा।"

बीज का दृष्टान्त

26फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे
कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये। 27रात को सोये और
दिन को जागे और फिर बीज में अंकुर निकलें, वे बढ़ें
और पता ही न चले कि यह सब कैसे हो रहा है। 28धरती
अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर फिर बाल
और फिर बालों में भरपूर अनाज। 29जब अनाज पक
जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये से काटता है क्योंकि
फसल काटने का समय आ जाता है।"

राई के दाने का दृष्टान्त

30फिर उसने कहा, "हम कैसे बतायें कि परमेश्वर
का राज्य कैसा है? उसकी व्याख्या करने के लिये
हम किस उदाहरण का प्रयोग करें? 31वह राई के दाने
जैसा है जो जब धरती में बोया जाता है तो बीजों में
सबसे छोटा होता है। 32किन्तु जब वह रोप दिया जाता
है तो बढ़ कर भूमि के सभी पौधों से बड़ा हो जाता
है। उसकी शाखाएँ इतनी बड़ी हो जाती हैं कि हवा
में उड़ती चिड़ियाएँ उसकी छाया में घोंसला बना सकती
हैं।"

33ऐसे ही और बहुत से दृष्टान्त देकर वह उन्हें वचन
सुनाया करता था। वह उन्हें, जितना वे समझ सकते थे,
बताता था। 34बिना किसी दृष्टान्त का प्रयोग किये वह
उनसे कुछ भी नहीं कहता था। किन्तु जब अपने शिष्यों
के साथ वह अकेला होता तो सब कुछ का अर्थ बता कर
उन्हें समझाता।

बवंडर को शांत करना

35उस दिन जब शाम हुई, यीशु ने उनसे कहा, "चलो,
उस पार चलें।" 36इसलिये, वे भीड़ को छोड़ कर, जैसे वह
था वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले। उसके साथ और
भी नावें थीं। 37एक तेज बवंडर उठा। लहरें नाव पर पछाड़ें
मार रही थीं। नाव पानी से भर जाने को थी। 38किन्तु
यीशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाये सो रहा था।
उन्होंने उसे जगाया और उससे कहा, "हे गुरु, क्या तुझे
ध्यान नहीं है कि हम डूब रहे हैं?"

39यीशु खड़ा हुआ। उसने हवा को डाँटा और लहरों से
कहा, "शान्त हो जाओ! थम जाओ!" तभी बवंडर थम
गया और चारों तरफ असीम शांति छा गयी।

40फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम डरते क्यों हो? क्या
तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है?"

41किन्तु वे बहुत डर गये थे। फिर उन्होंने आपस में
एक दूसरे से कहा, "आखिर यह है कौन कि हवा और
पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं?"

दुष्टात्माओं से छुटकारे

5 फिर वे झील के उस पार गिरासेनियों के देश
पहुँचे। 2यीशु जब नाव से बाहर आया तो कब्रों में से
निकल कर तत्काल एक ऐसा व्यक्ति जिस में दुष्टात्मा का
प्रवेश था, उससे मिलने आया। 3वह कब्रों के बीच रहा
करता था। उसे कोई नहीं बाँध सकता था, यहाँ तक कि
ज़ंजीरों से भी नहीं। 4क्योंकि उसे जब जब हथकड़ी और
बेड़ियाँ डाली जातीं, वह उन्हें तोड़ देता। ज़ंजीरों के
टुकड़े-टुकड़े कर देता और बेड़ियों को चकनाचूर। कोई
भी उसे काबू नहीं कर पाता था। 5क़ब्रों और पहाड़ियों में
रात-दिन लगातार, वह चीखता-पुकारता अपने को पत्थरों
से घायल करता रहता था।

6उसने जब दूर से यीशु को देखा, वह उसके पास दौड़ा
आया और उसके सामने प्रणाम करता हुआ गिर पड़ा।
7और ऊँचे स्वर में पुकारते हुए बोला, "सबसे महान
परमेश्वर के पुत्र, हे यीशु! तू मुझसे क्या चाहता है? तुझे
परमेश्वर की शपथ, मेरी विनती है तू मुझे यातना मत
दे।" 8क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, " ओ दुष्टात्मा, इस
मनुष्य में से निकल आ।"

9तब यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

और उसने उसे बताया, "मेरा नाम लीजन अर्थात् सेना

है क्योंकि हम बहुत से हैं।" 10उसने यीशु से बार बार विनती की कि वह उन्हें उस क्षेत्र से न निकाले।

11वहीं पहाड़ी पर उस समय सुअरों का एक बड़ा सा रेवड़ चर रहा था। 12दुष्टात्माओं ने उससे विनती की, "हमें उन सुअरों में भेज दो ताकि हम उन में समा जायें।" 13और उसने उन्हें अनुमति दे दी। फिर दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से निकल कर सुअरों में समा गयीं, और वह रेवड़, जिसमें कोई दो हज़ार सुअर थे, ढलवाँ किनारे से नीचे की तरफ लुढ़कते–पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। और फिर वहीं डूब मरा।

14फिर रेवड़ के रखवालों ने जो भाग खड़े हुए थे, शहर और गाँव में जा कर यह समाचार सुनाया। तब जो कुछ हुआ था, उसे देखने लोग वहाँ आये। 15वे यीशु के पास पहुँचे और देखा कि वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, कपड़े पहने पूरी तरह सचेत वहाँ बैठा है; और यह वही था जिस में दुष्टात्माओं की पूरी सेना समाई थी, वे डर गये। 16जिन्होंने वह घटना देखी थी, लोगों को उसका ब्योरा देते हुए बताया कि जिसमें दुष्टात्माएँ समाई थीं, उसके साथ और सुअरों के साथ क्या बीती। 17तब लोग उससे विनती करने लगे कि वह उनके यहाँ से चला जाये।

18और फिर जब यीशु नाव पर चढ़ रहा था तभी जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएँ थीं, यीशु से विनती करने लगा कि वह उसे भी अपने साथ ले ले।

19किन्तु यीशु ने उसे अपने साथ चलने की अनुमति नही दी। और उससे कहा, "अपने ही लोगों के बीच घर चला जा और उन्हें वह सब बता जो प्रभु ने तेरे लिये किया है। और उन्हें यह भी बता कि प्रभु ने दया कैसे की।" 20फिर वह चला गया और दिकपुलिस के लोगों को बताने लगा कि यीशु ने उसके लिये कितना बड़ा काम किया है। इससे सभी लोग चकित हुए।

एक मृत लड़की और रोगी स्त्री

21यीशु जब फिर परले पार गया तो उसके चारों तरफ एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी। वह झील के किनारे था। तभी 22यहूदी धर्मसभा भवन का एक अधिकारी जिसका नाम याईर था वहाँ आया और जब उसने यीशु को देखा तो वह उसके पैरों पर गिर कर 23आग्रह के साथ विनती करता हुआ बोला, "मेरी नन्ही सी बच्ची मरने को पड़ी है, मेरी विनती है कि तू मेरे साथ चल और अपना हाथ उसके सिर पर रख जिससे वह अच्छी हो कर जीवित रहे।"

24तब यीशु उसके साथ चल पड़ा और एक बड़ी भीड़ भी उसके साथ हो ली। जिससे वह दबा जा रहा था।

25वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह बरस से लगातार खून जा रहा था। 26वह अनेक चिकित्सकों से इलाज कराते कराते बहुत दुःखी हो चुकी थी। उसके पास जो कुछ था, सब खर्च कर चुकी थी, पर उसकी हालत में कोई भी सुधार नहीं आ रहा था, बल्कि और बिगड़ती जा रही थी। 27जब उसने यीशु के बारे में सुना तो वह भीड़ में उसके पीछे आयी और उसका वस्त्र छू लिया। 28वह मन ही मन कह रही थी, "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ तो ठीक हो जाऊँगी।" 29और फिर जहाँ से खून जा रहा था, वह स्त्रोत तुरंत ही सूख गया। उसे अपने शरीर में ऐसी अनुभूति हुई जैसे उसका रोग अच्छा हो गया हो। 30यीशु ने भी तत्काल अनुभव किया जैसे उसकी शक्ति उसमें से बाहर निकली हो। वह भीड़ में पीछे मुड़ा और पूछा, "मेरे वस्त्र किसने छुए?"

31तब उसके शिष्यों ने उससे कहा, "तू देख रहा है भीड़ तुझे चारों तरफ़ से दबाये जा रही है और तू पूछता है 'मुझे किसने छुआ?'"

32किन्तु वह चारों तरफ देखता ही रहा कि ऐसा किसने किया। 33फिर वह स्त्री, यह जानते हुए कि उसको क्या हुआ है, भय से काँपती हुई सामने आई और उसके चरणों पर गिर कर सब सच सच कह डाला। 34फिर यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है। चैन से जा और अपनी बीमारी से बची रह।"

35वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर से कुछ लोग आये और उससे बोले, "तेरी बेटी मर गयी। अब तू गुरु को नाहक कष्ट क्यों देता है?"

36किन्तु यीशु ने, उन्होंने जो कहा था सुना और यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी से वह बोला, "डर मत, बस विश्वास कर।"

37फिर वह सब को छोड़, केवल पतरस, याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना को साथ लेकर 38यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर गया। उसने देखा कि वहाँ खलबली मची है; और लोग ऊँचे स्वर में रोते हुए विलाप

कर रहे हैं। 39वह भीतर गया और उनसे बोला, “यह
रोना बिलखना क्यों है? बच्ची मरी नहीं है; वह सो रही
है।” 40इस पर उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई। फिर उसने सब
लोगों को बाहर भेज दिया और बच्ची के पिता, माता
और जो उसके साथ थे, केवल उन्हें साथ रखा। 41उसने
बच्ची का हाथ पकड़ा और कहा, “तलीता, कूमी!”
(अर्थात् “छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ी हो
जा!”) 42फिर छोटी बच्ची तत्काल खड़ी हो गयी और
इधर उधर चलने फिरने लगी। (वह लड़की बारह साल
की थी)। लोग तुरन्त आश्चर्य से भर उठे। 43यीशु ने उन्हें
बड़े आदेश दिये कि किसी को भी इसके बारे में पता न
चले। फिर उसने उन लोगों से कहा कि वे उस बच्ची को
खाने को कुछ दें।

यीशु का अपने नगर जाना

6 फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर अपने नगर को
चल दिया। उसके शिष्य भी उसके साथ थे। 2जब
सब्त का दिन आया, उसने प्रार्थना सभागार में उपदेश
देना आरम्भ किया। उसे सुनकर बहुत से लोग
आश्चर्यचकित हुए। वे बोले, “इसको ये बातें कहाँ से मिली
हैं? यह कैसी बुद्धिमानी है जो इसको दी गयी है? यह ऐसे
आश्चर्य कर्म कैसे करता है? 3क्या यह वही बढ़ई नहीं है
जो मरियम का बेटा है, और क्या यह याकूब, योसेस,
यहूदा और शमौन का भाई नही है? क्या ये जो हमारे साथ
रहती हैं इसकी बहनें नही हैं?” सो उन्हें उसे स्वीकार
करने में समस्या हो रही थी।

4यीशु ने तब उनसे कहा, “किसी नबी का अपने निजी
देश, संबंधियों और परिवार को छोड़ और कहीं अनादर
नहीं होता।” 5वहाँ वह कोई आश्चर्य कर्म भी नहीं कर
सकता। सिवाय इसके कि वह कुछ रोगियों पर हाथ रख
कर उन्हें चंगा कर दे। 6यीशु को उनके अविश्वास पर
बहुत अचरज हुआ।

फिर वह गाँवों में लोगों को उपदेश देता घूमने लगा।
7उसने सभी बारह शिष्यों को अपने पास बुलाया। और दो
दो कर के वह उन्हें बाहर भेजने लगा। उसने उन्हें
दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया। 8और यह निर्देश दिया,
“आप अपनी यात्रा के लिए लाठी के सिवा साथ कुछ न
लें। न रोटी, न बिस्तर, न पटुके में पैसे। 9आप चप्पल तो
पहन सकते है किन्तु कोई अतिरिक्त कुर्ती नहीं। 10जिस
किसी घर में तुम जाओ, वहाँ उस समय तक ठहरो जब
तक उस नगर को छोड़ो। 11और यदि किसी स्थान पर
तुम्हारा स्वागत न हो और वहाँ के लोग तुम्हें न सुनें, तो
उसे छोड़ दो। और उनके विरोध में साक्षी देने के लिये
अपने पैरों से वहाँ की धूल झाड़ दो।”

12फिर वे वहाँ से चले गये। और उन्होंने उपदेश दिया
कि लोगों, मन फिराओ! 13उन्होनें बहुत सी दुष्टात्माओं
को बाहर निकाला और बहुत से रोगियों को जैतून के तेल
से अभिषेक करते हुए चंगा किया।

हेरोदेस का विचार: यीशु यहून्ना है

14राजा हेरोदेस* ने इस बारे में सुना; क्योंकि यीशु का
यश सब कहीं फैल चुका था। कुछ लोग कह रहे थे,
“बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है और
इसीलिये उसमें अद्‌भुत शक्तियाँ काम कर रही हैं।”

15दूसरे कह रहे थे, “वह एलिय्याह* है।”

कुछ और कह रहे थे, “यह नबी है या प्राचीन काल के
नबियों जैसा कोई एक।”

16पर जब हेरोदेस ने यह सुना तो वह बोला, “यूहन्ना
जिसका सिर मैंने कटवाया था, वही जी उठा है!”

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की हत्या

17क्योंकि हेरोदेस ने स्वयं ही यूहन्ना को बंदी बनाने
और जेल में डालने की आज्ञा दी थी। उसने अपने भाई
फिलिप की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने
विवाह कर लिया था, ऐसा किया। 18क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस
से कहा करता था कि यह उचित नहीं है कि तुमने अपने
भाई की पत्नी से विवाह कर लिया है। 19इस पर हेरोदियास
उससे बैर रखने लगी थी। वह चाहती थी कि उसे मार
डाला जाये पर मार नहीं पाती थी। 20क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना
से डरता था। हेरोदेस जानता था कि यूहन्ना एक सच्चा
और पवित्र पुरुष है, इसीलिये वह इसकी रक्षा करता
था। हेरोदेस जब यूहन्ना की बातें सुनता था तो वह बहुत
घबराता था, फिर भी उसे उसकी बातें सुनना बहुत भाता
था।

हेरोदेस अर्थात् हेरोद अंतिपस, गलील और पेरि का राजा तथा हेरोद महान का पुत्र।

एलिय्याह एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह से सैंकड़ों साल पहले हुआ था और परमेश्वर के बारे में लोगों को बताता था।

21संयोग से फिर वह समय आया जब हेरोदेस ने ऊँचे
अधिकारियों, सेना के नायकों और गलील के बड़े लोगों
को अपने जन्म दिन पर एक जेवनार दी। 22हेरोदियास
की बेटी ने भीतर आकर जो नृत्य किया, उससे उसने
जेवनार में आये मेहमानों और हेरोदेस को बहुत प्रसन्न
किया।

इस पर राजा हेरोदेस ने लड़की से कहा, "माँग, जो
कुछ तुझे चाहिये। मैं तुझे दूँगा।" 23फिर उसने उससे
शपथपूर्वक कहा, "मेरे आधे राज्य तक जो कुछ तू माँगेगी,
मैं तुझे दूँगा।"

24इस पर वह बाहर निकल कर अपनी माँ के पास
आई और उससे पूछा, "मुझे क्या माँगना चाहिये?"

फिर माँ ने बताया, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का
सिर।"

25तब वह तत्काल दौड़ कर राजा के पास भीतर आयी
और कहा, "मैं चाहती हूँ कि तू मुझे बपतिस्मा देने वाले
यूहन्ना का सिर तुरन्त थाली में रख कर दे।"

26इस पर राजा बहुत दुखी हुआ, पर अपनी शपथ और
अपनी जेवनार के मेहमानों के कारण वह उस लड़की
को मना करना नहीं चाहता था। 27इसलिये राजा ने उसका
सिर ले आने की आज्ञा देकर तुरंत एक जल्लाद भेज
दिया। फिर उसने जेल में जाकर उसका सिर काट कर
28और उसे थाली में रख कर उस लड़की को दिया। और
लड़की ने उसे अपनी माँ को दे दिया। 29जब यूहन्ना के
शिष्यों ने इस विषय में सुना तो वे आकर उसका शव ले
गये और उसे एक कब्र में रख दिया।

यीशु का पाँच हज़ार से अधिक को भोजन कराना

30फिर दिव्य संदेश का प्रचार करने वाले प्रेरितों ने
यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्होंने किया था
और सिखाया था, सब उसे बताया। 31फिर यीशु ने उनसे
कहा, "तुम लोग मेरे साथ किसी एकांत स्थान पर चलो
और थोड़ा आराम करो" क्योंकि वहाँ बहुत लोगों का
आना जाना लगा हुआ था और उन्हें खाने तक का मौका
नहीं मिल पाता था। 32इसलिये वे अकेले ही एक नाव में
बैठ कर किसी एकांत स्थान को चले गये। 33बहुत से
लोगों ने उन्हें जाते देखा और पहचान लिया कि वे कौन
थे। इसलिये वे सारे नगरों से धरती के रास्ते चल पड़े और
उनसे पहले ही वहाँ जा पहुँचे। 34जब यीशु नाव से बाहर
निकला तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। वह उनके लिए
बहुत दुखी हुआ क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों जैसे थे।
सो वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।

35तब तक बहुत शाम हो चुकी थी। इसलिये उसके
शिष्य उसके पास आये और बोले, "यह एक सुनसान जगह
है और शाम भी बहुत हो चुकी है। 36लोगों को आसपास
के गाँवों और बस्तियों में जाने दो ताकि वे अपने लिए कुछ
खाने को मोल ले सकें।"

37किन्तु उसने उत्तर दिया, "उन्हें खाने को तुम दो।"

तब उन्होंने उससे कहा, "क्या हम जायें और दो सौ
दीनार की रोटियाँ मोल ले कर उन्हें खाने को दें?"

38उसने उनसे कहा, "जाओ और देखो, तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?"

पता करके उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ हैं।"

39फिर उसने आज्ञा दी, "हरी घास पर सब को पंगत
में बैठा दो।" 40तब वे सौ–सौ और पचास–पचास की
पंगतों में बैठ गये। 41और उसने वे पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ उठा कर स्वर्ग की ओर देखते हुए धन्यवाद दिया
और 'रोटियाँ तोड़ कर लोगों को परोसने के लिए, अपने
शिष्यों को दीं। और उसने उन दो मछलियों को भी उन
सब लोगों में बाँट दिया। 42सब ने छक कर खाया और
तृप्त हुए। 43और फिर उन्होंने बची हुई रोटियों और
मछलियों से भर कर, बारह टोकरियाँ उठाई। 44जिन लोगों
ने रोटियाँ खाईं, उनमे केवल पुरुषों की ही संख्या पाँच
हज़ार थी।

यीशु का पानी पर चलना

45फिर उसने अपने चेलों को तुरंत नाव पर चढ़ाया
ताकि जब तक वह भीड़ को बिदा करे, वे उससे पहले
ही परले पार बैतसैदा चले जायें। 46उन्हें विदा करके,
प्रार्थना करने के लिये, वह पहाड़ी पर चला गया। 47और
जब शाम हुई तो नाव झील के बीचों–बीच थी और वह
अकेला धरती पर था। 48उसने देखा कि उन्हें नाव खेना
भारी पड़ रहा था। क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी। लगभग
रात के चौथे पहर वह झील पर चलते हुए उनके पास
आया। वह उनके पास से निकलने को ही था। 49उन्होंने
उसे झील पर चलते देख सोचा कि वह कोई भूत है। और
उनकी चीख निकल गयी 50क्योंकि सभी ने उसे देखा था

और वे सहम गये थे। तुरंत उसने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "साहस रखो, यह मैं हूँ! डरो मत!" 51फिर वह उनके साथ नाव पर चढ़ गया और हवा थम गयी। इससे वे बहुत चकित हुए। 52वे रोटियों के आश्चर्य कर्म के विषय में समझ नहीं पाये थे। उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी।

53झील पार करके वे गन्नेसरत पहुँचे। उन्होंने नाव बाँध दी। 54जब वे नाव से उतर कर बाहर आये तो लोग यीशु को पहचान गये। 55फिर वे बीमारों को खाटों पर डाले समूचे क्षेत्र में जहाँ कहीं भी, उन्होंने सुना कि वह है, उन्हें लिये दौड़ते फिरे। 56वह गावों में, नगरों में या बस्तियों में, जहाँ कहीं भी जाता, लोग अपने बीमारों को बाज़ारों में रख देते और उससे विनती करते कि वह अपने वस्त्र का बस कोई सिरा ही उन्हें छू लेने दे। और जो भी उसे छू पाये, सब चंगे हो गये।

मनुष्य के नियमों से परमेश्वर का विधान महान है

7 तब फरीसी और कुछ धर्मशास्त्री जो यरुशलेम से आये थे, यीशु के आसपास एकत्र हुए। 2उन्होंने देखा कि उसके कुछ शिष्य बिना हाथ धोये भोजन कर रहे हैं। 3क्योंकि अपने पुरखों की रीति पर चलते हुए फरीसी और दूसरे यहूदी जब तक सावधानी के साथ पूरी तरह अपने हाथ नहीं धो लेते भोजन नहीं करते। 4ऐसे ही बाज़ार से लाये खाने को वे बिना धोये नहीं खाते। ऐसी ही और भी अनेक रूढ़ियाँ है, जिनका वे पालन करते हैं। जैसे कटोरों, कलसों, ताँबे के बर्तनों को माँजना, धोना आदि।

5इसलिये फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने यीशु से पूछा–"तुम्हारे शिष्य पुरखों की परम्परा का पालन क्यों नहीं करते? बल्कि अपना खाना बिना हाथ धोये ही खा लेते हैं।"

6यीशु ने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम जैसे कपटियों के बारे में ठीक ही भविष्यवाणी की थी। जैसा कि लिखा है:

'ये मेरा आदर केवल होठों से करते हैं,
पर इनके मन मुझसे सदा दूर हैं।
7 मुझको इनकी उपासना अर्पित है बिना काम की;
और ये मेरी व्यर्थ उपासना करते हैं।
क्योंकि ये लोगों को मनुज के बनाये सिद्धान्त
और नियम कह करके सिखाते हैं।'

यशायाह 29:13

8तुमने परमेश्वर का आदेश उठाकर एक तरफ रख दिया है और तुम मनुष्यों की परम्परा का सहारा ले रहे हो।"

9उसने उनसे कहा: "तुम परमेश्वर के आदेशों को टालने में बहुत चतुर हो गये हो ताकि तुम अपनी रूढ़ियों की स्थापना कर सको! 10उदाहरण के लिये मूसा ने कहा, 'अपने माता–पिता का आदर कर' और 'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, उसे निश्चय ही मार डाला जाये।' 11पर तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति अपने माता–पिता से कहता है कि मेरी जिस किसी वस्तु से तुम्हें लाभ पहुँच सकता था, मैंने परमेश्वर को समर्पित कर दी है।' 12तो तुम उसके माता–पिता के लिये कुछ भी करना समाप्त कर देने की अनुमति देते हो। 13इस तरह तुम अपने बनाये रीति–रिवाजों से परमेश्वर के वचन को टाल देते हो। ऐसी ही और भी बहुत सी बातें तुम लोग करते हो।"

14यीशु ने भीड़ को फिर अपने पास बुलाया और कहा, "हर कोई मेरी बात सुने और समझे। 15ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से मनुष्य के भीतर जा कर उसे अशुद्ध करे, बल्कि जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध कर सकती हैं।" 16[यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]*

17फिर जब भीड़ को छोड़ कर वह घर के भीतर गया तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टान्त के बारे में पूछा। 18तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी कुछ नही समझे? क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी वस्तु जो किसी व्यक्ति में बाहर से भीतर जाती है, वह उसे दूषित नहीं कर सकती 19क्योंकि वह उसके ह्रदय में नहीं, पेट में जाती है और फिर पखाने से होकर बाहर निकल जाती है।" (ऐसा कहकर उसने खाने की सभी वस्तुओं को शुद्ध कहा।)

20फिर उसने कहा, "मनुष्य के भीतर से जो निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है 21क्योंकि मनुष्य के हृदय के भीतर से ही बुरे विचार और अनैतिक कार्य, चोरी, हत्या, 22व्यभिचार, लालच, दुष्टता, छल–कपट, अभद्रता, ईर्ष्या, चुगलखोरी, अहंकार और मूर्खता बाहर आते हैं।

पद 16 "कुछ यूनानी प्रतियों में पद 16 जोड़ा गया है।"

23ये सब बुरी बातें भीतर से आती हैं और व्यक्ति को अशुद्ध
बना देती हैं।”

ग़ैर यहूदी महिला को सहायता

24फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और सूर के
आस-पास के प्रदेश को चल पड़ा। वहाँ वह एक घर में
गया। वह नहीं चाहता था कि किसी को भी उसके आने
का पता चले। किन्तु वह अपनी उपस्थिति को छुपा नहीं
सका। 25वास्तव में एक स्त्री जिसकी लड़की में दुष्ट आत्मा
का निवास था, यीशु के बारे में सुन कर तत्काल उसके
पास आयी और उसके पैरों में गिर पड़ी। 26यह स्त्री यूनानी
थी और सीरिया के फिनीकी में पैदा हुई थी। उसने अपनी
बेटी में से दुष्टात्मा को निकालने के लिये यीशु से प्रार्थना
की।

27यीशु ने उससे कहा, “पहले बच्चों को तृप्त हो लेने दे
क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर उसे कुत्तों के आगे फेंक
देना ठीक नहीं है।”

28स्त्री ने उससे उत्तर में कहा, “प्रभु, कुत्ते भी तो मेज़
के नीचे बच्चों के खाते समय गिरे चूरचार को खा लेते हैं।”

29फिर यीशु ने उससे कहा, “इस उत्तर के कारण, तू
चैन से अपने घर जा सकती है। दुष्टात्मा तेरी बेटी को
छोड़ बाहर जा चुकी है।”

30सो वह घर चल दी और अपनी बच्ची को खाट पर
सोते पाया। तब तक दुष्टात्मा उससे निकल चुकी थी।

बहरा गूँगा सुनने-बोलने लगा

31फिर वह सूर के इलाके से वापस आ गया और
दिकपुलिस यानी दस-नगर के रास्ते सिदोन होता हुआ
झील गलील पहुँचा। 32वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक
व्यक्ति को लाये जो बहरा था और ठीक से बोल भी नहीं
पाता था। लोगों ने यीशु से प्रार्थना की कि वह उस पर
अपना हाथ रख दे।

33यीशु उसे भीड़ से दूर एक तरफ़ ले गया। यीशु ने
अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और फिर उसने
थूका और उस व्यक्ति की जीभ छुई। 34फिर स्वर्ग की
ओर ऊपर देख कर गहरी साँस भरते हुए उससे कहा,
“इप्फत्तह!” (अर्थात् “खुल जा!”) 35और उसके कान खुल
गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह
साफ साफ बोलने लगा।

36फिर यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे किसी को कुछ न
बतायें। पर उसने लोगों को जितना रोकना चाहा, उन्होंने
उसे उतना ही अधिक फैलाया। 37लोग आश्चर्यचकित
होकर कहने लगे, “यीशु जो करता है, भला करता है।
यहाँ तक कि वह बहरों को सुनने की शक्ति और गूँगों को
बोली देता है।”

चार हज़ार को भोजन

8 उन्हीं दिनों एक दूसरे अवसर पर एक बड़ी भीड़
इकट्ठी हुई। उनके पास खाने को कुछ नहीं था।
यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और उनसे कहा,
2“मुझे इन लोगों पर तरस आ रहा है क्योंकि इन लोगों
को मेरे साथ तीन दिन हो चुके हैं और उनके पास खाने
को कुछ नहीं है। 3और यदि मैं इन्हें भूखा ही घर भेज देता
हूँ तो वे मार्ग में ही ढेर हो जायेंगे। कुछ तो बहुत दूर से आये
हैं।”

4उसके शिष्यों ने उत्तर दिया, “इस जंगल में इन्हें खिलाने
के लिये किसी को पर्याप्त भोजन कहाँ से मिल सकता
है?”

5फिर यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?” “सात”, उन्होंने उत्तर दिया।

6फिर उसने भीड़ को धरती पर नीचे बैठ जाने की
आज्ञा दी। और उसने वे सात रोटियाँ लीं, धन्यवाद किया
और उन्हें तोड़ कर बाँटने के लिये अपने शिष्यों को दिया।
और फिर उन्होंने भीड़ के लोगों में बाँट दिया। 7उनके
पास कुछ थोड़ी मछलियाँ भी थीं, उसने धन्यवाद करके
उन्हें भी बाँट देने को कहा। 8लोगों ने भर पेट भोजन
किया। और फिर उन्होंने बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा
करके सात टोकरियाँ भरीं। 9वहाँ कोई चार हज़ार पुरुष
रहे होंगे। फिर यीशु ने उन्हें विदा किया 10और वह तत्काल
अपने शिष्यों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता प्रदेश को
चला गया।

फ़रीसियों की चाहत : यीशु कुछ अनुचित करे

11फिर फरीसी आये और उससे प्रश्न करने लगे,
उन्होंने उससे कोई स्वर्गीय आश्चर्य चिह्न प्रकट करने को
कहा। उन्होंने यह उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा था।
12तब अपने मन में गहरी आह भरते हुए यीशु ने कहा,
“इस पीढ़ी के लोग कोई आश्चर्य-चिन्ह क्यों चाहते हैं?

इन्हें कोई चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 13फिर वह उन्हें छोड़
कर वापस नाव में आ गया और झील के परले पार चला
गया।

यहूदी नेताओं के विरुद्ध यीशु की चेतावनी

14यीशु के शिष्य कुछ खाने को लाना भूल गये थे। एक
रोटी के सिवाय उनके पास और कुछ नहीं था। 15यीशु ने
उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "सावधान! फरीसियों और
हेरोदेस के ख़मीर से बचे रहो।"

16"हमारे पास रोटी नहीं हैं," इस पर, वे आपस में सोच
विचार करने लगे।

17वे क्या कह रहे हैं, यह जानकर यीशु उनसे बोला,
"रोटी पास नहीं होने के विषय में तुम क्यों सोच विचार
कर रहे हो? क्या तुम अभी भी नहीं समझते बूझते? क्या
तुम्हारी बुद्धि इतनी जड़ हो गयी है? 18तुम्हारी आँखें हैं,
क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान हैं, क्या तुम सुन
नहीं सकते? क्या तुम्हें याद नहीं? 19जब मैंने पाँच हज़ार
लोगों के लिये पाँच रोटियों के टुकड़े किये थे और तुमने
उन्हें कितनी टोकरियों में बटोरा था?"

"बारह", उन्होंने कहा।

20"और जब मैंने चार हज़ार के लिये सात रोटियों के
टुकड़े किये थे तो तुमने कितनी टोकरियाँ भर कर उठाई
थीं?"

"सात", उन्होंने कहा।

21फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी नहीं
समझे?"

अंधे को आँखें

22फिर वे बैतसैदा चले आये। वहाँ कुछ लोग यीशु के
पास एक अंधे को लाये और उससे प्रार्थना की कि वह
उसे छू दे। 23उसने अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे
गाँव के बाहर ले गया। उसने उसकी आँखों पर थूका,
अपने हाथ उस पर रखे और उससे पूछा, "तुझे कुछ दीखता
है?"

24ऊपर देखते हुए उसने कहा, "मुझे लोग दीख रहे हैं।
वे आसपास चलते पेड़ों जैसे लग रहे हैं।"

25तब यीशु ने उसकी आँखों पर जैसे ही फिर अपने
हाथ रखे, उसने अपनी आँखें पूरी खोल दीं। उसे ज्योति
मिल गयी थी। वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख रहा था।
26फिर यीशु ने उसे घर भेज दिया और कहा, "वह गाँव में
न जाये।"

पतरस का कथन: यीशु मसीह है

27और फिर यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी
के आसपास के गाँवों को चल दिये। रास्ते में यीशु ने
अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन
हूँ?"

28उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना पर
कुछ लोग एलिय्याह और दूसरे तुझे भविष्यवक्ताओं में से
कोई एक कहते हैं।"

29फिर यीशु ने उनसे पूछा, "और तुम क्या कहते हो
कि मैं कौन हूँ?"

पतरस ने उसे उत्तर दिया, "तू मसीह है।"

30फिर उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में
यह किसी से न कहें।

31और उसने उन्हें समझाना शुरू किया, "मनुष्य के
पुत्र को बहुत सी यातनाएँ उठानी होंगी और बुज़ुर्ग प्रमुख
याजक तथा धर्म शास्त्रियों द्वारा वह नकारा जायेगा और
निश्चय ही वह मार दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन
वह मरे हुओं में से जी उठेगा।" 32उसने उनको यह साफ़
साफ़ बता दिया। फिर पतरस उसे एक तरफ़ ले गया और
झिड़कने लगा। 33किन्तु यीशु ने पीछे मुड़कर अपने शिष्यों
पर दृष्टि डाली और पतरस को फटकारते हुए बोला,
"शैतान, मुझसे दूर हो जा! तू परमेश्वर की बातों से सरोकार
नहीं रखता, बल्कि मनुष्य की बातों से सरोकार रखता
है।"

34फिर अपने शिष्यों के साथ भीड़ को उसने अपने
पास बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना
चाहता है तो वह अपना सब कुछ त्याग करे और अपना
क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले। 35क्योंकि जो कोई अपने
जीवन को बचाना चाहता है, उसे इसे खोना होगा। और जो
कोई मेरे लिये और सुसमाचार के लिये अपना जीवन
देगा, उसका जीवन बचेगा। 36यदि कोई व्यक्ति अपनी
आत्मा खोकर सारे जगत् को भी पा लेता है, तो उसका
क्या लाभ? 37क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी वस्तु के बदले
में जीवन नही पा सकता। 38यदि कोई इस व्यभिचारी और
पापी पीढ़ी में मेरे नाम और वचन के कारण लजाता है तो
मनुष्य का पुत्र भी जब पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने

परम पिता की महिमा सहित आयेगा, तो वह भी उसके लिए लजायेगा।"

9 और फिर उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया देखने से पहले मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन देना

2छः दिन बाद यीशु केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लेकर, एक ऊँचे पहाड़ पर गया। वहाँ उनके सामने उसने अपना रूप बदल दिया। 3उस के वस्त्र चमचमा रहे थे। एकदम उजले सफेद! धरती पर कोई भी धोबी जितना उजला नहीं धो सकता, उससे भी अधिक उजले सफेद। 4एलिय्याह और मूसा भी उसके साथ प्रकट हुए। वे यीशु से बात कर रहे थे।

5तब पतरस बोल उठा और उसने यीशु से कहा, "हे रब्बी, यह बहुत अच्छा हुआ कि हम यहाँ हैं। हमें तीन मण्डप बनाने दे–एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" 6पतरस ने यह इसलिये कहा कि वह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कहे। वे बहुत डर गये थे।

7तभी एक बादल आया और उन पर छा गया। बादल में से यह कहते एक वाणी निकली–"यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो!"

8और तत्काल उन्होंने जब चारों ओर देखा तो यीशु को छोड़ कर अपने साथ किसी और को नहीं पाया।

9जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि उन्होंने जो कुछ देखा है, उसे वे तब तक किसी को न बतायें जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे।

10सो उन्होंने इस बात को अपने भीतर ही रखा। किन्तु वे सोच विचार कर रहे थे कि "मर कर जी उठने" का क्या अर्थ है? 11फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "धर्मशास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?"

12यीशु ने उनसे कहा, "हाँ, सब बातों को ठीक से व्यवस्थित करने के लिए निश्चय ही एलिय्याह पहले आयेगा। किन्तु मनुष्य के पुत्र के बारे में यह क्यों लिखा गया है कि उसे बहुत सी यातनाएँ झेलनी होंगी और उसे घृणा के साथ नकारा जायेगा? 13मैं तुम्हें बताता हूँ, एलिय्याह आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो कुछ चाहा, किया। ठीक वैसा ही जैसा उसके विषय में लिखा हुआ है।"

बीमार लड़के को चंगा करना

14जब वे दूसरे शिष्यों के पास आये तो उन्होंने उनके आसपास जमा एक बड़ी भीड़ देखी। उन्होंने देखा कि उनके साथ धर्मशास्त्री विवाद कर रहे हैं। 15और जैसे ही सब लोगों ने यीशु को देखा, वे चकित हुए। और स्वागत करने उसकी तरफ़ दौड़े।

16फिर उसने उनसे पूछा, "तुम उनसे किस बात पर विवाद कर रहे हो?"

17भीड़ में से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं अपने बेटे को तेरे पास लाया था। उस पर एक दुष्टात्मा सवार है, जो उसे बोलने नहीं देती। 18जब कभी वह दुष्टात्मा इस पर आती है, इसे नीचे पटक देती है और इसके मुँह से झाग निकलने लगते हैं और यह दाँत पीसने लगता है और अकड़ जाता है। मैंने तेरे शिष्यों से इस दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने की प्रार्थना की किन्तु वे उसे नहीं निकाल सके।"

19फिर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "ओ अविश्वासी लोगो, मैं तुम्हारे साथ कब तक रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? लड़के को मेरे पास ले आओ!"

20तब वे लड़के को उसके पास ले आये और जब दुष्टात्मा ने यीशु को देखा तो उसने तत्काल लड़के को मरोड़ दिया। वह धरती पर जा पड़ा और चक्कर खा गया। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे।

21तब यीशु ने उसके पिता से पूछा, "यह ऐसा कितने दिनों से है?"

पिता ने उत्तर दिया, "यह बचपन से ही ऐसा है। 22दुष्टात्मा इसे मार डालने के लिए कभी आग में गिरा देती है तो कभी पानी में। क्या तू कुछ कर सकता है? हम पर दया कर, हमारी सहायता कर।"

23यीशु ने उससे कहा, "तूने कहा, 'क्या तू कुछ कर सकता है?' विश्वासी व्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव है।"

24तुरंत बच्चे का पिता चिल्लाया और बोला, "मैं विश्वास करता हूँ। मेरे अविश्वास को हटा!"

25यीशु ने जब देखा कि भीड़ उन पर चढ़ी चली आ
रही है, उसने दुष्टात्मा को ललकारा और उससे कहा,
"ओ बच्चे को बहरा गूँगा कर देने वाली दुष्टात्मा, मैं तुझे
आज्ञा देता हूँ इसमें से बाहर निकल आ और फिर इसमें
दुबारा प्रवेश मत कर!"

26तब दुष्टात्मा चिल्लाई। बच्चे पर भयानक दौरा पड़ा।
और वह बाहर निकल गयी। बच्चा मरा हुआ सा दिखने
लगा, बहुत लोगों ने कहा, "वह मर गया!" 27फिर यीशु ने
लड़के को हाथ से पकड़ कर उठाया और खड़ा किया।
वह खड़ा हो गया।

28इसके बाद यीशु अपने घर चला गया। अकेले में
उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर
क्यों नहीं निकाल सके?"

29इस पर यीशु ने उनसे कहा, "ऐसी दुष्टात्मा प्रार्थना
के बिना बाहर नहीं निकाली जा सकती थी।"

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु का कथन

30फिर उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया। और जब वे गलील
होते हुए जा रहे थे तो वह नहीं चाहता था कि वे कहाँ हैं,
इसका किसी को भी पता चले। 31क्योंकि वह अपने शिष्यों
को शिक्षा दे रहा था। उसने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र
मनुष्य के ही हाथों धोखे से पकड़वाया जायेगा और वे उसे
मार डालेंगे। मारे जाने के तीन दिन बाद वह जी उठेगा।"
32पर वे इस बात को समझ नहीं सके और यीशु से इसे
पूछने में डरते थे।

सबसे बड़ा कौन है

33फिर वे कफ़रनहूम आये। यीशु जब घर में था, उसने
उनसे पूछा, "रास्ते में तुम किस बात पर सोच विचार कर
रहे थे?" 34पर वे चुप रहे। क्योंकि वे राह चलते आपस में
विचार कर रहे थे कि सबसे बड़ा कौन है।

35सो वह बैठ गया। उसने बारहों को अपने पास बुलाया
और उनसे कहा, "यदि कोई सबसे बड़ा बनना चाहता है
तो उसे निश्चय ही सबसे छोटा हो कर सब का सेवक
बनना होगा।"

36और फिर एक छोटे बच्चे को लेकर उसने उनके
सामने खड़ा किया। बच्चे को अपनी गोद में लेकर वह
उनसे बोला, 37"मेरे नाम में जो कोई इनमें से किसी भी
एक बच्चे को अपनाता है, वह मुझे अपना रहा है; और
जो कोई मुझे अपनाता है, न केवल मुझे अपना रहा है,
बल्कि उसे भी अपना रहा है, जिसने मुझे भेजा है।"

जो हमारा विरोधी नहीं है, हमारा है

38यूहन्ना ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हमने किसी को तेरे
नाम से दुष्टात्माएँ बाहर निकालते देखा है। हमने उसे रोकना
चाहा क्योंकि वह हममें से कोई नहीं था।"

39किन्तु यीशु ने कहा, "उसे रोको मत। क्योंकि जो
कोई मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करता है, वह तुरंत बाद
मेरे लिए बुरी बातें नहीं कह पायेगा। 40वह जो हमारे
विरोध में नहीं है, हमारे पक्ष में है। 41जो इसलिये तुम्हें
एक कटोरा पानी पिलाता है कि तुम मसीह के हो, मैं
तुम्हें सत्य कहता हूँ, उसे इसका प्रतिफल मिले बिना नहीं
रहेगा।

42"और जो कोई इन नन्हे अबोध बच्चों में से किसी
को, जो मुझमें विश्वास रखते हैं, पाप के मार्ग पर ले जाता
है, तो उसके लिये अच्छा है कि उसकी गर्दन में एक
चक्की का पाट बाँध कर उसे समुद्र में फेंक दिया जाये।
43यदि तेरा हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट डाल,
टुंडा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है बजाय
इसके कि दो हाथों वाला हो कर नरक में डाला जाये, जहाँ
की आग कभी नहीं बुझती। 44* 45यदि तेरा पैर तुझे
पाप की राह पर ले जाये उसे काट दे। लँगड़ा हो कर
जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है, बजाय इसके कि
दो पैरों वाला हो कर नरक में डाला जाये। 46* 47यदि
तेरी आँख तुझ से पाप करवाए तो उसे निकाल दे। काना
होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कहीं अच्छा
है, बजाय इसके कि दो आँखों वाला हो कर नरक में
डाला जाये। 48जहाँ के कीड़े कभी नहीं मरते और जहाँ
की आग कभी बुझती नहीं। 49हर व्यक्ति को आग पर
नमकीन बनाया जायेगा।

50"नमक अच्छा है। किन्तु नमक यदि अपना
नमकीनपन ही छोड़ दे तो तुम उसे दुबारा नमकीन कैसे
बना सकते हो? अपने में नमक रखो और एक दूसरे के
साथ शांति से रहो।"

पद 44 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 44 जोड़ा गया है
जो पद 48 के समान है।

पद 46 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 46 जोड़ा गया है
जो पद 48 के समान है।

तलाक के बारे में यीशु की शिक्षा

10 फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार आ गया। भीड़ की भीड़ फिर उसके पास आने लगीं। और अपनी रीति के अनुसार वह उपदेश देने लगा।

2फिर कुछ फरीसी उसके पास आये और उससे पूछा, "क्या किसी पुरुष के लिये उचित है कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे?" उन्होंने उसकी परीक्षा लेने के लिये उससे यह पूछा था।

3उसने उन्हें उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हें क्या नियम दिया है?"

4उन्होंने कहा, "मूसा ने किसी पुरुष को त्यागपत्र लिखकर पत्नी को त्यागने की अनुमति दी थी।"

5यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा इसलिए लिखी थी कि तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आ सकता। 6सृष्टि के प्रारम्भ से ही, 'परमेश्वर ने उन्हें पुरुष और स्त्री के रूप में रचा है।' 7'इसीलिये एक पुरुष अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा। 8और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।' इसलिए वे दो नहीं रहते बल्कि एक तन हो जाते हैं। 9इसलिये जिसे परमेश्वर ने मिला दिया है, उसे मनुष्य को अलग नहीं करना चाहिए।"

10फिर वे जब घर लौटे तो शिष्यों ने यीशु से इस विषय में पूछा। 11उसने उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक दे कर दूसरी स्त्री से ब्याह रचाता है, वह उस पत्नी के प्रति व्यभिचार करता है। 12और यदि वह स्त्री अपने पति का त्याग करके दूसरे पुरुष से ब्याह करती है तो वह व्यभिचार करती है।"

बच्चों को यीशु की आशीष

13फिर लोग यीशु के पास नन्हें–मुन्ने बच्चों को लाने लगे ताकि वह उन्हें छू कर आशीष दे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें झिड़क दिया। 14जब यीशु ने यह देखा तो उसे बहुत क्रोध आया। फिर उसने उनसे कहा, "नन्हे–मुन्ने बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 15मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनायेगा, उसमें कभी प्रवेश नही करेगा।" 16फिर उन बच्चों को यीशु ने गोद में उठा लिया और उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीष दी।

यीशु से एक धनी व्यक्ति का प्रश्न

17यीशु जैसे ही अपनी यात्रा पर निकला, एक व्यक्ति उसकी ओर दौड़ा और उसके सामने झुक कर उसने पूछा, "उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

18यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर के सिवा और कोई उत्तम नहीं है। 19तू व्यवस्था की आज्ञाओं को जानता है: 'हत्या मत कर, व्यभिचार मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, छल मत कर, अपने माता–पिता का आदर कर…' *"

20उस व्यक्ति ने यीशु से कहा, "गुरु, मैं अपने लड़कपन से ही इन सब बातों पर चलता रहा हूँ।"

21यीशु ने उस पर दृष्टि डाली और उसके प्रति प्रेम का अनुभव किया। फिर उससे कहा, "तुझमें एक कमी है। जा, जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच कर गरीबों में बाँट दे। स्वर्ग में तुझे धन का भंडार मिलेगा। फिर आ, और मेरे पीछे हो ले।"

22यीशु के ऐसा कहने पर वह व्यक्ति बहुत निराश हुआ और दुःखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

23यीशु ने चारों ओर देख कर अपने शिष्यों से कहा, "उन लोगों के लिये, जिनके पास धन है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!"

24उसके शब्दों पर उसके शिष्य अचरज में पड़ गये। पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मेरे बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! 25परमेश्वर के राज्य में किसी धनी के प्रवेश कर पाने से, किसी ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना आसान है!"

26उन्हें और अधिक अचरज हुआ। वे आपस में कहने लगे, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

27यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "यह मनुष्यों के लिये असम्भव है किन्तु परमेश्वर के लिये नहीं। क्योंकि परमेश्वर के लिये सब कुछ सम्भव है।"

28फिर पतरस उससे कहने लगा, "देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं।"

29यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे लिये और सुसमाचार के लिये घर,

---

हत्या … आदर कर देखें निर्गमन 20:12−16; व्यवस्था. 5:16−20

भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों, खेत, सब कुछ को छोड़
देगा। 30और जो इस युग में घरों, भाइयों, बहनों, माताओं,
बच्चों और खेतों को सौ गुणा अधिक करके नहीं
पायेगा–किन्तु यातना के साथ। और आने वाले युग में
अनन्त जीवन। 31और बहुत से वे जो आज सबसे अन्तिम
हैं, सबसे पहले हो जायेंगे, और बहुत से वे जो आज सबसे
पहले हैं, सबसे अन्तिम हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

32फिर यरुशलेम जाते हुए जब वे मार्ग में थे तो यीशु
उनसे आगे चल रहा था। वे डरे हुए थे और जो उनके
पीछे चल रहे थे, वे भी डरे हुए थे। फिर यीशु बारहों
शिष्यों को अलग ले गया और उन्हें बताने लगा कि उसके
साथ क्या होने वाला है। 33 "सुनो, हम यरुशलेम जा रहे
हैं। मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वा कर प्रमुख याजकों
और धर्मशास्त्रियों को सौंप दिया जायेगा। और वे उसे
मृत्यु दण्ड दे कर ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे 34जो उसकी
हँसी उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे। वे उसे कोड़े लगायेंगे
और फिर मार डालेंगे। और फिर तीसरे दिन वह जी
उठेगा।"

याकूब और यूहन्ना का यीशु से आग्रह

35फिर जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना यीशु के पास
आये और उससे बोले, "गुरु, हम चाहते हैं कि हम जो कुछ
तुझ से माँगे, तू हमारे लिये वह कर।"

36यीशु ने उनसे कहा, "तुम मुझ से अपने लिये क्या
करवाना चाहते हो?"

37फिर उन्होंने उससे कहा, "हमें अधिकार दे कि तेरी
महिमा में हम तेरे साथ बैठें, हममें से एक तेरे दायें और
दूसरा बायें।"

38यीशु ने उनसे कहा, "तुम नहीं जानते तुम क्या माँग
रहे हो। जो कटोरा मैं पीने को हूँ, क्या तुम उसे पी सकते
हो? या जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ, तुम उसे ले सकते हो?"

39उन्होंने उससे कहा, "हम वैसा कर सकते हैं!"

फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम वह प्याला पिओगे, जो
मैं पीता हूँ? तुम वह बपतिस्मा लोगे, जो बपतिस्मा मैं लेने
को हूँ? 40किन्तु मेरे दायें और बायें बैठने का स्थान देना
मेरा अधिकार नहीं है। ये स्थान उन्हीं पुरुषों के लिए हैं
जिनके लिये ये तैयार किये गये हैं।"

41जब बाकी के दस शिष्यों ने यह सुना तो वे याकूब
और यूहन्ना पर क्रोधित हुए। 42फिर यीशु ने उन्हें अपने
पास बुलाया और उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो ग़ैर
यहूदियों के शासक माने जाते हैं, उनका और उनके
महत्त्वपूर्ण नेताओं का उन पर प्रभुत्व है। 43पर तुम्हारे
साथ ऐसा नहीं है। तुममें से जो कोई बड़ा बनना चाहता है,
वह तुम सब का दास बने। 44और जो तुम में प्रधान बनना
चाहता है, वह सब का सेवक बने 45क्योंकि मनुष्य का
पुत्र तक सेवा कराने नहीं आया है, बल्कि सेवा करने
आया है। और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना जीवन
देने आया है।"

अंधे को आँखें

46फिर वे यरीहो आये और जब यीशु अपने शिष्यों
और एक बड़ी भीड़ के साथ यरीहो को छोड़ कर जा रहा
था, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई नाम का एक अंधा भिखारी
सड़क के किनारे बैठा था। 47जब उसने सुना कि वह
नासरी यीशु है, तो उसने ऊँचे स्वर में पुकार पुकार कर
कहना शुरू किया, "दाऊद के पुत्र यीशु, मुझ पर दया
कर!"

48बहुत से लोगों ने डाँट कर उसे चुप रहने को कहा।
पर वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "दाऊद के
पुत्र, मुझ पर दया कर!"

49तब यीशु रुका और बोला, "उसे मेरे पास लाओ।"

सो उन्होंने उस अंधे व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा,
"हिम्मत रख! खड़ा हो! वह तुझे बुला रहा है।" 50वह
अपना कोट फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के पास
आया।

51फिर यीशु ने उससे कहा, "तू मुझ से अपने लिए क्या
करवाना चाहता है?" अंधे ने उससे कहा, "हे रब्बी, मैं
फिर से देखना चाहता हूँ।"

52तब यीशु बोला, "जा, तेरे विश्वास से तेरा उद्धार
हुआ।" फिर वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में यीशु के
पीछे हो लिया।

11 फिर जब व यरुशलेम के पास जैतून पर्वत पर
बैतफगे और बैतनिय्याह पहुँचे तो यीशु ने अपने
शिष्यों में से दो को 2यह कह कर सामने के गाँव में भेजा,
"जाओ वहाँ जैसे ही तुम गाँव में प्रवेश करोगे एक गदही
का बछेरा बँधा हुआ मिलेगा जिस पर पहले कभी कोई

नहीं चढ़ा। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। 3और यदि कोई
तुमसे पूछे कि 'तुम यह क्यों कर रहे हो?' तो तुम कहना,
'प्रभु को इसकी आवश्यकता है। फिर वह इसे तुरंत ही
वापस लौटा देगा।' "

4तब वे वहाँ से चल पड़े और उन्होंने खुली गली में एक
द्वार के पास गदही के बछेरे को बँधा पाया। सो उन्होंने उसे
खोल लिया। 5कुछ व्यक्तियों ने, जो वहाँ खड़े थे, उनसे
पूछा, "इस गदही के बछेरे को खोल कर तुम क्या कर रहे
हो?" 6उन्होंने उनसे वही कहा जो यीशु ने बताया था। इस
पर उन्होंने उन्हें जाने दिया। 7फिर वे उस गदही के बछेरे
को यीशु के पास ले आये। उन्होंने उस पर अपने वस्त्र
डाल दिये। फिर यीशु उस पर बैठ गया। 8बहुत से लोगों ने
अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिये और बहुतों ने खेतों से
टहनियाँ काट कर वहाँ बिछा दीं। 9वे लोग जो आगे थे
और वे भी जो पीछे थे, पुकार रहे थे,

"होशन्ना!
वह धन्य है जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!
10 धन्य है हमारे पिता दाऊद का राज्य
जो आ रहा है।
होशन्ना स्वर्ग में!"

भजन संहिता 118:25,26

11फिर उसने यरुशलेम में प्रवेश किया और मन्दिर में
गया। उसने चारों ओर की हर वस्तु को देखा क्योंकि
शाम को बहुत देर हो चुकी थी, वह बारहों शिष्यों के साथ
बैतनिय्याह को चला गया।

12अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से निकल रहे थे, उसे
बहुत भूख लगी थी। 13थोड़ी दूर पर उसे अंजीर का एक
हरा भरा पेड़ दिखाई दिया। यह देखने के लिये वह पेड़ के
पास पहुँचा कि कहीं उसे उसी पर कुछ मिल जाये। किन्तु
जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे पत्तों के सिवाय कुछ न मिला
क्योंकि अंजीरों की ऋतु नहीं थी। 14तब उसने पेड़ से
कहा, "अब आगे से कभी कोई तेरा फल न खाये।" उसके
शिष्यों ने यह सुना।

यीशु का मन्दिर जाना

15फिर वे यरुशलेम को चल पड़े। जब उन्होंने मन्दिर
में प्रवेश किया तो यीशु ने उन लोगों को जो मन्दिर में ले
बेच कर रहे थे, बाहर निकालना शुरू कर दिया। उसने
पैसे का लेन देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और
कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। 16और उसने
मंदिर में से किसी को कुछ भी ले जाने नहीं दिया। 17फिर
उसने शिक्षा देते हुए उनसे कहा, "क्या शास्त्रों में यह नहीं
लिखा है, 'मेरा घर सभी जाति के लोगों के लिये प्रार्थना–गृह
कहलायेगा?' किन्तु तुमने उसे 'चोरों का अड्डा' बना दिया
है।"

18जब प्रधान याजकों और धर्मशास्त्रियों ने यह सुना तो
वे उसे मारने का कोई रास्ता ढूँढने लगे। क्योंकि भीड़ के
सभी लोग उसके उपदेश से चकित थे। इसलिये वे उससे
डरते थे। 19फिर जब शाम हुई, तो वे नगर से बाहर निकले।

विश्वास की शक्ति

20अगले दिन सुबह जब यीशु अपने शिष्यों के साथ जा
रहा था तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक से
सूखा देखा। 21तब पतरस ने याद करते हुए यीशु से कहा,
"हे रब्बी, देख! जिस अंजीर के पेड़ को तूने शाप दिया था,
वह सूख गया है!"

22यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर में विश्वास
रखो। 23मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से
यह कहे, 'तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर' और उसके मन
में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास हो कि
जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके लिये
वैसा ही होगा। 24इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम
प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल
गया है, वह तुम्हारा हो गया है। 25और जब कभी तुम
प्रार्थना करते खड़े होते हो तो यदि तुम्हें किसी से कोई
शिकायत है तो उसे क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में स्थित
तुम्हारा परम पिता तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें भी क्षमा
कर दे।" 26["किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे
तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा
नहीं करेगा।"]*

यीशु के अधिकार पर यहूदी नेताओं को संदेह

27फिर वे यरुशलेम लौट आये। यीशु जब मन्दिर में
टहल रहा था तो प्रमुख याजक, धर्मशास्त्री और बुजुर्ग

पद 26 कुछ प्रारम्भिक यूनानी प्रतियों में पद 26 जोड़ा गया है।

यहूदी नेता उसके पास आये। **28**और बोले, “तू इन कार्यों को किस अधिकार से करता है? इन्हें करने का अधिकार तुझे किसने दिया है?”

29यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि मुझे उत्तर दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं यह कार्य किस अधिकार से करता हूँ। **30**जो बपतिस्मा यूहन्ना दिया करता था, वह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था या मनुष्य से? मुझे उत्तर दो!”

31वे यीशु के प्रश्न पर यह कहते हुए आपस में विचार करने लगे, “यदि हम यह कहते हैं, ‘यह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था,’ तो यह कहेगा, ‘तो तुम उसका विश्वास क्यों नहीं करते?’ **32**किन्तु यदि हम यह कहते हैं, ‘वह मनुष्य से प्राप्त हुआ था,’ तो लोग हम पर ही क्रोध करेंगे।” (वे लोगों से बहुत डरते थे क्योंकि सभी लोग यह मानते थे कि यूहन्ना वास्तव में एक भविष्यवक्ता है।) **33**इसलिये उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते।”

इस पर यीशु ने उनसे कहा, “तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये कार्य किस अधिकार से करता हूँ।”

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

12 यीशु दृष्टान्त कथाओं का सहारा लेते हुए उनसे कहने लगा: “एक व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों तरफ़ दीवार खड़ी कर दी। फिर अंगूर के रस के लिए एक कुण्ड बनाया और फिर उसे कुछ किसानों को किराये पर दे कर, यात्रा पर निकल पड़ा। **2**फिर अंगूर पकने की ऋतु में उसने उन किसानों के पास अपना एक दास भेजा ताकि वह किसानों से बगीचे में जो अंगूर हुए हैं, उनमें से उसका हिस्सा ले आये। **3**किन्तु उन्होंने पकड़ कर उस दास की मार–पिटाई की और खाली हाथों वहाँ से भगा दिया। **4**उसने एक और दास उनके पास भेजा। उन्होंने उसके सिर पर वार करते हुए उसका बुरी तरह अपमान किया। **5**उसने फिर एक और दास भेजा जिसकी उन्होंने हत्या कर डाली। उसने ऐसे ही और भी अनेक दास भेजे जिनमें से उन्होंने कुछ की मार–पिटाई की और कितनों को मार डाला।

6“अब उसके पास भेजने को अपना प्यारा पुत्र ही बचा था। आखिरकार उसने उसे भी उनके पास यह कहते हुए भेज दिया, ‘वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे ही।’

7“उन किसानों ने एक दूसरे से कहा, ‘यह तो उसका उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें। इससे उत्तराधिकार हमारा हो जायेगा।’ **8**इस तरह उन्होंने उसे पकड़ कर मार डाला और अंगूरों के बगीचे से बाहर फेंक दिया।

9“इस पर अंगूर के बगीचे का मालिक क्या करेगा? वह आकर उन किसानों को मार डालेगा और बगीचा दूसरों को दे देगा। **10**क्या तुमने शास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा है:

‘वह पत्थर जिसे कारीगरों ने बेकार माना,
वही कोने का पत्थर बन गया।’
11 यह प्रभु ने किया,
जो हमारी दृष्टि में अद्भुत है।’”

भजन संहिता 118:22–23

12वे यह समझ गये थे कि उसने जो दृष्टान्त कहा है, उनके विरोध में था। सो वे उसे बंदी बनाने का कोई रास्ता ढूँढने लगे, पर लोगों से वे डरते थे इसलिये उसे छोड़ कर चले गये।

यीशु को छलने का प्रयत्न

13तब उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदियों को उसे बातों में फसाने के लिये उसके पास भेजा। **14**वे उसके पास आये और बोले, “गुरु, हम जानते हैं कि तू बहुत ईमानदार है और तू इस बात की तनिक भी परवाह नहीं करता कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। क्योंकि तू मनुष्यों की हैसियत या रुतबे पर ध्यान दिये बिना प्रभु के मार्ग की सच्ची शिक्षा देता है। सो बता कैसर को कर देना उचित है या नहीं? हम उसे कर चुकायें या न चुकायें?”

15यीशु उनकी चाल समझ गया। उसने उनसे कहा, “तुम मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ।” **16**सो वे दीनार ले आये। फिर यीशु ने उनसे पूछा, “इस पर किस का चेहरा और नाम अंकित है?” उन्होंने कहा, “कैसर का।”

17तब यीशु ने उन्हें बताया, “जो कैसर का है, उसे कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को दो।” तब वे बहुत चकित हुए।

सदूकियों की चाल

18फिर कुछ सदूकी, जो पुनर्जीवन को नहीं मानते, उसके पास आये और उन्होंने उससे पूछा, **19**“हे गुरु,

मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई मर
जाये और उसकी पत्नी के कोई बच्चा न हो तो उसके
भाई को चाहिये कि वह उसे ब्याह ले और फिर अपने
भाई के वंश को बढ़ाये। 20एक बार की बात है कि सात
भाई थे। सबसे बड़े भाई ने ब्याह किया और बिना कोई
बच्चा छोड़े वह मर गया। 21फिर दूसरे भाई ने उस स्त्री से
विवाह किया, पर वह भी बिना किसी संतान के ही मर
गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया। 22सातों में से किसी
ने भी कोई बच्चा नहीं छोड़ा। आखिरकार वह स्त्री भी मर
गयी। 23मौत के बाद जब वे लोग फिर जी उठेंगे, तो बता
वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वे सातों ही उसे
अपनी पत्नी के रूप में रख चुके थे।"

24यीशु ने उनसे कहा, "तुम न तो शास्त्रों को जानते हो,
और न ही परमेश्वर की शक्ति को। निश्चय ही क्या यही
कारण नहीं है जिससे तुम भटक गये हो? 25क्योंकि वे
लोग जब मरे हुओं में से जी उठेंगे तो उनके विवाह नहीं
होंगे, बल्कि वे स्वर्गदूतों के समान स्वर्ग में होंगे। 26मरे
हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुमने मूसा की पुस्तक
में झाड़ी के बारे में जो लिखा गया है, नहीं पढ़ा? वहाँ
परमेश्वर ने मूसा से कहा था, 'मैं इब्राहीम का परमेश्वर
हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ और याकूब का परमेश्वर
हूँ।'* 27वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर
है। तुम लोग बहुत बड़ी भूल में पड़े हो!"

सबसे बड़ा आदेश

28फिर एक यहूदी धर्मशास्त्री आया और उसने उन्हें
वाद-विवाद करते सुना। यह देख कर कि यीशु ने उन्हें
किस अच्छे ढंग से उत्तर दिया है, उसने यीशु से पूछा,
"सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आदेश कौन सा है?"

29यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्त्वपूर्ण आदेश यह है:
'हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु
है। 30समूचे मन से, समूचे जीवन से, समूची बुद्धि से और
अपनी सारी शक्ति से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम
करना चाहिये।'* 31दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* इन
आदेशों से बड़ा और कोई आदेश नहीं है।"

32इस पर यहूदी धर्मशास्त्री ने उससे कहा, "गुरु, तूने
ठीक कहा। तेरा यह कहना ठीक है कि परमेश्वर एक
है, उसके अलावा और दूसरा कोई नहीं है। 33अपने समूचे
मन से, सारी समझ-बूझ से सारी शक्ति से परमेश्वर को
प्रेम करना और अपने समान अपने पड़ोसी से प्यार रखना,
सारी बलियों और समर्पित भेंटों से जिनका विधान किया
गया है, अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

34जब यीशु ने देखा कि उस व्यक्ति ने समझदारी के
साथ उत्तर दिया है तो वह उससे बोला, "तू परमेश्वर के
राज्य से दूर नहीं है।" इसके बाद किसी और ने उससे
कोई और प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया।

35फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए कहा,
"धर्मशास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
36दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर कहा था:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा:
मेरी दाहिनी ओर बैठ जब तक मैं
तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों तले न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

37दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है। फिर मसीह दाऊद
का पुत्र कैसे हो सकता है?" एक बड़ी भीड़ प्रसन्नता के
साथ उसे सुन रही थी।

38अपने उपदेश में उसने कहा, "धर्मशास्त्रियों से
सावधान रहो। वे अपने लम्बे चोगे पहने हुए इधर उधर
घूमना पसंद करते हैं। बाज़ारों में अपने को नमस्कार
करवाना उन्हें भाता है। 39और प्रार्थना सभागारों में वे
महत्त्वपूर्ण आसनों पर बैठना चाहते हैं। वे जेवनारों में भी
अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की इच्छा रखते हैं। 40वे
विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हैं। दिखावे के लिये वे
लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ बोलते हैं। इन लोगों को कड़े से
कड़ा दण्ड मिलेगा।"

सच्चा दान

41यीशु दान-पात्र के सामने बैठा हुआ देख रहा था कि
लोग दान पात्र में किस तरह धन डाल रहे हैं। बहुत से धनी
लोगों ने बहुत सा धन डाला। 42फिर वहाँ एक गरीब विधवा
आयी और उसने उसमें दो दमड़ियाँ डालीं जो एक पैसे के
बराबर भी नहीं थीं।

43फिर उसने अपने चेलों को पास बुलाया और उनसे
कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, धनवानों द्वारा इस दान-पात्र

"मैं इब्राहीम ... हूँ" देखें निर्गमन 3:6
'हे इस्राएल ... करना चाहिये' देखें व्यवस्था. 6:4-5
"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य. 19:18

में डाले गये प्रचुर दान से इस निर्धन विधवा का यह दान कहीं महान है। 44क्योंकि उन्होंने जो कुछ उनके पास फालतू था, उसमें से दान दिया, किन्तु इसने अपनी दीनता में जो कुछ इसके पास था सब कुछ दे डाला। इसके पास इतना सा ही था जो इसके जीवन का सहारा था!"

यीशु द्वारा विनाश की भविष्यवाणी

13 जब वह मंदिर से जा रहा था, उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "गुरु, देख! ये पत्थर और भवन कितने अनोखे हैं।"

2इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तू इन विशाल भवनों को देख रहा है? यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक-एक पत्थर ढहा दिया जायेगा।"

3जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था तो उससे पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले में पूछा, 4"हमें बता, यह सब कुछ कब घटेगा? जब ये सब कुछ पूरा होने को होगा तो उस समय कैसे संकेत होंगे?"

5इस पर यीशु कहने लगा "सावधान! कोई तुम्हें छलने न पाये। 6मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और दावा करेंगे 'मैं वही हूँ।' वे बहुतों को छलेंगे। 7जब तुम युद्धों या युद्धों की अफवाहों के बारे में सुनो तो घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं है। 8एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़े होंगे। बहुत से स्थानों पर भूचाल आयेंगे और अकाल पड़ेंगे। ये पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

9"अपने बारे में सचेत रहो। वे लोग तुम्हें न्यायालयों के हवाले कर देंगे और फिर तुम्हें उनके सभागारों में पीटा जाएगा और मेरे कारण तुम्हें शासकों और राजाओं के आगे खड़ा होना होगा ताकि उन्हें कोई प्रमाण मिल सके। 10किन्तु यह आवश्यक है कि पहले सब किसी को सुसमाचार सुना दिया जाये। 11और जब कभी वे तुम्हें पकड़ कर तुम पर मुकदमा चलायें तो पहले से ही यह चिन्ता मत करने लगना कि तुम्हें क्या कहना है। उस समय जो कुछ तुम्हें बताया जाये, वही बोलना क्योंकि ये तुम नहीं हो जो बोल रहे हो, बल्कि बोलने वाला तो पवित्र आत्मा है।

12"भाई, भाई को धोखे से पकड़वा कर मरवा डालेगा। पिता, पुत्र को धोखे से पकड़वायेगा। और बाल बच्चे अपने माता-पिता के विरोध में खड़े होकर उन्हें मरवायेंगे। 13मेरे कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे। किन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसका उद्धार होगा।

14"जब तुम 'भयानक विनाशकारी वस्तुओं को', जहाँ वे नहीं होनी चाहियें, वहाँ खड़े देखो" (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) "तब जो लोग यहूदिया में हों, उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये और 15जो लोग अपने घर की छत पर हों, वे घर में भीतर जा कर कुछ भी लाने के लिये नीचे न उतरें। 16और जो बाहर मैदान में हों, वह पीछे मुड़ कर अपना वस्त्र तक न लें। 17उन स्त्रियों के लिये जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत भयानक होंगे। 18प्रार्थना करो कि यह सब कुछ सर्दियों में न हो। 19उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने इस सृष्टि को रचा है, आज तक न कभी आयी है और न कभी आयेगी। 20और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटा न दिया होता तो कोई भी नहीं बचता। किन्तु उन चुने हुए व्यक्तियों के कारण जिन्हें उसने चुना है, उसने उस समय को कम किया है। 21उन दिनों यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, यह रहा मसीह!' या 'वह रहा मसीह!' तो उसका विश्वास मत करना। 22क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता दिखाई पड़ने लगेंगे। और वे ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दर्शाएँगे और अद्भुत काम करेंगे कि हो सके तो चुने हुओं को भी चक्कर में डाल दें। 23इसीलिये तुम सावधान रहना। मैंने समय से पहले ही तुम्हें सब कुछ बता दिया है।

24"उन दिनों यातना के उस काल के बाद,

'सूरज काला पड़ जायेगा,
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी।
25 आकाश से तारे गिरने लगेंगे
और आकाश में महाशक्तियाँ
झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4

26"तब लोग मनुष्य के पुत्र को महाशक्ति और महिमा के साथ बादलों में प्रकट होते देखेंगे। 27फिर वह अपने दूतों को भेज कर चारों दिशाओं, पृथ्वी के एक छोर से आकाश के दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

28"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो कि जब उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती है और उस पर कोंपलें फूटने लगती हैं

तो तुम जान जाते हो कि ग्रीष्म ऋतु आने को है। [29]ऐसे ही जब तुम यह सब कुछ घटित होते देखो तो समझ जाना कि वह समय* निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक। [30]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि निश्चित रूप से इन लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। [31]धरती और आकाश नष्ट हो जायेंगे किन्तु मेरा वचन कभी न टलेगा।

[32]"उस दिन या उस घड़ी के बारे में किसी को कुछ पता नहीं, न स्वर्ग में दूतों को और न अभी मनुष्य के पुत्र को, केवल परम पिता परमेश्वर जानता है। [33]सावधान! जागते रहो! क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आ जायेगा। [34]यह ऐसे ही है जैसे कोई व्यक्ति किसी यात्रा पर जाते हुए सेवकों के ऊपर अपना घर छोड़ जाये और हर एक को उसका अपना अपना काम दे जाये। तथा चौकीदार को यह आज्ञा दे कि वह जागता रहे। [35]इसलिये तुम भी जागते रहो क्योंकि घर का स्वामी न जाने कब आ जाये। साँझ गये, आधी रात, मुर्गे की बाँग देने के समय या फिर दिन निकले। [36]यदि वह अचानक आ जाये तो ऐसा करो जिससे वह तुम्हें सोते न पाये। [37]जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ 'जागते रहो!'"

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

14 फ़सह पर्व और बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव* आने से दो दिन पहले की बात है कि प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री कोई ऐसा रास्ता ढूँढ रहे थे जिससे चालाकी के साथ उसे बंदी बनाया जाये और मार डाला जाये। [2]वे कह रहे थे, "किन्तु यह हमें पर्व के दिनों में नहीं करना चाहिये, नहीं तो हो सकता है, लोग कोई फसाद खड़ा करें।"

यीशु पर इत्र उँडेलना

[3]जब बैतनिय्याह में यीशु शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा था, तभी एक स्त्री सफेद चिकने स्फटिक के एक पात्र में शुद्ध बाल छड़ का इत्र लिये आयी। उसने उस पात्र को तोड़ा और इत्र को यीशु के सिर पर उँडेल दिया।

[4]इससे वहाँ कुछ लोग बिगड़ कर आपस में कहने लगे, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी है? [5]यह इत्र तीन सौ दीनारी से भी अधिक में बेचा जा सकता था। और फिर उस धन को कंगालों में बाँटा जा सकता था।" उन्होंने उसकी कड़ी आलोचना की।

[6]तब यीशु ने कहा, "उसे क्यों तंग करते हो? छोड़ो उसे। उसने तो मेरे लिये एक मनोहर काम किया है। [7]क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे सो तुम जब चाहो उनकी सहायता कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। [8]इस स्त्री ने वही किया जो वह कर सकती थी। उसने समय से पहले ही गाड़े जाने के लिये, मेरे शरीर पर सुगन्ध छिड़क कर उसे तैयार किया है। [9]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: सारे संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार-प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में जो कुछ इस ने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

[10]तब यहूदा इसकरियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजक के पास यीशु को धोखे से पकड़वाने के लिए गया। [11]वे उस की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। इसलिए फिर यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

[12]बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव से एक दिन पहले, जब फ़सह (मेमने) की बलि दी जाया करती थी उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम कहाँ जा कर तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी करें?"

[13]तब उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, "नगर में जाओ, जहाँ तुम्हें एक व्यक्ति जल का घड़ा लिये मिले, उसके पीछे हो लेना। [14]फिर जहाँ कहीं भी वह भीतर जाये, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु ने पूछा है भोजन का मेरा वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह का खाना खा सकूँ।' [15]फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा सजा-सजाया तैयार कमरा दिखायेगा, वहीं हमारे लिये तैयारी करो।"

[16]तब उसके शिष्य वहाँ से नगर को चल दिये जहाँ उन्होंने हर बात वैसी ही पायी जैसी उनसे यीशु ने कही थी। तब उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया है।

वह समय यहाँ यीशु जिस समय की चर्चा कर रहा है, वह समय है जब कोई बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटेगी। देखें लूका 21:31 जहाँ यीशु ने कहा है कि वही परमेश्वर के राज्य के आने का समय है।

बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव यहूदियों का यह पर्व एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उत्सव हैं। इस दिन वे बिना खमीर की रोटी के साथ विशेष प्रकार का भोजन करते है।

17दिन ढले अपने बारह शिष्यों के साथ यीशु वहाँ पहुँचा।
18जब वे बैठे खाना खा रहे थे, तब यीशु ने कहा, "मैं सत्य
कहता हूँ: तुम में से एक जो मेरे साथ भोजन कर रहा है,
वही मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"
19इससे वे दुखी हो कर एक दूसरे से कहने लगे,
"निश्चय ही वह मैं नहीं हूँ!"
20तब यीशु ने उनसे कहा, "वह बारहों में से वही एक
है, जो मेरे साथ एक ही थाली में खाता है। **21**मनुष्य के पुत्र
को तो जाना ही है, जैसा कि उसके बारे में लिखा है। पर
उस व्यक्ति को धिक्कार है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र
पकड़वाया जाएगा। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा
होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।"

प्रभु का भोज

22जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, धन्यवाद
दिया, रोटी को तोड़ा और उसे उनको देते हुए कहा, "लो,
यह मेरी देह है।"
23फिर उसने कटोरा उठाया, धन्यवाद किया और उसे
उन्हें दिया और उन सब ने उसमें से पीया।
24तब यीशु बोला, "यह मेरा लहू है जो एक नए वाचा
का आरंभ है। यह बहुतों के लिये बहाया जा रहा है।
25तुमसे सत्य कहता हूँ कि अब मैं उस दिन तक दाखमधु
को चखूँगा तक नहीं जब तक परमेश्वर के राज्य में नया
दाखमधु न पीऊँ।"
26तब एक गीत गा कर वे जैतून के पहाड़ पर चले
गये।

यीशु की भविष्यवाणी–सब शिष्य उसे छोड़ जायेंगे

27यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब का विश्वास डिग
जायेगा। क्योंकि लिखा है:

> 'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और भेड़ें
> तितर–बितर हो जायेंगी।'
>
> *जकर्याह 13:7*

28किन्तु फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"
29तब पतरस बोला, "चाहे सब अपना विश्वास खो बैठें,
पर मैं नही खोऊँगा।"

30इस पर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य
कहता हूँ, आज, इसी रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले
तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।"
31इस पर पतरस ने और भी बल देते हुए कहा, "यदि
मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी मैं तुझे कभी नकारूँगा
नहीं!" तब बाकी सब शिष्यों ने भी ऐसा ही कहा।

यीशु की एकांत प्रार्थना

32फिर वे एक ऐसे स्थान पर आये जिसे गतसमने कहा
जाता था। वहाँ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तक मैं
प्रार्थना करता हूँ, तुम यहीं बैठो।" **33**और पतरस, याकूब
और यूहन्ना को वह अपने साथ ले गया। वह बहुत दुखी
और व्याकुल हो रहा था। **34**उसने उनसे कहा, "मेरा मन
दुखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम यहीं ठहरो और
सावधान रहो।"
35फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर
झुक कर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी
मुझ पर से टल जाये। **36**फिर उसने कहा, "हे परम पिता!
तेरे लिये सब कुछ सम्भव है। इस कटोरे* को मुझ से दूर
कर। फिर जो कुछ भी मैं चाहता हूँ, वह नहीं बल्कि जो तू
चाहता है, वही कर।"
37फिर वह लौटा तो उसने अपने शिष्यों को सोते देख
पतरस से कहा, "शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक
घड़ी भी जाग नहीं सका? **38**जागते रहो और प्रार्थना करो
ताकि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो चाहती है
किन्तु शरीर निर्बल है।"
39वह फिर चला गया और वैसे ही वचन बोलते हुए
उसने प्रार्थना की। **40**जब वह दुबारा लौटा तो उसने उन्हें
फिर सोते पाया। उनकी आँखों में नींद भरी थी। उन्हें सूझ
नहीं रहा था कि उसे क्या उत्तर दें।
41वह तीसरी बार फिर लौट कर आया और उनसे
बोला, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? अच्छा,
तो सोते रहो। वह घड़ी आ पहुँची है जब मनुष्य का पुत्र
धोखे से पकड़वाया जा कर पापियों के हाथों सौंपा जा

कटोरे यहाँ यीशु उन यातनाओं की ओर संकेत कर रहा है जो आगे चल कर उसे झेलनी है। ये यातनाएँ बहुत कठोर होंगी। उस कटोरे से पीने के समान जिसमें कुछ ऐसा भरा है, जिसे पीना बहुत कठिन है।

रहा है। 42खड़े हो जाओ! आओ चलें। देखो, यह आ रहा है, मुझे धोखे से पकड़वाने वाला व्यक्ति।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

43यीशु बोल ही रहा था कि उसके बारह शिष्यों में से एक यहूदा वहाँ दिखाई पड़ा। उसके साथ लाठियाँ और तलवारें लिए एक भीड़ थी, जिसे याजकों, धर्मशास्त्रियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भेजा था।

44धोखे से पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत बता रखा था, "जिसे मैं चूँमू वही वह है। उसे हिरासत में ले लेना और पकड़ कर सावधानी से ले जाना।"

45सो जैसे ही यहूदा वहाँ आया, उसने यीशु के पास जाकर कहा, "रब्बी!" और उसे चूम लिया। 46फिर तुरंत उन्होंने उसे पकड़ कर हिरासत में ले लिया। 47उसके एक शिष्य ने जो उसके पास ही खड़ा था अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के एक दास पर चला दी जिससे उसका कान कट गया।

48फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैं कोई अपराधी हूँ जिसे पकड़ने तुम लाठी-तलवार ले कर आये हो? 49हर दिन मन्दिर में उपदेश देते हुए मैं तुम्हारे साथ ही था किन्तु तुमने मुझे नहीं पकड़ा। अब यह हुआ ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो।" 50फिर उसके सभी शिष्य उसे अकेला छोड़ भाग खड़े हुए।

51अपनी वस्त्र रहित देह पर चादर लपेटे एक नौजवान उसके पीछे आ रहा था। उन्होंने उसे पकड़ना चाहा 52किन्तु वह अपनी चादर छोड़ कर नंगा भाग खड़ा हुआ।

यीशु की पेशी

53वे यीशु को प्रधान याजक के पास ले गये। फिर सभी प्रमुख याजक, बुज़ुर्ग यहूदी नेता और धर्मशास्त्री इकटठे हुए। 54पतरस उससे दूर-दूर रहते हुए उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ आग तापने लगा।

55सारी यहूदी महासभा और प्रमुख याजक यीशु को मृत्य दण्ड देने के लिये उसके विरोध में कोई प्रमाण ढूँढने का यत्न कर रहे थे पर ढूँढ नहीं पाये। 56बहुतों ने उसके विरोध में झूठी गवाहियाँ दीं, पर वे गवाहियाँ आपस में विरोधी थीं।

57फिर कुछ लोग खड़े हुए और उसके विरोध में झूठी गवाही देते हुए कहने लगे, 58"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मनुष्यों के हाथों बने इस मंदिर को मैं ढहा दूँगा और फिर तीन दिन के भीतर दूसरा बना दूँगा जो हाथों से बना नहीं होगा।'" 59किन्तु इसमें भी उनकी गवाहियाँ एक सी नहीं थीं।

60तब उनके सामने महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, "ये लोग तेरे विरोध में ये क्या गवाहियाँ दे रहे हैं? क्या उत्तर में तुझे कुछ नही कहना?" 61इस पर यीशु चुप रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

महायाजक ने उससे फिर पूछा, "क्या तू पवित्र परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

62यीशु बोला, "मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों में आते देखोगे।"

63महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, "हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? 64तुमने ये अपमानपूर्ण बातें कहते हुए इसे सुना, अब तुम्हारा क्या विचार है?"

उन सब ने उसे अपराधी ठहराते हुए कहा, "इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिये।" 65तब कुछ लोग उस पर थूकते, कुछ उसका मुँह ढकते, कुछ घूँसे मारते और कुछ हँसी उड़ाते कहने लगे, "भविष्यवाणी कर!" और फिर पहरेदारों ने पकड़ कर उसे पीटा।

पतरस का यीशु को नकारना

66पतरस अभी नीचे आँगन ही में बैठा था कि महायाजक की एक दासी आई। 67जब उसने पतरस को वहाँ आग तापते देखा तो बड़े ध्यान से उसे पहचान कर बोली, "तू भी तो उस यीशु नासरी के ही साथ था।" 68किन्तु पतरस मुकर गया और कहने लगा, "मैं नहीं जानता या मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तू क्या कह रही है।" यह कहते हुए वह ड्योढ़ी तक चला गया, और मुर्गे ने बाँग दी।*

69उस दासी ने जब उसे दुबारा देखा तो वहाँ खड़े लोगों से फिर कहने लगी, "यह व्यक्ति भी उन ही में से एक है।"70पतरस फिर मुकर गया। फिर थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोगों ने पतरस से कहा, "निश्चय ही तू उनमें से एक है क्योंकि तू भी गलील का है।"

और ... दी बहुत से युनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

71तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने
लगा, "जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, उस व्यक्ति को
मैं नहीं जानता!"
72तत्काल, मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी। पतरस को उसी
समय वे शब्द याद हो आये जो उससे यीशु ने कहे थे:
"इससे पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तू मुझे तीन बार
नकारेगा।" तब पतरस जैसे टूट गया। वह फूट-फूट कर
रोने लगा।

यीशु पिलातुस के सामने पेश

15 जैस ही सुबह हुई महायाजकों, धर्मशास्त्रियों,
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और समूची यहूदी महासभा
ने एक योजना बनायी। वे यीशु को बँधवा कर ले गये और
उसे पिलातुस को सौंप दिया। 2पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या
तू यहूदियों का राजा है?"
यीशु ने उत्तर दिया, "ऐसा ही है। तू स्वयं कह रहा है।"
3फिर प्रमुख याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये।
4पिलातुस ने उससे फिर पूछा, "क्या तुझे उत्तर नहीं देना
है? देख वे कितनी बातों का दोष तुझ पर लगा रहे हैं।"
5किन्तु यीशु ने अब भी कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर
पिलातुस को बहुत अचरज हुआ।

पिलातुस यीशु को छोड़ने में विफल

6फ़सह पर्व के अवसर पर पिलातुस किसी भी एक
बंदी को, जिसे लोग चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया करता
था। 7बरअब्बा नाम का एक बंदी उन बलवाइयों के साथ
जेल में था जिन्होंने दंगें में हत्या की थी। 8लोग आये और
पिलातुस से कहने लगे कि वह जैसा सदा से उनके लिए
करता आया है, वैसा ही करे।
9पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" 10पिलातुस ने
यह इसलिए कहा कि वह जानता था कि प्रमुख याजकों ने
ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही उसे पकड़वाया है। 11किन्तु प्रमुख
याजकों ने भीड़ को उकसाया कि वह उसके बजाय उनके
लिये बरअब्बा को ही छोड़े।
12किन्तु पिलातुस ने उनसे बातचीत करके फिर पूछा,
"जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या
करूँ बताओ तुम क्या चाहते हो?"
13उत्तर में वे चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"
14तब पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्यों, उसने ऐसा क्या
अपराध किया है?"
पर उन्होंने और अधिक चिल्ला कर कहा, "उसे क्रूस
पर चढ़ा दो।"
15पिलातुस भीड़ को खुश करना चाहता था इसलिये
उसने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को
कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।
16फिर सिपाही उसे रोम के राज्यपाल निवास में ले
गये। उन्होंने सिपाहियों की पूरी पलटन को बुला लिया।
17फिर उन्होंने यीशु को बैंजनी रंग का वस्त्र पहनाया
और काँटों का एक ताज बना कर उसके सिर पर रख
दिया। 18फिर उसे सलामी देने लगे: "यहूदियों के राजा का
स्वागत है!" 19वे उसके सिर पर सरकंडे मारते जा रहे थे।
वे उस पर थूक रहे थे। और घुटनों के बल झुक कर वे
उसके आगे नमन करते जाते थे। 20इस तरह जब वे उसकी
खिल्ली उड़ा चुके तो उन्होंने उसका बैंजनी वस्त्र उतारा
और उसे उसके अपने कपड़े पहना दिये। और फिर उसे
क्रूस पर चढ़ाने, बाहर ले गये।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

21उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक
व्यक्ति, रास्ते में मिला। वह गाँव से आ रहा था। वह सिकन्दर
और रुफुस का पिता था। सिपाहियों ने उस पर दबाव डाला
कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले। 22फिर वे यीशु को
गुलगुता नामक स्थान पर ले गये (जिसका अर्थ है
"खोपड़ी-स्थान।") 23तब उन्होंने उसे लोहबान मिला हुआ
दाखरस पीने को दिया। किन्तु उसने उसे नहीं लिया। 24फिर
उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उसके वस्त्र उन्होंने बाँट
लिये और यह देखने के लिए कि कौन क्या ले, उन्होंने
पासे फेंके।
25दिन के नौ बजे थे, जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।
26उसके विरुद्ध एक लिखित अभियोग पत्र उस पर अंकित
था: "यहूदियों का राजा।" 27उसके साथ दो डाकू भी
क्रूस पर चढ़ाये गये। एक उसके दाहिनी ओर और दूसरा
बाँई ओर। 28["तब धर्मशास्त्र का वह वचन, 'वह डाकूओं
के संग गिना गया', पूरा हुआ।"]* 29उसके पास से निकलते
हुए लोग उसका अपमान कर रहे थे। अपना सिर

पद 28 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 28 जोड़ा गया है।

नचा–नचा कर वे कहते, "अरे, वाह! तू वही है जो मंदिर को ढहा कर तीन दिन में फिर बनाने वाला था। **30**अब क्रूस पर से नीचे उतर और अपने आप को तो बचा ले!"

31इसी तरह प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों ने भी यीशु की खिल्ली उड़ाई। वे आपस में कहने लगे, "यह औरों का उद्धार करता था, पर स्वयं अपने को नहीं बचा सकता है। **32**अब इस 'मसीह' और 'इस्राएल के राजा को' क्रूस पर से नीचे तो उतरने दे ताकि हम यह देख कर उसमें विश्वास कर सकें।" उन दोनों ने भी, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसका अपमान किया।

यीशु की मृत्यु

33फिर समूची धरती पर दोपहर तक अंधकार छाया रहा। **34**दिन के तीन बजे ऊँचे स्वर में पुकारते हुए यीशु ने कहा, "इलोई, इलोई, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों भुला दिया?"

35जो पास में खड़े थे, उनमें से कुछ ने जब यह सुना तो वे बोले, "सुनो! यह एलिय्याह को पुकार रहा है।"

36तब एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को पीने के लिए दिया और कहा, "ठहरो, देखते हैं कि इसे नीचे उतारने के लिए एलिय्याह आता है कि नहीं।"

37फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा और प्राण त्याग दिये।

38तभी मंदिर का पट ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। **39**सेना के एक अधिकारी ने जो यीशु के सामने खड़ा था, उसे पुकारते हुए सुना और देखा कि उसने प्राण कैसे त्यागे। उसने कहा, "यह व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था!"

40कुछ स्त्रियाँ वहाँ दूर से खड़ी देख रही थीं जिनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलौमी थीं। **41**जब यीशु गलील में था तो ये स्त्रियाँ उसकी अनुयायी थीं और उसकी सेवा करती थीं। वहीं और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ यरुशलेम तक आयी थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

42शाम हो चुकी थी और क्योंकि सब्त के पहले का, वह तैयारी का दिन था **43**इसलिये अरिमतिया का यूसुफ़ आया। वह यहूदी महासभा का सम्मानित सदस्य था और परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोहता था। साहस के साथ वह पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। **44**पिलातुस को बड़ा अचरज हुआ कि वह इतनी जल्दी कैसे मर गया। उसने सेना के अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा क्या उसको मरे काफी देर हो चुकी है? **45**फिर जब उसने सेनानायक से ब्यौरा सुन लिया तो यूसूफ को शव दे दिया। **46**फिर यूसुफ ने सन के उत्तम रेशों का बना थोड़ा कपड़ा खरीदा, यीशु को क्रूस पर से नीचे उतारा, उसके शव को उस वस्त्र में लपेटा और उसे एक कब्र में रख दिया जिसे शिला को काट कर बनाया गया था। और फिर कब्र के मुँह पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़का कर टिका दिया। **47**मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थीं कि यीशु को कहाँ रखा गया है।

यीशु का फिर से जी उठना

16 सब्त का दिन बीत जाने पर मरियम मगदलीनी, सलौमी और याकूब की माँ मरियम ने यीशु के शव का अभिषेक कर पाने के लिये सुगन्ध–सामग्री मोल ली। **2**सप्ताह के पहले दिन बड़ी सुबह सूरज निकलते ही वे कब्र पर गयीं। **3**वे आपस में कह रही थीं, "हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन सरकाएगा?"

4फिर जब उन्होंने आँख उठाईं तो देखा कि वह बहुत बड़ा पत्थर वहाँ से हटा हुआ है। **5**फिर जब वे कब्र के भीतर गयीं तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है। वे सहम गयीं।

6फिर युवक ने उनसे कहा, "डरो मत, तुम जिस यीशु नासरी को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह जी उठा है! वह यहाँ नहीं है। इस स्थान को देखो जहाँ उन्होंने उसे रखा था। **7**अब तुम जाओ और उसके शिष्यों तथा पतरस से कहो कि वह तुम से पहले ही गलील जा रहा है जैसा कि उसने तुमसे कहा था, वह तुम्हें वहीं मिलेगा।"

8तब भय और अचरज में डूबीं वे कब्र से बाहर निकल कर भाग गयीं। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि वे बहुत घबराई हुई थीं

[मरकुस पुस्तक की कुछ आदिम यूनानी प्रतियाँ पद आठ पर ही समाप्त हो जाती हैं।]

कुछ अनुयायियों को यीशु का दर्शन

9सप्ताह के पहले दिन प्रभात में जी उठने के बाद वह
सबसे पहले मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुआ
जिसे उसने सात दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था।
10उसने यीशु के साथियों को, जो शोक में डूबे, विलाप
कर रहे थे, जाकर बताया। 11जब उन्होंने सुना कि यीशु
जीवित है और उसने उसे देखा है तो उन्होने विश्वास नहीं
किया।

12इसके बाद उनमें से दो के सामने जब वे खेतों को
जाते हुए, मार्ग में थे, वह एक दूसरे रूप में प्रकट हुआ।
13उन्होंने लौट कर औरों को भी इसकी सूचना दी पर
उन्होंने भी उनका विश्वास नहीं किया।

शिष्यों से यीशु की बातचीत

14बाद में, जब उसके ग्यारहों शिष्य भोजन कर रहे थे,
वह उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उन्हें उनके
अविश्वास और मन की जड़ता के लिए डाँटा फटकारा
क्योंकि इन्होंने उनका विश्वास ही नहीं किया था जिन्होंने
जी उठने के बाद उसे देखा था।

15फिर उसने उनसे कहा, "जाओ और सारी दुनिया
के लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। 16जो कोई
विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसका उद्धार
होगा और जो अविश्वासी है, वह दोषी ठहराया जायेगा।
17"जो मुझमें विश्वास करेंगे, उनमें ये चिह्न होंगे: वे मेरे
नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, वे नयी–नयी
भाषा बोलेंगे, 18वे अपने हाथों से साँप पकड़ लेंगे और वे
यदि विष भी पी जायें तो उनको हानि नहीं होगी, वे रोगियों
पर अपने हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।"

19इस प्रकार जब प्रभु यीशु उनसे बात कर चुका तो
उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया। वह परमेश्वर के दाहिने
बैठ गया। 20उसके शिष्यों ने बाहर जा कर सब कहीं
उपदेश दिया, उनके साथ प्रभु काम कर रहा था। प्रभु ने
वचन को आश्चर्यकर्म की शक्ति से युक्त करके सत्य
सिद्ध किया।

लूका

1 बहुत से लोगों ने हमारे बीच घटी बातों का ब्यौरा
लिखने का प्रयत्न किया। 2वे ही बातें हमें उन लोगों
द्वारा बतायी गयीं, जिन्होंने उन्हें प्रारम्भ से ही घटते देखा
था और जो सुसमाचार के प्रचारक रहे थे। 3हे मान्यवर
थियुफिलुस! क्योंकि मैंने प्रारम्भ से ही सब कुछ का बड़ी
सावधानी से अध्ययन किया है इसलिए मुझे यह उचित
जान पड़ा कि मैं भी तुम्हारे लिये इसका एक क्रमानुसार
विवरण लिखूँ। 4जिससे तुम उन बातों की निश्चिंतता को
जान लो जो तुम्हें सिखाई गयी हैं।

जकरयाह और इलीशिबा

5उन दिनों जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज था वहाँ
जकरयाह नाम का एक यहूदी याजक हुआ करता था। जो
उपासकों के अबिय्याह समुदाय* का था उसकी पत्नी
का नाम इलीशिबा था और वह हारुन के परिवार से थी।
6वे दोनों ही धर्मी थे। वे बिना किसी दोष के प्रभु के सभी
आदेशों और नियमों का पालन करते थे। 7किन्तु उनके
कोई संतान नहीं थी, क्योंकि इलीशिबा बाँझ थी और वे
दोनों ही बहुत बूढ़े हो चले थे।

8जब जकरयाह के समुदाय की मंदिर में याजक के
काम की बारी थी, और वह परमेश्वर के सामने उपासना
के लिये उपस्थित था। 9तो याजकों में चली आ रही
परम्परा के अनुसार पर्ची डालकर उसे चुना गया कि वह
प्रभु के मंदिर में जाकर धूप जलाये। 10जब धूप जलाने
का समय आया तो बाहर इकट्ठे हुए लोग प्रार्थना कर रहे
थे।

11उसी समय जकरयाह के सामने प्रभु का एक दूत
प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा
था। 12जब जकरयाह ने उस दूत को देखा तो वह घबरा
गया और भय ने जैसे उसे जकड़ लिया हो। 13फिर प्रभु के
दूत ने उससे कहा, "जकरयाह डर मत, तेरी प्रार्थना सुन
ली गयी है। इसलिये तेरी पत्नी इलीशिबा एक पुत्र को जन्म
देगी, तू उसका नाम यूहन्ना रखना। 14वह तुम्हें तो आनन्द
और प्रसन्नता देगा ही, साथ ही उसके जन्म से और भी
बहुत से लोग प्रसन्न होंगे। 15क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में
महान होगा। वह कभी भी किसी दाखरस या किसी भी
मदिरा का सेवन नहीं करेगा। अपने जन्म काल से ही वह
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। 16वह इस्राएल के बहुत से
लोगों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर लौटने को प्रेरित
करेगा। 17वह एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित
हो प्रभु के आगे आगे चलेगा। वह पिताओं का हृदय उनकी
संतानों की ओर वापस मोड़ देगा और वह आज्ञा ना मानने
वालों को ऐसे विचारों की ओर प्रेरित करेगा जिससे वे
धर्मियों के जैसे विचार रखें। यह सब, वह लोगों को प्रभु
की खातिर तैयार करने के लिए करेगा।"

18तब जकरयाह ने प्रभु के दूत से कहा, "मैं यह कैसे
जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ और
मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो चली है।"

19तब प्रभु के दूत ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "मैं
जिब्राईल हूँ। मैं वह हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता
हूँ। मुझे तुझ से बात करने और इस सुसमाचार को बताने
को भेजा गया है। 20किन्तु देख! क्योंकि तूने मेरे शब्दों
पर, जो निश्चित समय आने पर सत्य सिद्ध होंगे, विश्वास
नहीं किया, इसलिये तू गूँगा हो जायेगा और उस दिन तक
नहीं बोल पायेगा जब तक यह पूरा न हो ले।"

21उधर बाहर लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे थे।
उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर मन्दिर में क्यों
रुका हुआ है। 22फिर जब वह बाहर आया तो उनसे बोल
नहीं पा रहा था। उन्हें लगा जैसे मन्दिर के भीतर उसे कोई

समुदाय यहूदी याजकों को 24 समुदायों में बाँटा गया था।
देखें 1 इति. 24:7−18

दर्शन हुआ है। वह गूँगा हो गया था और केवल संकेत
कर रहा था। 23और फिर ऐसा हुआ कि जब उसका
उपासना के काम का समय पूरा हो गया तो वह वापस
अपने घर लौट गया।

24थोड़े दिनों बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई।
पाँच महीने तक वह सबसे अलग थलग रही। उसने कहा,
25"अब अन्त में जाकर इस प्रकार प्रभु ने मेरी सहायता
की है। लोगों के बीच मेरी लाज रखने को उसने मेरी सुधि
ली।"

कुँवारी मरियम

26इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील
के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल
को 27एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़ नाम
के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज
था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था। 28जिब्राईल
उसके पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है,
तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ हैं।"

29यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच
में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता
है?

30तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ
से परमेश्वर प्रसन्न है। 31सुन! तू गर्भवती होगी और एक
पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखेगी। 32वह
महान, होगा और वह परम परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा।
और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन
प्रदान करेगा। 33वह अनन्त काल तक याकूब के घराने
पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत कभी
नहीं होगा।"

34इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह सत्य कैसे
हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी हूँ!"

35उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास पवित्र
आत्मा आयेगा और परम प्रधान (परमेश्वर) की शक्ति
तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार वह जन्म लेने
वाला पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। 36और
यह भी सुन कि तेरे ही कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में भी
बुढ़ापे में एक पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा महीना
है। लोग कहते थे कि वह बाँझ है। 37किन्तु परमेश्वर के
लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"

38मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तूने मेरे
लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह स्वर्गदूत उसके
पास से चला गया।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

39उन्हीं दिनों मरियम तैयार होकर तुरन्त यहूदिया के
पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर को चल दी। 40फिर वह
जकरयाह के घर पहुँची और उसने इलीशिबा को
अभिवादन किया। 41हुआ यह कि जब इलीशिबा ने मरियम
का अभिवादन सुना तो जो बच्चा उसके पेट में था, उछल
पड़ा और इलीशिबा पवित्र आत्मा से अभिभूत हो उठी।
42ऊँची आवाज में पुकारते हुए वह बोली, "तू सभी स्त्रियों
में सबसे अधिक भाग्यशाली है और जिस बच्चे को तू
जन्म देगी, वह धन्य है। 43किन्तु यह इतनी बड़ी बात मेरे
साथ क्यों घटी कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी! 44क्योंकि
तेरे अभिवादन का शब्द जैसे ही मेरे कानों में पहुँचा, मेरे
पेट में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। 45तू धन्य है, जिसने यह
विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ कहा है वह हो कर
रहेगा।"

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

46 तब मरियम ने कहा,

47 "मेरी आत्मा प्रभु (परमेश्वर) की स्तुति करती है;
मेरी आत्मा मेरे रखवाले परमेश्वर
में आनन्दित है।
48 उसने अपनी दीन दासी की सुधि ली,
हाँ आज के बाद सभी मुझे धन्य कहेंगे।
49 क्योंकि उस शक्तिशाली ने
मेरे लिये महान कार्य किये।
उसका नाम पवित्र है।
50 जो उससे डरते हैं वह उन पर
पीढ़ी दर पीढ़ी दया करता है।
51 उसने अपने हाथों की शक्ति दिखाई।
उसने अहंकारी लोगों को
उनके अभिमानपूर्ण विचारों के साथ
तितर–बितर कर दिया।
52 उसने सम्राटों को उनके सिंहासनों से
नीचे उतार दिया।
और उसने विनम्र लोगों को ऊँचा उठाया।

53 उसने भूखे लोगों को अच्छी वस्तुओं से
भरपूर कर दिया और धनी लोगों को
खाली हाथों लौटा दिया।
54 वह अपने दास इस्राएल की सहायता करने
आया हमारे पुरखों को दिये वचन के अनुसार
55 उसे इब्राहीम और उसके वंशजों पर
सदा सदा दया दिखाने की याद रही।"

56मरियम कोई तीन महीने तक इलीशिबा के साथ
ठहरी और फिर अपने घर लौट आयी।

यूहन्ना का जन्म

57फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का समय
आया और उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ। 58जब उसके
पड़ोसियों और उसके परिवार के लोगों ने सुना कि प्रभु ने
उस पर दया दर्शायी है तो सबने उसके साथ मिल कर हर्ष
मनाया।

59और फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन बालक का
ख़तना करने के लिए लोग वहाँ आये। वे उसके पिता के
नाम के अनुसार उसका नाम जकरयाह रखने जा रहे थे,
60तभी उसकी माँ बोल उठी, "नहीं, इसका नाम तो यूहन्ना
रखा जाना है।"

61तब वे उससे बोले, "तुम्हारे किसी भी सम्बन्धी का
यह नाम नहीं है।" 62और फिर उन्होंने संकेतों में उसके
पिता से पूछा कि वह उसे क्या नाम देना चाहता है?

63इस पर जकरयाह ने उनसे लिखने के लिये एक
तख्ती माँगी और लिखा, "इसका नाम है यूहन्ना।" इस पर
वे सब अचरज में पड़ गये। 64तभी तत्काल उसका मुँह
खुल गया और उसकी वाणी फूट पड़ी। वह बोलने लगा
और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। 65इससे सभी पड़ोसी
डर गये और यहूदिया के सारे पहाड़ी क्षेत्र में लोगों में इन
सब बातों की चर्चा होने लगी। 66जिस किसी ने भी यह बात
सुनी, अचरज में पड़कर कहने लगा, "यह बालक क्या
बनेगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ उस पर है।

जकरयाह की स्तुति

67तब उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से अभिभूत
हो उठा और उसने भविष्यवाणी की:

68 "इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की जय हो
क्योंकि वह अपने लोगों की सहायता के
लिए आया और उन्हें स्वतन्त्र कराया।
69 उसने हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के
परिवार से एक रक्षक प्रदान किया।
70 जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र
भविष्यवक्ताओं के द्वारा वचन दिया था।
71 उसने हमें हमारे शत्रुओं से और उन सब
के हाथों से, जो हमें घृणा करते थे,
हमारे छुटकारे का वचन दिया था।
72 हमारे पुरखों पर दया दिखाने का और
अपने पवित्र वचन को याद रखने का।
73 उसका वचन था एक वह शपथ जो
हमारे पूर्वज इब्राहीम के साथ ली गयी थी
74 कि हमारे शत्रुओं के हाथों से हमारा
छुटकारा हो और बिना किसी डर के
प्रभु की सेवा करने की अनुमति मिले।
75 और अपने जीवन भर हर दिन उसके सामने
हम पवित्र और धर्मी रह सकें।
76 "हे बालक, अब तू परम प्रधान (परमेश्वर)
का नबी कहलायेगा
क्योंकि तू प्रभु के आगे-आगे चल कर
उसके लिए राह तैयार करेगा।
77 और उसके लोगों से कहेगा कि उनके
पापों की क्षमा द्वारा उनका उद्धार होगा।
78 हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से
एक नये दिन का प्रभात
हम पर ऊपर से उतरेगा।
79 उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन
छाया में जी रहे हैं ताकि हमारे चरणों
को शांति के मार्ग की दिशा मिले।"

80इस प्रकार वह बालक बढ़ने लगा और उसकी आत्मा
दृढ़ से दृढ़तर होने लगी। वह जनता में प्रकट होने से पहले
तक निर्जन स्थानों में रहता रहा।

यीशु का जन्म

2 उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से एक आज्ञा
निकली कि सारे रोमी जगत की जनगणना अंकित
की जाये। 2यह पहली जनगणना थी। यह उन दिनों हुई थी
जब सीरिया का राज्यपाल क्विरिनियुस था। 3सो गणना के
लिए हर कोई अपने अपने नगर गया।

4यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं वंश से
था, इसलिये वह भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया में
दाऊद के नगर बैतलहम को गया। 5वह वहाँ अपनी
मँगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती भी थी, अपना नाम
लिखवाने गया था। 6ऐसा हुआ कि अभी जब वे वहीं थे,
मरियम का बच्चा जनने का समय आ गया। 7और उसने
अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। क्योंकि वहाँ सराय के
भीतर उन लोगों के लिये कोई स्थान नहीं मिल पाया था
इसलिए उसने उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में लिटा
दिया।

यीशु के जन्म की सूचना

8तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ गडरिये थे
जो रात के समय अपने रेवड़ों की रखवाली कर रहे थे।
9उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट
हुआ और उनके चारों ओर प्रभु का तेज प्रकाशित हो
उठा। वे सहम गए। 10तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो
मत, मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ, जिससे सभी
लोगों को महान आनन्द होगा। 11क्योंकि आज दाऊद के
नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु मसीह का जन्म हुआ है।
12तुम्हें उसे पहचानने का चिह्न होगा कि तुम एक बालक
को कपड़ों में लिपटा, चरनी में लेटा पाओगे।"

13उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ बहुत से
और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह कहते हुए प्रभु की
स्तुति कर रहे थे,

14 "स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो
और धरती पर उन लोगों को शांति मिले
जिनसे वह प्रसन्न है।"

15और जब स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर स्वर्ग लौट गये तो वे
गड़ेरिये आपस में कहने लगे "आओ हम बैतलहम चलें
और जो घटना घटी है और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, उसे
देखें।"

16सो वे शीघ्र ही चल दिये और वहाँ जाकर उन्होंने
मरियम और यूसुफ को पाया और देखा कि बालक चरनी
में लेटा हुआ है। 17गडरियों ने जब उसे देखा तो इस बालक
के विषय में जो संदेश उन्हें दिया गया था, उसे उन्होंने सब
को बता दिया। 18जिस किसी ने भी उन्हें सुना, वे सभी
गड़ेरियों की कही बातों पर आश्चर्य करने लगे। 19किन्तु
मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में बसा लिया और
वह उन पर जब तब विचार करने लगी। 20उधर वे गड़ेरिये
जो कुछ उन्होंने सुना था और देखा था, उस सब कुछ के
लिए परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए अपने
अपने घरों को लौट गये।

21और जब बालक के ख़तने का आठवाँ दिन आया
तो उस का नाम यीशु रखा गया। उसे यह नाम उसके गर्भ
में आने से भी पहले स्वर्गदूत द्वारा दे दिया गया था।

यीशु मन्दिर में अर्पित

22और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार सूतक के
दिन पूरे हुए और शुद्ध होने का समय आया तो वे यीशु को
प्रभु को समर्पित करने के लिये यरूशलेम ले गये। 23प्रभु
की व्यवस्था में लिखे अनुसार, "हर पहली नर सन्तान
प्रभु को समर्पित मानी जाएगी।"* 24और प्रभु की व्यवस्था
कहती है, "एक जोड़ी कपोत या कबूतर के दो बच्चे बलि
चढ़ाने चाहिए" सो वे व्यवस्था के अनुसार बलि चढ़ाने ले
गये।

शमौन को यीशु का दर्शन

25यरूशलेम में शमौन नाम का एक धर्मी और भक्त
व्यक्ति हुआ करता था। वह इस्राएल के सुख–चैन की बाट
जोहता रहता था। पवित्र आत्मा उसके साथ था। 26पवित्र
आत्मा द्वारा उसे प्रकट किया गया था कि जब तक वह
प्रभु के मसीह के दर्शन नहीं कर लेगा, मरेगा नहीं। 27वह
आत्मा से प्रेरणा पाकर मंदिर में आया और जब व्यवस्था
के विधि के अनुसार कार्य के लिये बालक यीशु को उसके
माता–पिता मंदिर में लाये। 28तो शमौन यीशु को अपनी
गोद में उठा कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए बोला:

29 "प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार
मुझ अपने दास को शांति के साथ मुक्त कर
30 क्योंकि मैं अपनी आँखों से तेरे
उस उद्धार का दर्शन कर चुका हूँ
31 जिसे तूने सभी लोगों के
सामने तैयार किया है।
32 यह बालक ग़ैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को
उजागर करने के हेतु प्रकाश का स्रोत है

हर पहली ... मानी जाएगी देखें निर्गमन 13:2

और तेरे अपने इस्राएल के लोगों के लिये
यह महिमा है।"

33उसके माता–पिता यीशु के लिए कही गयी इन बातों से अचरज में पड़ गये। **34**फिर शमौन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम से कहा, "यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन या उत्थान का कारण बनने और एक ऐसा चिन्ह ठहराया जाने के लिए निर्धारित किया गया है जिसका विरोध किया जायेगा। **35** जिससे असंख्य हृदयों के भाव प्रकट हो जायेंगे।"

हन्नाह द्वारा यीशु के दर्शन

36वहीं हन्नाह नाम की एक महिला नबी थी। वह अशेर कबीले के फनूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी थी। अपने विवाह के बस सात साल बाद तक ही वह पति के साथ रही थी। **37**और फिर चौरासी वर्ष तक वह वैसे ही विधवा रही। उसने मंदिर कभी नहीं छोड़ा। उपवास और प्रार्थना करते हुए वह रात–दिन उपासना करती रहती थी। **38**उसी समय वह उस बच्चे और माता–पिता के पास आई। उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे थे, उन सब को उस बालक के बारे में बताया।

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

39प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित विधि–विधान पूरा करके वे गलील में अपने नगर नासरत लौट आये। **40**उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट–पुष्ट होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह था।

बालक यीशु

41फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता–पिता यरूशलेम जाया करते थे। **42**जब वह बारह साल का हुआ तो सदा की तरह वे पर्व पर गये। **43**जब पर्व समाप्त हुआ और वे घर लौट रहे थे तो यीशु वहीं यरूशलेम में रह गया किन्तु माता–पिता को इसका पता नहीं चल पाया। **44**यह सोचते हुए कि वह दल में कहीं होगा, वे दिन भर यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और मित्रों के बीच खोजने लगे। **45**और जब वह उन्हें नहीं मिला तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये। **46**और फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह उपदेशकों के बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे प्रश्न पूछता मंदिर में उन्हें मिला। **47**वे सभी जिन्होंने उसे सुना था, उसकी सूझबूझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे। **48**जब उसके माता–पिता ने उसे देखा तो वे दंग रह गये। उसकी माता ने उससे पूछा, "बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? तेरे पिता और मैं तुझे ढूँढते हुए बुरी तरह व्याकुल थे।"

49तब यीशु ने उनसे कहा, "आप मुझे क्यों ढूँढ रहे थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के घर में ही होना चाहिये?" **50**किन्तु यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया था, वे उसे समझ नहीं पाये।

51फिर वह उनके साथ नासरत लौट आया और उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता इन सब बातों को अपने मन में रखती जा रही थी। **52**उधर यीशु बुद्धि में, डील–डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के प्रेम में बढ़ने लगा।

यूहन्ना का संदेश

3 तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल में जब यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में हेरोदेस गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस का, तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ शासक था। **2**और यूहन्ना तथा कैफा महायाजक थे, तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में परेमश्वर का वचन पहुँचा। **3**सो यर्दन के आसपास के समूचे क्षेत्र में घूम घूम कर वह पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के हेतु बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। **4**भविष्यवक्ता यशायाह के वचनों की पुस्तक में जैसा लिखा है:

"किसी का जंगल में पुकारता हुआ शब्द:
'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो
और उसके लिये राहें सीधी करो।
5 हर घाटी भर दी जायेगी और हर पहाड़
और पहाड़ी सपाट हो जायेंगे
टेढ़ी–मेढ़ी और ऊबड़–खाबड़ राहें
समतल कर दी जायेंगी
6 और सभी लोग परमेश्वर के उद्धार
का दर्शन करेंगे!'"

यशायाह 40:3–5

7यूहन्ना उससे बपतिस्मा लेने आये अपार जन समूह से
कहता, "अरे साँप के बच्चो! तुम्हें किसने चेता दिया है
कि तुम आने वाले क्रोध से बच निकलो? 8परिणामों द्वारा
तुम्हें प्रमाण देना होगा कि वास्तव में तुम्हारा मन फिरा है।
और आपस में यह कहना तक आरंभ मत करो कि
'इब्राहीम हमारा पिता है।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर
इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता
है। 9पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है और
हर उस पेड़ को जो उत्तम फल नहीं देता, काट
गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक दिया
जायेगा।"

10तब भीड़ ने उससे पूछा; "तो हमें क्या करना
चाहिये?"

11उत्तर में उसने उनसे कहा, "जिस किसी के पास
दो कुर्ते हों, वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके साथ
बाँट लें। और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही
करे।"

12फिर उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, हमें क्या करना
चाहिये?"

13इस पर उसने उनसे कहा, "जितना चाहिये उससे
अधिक एकत्र मत करो।"

14कुछ सैनिकों ने उससे पूछा, "और हमें क्या करना
चाहिये?"

सो उसने उन्हें बताया, "बल पूर्वक किसी से धन मत
लो। किसी पर झूठा दोष मत लगाओ। अपने वेतन में संतोष
करो।"

15लोग जब बड़ी आशा के साथ बाट जोह रहे थे और
यूहन्ना के बारे में अपने मन में यह सोच रहे थे कि कहीं
यही तो मसीह नहीं है,

16तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सब को उत्तर दिया:
"मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मुझ से
अधिक सामर्थ्यवान है, आ रहा है। मैं उसके जूतों की
तनी खोलने योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और
अग्नि द्वारा बपतिस्मा देगा। 17उसके हाथ में फटकने की
डाँगी है, जिससे वह अनाज को भूसे से अलग कर अपने
खलिहान में उठा कर रखता है। किन्तु वह भूसे को ऐसी
आग में झोंक देगा जो कभी नहीं बुझने वाली।" 18इस
प्रकार ऐसे ही और बहुत से शब्दों से वह उन्हें समझाते हुए
सुसमाचार सुनाया करता था।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति

19(बाद में यूहन्ना ने उस चौथाई प्रदेश के अधीनस्थ
राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हिरोदिआस के
साथ उसके बुरे सम्बन्धों और उसके दूसरे बुरे कर्मों के
लिए डाँटा फटकारा। 20इस पर हेरोदेस ने यूहन्ना को
बंदी बनाकर, जो कुछ कुकर्म उसने किये थे, उनमें एक
कुकर्म और जोड़ लिया।)

यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा

21ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे तो
यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु प्रार्थना कर
रहा था, तभी आकाश खुल गया। 22और पवित्र आत्मा
एक कबूतर का देह धारण कर उस पर नीचे उतरा। और
आकाशवाणी हुई कि "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से बहुत
प्रसन्न हूँ।"

यूसुफ की वंश परम्परा

23यीशु ने जब अपना सेवा कार्य आरम्भ किया तो वह
स्वयं लगभग तीस वर्ष का था। ऐसा सोचा गया कि वह
एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था।

24 एली जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का,
लेवी जो मलकी का,
मलकी जो यन्ना का
यन्ना जो यूसुफ का,
25 यूसुफ जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो आमोस का,
आमोस जो नहूम का,
नहूम जो असल्याह का,
असल्याह जो नोगह का,
26 नोगह जो मात का,
मात जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो शिमी का,
शिमी जो योसेख का,
योसेख जो योदाह का
27 योदाह जो योनान का,
योनान जो रेसा का,
रेसा जो जरुब्बाबिल का,
जरुब्बाबिल जो शालतियेल का,

शालतियेल जो नेरी का,
28 नेरी जो मलकी का,
मलकी जो अद्दी का,
अद्दी जो कोसाम का,
कोसाम जो इलमोदाम का,
इलमोदाम जो ऐर का,
29 ऐर जो यहोशुआ का
यहोशुआ जो इलाज़ार का,
इलाज़ार जो योरीम का,
योरीम जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का
30 लेवी जो शमौन का
शमौन जो यहूदा का,
यहूदा जो यूसुफ का,
यूसुफ जो योनान का,
योनान जो इलियाकीम का,
31 इलयाकीम जो मेलिया का,
मेलिया जो मिन्ना का,
मिन्ना जो मत्तात का,
मत्तात जो नातान का,
नातान जो दाऊद का,
32 दाऊद जो यिशै का,
यिशै जो ओबेद का,
ओबेद जो बोअज का,
बोअज जो सलमोन का,
सलमोन जो नहशोन का,
33 नहशोन जो अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब जो आदमीन का,
आदमीन जो अरनी का
अरनी जो हिस्रोन का,
हिस्रोन जो फिरिस का,
फिरिस जो यहूदाह का,
34 यहूदाह जो याकूब का,
याकूब जो इसहाक का,
इसहाक जो इब्राहीम का,
इब्राहीम जो तिरह का,
तिरह जो नाहोर का,
35 नाहोर जो सरूग का,
सरुग जो रऊ का,
रऊ जो फिलिग का,
फिलिग जो एबिर का,
एबिर जो शिलह का,
36 शिलह जो केनान का,
केनान जो अरफक्षद का,
अरफक्षद जो शेम का,
शेम जो नूह का,
नूह जो लिमिक का,
37 लिमिक जो मथूशिलह का,
मथूशिलह जो हनोक का,
हनोक जो यिरिद का,
यिरिद जो महललेल का,
महललेल जो केनान का,
38 केनान जो एनोश का,
एनोश जो शेत का
शेत जो आदम का,
और आदम जो परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

4 पवित्र आत्मा से भावित होकर यीशु यर्दन नदी से
लौट आया। आत्मा उसे वीराने में राह दिखाता रहा।
2वहाँ शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा ली। उन
दिनों यीशु बिना कुछ खाये रहा। फिर जब वह समय पूरा
हुआ तो यीशु को बहुत भूख लगी।
3सो शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र
है, तो इस पत्थर से रोटी बन जाने को कह।"
4इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है:

'मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता।'"

व्यवस्था विवरण 8:3

5फिर शैतान उसे बहुत ऊँचाई पर ले गया और पल
भर में ही सारे संसार के राज्यों को उसे दिखाते हुए। 6शैतान
ने उससे कहा, "मैं इन राज्यों का सारा वैभव और अधिकार
तुझे दे दूँगा क्योंकि वह मुझे दिया गया है और मैं उसे
जिसको चाहूँ दे सकता हूँ। 7सो यदि तू मेरी उपासना करे
तो यह सब तेरा हो जायेगा।"
8यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "लिखा गया है:

'तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की
ही उपासना करनी चाहिये।
तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!'"

व्यवस्था विवरण 6:13

9तब वह उसे यरूशलेम ले गया और वहाँ मंदिर के
सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाकर खड़ा कर दिया। और
उससे बोला, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो यहाँ से अपने
आप को नीचे गिरा दे! 10क्योंकि लिखा है :

'वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में
आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें।'"

भजन संहिता 91:11

11और लिखा है:

'वे तुझे अपनी बाहों में ऐसे उठा लेंगे कि
तेरा पैर तक किसी पत्थर को न छुए।'"

भजन संहिता 91:12

12यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "शास्त्र में यह भी लिखा
है:

'तुझे अपने प्रभु परमेश्वर को
परीक्षा में नहीं डालना चाहिये।'"

व्यवस्था विवरण 6:16

13सो जब शैतान उसकी सब तरह से परीक्षा ले चुका
तो उचित समय तक के लिये उसे छोड़ कर चला गया।

लोगों को यीशु का उपदेश

14फिर आत्मा की शक्ति से पूर्ण हो कर यीशु गलील
लौट आया और उस सारे प्रदेश में उसकी चर्चाएँ फैलने
लगी। 15वह उनकी धर्म–सभाओं में उपदेश देने लगा।
सभी उसकी प्रशंसा करते थे।

16फिर वह नासरत आया जहाँ वह पला–बढ़ा था। और
अपनी आदत के अनुसार सब्त के दिन वह यहूदी धर्म
सभागार में गया। जब वह पाठ करने खड़ा हुआ। 17तो
यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गयी। उसने जब पुस्तक
खोली तो उसे वह स्थान मिला जहाँ लिखा था:

18 "प्रभु का आत्मा मुझमें समाया है
उसने मेरा अभिषेक किया है ताकि
मैं दीनों को सुसमाचार सुनाऊँ।
उसने मुझे बंदियों को यह घोषित करने के लिए
कि वे मुक्त है,
अन्धों को यह सन्देश सुनाने को कि
वे फिर दृष्टि पायेंगे,
दलितों को छुटकारा दिलाने को और
19 प्रभु के अनुग्रह का समय बतलाने को भेजा है।"

यशायाह 61:1−2

20फिर उसने पुस्तक बंद करके सेवक को वापस दे
दी। और वह नीचे बैठ गया। प्रार्थना सभा में सब लोगों की
आँखें उसे ही निहार रही थीं। 21तब उसने उनसे कहना
आरम्भ किया, "आज तुम्हारे सुनते हुए शास्त्र का यह
वचन पूरा हुआ!"

22हर कोई उसकी बड़ाई कर रहा था। उसके मुख से
जो सुन्दर वचन निकल रहे थे, उन पर सब चकित थे। वे
बोले, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"

23फिर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही तुम मुझे यह
कहावत सुनाओगे, 'अरे वैद्य, स्वयं अपना इलाज कर।
कफ़रनहूम में तेरे जिन कर्मो के विषय में हमने सुना है,
उन कर्मो को यहाँ अपने स्वयं के नगर में भी कर!'"
24यीशु ने तब उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि
अपने नगर में किसी नबी की मान्यता नहीं होती। 25मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ इस्राएल में एलिय्याह के काल में जब
आकाश जैसे मुँद गया था और साढ़े तीन साल तक सारे
देश में भयानक अकाल पड़ा था, तब वहाँ अनगिनत
विधवाएँ थीं। 26किन्तु सैदा प्रदेश के सारपत नगर की
एक विधवा को छोड़ कर एलिय्याह को किसी और के
पास नहीं भेजा गया था। 27और नबी एलिशा के काल में
इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे किन्तु उनमें से सीरिया के
रहने वाले नामान के कोढ़ी को छोड़ कर और किसी को
शुद्ध नहीं किया गया था।"

28सो जब यहूदी प्रार्थना सभा में लोगों ने यह सुना तो
सभी को बहुत क्रोध आया। 29सो वे खड़े हुए और उन्होंने
उसे नगर से बाहर धकेल दिया। वे उसे पहाड़ की उस
चोटी पर ले गये जिस पर उनका नगर बसा था ताकि वे
वहाँ चट्टान से उसे नीचे फेंक दें। 30किन्तु वह उनके
बीच से निकल कर कहीं अपनी राह चला गया।

दुष्टात्मा से छुटकारा दिलाना

31फिर वह गलील के एक नगर कफरनहूम पहुँचा
और सब्त के दिन लोगों को उपदेश देने लगा। 32लोग
उसके उपदेश से आश्चर्यचकित थे क्योंकि उसका संदेश
अधिकारपूर्ण होता था। 33वहीं उस प्रार्थना सभा में एक
व्यक्ति था जिसमें दुष्टात्मा समायी थी। वह ऊँचे स्वर में
चिल्लाया, 34 "हे यीशु नासरी! तू हमसे क्या चाहता है?
क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन
है–तू परमेश्वर का पवित्र पुरुष है!" 35यीशु ने झिड़कते

हुए उससे कहा, "चुप रह! इसमें से बाहर निकल आ!"
इस पर दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को लोगों के सामने एक
पटकी दी और उसे बिना कोई हानि पहुँचाए उसमें से
बाहर निकल आयी।

36सभी लोग चकित थे। वे एक दूसरे से बात करते हुए
बोले, "यह कैसा वचन है? अधिकार और शक्ति के साथ
यह दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे बाहर निकल
आती हैं।" 37उस क्षेत्र में आसपास हर कहीं उसके बारे में
समाचार फैलने लगे।

रोगी स्त्री का ठीक किया जाना

38तब यीशु प्रार्थना सभागार को छोड़ कर शमौन के
घर चला गया। शमौन की सास को बहुत ताप चढ़ा था।
उन्होंने यीशु को उसकी सहायता करने के लिये विनती
की। 39यीशु उसके सिरहाने खड़ा हुआ और उसने ताप
को डाँटा। ताप ने उसे छोड़ दिया। वह तत्काल खड़ी हो
गयी और उनकी सेवा करने लगी।

यीशु द्वारा बहुतों को चंगा किया जाना

40जब सूरज ढल रहा था तो जिन के यहाँ
प्रकार-प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी थे, वे सभी उन्हें
उसके पास लाये। और उसने अपना हाथ उनमें से
हर एक के सिर पर रखते हुए उन्हें चंगा कर दिया।
41उनमें बहुतों में से दुष्टात्माएँ चिल्लाती हुई यह कहती
बाहर निकल आयीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" किन्तु
उसने उन्हें बोलने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थी, "वह
मसीह है।"

यीशु की अन्य नगरों को यात्रा

42जब पौ फटी तो वह वहाँ से किसी एकांत स्थान को
चला गया। किन्तु भीड़ उसे खोजते खोजते वहीं जा पहुँची
जहाँ वह था। उन्होंने प्रयत्न किया कि वह उन्हें छोड़ कर
न जाये। 43किन्तु उसने उनसे कहा, "परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार मुझे दूसरे नगरों में भी पहुँचाना है क्योंकि
मुझे इसी लिए भेजा गया है।"

44और इस प्रकार वह यहूदिया की प्रार्थना सभाओं में
निरन्तर उपदेश करने लगा।

यीशु के प्रथम शिष्य

5 बात यूँ हुई कि भीड़ में लोग यीशु को चारों ओर से
घेर कर जब परमेश्वर का वचन सुन रहे थे और
वह गन्नेसरत नामक झील के किनारे खड़ा था। 2तभी
उसने झील के किनारे दो नावें देखीं। उनमें से मछुआरे
निकल कर अपने जाल साफ कर रहे थे। 3यीशु उनमें से
एक नाव पर चढ़ गया जो कि शमौन की थी, और उसने
नाव को किनारे से कुछ हटा लेने को कहा। फिर वह
नाव पर बैठ गया और वहीं नाव पर से जन समूह को
उपदेश देने लगा।

4जब वह उपदेश समाप्त कर चुका तो उसने शमौन से
कहा, "गहरे पानी की तरफ बढ़ और मछली पकड़ने के
लिए अपने जाल डालो।"

5शमौन बोला, "स्वामी, हमने सारी रात कठिन परिश्रम
किया है, पर हमें कुछ नहीं मिल पाया, किन्तु तू कह रहा
है इसलिए मैं जाल डाले देता हूँ।" 6जब उन्होंने जाल फेंके
तो बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ी गयी। उनके जाल जैसे
फट रहे थे। 7सो उन्होंने दूसरी नावों में बैठे अपने साथियों
को संकेत देकर सहायता के लिये बुलाया। वे आ गये और
उन्होंने दोनों नावों पर इतनी मछलियाँ लाद दी कि वे मानों
डूबने लगीं।

8जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के
चरणों में गिर कर बोला, "प्रभु मैं एक पापी मनुष्य हूँ। तू
मुझसे दूर रह।" 9उसने यह इसलिये कहा था कि इतनी
मछलियाँ बटोर पाने के कारण उसे और उसके सभी
साथियों को बहुत अचरज हो रहा था। 10जब्दी के पुत्र
याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के साथी थे, इस
प्रकार बहुत आश्चर्य हुआ था। सो यीशु ने शमौन से
कहा, "डर मत, क्योंकि अब से आगे तू मनुष्यों को बटोरा
करेगा!"

11फिर वे अपनी नावें किनारे पर लाये और सब कुछ
त्याग कर यीशु के पीछे हो लिये।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

12सो ऐसा हुआ कि जब यीशु एक नगर में था तभी
वहाँ कोढ़ से पूरी तरह ग्रस्त एक कोढ़ी भी था। जब उसने
यीशु को देखा तो दण्डवत प्रणाम करके उससे प्रार्थना की,
"प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है।"

13इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को
यह कहते हुए छुआ, "मैं चाहता हूँ, ठीक हो जा!"
और तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। 14फिर यीशु ने
उसे आज्ञा दी कि वह इस विषय में किसी से कुछ न
कहे। उससे कहा, "याजक के पास जा और उसे
अपने आप को दिखा और मूसा के आदेश के
अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने का
प्रमाण मिले।"

15किन्तु यीशु के विषय में समाचार और अधिक गति
से फैल रहे थे। और लोगों के दल के दल इकट्ठे हो कर
उसे सुनने और अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने उसके
पास आ रहे थे। 16किन्तु यीशु प्राय: प्रार्थना करने कहीं
एकान्त वन में चला जाया करता था।

लकवे के रोगी को चंगा करना

17ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह उपदेश दे रहा था तो
वहाँ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे गलील
और यहूदिया के हर नगर तथा यरुशलेम से आये थे।
लोगों को ठीक करने के लिए प्रभु की शक्ति उसके साथ
थी। 18तभी कुछ लोग खाट पर लकवे के एक रोगी को
लिये उसके पास आये। वे उसे भीतर लाकर यीशु के
सामने रखने का जतन कर रहे थे। 19किन्तु भीड़ के
कारण उसे भीतर लाने का रास्ता न पाते हुए वे ऊपर छत
पर जा चढ़े और उन्होंने उसे उसके बिस्तर समेत छत के
बीचोबीच से खपरेल हटाकर यीशु के सामने उतार दिया।
20उनके विश्वास को देखते हुए यीशु ने कहा, "हे मित्र,
तेरे पाप क्षमा हुए।"

21तब यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी आपस में सोचने
लगे, "यह कौन है जो परमेश्वर के लिए ऐसे अपमान के
शब्द बोलता है? परमेश्वर को छोड़ दूसरा कौन है जो पाप
क्षमा कर सकता है?"

22किन्तु यीशु उनके सोच–विचार को ताड़ गया। सो
उत्तर में उसने उनसे कहा, "तुम अपने मन में ऐसा क्यों
सोच रहे हो? 23सरल क्या है? यह कहना कि 'तेरे लिए
तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना कि 'उठ और चल दे?'
24पर इसलिये कि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को
धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।" उसने लकवे
के मारे से कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना
बिस्तर उठा और घर चला जा!"

25सो वह तुरन्त खड़ा हुआ और उनके देखते देखते
जिस बिस्तर पर वह लेटा था, उसे उठा परमेश्वर की
स्तुति करता हुआ अपने घर चला गया। 26वे सभी जो वहाँ
थे आश्चर्यचकित होकर परमेश्वर का गुणगान करने
लगे। वे श्रद्धा और विस्मय से भर उठे और बोले, "आज
हमने कुछ अद्भुत देखा है!"

लेवी को यीशु का बुलावा

27इसके बाद यीशु चल दिया। तभी उसने चुंगी की चौकी
पर बैठे लेवी नाम के एक कर वसूलने वाले को देखा।
वह उससे बोला, "मेरे पीछे चला आ!" 28सो वह खड़ा
हुआ और सब कुछ तज कर उसके पीछे हो लिया।

29फिर लेवी ने अपने घर पर यीशु के सम्मान में एक
स्वागत समारोह किया। वहाँ कर वसूलने वालों और दूसरे
लोगों का एक बड़ा जमघट उनके साथ भोजन कर रहा
था। 30तब फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने उसके शिष्यों
से यह कहते हुए शिकायत की "तुम कर वसूलने वालों
और पापियों के साथ क्यों खाते–पीते हो?"

31उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "स्वस्थ लोगों को नहीं,
बल्कि रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता होती है।
32मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को मन फिराने के
लिए बुलाने आया हूँ।"

उपवास पर यीशु का मत

33उन्होंने यीशु से कहा, "यूहन्ना के शिष्य प्राय: व्रत
रखते हैं और प्रार्थना करते हैं। और ऐसा ही फरीसियों के
अनुयायी भी करते हैं किन्तु तेरे अनुयायी तो हर समय
खाते पीते रहते हैं।"

34यीशु ने उनसे पूछा, "क्या दूल्हे के अतिथि जब तक
दूल्हा उनके साथ है, उपवास करते हैं? 35किन्तु वे दिन
भी आयेंगे जब दूल्हा उनसे छीन लिया जायेगा। फिर उन
दिनों में वे भी उपवास करेंगे।"

36उसने उनसे एक दृष्टांत कथा और कही, "कोई भी
किसी नयी पोशाक से कोई टुकड़ा फाड़ कर उसे पुरानी
पोशाक पर नहीं लगाता और यदि कोई ऐसा करता है तो
उसकी नयी पोशाक तो फटेगी ही, साथ ही वह नया पेबन्द
भी पुरानी पोशाक के साथ मेल नहीं खायेगा। 37कोई भी
पुरानी मशकों में नयी दाखरस नहीं भरता और यदि भरता
है तो नयी दाखरस पुरानी मशकों को फाड़ देगा। वह

बिखर जायेगा और मशकें नष्ट हो जायेंगी। 38लोग हमेशा
नयाँ दाखरस नयी मशकों में भरते है। 39पुराना दाखरस
पी कर कोई भी नएँ की चाहत नहीं करता क्योंकि वह
कहता है 'पुराना ही उत्तम है।'"

सब्त का प्रभु यीशु

6 अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु जब
अनाज के कुछ खेतों से होता हुआ जा रहा था तो
उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते, हथेलियों पर
मसलते उन्हें खाते जा रहे थे। 2तभी कुछ फरीसियों ने
कहा, "जिसका सब्त के दिन किया जाना उचित नहीं है,
उसे तुम लोग क्यों कर रहे हो?"

3उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं
पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब दाऊद ने
क्या किया था? 4क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उसने परमेश्वर
के घर में घुस कर, परमेश्वर को अर्पित रोटियाँ उठा
कर खा ली थी और उन्हें भी दी थी, जो उसके साथ थे?
जबकि याजकों को छोड़ कर उनका खाना किसी के
लिये भी उचित नहीं।" 5उसने आगे कहा, "मनुष्य का पुत्र
सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

यीशु द्वारा सब्त के दिन रोगी का अच्छा किया जाना

6दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी धर्म सभा
में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक ऐसा व्यक्ति था जिसका
दाहिना हाथ मुरझाया हुआ था। 7वहीं यहूदी धर्मशास्त्री
और फरीसी यह देखने की ताक में थे कि वह सब्त के
दिन किसी को चंगा करता है कि नहीं। ताकि वे उस पर
दोष लगाने का कोई कारण पा सकें। 8वह उनके विचारों
को जानता था, सो उसने उस मुरझाये हाथ वाले व्यक्ति से
कहा, "उठ और सब के सामने खड़ा हो जा।" वह उठा
और वहाँ खड़ा हो गया। 9तब यीशु ने लोगों से कहा, "मैं
तुमसे पूछता हूँ–सब्त के दिन किसी का भला करना उचित
है या किसी को हानि पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना
उचित है या किसी के जीवन को नष्ट करना?" 10यीशु ने
चारों ओर उन सब पर दृष्टि डाली और फिर उससे कहा,
"अपना हाथ सीधा फैला।" उसने वैसा ही किया और उसका
हाथ फिर से अच्छा हो गया। 11किन्तु इस पर आग बबूला
होकर वे आपस में विचार करने लगे कि "यीशु का क्या
किया जाये?"

बारह प्रेरितों का चुना जाना

12उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के
लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर को
प्रार्थना करते हुए बिता दी। 13फिर जब भोर हुई तो उसने
अपने अनुयायियों को पास बुलाया। उनमें से उसने बारह
को चुना जिन्हें उसने "प्रेरित" नाम दिया: 14शमौन (जिसे
उसने पतरस भी कहा) और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब
और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, 15मत्ती, थोमा, हलफ़ई
का बेटा याकूब, और शमौन जिलौती; 16याकूब का बेटा
यहूदा और यहूदा इस्करियोती जो विश्वासघाती बना।

यीशु का लोगों को उपदेश देना और चंगा करना

17फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर कर
समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके शिष्यों की
भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे यहूदिया, यरूशलेम,
सूर और सैदा के सागर तट से अनगिनत लोग वहाँ आ
इकट्ठे हुए। 18वे उसे सुनने और रोगों से छुटकारा पाने
वहाँ आये थे। जो दुष्टात्माओं से पीड़ित थे, वे भी वहाँ
आकर अच्छे हुए। 19समूची भीड़ उसे छू भर लेने के
प्रयत्न में थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल रही थी और
उन सब को निरोग बना रही थी!

20फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला:

"धन्य हो तुम जो दीन हो,
स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,
21 धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो,
क्योंकि तुम्हारी तृप्ति होगी
धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो,
क्योंकि तुम आगे हँसोगे।

22"धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण घृणा
तुमसे करें जन, और करें तुमको बहिष्कृत; और करें
निन्दा तुम्हारी, नाम तक को दुष्ट कह कर, काट दें वे।
23तब उसी दिन मगन हो कर उछलना मौज में तुम क्योंकि
देखो है महा प्रतिफल तुम्हारा स्वर्ग में। क्योंकि उनके
पुरखों ने भी भविष्य वक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।

24 "तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन,
क्योंकि तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है
25 तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो
क्योंकि तुम भूखे रहोगे,

तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि तुम आँसू बहा बिलखा करोगे।

26“तुम्हें धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा व्यवहार किया।

अपने बैरी से भी प्रेम करो

27“ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से
भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी
भलाई करो। 28उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते
हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा
व्यवहार नहीं करते। 29यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़
मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई
तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो।
30जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ
रख ले तो उससे वापस मत माँगो। 31तुम अपने लिये जैसा
व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही
व्यवहार करना चाहिये। 32यदि तुम बस उन्हीं को प्यार
करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी क्या
बड़ाई? क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक
भी प्रेम करते हैं। 33यदि तुम बस उन्हीं का भला करो, जो
तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसा तो
पापी तक करते हैं। 34यदि तुम केवल उन्हीं को उधार देते
हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल जाने की आशा है, तो तुम्हारी
क्या बड़ाई? ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें
उनकी पूरी रकम वापस मिल जाये। 35बल्कि अपने शत्रु
को भी प्यार करो, उनके साथ भलाई करो। कुछ भी
लौट आने की आशा छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा
प्रतिफल महान होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान
बनोगे क्योंकि परमेश्वर कृतघ्नों और दुष्ट लोगों पर भी
दया करता है। 36जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही
तुम भी दयालु बनो।

अपने आप को जानो

37“किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं
कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी
खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी।
38दो, तुम्हें भी दिया जायेगा। वे पूरा नाप दबा–दबा कर
और हिला–हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी झोली
में उडेंलेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो,
उसी से तुम्हें भी नापा जायेगा।”

39उसने उनसे एक दृष्टान्त कथा और कही, “क्या
कोई अन्धा किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है?
क्या वे दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे? 40कोई भी
विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा नहीं हो सकता, किन्तु
जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कुशल हो जाता है तो वह अपने
गुरु के समान बन जाता है।

41“तू अपने भाई की आँख में कोई किरच क्यों देखता
है और अपनी आँख का लट्ठा भी तुझे नहीं सूझता?
42सो अपने भाई से तू कैसे कह सकता है: ‘बंधु, तू अपनी
आँख का तिनका मुझे निकालने दे।’ जब तू अपनी आँख
के लट्ठे तक को नहीं देखता! अरे कपटी, पहले अपनी
आँख का लट्ठा दूर कर, तब तुझे अपने भाई की
आँख का तिनका बाहर निकालने के लिये दिखाई दे
पायेगा।

दो प्रकार के फल

43“कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर बुरा फल
लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़ है, जिस पर उत्तम
फल लगता हो। 44हर पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है।
लोग कँटीली झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही किसी
झड़बेरी से लोग अंगूर उतारते हैं। 45एक अच्छा मनुष्य
उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी
बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में
बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य
मुँह से वही बोलता है, जो उसके ह्रदय से उफन कर बाहर
आता है।

दो प्रकार के लोग

46“तुम मुझे ‘प्रभु, प्रभु’ क्यों कहते हो और जो मैं
कहता हूँ, उस पर नहीं चलते। 47हर कोई जो मेरे पास
आता है और मेरा उपदेश सुनता है और उस का आचरण
करता है, वह किस प्रकार का होता है, मैं तुम्हें बताऊँगा।
48वह उस व्यक्ति के समान है जो मकान बना रहा है।
उसने गहरी खुदाई की और चट्टान पर नींव डाली। फिर
जब बाढ़ आयी और नदी उस मकान से टकराई तो यह
उसे हिला तक न सकी, क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह
बना हुआ था। 49किन्तु जो मेरा उपदेश सुनता है और उस

पर चलता नहीं, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना
नींव धरे धरती पर मकान बनाया। नदी उससे टकराई
और वह तुरन्त ढह गया और पूरी तरह तहस–नहस हो
गया।”

विश्वास की शक्ति

7 यीशु लोगों को जो सुनाना चाहता था, उसे कह
चुकने के बाद वह कफ़रनहूम चला आया। 2वहाँ
एक सेनानायक था जिसका दास इतना बीमार था कि
मरने को पड़ा था। वह सेवक उसका बहुत प्रिय था।
3सेनानायक ने जब यीशु के विषय में सुना तो उसने कुछ
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को यह विनती करने के लिये उसके
पास भेजा कि वह आकर उसके सेवक के प्राण बचा ले।
4जब वे यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने सच्चे मन से
विनती करते हुए कहा, “वह इस योग्य है कि तू उसके
लिये ऐसा करे। 5क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम करता
है। उसने हमारे लिए धर्म–सभा–भवन का निर्माण किया
है।”

6सो यीशु उनके साथ चल दिया। अभी जब वह घर से
अधिक दूर नहीं था, उस सेनानायक ने उसके पास अपने
मित्र यह कहने के लिये भेज, “हे प्रभु, अपने को कष्ट
मत दे। क्योंकि मैं इतना अच्छा नहीं हूँ कि तू मेरे घर में
आये। 7इसीलिये मैंने तेरे पास आने तक की नहीं सोची।
किन्तु तू बस कह भर दे, मेरा सेवक स्वस्थ हो जायेगा।
8मैं स्वयं किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला
व्यक्ति हूँ और मेरे नीचे भी कुछ सैनिक हैं। मैं जब किसी
से कहता हूँ ‘जा’ तो वह चला जाता है और जब दूसरे से
कहता हूँ ‘आ’ तो वह आ जाता है। और जब मैं अपने दास
से कहता हूँ, ‘यह कर’ तो वह उसे ही करता है।”

9यीशु ने जब यह सुना तो उसे उस पर बहुत आश्चर्य
हुआ। जो जन समूह उसके पीछे चला आ रहा था, उसकी
तरफ़ मुड़ कर यीशु ने कहा, “मैं तुम्हें बताता हूँ ऐसा
विश्वास मुझे इस्राएल में भी कहीं नहीं मिला।”

10फिर भेजे हुए वे लोग जब वापस घर पहुँचे तो उन्होंने
उस सेवक को निरोग पाया।

मृतक को जीवनदान

11फिर ऐसा हुआ कि यीशु नाइन नाम के एक नगर
को चला गया। उसके शिष्य और एक बड़ी भीड़ उसके
साथ थी। 12वह जैसे ही नगर–द्वार के निकट आया तो
वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा रहा था। वह अपनी
विधवा माँ का इकलौता बेटा था। सो नगर के अनगिनत
लोगों की भीड़ उसके साथ थी। 13जब प्रभु ने उसे देखा तो
उसे उस पर बहुत दया आयी। वह बोला, “रो मत।” 14फिर
वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे लोग जो
ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु ने कहा,
“नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, ‘खड़ा हो जा!’” 15सो वह
मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे
उसकी माँ को वापस लौटा दिया।

16और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर उठे।
और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा बखानने लगे
कि “हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ है।” और
कहने लगे, “परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के लिये
आ गया है।”

17यीशु का यह समाचार यहूदिया और आसपास के
गाँवों में सब कहीं फैल गया।

यूहन्ना का प्रश्न

18इन सब बातों के विषय में यूहन्ना के अनुयायियों ने
उसे सब कुछ जा बताया। सो यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों को
बुलाकर 19उन्हें प्रभु से यह पूछने को भेजा कि “क्या तू
वही है, जो आने वाला है या हम किसी और की बाट
जोहें?”

20फिर वे लोग जब यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा,
“बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने हमें तुझसे यह पूछने भेजा है
कि क्या तू वही है जो आने वाला है या हम किसी और की
बाट जोहें?”

21उसी समय उसने बहुत से रोगियों को निरोग किया
और उन्हें वेदनाओं तथा दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया।
और बहुत से अंधों को आँखें दीं। 22फिर उसने उन्हें उत्तर
दिया, “जाओ और जो तुमने देखा है और सुना है, उसे
यूहन्ना को बताओ: कि अंधे लोग फिर देख रहे हैं, लँगड़े
लूले चल फिर रहे हैं और कोढ़ी शुद्ध हो गये हैं। बहरे सुन
पा रहे हैं और मुर्दे फिर जिलाये जा रहे हैं। और धनहीन
लोगों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है। 23वह व्यक्ति धन्य
है जिसे मुझे स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं।”

24जब यूहन्ना का संदेश लाने वाले चले गये तो यीशु ने
भीड़ में लोगों को यूहन्ना के बारे में बताना प्रारम्भ किया:

“तुम बियाबान जंगल में क्या देखने गये थे? क्या हवा में
झूलता कोई सरकंडा? नहीं? **25**फिर तुम क्या देखने गये
थे? क्या कोई पुरुष जिसने बहुत उत्तम वस्त्र पहने हों?
नहीं, वे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं और जो विलास का
जीवन जीते हैं, वे तो राज–भवनों में ही पाये जाते हैं। **26**किन्तु
बताओ तुम क्या देखने गये थे? क्या कोई नबी? हाँ, मैं
तुम्हे बताता हूँ कि तुमने जिसे देखा है, वह किसी नबी से
कहीं अधिक है। **27**यह वही है जिसके विषय में लिखा
गया है:

> ‘देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ,
> वह तुझसे पहले ही राह तैयार करेगा।’
>
> *मलाकी 3:1*

28“मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी स्त्री से पैदा हुओं में
यूहन्ना से महान् कोई नहीं है। किन्तु फिर भी परमेश्वर
के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी उससे बड़ा है।”

29(तब हर किसी ने, यहाँ तक कि कर वसूलने वालों
ने भी यूहन्ना को सुन कर उसका बपतिस्मा लेकर यह
मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य है। **30**किन्तु
फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों ने उसका बपतिस्मा
न लेकर उनके सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा को नकार
दिया।)

31“तो फिर इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किस से
करूँ वे कि कैसे हैं? **32**वे बाज़ार में बैठे उन बच्चों के
समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं:

> ‘हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजायी पर
> तुम नहीं नाचे।
> हमने तुम्हारे लिए शोक–गीत गाया
> किन्तु तुम नहीं रोये।’

33“क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया जो न तो
रोटी खाता था और न ही दाखरस पीता था और तुम
कहते हो ‘उसमें दुष्टात्मा है।’ **34**फिर खाते पीते हुए मनुष्य
का पुत्र आया, पर तुम कहते हो, ‘देखो यह पेटू है, पियक्कड़
है, कर वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।’ **35**बुद्धि
की उत्तमता तो उसके परिणाम से ही सिद्ध होती है।”

शमौन फरीसी

36एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर उसे निमंत्रित
किया। सो वह फरीसी के घर गया और उसके यहाँ
भोजन करने बैठा। **37**वहीं नगर में उन दिनों एक पापी
स्त्री थी, उसे जब यह पता लगा कि वह एक फरीसी के
घर भोजन कर रहा है तो वह स्फटिक के एक पात्र में इत्र
लेकर आयी। **38**वह उसके पीछे उसके चरणों में खड़ी
थी। वह रो रही थी। अपने आँसुओं से वह उसके पैर
भिगोने लगी। फिर उसने पैरों को अपने बालों से पोंछा
और चरणों को चूम कर उन पर इत्र उँड़ेल दिया। **39**उस
फरीसी ने जिसने यीशु को अपने घर बुलाया था, यह
देखकर मन ही मन सोचा, “यदि यह मनुष्य नबी होता तो
जान जाता कि उसे छूने वाली यह स्त्री कौन है और कैसी
है? वह जान जाता कि यह तो पापिन है।”

40उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “शमौन, मुझे तुझ से
कुछ कहना है।”

वह बोला, “गुरु, कह।”

41यीशु ने कहा, “किसी साहूकार के दो कर्ज़दार थे।
एक पर उसके पाँच सौ चाँदी के सिक्के* निकलते थे
और दूसरे पर पचास। **42**क्योंकि वे कर्ज़ नहीं लौटा पाये
थे इसलिये उसने दया पूर्वक दोनों के कर्ज़ माफ़ कर
दिये। अब बता दोनों में से उसे अधिक प्रेम कौन
करेगा?”

43शमौन ने उत्तर दिया, “मेरा विचार है, वही जिसका
उसने अधिक कर्ज़ छोड़ दिया।”

यीशु ने कहा, “तूने उचित न्याय किया।” **44**फिर उस
स्त्री की तरफ़ मुड़ कर वह शमौन से बोला, “तू इस स्त्री
को देख रहा है? मैं तेरे घर में आया, तूने मेरे पैर धोने को
मुझे जल नहीं दिया किन्तु इसने मेरे पैर आँसुओं से तर
कर दिये। और फिर उन्हें अपने बालों से पोंछा। **45**तूने
स्वागत में मुझे नहीं चूमा किन्तु यह जब से मैं भीतर आया
हूँ, मेरे पैरों को निरन्तर चूमती रही है। **46**तूने मेरे सिर पर
तेल का अभिषेक नहीं किया, किन्तु इसने मेरे पैरों पर
इत्र छिड़का। **47**इसीलिये मैं तुझे बताता हूँ कि इसका अगाध
प्रेम दर्शाता है कि इसके बहुत से पाप क्षमा कर दिये गये
हैं। किन्तु वह जिसे थोड़े पापों की क्षमा मिली, वह थोड़ा
प्रेम करता है।”

48तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे पाप क्षमा कर
दिये गये हैं।”

49फिर जो उसके साथ भोजन कर रहे थे, वे मन ही
मन सोचने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी क्षमा कर
देता है?”

चाँदी के सिक्के मूल में दीनारी।

50तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तेरी रक्षा की है। शान्ति के साथ जा।"

यीशु अपने शिष्यों के साथ

8 इसके बाद ऐसा हुआ कि यीशु परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार लोगों को सुनाते हुए नगर–नगर और गाँव–गाँव घूमने लगा। उसके बारहों शिष्य भी उसके साथ हुआ करते थे। 2उसके साथ कुछ स्त्रियाँ भी हुआ करती थीं जिन्हें उसने रोगों और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था। इनमें मरियम मगदलीनी नाम की एक स्त्री थी जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा मिला था। 3हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी खोजा की पत्नी योअन्ना भी इन्हीं में थी। साथ ही सुसन्नाह तथा और बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। ये स्त्रियाँ अपने ही साधनों से यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का प्रबन्ध करती थीं।

बीज बोने की दृष्टान्त कथा

4जब नगर–नगर से आकर लोगों की बड़ी भीड़ उसके यहाँ एकत्र हो रही थी, तो उसने उनसे एक दृष्टान्त कथा कही:

5"एक किसान अपने बीज बोने निकला। जब उसने बीज बोये तो कुछ बीज राह किनारे जा पड़े और पैरों तले रुँद गये। और चिड़ियाएँ उन्हें चुग गयीं। 6कुछ बीज चट्टानी धरती पर गिरे, वे जब उगे तो नमी के बिना मुरझा गये। 7कुछ बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे। काँटों की बढ़वार भी उनके साथ हुई और काँटों ने उन्हें दबोच लिया। 8और कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे और उन्होंने सौ गुनी अधिक फसल दी।"

ये बातें बताते हुए उसने पुकार कर कहा, "जिसके पास सुनने को कान हैं, वह सुन ले।"

9उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "इस दृष्टान्त कथा का क्या अर्थ है?"

10सो उसने बताया, "परमेश्वर के राज्य के रहस्य जानने की सुविधा तुम्हें दी गयी है किन्तु दूसरों को यह रहस्य दृष्टान्त कथाओं के द्वारा दिये गये हैं ताकि:

'वे देखते हुए भी न देख पायें
और सुनते हुए भी न समझ पाये।'

यशायाह 6:9

11"इस दृष्टान्त कथा का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर का वचन है। 12वे बीज जो राह किनारे गिरे थे, वे वो व्यक्ति हैं जो जब वचन को सुनते हैं, तो शैतान आता है और वचन को उनके मन से निकाल ले जाता है ताकि वे विश्वास न कर पायें और उनका उद्धार न हो सके। 13वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे उनका अर्थ है, वे व्यक्ति जो जब वचन को सुनते हैं तो उसे आनन्द के साथ अपनाते तो हैं। किन्तु उनके भीतर उसकी जड़ नहीं जम पाती। वे कुछ समय के लिये विश्वास करते हैं किन्तु परीक्षा की घड़ी में वे डिग जाते हैं। 14और जो बीज काँटो में गिरे, उसका अर्थ है, वे व्यक्ति जो वचन को सुनते हैं किन्तु जब वे अपनी राह चलने लगते हैं तो चिन्ताएँ, धन–दौलत और जीवन के भोग विलास उसे दबा देते हैं, जिससे उन पर कभी पकी फसल नहीं उतरती। 15और अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है वे व्यक्ति जो अच्छे और सच्चे मन से जब वचन को सुनते हैं तो उसे धारण भी करते हैं। फिर अपने धैर्य के साथ वे उत्तम फल देते हैं।"

अपने सत्य का उपयोग करो

16"कोई भी किसी दिये को बर्तन के नीचे ढक देने को नहीं जलाता। या उसे बिस्तर के नीचे नहीं रखता। बल्कि वह उसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर आयें, प्रकाश देख सकें। 17क्योंकि कुछ भी ऐसा छिपा नहीं है जो उजागर नहीं होगा और कुछ भी ऐसा छिपा नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा और जो प्रकाश में नहीं आयेगा। 18इसलिये ध्यान से सुनो क्योंकि जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास दिखाई देता है, वह भी ले लिया जायेगा।"

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार हैं

19तभी यीशु की माँ और उसके भाई उसके पास आये किन्तु वे भीड़ के कारण उसके निकट नहीं जा सके। 20इसलिये यीशु से यह कहा गया, "तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।"

21किन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

शिष्यों को यीशु की शक्ति का दर्शन

22तभी एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने शिष्यों के
साथ एक नाव पर चढ़ा और उनसे बोला, "आओ, झील
के उस पार चलें।" सो उन्होंने पाल खोल दी। 23जब वे
नाव चला रहे थे, यीशु सो गया। झील पर आँधी-तूफान
उतर आया। उनकी नाव में पानी भरने लगा। वे ख़तरे में
पड़ गये। 24सो वे उसके पास आये और उसे जगाकर
कहने लगे, "स्वामी! स्वामी! हम डूब रहे हैं!"

फिर वह खड़ा हुआ और उसने आँधी तथा लहरों को
डाँटा। वे थम गयीं और वहाँ शान्ति छा गयी। 25फिर उसने
उनसे पूछा, "कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?" किन्तु वे डरे
हुए थे और अचरज में पड़े थे। वे आपस में बोले, "आखिर
यह है कौन जो हवा और पानी दोनों को आज्ञा देता है और
वे उसे मानते हैं?"

दुष्टात्मा से छुटकारा

26फिर वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुँचे जो गलील
झील के सामने परले पार था। 27जैसे ही वह किनारे पर
उतरा, नगर का एक व्यक्ति उसे मिला। उसमें दुष्टात्माएँ
समाई हुई थी। एक लम्बे समय से उसने न तो कपड़े पहने
थे और न ही वह घर में रहा था, बल्कि वह मकबरों में
रहा करता था। 28जब उसने यीशु को देखा तो चिल्लाते
हुए उसके सामने गिर कर ऊँचे स्वर में बोला, "हे परम
प्रधान (परमेश्वर) के पुत्र यीशु, तू मुझसे क्या चाहता है?
मैं विनती करता हूँ मुझे पीड़ा मत पहुँचा।" 29उसने उस
दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से बाहर निकलने का आदेश
दिया था, क्योंकि उस दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को बहुत
बार पकड़ा था। ऐसे अवसरों पर उस बेड़ियों से बाँध
कर पहरे में रखा जाता था। किन्तु वह सदा ज़ंजीरों को
तोड़ देता था और दुष्टात्मा उसे वीराने में भगाए फिरती
थी।

30सो यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने कहा, "सेना" क्योंकि उसमें बहुत सी दुष्टात्माएँ
समाई थीं। 31वे यीशु से तर्क-वितर्क के साथ विनती कर
रही थीं कि वह उन्हें गहन गर्त में जाने की आज्ञा न दे।
32अब देखो, तभी वहाँ पहाड़ी पर सुअरों का एक रेवड़
चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उससे विनती की कि वह उन्हें
सुअरों में जाने दे। सो उसने उन्हें अनुमति दे दी। 33इस पर
वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से बाहर निकली और उन
सुअरों में प्रवेश कर गयी। और सुअरों का वह रेवड़ नीचे
उस ढलुआ तट से लुढ़कते पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में
जा गिरा और डूब गया।

34रेवड़ के रखवाले, जो कुछ हुआ था, उसे देखकर
वहाँ से भाग खड़े हुए। और उन्होंने इसका समाचार नगर
और गाँव के इजारों में जा सुनाया। 35फिर वहाँ के लोग
जो कुछ घटा था उसे देखने बाहर आये। वे यीशु से मिले।
और उन्होंने उस व्यक्ति को जिसमें से दुष्टात्माएँ निकली
थीं यीशु के चरणों में बैठे पाया। उस व्यक्ति ने कपड़े पहने
हुए थे और उसका दिमाग एकदम सही था। इससे वे सभी
डर गये। 36जिन्होंने देखा, उन्होंने लोगों को बताया कि
दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हुआ। 37इस पर गिरासेन
प्रदेश के सभी निवासियों ने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ
से चला जाये क्योंकि वे सभी बहुत डर गये थे। सो यीशु
नाव में आया और लौट पड़ा। 38किन्तु जिस व्यक्ति में से
दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह यीशु से अपने को साथ ले
चलने की विनती कर रहा था। इस पर यीशु ने उसे यह
कहते हुए लौटा दिया कि, 39"घर जा और जो कुछ
परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे बता।"

सो वह लौटकर, यीशु ने उसके लिये जो कुछ किया
था, उसे सारे नगर में सबसे कहता फिरा।

रोगी स्त्री का अच्छा होना और मृत लड़की को जीवनदान

40अब देखो जब यीशु लौटा तो जन समूह ने उसका
स्वागत किया क्योंकि वे सभी उसकी प्रतीक्षा में थे। 41तभी
याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आया। वह वहाँ के यहूदी
धर्म-सभा-भवन का मुखिया था। वह यीशु के चरणों में
गिर पड़ा और उससे अपने घर चलने की विनती करने
लगा। 42क्योंकि उसके बारह साल की एक इकलौती बेटी
थी, वह मरने वाली थी।

सो यीशु जब जा रहा था तो भीड़ उसे कुचले जा रही
थी। 43वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह साल से खून बह रहा
था। जो कुछ उसके पास था, उसने चिकित्सकों पर खर्च
कर दिया था, पर वह किसी से भी ठीक नहीं हो पायी
थी। 44वह उसके पीछे आयी और उसने उसके चोगे की
कन्नी छू ली। और उसका खून जाना तुरन्त रुक गया।
45तब यीशु ने पूछा, "वह कौन है जिसने मुझे छुआ
है?"

जब सभी मना कर रहे थे, पतरस बोला, “स्वामी, सभी
लोगों ने तो तुझे घेर रखा है और वे सभी तो तुझ पर गिरे
पड़ रहे हैं।”
46किन्तु यीशु ने कहा, “किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि
मुझे लगा है जैसे मुझ में से शक्ति निकली हो।” 47उस
स्त्री ने जब देखा कि वह छुप नहीं पायी है, तो वह काँपती
हुई आयी और यीशु के सामने गिर पड़ी। वहाँ सभी लोगों
के सामने उसने बताया कि उसने उसे क्यों छुआ था। और
कैसे तत्काल वह अच्छी हो गयी। 48इस पर यीशु ने उससे
कहा, “पुत्री, तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है। चैन से
जा।”
49वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्म-सभा-
भवन के मुखिया के घर से वहाँ कोई आया और बोला,
“तेरी बेटी मर चुकी है! सो गुरु को अब और कष्ट मत
दे।”
50यीशु ने यह सुन लिया। सो वह उससे बोला, “डर
मत! विश्वास रख। वह बच जायेगी।”
51जब यीशु उस घर में आया तो उसने अपने साथ
पतरस, यूहन्ना, याकूब और बच्ची के माता-पिता को
छोड़ कर किसी और को अपने साथ भीतर नहीं आने
दिया। 52सभी लोग उस लड़की के लिये रो रहे थे और
विलाप कर रहे थे। यीशु बोला, “रोना बंद करो। यह मरी
नहीं है, बल्कि सो रही है।”
53इस पर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। क्योंकि वे जानते
थे कि लड़की मर चुकी है। 54किन्तु यीशु ने उसका हाथ
पकड़ा और पुकार कर कहा, “बच्ची, खड़ी हो जा!”
55उसकी आत्मा लौट आयी, और वह तुरंत उठ बैठी।
यीशु ने आज्ञा दी, “इसे कुछ खाने को दिया जाये।” 56इस
पर लड़की के माता पिता को बहुत अचरज हुआ किन्तु
यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि जो घटना घटी है, उसे वे
किसी को न बतायें।

यीशु द्वारा बारह शिष्यों का भेजा जाना

9 फिर यीशु ने बारहों शिष्यों को एकसाथ बुलाया।
और उन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाने का
अधिकार और शक्ति प्रदान की। उसने उन्हें रोग दूर करने
की शक्ति भी दी। 2फिर उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार सुनाने और रोगियों को चंगा करने के
लिये बाहर भेजा। 3उसने उनसे कहा, “अपनी यात्रा के
लिये वे कुछ साथ न लें: न लाठी, न झोला, न रोटी, न
चाँदी और न कोई अतिरिक्त वस्त्र। 4तुम जिस किसी घर
के भीतर जाओ, वहीं ठहरो। और जब तक विदा लो, वहीं
ठहरे रहो। 5और जहाँ कहीं लोग तुम्हारा स्वागत न करें
तो जब तुम उस नगर को छोड़ो तो उनके विरुद्ध गवाही
के रूप में अपने पैरों की धूल झाड़ दो।”
6सो वहाँ से चल कर वे हर कहीं सुसमाचार का उपदेश
देते और लोगों को चंगा करते सभी गाँवों से होते हुए यात्रा
करने लगे।

हेरोदेस की भ्रान्ति

7अब जब एक चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने, जो कुछ
हुआ था, उसके बारे में सुना तो वह चिंता में पड़ गया
क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा रहा था, “यूहन्ना को
मरे हुओं में से जिला दिया गया है।” 8दूसरे कह रहे थे,
“एलिय्याह प्रकट हुआ है।” कुछ और कह रहे थे, “पुराने
युग का कोई नबी जी उठा है।” 9किन्तु हेरोदेस ने कहा,
“मैंने यूहन्ना का तो सिर कटवा दिया था, फिर यह है
कौन जिसके बारे में मैं ऐसी बातें सुन रहा हूँ?” सो हेरोदेस
उसे देखने का जतन करने लगा।

पाँच हज़ार से अधिक का भोज

10फिर जब प्रेरित लौट कर आये तो उन्होंने जो कुछ
किया था, सब यीशु को बताया। सो वह उन्हें वहाँ से अपने
साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा नामक नगर को चला गया।
11पर भीड़ को पता चल गया सो वह भी उसके पीछे हो
ली। यीशु ने उनका स्वागत किया और परमेश्वर के राज्य
के विषय में उन्हें बताया। और जिन्हें उपचार की
आवश्यकता थी, उन्हें चंगा किया।
12जब दिन ढलने लग रहा था तो वे बारहों उसके
पास आये और बोले, “भीड़ को विदा कर ताकि वे
आसपास के गाँवों और खेतों में जाकर आसरा और
भोजन पा सकें क्योंकि हम यहाँ सुदूर निर्जन स्थान में
हैं।”
13किन्तु उसने उनसे कहा, “तुम ही इन्हें खाने को
कुछ दो।” वे बोले, “हमारे पास बस पाँच रोटियों और दो
मछलियों को छोड़ कर और कुछ भी नहीं है। तू यह तो
नहीं चाहता है कि हम जाएँ और इन सब के लिए भोजन

मोल लेकर आएँ।" [14](वहाँ लगभग पाँच हज़ार पुरुष थे।) किन्तु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "उन्हें पचास पचास के समूहों में बैठा दो।"

[15]सो उन्होंने वैसा ही किया और हर किसी को बैठा दिया। [16]फिर यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर देखते हुए उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया और फिर उनके टुकड़े करते हुए उन्हें अपने शिष्यों को दिया कि वे लोगों को परोस दें। [17]लोगों ने खूब छक कर खाया और बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं।

यीशु ही मसीह है

[18]हुआ यह कि जब यीशु अकेले प्रार्थना कर रहा था तो उसके शिष्य भी उसके साथ थे। सो यीशु ने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"

[19]उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना, कुछ कहते हैं एलिय्याह किन्तु कुछ दूसरे कहते हैं प्राचीन युग का कोई नबी उठ खड़ा हुआ है।"

[20]यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का मसीह।"

[21]किन्तु इस विषय में किसी को भी न बताने की चेतावनी देते हुए यीशु ने उनसे कहा, [22]"यह निश्चित है कि मनुष्य का पुत्र बहुत सी यातनाएँ झेलेगा और वह बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं, याजकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा नकारा जाकर मरवा दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन जीवित कर दिया जायेगा।"

[23]फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे चलना चाहता है तो उसे अपने आप को नकारना होगा और उसे हर दिन अपना क्रूस उठाना होगा। तब वह मेरे पीछे चले। [24]क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, वह उसे खो बैठेगा पर जो कोई मेरे लिये अपने जीवन का त्याग करता है, वही उसे बचा पायेगा। [25]क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति का क्या लाभ है कि वह सारे संसार को तो प्राप्त कर ले किन्तु अपने आप को नष्ट कर दे या भटक जाये। [26]जो कोई भी मेरे लिये या मेरे शब्दों के लिये लज्जित है, उसके लिये परमेश्वर का पुत्र भी जब अपने वैभव, अपने परमपिता और पवित्र स्वर्गदूतों के वैभव में प्रकट होगा तो उसके लिये लज्जित होगा। [27]किन्तु मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक परमेश्वर के राज्य को देख न लें।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु

[28]इन शब्दों के कहने के लगभग आठ दिन बाद वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ के ऊपर गया। [29]फिर ऐसा हुआ कि प्रार्थना करते हुए उसके मुख का स्वरूप कुछ भिन्न ही हो गया और उसके वस्त्र चमचम करते सफेद हो गये। [30]वहीं उससे बात करते हुए दो पुरुष प्रकट हुए। वे मूसा और एलिय्याह थे। [31]जो अपनी महिमा के साथ प्रकट हुए थे और यीशु की मृत्यु के विषय में बात कर रहे थे जिसे उसे यरुशलेम में साधना था। [32]किन्तु पतरस और वे जो उसके साथ थे नींद से घिरे थे। सो जब वे जागे तो उन्होंने यीशु की महिमा को देखा और उन्होंने उन दो जनों को भी देखा जो उसके साथ खड़े थे। [33]और फिर हुआ यूँ कि जैसे ही वे उससे विदा ले रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, "स्वामी, अच्छा है कि हम यहाँ हैं, हमें तीन मण्डप बनाने हैं–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" (वह नहीं जानता था, वह क्या कह रहा था।)

[34]वह ये बातें कर ही रहा था कि एक बादल उमड़ा और उसने उन्हें अपनी छाया में समेट लिया। जैसे ही उन पर बादल छाया, वे घबरा गये। [35]तभी बादलों से आकाशवाणी हुई, "यह मेरा पुत्र है, इसे मैंने चुना है, इसकी सुनो।"

[36]जब आकाशवाणी हो चुकी तो उन्होंने यीशु को अकेले पाया। वे इसके बारे में चुप रहे। उन्होंने जो कुछ देखा था, उस विषय में उस समय किसी से कुछ नहीं कहा।

लड़के को दुष्टात्मा से छुटकारा

[37]अगले दिन ऐसा हुआ कि जब वे पहाड़ी से नीचे उतरे तो उन्हें एक बड़ी भीड़ मिली। [38]तभी भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "गुरु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बेटे पर अनुग्रह–दृष्टि कर। वह मेरी इकलौती सन्तान है। [39]अचानक एक दुष्ट आत्मा उसे जकड़ लेती है और वह चीख उठता है। उसे दुष्टात्मा ऐसे मरोड़ में डालती है कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कभी नहीं छोड़ती और सताए जा रही है। [40]मैंने तेरे शिष्यों से

प्रार्थना की कि वह उसे बाहर निकाल दें किन्तु वे ऐसा
नहीं कर सके।"

41तब यीशु ने उत्तर दिया, "अरे अविश्वासियो और
भटकाये गये लोगो, मैं और कितने दिन तुम्हारे साथ रहूँगा
और कब तक तुम्हारी सहता रहूँगा? अपने बेटे को यहाँ
ला।"

42अभी वह लड़का आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे
पटकी दी और मरोड़ दिया। किन्तु यीशु ने दुष्ट आत्मा को
फटकारा और लड़के को निरोग करके वापस उसके
पिता को सौंप दिया। 43वे सभी परमेश्वर की इस महानता
से चकित हो उठे।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की चर्चा

यीशु जो कुछ कर रहा था उसे देखकर लोग जब
आश्चर्य कर रहे थे तभी यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,
44"अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उन बातों पर ध्यान दो।
मनुष्य का पुत्र मनुष्य के हाथों पकड़वाया जाने वाला है।"
45किन्तु वे इस बात को नहीं समझ सके। यह बात उनसे
छुपी हुई थी। सो वे उसे जान नहीं पाये। और वे उस बात के
विषय में उससे पूछने से डरते थे।

सबसे बड़ा कौन?

46एक बार यीशु के शिष्यों के बीच इस बात पर विवाद
छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है? 47यीशु ने जान लिया
कि उनके मन में क्या विचार हैं। सो उसने एक बच्चे को
लिया और उसे अपने पास खड़ा करके 48उनसे बोला,
"जो कोई इस छोटे बच्चे का मेरे नाम में सत्कार करता
है, वह मानों मेरा ही सत्कार कर रहा है। और जो कोई
मेरा सत्कार करता है, वह उसका ही सत्कार कर रहा है
जिसने मुझे भेजा है। इसीलिए जो तुममें सबसे छोटा है, वही
सबसे बड़ा है।"

जो तुम्हारा विरोधी नहीं है, वह तुम्हारा ही है

49यूहन्ना ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "स्वामी,
हमने तेरे नाम पर एक व्यक्ति को दुष्टात्माएँ निकालते
देखा है। हमने उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह
हममें से कोई नहीं है, जो तेरा अनुसरण करते हैं।"

50इस पर यीशु ने यूहन्ना से कहा, "उसे रोक मत क्योंकि
जो तेरे विरोध में नहीं है, वह तेरे पक्ष में ही है।"

एक सामरी नगर

51अब ऐसा हुआ कि जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले जाने
का समय आया तो वह यरूशलेम जाने का निश्चय कर
चल पड़ा। 52उसने अपने दूतों को पहले ही भेज दिया था।
वे चल पड़े और उसके लिये तैयारी करने को एक सामरी
गाँव में पहुँचे। 53किन्तु सामरियों ने वहाँ उसका स्वागत
सत्कार नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था।
54जब उसके शिष्यों–याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो वे
बोले, "प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आदेश दें कि आकाश
से अग्नि बरसे और उन्हें भस्म कर दे?"

55इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और उनको डाँटा
फटकारा, ["और यीशु ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि
तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो? 56मनुष्य का पुत्र
मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि
उनका उद्धार करने आया है।'"]* फिर वे दूसरे गाँव चले
गये।

यीशु का अनुसरण

57जब वे राह किनारे चले जा रहे थे किसी ने उससे
कहा, "तू जहाँ कहीं भी जाये, मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

58यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास खोह होते
हैं। और आकाश की चिड़ियाओं के भी घोंसले होते हैं
किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने तक को कोई
स्थान नहीं है।" 59उसने किसी दूसरे से कहा, "मेरे पीछे
हो ले।"

किन्तु वह व्यक्ति बोला, "हे प्रभु, मुझे जाने दे ताकि मैं
पहले अपने पिता को दफ़न कर आऊँ।"

60तब यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे
गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा
कर।"

61फिर किसी और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे
चलूँगा किन्तु पहले मुझे अपने घर वालों से विदा ले आने
दे।"

62इस पर यीशु ने उससे कहा, "ऐसा कोई भी जो हल
पर हाथ रखने के बाद पीछे देखता है, परमेश्वर के राज्य
के योग्य नहीं है।"

और यीशु ... आया है कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

यीशु द्वारा सत्तर शिष्यों का भेजा जाना

10 इन घटनाओं के बाद प्रभु ने सत्तर* व्यक्तियों
को और नियुक्त किया और फिर जिन–जिन
नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो–दो करके
उसने उन्हें अपने से आगे भेजा। 2वह उनसे बोला, "फसल
बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम हैं।
इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी
फसलों में मज़दूर भेजे। 3जाओ और याद रखो, मैं तुम्हें
'भेड़ियों' के बीच भेड़ के मेमनों के समान भेज रहा हूँ।
4अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और न ही जूते लेना।
रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत करो। 5जिस किसी
घर में जाओ, सबसे पहले कहो 'इस घर को शान्ति मिले।'
6यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति होगा तो तुम्हारी शान्ति
उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं
होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे पास लौट आयेगी। 7जो
कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते पीते उसी घर में ठहरो।
क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का हक है। घर–घर मत
फिरते रहो। 8और जब कभी तुम किसी नगर में प्रवेश
करो और उस नगर के लोग तुम्हारा स्वागत सत्कार करें
तो जो कुछ वे तुम्हारे सामने परोसें, बस वही खाओ। 9उस
नगर के रोगियों को निरोग करो और उनसे कहो
'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' 10और
जब कभी तुम किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग
तुम्हारा सम्मान न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर
कहो, 11'इस नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी
है, हम तुम्हारे विरोध में यहीं पोंछे जा रहे हैं। फिर भी यह
ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।'
12मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से
सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

13"ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि
जो आश्चर्य कर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और सैदा
में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के शोक–वस्त्र
धारण कर और राख में बैठ कर मन फिरा लेते। 14कुछ
भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे कहीं
अच्छी होगी। 15अरे कफ़रनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा
उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक में पड़ेगा!
16"शिष्यो! जो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है, और
जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध करता है।
और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता है जिसने मुझे
भेजा है।"

शैतान का पतन

17फिर वे सत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और
बोले, "हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा
मानती हैं!" 18इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान
को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है। 19सुनो!
साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की
समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे दिया
है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। 20किन्तु बस
इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे वश में
हैं बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में
अंकित हैं।"

यीशु की परम पिता से प्रार्थना

21उस क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित
हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के
स्वामी! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने इन बातों को चतुर
और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी शिशुओं*
के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम पिता! निश्चय ही
तू ऐसा ही करना चाहता था।
22"मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और पिता
के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और पुत्र के
अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है, या उसके
सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।"
23फिर शिष्यों की तरफ मुड़ कर उसने चुपके से कहा,
"धन्य हैं वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती हैं।
24क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत से नबी
और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे हो, पर देख
नहीं सके। जिन बातों को तुम सुन रहे हो, वे उन्हें सुनना
चाहते थे, पर वे सुन न पाये।"

सत्तर लूका ने कदाचित यह संख्या बहत्तर लिखी थी किन्तु लूका की कुछ ग्रीक प्रतियों में यह संख्या सत्तर भी मिलती है।

शिशुओं शिशुओं से अभिप्राय है सीधे सादे सरल अबोध जन।

अच्छे सामरी की कथा

25तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु की परीक्षा
लेने के लिये उससे पूछा, "गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिये
मैं क्या करूँ?"
26इस पर यीशु ने उस से कहा, "व्यवस्था के विधि में
क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"
27उसने उत्तर दिया, "'तू अपने समूचे मन, सम्पूर्ण आत्मा,
सारी शक्ति और समग्र बुद्धि से अपने प्रभु से प्रेम कर'।*
और 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर, जैसे तू अपने
आप से करता है।'"*
28तब यीशु ने उससे कहा, "तूने ठीक उत्तर दिया है। तो
तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित रहेगा।"
29किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने की इच्छा
करते हुए यीशु से कहा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?"
30यीशु ने उत्तर में कहा, "देखो, एक व्यक्ति यरूशलेम
से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया। उन्होंने
सब कुछ छीन कर उसे नंगा कर दिया और मार पीट कर
उसे अधमरा छोड़, वे चले गये। 31अब संयोग से उसी मार्ग
से एक याजक जा रहा था। जब उसने इसे देखा तो वह मुँह
मोड़ कर दूसरी ओर चला गया। 32उसी रास्ते होता हुआ,
एक लेवी* भी वहीं आया। उसने उसे देखा और वह भी
मुँह मोड़ कर दूसरी ओर चला गया। 33किन्तु एक सामरी
भी जाते हुए वहीं आया जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस
व्यक्ति को देखा तो उसके लिये उसके मन में करुणा
उपजी, 34सो वह उसके पास आया और उसके घावों पर
तेल और दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे
अपने पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी
देखभाल करने लगा। 35अगले दिन उसने दो दीनारी
निकाली और उन्हें सराय वाले को देते हुए बोला, 'इसका
ध्यान रखना और इससे अधिक जो कुछ तेरा खर्चा होगा,
जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।'
36"बता तेरे विचार से डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति का
पड़ोसी इन तीनों में से कौन हुआ?"
37न्यायशास्त्री ने कहा, "वही जिसने उस पर दया
की।"
इस पर यीशु ने उससे कहा, "जा और वैसा ही कर
जैसा उसने किया!"

मरियम और मार्था

38जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा
रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री ने, जिसका
नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका स्वागत सत्कार
किया। 39उसकी मरियम नाम की एक बहन थी जो प्रभु
के चरणों में बैठी, जो कुछ वह कह रहा था, उसे सुन
रही थी। 40उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी मार्था
व्याकुल होकर यीशु के पास आयी और बोली, "हे प्रभु,
क्या तुझे चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा काम बस
मुझ ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता
करने को कह।"
41प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी
बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती है। 42किन्तु बस
एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने क्योंकि अपने
लिये उसी उत्तम अंश को चुन लिया है, सो वह उससे नहीं
छीना जायेगा।"

प्रार्थना

11 अब ऐसा हुआ कि यीशु कहीं प्रार्थना कर रहा
था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका तो उसके
एक शिष्य ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें सिखा कि हम
प्रार्थना कैसे करें। जैसा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को
सिखाया था।"
2इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो, तो कहो:

'हे पिता, तेरा नाम पवित्र हो।
तेरा राज्य आवे,
3 हमें दे दिन–प्रतिदिन आहार,
4 क्षमा कर अपराध हमारे,
क्योंकि हमने भी अपने अपराधी क्षमा किये,
कठिन परीक्षा में मत पड़ने दे।'"

माँगते रहो

5फिर उसने उनसे कहा, "मानो तुममें से किसी का
एक मित्र है, सो तुम आधी रात उसके पास जाकर कहते
हो, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे। 6क्योंकि मेरा एक मित्र
अभी–अभी यात्रा पर मेरे पास आया है और मेरे पास

तू अपने ... प्रेम कर व्यवस्था. 6:5
अपने ... करता है लैव्य. 19:18
लेवी लेविय समूह का एक व्यक्ति। यह परिवार समूह मंदिर में यहूदी याजक का सहायक होता था।

उसके सामने परोसने को कुछ भी नहीं है।' 7और कल्पना
करो उस व्यक्ति ने भीतर से उत्तर दिया, 'मुझे तंग मत
कर, द्वार बंद हो चुका है, बिस्तर में मेरे साथ मेरे बच्चे हैं,
सो तुझे कुछ भी देने मैं खड़ा नहीं हो सकता।' 8मैं तुम्हें
बताता हूँ वह यद्यपि नहीं उठेगा और तुम्हें कुछ नहीं देगा,
किन्तु फिर भी क्योंकि वह तुम्हारा मित्र है, सो तुम्हारे
निरन्तर, बिना संकोच मांगते रहने से वह खड़ा होगा और
तुम्हारी आवश्यकता भर, तुम्हें देगा। 9और इसीलिये मैं
तुमसे कहता हूँ माँगो, तुम्हें दिया जाएगा। खोजो, तुम
पाओगे। खटखटाओ, तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा।
10क्योंकि हर कोई जो माँगता है, पाता है। जो खोजता है,
उसे मिलता है। और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार
खोल दिया जाता है। 11तुममें ऐसा पिता कौन होगा जो यदि
उसका पुत्र मछली माँगे, तो मछली के स्थान पर उसे साँप
थमा दे 12और यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे दे।
13सो बुरे होते हुए भी जब तुम जानते हो कि अपने बच्चों
को उत्तम उपहार कैसे दिये जाते हैं, तो स्वर्ग में स्थित
परम पिता, जो उससे माँगते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा कितना
अधिक देगा।"

यीशु में परमेश्वर की शक्ति

14फिर जब यीशु एक गूँगा बना डालने वाली दुष्टात्मा
को निकाल रहा था तो ऐसा हुआ कि जैसे ही वह दुष्टात्मा
बाहर निकली, तो वह गूँगा, बोलने लगा। भीड़ के लोग
इससे बहुत चकित हुए। 15किन्तु उनमें से कुछ ने कहा,
"यह दैत्यों के शासक बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं
को निकालता है।"

16किन्तु औरों ने उसे परखने के लिये किसी स्वर्गीय
चिन्ह की माँग की। 17किन्तु यीशु जान गया कि उनके
मनों में क्या है। सो वह उनसे बोला, "वह राज्य जिसमें
अपने भीतर ही फूट पड़ जाये, नष्ट हो जाता है और ऐसे
ही किसी घर का भी फूट पड़ने पर उसका नाश हो जाता
है। 18यदि शैतान अपने ही विरुद्ध फूट पड़े तो उसका
राज्य कैसे टिक सकता है? यह मैंने तुमसे इसलिये पूछा है
कि तुम कहते हो कि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से
दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। 19किन्तु यदि मैं बैल्ज़ाबुल
की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे
अनुयायी उन्हें किसकी सहायता से निकालते हैं? सो तुझे
तेरे अपने लोग ही अनुचित सिद्ध करेंगे। 20किन्तु यदि मैं
दुष्टात्माओं को परमेश्वर की शक्ति से निकालता हूँ तो
यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का राज्य तुम तक आ पहुँचा है!

21"जब एक शक्तिशाली मनुष्य पूरी तरह हथियार कसे
अपने घर की रक्षा करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित
रहती है। 22किन्तु जब कभी कोई उससे अधिक शक्तिशाली
उस पर हमला कर उसे हरा देता है तो वह उसके सभी
हथियारों को, जिन पर उसे भरोसा था, उससे छीन लेता है
और लूट के माल को वे आपस में बाँट लेते हैं।

23"जो मेरे साथ नहीं है, मेरे विरोध में है और वह जो
मेरे साथ बटोरता नहीं है, बिखेरता है।"

खाली व्यक्ति

24"जब कोई दुष्टात्मा किसी मनुष्य से बाहर निकलती
है तो विश्राम को खोजते हुए सूखे स्थानों से होती हुई जाती
है और जब उसे आराम नहीं मिलता तो वह कहती हैं, 'मैं
अपने उसी घर लौटूँगी जहाँ से गयी हूँ।' 25और वापस
जाकर वह उसे साफ़ सुथरा और व्यवस्थित पाती है। 26फिर
वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट अन्य सात दुष्टात्माओं
को वहाँ लाती है। फिर वे उसमें जाकर रहने लगती हैं।
इस प्रकार उस व्यक्ति की बाद की यह स्थिति पहली स्थिति
से भी अधिक बुरी हो जाती है!"

वे धन्य हैं

27फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं,
भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह गर्भ
धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है, जिनका
तूने पान किया है।"

28इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो परमेश्वर
का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

प्रमाण की माँग

29जैसे जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वह कहने लगा, "यह
एक दुष्ट पीढ़ी है। यह कोई चिह्न देखना चाहती है। किन्तु
इसे योना के चिन्ह के सिवा और कोई चिह्न नहीं दिया
जायेगा। 30क्योंकि जैसे नीनवे के लोगों के लिए योना चिह्न
बना, वैसे ही इस पीढ़ी के लिये मनुष्य का पुत्र भी
चिह्न बनेगा। 31दक्षिण की रानी* न्याय के दिन प्रकट

दक्षिण की रानी अर्थात् शीना हज़ार मील चल कर सुलैमान से
परमेश्वर का ज्ञान सीखने आयी थी।

होकर इस पीढ़ी के लोगों पर अभियोग लगायेगी और
उन्हें दोषी ठहरायेगी क्योंकि वह धरती के दूसरे छोरों से
सुलेमान का ज्ञान सुनने को आयी और अब देखो यहाँ तो
कोई सुलेमान से भी बड़ा है। 32नीनवे के लोग न्याय के
दिन इस पीढ़ी के लोगों के विरोध में खड़े होकर उन पर
दोष लगायेंगे क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश को सुन कर
मन फिराया था। और देखो अब तो योना से भी महान
कोई यहाँ है!

विश्व का प्रकाश बनो

33"दीपक जलाकर कोई भी उसे किसी छिपे स्थान या
किसी बर्तन के भीतर नहीं रखता, बल्कि वह इसे दीवट
पर रखता है ताकि जो भीतर आयें प्रकाश देख सकें।
34तुम्हारी देह का दीपक तुम्हारी आँखें हैं, सो यदि आँखें
साफ हैं तो सारी देह प्रकाश से भरी है किन्तु, यदि ये बुरी
हैं तो तुम्हारी देह अंधकारमय हो जाती है। 35सो ध्यान रहे
कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं है। 36अत:
यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से परिपूर्ण है और इसका
कोई भी अंग अंधकारमय नहीं है तो वह पूरी तरह ऐसे
चमकेगा मानो कोई दीपक तुम पर अपनी किरणों में
चमक रहा हो।"

यीशु द्वारा फरीसियों की आलोचना

37यीशु ने जब अपनी बात समाप्त की तो एक फरीसी
ने उससे अपने साथ भोजन करने का आग्रह किया। सो
वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ गया। 38किन्तु जब
उस फरीसी ने यह देखा कि भोजन करने से पहले उसने
अपने हाथ नहीं धोये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। 39इस
पर प्रभु ने उनसे कहा, "अब देखो तुम फरीसी थाली और
कटोरी को बस बाहर से तो माँजते हो पर भीतर से तुम हुए
लोग लालच और दुष्टता से भरे हो। 40अरे मूर्ख लोगो!
क्या जिसने बाहरी भाग को बनाया, वही भीतरी भाग को
भी नहीं बनाता? 41इसलिए जो कुछ भीतर है, उसे दीनों
को दे दे। फिर तेरे लिए सब कुछ पवित्र हो जायेगा।
42अरे फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम अपने
पुदीने और सुदाब बूटी और हर किसी जड़ी बूटी का दसवाँ
हिस्सा तो अर्पित करते हो किन्तु परमेश्वर के लिये प्रेम
और न्याय की उपेक्षा करते हो। किन्तु इन बातों को तुम्हें
उन बातों की उपेक्षा किये बिना करना चाहिये था।
43ओ फरीसियो, तुम्हें धिक्कार है! क्योंकि तुम यहूदी
प्रार्थना सभाओं में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आसन चाहते हो
और बाज़ारों में सम्मानपूर्ण नमस्कार लेना तुम्हें भाता है।
44तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम बिना किसी पहचान की
उन क़ब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते
हैं।"

यहूदी धर्मशास्त्रियों से यीशु की बातचीत

45तब एक न्यायशास्त्री ने यीशु से कहा, "गुरु, जब तू
ऐसी बातें कहता है तो हमारा भी अपमान करता है।"
46इस पर यीशु ने कहा, "अरे न्यायशास्त्रियो! तुम्हें
धिक्कार है। क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ लादते हो
जिन्हें उठाना कठिन है। और तुम स्वयं उन बोझों को एक
उँगली तक से छूना भर नहीं चाहते। 47तुम्हें धिक्कार है
क्योंकि तुम नबियों के लिये कब्रें बनाते हो जबकि वे
तुम्हारे पूर्वज ही थे जिन्होंने उनकी हत्या की। 48इससे तुम
यह दिखाते हो कि तुम अपने पूर्वजों के उन कामों का
समर्थन करते हो। क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मारा और
तुमने उनकी कब्रें बनाईं। 49इसीलिये परमेश्वर के ज्ञान
ने भी कहा, 'मैं नबियों और प्रेरितों को भी उनके पास
भेजूँगा। फिर कुछ को तो वे मार डालेंगे और कुछ को
यातनाएँ देंगे।' 50इसीलिये संसार के प्रारम्भ से जितने भी
नबियों का खून बहाया गया है, उसका हिसाब इस पीढ़ी के
लोगों से चुकता किया जायेगा। 51यानी हाबिल की हत्या से
लेकर जकरयाह की हत्या तक का हिसाब, जो परमेश्वर
के मंदिर और वेदी के बीच की गयी थी। हाँ, मैं तुमसे
कहता हूँ इस पीढ़ी के लोगों को इसके लिए लेखा जोखा
देना ही होगा।
52"हे न्याय शास्त्रियो, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि तुमने
ज्ञान की कुंजी ले तो ली है। पर उसमें न तो तुमने खुद
प्रवेश किया और जो प्रवेश करने का जतन कर रहे थे
उनको भी तुमने बाधा पहुँचाई।"
53और फिर जब यीशु वहाँ से चला गया तो वे धर्म
शास्त्री और फरीसी उससे घोर शत्रुता रखने लगे। बहुत
सी बातों के बारे में वे उससे तीखे प्रश्न पूछने लगे। 54क्योंकि
वे उसे उसकी कही किसी बात से फँसाने की टोह में लगे
थे।

फरीसियों जैसे मत बनो

12 और फिर जब हजारों की इतनी भीड़ आ जुटी कि लोग एक दूसरे को कुचल रहे थे तब यीशु पहले अपने शिष्यों से कहने लगा, "फरीसियों के ख़मीर से, जो उनका कपट है, बचे रहो। [2]कुछ छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं कर दिया जायेगा। ऐसा कुछ अनजाना नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा। [3]इसीलिये हर वह बात जिसे तुमने अँधेरे में कहा है, उजाले में सुनी जायेगी। और एकांत कमरों में जो कुछ भी तुमने चुपचाप किसी के कान में कहा है, मकानों की छतों पर से घोषित किया जायेगा।

बस परमेश्वर से डरो

[4]"किन्तु मेरे मित्रो! मैं तुमसे कहता हूँ उनसे मत डरो जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं और उसके बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस में हो। [5]मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें किस से डरना चाहिये। उससे डरो जो तुम्हें मारकर नरक में डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, बस उसी से डरो।

[6]"क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियाएँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। [7]और देखो तुम्हारे सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। डरो मत तुम तो बहुत सी चिड़ियाओं से कहीं अधिक मूल्यवान हो।"

यीशु के नाम पर लज्जाओ मत

[8]"किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई व्यक्ति सभी के सामने मुझे स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र भी उस व्यक्ति को परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करेगा। [9]किन्तु वह जो मुझे दूसरों के सामने नकारेगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकार दिया जायेगा।

[10]"और हर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर दिया जायेगा जो मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई शब्द बोलता है, किन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसे क्षमा नहीं किया जायेगा।

[11]"सो जब वे तुम्हें यहूदी धर्म–सभाओं, शासकों और अधिकारियों के सामने ले जायें तो चिंता मत करो कि तुम अपना बचाव कैसे करोगे या तुम्हें क्या कुछ कहना होगा। [12]चिंता मत करो क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखायेगा कि उस समय तुम्हें क्या बोलना चाहिये।"

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

[13]फिर भीड़ में से उससे किसी ने कहा, "गुरु, मेरे भाई से पिता की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कह दे।"

[14]इस पर यीशु ने उससे कहा, "अरे भले मानुष, मुझे तुम्हारा न्यायकर्ता या पंच किसने बनाया है?" [15]सो यीशु ने उनसे कहा, "सावधानी के साथ सभी प्रकार के लोभ से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति होने पर भी जीवन का आधार उसका संग्रह नहीं होता।"

[16]फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई: "किसी धनी व्यक्ति की धरती पर भरपूर उपज हुई। [17]वह अपने मन में सोचते हुए कहने लगा, 'मैं क्या करूँ, मेरे पास फ़सल को रखने के लिये स्थान तो है नहीं।' [18]फिर उसने कहा, 'ठीक है मैं यह करूँगा कि अपने अनाज के कोठों को गिरा कर बड़े कोठे बनवाऊँगा और अपने समूचे अनाज को और सामान को वहाँ रख छोड़ूँगा।' [19]फिर अपनी आत्मा से कहूँगा, 'अरे मेरी आत्मा अब बहुत सी उत्तम वस्तुएँ, बहुत से बरसों के लिये तेरे पास संचित हैं। घबरा मत, खा, पी और मौज उड़ा।' [20]किन्तु परमेश्वर उससे बोला, 'अरे मूर्ख, इसी रात तेरी आत्मा तुझसे ले ली जायेगी। जो कुछ तूने तैयार किया है, उसे कौन लेगा?'

[21]"देखो, उस व्यक्ति के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है, वह अपने लिए भंडार भरता है किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी नहीं है।"

परमेश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है

[22]फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि तुम क्या खाओगे अथवा अपने शरीर की चिंता मत करो कि तुम क्या पहनोगे? [23]क्योंकि जीवन भोजन से और शरीर वस्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। [24]कौवों को देखो, न वे बोते हैं, न ही वे काटते हैं। न उनके पास भंडार है और न अनाज के कोठे। फिर भी परमेश्वर उन्हें भोजन देता है। तुम तो कौवों से कितने अधिक मूल्यवान हो। [25]चिन्ता करके, तुम में से कौन ऐसा है, जो अपनी आयु में एक घड़ी भी और जोड़ सकता है? [26]क्योंकि यदि तुम इस छोटे

से काम को भी नहीं कर सकते तो शेष के लिये चिन्ता
क्यों करते हो? 27कुमुदिनियों को देखो, वे कैसे उगती हैं?
न वे श्रम करती हैं, न कताई, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ
कि सुलेमान अपने सारे वैभव के साथ उन में से किसी
एक के समान भी नहीं सज सका। 28इसलिये जब मैदान
की घास को, जो आज यहाँ है और जिसे कल ही भाड़ में
झोंक दिया जायेगा, परमेश्वर ऐसे वस्त्रों से सजाता है तो ओ
अल्प विश्वासियो, तुम्हें तो वह और कितने ही अधिक
वस्त्र पहनायेगा। 29और चिन्ता मत करो कि तुम क्या
खाओगे और क्या पीओगे। इनके लिये मत सोचो।
30क्योंकि जगत के और सभी लोग इन वस्तुओं के पीछे
दौड़ रहे हैं पर तुम्हारा पिता तो जानता ही है कि तुम्हें
इन वस्तुओं की आवश्यकता है। 31बल्कि तुम तो उसके
राज्य की ही चिन्ता करो। ये वस्तुएँ तो तुम्हें दे ही दी
जायेंगी।

धन पर भरोसा मत करो

32“मेरी भोली भेड़ो, डरो मत, क्योंकि तुम्हारा परम
पिता तुम्हें स्वर्ग का राज्य देने को तत्पर है। 33सो अपनी
सम्पत्ति बेच कर धन गरीबों में बाँट दो। अपने पास ऐसी
थैलियाँ रखो जो पुरानी न पड़ें अर्थात् कभी समाप्त न होने
वाला कोष स्वर्ग में जुटाओ जहाँ उस तक किसी चोर की
पहुँच न हो। और न उसे कीड़े मकौड़े नष्ट कर सकें।
34क्योंकि जहाँ तुम्हारा कोष है, वहीं तुम्हारा मन भी
रहेगा।

सदा तैयार रहो

35“कर्म करने को सदा तैयार रहो। और अपने दीपक
जलाए रखो। 36और उन लोगों के जैसे बनो जो ब्याह के
भोज से लौटकर आते अपने स्वामी की प्रतीक्षा में रहते है
ताकि, जब वह आये और द्वार खटखटाये तो वे तत्काल
उसके लिए द्वार खोल सकें। 37वे सेवक धन्य हैं जिन्हें
स्वामी आकर जागते और तैयार पाएगा। मैं तुम्हें सच्चाई
के साथ कहता हूँ कि वह भी उनकी सेवा के लिये कमर
कस लेगा और उन्हें खाने की चौकी पर भोजन के लिए
बिठायेगा। वह आयेगा और उन्हें भोजन करायेगा। 38वह
चाहे आधी रात से पहले आए और चाहे आधी रात के
बाद यदि उन्हें तैयार पाता है तो वे धन्य है। 39इस बात के
लिए निश्चित रहो कि यदि घर के स्वामी को यह पता
होता कि चोर किस घड़ी आ रहा है, तो वह उसे अपने घर
में सेंध नहीं लगाने देता। 40सो तुम भी तैयार रहो क्योंकि
मनुष्य का पुत्र ऐसी घड़ी आयेगा जिसे तुम सोच भी नहीं
सकते।”

विश्वासपात्र सेवक कौन?

41तब पतरस ने पूछा, “हे प्रभु, यह दृष्टान्त कथा तू
हमारे लिये कह रहा है या सब के लिये?”

42इस पर यीशु ने कहा, “तो फिर ऐसा विश्वास–पात्र,
बुद्धिमान प्रबन्ध–अधिकारी कौन होगा जिसे प्रभु अपने
सेवकों के ऊपर उचित समय पर, उन्हें भोजन सामग्री देने
के लिये नियुक्त करेगा? 43वह सेवक धन्य है जिसे उसका
स्वामी जब आये तो उसे वैसा ही करते पाये। 44मैं सच्चाई
के साथ तुमसे कहता हूँ कि वह उसे अपनी सभी सम्पत्तियों
का अधिकारी नियुक्त करेगा। 45किन्तु यदि वह सेवक
अपने मन में यह कहे कि मेरा स्वामी तो आने में बहुत देर
कर रहा है और वह दूसरे पुरुष और स्त्री सेवकों को
मारना पीटना आरम्भ कर दे तथा खाने–पीने और मदमस्त
होने लगे 46तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा
जिसकी वह सोचता तक नहीं। एक ऐसी घड़ी जिसके प्रति
वह अचेत है। फिर वह उसके टुकड़े–टुकड़े कर डालेगा
और उसे अविश्वासियों के बीच स्थान देगा।

47“वह सेवक जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है
और उसके लिए तत्पर नहीं होता या जैसा उसका स्वामी
चाहता है, वैसा ही नहीं करता, उस सेवक पर तीखी मार
पड़ेगी। 48किन्तु वह जिसे अपने स्वामी की इच्छा का ज्ञान
नहीं और कोई ऐसा काम कर बैठे जो मार पड़ने योग्य हो
तो उस सेवक पर हल्की मार पड़ेगी। क्योंकि प्रत्येक उस
व्यक्ति से जिसे बहुत अधिक दिया गया है, अधिक अपेक्षित
किया जायेगा। उस व्यक्ति से जिसे लोगों ने अधिक सौंपा
है, उससे लोग अधिक ही माँगेंगे।

यीशु के साथ असहमति

49“मैं धरती पर एक आग भड़काने आया हूँ। मेरी
कितनी इच्छा है कि वह कदाचित् अभी तक भड़क उठती।
50मेरे पास एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना है जब तक यह
पूरा नहीं हो जाता, मैं कितना व्याकुल हूँ। 51तुम क्या
सोचते हो मैं इस धरती पर शान्ति स्थापित करने के लिये
आया हूँ? नहीं! मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं तो विभाजन

करने आया हूँ। 52क्योंकि अब से आगे एक घर के पाँच
आदमी एक दूसरे के विरुद्ध बट जायेंगे। तीन दो के विरोध
में, और दो तीन के विरोध में हो जायेंगे।

53 पिता पुत्र के विरोध में,
और पुत्र पिता के विरोध में,
माँ बेटी के विरोध में,
और बेटी माँ के विरोध में,
सास, बहू के विरोध में
और बहू सास के विरोध में हो जायेंगी।"

समय की पहचान

54फिर वह भीड़ से बोला, "जब तुम पश्चिम की ओर
से किसी बादल को उठते देखते हो तो तत्काल कह उठते
हो, 'वर्षा आ रही है' और फिर ऐसा ही होता है। 55और
फिर जब दक्षिणी हवा चलती है, तुम कहते हो, 'गर्मी पड़ेगी'
और ऐसा ही होता है। 56अरे कपटियो! तुम धरती और
आकाश के स्वरूपों की व्याख्या करना तो जानते हो,
फिर ऐसा क्योंकि तुम वर्तमान समय की व्याख्या करना
नहीं जानते?"

अपनी समस्याएँ सुलझाओ

57"जो उचित है, उसके निर्णायक तुम अपने आप
क्यों नहीं बनते? 58जब तुम अपने विरोधी के साथ
अधिकारियों के पास जा रहे हो तो रास्ते में ही उसके साथ
समझौता करने का जतन करो। नहीं तो कहीं ऐसा न हो
कि वह तुम्हें न्यायाधीश के सामने खींच ले जाये और
न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप दे। और अधिकारी
तुम्हें जेल में बन्द कर दे। 59मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम वहाँ से
तब तक नहीं छूट पाओगे जब तक अंतिम पाई तक न
चुका दो।"

मन बदलो

13 उस समय वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने यीशु
को उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका
रक्त पिलातुस ने उनकी बलियों के साथ मिला दिया था।
2सो यीशु ने उन से कहा, "तुम क्या सोचते हो कि ये
गलीली दूसरे सभी गलीलियों से बुरे पापी थे क्योंकि उन्हें ये
बातें भुगतनी पड़ीं? 3नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम मन
नहीं, फिराओगे तो तुम सब भी वैसी ही मौत मरोगे जैसी वे
मरे थे। 4या उन अट्ठारह व्यक्तियों के विषय में तुम क्या
सोचते हो जिनके ऊपर शीलोह के बुर्ज ने गिर कर उन्हें
मार डाला। क्या सोचते हो, वे यरूशलेम में रहने वाले
दूसरे सभी व्यक्तियों से अधिक अपराधी थे? 5नहीं, मैं
तुम्हें बताता हूँ कि यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब
भी वैसे ही मरोगे।"

निष्फल पेड़

6फिर उसने यह दृष्टान्त कथा कही: "किसी व्यक्ति ने
अपनी दाख की बारी में अंजीर का एक पेड़ लगाया हुआ
था सो वह उस पर फल खोजता आया पर उसे कुछ नहीं
मिला। 7इस पर उसने माली से कहा, 'अब देख मैं तीन
साल से अंजीर के इस पेड़ पर फल ढूँढ़ता आ रहा हूँ किन्तु
मुझे एक भी फल नहीं मिला। सो इसे काट डाल। यह
धरती को यूँ ही व्यर्थ क्यों करता रहे?' 8माली ने उसे
उत्तर दिया, 'हे स्वामी, इसे इस साल तब तक छोड़ दे, जब
तक मैं इसके चारों तरफ गढ़ा खोद कर इसमें खाद
लगाऊँ। 9फिर यदि यह अगले साल फल दे तो अच्छा है
और यदि नहीं दे तो तू इसे काट सकता है।' "

सब्त के दिन स्त्री को निरोग करना

10किसी प्रार्थना सभा में सब्त के दिन यीशु जब उपदेश
दे रहा था 11तो वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसमें दुष्ट आत्मा
समाई हुई थी। जिसने उसे अठारह बरसों से पंगु बनाया
हुआ था। वह झुक कर कुबड़ी हो गयी थी और थोड़ी सी
भी सीधी नहीं हो सकती थी। 12यीशु ने उसे जब देखा तो
उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे स्त्री, तुझे अपने रोग
से छुटकारा मिला!" यह कहते हुए 13उसके सिर पर अपने
हाथ रख दिये। और वह तुरंत सीधी खड़ी हो गयी। वह
परमेश्वर की स्तुति करने लगी।

14यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग किया था,
इसलिये यहूदी–प्रार्थना–सभा के नेता ने क्रोध में भर कर
लोगों से कहा, "काम करने के लिए छ: दिन होते हैं सो
उन्हीं दिनों में आओ और अपने रोग दूर करवाओ पर
सब्त के दिन निरोग होने मत आओ।"

15प्रभु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "ओ कपटियो!
क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन अपने बैल या अपने
गधे को बाड़े से निकाल कर पानी पिलाने कहीं नहीं ले
जाता? 16अब यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है और जिसे

शैतान ने अट्ठारह साल से जकड़ रखा था, क्या इसको सब्त के दिन इसके बंधनों से मुक्त नहीं किया जाना चाहिये था?"
17जब उसने यह कहा तो उसका विरोध करने वाले सभी लोग लज्जा से गढ़ गये। उधर सारी भीड़ उन आश्चर्य पूर्ण कर्मों से जिन्हें उसने किया था, आनंदित हो रही थी।

स्वर्ग का राज्य कैसा है?

18सो उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य कैसा है और मैं उसकी तुलना किससे करूँ?
19वह सरसों के बीज जैसा है, जिसे किसी ने लेकर अपने बाग़ में बो दिया। वह बड़ा हुआ और एक पेड़ बन गया। फिर आकाश की चिड़ियाओं ने उसकी शाखाओं पर घोंसले बना लिये।"

20उसने फिर कहा, "परमेश्वर के राज्य की तुलना मैं किससे करूँ?
21यह उस ख़मीर के समान है जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन भाग आटे में मिलाया और वह समूचा आटा ख़मीर युक्त हो गया।"

सँकरा द्वार

22यीशु जब नगरों और गांवों से होता हुआ उपदेश देता यरूशलेम जा रहा था।
23तभी उससे किसी ने पूछा, "प्रभु, क्या थोड़े से ही व्यक्तियों का उद्धार होगा?" उसने उससे कहा,
24"सँकरे द्वार से प्रवेश करने को हर सम्भव प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि भीतर जाने का प्रयत्न बहुत से करेंगे पर जा नहीं पायेंगे।
25जब एक बार घर का स्वामी उठ कर द्वार बन्द कर देता है, तो तुम बाहर ही खड़े दरवाज़ा खटखटाते कहोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिये दरवाज़ा खोल दे!' किन्तु वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो?'
26तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे साथ खाया, तेरे साथ पिया, तूने हमारी गलियों में हमें शिक्षा दी।'
27पर वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो? अरे कुकर्मियो! मेरे पास से भाग जाओ।'
28तुम इब्राहीम, इज़्हाक, याकूब तथा अन्य सभी नबियों को परमेश्वर के राज्य में देखोगे किन्तु तुम्हें बाहर धकेल दिया जायेगा तो वहाँ बस रोना और दाँत पीसना ही होगा।
29फिर पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग परमेश्वर के राज्य में आ–आकर भोजन की चौकी पर अपना स्थान ग्रहण करेंगे।
30ध्यान रहे कि वहाँ जो अंतिम हैं, पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु की मृत्यु यरुशलेम में

31उसी समय यीशु के पास कुछ फ़रीसी आये और उससे कहा, "हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है, इसलिये यहाँ से कहीं और चला जा।"

32तब उसने उनसे कहा, "जाओ और उस लोमड़* से कहो, 'सुन मैं लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालूँगा, मैं आज भी चंगा करूँगा और कल भी। फिर तीसरे दिन मैं अपना काम पूरा करूँगा।'
33फिर भी मुझे आज, कल और परसों चलते ही रहना होगा। क्योंकि किसी नबी के लिये यह उचित नहीं होगा कि वह यरूशलेम से बाहर प्राण त्यागे।

34"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों की हत्या करता है और परमेश्वर ने जिन्हें तेरे पास भेजा है, उन पर पत्थर बरसाता है। मैंने कितनी ही बार तेरे लोगों को वैसे ही परस्पर इकट्ठा करना चाहा है जैसे एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे समेट लेती है। पर तूने नहीं चाहा।
35देख तेरे लिये तेरा घर परमेश्वर द्वारा बिसराया हुआ पड़ा है। मैं तुझे बताता हूँ तू मुझे उस समय तक फिर नहीं देखेगा जब तक वह समय न आ जाये जब तू कहेगा, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आ रहा है।'"

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

14 एक बार सब्त के दिन प्रमुख फ़रीसियों में से किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे बड़ी निकटता से उस पर आँख रखे हुए थे।
2वहाँ उसके सामने जलोदर से पीड़ित एक व्यक्ति था।
3यीशु ने यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, "सब्त के दिन किसी को निरोग करना उचित है या नही?"
4किन्तु वे चुप रहे। सो यीशु ने उस आदमी को लेकर चंगा कर दिया। और फिर उसे कहीं भेज दिया।
5फिर उसने उनसे पूछा, "यदि तुममें से किसी के पास अपना बेटा है या बैल है, वह कुँए में गिर जाता है तो क्या सब्त के दिन और भी तुम उसे तत्काल बाहर नहीं निकालोगे?"
6वे इस पर उससे तर्क नहीं कर सके।

लोमड़ लोमड़ी चालाक होती है, इसलिये यीशु ने यहाँ हेरोदेस को लोमड़ के रूप में सम्बोधित करके उसे धूर्त कहना चाहा है।

अपने को महत्त्व मत दो

7क्योंकि यीशु ने यह देखा कि अतिथि जन अपने लिये
बैठने को कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोज रहे थे, सो उसने
उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई। वह बोला: 8"जब तुम्हें
कोई विवाह भोज पर बुलाये तो वहाँ किसी आदरपूर्ण
स्थान पर मत बैठो। क्योंकि हो सकता है वहाँ कोई तुमसे
अधिक बड़ा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो। 9फिर
तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर तुमसे
कहेगा, 'अपना यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।' और फिर
लज्जा के साथ तुम्हें सबसे नीचा स्थान ग्रहण करना पड़ेगा।
10सो जब तुम्हें बुलाया जाता है तो जाकर सबसे नीचे का
स्थान ग्रहण करो जिससे जब तुम्हें आमंत्रित करने वाला
आएगा तो तुमसे कहेगा, 'हे मित्र, उठ ऊपर बैठ।' फिर
उन सब के सामने, जो तेरे साथ वहाँ अतिथि होंगे, तेरा
मान बढ़ेगा। 11क्योंकि हर कोई जो अपने आप को उठायेगा,
उसे नवा दिया जायेगा और जो अपने आप को नवायेगा,
उसे ऊँचा किया जायेगा।"

प्रतिफल

12फिर जिसने उसे आमन्त्रित किया था, वह उससे
बोला, "जब कभी तू कोई दिन या रात का भोज दे तो
अपने मित्रों, भाई बंदों, संबंधियों या धनी मानी पड़ोसियों
को मत बुला क्योंकि बदले में वे तुझे बुलायेंगे और इस
प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। 13बल्कि जब तू
कोई भोज दे तो दीन दुखियों, अपाहिजों, लँगड़ों और अंधों
को बुला। 14फिर क्योंकि उनके पास तुझे वापस लौटाने
को कुछ नहीं है, सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन जायेगा।
इसका प्रतिफल तुझे धर्मी लोगों के जी उठने पर दिया
जायेगा।"

बड़े भोज की दृष्टान्त कथा

15फिर उसके साथ भोजन कर रहे लोगों में से एक ने
यह सुनकर यीशु से कहा, "हर वह व्यक्ति धन्य है, जो
परमेश्वर के राज्य में भोजन करता है!"

16तब यीशु ने उससे कहा, "एक व्यक्ति किसी बड़े
भोज की तैयारी कर रहा था, उसने बहुत से लोगों को
न्योता दिया। 17फिर दावत के समय जिन्हें न्योता दिया
गया था, दास को भेजकर यह कहलवाया, 'आओ
क्योंकि अब भोजन तैयार है।' 18वे सभी एक जैसे
आनाकानी करने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक
खेत मोल लिया है, मुझे जाकर उसे देखना है, कृपया मुझे
क्षमा करें।' 19फिर दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल
मोल लिये हैं, मैं तो बस उन्हें परखने जा ही रहा हूँ, कृपया
मुझे क्षमा करें।' 20एक और भी बोला, 'मैंने पत्नी ब्याही
है, इस कारण मैं नहीं आ सकता।' 21सो जब वह सेवक
लौटा तो उसने अपने स्वामी को ये बातें बता दी। इस पर
उस घर का स्वामी बहुत क्रोधित हुआ और अपने सेवक
से कहा, 'शीघ्र ही नगर के गली कूँचों में जा और दीन-हीनों,
अपाहिजों, अंधों और लँगड़ों को यहाँ बुला ला।' 22उस
दास ने कहा, 'हे स्वामी, तुम्हारी आज्ञा पूरी कर दी गयी
है किन्तु अभी भी स्थान बचा है।' 23फिर स्वामी ने सेवक
से कहा, 'सड़कों पर और खेतों की मेढ़ों तक जाओ
और वहाँ से लोगों को आग्रह करके यहाँ बुला लाओ
ताकि मेरा घर भर जाये। 24और मैं तुमसे कहता हूँ जो
पहले बुलाये गये थे उनमें से एक भी मेरे भोज को न
चखे!'"

नियोजित बनो

25यीशु के साथ अपार जन समूह जा रहा था। वह
उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, 26"यदि मेरे पास कोई भी
आता है और अपने पिता, माता, पत्नी और बच्चों, अपने
भाइयों और बहनों और यहाँ तक कि अपने जीवन तक
से मुझ से अधिक प्रेम रखता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो
सकता! 27जो अपना क्रूस उठाये बिना मेरे पीछे चलता
है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। 28यदि तुममें से कोई
बुर्ज बनाना चाहे तो क्या वह पहले बैठ कर उसके मूल्य
का, यह देखने के लिये कि उसे पूरा करने के लिये उसके
पास काफ़ी कुछ है या नहीं, हिसाब-किताब नहीं
लगायेगा? 29नहीं तो वह नींव तो डाल देगा और उसे पूरा
न कर पाने से, जिन्होंने उसे शुरू करते देखा, सब उसकी
हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे। 30'अरे देखो इस व्यक्ति ने
बनाना प्रारम्भ तो किया, 'पर यह उसे पूरा नहीं कर
सका।'

31"या कोई राजा ऐसा होगा जो किसी दूसरे राजा के
विरोध में युद्ध छेड़ने जाये और पहले बैठ कर यह विचार
न करे कि अपने दस हज़ार सैनिकों के साथ क्या वह
बीस हज़ार सैनिकों वाले अपने विरोधी का सामना कर
भी सकेगा या नहीं। 32और यदि वह समर्थ नहीं होगा तो

उसका विरोधी अभी मार्ग में ही होगा तभी वह अपना प्रतिनिधि मंडल भेज कर शांति–संधि का प्रस्ताव करेगा।
33तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी जो अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं कर देता, मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

अपना प्रभाव मत खोओ

34"नमक उत्तम है पर यदि वह अपना स्वाद खो दे तो उसे किसमें डाला जा सकता है। 35न तो वह मिट्टी के लायक रहेगा और न खाद की कूड़ी के। लोग बस उसे यूँ ही फेंक देते हैं।

"जिसके पास सुनने को कान हैं, उसे सुनने दो।"

खोए हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त–कथाएँ

15 अब जब कर वसूलने वाले और पापी सभी उसे सुनने उसके पास आने लगे थे। 2तो फरीसी और यहूदी धर्म शास्त्री बड़बड़ाते हुए कहने लगे, "यह व्यक्ति तो पापियों का स्वागत करता है और उनके साथ खाता है।"

3इस पर यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कथा सुनाई: 4"मानों तुममें से किसी के पास सौ भेड़ें हैं और उनमें से कोई एक खो जाये तो क्या वह निन्यानबें भेड़ों को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा तब तक नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे पा न ले। 5फिर जब उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे प्रसन्नता के साथ अपने कन्धों पर उठा लेता है। 6और जब घर लौटता है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुलाकर उनसे कहता है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' 7मैं तुमसे कहता हूँ, इसी प्रकार किसी एक मन फिराने वाले पापी के लिये, उन निन्यानबें धर्मी पुरुषों से, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है, स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्द मनाया जाएगा।

8"या सोचो कोई औरत है जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो जाता है तो क्या वह दीपक जला कर घर को तब तक नहीं बुहारती रहेगी और सावधानी से नहीं खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाये? 9और जब वह उसे पा लेती है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुला कर कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का जो खो गया था, मिल गया है।' 10मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिये भी परमेश्वर के दूतों की उपस्थिति में वहाँ आनन्द मनाया जायेगा।"

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त–कथा

11फिर यीशु ने कहा: "एक व्यक्ति के दो बेटे थे। 12सो छोटे ने अपने पिता से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे बाँटे में आती है, उसे मुझे दे दे।' तो पिता ने उन दोनों को अपना धन बाँट दिया। 13अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था, कि छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति समेटी और किसी दूर देश को चल पड़ा। और वहाँ जँगलियों सा उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन बर्बाद कर डाला। 14जब उसका सारा धन समाप्त हो चुका था तभी उस देश में सभी ओर व्यापक भयानक अकाल पड़ा। सो वह अभाव में रहने लगा। 15इसलिये वह उस देश के किसी व्यक्ति के यहाँ जाकर मज़दूरी करने लगा उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने भेज दिया। 16वहाँ वह सोचता कदाचित् कैरब की वे फलियाँ ही पेट भरने को उसे मिल जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे एक फली तक नहीं दी। 17फिर जब उसके होश ठिकाने आये तो वह बोला, 'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे मज़दूर हैं जिनके पास खाने के बाद भी बचा रहता है। और मैं यहाँ भूखों मर रहा हूँ। 18सो मैं यहाँ से उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा: पिता जी, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर और तेरे विरुद्ध पाप किया है। 19अब आगे मैं तेरा बेटा कहलाने योग्य नहीं रहा हूँ। मुझे अपना दिहाड़ी का आदमी ही बना ले।' 20सो वह उठकर अपने पिता के पास चल दिया।

"अभी वह पर्याप्त दूरी पर ही था कि उसके पिता ने उसे देख लिया और उसके पिता को उस पर बहुत दया आयी। सो दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में समेट लिया और चूमा। 21पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैंने तुम्हारी दृष्टि में और स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, मैं अब और अधिक तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' 22किन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी से उत्तम वस्त्र निकाल लाओ और उन्हें इसे पहनाओ। इसके हाथ में अँगूठी और पैरों में चप्पल पहनाओ। 23कोई मोटा ताजा बछड़ा लाकर मारो और आओ उसे खाकर हम आनन्द मनायें। 24क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया था अब जैसे फिर

जीवित हो गया है। यह खो गया था, पर अब यह मिल गया है।' सो वे आनन्द मनाने लगे।

[25]"अब उसका बड़ा बेटा जो खेत में था, जब आया और घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने के स्वर सुने। [26]उसने अपने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है?' [27]सेवक ने उससे कहा, 'तेरा भाई आ गया है और तेरे पिता ने उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाकर एक मोटा सा बछड़ा कटवाया है!' [28]बड़ा भाई आग बबूला हो उठा, वह भीतर जाना तक नहीं चाहता था। सो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझाया बुझाया। [29]पर उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं बरसों से तेरी सेवा मैं करता आ रहा हूँ। मैंने तेरी किसी भी आज्ञा का विरोध नहीं किया, पर तूने मुझे तो कभी एक बकरी तक नहीं दी कि मैं अपने मित्रों के साथ कोई आनन्द मना सकता। [30]पर जब तेरा यह बेटा आया जिसने वेश्याओं में तेरा धन उड़ा दिया, उसके लिये तूने मोटा ताजा बछड़ा मरवाया।' [31]पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा है। [32]किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव मनाना चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था, जो फिर अब मिल गया है।' "

सच्चा धन

16 फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "एक धनी पुरुष था। उसका एक प्रबन्धक था उस प्रबन्धक पर लांछन लगाया गया कि वह उसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहा है। [2]सो उसने उसे बुलाया और कहा, 'तेरे विषय में मै यहं क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का लेखा जोखा दे क्योंकि अब आगे तू प्रबन्धक नहीं रह सकता।' [3]इस पर प्रबन्धक ने मन ही मन कहा, 'मेरा स्वामी मुझसे मेरा प्रबन्धक का काम छीन रहा है, सो अब मैं क्या करूँ? मुझमें अब इतनी शक्ति भी नहीं रही कि मैं खेतों में खुदाई-गुड़ाई का काम तक कर सकूँ और माँगने में मुझे लाज आती है। [4]ठीक, मुझे समझ आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये जिससे जब मैं प्रबन्धक के पद से हटा दिया जाऊँतो लोग अपने घरों में मेरा स्वागत सत्कार करें।' [5]सो उसने स्वामी के हर देनदार को बुलाया। पहले व्यक्ति से उसने पूछा, 'तुझे मेरे स्वामी का कितना देना है?' [6]उसने कहा, 'एक सौ माप जैतून का तेल।' इस पर वह उससे बोला, 'यह ले अपनी बही और बैठ कर जल्दी से इसे पचास कर दे।' [7]फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुझ पर कितनी देनदारी है?' उसने बताया, 'एक सौ भार गेहूँ।' वह उससे बोला, 'यह ले अपनी बही और सौ का अस्सी कर दे।' [8]इस पर उसके स्वामी ने उस बेईमान प्रबन्धक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था। सांसारिक व्यक्ति अपने जैसे व्यक्तियों से व्यवहार करने में आध्यात्मिक व्यक्तियों से अधिक चतुर हैं।

[9]"मैं तुमसे कहता हूँ सांसारिक धन-सम्पत्ति से अपने लिये मित्र बनाओ। क्योंकि जब धन-सम्पत्ति समाप्त हो जायेगी, वे अनन्त निवास में तुम्हारा स्वागत करेंगे। [10]वे लोग जिन पर थोड़े से के लिये विश्वास किया जा सकता है, उन पर अधिक के लिये भी विश्वास किया जायेगा और इसी तरह जो थोड़े से के लिए बेईमान हो सकता है वह अधिक के लिए भी बेइमान होगा। [11]इस प्रकार यदि तुम सांसारिक सम्पत्ति के लिये ही भरोसे योग्य नहीं रहे तो सच्चे धन के विषय में तुम पर कौन भरोसा करेगा? [12]जो किसी दूसरे का है, यदि तुम उसके लिये विश्वास के पात्र नहीं रहे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?

[13]"कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। वह या तो एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की उपासना एकसाथ नहीं कर सकते।"

प्रभु का विधि अटल है

[14]अब जब पैसे के पुजारी फरीसियों ने यह सब सुना तो उन्होंने यीशु की बहुत खिल्ली उड़ाई। [15]इस पर उसने उनसे कहा, "तुम वो हो जो लोगों को यह जताना चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो किन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है। लोग जिसे बहुत मूल्यवान समझते हैं, परमेश्वर के लिए वह तुच्छ है।

[16]"यूहन्ना तक व्यवस्था का विधि और नबियों की प्रमुखता रही। उसके बाद परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा है और हर कोई बड़ी तीव्रता से इसकी ओर खिंचा चला आ रहा है। [17]फिर भी स्वर्ग और धरती का डिग जाना तो सरल है

किन्तु व्यवस्था के विधि के एक-एक बिंदु की शक्ति
सदा अटल है।”

तलाक और पुर्नविवाह के बारे में परमेश्वर का नियम

18“वह हर कोई जो अपनी पत्नी को त्यागता है और
दूसरी को ब्याहता है, व्यभिचार करता है। ऐसे ही जो
अपने पति द्वारा त्यागी गयी, किसी स्त्री से ब्याह करता है,
वह भी व्यभिचार करता है।”

धनी पुरुष और लाज़र

19“अब देखो, एक व्यक्ति था जो बहुत धनी था। वह
बैंगनी रंग की उत्तम मलमल के वस्त्र पहनता था और हर
दिन विलासिता के जीवन का आनन्द लेता था। 20वहीं
लाजर नाम का एक दीन दुःखी उसके द्वार पर पड़ा रहता
था। उसका शरीर घावों से भरा हुआ था। 21उस धनी
पुरुष की जूठन से ही वह अपना पेट भरने को तरसता
रहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आते और उसके घावों
को चाट जाते। 22और फिर ऐसा हुआ कि वह दीन-हीन
व्यक्ति मर गया। सो स्वर्गदूतों ने ले जाकर उसे इब्राहीम की
गोद में बैठा दिया। फिर वह धनी पुरुष भी मर गया और
उसे दफ़ना दिया गया। 23नरक में तड़पते हुए उसने जब
आँखें उठा कर देखा तो इब्राहीम उसे बहुत दूर दिखाई
दिया किन्तु उसने लाज़र को उसकी गोद में देखा। 24तब
उसने पुकार कर कहा, ‘पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर
और लाजर को भेज कि वह पानी में अपनी उँगली डुबो
कर मेरी जीभ ठंडी कर दे, क्योंकि मैं इस आग में तड़प
रहा हूँ।’ 25किन्तु इब्राहीम ने कहा, ‘हे मेरे पुत्र, याद रख,
तूने तेरे जीवन काल में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा लीं जबकि
लाज़र को बुरी वस्तुएँ ही मिली। सो अब वह यहाँ आनन्द
भोग रहा है और तू यातना। 26और इस सब कुछ के
अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी
गयी है ताकि यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहे, वह जा
न सके और वहाँ से कोई यहाँ आ न सके।’ 27उस सेठ ने
कहा, ‘तो फिर हे पिता, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू
लाज़र को मेरे पिता के घर भेज दे 28क्योंकि मेरे पाँच
भाई हैं, वह उन्हें चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस यातना
के स्थान पर न आना पड़े।’ 29किन्तु इब्राहीम ने कहा,
‘उनके पास मूसा है और नबी हैं। उन्हें उनकी सुनने दे।’
30सेठ ने कहा, ‘नहीं, पिता इब्राहीम, यदि कोई मरे हुओं में
से उनके पास जाये तो वे मन फिराएंगे।’ 31इब्राहीम ने
उससे कहा, ‘यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो,
यदि कोई मरे हुओं में से उठकर उनके पास जाये तो भी
वे नहीं मानेंगे।’”

पाप और क्षमा

17 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “जिनसे लोग
भटकते हैं, ऐसी बातें तो होंगी ही किन्तु धिक्कार
है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वे बातें हों। 2उसके लिये
अधिक अच्छा यह होता कि बजाय इसके कि वह इन
छोटों में से किसी को पाप करने को प्रेरित कर सके,
उसके गले में चक्की का पाट लटका कर उसे सागर में
धकेल दिया जाता। 3सावधान रहो, यदि तुम्हारा भाई पाप
करे तो उसे डाँटो और यदि वह अपने किये पर पछताये तो
उसे क्षमा कर दो। 4यदि हर दिन वह तेरे विरुद्ध सात बार
पाप करे और सातों बार लौटकर तुझसे कहे कि मुझे
पछतावा है तो तू उसे क्षमा कर दे।”

तुम्हारा विश्वास कितना बड़ा है?

5इस पर शिष्यों ने प्रभु से कहा, “हमारे विश्वास की
बढ़ोतरी कर।”

6प्रभु ने कहा, “यदि तुममें सरसों के दाने जितना भी
विश्वास होता तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कह सकते
‘उखड़ जा और समुद्र में जा लग।’ और वह तुम्हारी बात
मान लेता।

उत्तम सेवक बनो

7“मान लो तुममें से किसी के पास एक दास है जो हल
चलाता या भेड़ों को चराता है। वह जब खेत से लौट कर
आये तो क्या उसका स्वामी उससे कहेगा, ‘तुरन्त आ और
खाना खाने को बैठ जा?’ 8किन्तु बजाय इसके क्या वह
उससे यह नहीं कहेगा, ‘मेरा भोजन तैयार कर, अपने
वस्त्र पहन और मेरे खाते व पीते मुझे परस, तब इसके
बाद तू भी खा पी सकता है?’ 9अपनी आज्ञा पूरी करने पर
क्या वह उस सेवक का धन्यवाद करता है। 10तुम्हारे
साथ भी ऐसा ही है। जो कुछ तुमसे करने को कहा गया है,
उसे कर चुकने के बाद तुम्हें कहना चाहिये, ‘हम दास हैं,
हम किसी बड़ाई के अधिकारी नहीं हैं। हमने तो बस
अपना कर्तव्य किया है।’”

आभारी रहो

11फिर जब यीशु यरूशलेम जा रहा था तो वह सामरिया
और गलील के बीच की सीमा के पास से निकला। 12जब
वह एक गाँव में जा रहा था तभी उसे दस कोढ़ी मिले। वे
कुछ दूरी पर खड़े थे। 13वे ऊँचे स्वर में पुकार कर बोले,
“हे यीशु! हे स्वामी! हम पर दया कर!”

14फिर जब उसने उन्हें देखा तो वह बोला, “जाओ
और अपने आप को याजकों को दिखाओ।” वे अभी जा
ही रहे थे कि वे कोढ़ से मुक्त हो गये। 15किन्तु उनमें से
एक ने जब यह देखा कि वह शुद्ध हो गया है, तो वह वापस
लौटा और ऊँचे स्वर में परमेश्वर की स्तुति करने लगा।
16वह मुँह के बल यीशु के चरणों में गिर पड़ा और
उसका आभार व्यक्त किया। और देखो, वह एक सामरी
था। 17यीशु ने उससे पूछा, “क्या सभी दस के दस कोढ़
से मुक्त नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ हैं? 18क्या इस
परदेसी को छोड़ कर उनमें से कोई भी परमेश्वर की
स्तुति करने वापस नहीं लौटा” 19फिर यीशु ने उससे
कहा, “खड़ा हो और चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा
किया है।”

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर ही है

20एक बार जब फरीसियों ने यीशु से पूछा, “परमेश्वर
का राज्य कब आयेगा?”

तो उसने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य ऐसे
प्रत्यक्ष रूप में नहीं आता। 21लोग यह नहीं कहेंगे, ‘वह
यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तो
तुम्हारे भीतर ही है।”

22किन्तु उसने शिष्यों को बताया, “ऐसा समय आयेगा
जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को भी
देखने को तरसोगे किन्तु, उसे देख नहीं पाओगे। 23और
लोग तुमसे कहेंगे, ‘देखो, ‘यहाँ!’ या देखो, ‘वहाँ!’ तुम वहाँ
मत जाना या उनका अनुसरण मत करना।”

जब यीशु लौटेगा

24“वैसे ही जैसे बिजली कौंध कर एक छोर से दूसरे
छोर तक आकाश को चमका देती है, वैसे ही मनुष्य का
पुत्र भी अपने दिन होगा। 25किन्तु पहले उसे बहुत सी
यातनाएँ भोगनी होंगी और इस पीढ़ी द्वारा वह निश्चय ही
नकार दिया जायेगा। 26वैसे ही जैसे नूह के दिनों में हुआ
था, मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। 27उस दिन तक
जब नूह ने नौका में प्रवेश किया, लोग खाते–पीते रहे,
ब्याह रचाते और विवाह में दिये जाते रहे। फिर जल प्रलय
आया और उसने सबको नष्ट कर दिया। 28इसी प्रकार
लूत के दिनों में भी ठीक ऐसे ही हुआ था। लोग खाते–पीते,
मोल लेते, बेचते खेती करते और घर बनाते रहे। 29किन्तु
उस दिन जब लूत सदोम से बाहर निकला तो आकाश से
अग्नि और गंधक बरसने लगे और वे सब नष्ट हो गये।
30उस दिन भी जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा, ठीक ऐसा
ही होगा।

31“उस दिन यदि कोई व्यक्ति छत पर हो और उसका
सामान घर के भीतर हो तो उसे लेने वह नीचे न उतरे।
इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खेत में हो तो वह पीछे न
लौटे। 32लूत की पत्नी को याद करो, 33जो कोई अपना
जीवन बचाने का प्रयत्न करेगा, वह उसे खो देगा और जो
अपना जीवन खोयेगा, वह उसे बचा लेगा। 34मैं तुम्हें बताता
हूँ, उस रात एक चारपाई पर जो दो मनुष्य होंगे, उनमें से
एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा। 35दो
स्त्रियाँ जो एक साथ चक्की पीसती होंगी, उनमें से एक
उठा ली जायेगी और दूसरी छोड़ दी जायेगी।” 36[‘दो पुरुष
जो खेत में होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और
दूसरा छोड़ दिया जायेगा।’]*

37फिर यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, “हे प्रभु, ऐसा
कहाँ होगा?”

उसने उनसे कहा, “जहाँ लोथ पड़ी होगी, गिद्ध भी वहीं
इकट्ठे होंगे।”

परमेश्वर अपने भक्त जनों की अवश्य सुनेगा

18 फिर उसने उन्हें यह बताने के लिए कि वे
निरन्तर प्रार्थना करते रहें और निराश न हों,
यह दृष्टान्त कथा सुनाई–2वह बोला: “किसी नगर में
एक न्यायाधीश हुआ करता था। वह न तो परमेश्वर से
डरता था और न ही मनुष्यों की परवाह करता था। 3उसी
नगर में, एक विधवा भी रहा करती थी। और वह उसके
पास बार बार आती और कहती, ‘देख, मुझे मेरे प्रति किए
गए अन्याय के विरुद्ध न्याय मिलना ही चाहिये।’ 4सो एक
लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश आनाकानी करता रहा

पद 36 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 36 जोड़ा गया
है।

पर आखिरकार उसने अपने मन में सोचा, 'चाहे मैं
न तो परमेश्वर से डरता हूँ और न लोगों की परवाह
करता हूँ। 5तो भी क्योंकि इस विधवा ने मेरे कान खा
डाले हैं, सो मैं देखूँगा कि उसे न्याय मिल जाये ताकि
यह मेरे पास बार-बार आकर कहीं मुझे ही न थका
डाले।'"

6फिर प्रभु ने कहा, "देखो उस दुष्ट न्यायाधीश ने क्या
कहा था। 7सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों पर
ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे रात दिन पुकारते रहते
हैं, न्याय मिले? क्या वह उनकी सहायता करने में देर
लगायेगा? 8मैं तुमसे कहता हूँ कि वह देखेगा कि उन्हें
न्याय मिल चुका है और शीघ्र ही मिल चुका है। फिर भी
जब मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस धरती पर
विश्वास को पायेगा?"

दीनता के साथ परमेश्वर की उपासना

9फिर यीशु ने उन लोगों के लिए भी जो अपने आप को
तो नेक मानते थे, और किसी को कुछ नहीं समझते, यह
दृष्टान्त कथा सुनाई: 10"मंदिर में दो व्यक्ति प्रार्थना करने
गये, एक फरीसी था और दूसरा कर वसूलने वाला। 11वह
फरीसी अलग खड़ा होकर यह प्रार्थना करने लगा, 'हे
परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों
जैसा डाकू, ठग और व्यभिचारी नहीं हूँ और न ही इस
कर वसूलने वाले जैसा हूँ। 12मैं सप्ताह में दो बार उपवास
रखता हूँ और अपनी समूची आय का दसवाँ भाग दान
देता हूँ।'

13"किन्तु वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था और
यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक नहीं उठा
रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, 'हे परमेश्वर, मुझ
पापी पर दया कर।' 14मैं तुम्हें बताता हूँ, यही मनुष्य नेक
ठहराया जाकर अपने घर लौटा, न कि वह दूसरा। क्योंकि
हर वह व्यक्ति जो अपने आप को बड़ा समझेगा, उसे छोटा
बना दिया जायेगा और जो अपने आप को दीन मानेगा,
उसे बड़ा बना दिया जायेगा।"

बच्चे स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं

15लोग अपने बच्चों तक को यीशु के पास ला रहे थे
कि वह उन्हें बस छू भर दे। किन्तु जब उसके शिष्यों ने
यह देखा तो उन्हें झिड़क दिया। 16किन्तु यीशु ने बच्चों
को अपने पास बुलाया और शिष्यों से कहा, "इन छोटे
बच्चों को मेरे पास आने दो, इन्हें रोको मत, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 17मैं सच्चाई के साथ
तुमसे कहता हूँ कि ऐसा कोई भी जो परमेश्वर के राज्य
को एक अबोध बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता, उसमें
कभी प्रवेश नहीं पायेगा!"

एक धनिक का यीशु से प्रश्न

18फिर किसी यहूदी नेता ने यीशु से पूछा, "उत्तम गुरु,
अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या करना
चाहिये?"

19यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है?
केवल परमेश्वर को छोड़ कर और कोई भी उत्तम नहीं
है। 20तू व्यवस्था के आदेशों को तो जानता है: 'व्यभिचार
मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत
दे, अपने पिता और माता का आदर कर।'"*

21वह यहूदी नेता बोला, "मैं इन सब बातों को अपने
लड़कपन से ही मानता आया हूँ।"

22यीशु ने जब यह सुना तो वह उससे बोला, "अभी भी
एक बात है जिसकी तुझ में कमी है। तेरे पास जो कुछ है,
सब कुछ को बेच डाल और फिर जो मिले, उसे गरीबों में
बाँट दे। इससे तुझे स्वर्ग में भण्डार मिलेगा। फिर आ और
मेरे पीछे हो ले।" 23सो जब उस यहूदी नेता ने यह सुना तो
वह बहुत दुःखी हुआ, क्योंकि उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति
थी।

24यीशु ने जब यह देखा कि वह बहुत दुःखी है तो उसने
कहा, "उन लोगों के लिये जिनके पास धन है, परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश कर पाना कितना कठिन है! 25हाँ,
किसी ऊँट के लिये सूई के नकुए से निकल जाना तो
सम्भव है पर किसी धनिक का परमेश्वर के राज्य में
प्रवेश कर पाना असंभव है!"

उद्धार किसका होगा

26वे लोग जिन्होंने यह सुना, बोले, "फिर भला उद्धार
किसका होगा?"

27यीशु ने कहा, "वे बातें जो मनुष्य के लिए असम्भव
हैं, परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।"

व्यभिचार मत ... आदर कर निर्गमन 20:12-26;
व्यवस्था. 5:16-20

[28]फिर पतरस ने कहा, “देख, हमारे पास जो कुछ
था, तेरे पीछे चलने के लिए हमने वह सब कुछ त्याग दिया
है।”

[29]तब यीशु उनसे बोला, “मैं सच्चाई के साथ तुमसे
कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने परमेश्वर के राज्य के
लिये घर–बार या पत्नी या भाई–बंधु या माता–पिता या
संतान का त्याग कर दिया हो, [30]और उसे इसी वर्तमान
युग में कई–कई गुणा अधिक न मिले और आने वाले
काल में वह अनन्त जीवन को न पा जाये।”

यीशु मर कर जी उठेगा

[31]फिर यीशु उन बारहों को एक ओर ले जाकर उनसे
बोला, “सुनो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के पुत्र
के विषय में नबियों द्वारा जो कुछ लिखा गया है, वह पूरा
होगा। [32]हाँ, वह विधर्मियों को सौंपा जायेगा, उसकी हँसी
उड़ाई जायेगी, उसे कोसा जायेगा और उस पर थूका
जायेगा। [33]फिर वे उसे पीटेंगे और मार डालेंगे और
तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।” [34]इनमें से कोई भी
बात वे नहीं समझ सके। यह कथन उनसे छिपा ही रह
गया। वे समझ नहीं सके कि वह किस विषय में बता रहा
था।

अंधे को आँखें

[35]यीशु जब यरीहो के पास पहुँच रहा था तो भीख माँगता
हुआ एक अंधा, वहीं राह किनारे बैठा था। [36]जब अन्धे ने
पास से लोगों के जाने की आवाज़ सुनी तो उसने पूछा,
“क्या हो रहा है?”

[37]सो लोगों ने उससे कहा, “नासरी यीशु यहाँ से जा रहा
है।”

[38]सो अंधा यह कहते हुए पुकार उठा, “दाऊद के बेटे
यीशु! मुझ पर दया कर।”

[39]वे जो आगे चल रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने को
कहा। किन्तु वह और अधिक पुकारने लगा “दाऊद के
पुत्र, मुझ पर दया कर!”

[40]यीशु रुक गया और उसने आज्ञा दी कि नेत्रहीन
को उसके पास लाया जाये। सो जब वह पास आया तो यीशु
ने उससे पूछा, [41]“तू क्या चाहता है? मैं तेरे लिये क्या
करूँ?”

उसने कहा, “हे प्रभु, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।”

[42]इस पर यीशु ने कहा, “तुझे ज्योति मिले, तेरे विश्वास
ने तेरा उद्धार किया है।”

[43]और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह परमेश्वर
की महिमा का बखान करते हुए यीशु के पीछे हो लिया।
जब सब लोगों ने यह देखा तो वे परमेश्वर की स्तुति करने
लगे।

जक्कई

19 और फिर यीशु यरीहो में प्रवेश करके जब
वहाँ से जा रहा था। [2]तो वहाँ जक्कई नाम का
एक व्यक्ति भी मौजूद था। वह कर वसूलने वालों का
मुखिया था। सो वह बहुत धनी था। [3]वह यह देखने का
जतन कर रहा था कि यीशु कौन है, पर भीड़ के कारण
वह देख नहीं पा रहा था क्योंकि उसका कद छोटा था।
[4]सो वह सब के आगे दौड़ता हुआ एक गूलर के पेड़ पर जा
चढ़ा ताकि, वह उसे देख सके क्योंकि यीशु को उसी
रास्ते से होकर निकलना था। [5]फिर जब यीशु उस स्थान
पर आया तो उसने ऊपर देखते हुए जक्कई से कहा,
“जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ क्योंकि मुझे आज तेरे
ही घर ठहरना है।”

[6]सो उसने झटपट नीचे उतर प्रसन्नता के साथ उसका
स्वागत किया। [7]जब सब लोगों ने यह देखा तो वे बड़बड़ाने
लगे और कहने लगे, “यह एक पापी के घर अतिथि बनने
जा रहा है!”

[8]किन्तु जक्कई खड़ा हुआ और प्रभु से बोला, “हे प्रभु,
देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा ग़रीबों को दे दूँगा
और यदि मैंने किसी का छल से कुछ भी लिया है तो उसे
चौगुना करके लौटा दूँगा!”

[9]यीशु ने उससे कहा, “इस घर पर आज उद्धार आया
है, क्योंकि यह व्यक्ति भी इब्राहीम की ही एक सन्तान है।
[10]क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने
और उसकी रक्षा के लिए आया है।”

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो

[11]वे जब इन बातों को सुन रहे थे तो यीशु ने उन्हें एक
और दृष्टान्त–कथा सुनाई क्योंकि यीशु यरुशलेम के
निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य तुरंत
ही प्रकट होने जा रहा है। [12]सो यीशु ने कहा, “एक
उच्च कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करके आने को

किसी दूर देश को गया। **13**सो उसने अपने दस सेवकों को
बुलाया और उनमें से हर एक को दस दस थैलियाँ दी और
उनसे कहा 'जब तक मैं लौटूँ, इनसे कोई व्यापार करो।'
14किन्तु उसके नगर के दूसरे लोग उससे घृणा करते थे,
इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह कहने को एक प्रतिनिधि
मंडल भेजा, 'हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर राज
करे।'

15"किन्तु उसने राजा की पदवी पा ली। फिर जब वह
वापस घर लौटा तो जिन सेवकों को उसने धन दिया था
उनको यह जानने के लिए कि उन्होंने क्या लाभ कमाया
है, उसने बुलावा भेजा। **16**पहला आया और बोला, 'हे स्वामी,
तेरी थैलियों से मैंने दस थैलियाँ और कमायी हैं।' **17**इस पर
उसके स्वामी ने उससे कहा, 'उत्तम सेवक, तूने अच्छा
किया। क्योंकि तू इस छोटी सी बात पर विश्वास के योग्य
रहा। तू दस नगरों का अधिकारी होगा।' **18**फिर दूसरा
सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, तेरी थैलियों से पाँच
थैलियाँ* और कमाई हैं।' **19**फिर उसने इससे कहा, 'तू
पाँच नगरों के ऊपर होगा।' **20**फिर वह अन्य सेवक आया
और कहा, 'हे स्वामी, यह रही तेरी थैली जिसे मैंने गमछे
में बाँध कर कहीं रख दिया था। **21**मैं तुझ से डरता रहा हूँ,
क्योंकि तू, एक कठोर व्यक्ति है। तूने जो रखा नहीं है तू
उसे भी ले लेता है और जो तूने बोया नहीं तू उसे काटता
है।' **22**स्वामी ने उससे कहा, 'अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरे अपने
ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो जानता
ही है कि मैं जो रखता नहीं हूँ, उसे भी ले लेने वाला और
जो बोता नहीं हूँ, उसे भी काटने वाला एक कठोर व्यक्ति
हूँ? **23**तो फिर तूने मेरा धन बैंक में क्यों नहीं जमा कराया
ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले लेता।'
24फिर पास खड़े लोगों से उसने कहा, 'इसकी थैली इससे
ले लो और जिसके पास दस थैलियाँ हैं उसे दे दो।' **25**इस
पर उन्होंने उससे कहा, हे स्वामी, उसके पास तो दस
थैलियाँ है। **26**स्वामी ने कहा, 'मैं तुमसे कहता हूँ प्रत्येक
उस व्यक्ति को जिसके पास है और अधिक दिया जायेगा
और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी
छीन लिया जायेगा। **27**किन्तु मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि
मैं उन पर शासन करूँ उनको यहाँ मेरे सामने लाओ और
मार डालो।'"

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

28ये बातें कह चुकने के बाद यीशु आगे चलता हुआ
यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा। **29**और फिर जब वह
बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट पहुँचा
जो जैतून की पहाड़ी कहलाती थी तो उसने अपने दो शिष्यों
को यह कह कर भेजा, **30**"यह जो गाँव तुम्हारे सामने है
वहाँ जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें गधे का एक
बछेरा वहाँ बँधा मिलेगा जिस पर किसी ने कभी सवारी
नहीं की होगी, उसे खोलकर यहाँ ले आओ **31**और यदि
कोई तुमसे पूछे तुम इसे क्यों खोल रहे हो, तो तुम्हें उससे
यह कहना है, 'प्रभु को चाहिये।'"

32फिर जिन्हें भेजा गया था, वे गये और यीशु ने उनको
जैसा बताया था, उन्हें वैसा ही मिला। **33**सो जब वे उस
बछेरे को खोल ही रहे थे, उसके स्वामी ने उनसे पूछा,
"तुम इस बछेरे को क्यों खोल रहे हो?"

34उन्होंने कहा, "यह प्रभु को चाहिये।" **35**फिर वे उसे
यीशु के पास ले आये। उन्होंने अपने वस्त्र उस बछेरे पर
डाल दिये और यीशु को उस पर बिठा दिया। **36**जब यीशु
जा रहा था तो लोग अपने वस्त्र सड़क पर बिछाते जा रहे
थे।

37और फिर जब वह जैतून की पहाड़ी से तलहटी के
पास आया तो शिष्यों की समूची भीड़ उन सभी अद्‌भुत
कार्यों के लिये, जो उन्होंने देखे थे, ऊँचे स्वर में प्रसन्नता
के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगी। वे पुकार उठे:

38 "'धन्य है वह राजा,
जो प्रभु के नाम में आता है;

भजन संहिता 118:26

स्वर्ग में शान्ति हो, और आकाश में
परम परमेश्वर की महिमा हो"

39भीड़ में खड़े हुए कुछ फरीसियों ने उससे कहा, "गुरु,
शिष्यों को मना कर।"

40सो उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ यदि ये चुप
हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।"

41जब उसने पास आकर नगर को देखा तो वह
उस पर रो पड़ा। **42**और बोला, "यदि तू बस आज यह
जानता कि शान्ति तुझे किस से मिलेगी किन्तु वह अभी
तेरी आँखों से ओझल है। **43**वे दिन तुझ पर आयेंगे जब
तेरे शत्रु चारों ओर बाधाएँ खड़ी कर देंगे। वे तुझे घेर लेंगे
और सब ओर से तुझ पर दबाव डालेंगे। **44**वे तुझे धूल में

थैलियाँ शाब्दिक मीना। एक मीना बराबर उन दिनों का
तीन महीने का वेतन।

मिला देंगे–तुझे और तेरे भीतर रहने वाले तेरे बच्चों को।
तेरी चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर
नहीं रहने देंगे। क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास आया, तूने
उस घड़ी को नहीं पहचाना।"

यीशु मंदिर में

45फिर यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और जो वहाँ
दुकानदारी कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा। 46उसने
उनसे कहा, "लिखा गया है, 'मेरा घर प्रार्थनागृह होगा'*
किन्तु तुमने इसे 'डाकुओं का अड्डा बना डाला है।'"

47सो अब तो वह हर दिन मन्दिर में उपदेश देने लगा।
प्रमुख याजक, यहूदी धर्मशास्त्री और मुखिया लोग उसे
मार डालने की ताक में रहने लगे। 48किन्तु उन्हें ऐसा
कर पाने का कोई अवसर न मिल पाया क्योंकि लोग
उसके वचनों को बहुत महत्त्व दिया करते थे।

यीशु से यहूदियों का एक प्रश्न

20 एक दिन जब यीशु मंदिर में लोगों को उपदेश
देते हुए सुसमाचार सुना रहा था तो प्रमुख याजक
और यहूदी धर्मशास्त्री बुजुर्ग यहूदी नेताओं के साथ उसके
पास आये। 2उन्होंने उससे पूछा, "हमें बता तू यह काम
किस अधिकार से कर रहा है? वह कौन है जिसने तुझे
यह अधिकार दिया है?"

3यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न
पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ 4यूहन्ना को बपतिस्मा देने का
अधिकार स्वर्ग से मिला था या मनुष्य से?"

5इस पर आपस में विचार विमर्श करते हुए उन्होंने
कहा, "यदि हम कहते हैं 'स्वर्ग से' तो यह कहेगा 'तो तुम
ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?' 6और यदि हम कहें
'मनुष्य से' तो सभी लोग हम पर पत्थर बरसायेंगे। क्योंकि
वे यह मानते हैं कि यूहन्ना एक नबी था।" 7सो उन्होंने
उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से मिला।

8फिर यीशु ने उनसे कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं
बताऊँगा कि यह कार्य मैं किस अधिकार से करता हूँ?"

परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है

9फिर यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कथा कहने लगा:
"किसी व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाकर उसे
कुछ किसानों को किराये पर चढ़ा दिया और वह एक
लम्बे समय के लिये कहीं चला गया। 10जब फसल उतारने
का समय आया, तो उसने एक सेवक को किसानों के
पास भेजा ताकि वे उसे अंगूरों के बगीचे के कुछ फल दे
दें। किन्तु किसानों ने उसे मार–पीट कर खाली हाथों
लौटा दिया। 11तब उसने एक दूसरा सेवक वहाँ भेजा।
किन्तु उन्होंने उसकी भी पिटाई कर डाली। उन्होंने उसके
साथ बहुत बुरा व्यवहार किया और उसे भी खाली हाथों
लौटा दिया। 12इस पर उसने एक तीसरा सेवक भेजा किन्तु
उन्होंने इसको भी घायल करके बाहर धकेल दिया। 13तब
बगीचे का स्वामी कहने लगा, 'मुझे क्या करना चाहिये?
मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा।' 14किन्तु किसानों ने जब
उसके बेटे को देखा तो आपस में सोच विचार करते हुए वे
बोले 'यह तो उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें
ताकि उत्तराधिकार हमारा हो जाये।' 15और उन्होंने उसे
बगीचे से बाहर खदेड़ कर मार डाला।

"तो फिर बगीचे का स्वामी उनके साथ क्या करेगा?
16वह आयेगा और उन किसानों को मार डालेगा तथा
अंगूरों का बगीचा औरों को सौंप देगा।"

उन्होंने जब यह सुना तो वे बोले, "ऐसा कभी न हो।"
17तब यीशु ने उनकी ओर देखते हुए कहा, "तो फिर यह
जो लिखा है उसका अर्थ क्या है:

'जिस पत्थर को कारीगरों ने
बेकार समझ लिया था वही
कोने का प्रमुख पत्थर बन गया?'

भजन संहिता 118:22

18हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा टुकड़े–टुकड़े
हो जायेगा और जिस पर वह गिरेगा चकना चूर हो
जायेगा।"

19उसी क्षण यहूदी धर्मशास्त्री और प्रमुख याजक कोई
रास्ता ढूँढकर उसे पकड़ लेना चाहते थे क्योंकि वे जान
गये थे कि उसने यह दृष्टान्त कथा उनके विरोध में कही
है। किन्तु वे लोगों से डरते थे।

यहूदी नेताओं की चाल

20सो वे सावधानी से उस पर नज़र रखने लगे। उन्होंने
ऐसे गुप्तचर भेजे जो ईमानदार होने का स्वांग रचते थे।
ताकि वे उसे उसकी कही किसी बात में फँसा कर राज्यपाल
की शक्ति और अधिकार के अधीन कर दें। 21सो उन्होंने

मेरा घर ... प्रार्थनागृह होगा यशा. 56:7

उससे पूछते हुए कहा, "गुरु, हम जानते हैं कि तू जो उचित
है वही कहता है और उसी का उपदेश देता है और न ही
तू किसी का पक्ष लेता है। बल्कि तू तो सच्चाई से परमेश्वर
के मार्ग की शिक्षा देता है। 22सो बता कैसर को हमांरा
कर चुकाना उचित है या नहीं चुकाना?"
23यीशु उनकी चाल को ताड़ गया था। सो उसने उनसे
कहा, 24"मुझे एक दीनारी दिखाओ, इस पर मूरत और
लिखावट किसके हैं?" उन्होंने कहा, "कैसर के।"
25इस पर उसने उनसे कहा, "तो फिर जो कैसर का
है, उसे कैसर को दो। और जो परमेश्वर का है उसे
परमेश्वर को।"
26वे उसके उत्तर पर चकित हो कर चुप रह गये और
उसने लोगों के सामने जो कुछ कहा था, उस पर उसे
पकड़ नहीं पाये।

यीशु को पकड़ने के लिये सदूकियों की चाल

27अब देखो कुछ सदूकी उसके पास आये। ये सदूकी वे
थे जो पुनरुत्थान को नहीं मानते। उन्होंने उससे पूछते हुए
कहा, 28"गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी
का भाई मर जाये और उसके कोई बच्चा न हो और
उसके पत्नी हो तो उसका भाई उस विधवा से ब्याह करके
अपने भाई के लिये, उससे संतान उत्पन्न करे। 29अब
देखो, सात भाई थे। पहले भाई ने किसी स्त्री से विवाह
किया और वह बिना किसी संतान के ही मर गया। 30फिर
दूसरे भाई ने उसे ब्याहा, 31और ऐसे ही तीसरे भाई ने। सब
के साथ एक जैसा ही हुआ। वे बिना कोई संतान छोड़े मर
गये। 32बाद में वह स्त्री भी मर गयी। 33अब बताओ,
पुनरुत्थान होने पर वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उससे
तो सातों ने ही ब्याह किया था?"
34तब यीशु ने उनसे कहा, "इस युग के लोग ब्याह
करते हैं और ब्याह करके विदा होते हैं। 35किन्तु वे लोग
जो उस युग के किसी भाग के योग्य और मरे हुओं में से
जी उठने के लिए ठहराये गये हैं, वे न तो ब्याह करेंगे और
न ही ब्याह करके विदा किये जायेंगे। 36और वे फिर
कभी मरेंगे भी नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं, वे
परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि वे पुनरुत्थान के पुत्र हैं।
37किन्तु मूसा तक ने झाड़ी से सम्बन्धित अनुच्छेद में
दिखाया है कि मरे हुए जिलाए गये हैं, जबकि उसने कहा
था प्रभु, 'इब्राहीम का परमेश्वर है, इसहाक का परमेश्वर
है और याकूब का परमेश्वर है'* 38वह मरे हुओं का
नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। वे सभी लोग जो
उसके हैं, जीवित हैं।"
39कुछ यहूदी धर्मशास्त्रियों ने कहा, "गुरु, अच्छा कहा।"
40क्योंकि फिर उससे कोई और प्रश्न पूछने का साहस
नहीं कर सका।

क्या मसीह दाऊद का पुत्र है?

41यीशु ने उनसे कहा, "वे कहते हैं कि 'मसीह दाऊद
का पुत्र है।' यह कैसे हो सकता है? 42क्योंकि भजन संहिता
की पुस्तक में दाऊद स्वयं कहता है कि

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा:
मेरे दाहिने हाथ बैठ,
43 जब तक कि मैं तेरे विरोधियों को
तेरे पैर रखने की चौकी न बना दूँ।'

भजन संहिता 110:1

44इस प्रकार जब दाऊद 'मसीह' को प्रभु कहता है तो
मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?"

यहूदी धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी

45सभी लोगों के सुनते उसने अपने अनुयायिओं से कहा,
46"यहूदी धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे लम्बे चोगे पहन
कर यहाँ-वहाँ घूमना चाहते हैं, हाट-बाजारों में वे आदर
के साथ स्वागत-सत्कार पाना चाहते हैं। और यहूदी प्रार्थना
सभाओं में उन्हें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आसन की लालसा
रहती है। दावतों में वे आदर-पूर्ण स्थान चाहते हैं। 47वे
विधवाओं के घर-बार लूट लेते हैं। दिखावे के लिये वे
लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हैं। इन लोगों को कठिन से
कठिन दण्ड भुगतना होगा।"

सच्चा दान

21 यीशु ने आँखें उठा कर देखा कि धनी लोग
दान पात्र में अपनी अपनी भेंट डाल रहे हैं।
2तभी उसने एक गरीब विधवा को उसमें ताँबे के दो छोटे
सिक्के डालते हुए देखा। 3उसने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ कि दूसरे सभी लोगों से इस गरीब विधवा ने अधिक दान
दिया है। 4यह मैं इसलिये कहता हूँ क्योंकि इन सब ही
लोगों ने अपने उस धन में से जिसकी उन्हें आवश्यकता

इब्राहीम का ... याकूब का परमेश्वर है निर्गमन 3:6

नहीं थी, दान दिया था किन्तु उसने गरीब होते हुए भी जीवित रहने के लिए जो कुछ उसके पास था, सब कुछ दे डाला।"

मन्दिर का विनाश

5कुछ लोग मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि वह सुंदर पत्थरों और परमेश्वर को अर्पित की गयी मनौती की भेंटों से कैसे सजाया गया है।

6तभी यीशु ने कहा, "ऐसा समय आयेगा जब, ये जो कुछ तुम देख रहे हो, उसमें एक पत्थर दूसरे पत्थर पर टिका नहीं रह पायेगा। वे सभी ढहा दिये जायेंगे।"

7वे उससे पूछते हुए बोले, "गुरु, ये बातें कब होंगी? और ये बातें जो होने वाली हैं, उसके क्या संकेत होंगे?"

8यीशु ने कहा, "सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें छल न ले। क्योंकि मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और कहेंगे, 'वह मैं हूँ' और 'समय आ पहुँचा है।' उनके पीछे मत जाना। 9परन्तु जब तुम युद्धों और दंगों की चर्चा सुनो तो डरना मत क्योंकि ये बातें तो पहले घटेंगी ही। और उनका अन्त तुरंत नहीं होगा।"

10उसने उनसे फिर कहा, "एक जाति दूसरी जाति के विरोध में खड़ी होगी और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में। 11बड़े-बड़े भूचाल आयेंगे और अनेक स्थानों पर अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ होंगी। आकाश में भयानक घटनाएँ घटेंगी और महान संकेत प्रकट होंगे।

12"किन्तु इन बातों के घटने से पहले वे तुम्हें बंदी बना लेंगे और तुम्हें यातनाएँ देंगे। वे तुम पर अभियोग चलाने के लिये तुम्हें यहूदी प्रार्थना सभागारों को सौंप देंगे और फिर तुम्हें जेल भेज दिया जायेगा। और फिर मेरे नाम के कारण वे तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के सामने ले जायेंगे। 13इससे तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देने का अवसर मिलेगा। 14इसलिये पहले से ही इसकी चिंता न करने का निश्चय कर लो कि अपना बचाव तुम कैसे करोगे। 15क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बुद्धि और ऐसे शब्द दूँगा कि तुम्हारा कोई भी विरोधी तुम्हारा सामना और तुम्हारा खण्डन नहीं कर सकेगा। 16किन्तु तुम्हारे माता-पिता, भाई बन्धु, सम्बन्धी और मित्र ही तुम्हें धोखे से पकड़वायेंगे और तुममें से कुछों को तो मरवा ही डालेंगे। 17मेरे कारण सब तुमसे बैर करेंगे। 18किन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल तक बांका नहीं होगा। 19तुम्हारी सहनशीलता, तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगी।"

यरूशलेम का नाश

20"अब देखो जब यरुशलेम को तुम सेनाओं से घिरा देखो तब समझ लेना कि उसका तहस नहस हो जाना निकट है। 21तब तो जो यहूदिया में हों, उन्हें चाहिये कि वे पहाड़ों पर भाग जायें और वे जो नगर के भीतर हों, बाहर निकल आयें और वे जो गांवों में हों उन्हें नगर में नहीं जाना चाहिये 22क्योंकि वे दिन दण्ड देने के होंगे। ताकि जो लिखी गयी हैं, वे सभी बातें पूरी हों। 23उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी और उनके लिये जो दूध पिलाती होंगी, वे दिन कितने भयानक होंगे। क्योंकि उन दिनों इस धरती पर बहुत बड़ी विपत्ति आयेगी और इन लोगों पर परमेश्वर का क्रोध होगा। 24वे तलवार की धार से गिरा दिये जायेंगे। और बंदी बना कर सब देशों में पहुँचा दिये जायेंगे। और यरूशलेम ग़ैर यहूदियों के पैरों तले तब तक रौंदा जायेगा जब तक कि ग़ैर यहूदियों का समय पूरा नहीं हो जाता।"

डरो मत

25"सूरज, चाँद और तारों में संकेत प्रकट होंगे और धरती पर की सभी जातियों पर विपतियाँ आयेंगी और वे सागर की उथल-पुथल से घबरा उठेंगे। 26लोग डर और संसार पर आने वाली विपदाओं के डर से मूर्छित हो जायेंगे क्योंकि स्वर्गिक शक्तियाँ कँपाई जायेंगी। 27और तभी वे मनुष्य के पुत्र को अपनी शक्ति और महान् महिमा के साथ एक बादल में आते हुए देखेंगे। 28अब देखो, ये बातें जब घटने लगें तो तुम खड़े होकर अपने सिर ऊपर उठा लेना। क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट आ रहा होगा।"

मेरा वचन अमर है

29फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही: "और सभी पेड़ों तथा अंजीर के पेड़ को देखो। 30उन में जैसे ही कोंपलें फूटती हैं, तुम अपने आप जान जाते हो कि गर्मी की ऋतु बस आ ही पहुँची है। 31वैसे ही तुम जब इन बातों को घटते देखो तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है।

32“मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें
घट नहीं लेतीं, इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा। 33धरती
और आकाश नष्ट हो जाएँगे, पर मेरा वचन सदा अटल
रहेगा।

सदा तैयार रहो

34“अपना ध्यान रखो, ताकि तुम्हारे मन कहीं डट कर
पीने पिलाने और सांसारिक चिंताओं से जड़ न हो जायें।
और वह दिन एक फंदे की तरह तुम पर अचानक न आ
पड़े। 35निश्चय ही वह इस समूची धरती पर रहने वालों
पर ऐसे ही आ गिरेगा। 36हर क्षण सतर्क रहो, और प्रार्थना
करो कि तुम्हें उन सभी बातों से, जो घटने वाली हैं, बचने
की शक्ति प्राप्त हो। और आत्म-विश्वास के साथ मनुष्य
के पुत्र के सामने खड़े हो सको।”

37प्रतिदिन वह मंदिर में उपदेश दिया करता था किन्तु,
रात बिताने के लिए वह हर साँझ जैतून नामक पहाड़ी पर
चला जाता था। 38सभी लोग भोर के तड़के उठते ताकि
मंदिर में उसके पास जाकर, उसे सुनें।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

22 अब फ़सह नाम का बिना ख़मीर की रोटी का
पर्व आने को था। 2उधर प्रमुख याजक तथा
यहूदी धर्मशास्त्री, क्योंकि लोगों से डरते थे इसलिये किसी
ऐसे रास्ते की ताक में थे जिससे वे यीशु को मार डालें।

यहूदा का षड़यन्त्र

3फिर इस्करियोती कहलाने वाले उस यहूदा में, जो
उन बारहों में से एक था, शैतान आ समाया। 4वह प्रमुख
याजकों और अधिकारियों के पास गया और उनसे यीशु
को वह कैसे पकड़वा सकता है, इस बारे में बातचीत की।
5वे बहुत प्रसन्न हुए और इसके लिये उसे धन देने को
सहमत हो गये। 6वह भी राज़ी हो गया और वह ऐसे अवसर
की ताक में रहने लगा जब भीड़-भाड़ न हो और वह उसे
उनके हाथों सौंप दे।

फ़सह की तैयारी

7फिर बिना ख़मीर की रोटी का वह दिन आया जब
फ़सह के मेमने की बली देनी होती है। 8सो उसने यह
कहते हुए पतरस और यूहन्ना को भेजा कि “जाओ और
हमारे लिये फ़सह का भोज तैयार करो ताकि हम उसे खा
सकें।”

9उन्होंने उससे पूछा, “तू हमसे उसकी तैयारी कहाँ
चाहता है?” 10उसने उनसे कहा, “तुम जैसे ही नगर में
प्रवेश करोगे तुम्हें पानी का घड़ा ले जाते हुए एक व्यक्ति
मिलेगा, उसके पीछे हो लेना और जिस घर में वह जाये
तुम भी चले जाना। 11और घर के स्वामी से कहना गुरु ने
तुझसे पूछा है कि वह अतिथि-कक्ष कहाँ है जहाँ मैं
अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व का भोजन कर सकूँ।
12फिर वह व्यक्ति तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर
सजा-सजाया एक बड़ा कमरा दिखायेगा, वहीं तैयारी
करना।”

13वे चल पड़े और वैसा ही पाया जैसा उसने उन्हें बताया
था। फिर उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया।

प्रभु का अन्तिम भोज

14फिर वह घड़ी आयी तब यीशु अपने शिष्यों के साथ
भोजन पर बैठा। 15उसने उनसे कहा, “यातना उठाने से
पहले यह फ़सह का भोजन तुम्हारे साथ करने की मेरी
प्रबल इच्छा थी। 16क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक
परमेश्वर के राज्य में यह पूरा नहीं हो लेता तब तक मैं
इसे दुबारा नहीं खाऊँगा।”

17फिर उसने कटोरा उठाकर धन्यवाद दिया और कहा,
“लो इसे आपस में बाँट लो। 18क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ
आज के बाद जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता
मैं कैसा भी दाखरस कभी नहीं पिऊँगा।”

19फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद दिया।
उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा, “यह मेरी देह है
जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी याद में ऐसा ही करना।”
20ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने कटोरा
उठाया और कहा, “यह प्याला मेरे उस रक्त के रूप में
एक नए वाचा का प्रतीक है जिसे तुम्हारे लिए उँडेला गया
है।”

यीशु का विरोधी कौन होगा?

21“किन्तु देखो, मुझे जो धोखे से पकड़वायेगा, उसका
हाथ यहीं मेज़ पर मेरे साथ है। 22क्योंकि मनुष्य का पुत्र
तो मारा ही जायेगा जैसा कि सुनिश्चित है किन्तु धिक्कार
है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा।”

23इस पर वे आपस में एक दूसरे से प्रश्न करने लगे, "उनमें से वह कौन हो सकता है जो ऐसा करने जा रहा है?"

सेवक बनो

24फिर उनमें यह बात भी उठी कि उनमें से सबसे बड़ा किसे समझा जाये। 25किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "ग़ैर यहूदियों के राजा उन पर प्रभुत्व रखते हैं और वे जो उन पर अधिकार का प्रयोग करते हैं, स्वयं को लोगों का उपकारक कहलवाना चाहते हैं। 26किन्तु तुम वैसे नहीं हो बल्कि तुममें तो सबसे बड़ा सबसे छोटे जैसा होना चाहिये और जो शासक है उसे सेवक के समान होना चाहिए। 27क्योंकि बड़ा कौन है: वह जो खाने की मेज़ पर बैठा है या वह जो उसे परोसता है? क्या वही नहीं जो मेज पर है किन्तु तुम्हारे बीच मैं वैसा हूँ जो परोसता है।

28"किन्तु तुम वे हो जिन्होंने मेरी परीक्षाओं में मेरा साथ दिया है। 29और मैं तुम्हें वैसे ही एक राज्य दे रहा हूँ जैसे मेरे परम पिता ने इसे मुझे दिया था। 30ताकि मेरे राज्य में तुम मेरी मेज़ पर खाओ और पिओ और इस्राएल की बारहों जनजातियों का न्याय करते हुए सिंहासनों पर बैठो।"

विश्वास बनाये रखो

31"शमौन, हे शमौन, सुन, तुम सब को गेहूँ की तरह फटकने के लिए शैतान ने चुन लिया है। 32किन्तु मैंने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास न डगमगाये और जब तू वापस आये तो तेरे बंधुओं की शक्ति बढ़े।"

33किन्तु शमौन ने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ जेल जाने और मरने तक को तैयार हूँ।"

34फिर यीशु ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि आज तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा जब तक तू तीन बार मना नहीं कर लेगा कि तू मुझे जानता है।"

यातना झेलने को तैयार रहो

35फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने तुम्हें जब बिना बटुए, बिना थैले या बिना चप्पलों के भेजा था तो क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी रही थी?"

उन्होंने कहा, "किसी वस्तु की नहीं।"

36उसने उनसे कहा, "किन्तु अब जिस किसी के पास भी कोई बटुआ है, वह उसे ले ले और वह थैला भी ले चले। और जिसके पास भी तलवार न हो, वह अपना चोगा तक बेच कर उसे मोल ले ले। 37क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि शास्त्र का यह लिखा मुझ पर निश्चय ही पूरा होगा:

'वह एक अपराधी समझा गया था'

यशायाह 53:12

हाँ मेरे सम्बन्ध में लिखी गयी यह बात पूरी होने पर आ रही है।"

38वे बोले, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।" इस पर उसने उनसे कहा, "बस बहुत हैं।"

प्रेरितों को प्रार्थना का आदेश

39फिर वह वहाँ से उठ कर नित्य प्रति की तरह जैतून–पर्वत चला गया। और उसके शिष्य भी उसके पीछे पीछे हो लिये। 40वह जब उस स्थान पर पहुँचा तो उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम्हें परीक्षा में न पड़ना पड़े।"

41फिर वह किसी पत्थर को जितनी दूर तक फेंका जा सकता है, लगभग उनसे उतनी दूर अलग चला गया। फिर वह घुटनों के बल झुका और प्रार्थना करने लगा, 42"हे परम पिता, यदि तेरी इच्छा हो तो इस प्याले को मुझसे दूर हटा किन्तु फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" 43तभी एक स्वर्गदूत वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान करने लगा। 44उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के समान धरती पर गिर रहा था। 45और जब वह प्रार्थना से उठकर अपने शिष्यों के पास आया तो उसने उन्हें शोक में थक कर सोते हुए पाया। 46सो उसने उनसे कहा, "तुम सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो कि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु को बंदी बनाना

47वह अभी बोल ही रहा था कि एक भीड़ आ जुटी। यहूदा नाम का एक व्यक्ति जो बारह शिष्यों में से एक था, उनकी अगुआई कर रहा था। वह यीशु को चूमने के लिये उसके पास आया।

48पर यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक चुम्बन के द्वारा मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वाने जा रहा है" 49जो घटने जा रहा था, उसे देखकर उसके

आसपास के लोगों ने कहा, “हे प्रभु, क्या हम तलवार के
वार करें?” 50और उनमें से एक ने तो प्रमुख याजक के
दास पर वार करके उसका दाहिना कान काट ही डाला।
51किन्तु यीशु ने तुरंत कहा, “उन्हें यह भी करने दो।”
फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर दिया।
52फिर यीशु ने उस पर चढ़ाई करने आये प्रमुख याजकों,
मन्दिर के अधिकारियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं से कहा,
“क्या तुम तलवारें और लाठियाँ ले कर किसी डाकू का
सामना करने निकले हो? 53मंदिर में मैं हर दिन तुम्हारे
ही साथ था, किन्तु तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। पर यह
समय तुम्हारा है। अंधकार के शासन का काल।”

पतरस का इन्कार

54उन्होंने उसे बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये। फिर
वे उसे प्रमुख याजक के घर ले गये। पतरस कुछ दूरी पर
उसके पीछे पीछे आ रहा था। 55आँगन के बीच उन्होंने
आग सुलगाई और एक साथ नीचे बैठ गये। पतरस भी
वहीं उन्हीं में बैठा था। 56आग के प्रकाश में एक दासी ने
उसे वहाँ बैठे देखा। उसने उस पर दृष्टि गढ़ाते हुए कहा,
“यह आदमी तो उसके साथ भी था।”
57किन्तु पतरस ने इन्कार करते हुए कहा, “हे स्त्री, मैं
उसे नहीं जानता।” 58थोड़ी देर बाद एक दूसरे व्यक्ति ने
उसे देखा और कहा, “तू भी उन्हीं में से एक है।” किन्तु
परतरस बोला, “भले आदमी, मैं वह नहीं हूँ।”
59कोई लगभग एक घड़ी बीती होगी कि कोई और भी
बलपूर्वक कहने लगा, “निश्चय ही यह व्यक्ति उसके साथ
भी था। क्योंकि देखो यह गलील वासी भी है।”
60किन्तु पतरस बोला, “भले आदमी, मैं नहीं जानता तू
किसके बारे में बात कर रहा है।”

उसी घड़ी, वह अभी बातें कर ही रहा था कि एक मुर्गे
ने बाँग दी। 61और प्रभु ने मुड़ कर पतरस पर दृष्टि डाली।
तभी पतरस को प्रभु का वह वचन याद आया जो उसने
उससे कहा था: “आज मुर्गे के बाँग देने से पहले तू मुझे
तीन बार नकार चुकेगा।” 62तब वह बाहर चला आया
और फूट-फूट कर रो पड़ा।

यीशु का उपहास

63जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड़ रखा था वे उसका
उपहास करने और उसे पीटने लगे। 64उसकी आँखों पर
पट्टी बाँध दी और उससे यह कहते हुए पूछने लगे कि
“बता वह कौन है जिसने तुझे मारा?” 65उन्होंने उसका
अपमान करने के लिए उससे और भी बहुत सी बातें
कहीं।

यीशु यहूदी नेताओं के सामने

66जब दिन हुआ तो प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों
समेत लोगों के बुज़ुर्ग नेताओं की एक सभा हुई। फिर वे
लोग उसे अपनी महा सभा में ले गये। 67उन्होंने पूछा, “हमें
बता क्या तू मसीह है?”

यीशु ने उनसे कहा, “यदि मैं तुमसे कहूँ तो तुम मेरा
विश्वास नहीं करोगे। 68और यदि मैं पूछूँ तो तुम उत्तर नहीं
दोगे। 69किन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान
परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठाया जायेगा।”
70वे सब बोले, “तब तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र
है?”
71फिर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और प्रमाण की
आवश्यकता क्यों है? हमने स्वयं इसके अपने मुँह से यह
सुन तो लिया है।”

पिलातुस द्वारा यीशु से पूछताछ

23 फिर उनकी सारी पंचायत उठ खड़ी हुई और
वे उसे पिलातुस के सामने ले गये। 2वे उस पर
अभियोग लगाने लगे। उन्होंने कहा, “हमने हमारे लोगों
को बहकाते हुए इस व्यक्ति को पकड़ा है। यह कैसर को
कर चुकाने का विरोध करता है और कहता है यह स्वयं
मसीह है, एक राजा।”
3इस पर पिलातुस ने यीशु से पूछा, “क्या तू यहूदियों का
राजा है?”

यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू ही तो कह रहा है, मैं वही
हूँ।”
4इस पर पिलातुस ने प्रमुख याजकों और भीड़ से कहा,
“मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का कोई आधार दिखाई
नहीं देता।”
5पर वे यह कहते हुए दबाव डालते रहे, “इसने समूचे
यहूदिया में लोगों को अपने उपदेशों से भड़काया है। यह
इसने गलील में आरंभ किया था और अब समूचा मार्ग
पार करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

6पिलातुस ने यह सुनकर पूछा, “क्या यह व्यक्ति गलील
का है?” 7फिर जब उसको यह पता चला कि वह
हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के अधीन है तो उसने उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया जो उन दिनों यरुशलेम में ही
था। 8सो हेरोदेस ने जब यीशु को देखा तो वह बहुत प्रसन्न
हुआ क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाह रहा था।
क्योंकि वह उसके विषय में सुन चुका था और उसे कोई
अद्‌भुत कर्म करते हुए देखने की आशा रखता था। 9उसने
यीशु से अनेक प्रश्न पूछे किन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर
नहीं दिया। 10प्रमुख याजक और यहूदी धर्म शास्त्री वहीं
खड़े थे और वे उस पर तीखे ढँग के साथ दोष लगा रहे थे।
11हेरोदेस ने भी अपने सैनिकों समेत उसके साथ
अपमानपूर्ण व्यवहार किया और उसकी हँसी उड़ाई। फिर
उन्होंने उसे एक उत्तम चोगा पहना कर पिलातुस के पास
वापस भेज दिया। 12उस दिन हेरोदेस और पिलातुस एक
दूसरे के मित्र बन गये। इससे पहले तो वे एक दूसरे के शत्रु
थे।

यीशु को मरना होगा

13फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी नेताओं और
लोगों को एकसाथ बुलाया। 14उसने उनसे कहा, “तुम
इसे लोगों को भटकाने वाले एक व्यक्ति के रूप में मेरे
पास लाये हो। और मैंने यहाँ अब तुम्हारे सामने ही इसकी
जाँच पड़ताल की है और तुमने इस पर जो दोष लगाये हैं
उनका न तो मुझे कोई आधार मिला है और 15न ही
हेरोदेस को क्योंकि उसने इसे वापस हमारे पास भेज दिया
है। जैसा कि तुम देख सकते हो इसने ऐसा कुछ नहीं किया
है कि यह मौत का भागी बने। 16इसलिये मैं इसे कोड़े
मरवा कर छोड़ दूँगा।” 17 [“पिलातुस को फ़सह पर्व पर
हर साल जनता के लिये कोई एक बंदी छोड़ना पड़ता
था।”]*

18किन्तु वे सब एक साथ चिल्लाये “इस आदमी को ले
जाओ। हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो।” 19(बरअब्बा
को शहर में मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में जेल में
डाला हुआ था।)

20पिलातुस यीशु को छोड़ देना चाहता था, सो उसने
उन्हें फिर समझाया। 21पर वे नारा लगाते रहे, “इसे क्रूस
पर चढ़ा दो, इसे क्रूस पर चढ़ा दो।”

22पिलातुस ने उनसे तीसरी बार पूछा, “किन्तु इस व्यक्ति
ने क्या अपराध किया है? मुझे इसके विरोध में कुछ नहीं
मिला है जो इसे मृत्यु दण्ड का भागी बनाये। इसलिए मैं
कोड़े लगवाकर इसे छोड़ दूँगा।”

23पर वे ऊँचे स्वर में नारे लगा लगा कर माँग कर रहे
थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाये। और उनके नारों का
कोलाहल इतना बढ़ गया कि 24पिलातुस ने निर्णय दे दिया
कि उनकी माँग मान ली जाये। 25पिलातुस ने उस व्यक्ति
को छोड़ दिया जिसे मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में
जेल में डाला गया था (यह वही था जिसके छोड़ देने की वे
माँग कर रहे थे।) और यीशु को उनके हाथों में सौंप दिया
कि वे जैसा चाहें, करें।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

26जब वे यीशु को ले जा रहे थे तो उन्होंने कुरैन के
रहने वाले शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो अपने खेतों
से आ रहा था, पकड़ लिया और उस पर क्रूस लाद कर
उसे यीशु के पीछे पीछे चलने को विवश किया।

27लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे चल रही थी।
इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थी जो उसके लिये रो रही थीं
और विलाप कर रही थीं। 28यीशु उनकी तरफ मुड़ा और
बोला, “यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत बिलखो
बल्कि स्वयं अपने लिये और अपनी संतान के लिये
विलाप करो। 29क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब लोग
कहेंगे, ‘वे स्त्रियाँ धन्य हैं, जो बाँझ हैं और धन्य हैं, वे
कोख जिन्होंने किसी को कभी जन्म ही नहीं दिया। वे
स्तन धन्य हैं जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।’ 30फिर वे
पर्वतों से कहेंगे ‘हम पर गिर पड़ो’ और पहाड़ियों से
कहेंगे ‘हमें ढक लो’ 31क्योंकि लोग जब पेड़ हरा है, उसके
साथ तब ऐसा करते हैं तो जब पेड़ सूख जायेगा तब क्या
होगा?”

32दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे, उसके
साथ मृत्यु–दण्ड के लिये बाहर ले जाये जा रहे थे।
33फिर जब वे उस स्थान पर आये जो खोपड़ी कहलता है
तो उन्होंने उन दोनों अपराधियों के साथ उसे क्रूस पर
चढ़ा दिया। एक अपराधी को उसके दाहिनी ओर, दूसरे

पद 17 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 17 जोड़ा गया है।

को बाँई ओर। 34इस पर यीशु बोला, "हे परम पिता, इन्हें
क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे
हैं।" फिर उन्होंने पासा फेंक कर उसके कपड़ों का बटवारा
कर लिया। 35वहाँ खड़े लोग देख रहे थे। यहूदी नेता उसका
उपहास करते हुए बोले, 'इसने दूसरों का उद्धार किया है।
यदि यह परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है तो इसे अपने
आप अपनी रक्षा करने दो।"

36सैनिकों ने भी आकर उसका उपहास किया। उन्होंने
उसे सिरका पीने को दिया 37और कहा, "यदि तू यहूदियों
का राजा है तो अपने आपको बचा ले।" 38उसके ऊपर यह
सूचना अंकित कर दी गई थी "यह यहूदियों का राजा है।"
39वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने उसका
अपमान करते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? हमें और
अपने आप को बचा ले।"

40किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते
हुए कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? तुझे भी वही
दण्ड मिल रहा है 41किन्तु हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण है
क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिये जो हमें मिलना
चाहिये था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने तो कुछ भी
बुरा नहीं किया है!" 42फिर वह बोला, "यीशु जब तू अपने
राज्य में आये तो मुझे याद रखना।"
43यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ, आज
ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

यीशु का देहान्त

44उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी तीन बजे तक
समूची धरती पर गहरा अंधकार छा गया। 45सूरज भी
नहीं चमक रहा था। उधर मंदिर में परदे के फट कर दो
टुकड़े हो गये। 46यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, "हे परम
पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।" यह कहकर
उसने प्राण छोड़ दिये।

47जब रोमी सेना नायक ने, जो कुछ घटा था, उसे देखा
तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने कहा, "यह निश्चय
ही एक अच्छा मनुष्य था!"

48जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो कुछ हुआ
था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते लौट गये। 49किन्तु
वे सभी जो उसे जानते थे, उन स्त्रियों समेत, जो गलील से
उसके पीछे पीछे आ रहीं थीं, इन बातों को देखने कुछ दूरी
पर खड़े थे।

अरमतियाह का यूसुफ़

50अब वहीं यूसुफ नाम का एक पुरुष था जो यहूदी
महासभा का एक सदस्य था। वह एक अच्छा धर्मी पुरुष
था। 51वह उनके निर्णय और उसे काम में लाने के लिये
सहमत नहीं था। वह यहूदियों के एक नगर अरमतियाह
का निवासी था। वह परमेश्वर के राज्य की बाट जोहा
करता था। 52यह व्यक्ति पिलातुस के पास गया और यीशु
के शव की याचना की। 53उसने शव को क्रूस पर से नीचे
उतारा और सन के उत्तम रेशों के बने कपड़े में उसे लपेट
दिया। फिर उसने उसे चट्टान में काटी गयी एक कब्र में
रख दिया, जिसमें पहले कभी किसी को नहीं रखा गया
था। 54वह शुक्रवार का दिन था और सब्त का प्रारम्भ
होने को था।

55वे स्त्रियाँ जो गलील से यीशु के साथ आई थी, यूसुफ
के पीछे हो लीं। उन्होंने वह कब्र देखी, और देखा कि
उसका शव कब्र में कैसे रखा गया। 56फिर उन्होंने घर
लौट कर सुंगधित सामग्री और लेप तैयार किये।

सब्त के दिन व्यवस्था के विधि के अनुसार उन्होंने
आराम किया।

यीशु का फिर से जी उठना

24 सप्ताह के पहले दिन अलख सुबह वे स्त्रियाँ
कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने
तैयार किया था, लेकर आयीं। 2उन्हें कब्र पर से पत्थर
लुढ़का हुआ मिला। 3सो वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें
वहाँ प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। 4जब वे इस पर अभी
उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र
पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। 5डर के मारे उन्होंने धरती
की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों ने
उनसे कहा "जो जीवित है, उसे तुम मुर्दो के बीच क्यों
ढूँढ रही हो? 6वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है। याद
करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने तुमसे क्या
कहा था। 7उसने कहा था कि 'मनुष्य के पुत्र का पापियों
के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा
दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर
देना निश्चित है।" 8तब उन स्त्रियों को उसके शब्द याद हो
आये।

9वे कब्र से लौट आयीं और उन्होने ये सब बातें उन
ग्यारहों और अन्य सभी को बतायीं। 10ये स्त्रियाँ थीं

मरियम–मगदलीनी, योअन्ना और याकूब की माता, मरियम। वे तथा उनके साथ की दूसरी स्त्रियाँ इन बातों को प्रेरितों से कह रहीं थीं 11पर उनके शब्द प्रेरितों को व्यर्थ से जान पड़े। सो उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया। 12किन्तु पतरस खड़ा हुआ और कब्र की तरफ़ दौड़ आया। उसने नीचे झुक कर देखा पर उसे सन के उत्तम रेशों से बने कफन के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया था। फिर अपने मन ही मन जो कुछ हुआ था, उस पर अचरज करता हुआ वह चला गया।

इम्माऊस के मार्ग पर

13उसी दिन उसके शिष्यों में से दो, यरूशलेम से कोई सात मील दूर बसे इम्माऊस नाम के गाँव को जा रहे थे। 14जो घटनाएँ घटीं थीं, उन सब पर वे आपस में बातचीत कर रहे थे। 15जब वे उन बातों पर चर्चा और सोच विचार कर रहे थे तभी स्वयं यीशु वहाँ आ उपस्थित हुआ और उनके साथ–साथ चलने लगा। 16किन्तु उन्हें उसे पहचानने नहीं दिया गया। 17यीशु ने उनसे कहा, "चलते चलते एक दूसरे से ये तुम किन बातों की चर्चा कर रहे हो?"

वे चलते हुए रुक गये। वे बड़े दुखी दिखाई दे रहे थे। 18उनमें से किलयुपास नाम के एक व्यक्ति ने उससे कहा, "यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला ही ऐसा व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें घटी हैं, उन्हें नहीं जानता।"

19यीशु ने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?" उन्होंने उससे कहा, "सब नासरी यीशु के बारे में हैं।

यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जो किया और कहा उससे परमेश्वर और सभी लोगों के सामने यह दिखा दिया कि वह एक महान् नबी था। 20और हम इस बारे में बातें कर रहे थे कि हमारे प्रमुख याजकों और शासकों ने उसे कैसे मृत्यु दण्ड देने के लिए सौंप दिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। 21हम आशा रखते थे कि यही वह था जो इस्राएल को मुक्त कराता। और इस सब कुछ के अतिरिक्त इस घटना को घटे यह तीसरा दिन है। 22और हमारी टोली की कुछ स्त्रियों ने हमें अचम्भे में डाल दिया है। आज भोर के तड़के वे कब्र पर गयीं। 23किन्तु उन्हें उसका शव नहीं मिला। वे लौटीं और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। 24फिर हम में से कुछ कब्र पर गये और जैसा स्त्रियों ने बताया था, उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने उसे नहीं देखा।"

25तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम कितने मूर्ख हो और नबियों ने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास करने में कितने मंद हो। 26क्या मसीह के लिये यह आवश्यक नहीं था कि वह इन यातनाओं को भोगे और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करे?" 27और इस तरह मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों तक और समूचे शास्त्रों में उसके बारे में जो कहा गया था, उसने उसकी व्याख्या करके उन्हें समझाया।

28वे जब उस गाँव के पास आये, जहाँ जा रहे थे, यीशु ने ऐसे बर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो। 29किन्तु उन्होंने उससे बलपूर्वक आग्रह करते हुए कहा, "हमारे साथ रुक जा क्योंकि लगभग साँझ हो चुकी है और अब दिन ढल चुका है।" सो वह उनके साथ ठहरने भीतर आ गया।

30जब उनके साथ वह खाने की मेज पर था तभी उसने रोटी उठाई और धन्यवाद किया। फिर उसे तोड़ कर जब वह उन्हें दे रहा था 31तभी उनकी आँखें खोल दी गयी और उन्होंने उसे पहचान लिया। किन्तु वह उनके सामने से अदृश्य हो गया। 32फिर वे आपस में बोले, "राह में जब वह हमसे बातें कर रहा था और हमें शास्त्रों को समझा रहा था तो क्या हमारे हृदय के भीतर आग सी नहीं भड़क उठी थी?"

33फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम को चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे लोग उनके साथ इकट्ठे मिले, 34जो कह रहे थे, "हे प्रभु, वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को दर्शन दिया है।"

35फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका ब्योरा दिया और बताया कि जब उसने रोटी के टुकड़े लिये थे, तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान लिया था।"

यीशु का अपने शिष्यों के सामने प्रकट होना

36अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, "तुम्हें शान्ति मिले।"

37किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे। उन्होंने सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों।

38किन्तु वह उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं?

39मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो
कि किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा
कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।"

40यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें दिखाये।
41किन्तु अपने आनन्द के कारण वे अब भी इस पर
विश्वास नहीं कर सके। वे भौंचक्के थे सो यीशु ने उनसे
कहा, "यहाँ तुम्हारे पास कुछ खाने को है" 42उन्होंने पकाई
हुई मछली का एक टुकड़ा उसे दिया। 43और उसने उसे
लेकर उनके सामने ही खाया।

44फिर उसने उनसे कहा, "ये बातें वे हैं जो मैंने तुमसे
तब कहीं थीं, जब मैं अभी तुम्हारे साथ था। हर वह बात
जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में, नबियों की पुस्तकों
तथा भजनावलियों में लिखी हैं, पूरी होनी ही है।"

45फिर पवित्र शास्त्रों को समझने के लिये उसने उनकी
बुद्धि के द्वार खोल दिये। 46और उसने उनसे कहा, "यह
वही है, जो लिखा है कि मसीह यातना भोगेगा और तीसरे
दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। 47और पापों की क्षमा के
लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से आरंभ होकर
सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। 48तुम इन बातों के
साक्षी हो। 49और अब मेरे परम पिता ने मुझसे जो प्रतिज्ञा
की है, उसे मैं तुम्हारे लिये भेजूँगा। किन्तु तुम्हें इस नगर
में उस समय तक ठहरे रहना होगा, जब तक तुम स्वर्ग
की शक्ति से युक्त न हो जाओ।"

यीशु की स्वर्ग को वापसी

50यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया। और
उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। 51उन्हें आशीर्वाद
देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में
उठा लिया गया। 52तब उन्होंने उसकी आराधना की और
असीम आनन्द के साथ वे यरूशलेम लौट आये। 53और
मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए वे अपना समय
बिताने लगे।

यूहन्ना

यीशु का आना

1 आदि में शब्द* था। शब्द परमेश्वर के साथ था।
शब्द ही परमेश्वर था। 2 यह शब्द ही आदि में
परमेश्वर के साथ था। 3 दुनिया की हर वस्तु उसी से उपजी।
उसके बिना किसी की भी रचना नहीं हुई। 4 उसी में जीवन
था और वह जीवन ही दुनिया के लोगों के लिये प्रकाश
(ज्ञान, भलाई) था। 5 प्रकाश अँधेरे में चमकता है पर अँधेरा
उसे समझ नहीं पाया।

6 परमेश्वर का भेजा हुआ एक मनुष्य आया जिसका
नाम यूहन्ना था। 7 वह एक साक्षी के रूप में आया था
ताकि वह लोगों को प्रकाश के बारे में बता सके। जिससे
सभी लोग उसके द्वारा उस प्रकाश में विश्वास कर सकें।
8 वह खुद प्रकाश नहीं था बल्कि वह तो लोगों को प्रकाश
की साक्षी देने आया था। 9 उस प्रकाश की, जो सच्चा था,
जो हर मनुष्य को ज्ञान की ज्योति देगा, जो धरती पर आने
वाला था।

10 वह इस जगत में ही था और यह जगत उसी के द्वारा
अस्तित्व में आया पर जगत ने उसे पहचाना नहीं। 11 वह
अपने घर आया था और उसके अपने ही लोगों ने उसे
अपनाया नहीं। 12 पर जिन्होंने उसे अपनाया उन सबको
उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया।
13 परमेश्वर की संतान के रूप में वह कुदरती तौर पर न
तो लहू से पैदा हुआ था, न किसी शारीरिक इच्छा से
और न ही माता–पिता की योजना से। बल्कि वह परमेश्वर
से उत्पन्न हुआ।

14 उस आदि शब्द ने देह धारण कर हमारे बीच निवास
किया। हमने परम पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में उसकी
महिमा का दर्शन किया। वह करुणा और सत्य से पूर्ण था।
15 यूहन्ना ने उसकी साक्षी दी और पुकार कर कहा यह
वही है जिसके बारे में मैंने कहा था 'वह जो मेरे बाद आने
वाला है, मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे
पहले मौजूद था।'

16 उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से हम सबने
अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये। 17 हमें व्यवस्था का विधान
देने वाला मूसा था पर करुणा और सत्य हमें यीशु मसीह से
मिले। 18 परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा किन्तु
परमेश्वर के एकमात्र पुत्र ने, जो सदा परम पिता के साथ
है उसे हम पर प्रकट किया।

यूहन्ना की यीशु के विषय में साक्षी

19-20 जब यरूशलेम के यहूदियों ने उसके पास लेवियों
और याजकों को यह पूछने के लिये भेजा "तुम कौन हो?"
तो उसने साक्षी दी और बिना झिझक स्वीकार किया "मैं
मसीह नहीं हूँ।"

21 उन्होंने यूहन्ना से पूछा, "तो तुम कौन हो, क्या तुम
एलिय्याह हो?"

यूहन्ना ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

यहूदियों ने पूछा, "क्या तुम भविष्यवक्ता हो?"

उसने उत्तर दिया "नही।"

22 फिर उन्होंने उससे पूछा, "तो तुम कौन हो? हमें बताओ
ताकि जिन्होंने हमें भेजा है, उन्हें हम उत्तर दे सकें। तुम
अपने विषय में क्या कहते हो?"

23 यूहन्ना ने कहा:

> "मैं उसकी आवाज़ हूँ जो जंगल में
> पुकार रहा है:
> 'प्रभु के लिये सीधा रास्ता बनाओ'"
>
> *यशायाह 40:3*

शब्द मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है संदेश। इसका अनुवाद सुसमाचार भी किया जा सकता है। यहाँ इसका अर्थ है–यीशु, यीशु एक रास्ता है जिसके द्वारा खुद परम पिता ने लोगों को अपने बारे में बताया।

24इन लोगों को फरीसियों ने भेजा था। 25उन्होंने उससे पूछा, "यदि तुम न मसीह हो, न एलिय्याह हो, और न भविष्यवक्ता तो लोगों को बपतिस्मा क्यों देते हो?"

26उन्हें जवाब देते हुए यूहन्ना ने कहा, "मैं उन्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ। तुम्हारे ही बीच एक व्यक्ति है जिसे तुम लोग नहीं जानते। 27यह वही है जो मेरे बाद आने वाला है। मैं उसके जूतों की तनियाँ खोलने लायक भी नहीं हूँ।"

28ये घटनाएँ यरदन के पार बैतनिय्याह में घटीं जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था।

29अगले दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी तरफ़ आते देखा और कहा, "परमेश्वर के मेमने को देखो जो जगत के पाप को हर ले जाता है। 30यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आने वाला है जो मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले विद्यमान था।' 31मैं खुद उसे नहीं जानता था किन्तु मैं इसलिये बपतिस्मा देता आ रहा हूँ ताकि इस्राएल के लोग उसे जान लें।"

32फिर यूहन्ना ने अपनी यह साक्षी दी, "मैंनें देखा कि कबूतर के रूप में स्वर्ग से नीचे उतरती हुई आत्मा उस पर आ टिकी। 33मैं खुद उसे नहीं जान पाया, पर जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा था मुझसे कहा, "तुम आत्मा को उतरते और किसी पर टिकते देखोगे, यह वही पुरुष है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है।' 34मैंनें उसे देखा है और मैं प्रमाणित करता हूँ कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु के प्रथम अनुयायी

35अगले दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ वहाँ फिर उपस्थित था। 36जब उसने यीशु को पास से गुजरते देखा, उसने कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना।"

37जब उन दोनों चेलों ने उसे यह कहते सुना तो वे यीशु के पीछे चल पड़े। 38जब यीशु ने मुड़कर देखा कि वे पीछे आ रहे हैं तो उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये?"

उन्होंने जवाब दिया, "रब्बी, ("रब्बी" अर्थात् "गुरु") तेरा निवास कहाँ है?"

39यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आओ और देखो" और वे उसके साथ हो लिये। उन्होंने देखा कि वह कहाँ रहता है। उस दिन वे उसके साथ ठहरे क्योंकि लगभग शाम के चार बज चुके थे।

40जिन दोनों ने यूहन्ना की बात सुनी थी और यीशु के पीछे गये थे उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41उसने पहले अपने भाई शमौन को पाकर उससे कहा, "हमें मसीह: अर्थात् अभिषिक्त* मिल गया है।"

42फिर अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास ले आया। यीशु ने उसे देखा और कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है। तू कैफ़ा (यानी 'पतरस') कहलायेगा।

43अगले दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया। फिर फिलिप्पुस को पाकर यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" 44फिलिप्पुस अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा से था। 45फिलिप्पुस को नतनएल मिला और उसने उससे कहा, "हमें वह मिल गया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था के विधान में और भविष्यवक्ताओं ने लिखा है। वह है यूसुफ का बेटा, नासरत का यीशु।"

46फिर नतनएल ने उससे पूछा, "नासरत से भी कोई अच्छी वस्तु पैदा हो सकती है?"

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "जाओ और देखो।"

47यीशु ने नतनएल को अपनी तरफ आते हुए देखा और उसके बारे में कहा, "यह है एक सच्चा इस्राएली जिसमें कोई खोट नहीं है।"

48नतनएल ने पूछा, "तू मुझे कैसे जानता है?"

जवाब में यीशु ने कहा, "उससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया था, मैंने देखा था कि तू अंजीर के पेड़ के नीचे था।"

49नतनएल ने उत्तर में कहा, "हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।"

50इसके जवाब में यीशु ने कहा, "तुम इसलिये विश्वास कर रहे हो कि मैंने तुमसे यह कहा कि मैंनें तुम्हें अंजीर के पेड़ तले देखा। तुम आगे इससे भी बड़ी बातें देखोगे।" 51इसने उससे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य बता रहा हूँ तुम स्वर्ग को खुलते और स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर उतरते–चढ़ते देखोगे।"

काना में विवाह

2 गलील के काना में तीसरे दिन किसी के यहाँ विवाह था। यीशु की माँ भी मौजूद थी। 2शादी में यीशु और उसके शिष्यों को भी बुलाया गया था। 3वहाँ जब दाखरस

अभिषिक्त मूल में ख्रीष्ट

खत्म हो गया, तो यीशु की माँ ने कहा, "उनके पास अब और दाखरस नहीं है।"

4यीशु ने उससे कहा, "यह तू मुझसे क्यों कह रही है? मेरा समय अभी नहीं आया।"

5फिर उसकी माता ने सेवकों से कहा, "वही करो जो तुमसे यह कहता है।" 6वहाँ पानी भरने के पत्थरे के छह मटके रखे थे। ये मटके वैसे ही थे जैसे यहूदी पवित्र स्नान के लिये काम में लाते थे। हर मटके में कोई बीस से तीस गैलन तक पानी आता था।

7यीशु ने सेवकों से कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" और सेवकों ने मटकों को लबालब भर दिया।

8फिर उसने उनसे कहा, "अब थोड़ा बाहर निकालो, और दावत का इन्तज़ाम कर रहे प्रधान के पास उसे ले जाओ।" और वे उसे ले गये।

9फिर दावत के प्रबन्धकर्त्ता ने उस पानी को चखा जो दाखरस बन गया था। उसे पता ही नहीं चला कि वह दाखरस कहाँ से आया। पर उन सेवकों को इसका पता था जिन्होंने पानी निकाला था। फिर दावत के प्रबन्धक ने दूल्हे को बुलाया 10और उससे कहा, "हर कोई पहले–बढ़िया दाखरस परोसता है और जब मेहमान काफ़ी तृप्त हो चुकते हैं तो फिर घटिया। पर तुमने तो उत्तम दाखरस अब तक बचा रखा है।"

11यीशु ने गलील के काना में यह पहला आश्चर्यकर्म करके अपनी महिमा प्रकट की। जिससे उसके शिष्यों ने उसमें विश्वास किया।

यीशु मन्दिर में

12इसके बाद यीशु अपनी माता, भाइयों और शिष्यों के साथ कफ़रनहूम चला गया जहाँ वे कुछ दिन ठहरे। 13यहूदियों का फ़सह पर्व नज़दीक था। इसलिये यीशु यरूशलेम चला गया। 14वहाँ मन्दिर में यीशु ने देखा कि लोग मवेशियों, भेड़ों और कबूतरों की बिक्री कर रहे हैं और सिक्के बदलने वाले सौदागर अपनी गद्दियों पर बैठे हैं। 15इसलिए उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और सबको, मवेशियों और भेड़ों समेत, बाहर खदेड़ दिया। मुद्रा बदलने वालों के सिक्के उड़ेल दिये और उनकी चौकियाँ पलट दीं। 16कबूतर बेचने वालों से उसने कहा, "इन्हें यहाँ से बाहर ले जाओ। मेरे परमपिता के घर को बाजार मत बनाओ।"

17इस पर उसके शिष्यों को याद आया कि शास्त्रों में लिखा है:

"तेरे घर के लिये मेरी लगन मुझे खा डालेगी।"
भजन संहिता 69:9

18जवाब में यहूदियों ने यीशु से कहा, "तू हमें कौन सा अद्भुत चिह्न दिखा सकता है, जिससे तू जो कुछ कर रहा है, उसका तू अधिकारी है यह साबित हो सके?"

19यीशु ने उन्हें जवाब में कहा, "इस मन्दिर को गिरा दो और मैं तीन दिन के भीतर इसे फिर बना दूँगा।"

20इस पर यहूदी बोले, "इस मन्दिर को बनाने में छियालीस साल लगे थे, और तू इसे तीन दिन में बनाने जा रहा है?"

21(किन्तु अपनी बात में जिस मन्दिर की चर्चा यीशु ने की थी वह उसका अपना ही शरीर था। 22आगे चलकर जब वह मौत के बाद फिर जी उठा तो उसके अनुयायियों को याद आया कि यीशु ने यह कहा था, और शास्त्रों पर और यीशु के शब्दों पर विश्वास किया।)

23फ़सह के त्योहार के दिनों जब यीशु यरूशलेम में था, बहुत से लोगों ने उसके अद्भुत चिह्नों और कर्मों को देखकर उसमें विश्वास किया। 24किन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब लोगों को जानता था। 25उसे इस बात की कोई जरूरत नहीं थी कि कोई आकर उसे लोगों के बारे में बताए, क्योंकि लोगों के मन में क्या है, इसे वह जानता था।

यीशु और नीकुदेमुस

3 वहाँ फरीसियों का एक आदमी था जिसका नाम था नीकुदेमुस। वह यहूदियों का नेता था। 2वह यीशु के पास रात में आया और उससे बोला, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू गुरु है और परमेश्वर की ओर से आया है, क्योंकि ऐसे आश्चर्यकर्म जैसे तू करता है परमेश्वर की सहायता के बिना कोई नहीं कर सकता।"

3जवाब में यीशु ने उससे कहा, "सत्यसत्य, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

4नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? निश्चय ही वह अपनी माँ की कोख में प्रवेश करके दुबारा तो जन्म ले नहीं सकता!"

5यीशु ने जवाब दिया, "सच्चाई तुम्हें मैं बताता हूँ। यदि
कोई आदमी जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता तो वह
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। 6माँस से
केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न हो
वह आत्मा है। 7मैंने तुमसे जो कहा है उस पर आश्चर्य
मत करो, 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना ही होगा।' 8हवा
जिधर चाहती है, उधर बहती है। तुम उसकी आवाज़ सुन
सकते हो। किन्तु तुम यह नहीं जान सकते कि वह कहाँ से
आ रही है, और कहाँ को जा रही है। आत्मा से जन्म हुआ
हर व्यक्ति भी ऐसा ही है।"

9जवाब में नीकुदेमुस ने उससे कहा, "यह कैसे हो सकता
है?"

10यीशु ने उसे जवाब देते हुए कहा, "तुम इस्राएलियों के
गुरु हो फिर भी यह नहीं जानते? 11मैं तुम्हें सच्चाई बताता
हूँ, हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं। और वही बताते हैं जो
हमने देखा है, पर तुम लोग जो हम कहते हैं उसे स्वीकार
नहीं करते। 12मैंने तुम्हें धरती की बातें बतायीं और तुमने
उन पर विश्वास नहीं किया इसलिये अगर मैं स्वर्ग की
बातें बताऊँ तो तुम उन पर कैसे विश्वास करोगे? 13स्वर्ग
में ऊपर कोई नहीं गया, सिवाय उसके, जो स्वर्ग से उतर
कर आया है–यानी मानव–पुत्र।

14"जैसे मूसा ने रेगिस्तान में साँप को ऊपर उठा लिया
था, वैसे ही मानव–पुत्र भी ऊपर उठा लिया जायेगा
15ताकि वे सब जो उसमें विश्वास करते हैं, अनन्त जीवन
पा सकें।"

16परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने
अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो
उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे
अनन्त जीवन मिल जाये। 17परमेश्वर ने अपने बेटे को
जगत में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को अपराधी
ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके द्वारा दुनिया
का उद्धार हो। 18जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी न
ठहराया जाय पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता, उसे
दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के
एकमात्र पुत्र के नाम में विश्वास नहीं रखा है। 19इस
निर्णय का आधार यह है कि ज्योति इस दुनिया में आ
चुकी है पर ज्योति के बजाय लोग अंधेरे को अधिक
महत्त्व देते हैं। क्योंकि उनके कार्य बुरे हैं। 20हर वह
आदमी जो पाप करता है ज्योति से घृणा रखता है और
ज्योति के नज़दीक नहीं आता ताकि उसके पाप उजागर
न हो जायें। 21पर वह जो सत्य पर चलता है, ज्योति के
निकट आता है ताकि यह प्रकट हो जाये कि उसके कर्म
परमेश्वर के द्वारा कराये गये हैं।

यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा

22इसके बाद यीशु अपने अनुयायियों के साथ यहूदिया
के इलाके में चला गया। वहाँ उनके साथ ठहर कर, वह
लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23वहीं शालेम के पास ऐनोन
में यूहन्ना भी बपतिस्मा दिया करता था क्योंकि वहाँ पानी
बहुतायत में था। लोग वहाँ आते और बपतिस्मा लेते थे।
24(यूहन्ना को अभी तक बंदी नहीं बनाया गया था।)

25अब यूहन्ना के कुछ शिष्यों और एक यहूदी के बीच
स्वच्छताकरण को लेकर बहस छिड़ गयी। 26इसलिये वे
यूहन्ना के पास आये और बोले, "हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन
के उस पार तेरे साथ था और जिसके बारे में तूने बताया
था, वही लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और हर आदमी
उसके पास जा रहा है।"

27जवाब में यूहन्ना ने कहा, "किसी आदमी को तब
तक कुछ नहीं मिल सकता जब तक वह उसे स्वर्ग से न
दिया गया हो। 28तुम सब गवाह हो कि मैंने कहा था 'मैं
मसीह नहीं हूँ' बल्कि मैं तो उससे पहले भेजा गया हूँ।
29दूल्हा वही है जिसे दुल्हन मिलती है। पर दूल्हे का मित्र
जो खड़ा रहता है और उसकी अगुवाई में जब दूल्हे की
आवाज़ को सुनता है, तो बहुत खुश होता है। मेरी यही
खुशी अब पूरी हुई है। 30अब निश्चित है कि उसकी महिमा
बढ़े और मेरी घटे!

वह जो स्वर्ग से उतरा

31"जो ऊपर से आता है वह सबसे महान् है। वह जो
धरती से है, धरती से जुड़ा है। इसलिये वह धरती की ही
बातें करता है। जो स्वर्ग से उतरा है, सबके ऊपर है;
32उसने जो कुछ देखा है, और सुना है, वह उसकी साक्षी
देता है पर उसकी साक्षी को कोई ग्रहण नहीं करना
चाहता। 33जो उसकी साक्षी को मानता है वह प्रमाणित
करता है कि परमेश्वर सच्चा है। 34क्योंकि वह, जिसे
परमेश्वर ने भेजा है, परमेश्वर की ही बातें बोलता है।
क्योंकि परमेश्वर ने उसे आत्मा का अनन्त दान दिया है।
35पिता अपने पुत्र को प्यार करता है। और उसी के हाथों

में उसने सब कुछ सौंप दिया है। **36**इसलिए वह जो उसके
पुत्र में विश्वास करता है अनन्त जीवन पाता है पर वह जो
परमेश्वर के पुत्र की बात नहीं मानता उसे वह जीवन
नहीं मिलेगा। इसके बजाय उस पर परम पिता परमेश्वर
का क्रोध बना रहेगा।"

यीशु और सामरी स्त्री

4 जब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना है
कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे
रहा है और उन्हें शिष्य बना रहा है **2**(यद्यपि यीशु स्वयं
बपतिस्मा नहीं दे रहा था बल्कि यह उसके शिष्य कर रहे
थे।) **3**तो वह यहूदिया को छोड़कर एक बार फिर वापस
गलील चला गया। **4**इस बार उसे सामरिया होकर जाना
पड़ा।

5इसलिये वह सामरिया के एक नगर सूखार में आया।
यह नगर उस भूमि के पास था जिसे याकूब ने अपने बेटे
यूसुफ को दिया था। **6**वहाँ याकूब का कुआँ था। यीशु इस
यात्रा में बहुत थक गया था इसलिये वह कुएँ के पास बैठ
गया। समय लगभग दोपहर का था। **7**एक सामरी स्त्री जल
भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे जल दे।" **8**(शिष्य
लोग भोजन खरीदने के लिए नगर में गये हुए थे।) **9**सामरी
स्त्री ने उससे कहा, "तू यहूदी होकर भी मुझसे पीने के
लिए जल क्यों माँग रहा है मैं तो एक सामरी स्त्री हूँ?"
(यहूदी तो सामरियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते।) **10**उत्तर
में यीशु ने उससे कहा, "यदि तू केवल इतना जानती कि
परमेश्वर ने क्या दिया है और वह कौन है जो तुझसे कह
रहा है 'मुझे जल दे' तो तू उससे माँगती और वह तुझे
स्वच्छ जीवन-जल प्रदान करता।"

11स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, तेरे पास तो कोई
बर्तन तक नहीं है और कुआँ बहुत गहरा है फिर तेरे पास
जीवन-जल कैसे हो सकता है? निश्चय तू हमारे पूर्वज
याकूब से बड़ा है **12**जिसने हमें यह कुआँ दिया और
अपने बच्चों और मवेशियों के साथ खुद इसका जल पिया
था।"

13उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "हर एक जो इस कुएँ
का पानी पीता है, उसे फिर प्यास लगेगी **14**किन्तु वह जो
उस जल को पियेगा, जिसे मैं दूँगा, फिर कभी प्यासा नहीं
रहेगा। बल्कि मेरा दिया हुआ जल उसके अन्तर में एक
पानी के झरने का रूप ले लेगा जो उमड़-घुमड़ कर उसे
अनन्त जीवन प्रदान करेगा।"

15तब उस स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, मुझे वह
जल प्रदान कर ताकि मैं फिर कभी प्यासी न रहूँ और
मुझे यहाँ पानी खेंचने न आना पड़े।"

16इस पर यीशु ने उससे कहा, "जाओ अपने पति को
बुलाकर यहाँ ले आओ।"

17उत्तर में स्त्री ने कहा, "मेरा कोई पति नहीं है।"

यीशु ने उससे कहा, "जब तुम यह कहती हो कि तुम्हारा
कोई पति नहीं है तो तुम ठीक ही कहती हो। **18**तुम्हारे
पाँच पति थे और तुम अब जिस पुरुष के साथ रहती हो
वह भी तुम्हारा पति नहीं है इसलिये तुमने जो कहा है सच
कहा है।"

19इस पर स्त्री ने उससे कहा, "महाशय, मुझे तो लगता
है कि तू अन्तर्यामी है। **20**हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर
आराधना की है पर तू कहता है कि यरूशलेम ही आराधना
की जगह है।"

21यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, मेरा विश्वास कर।
समय आ रहा है जब तुम परमपिता की आराधना न इस
पर्वत पर करोगे और न यरूशलेम में। **22**तुम सामरी लोग
उसे नहीं जानते जिसकी आराधना करते हो। पर हम
यहूदी उसे जानते हैं जिसकी आराधना करते हैं। क्योंकि
उद्धार यहूदियों से ही है। **23**पर समय आ रहा है और आ
ही गया है जब सच्चे उपासक पिता की आराधना आत्मा
और सच्चाई में करेंगे। परम पिता ऐसा ही उपासक चाहता
है। **24**परमेश्वर आत्मा है और इसीलिए जो उसकी
आराधना करें उन्हें आत्मा और सच्चाई में ही उसकी
आराधना करनी होगी।"

25फिर स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह
यानी ख्रीष्ट आने वाला है। जब वह आयेगा तो हमें सब
कुछ बताएगा।"

26यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ,
वही हूँ।"

27तभी उसके शिष्य वहाँ लौट आये। और उन्हें यह
देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एक स्त्री से
बातचीत कर रहा है। पर किसी ने भी उससे कुछ कहा
नहीं, "तुझे इस स्त्री से क्या लेना है या तू इससे बातें क्यों
कर रहा है?"

28वह स्त्री अपने पानी भरने के घड़े को वहीं छोड़कर
नगर में वापस चली गयी और लोगों से बोली, 29"आओ
और देखो, एक ऐसा पुरुष है जिसने, मैंने जो कुछ किया
है, वह सब कुछ मुझे बता दिया। क्या तुम नहीं सोचते कि
वह मसीह हो सकता है?" 30इस पर लोग नगर छोड़कर
यीशु के पास जा पहुँचे।

31इसी समय यीशु के शिष्य उससे विनती कर रहे थे,
"हे रब्बी, कुछ खा ले।"

32पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा
भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते।"

33इस पर उसके शिष्य आपस में एक दूसरे से पूछने
लगे, "क्या कोई उसके खाने के लिए कुछ लाया होगा?"

34यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन उसकी इच्छा को
पूरा करना है जिसने मुझे भेजा है। और उस काम को पूरा
करना है जो मुझे सौंपा गया है। 35तुम अक्सर कहते हो,
'चार महीने और हैं तब फ़सल आयेगी 'देखो मैं तुम्हें बताता
हूँ अपनी आँखें खोलो और खेतों की तरफ़ देखो वे कटने
के लिए तैयार हो चुके हैं। वह जो कटाई कर रहा है,
अपनी मज़दूरी पा रहा है। 36और अनन्त जीवन के लिये
फसल इकट्ठी कर रहा है। ताकि फ़सल बोने वाला और
काटने वाला दोनों ही साथ–साथ आनन्दित हो सकें। 37यह
कथन वास्तव में सच है। एक व्यक्ति बोता है और दूसरा
व्यक्ति काटता है। 38मैंने तुम्हें उस फसल को काटने भेजा
है जिस पर तुम्हारी मेहनत नहीं लगी है। जिस पर दूसरों ने
मेहनत की है और उनकी मेहनत का फल तुम्हें मिला
है।"

39उस नगर के बहुत से सामरियों ने यीशु में विश्वास
किया क्योंकि उस स्त्री के उन शब्दों को उन्होंने साक्षी
माना था कि, "मैंने जब कभी जो कुछ किया उसने मुझे
उसके बारे में सब कुछ बता दिया।" 40जब सामरी उसके
पास आये तो उन्होंने उससे उनके साथ ठहरने के लिए
विनती की। इस पर वह दो दिन के लिए वहाँ ठहरा। 41और
उसके वचन से प्रभावित होकर बहुत से और लोग भी
उसके विश्वासी हो गये।

42उन्होंने उस स्त्री से कहा, "अब हम केवल तुम्हारी
साक्षी के कारण ही विश्वास नहीं रखते बल्कि अब
हमने स्वयं उसे सुना है। और अब हम यह जान गये हैं
कि वास्तव में यही वह व्यक्ति है जो जगत् का उद्धारकर्त्ता
है।"

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन–दान

43दो दिन बाद वह वहाँ से गलील को चल पड़ा।
44(क्योंकि यीशु ने खुद कहा था कि कोई नबी अपने ही
देश में कभी आदर नहीं पाता है।) 45इस तरह जब वह
गलील आया तो गलीलियों ने उसका स्वागत किया क्योंकि
उन्होंने वह सब कुछ देखा था जो उसने यरूशलेम में पर्व
के दिनों किया था। (क्योंकि वे सब भी इस पर्व में शामिल
थे।)

46यीशु एक बार फिर गलील में काना गया जहाँ उसने
पानी को दाखरस में बदला था। अब की बार कफ़रनहूम
में एक राजा का अधिकारी था जिसका बेटा बीमार था।
47जब राजाधिकारी ने सुना कि यहूदिया से यीशु गलील
आया है तो वह उसके पास आया और विनती की कि वह
कफ़रनहूम जाकर उसके बेटे को अच्छा कर दे। क्योंकि
उसका बेटा मरने को पड़ा था। 48यीशु ने उससे कहा,
"अद्भुत संकेत और आश्चर्यकर्म देखे बिना तुम लोग
विश्वासी नहीं बनोगे।"

49राजाधिकारी ने उससे कहा, "महोदय, इससे पहले
कि मेरा बच्चा मर जाये, मेरे साथ चल।"

50यीशु ने उत्तर में कहा, "जा तेरा पुत्र जीवित रहेगा।"

यीशु ने जो कुछ कहा था, उसने उस पर विश्वास किया
और घर चल दिया। 51वह घर लौटते हुए अभी रास्ते में ही
था कि उसे उसके नौकर मिले और उसे समाचार दिया
कि उसका बच्चा ठीक हो गया।

52उसने पूछा, "सही हालत किस समय से ठीक होना
शुरू हुई थी?"

उन्होंने जवाब दिया, "कल दोपहर एक बजे उसका
बुखार उतर गया था।"

53बच्चे के पिता को ध्यान आया कि यह ठीक वही
समय था जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र जीवित
रहेगा।" इस तरह अपने सारे परिवार के साथ वह विश्वासी
हो गया।

54यह दूसरा अद्भुत चिह्न था जो यीशु ने यहूदियों को
गलील आने पर दर्शाया।

तालाब पर ला–इलाज रोगी का ठीक होना

5 इसके बाद यीशु यहूदियों के एक उत्सव में यरूशलेम
गया। 2यरूशलेम में भेड़–द्वार के पास एक तालाब
है, इब्रानी भाषा में इसे 'बैतहसदा' कहा जाता है। इसके

किनारे पाँच बरामदे बने हैं 3जिनमें नेत्रहीन, अपंग और
लकवे के बीमारों की भीड़ पड़ी रहती है। ["लोग पानी
के हिलने की प्रतिक्षा मे थे। 4कभी कभी प्रभु का दूत
जलाशय पर उतरता और जल को हिलाता। स्वर्गदूत के
ऐसा करने पर जलाशय में जाने वाला पहला व्यक्ति
अपने सभी रोगों से छुटकारा पा जाता।"]* 5इन रोगियों
में एक ऐसा मरीज़ भी था जो अड़तीस वर्ष से बीमार था।
6जब यीशु ने उसे वहाँ लेटे देखा और यह जाना कि वह
इतने लम्बे समय से बीमार है तो यीशु ने उससे कहा,
"क्या तुम नीरोग होना चाहते हो?" 7रोगी ने जवाब
दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं है जो जल के हिलने
पर मुझे तालाब में उतार दे। जब मैं तालाब में जाने को
होता हूँ, सदा कोई दूसरा आदमी मुझसे पहले उसमें उतर
जाता है।"

8यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा
और चल पड़।" 9वह आदमी तत्काल अच्छा हो गया।
उसने अपना बिस्तर उठाया और चल दिया। उस दिन
सब्त का दिन था 10इस पर यहूदियों ने उससे, जो नीरोग
हुआ था, कहना शुरू किया, "आज सब्त का दिन है
और हमारे नियमों के यह विरुद्ध है कि तू अपना बिस्तर
उठाए।"

11इस पर उसने जवाब दिया, "जिसने मुझे अच्छा किया
है उसने कहा है कि अपना बिस्तर उठा और चल।"

12उन लोगों ने उससे पूछा, "वह कौन व्यक्ति है जिसने
तुझसे कहा था, अपना बिस्तर उठा और चल?"

13पर वह व्यक्ति जो ठीक हुआ था, नहीं जानता था
कि वह कौन था क्योंकि उस जगह बहुत भीड़ थी और
यीशु वहाँ से चुपचाप चला गया था।

14इसके बाद यीशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में देखा
और उससे कहा, "देखो, अब तुम नीरोग हो, इसलिये पाप
करना बन्द कर दो। नहीं तो कोई और बड़ा कष्ट तुम पर
आ सकता है।" फिर वह व्यक्ति चला गया। 15और यहूदियों
से आकर उसने कहा कि उसे ठीक करने वाला यीशु
था।

16क्योंकि यीशु ने ऐसे काम सब्त के दिन किये थे
इसलिए यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया। 17यीशु ने
उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "मेरा पिता कभी काम बंद नहीं
करता, इसीलिए मैं भी निरन्तर काम करता हूँ।" इसलिये
यहूदी उसे मार डालने का और अधिक प्रयत्न करने लगे।
18न केवल इसलिये कि वह सब्त को तोड़ रहा था
बल्कि वह परमेश्वर को अपना पिता भी कहता था। और
इस तरह अपने आपको परमेश्वर के समान ठहराता था।

यीशु की साक्षी

19उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सच्चाई बताता
हूँ, कि पुत्र स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर सकता है। वह
केवल वही करता है जो पिता को करते देखता है। पिता
जो कुछ करता है पुत्र भी वैसे ही करता है। 20पिता पुत्र
को प्रेम करता है और वह सब कुछ उसे दिखाता है, जो
वह करता है। उन कामों से भी और बड़ी-बड़ी बातें वह
उसे दिखायेगा। तब तुम सब आश्चर्य करोगे। 21जैसे पिता
मृतकों को उठाकर उन्हें जीवन देता है। 22पिता किसी
का भी न्याय नहीं करता किन्तु उसने न्याय करने का
अधिकार बेटे को दे दिया है। 23जिससे सभी लोग पुत्र का
आदर वैसे ही करें जैसे वे पिता का करते हैं। जो व्यक्ति
पुत्र का आदर नहीं करता वह उस पिता का भी आदर
नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है
और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह
अनन्त जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं
पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा
जाता है। 25मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ कि वह समय आने
वाला है बल्कि आ ही चुका है-जब वे, जो मर चुके हैं,
परमेश्वर के पुत्र का वचन सुनेंगे और जो उसे सुनेंगे वे
जीवित हो जायेंगे क्योंकि जैसे पिता जीवन का स्रोत है
26वैसे ही उसने अपने पुत्र को भी जीवन का स्रोत बनाया
है। 27और उसने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है।
क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। 28इस पर आश्चर्य मत
करो कि वह समय आ रहा है जब वे सब जो अपनी
कब्रों में हैं, उसका वचन सुनेंगे 29और बाहर आ जायेंगे।
जिन्होंने अच्छे काम किये हैं वे पुनरुत्थान पर जीवन पाएँगे
पर जिन्होंने बुरे काम किये हैं उन्हें पुनरुत्थान पर दण्ड
दिया जायेगा।

लोग पानी ... पा जाता कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

यीशु का यहूदियों से कथन

30"मैं स्वयं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। मैं परमेश्वर से जो सुनता हूँ उसी के आधार पर न्याय करता हूँ और मेरा न्याय उचित है क्योंकि मैं अपनी इच्छा से कुछ नहीं करता बल्कि उसकी इच्छा से करता हूँ जिसने मुझे भेजा है।

31"यदि मैं अपनी तरफ़ से साक्षी दूँ तो मेरी साक्षी सत्य नहीं है। 32मेरी ओर से साक्षी देने वाला एक और है। और मैं जानता हूँ कि मेरी ओर से जो साक्षी वह देता है, सत्य है।

33"तुमने लोगों को यूहन्ना के पास भेजा और उसने सत्य की साक्षी दी। 34मैं मनुष्य की साक्षी पर निर्भर नहीं करता बल्कि यह मैं इसलिए कहता हूँ जिससे तुम्हारा उद्धार हो सके। 35यूहन्ना उस दीपक की तरह था जो जलता है और प्रकाश देता है। और तुम कुछ समय के लिए उसके प्रकाश का आनन्द लेना चाहते थे।

36"पर मेरी साक्षी यूहन्ना की साक्षी से बड़ी है क्योंकि परम पिता ने जो काम पूरे करने के लिए मुझे सौंपे हैं, मैं उन्हीं कामों को कर रहा हूँ और वे काम ही मेरी साक्षी हैं कि परम पिता ने मुझे भेजा है। 37परम पिता ने जिसने मुझे भेजा है, मेरी साक्षी दी है। तुम लोगों ने उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुमने उसका रूप देखा है। 38और न ही तुम अपने भीतर उसका संदेश धारण करते हो। क्योंकि तुम उसमें विश्वास नहीं रखते हो जिसे परम पिता ने भेजा है। 39तुम शास्त्रों का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम्हारा विचार है कि तुम्हें उनके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होगा। किन्तु ये सभी शास्त्र मेरी ही साक्षी देते हैं। 40फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने के लिये मेरे पास नहीं आना चाहते। 41"मैं मनुष्य द्वारा की गयी प्रशंसा पर निर्भर नहीं करता। 42किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम नहीं है। 43मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ फिर भी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते किन्तु यदि कोई और अपने ही नाम से आए तो तुम उसे स्वीकार कर लोगे। 44तुम मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो, क्योंकि तुम तो आपस में एक दूसरे से प्रशंसा स्वीकार करते हो। उस प्रशंसा की तरफ देखते तक नहीं जो एकमात्र परमेश्वर से आती है। 45ऐसा मत सोचो कि मैं परम पिता के आगे तुम्हें दोषी ठहराऊँगा। जो तुम्हें दोषी सिद्ध करेगा वह तो मूसा होगा जिस पर तुमने अपनी आशाएँ टिकाई हुई हैं। यदि तुम वास्तव में मूसा में विश्वास करते 46तो तुम मुझमें भी विश्वास करते क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है। 47जब तुम, जो उसने लिखा है उसी में विश्वास नहीं करते, तो मेरे वचन में विश्वास कैसे करोगे?"

पाँच हजार से अधिक को भोजन

6 इसके बाद यीशु गलील की झील यानी तिबिरियास के उस पार चला गया। 2और उसके पीछे–पीछे एक अपार भीड़ चल दी क्योंकि उन्होंने रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान करने में अद्भुत चिह्न देखे थे। 3यीशु पहाड़ पर चला गया और वहाँ अपने अनुयायियों के साथ बैठ गया। 4यहूदियों का फ़सह पर्व निकट था।

5जब यीशु ने आँख उठाई और देखा कि एक विशाल भीड़ उसकी तरफ़ आ रही है तो उसने फिलिप्पुस से पूछा, "इन सब लोगों को भोजन कराने के लिए रोटी कहाँ से खरीदी जा सकती है?" 6(यीशु ने यह बात उसकी परीक्षा लेने के लिए कही थी क्योंकि वह तो जानता ही था कि वह क्या करने जा रहा है।)

7फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों से भी इतनी रोटियाँ नहीं ख़रीदी जा सकती हैं जिनमें से हर आदमी को एक निवाले से थोड़ा भी ज़्यादा मिल सके। 8यीशु के एक दूसरे शिष्य शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने कहा, 9यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों में इतने से क्या होगा।"

10यीशु ने उत्तर दिया, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे 11फिर यीशु ने रोटियाँ लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको परोस दीं। इसी तरह जितनी वे चाहते थे, उतनी मछलियाँ भी उन्हें दे दीं।

12जब उन के पेट भर गये यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकट्ठा कर लो ताकि कुछ बेकार न जाये।" 13फिर शिष्यों ने लोगों को परोसी गयी जौ की उन पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।

14यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोग कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति वही नबी है जिसे इस जगत् में आना है।"

15यीशु यह जानकर कि वे लोग आने वाले हैं और उसे ले जाकर राजा बनाना चाहते हैं, अकेला ही पर्वत पर चला गया।

यीशु का पानी पर चलना

16जब शाम हुई उसके शिष्य झील पर गये 17और एक नाव में बैठकर वापस झील के पार कफरनहूम की तरफ़ चल पड़े। अँधेरा काफ़ी हो चला था किन्तु यीशु अभी भी उनके पास नहीं लौटा था। 18तूफ़ानी हवा के कारण झील में लहरें तेज़ होने लगी थीं। 19जब वे कोई पाँच–छ: किलोमीटर आगे निकल गये, उन्होंने देखा कि यीशु झील पर चल रहा है और नाव के पास आ रहा है। इससे वे डर गये। 20किन्तु यीशु ने उनसे कहा, “यह मैं हूँ, डरो मत।” 21फिर उन्होंने तत्परता से उसे नाव में चढ़ा लिया। और नाव शीघ्र ही वहाँ पहुँच गयी जहाँ उन्हें जाना था।

यीशु की ढूँढ

22अगले दिन लोगों की उस भीड़ ने जो झील के उस पार रह गयी थी, देखा कि वहाँ सिर्फ एक नाव थी और अपने चेलों के साथ यीशु उस पर सवार नहीं हुआ था, बल्कि उसके शिष्य ही अकेले रवाना हुए थे। 23तिबिरियास की कुछ नावें उस स्थान के पास आकर रुकीं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद देने के बाद रोटी खायी थी। 24इस तरह जब उस भीड़ ने देखा कि न तो वहाँ यीशु है और न ही उसके शिष्य तो वे नावों पर सवार हो गये और यीशु को ढूँढते हुए कफरनहूम की तरफ चल पड़े।

25जब उन्होंने यीशु को झील के उस पार पाया तो उससे कहा, “हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?” 26उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ, तुम मुझे इसलिये नहीं खोज रहे हो कि तुमने आश्चर्यपूर्ण चिह्न देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने भर पेट रोटी खायी थी। 27उस खाने के लिये परिश्रम मत करो जो सड़ जाता है बल्कि उसके लिये जतन करो जो सदा उत्तम बना रहता है और अनन्त जीवन देता है, जिसे तुम्हें मानव–पुत्र देगा। क्योंकि परम पिता परमेश्वर ने अनुमोदन की अपनी मोहर उसी पर लगायी है।”

28लोगों ने उससे पूछा, “जिन कामों को परमेश्वर चाहता है, उन्हें करने के लिए हम क्या करें?”

29उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “परमेश्वर जो चाहता है, वह यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास करो।”

30लोगों ने पूछा, “तू कौन से आश्चर्य चिन्ह प्रकट करेगा जिन्हें हम देखें और तुझमें विश्वास करें? तू क्या कार्य करेगा? 31हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था जैसा कि पवित्र शास्त्रों में लिखा है। उसने उन्हें खाने के लिए, स्वर्ग से रोटी दी।”

32इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ वह मूसा नहीं था जिसने तुम्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी थी बल्कि यह मेरा पिता है जो तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। 33वह रोटी जिसे परम पिता देता है वह स्वर्ग से उतरी है और जगत को जीवन देती है।”

34लोगों ने उससे कहा, “हे प्रभु, अब हमें वह रोटी दे और सदा देता रह।”

35यीशु ने उनसे कहा, “मैं ही वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा नहीं रहेगा और जो मुझमें विश्वास करता है कभी भी प्यासा नहीं रहेगा। 36मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुमने मुझे देख लिया है, फिर भी तुम मुझमें विश्वास नहीं करते। हर वह व्यक्ति जिसे परम पिता ने मुझे सौंपा है, मेरे पास आयेगा 37जो मेरे पास आता है, मैं उसे कभी नहीं लौटाऊँगा। 38क्योंकि मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा के अनुसार काम करने नहीं आया हूँ बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है। 39और मुझे भेजने वाले की यही इच्छा है कि मैं जिनको परमेश्वर ने मुझे सौंपा है, उनमें से किसी को भी न खोऊँ और अन्तिम दिन उन सबको जिला दूँ। 40यही मेरे परम पिता की इच्छा है कि हर वह व्यक्ति जो पुत्र को देखता है और उसमें विश्वास करता है, अनन्त जीवन पाये और अंतिम दिन मैं उसे जिला उठाऊँगा।”

41इस पर यहूदियों ने यीशु पर बड़बड़ाना शुरू किया क्योंकि वह कहता था, “वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।” 42और उन्होंने कहा, “क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु नहीं है, क्या हम इसके माता–पिता को नहीं जानते हैं। फिर यह कैसे कह सकता है यह स्वर्ग से उतरा है?”

43उत्तर में उनसे यीशु ने कहा, “आपस में बड़बड़ाना बंद करो, 44मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक मुझे भेजने वाला परम पिता उसे मेरे प्रति आकर्षित

न करे। मैं अंतिम दिन उसे पुनर्जीवित करूँगा। 45नबियों ने लिखा है, 'और वे सब परमेश्वर के द्वारा सिखाए हुए होंगे।' हर वह व्यक्ति जो परम पिता की सुनता है और उससे सीखता है मेरे पास आता है। 46(किन्तु वास्तव में परम पिता को सिवाय उसके जिसे उसने भेजा है, किसी ने नहीं देखा। परम पिता को बस उसी ने देखा है।) 47मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो विश्वासी है, वह अनन्त जीवन पाता है। 48मैं वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। 49तुम्हारे पुरखों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था तो भी वे मर गये। 50जबकि स्वर्ग से आयी इस रोटी को यदि कोई खाए तो मरे नहीं। 51मैं ही वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। यदि कोई इस रोटी को खाता है तो वह अमर हो जायेगा। और वह रोटी जिसे मैं दूँगा, मेरा शरीर है। इसी से संसार जीवित रहेगा।"

52फिर यहूदी लोग आपस में यह कहते हुए बहस करने लगे, "यह अपना शरीर हमें खाने को कैसे दे सकता है?"

53इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर नहीं खाओगे और उसका लहू नहीं पिओगे तब तक तुममें जीवन नहीं होगा। 54जो मेरा शरीर खाता रहेगा और मेरा लहू पीता रहेगा, अनन्त जीवन उसी का है। अन्तिम दिन मैं उसे अभिजीवित करूँगा। 55मेरा शरीर सच्चा भोजन है और मेरा लहू ही सच्चा पेय है। 56जो मेरे शरीर को खाता रहता है और लहू को पीता रहता है वह मुझ में ही रहता है, और मैं उसमें। 57बिल्कुल वैसे ही जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं परम पिता के कारण ही जीवित हूँ, उसी तरह वह जो मुझे खाता रहता है मेरे ही कारण जीवित रहेगा। 58यही वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है। यह वैसी नहीं है जैसी हमारे पूर्वजों ने खायी थी। और बाद में वे मर गये थे। जो इस रोटी को खाता रहेगा, सदा के लिये जीवित रहेगा।" 59यीशु ने ये बातें कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश देते हुए कहीं।

अनन्त जीवन की शिक्षा

60यीशु के बहुत से अनुयायियों ने इन बातों को सुनकर कहा, "यह शिक्षा बहुत कठिन है, इसे कौन सुन सकता है?" 61यीशु को अपने आप ही पता चल गया था कि उसके अनुयायियों को इसकी शिकायत है। इसलिये वह उनसे बोला, "क्या तुम इस शिक्षा से परेशान हो? 62यदि ऐसा है तो तुमको यदि मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था वहीं वापस लौटते देखना पड़े तो क्या होगा? 63आत्मा ही है जो जीवन देता है। देह का कोई उपयोग नहीं है। वचन, जो मैंने तुमसे कहे हैं, आत्मा है और वे ही जीवन देते हैं। 64किन्तु तुममें कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास नहीं करते।" (यीशु शुरू से ही जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वासी नहीं हैं और वह कौन है जो उसे धोखा देगा।) 65यीशु ने आगे कहा, "इसीलिये मैंने तुमसे कहा है कि मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक परम पिता उसे मेरे पास आने की अनुमति नहीं दे देता।"

66इसी कारण यीशु के बहुत से अनुयायी वापस चले गये। और फिर कभी उसके पीछे नहीं चले।

67फिर यीशु ने अपने बारह शिष्यों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"

68शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जायेंगे? वे वचन तो तेरे पास हैं जो अनन्त जीवन देते हैं। 69अब हमने यह विश्वास कर लिया है और जान लिया है कि तू ही वह पवित्रतम है जिसे परमेश्वर ने भेजा है।"

70यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम बारहों को मैंने नहीं चुना है? फिर भी तुममें से एक शैतान है।"

71वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा के बारे में बात कर रहा था क्योंकि वह यीशु के खिलाफ़ होकर उसे धोखा देने वाला था। यद्यपि वह भी उन बारह शिष्यों में से ही एक था।

यीशु और उसके भाई

7 इसके बाद यीशु ने गलील की यात्रा की। वह यहूदिया जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे। 2यहूदियों का खेमों का पर्व* आने वाला था। 3इसलिये यीशु के बंधुओं ने उससे कहा, "तुम्हें यह स्थान छोड़कर यहूदिया चले जाना चाहिये। ताकि तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे कामों को देख सकें। 4कोई भी वह व्यक्ति जो

खेमों का पर्व यह त्योहार हर साल हफ्ते भर मनाया जाता था, जब यहूदी लोग तम्बुओं में रहकर उन दिनों की याद करते थे जब मूसा के काल में उनके पूर्वज चालीस साल तक मरुभूमि में भटकते रहे थे।

लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता है अपने कामों को छिपा कर नहीं करता। क्योंकि तुम आश्चर्य कर्म करते हो इसलिये सारे जगत के सामने अपने को प्रकट करो।" 5(यीशु के भाई तक उसमें विश्वास नहीं रखते थे।) 6यीशु ने उनसे कहा, "मेरे लिये अभी ठीक समय नहीं आया है। पर तुम्हारे लिये हर समय ठीक है। 7यह जगत तुमसे घृणा नहीं कर सकता पर मुझसे घृणा करता है। क्योंकि मैं यह कहता रहता हूँ कि इसकी करनी बुरी है। 8इस पर्व में तुम लोग जाओ, मैं नहीं जा रहा क्योंकि मेरे लिए अभी ठीक समय नहीं आया है।" 9ऐसा कहने के बाद यीशु गलील में रुक गया।

10जब उसके भाई पर्व में चले गये तो वह भी गया। पर वह खुले तौर पर नहीं, छिप कर गया था। 11यहूदी नेता उसे पर्व में यह कहते खोज रहे थे, "वह मनुष्य कहाँ है?"

12यीशु के बारे में छिपे–छिपे उस भीड़ में तरह–तरह की बातें हो रही थीं। कुछ कह रहे थे, "वह अच्छा व्यक्ति है।" पर दूसरों ने कहा, "नहीं, वह लोगों को भटकाता है।" 13कोई भी उसके बारे में खुलकर बातें नहीं कर पा रहा था क्योंकि वे लोग यहूदी नेताओं से डरते थे।

यरुशलेम में यीशु का उपदेश

14जब वह पर्व लगभग आधा बीत चुका था, यीशु मंदिर में गया और उसने उपदेश देना शुरू किया। 15यहूदी नेताओं ने अचरज के साथ कहा, "यह मनुष्य जो कभी किसी पाठशाला में नहीं गया फिर इतना कुछ कैसे जानता है?"

16उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "जो उपदेश मैं देता हूँ मेरा अपना नहीं है बल्कि उससे आता है, जिसने मुझे भेजा है। 17यदि मनुष्य वह करना चाहे, जो परम पिता की इच्छा है तो वह यह जान जायेगा कि जो उपदेश मैं देता हूँ वह उसका है या मैं अपनी ओर से दे रहा हूँ। 18जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपने लिये यश कमाना चाहता है; किन्तु वह जो उसे यश देने का प्रयत्न करता है, जिसने उसे भेजा है, वही व्यक्ति सच्चा है। उसमें कहीं कोई खोट नहीं है। 19क्या तुम्हें मूसा ने व्यवस्था का विधान नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी उसका पालन नहीं करता। तुम मुझे मारने का प्रयत्न क्यों करते हो?"

20लोगों ने जवाब दिया, "तुझ पर भूत सवार है जो तुझे मारने का यत्न कर रहा है।"

21उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैंने एक आश्चर्यकर्म किया और तुम सब चकित हो गये। 22इसी कारण मूसा ने तुम्हें ख़तना का नियम दिया था। (यह नियम मूसा का नहीं था बल्कि तुम्हारे पूर्वजों से चला आ रहा था।) और तुम सब्त के दिन लड़कों का ख़तना करते हो। 23यदि सब्त के दिन किसी का ख़तना इसलिये किया जाता है कि मूसा का विधान न टूटे तो इसके लिये तुम मुझ पर क्रोध क्यों करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक व्यक्ति को पूरी तरह चंगा कर दिया? 24बातें जैसी दिखती हैं, उसी आधार पर उनका न्याय मत करो बल्कि जो वास्तव में उचित है उसी के आधार पर न्याय करो।"

क्या यीशु ही मसीह है?

25फिर यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से कुछ ने कहा, "क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसे वे लोग मार डालना चाहते हैं? 26मगर देखो वह सब लोगों के बीच में बोल रहा है और वे लोग कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या यह नहीं हो सकता कि यहूदी नेता वास्तव में जान गये हैं कि वही मसीह है। 27खैर हम जानते हैं कि यह व्यक्ति कहाँ से आया है। जब वास्तविक मसीह आयेगा तो कोई नहीं जान पायेगा कि वह कहाँ से आया।"

28यीशु जब मंदिर में उपदेश दे रहा था, उसने ऊँचे स्वर में कहा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो मैं कहाँ से आया हूँ। फिर भी मैं अपनी ओर से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है, वह सत्य है, तुम उसे नहीं जानते। 29पर मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसी से आया हूँ।"

30फिर वे उसे बंदी बनाने का जतन करने लगे पर कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल सका क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। 31तो भी बहुत से लोग उसमें विश्वासी हो गये और कहने लगे, "जब मसीह आयेगा तो वह जितने आश्चर्य चिन्ह इस व्यक्ति ने प्रकट किये हैं उनसे अधिक नहीं करेगा। क्या वह ऐसा करेगा?"

यहूदियों का यीशु को बंदी बनाने का यत्न

32भीड़ में लोग यीशु के बारे में चुपके–चुपके क्या बात कर रहे हैं, फरीसियों ने सुना और प्रमुख धर्माधिकारियों तथा फरीसियों ने उसे बंदी बनाने के लिए मंदिर के

सिपाहियों को भेजा फिर यीशु बोला, 33"मैं तुम लोगों के
साथ कुछ समय और रहूँगा और फिर उसके पास वापस
चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34तुम मुझे ढूँढोगे पर
तुम मुझे पाओगे नहीं। क्योंकि तुम लोग वहाँ जा नहीं पाओगे
जहाँ मैं होऊँगा।"

35इसके बाद यहूदी नेता आपस में बात करने लगे,
"यह कहाँ जाने वाला है जहाँ हम इसे नहीं ढूँढ पायेंगे।
शायद यह वहीं तो नहीं जा रहा है जहाँ हमारे लोग यूनानी
नगरों में तितर-बितर हो कर रहते हैं। क्या यह यूनानियों
में उपदेश देगा? 36जो इसने कहा है उसका अर्थ क्या है?
कि तुम मुझे ढूँढोगे पर मुझे पाओगे नहीं। और जहाँ मैं
होऊँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते।"

यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का उपदेश

37पर्व के अन्तिम और महत्त्वपूर्ण दिन यीशु खड़ा हुआ
और उसने ऊँचे स्वर में कहा, "अगर कोई प्यासा है तो
मेरे पास आये और पिये। 38जो मुझमें विश्वासी है, जैसा
कि शास्त्र कहते हैं उसके अंतरात्मा से स्वच्छ जीवन जल
की नदियाँ फूट पड़ेंगी।" 39यीशु ने यह आत्मा के विषय में
कहा था। जिसे वे लोग पायेंगे जो उसमें विश्वास करेंगे वह
आत्मा अभी तक दी नहीं गयी है क्योंकि यीशु अभी तक
महिमावान नहीं हुआ।

यीशु के बारे में लोगों की बातचीत

40भीड़ के कुछ लोगों नें जब यह सुना वे कहने लगे,
"यह आदमी निश्चय ही वही नबी है।"

41कुछ और लोग कह रहे थे, "यही व्यक्ति मसीह है।"
कुछ और लोग कह रहे थे, "मसीह गलील से नहीं आयेगा।
क्या ऐसा हो सकता है? 42क्या शास्त्रों में नहीं लिखा है कि
मसीह दाऊद की संतान होगा और बैतलहम से आयेगा
जिस नगर में दाऊद रहता था।"

43इस तरह लोगों में फूट पड़ गयी। 44कुछ उसे बंदी
बनाना चाहते थे पर किसी ने भी उस पर हाथ नहीं
डाला।

यहूदी नेताओं का यीशु में विश्वास

45इसलिये मन्दिर के सिपाही प्रमुख धर्माधिकारियों और
फरीसियों के पास लौट आये। इस पर उनसे पूछा गया,
"तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाये?"

46सिपाहियों नें जवाब दिया, "कोई भी व्यक्ति आज तक
ऐसे नहीं बोला जैसे वह बोलता है।"

47इस पर फरीसियों ने उनसे कहा, "क्या तुम भी तो
नहीं भरमाए गये हो? 48किसी भी यहूदी नेता या फरीसियों
नें उसमें विश्वास नहीं किया है। 49किन्तु ये लोग जिन्हें
व्यवस्था के विधान का ज्ञान नहीं है परमेश्वर के अभिशाप
के पात्र हैं।"

50नीकुदेमुस ने उनसे कहा, यह वही था जो पहले यीशु
के पास गया था यह उन फरीसियों में से ही एक था
51"हमारी व्यवस्था का विधान किसी को तब तक दोषी
नहीं ठहराता जब तक उसकी सुन नहीं लेता और यह पता
नहीं लगा लेता कि उसने क्या किया है।"

52उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "क्या तू भी तो गलील
का ही नहीं है? शास्त्रों को पढ़ तो तुझे पता चलेगा कि
गलील से कोई नबी कभी नहीं आयेगा।"

[कुछ प्राचीन यूनानी प्रतियों में यूहन्ना 7:53-8:11 तक का पद नहीं है।]

दुराचारी स्त्री को क्षमा

53 फिर वे सब वहाँ से अपने-अपने घर चले गये।

8 और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। 2अलख
सवेरे वह फिर मन्दिर में गया। सभी लोग उसके
पास आये। यीशु बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। 3तभी
यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी लोग व्यभिचार के अपराध
में एक स्त्री को वहाँ पकड़ लाये। और उसे लोगों के
सामने खड़ा कर दिया। 4और यीशु से बोले, "हे गुरु, यह
स्त्री व्यभिचार करते रंगे हाथों पकड़ी गयी है। 5मूसा का
विधान हमें आज्ञा देता है कि ऐसी स्त्री को पत्थर मारने
चाहियें। अब बता तेरा क्या कहना है?" 6(यीशु को
जाँचने के लिये वे यह पूछ रहे थे ताकि उन्हें कोई ऐसा
बहाना मिल जाये जिससे उसके विरुद्ध कोई अभियोग
लगाया जा सके)। किन्तु यीशु नीचे झुका और अपनी
उँगली से धरती पर लिखने लगा। 7क्योंकि वे पूछते ही
जा रहे थे इसलिये यीशु सीधा तन कर खड़ा हो गया और
उनसे बोला, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे पहले
इस औरत को पत्थर मारे।" 8और वह फिर झुककर
धरती पर लिखने लगा।

9जब लोगों ने यह सुना तो सबसे पहले बूढ़े लोग और
फिर और भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे

और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया। यीशु के सामने वह स्त्री अब भी खड़ी थी। 10यीशु खड़ा हुआ और उस स्त्री से बोला, "हे स्त्री, वे सब कहाँ गये। क्या तुम्हें किसी ने दोषी नहीं ठहराया?"

11स्त्री बोली, "नहीं, महोदय! किसी ने नहीं।"

यीशु ने कहा, "मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ और अब फिर कभी पाप मत करना।"

जगत का प्रकाश यीशु

12फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, "मैं जगत का प्रकाश हूँ जो मेरे पीछे चलेगा कभी अँधेरे में नहीं रहेगा। बल्कि उसे उस प्रकाश की प्राप्ति होगी जो जीवन देता है।"

13इस पर फरीसी उससे बोले, "तू अपनी साक्षी अपने आप दे रहा है, इसलिये तेरी साक्षी उचित नहीं है।"

14उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं अपनी साक्षी स्वयं अपनी तरफ से दे रहा हूँ तो भी मेरी साक्षी उचित है क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। किन्तु तुम लोग यह नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15तुम लोग इंसानी सिद्धान्तों पर न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय नहीं करता। 16किन्तु यदि मैं न्याय करूँ भी तो मेरा न्याय उचित होगा। क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि परम पिता, जिसने मुझे भेजा है वह और मैं मिलकर न्याय करते हैं। 17तुम्हारे विधान में लिखा है कि दो व्यक्तियों की साक्षी न्याय संगत है। 18मैं अपनी साक्षी स्वयं देता हूँ और परम पिता भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरी ओर से साक्षी देता है।"

19इस पर लोगों ने उससे कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो तुम मुझे जानते हो, और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जान लेते।"

20मन्दिर में उपदेश देते हुए, भेंट–पात्रों के पास से उसने ये शब्द कहे थे। किन्तु किसी ने भी उसे बंदी नहीं बनाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

यहूदियों का यीशु के विषय में अज्ञान

21यीशु ने उनसे एक बार फिर कहा, "मैं चला जाऊँगा और तुम लोग मुझे ढूँढोगे। पर तुम अपने ही पापों में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं आ सकते।"

22फिर यहूदी नेता कहने लगे, "क्या तुम सोचते हो कि वह आत्महत्या करने वाला है? क्योंकि उसने कहा है तुम वहाँ नहीं आ सकते जहाँ मैं जा रहा हूँ।"

23इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो और मैं ऊपर से आया हूँ तुम सांसारिक हो और मैं इस जगत से नहीं हूँ 24इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते कि वह मैं हूँ। तुम अपने पापों में मरोगे।"

25फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "तू कौन है?"

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जैसा कि प्रारम्भ से ही मैं तुमसे कहता आ रहा हूँ। 26तुमसे कहने को और तुम्हारा न्याय करने को मेरे पास बहुत कुछ है। पर सत्य वही है जिसने मुझे भेजा है। मैं वही कहता हूँ जो मैंने उससे सुना है।"

27वे यह नहीं जान पाये कि यीशु उन्हें परम पिता के बारे में बता रहा है। 28फिर यीशु ने उनसे कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठा लोगे तब तुम जानोगे कि वह मैं हूँ। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता। मैं यह जो कह रहा हूँ, वही है जो मुझे परम पिता ने सिखाया है। 29और वह जिसने मुझे भेजा है, मेरे साथ है। उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा वही करता हूँ जो उसे भाता है।" 30यीशु जब ये बातें कह रहा था, तो बहुत से लोग उसके विश्वासी हो गये।

पाप से छुटकारे का उपदेश

31सो यीशु उन यहूदी नेताओं से कहने लगा जो उसमें विश्वास करते थे, "यदि तुम लोग मेरे उपदेशों पर चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। 32और सत्य को जान लोगे। और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"

33इस पर उन्होंने यीशु से प्रश्न किया, "हम इब्राहीम के वंशज हैं और हमने कभी किसी की दासता नहीं की। फिर तुम कैसे कहते हो कि तुम मुक्त हो जाओगे।"

34यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। हर वह जो पाप करता रहता है, पाप का दास है। 35और कोई दास सदा परिवार के साथ नहीं रह सकता। केवल पुत्र ही सदा साथ रह सकता है। 36अत: यदि पुत्र तुम्हें मुक्त करता है तभी तुम वास्तव में मुक्त होगे। मैं जानता हूँ तुम इब्राहीम के वंश से हो। 37पर तुम मुझे मार

डालने का यत्न कर रहे हो। क्योंकि मेरे उपदेशों के लिये तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है। 38मैं वही कहता हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाया है और तुम वह करते हो जो तुम्हारे पिता से तुमने सुना है।"

39इस पर उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हमारे पिता इब्राहीम हैं।" यीशु ने कहा, "यदि तुम इब्राहीम की संतान होते तो तुम वही काम करते जो इब्राहीम ने किये थे।
40पर तुम तो अब मुझे यानी एक ऐसे मनुष्य को, जो तुमसे उस सत्य को कहता है जिसे उसने परमेश्वर से सुना है, मार डालना चाहते हो। इब्राहीम ने तो ऐसा नहीं किया।
41तुम अपने पिता के कार्य करते हो।"

फिर उन्होंने यीशु से कहा, "हम व्यभिचार के परिणाम स्वरूप पैदा नहीं हुए हैं। हमारा केवल एक पिता है और वह है परमेश्वर।"

42यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं परमेश्वर में से ही आया हूँ। और अब मैं यहाँ हूँ। मैं अपने आप से नहीं आया हूँ। बल्कि मुझे उसने भेजा है। 43मैं जो कह रहा हूँ उसे तुम समझते क्यों नहीं? इसका कारण यही है कि तुम मेरा संदेश नहीं सुनते। 44तुम अपने पिता शैतान की संतान हो। और तुम अपने पिता की इच्छा पर चलना चाहते हो। वह प्रारम्भ से ही एक हत्यारा था। और उसने सत्य का पक्ष कभी नहीं लिया। क्योंकि उसमें सत्य का कोई अंश तक नहीं है। जब वह झूठ बोलता है तो सहज भाव से बोलता है क्योंकि वह झूठा है और सभी झूठों को जन्म देता है। 45पर क्योंकि मैं सत्य कह रहा हूँ, तुम लोग मुझमें विश्वास नहीं करोगे। 46तुममें से कौन मुझ पर पापी होने का लांछन लगा सकता है। यदि मैं सत्य कहता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? 47वह व्यक्ति जो परमेश्वर का है, परमेश्वर के वचनों को सुनता है। इसी कारण तुम मेरी बात नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

अपने और इब्राहीम के विषय में यीशु का कथन

48उत्तर में यहूदियों ने उससे कहा, "यह कहते हुए क्या हम सही नहीं थे कि तू सामरी है और तुझ पर कोई दुष्टात्मा सवार है?"

49यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ पर कोई दुष्टात्मा नहीं है। बल्कि मैं तो अपने परम पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते हो। 50मैं अपनी महिमा नहीं चाहता हूँ पर एक ऐसा है जो मेरी महिमा चाहता है और न्याय भी करता है। 51मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ यदि कोई मेरे उपदेशों को धारण करेगा तो वह मौत को कभी नहीं देखेगा।"

52इस पर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "अब हम यह जान गये हैं कि तुम में कोई दुष्टात्मा समाया है। यहाँ तक कि इब्राहीम और नबी भी मर गये और तू कहता है यदि कोई मेरे उपदेश पर चले तो उसकी मौत कभी नहीं होगी।
53निश्चय ही तू हमारे पूर्वज इब्राहीम से बड़ा नहीं है जो मर गया। और नबी भी मर गये। फिर तू क्या सोचता है? तू है क्या?"

54यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं अपनी महिमा करूँ तो वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं है। जो मुझे महिमा देता है वह मेरा परम पिता है। जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। 55तुमने उसे कभी नहीं जाना। पर मैं उसे जानता हूँ, यदि मैं यह कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं भी तुम लोगों की ही तरह झूठा ठहरूँगा। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, और जो वह कहता है उसका पालन करता हूँ। 56तुम्हारा पूर्वज यह जानकर कि वह उस दिन को देखेगा जब मैं आऊँगा आनन्द से भर गया था। उसने इसे देखा और प्रसन्न हुआ।"

57फिर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "तू अभी पचास बरस का भी नहीं है और तूने इब्राहीम को देख लिया।"

58यीशु ने इस पर उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ। इब्राहीम से पहले भी मैं हूँ।" 59इस पर उन्होंने यीशु पर मारने के लिये बड़े-बड़े पत्थर उठा लिये किन्तु यीशु छुपते-छिपाते मन्दिर से चला गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टि-दान

9 जाते हुए उसने जन्म से अंधे एक व्यक्ति को देखा।
2इस पर यीशु के अनुयायियों ने उससे पूछा, "हे रब्बी, यह व्यक्ति अपने पापों से अंधा जन्मा है या अपने माता-पिता के?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप किए हैं और न इसके माता-पिता ने बल्कि यह इसलिये अंधा जन्मा है ताकि इसे अच्छा करके परमेश्वर की शक्ति दिखायी जा सके। 4उसके कामों को जिसने मुझे भेजा है, हमें निश्चित रूप से दिन रहते ही कर लेना चाहिये क्योंकि जब रात हो

जायेगी कोई काम नहीं कर सकेगा। 5जब मैं जगत में हूँ मैं जगत की ज्योति हूँ।"

6इतना कहकर यीशु ने धरती पर थूका और उससे थोड़ी मिट्टी सानी उसे अंधे की आंखों पर मल दिया। 7और उससे कहा, "जा और शिलोह के तालाब में धो आ। (शीलोह यानी भेजा हुआ।) और फिर उस अंधे ने जाकर आँखें धो डालीं। जब वह लौटा तो उसे दिखाई दे रहा था।"

8फिर उसके पड़ोसी और वे लोग जो उसे भीख माँगता देखने के आदी थे बोले, "क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?"

9कुछ ने कहा, "यह वही है," दूसरो ने कहा, "नहीं, यह वह नहीं है, उसका जैसा दिखाई देता है।" इस पर अंधा कहने लगा, "मैं वही हूँ।"

10इस पर लोगों ने उससे पूछा, "तुझे आँखों की ज्योति कैसे मिली?"

11उसने जवाब दिया, "यीशु नाम के एक व्यक्ति ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर मली और मुझसे कहा, जा और शीलोह में धो आ और मैं जाकर धो आया। बस मुझे आँखों की ज्योति मिल गयी।"

12फिर लोगों ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे पता नहीं।"

दृष्टि–दान पर फरीसियों का विवाद

13उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, वे लोग फ़रीसियों के पास ले गये। 14यीशु ने जिस दिन मिट्टी सानकर उस अंधे को आँखें दी थीं वह सब्त का दिन था। 15इस तरह फरीसी उससे एक बार फिर पूछने लगे, "उसने आँखों की ज्योति कैसे पायी?"

उसने बताया, "उसने मेरी आँखों पर गीली मिट्टी लगायी, मैंने उसे धोया और अब मैं देख सकता हूँ।"

16कुछ फरीसी कहने लगे, "यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि यह सब्त का पालन नहीं करता।"

उस पर दूसरे बोले, "कोई पापी आदमी भला ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे कर सकता है?" इस तरह उनमें आपस में ही विवाद होने लगा।

17वे एक बार फिर उस अंधे से बोले, "उसके बारे में तू क्या कहता है? क्योंकि इस तथ्य को तू जानता है कि उसने तुझे आँखें दी हैं।"

तब उसने कहा, "वह नबी है।"

18यहूदी नेताओं ने उस समय तक उस पर विश्वास नहीं किया कि वह व्यक्ति अंधा था और उसे आँखों की ज्योति मिल गयी है। जब तक उसके माता–पिता को बुलाकर 19उन्होंने यह नहीं पूछ लिया, "क्या यही तुम्हारा पुत्र है जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा था। फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अब देख सकता है?"

20इस पर उसके माता पिता ने उत्तर देते हुए कहा, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अंधा जन्मा था। 21पर हम यह नहीं जानते कि यह अब देख कैसे सकता है? और न ही हम यह जानते हैं कि इसे आँखों की ज्योति किसने दी है। इसी से पूछो, यह काफ़ी बड़ा हो चुका है। अपने बारे में यह खुद बता सकता है।" 22(उसके माता–पिता ने यह बात इसलिये कही थी कि वे यहूदी नेताओं से डरते थे। क्योंकि वे इस पर पहले ही सहमत हो चुके थे कि यदि कोई यीशु को मसीह माने तो उसे सायनागोग से निकाल दिया जाये। 23इसलिये उसके माता–पिता ने कहा था, "वह काफ़ी बड़ा हो चुका है, उससे पूछो।)"

24यहूदी नेताओं ने उस व्यक्ति को दूसरी बारी फिर बुलाया जो अंधा था, और कहा, "सच कहो, और जो तू ठीक हुआ है उसका सिला परमेश्वर को दे। हमें मालूम है कि यह व्यक्ति पापी है।"

25इस पर उसने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं, मैं तो बस यह जानता हूँ कि मैं अंधा था, और अब देख सकता हूँ।"

26इस पर उन्होंने उससे पूछा, "उसने क्या किया? तुझे उसने आँखें कैसे दीं?"

27इस पर उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा, "मैं तुम्हें बता तो चुका हूँ, पर तुम मेरी बात सुनते ही नहीं। तुम वह सब कुछ फिर फिर क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके अनुयायी बनना चाहते हो?"

28इस पर उन्होंने उसका अपमान किया और कहा, "तू उसका अनुयायी है पर हम मूसा के अनुयायी हैं। 29हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की थी पर हम नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से आया है?"

30उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने उनसे कहा, "आश्चर्य है तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है? पर मुझे उसने

आँखों की ज्योति दी है। 31हम जानते हैं कि परमेश्वर
पापियों की नहीं सुनता बल्कि वह तो उनकी सुनता है जो
समर्पित हैं और वही करते हैं जो परमेश्वर की इच्छा है।
32कभी सुना नहीं गया कि किसी ने किसी जन्म से अंधे
व्यक्ति को आँखों की ज्योति दी हो। 33यदि यह व्यक्ति
परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो यह कुछ नहीं कर
सकता था।"

34उत्तर में उन्होंने कहा, "तू सदा से पापी रहा है। ठीक
तब से जबसे तू पैदा हुआ। और अब तू हमें पढ़ाने चला
है?" और इस तरह यहूदी नेताओं ने उसे वहाँ से बाहर
धकेल दिया।

आत्मिक अंधापन

35यीशु ने सुना कि यहूदी नेताओं ने उसे धकेल कर
बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलकर उसने कहा,
"क्या तू मनुष्य के पुत्र में विश्वास करता है?" उत्तर में वह
व्यक्ति बोला

36"हे प्रभु, बताइये वह कौन है? ताकि मैं उसमें विश्वास
करूँ!"

37यीशु ने उससे कहा, "तू उसे देख चुका है और वह
वही है जिससे तू इस समय बात कर रहा है।"

38फिर वह बोला, "प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।" और
वह नतमस्तक हो गया।

39यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय करने आया हूँ,
ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगें और वे जो देख रहे
हैं, नेत्रहीन हो जायें।"

40कुछ फरीसी जो यीशु के साथ थे, यह सुनकर यीशु
से बोले, "निश्चय ही हम अंधे नहीं हैं। क्या हम अंधे हैं?"

41यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अँधे होते तो तुम पापी
नहीं होते पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख सकते
हो तो वास्तव में तुम पाप-युक्त हो।"

चरवाहा और उसकी भेड़ें

10 यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो
भेड़ों के बाड़े में द्वार से प्रवेश न करके बाड़ा
फाँद कर दूसरे प्रकार से घुसता है, वह चोर है, लुटेरा है।
2किन्तु जो दरवाजे से घुसता है, वही भेड़ों का चरवाहा है।
3द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है। और भेड़ें उसकी
आवाज सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर
पुकारता है और उन्हें बाड़े से बाहर ले जाता है। 4जब वह
अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है तो उनके
आगे-आगे चलता है। और भेड़ें उसके पीछे पीछे चलती हैं
क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं। 5भेड़ें किसी
अनजान का अनुसरण कभी नहीं करतीं। वे तो उससे दूर
भागती हैं। क्योंकि वे उस अनजान की आवाज नहीं
पहचानतीं।" 6यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त दिया पर वे नहीं
समझ पाये कि यीशु उन्हें क्या बता रहा है।

अच्छा चरवाहा-यीशु

7इस पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य
बताता हूँ, भेड़ों के लिये द्वार मैं हूँ। 8वे सब जो मुझसे
पहले आये थे, चोर और लुटेरे हैं। किन्तु भेड़ों ने उनकी
नहीं सुनी। 9मैं द्वार हूँ। यदि कोई मुझमें से होकर प्रवेश
करता है तो उसकी रक्षा होगी वह भीतर आयेगा और
बाहर जा सकेगा और उसे चारागाह मिलेगी। 10चोर
केवल चोरी, हत्या और विनाश के लिये ही आता है।
किन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा
सकें।

11"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये
अपनी जान दे देता है। 12किन्तु किराये का मज़दूर क्योंकि
वह चरवाहा नहीं होता, भेड़ें उसकी अपनी नहीं होतीं, जब
भेड़िये को आते देखता है, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता
है। और भेड़िया उन पर हमला करके उन्हें तितर-बितर
कर देता है। 13(किराये का मज़दूर, इसलिये भाग जाता है
क्योंकि वह दैनिक मज़दूरी का आदमी है और इसीलिए
भेड़ों की परवाह नहीं करता)।

14"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता हूँ
और मेरी भेड़ें मुझे 15वैसे ही जानती हैं जैसे परम पिता
मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ। अपनी
भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ। 16मेरी और भेड़ें भी
हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी लाना होगा। वे भी
मेरी आवाज सुनेगीं और इसी बाड़े में आकर एक हो जायेंगी।
फिर सबका एक ही चरवाहा होगा। 17परम पिता मुझसे
इसीलिये प्रेम करता है कि मैं अपना जीवन देता हूँ। मैं
अपना जीवन देता हूँ ताकि मैं उसे फिर वापस ले सकूँ।
इसे मुझसे कोई लेता नहीं है। 18बल्कि मैं अपने आप
अपनी इच्छा से इसे देता हूँ। मुझे इसे देने का अधिकार है।
यह आदेश मुझे मेरे परम पिता से मिला है।"

[19]इन शब्दों के कारण यहूदी नेताओं में एक और फूट पड़ गयी। [20]बहुत से कहने लगे, "यह पागल हो गया है। इस पर दुष्टात्मा सवार है। तुम इसकी परवाह क्यों करते हो।"

[21]दूसरे कहने लगे, "ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के नहीं हो सकते जिस पर दुष्टात्मा सवार हो। निश्चय ही कोई दुष्टत्मा किसी अंधे को आँखें नहीं दे सकती।"

यहूदी यीशु के विरोध में

[22]फिर यरूशलेम में समर्पण का उत्सव* आया। सर्दी के दिन थे। [23]यीशु मंदिर में सुलेमान के दालान में टहल रहा था। [24]तभी यहूदी नेताओं ने उसे घेर लिया और बोले, "तू हमें कब तक तंग करता रहेगा? यदि तू मसीह है, तो साफ–साफ बता।"

[25]यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बता चुका हूँ और तुम विश्वास नहीं करते। वे काम जिन्हें मैं परम पिता के नाम पर कर रहा हूँ, स्वयं मेरी साक्षी हैं। [26]किन्तु तुम लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। [27]मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और [28]मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा। और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा। [29]मुझे उन्हें सौंपने वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें कोई नहीं छीन सकता। [30]"मेरा पिता और मैं एक हैं।"

[31]फिर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिये पत्थर उठा लिये। [32]यीशु ने उनसे कहा, "पिता की ओर से मैंने तुम्हें अनेक अच्छे कार्य दिखाये हैं। उनमें से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करना चाहते हो?"

[33]यहूदी नेताओं ने उसे उत्तर दिया, "हम तुझ पर किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे हैं बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि तूने परमेश्वर का अपमान किया है और तू, जो केवल एक मनुष्य है, अपने को परमेश्वर घोषित कर रहा है!"

[34]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या यह तुम्हारे विधान में नहीं लिखा है, 'मैंने कहा तुम सभी ईश्वर हो?'* [35]क्या यहाँ ईश्वर उन्हीं लोगों के लिये नहीं कहा गया जिन्हें परम पिता का संदेश मिल चुका है? और धर्म शास्त्र का खंडन नहीं किया जा सकता। [36]क्या तुम 'तू परमेश्वर का अपमान कर रहा है' यह उसके लिये कह रहे हो, जिसे परम पिता ने समर्पित कर इस जगत् को भेजा है, केवल इसलिये कि मैंने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'? [37]यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य नहीं कर रहा हूँ तो मेरा विश्वास मत करो [38]किन्तु यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य कर रहा हूँ, तो, यदि तुम मुझ में विश्वास नहीं करते तो उन कार्यों में ही विश्वास करो जिससे तुम यह अनुभव कर सको और जान सको कि परम पिता मुझ में है और मैं परम पिता में।"

[39]इस पर यहूदियों ने उसे बंदी बनाने का प्रयत्न एक बार फिर किया। पर यीशु उनके हाथों से बच निकला।

[40]यीशु फिर यर्दन के पार उस स्थान पर चला गया जहाँ पहले यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ ठहरा, [41]बहुत से लोग उसके पास आये और कहने लगे, "यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किये पर इस व्यक्ति के बारे में यूहन्ना ने जो कुछ कहा था सब सच निकला।" [42]फिर वहाँ बहुत से लोग यीशु में विश्वासी हो गये।

लाज़र की मृत्यु

11 बैतनिय्याह का लाज़र नाम का एक व्यक्ति बीमार था। यह वह नगर था जहाँ मरियम और उसकी बहन मारथा रहती थीं। [2](मरियम वह स्त्री थी जिसने प्रभु पर इत्र डाला था और अपने सिर के बालों से प्रभु के पैर पोंछे थे। लाज़र नाम का रोगी उसी का भाई था।) [3]इन बहनों ने यीशु के पास समाचार भेजा, "हे प्रभु, जिसे तू प्यार करता है, वह बीमार है।"

[4]यीशु ने जब यह सुना तो वह बोला, "यह बीमारी जान लेवा नहीं है। बल्कि परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने के लिये है। जिससे परमेश्वर के पुत्र को महिमा प्राप्त होगी।" [5](यीशु मारथा, उसकी बहन और लाज़र को प्यार करता था।) [6]इसलिए जब उसने सुना कि लाज़र बीमार हो गया है तो जहाँ वह ठहरा था, दो दिन और रुका। [7]फिर यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, "आओ हम यहूदिया लौट चलें।"

[8]इस पर उसके अनुयायियों ने उससे कहा, "हे रब्बी, कुछ ही दिन पहले यहूदी नेता तुझ पर पथराव करने का यत्न कर रहे थे और तू फिर वहीं जा रहा है।"

समर्पण का उत्सव दिसम्बर का एक विशेष सप्ताह जिसे यहूदी मनाते थे।

मैंने कहा ... है भजन. 82:6

9यीशु ने उत्तर दिया, "क्या एक दिन में बारह घंटे नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रकाश में चले तो वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश को देखता है। **10**पर यदि कोई रात में चले तो वह ठोकर खाता है क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं है।"

11उसने यह कहा और फिर उनसे बोला, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है पर मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।"

12फिर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि उसे नींद आ गयी है तो वह अच्छा हो जायेगा।"

13यीशु लाज़र की मौत के बारे में कह रहा था पर शिष्यों ने सोचा कि वह स्वाभाविक नींद की बात कर रहा था। **14**इसलिये फिर यीशु ने उनसे स्पष्ट कहा, "लाज़र मर चुका है।" **15**मैं तुम्हारे लिये प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ नहीं था। क्योंकि अब तुम मुझमें विश्वास कर सकोगे। आओ अब हम उसके पास चलें।"

16फिर थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता था, दूसरे शिष्यों से कहा, "आओ हम भी प्रभु के साथ वहाँ चलें ताकि हम भी उसके साथ मर सकें।"

बैतनिय्याह में यीशु

17इस तरह यीशु चल दिया और वहाँ जाकर उसने पाया कि लाज़र को क्रब में रखे चार दिन हो चुके हैं। **18**(बैतनिय्याह यरूशलेम से लगभग तीन किलोमीटर दूर था।) **19**भाई की मृत्यु पर मारथा और मरियम को सांत्वना देने के लिये बहुत से यहूदी नेता आये थे।

20जब मारथा ने सुना कि यीशु आया है तो वह उससे मिलने गयी। जबकि मरियम घर में ही रही **21**वहाँ जाकर मारथा ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं। **22**पर मैं जानती हूँ कि अब भी तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा वह तुझे देगा।"

23यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई जी उठेगा।" **24**मारथा ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि पुनरुत्थान के अन्तिम दिन वह जी उठेगा।"

25यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं ही जीवन हूँ। वह जो मुझमें विश्वास करता है जियेगा। **26**और हर वह, जो जीवित है और मुझमें विश्वास रखता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू यह विश्वास रखती है।"

27वह यीशु से बोली, "हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि तू मसीह है, परमेश्वर का पुत्र जो जगत् में आने वाला था।"

यीशु रो दिया

28फिर इतना कह कर वह वहाँ से चली गयी और अपनी बहन को अकेले में बुलाकर बोली, "गुरु यहीं है, वह तुझे बुला रहा है।" **29**जब मरियम ने यह सुना तो वह तत्काल उठकर उससे मिलने चल दी। **30**(यीशु अभी तक गाँव में नहीं आया था। वह अभी भी उसी स्थान पर था जहाँ उसे मारथा मिली थी।) **31**फिर जो यहूदी घर पर उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि मरियम उठकर झटपट चल दी तो वे यह सोच कर कि वह कब्र पर विलाप करने जा रही है, उसके पीछे हो लिये। **32**मरियम जब वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था तो यीशु को देखकर उसके चरणों में गिर पड़ी और बोली, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं।"

33यीशु ने जब उसे और उसके साथ आये यहूदियों को रोते बिलखते देखा तो उसकी आत्मा तड़प उठी। वह बहुत व्याकुल हुआ। **34**और बोला, "तुमने उसे कहाँ रखा है?" वे उससे बोले, "प्रभु, आ और देख।"

35यीशु फूट-फूट कर रोने लगा।

36इस पर यहूदी कहने लगे, "देखो! यह लाज़र को कितना प्यार करता है।"

37मगर उनमें से कुछ ने कहा, "यह व्यक्ति जिसने अंधे को आँखे दीं, क्या लाज़र को भी मरने से नहीं बचा सकता?"

यीशु का लाज़र को फिर जीवित करना

38तब यीशु अपने मन में एक बार फिर बहुत अधिक व्याकुल हुआ और कब्र की तरफ गया। यह एक गुफा थी और उसका द्वार एक चट्टान से ढका हुआ था। **39**यीशु ने कहा, "इस चट्टान को हटाओ।"

मृतक की बहन मारथा ने कहा, "हे प्रभु, अब तक तो वहाँ से दुर्गन्ध आ रही होगी क्योंकि उसे दफनाए चार दिन हो चुके हैं।"

40यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा का दर्शन पायेगी।"

41तब उन्होंने उस चट्टान को हटा दिया। और यीशु ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, "परम पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है। **42**मैं जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है किन्तु चारों ओर

इकट्ठी भीड़ के लिये मैंने यह कहा है जिससे वे यह मान सकें कि मुझे तूने भेजा है।" 43यह कहने के बाद उसने ऊँचे स्वर में पुकारा "लाज़र, बाहर आ!" 44वह व्यक्ति जो मर चुका था बाहर निकल आया। उसके हाथ पैर अभी भी कफ़न में बँधे थें। उसका मुँह कपड़े में लिपटा हुआ था।

यीशु ने लोगों से कहा, "इसे खोल दो और जाने दो।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

45इसके बाद मरियम के साथ आये यहूदियों में से बहुतों ने यीशु के इस कार्य को देखकर उस पर विश्वास किया। 46किन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास गये और जो कुछ यीशु ने किया था, उन्हें बताया। 47फिर महायाजकों और फरीसियों ने यहूदियों की सबसे ऊँची परिषद बुलाई। और कहा, "हमें क्या करना चाहिये? यह व्यक्ति बहुत से आश्चर्य चिह्न दिखा रहा है। 48यदि हमने उसे ऐसे ही करते रहने दिया तो हर कोई उस पर विश्वास करने लगेगा और इस तरह रोमी लोग यहाँ आ जायेंगे और हमारे मन्दिर व देश को नष्ट कर देंगे।"

49किन्तु उस वर्ष के महायाजक कैफा ने उनसे कहा, "तुम लोग कुछ भी नहीं जानते। 50और न ही तुम्हें इस बात की समझ है कि इसी में तुम्हारा लाभ है कि बजाय इसके कि सारी जाति ही नष्ट हो जाये, सबके लिये एक आदमी को मारना होगा।"

51यह बात उसने अपनी तरफ़ से नहीं कही थी पर क्योंकि वह उस साल का महायाजक था उसने भविष्यवाणी की थी कि यीशु लोगों के लिये मरने जा रहा है 52न केवल यहूदियों के लिये बल्कि परमेश्वर की संतान जो तितर–बितर हैं, उन्हें एकत्र करने के लिये।

53इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मारने के कुचक्र रचने लगे। 54यीशु यहूदियों के बीच फिर कभी प्रकट होकर नहीं गया। और यरूशलेम छोड़कर वह निर्जन रेगिस्तान के पास इफ्राईम नगर जा कर अपने शिष्यों के साथ रहने लगा।

55यहूदियों का फ़सह पर्व आने को था। बहुत से लोग अपने गाँवों से यरूशलेम चले गये थे ताकि वे फ़सह पर्व से पहले अपने को पवित्र कर लें। 56वे यीशु को खोज रहे थे। इसलिये जब वे मन्दिर में खड़े थे तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछना शुरू किया, "तुम क्या सोचते हो, क्या निश्चय ही वह इस पर्व में नहीं आयेगा।" 57फिर महायाजकों और फरीसियों ने यह आदेश दिया कि यदि किसी को पता चले कि यीशु कहाँ है तो वह इसकी सूचना दे ताकि वे उसे बंदी बना सकें।

यीशु बैतनिय्याह में अपने मित्रों के साथ

12 फ़सह पर्व से छह दिन पहले यीशु बैतनिय्याह को रवाना हो गया। वहीं लाज़र रहता था जिसे यीशु ने मृतकों मे से जीवित किया था। 2वहाँ यीशु के लिये उन्होंने भोजन तैयार किया। मारथा ने उसे परोसा। यीशु के साथ भोजन के लिये जो बैठे थे लाज़र भी उनमें एक था। 3मरियम ने जटामाँसी से तैयार किया हुआ कोई आधा लीटर बहुमूल्य इत्र यीशु के पैरों पर लगायाा और फिर अपने केशों से उसके चरणों को पोंछा। सारा घर सुगंध से महक उठा।

4उसके शिष्यों में से एक यहूदा इस्करियोती ने, जो उसे धोखा देने वाला था कहा, 5"इस इत्र को तीन सौ चाँदी के सिक्कों में बेचकर धन गरीबों को क्यों नहीं दे दिया गया?" 6उसने यह बात इसलिये नहीं कही थी कि उसे गरीबों की बहुत चिन्ता थी बल्कि वह तो स्वयं एक चोर था। और रूपयों की थैली उसी के पास रहती थी। उसमें जो डाला जाता उसे वह चुरा लेता था।

7तब यीशु ने कहा, "रहने दो। उसे रोको मत। उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। 8गरीब लोग सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।"

लाज़र के विरुद्ध षड़यन्त्र

9फ़सह पर्व पर आयी यहूदियों की भारी भीड़ को जब यह पता चला कि यीशु वहीं बैतनिय्याह में है तो वह उससे मिलने आयी। न केवल उससे बल्कि वह उस लाज़र को देखने के लिये भी आयी थी जिसे यीशु ने मरने के बाद फिर जीवित कर दिया था। 10इसलिये महायाजकों ने लाज़र को भी मारने की योजना बनायी। 11क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी अपने नेताओं को छोड़कर यीशु में विश्वास करने लगे थे।

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

12अगले दिन फ़सह पर्व पर आई भीड़ ने जब यह सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है 13तो लोग खजूर

की टहनियाँ लेकर उससे मिलने चल पड़े। वे पुकार रहे थे,

"होशन्ना!
धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।
वह जो इस्राएल का राजा है।"

भजन संहिता 118:25–26

14तब यीशु को एक गधा मिला और वह उस पर सवार हो गया। जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है:

15 "सिय्योन की पुत्री,* डर मत!
देख! तेरा राजा गधे के बछेरे
पर बैठा आ रहा है।"

जकर्याह 9:9

16पहले तो उसके अनुयायी इसे समझे ही नहीं किन्तु जब यीशु की महिमा प्रकट हुई तो उन्हें याद आया कि शास्त्र में ये बातें उसके बारे में लिखी हुई थीं–और लोगों ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया था।

यीशु के विषय में लोगों का कथन

17उसके साथ जो भीड़ थी उसने यह साक्षी दी कि
उसने लाज़र को कब्र से पुकार कर मरे हुओं में से
पुनर्जीवित किया। 18लोग उससे मिलने इसलिए आये थे
कि उन्होंने सुना था कि यह वही है जिसने वह आश्चर्यकर्म
किया है। 19तब फरीसी आपस में कहने लगे, "सोचो तुम
लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो, देखो सारा जगत् उसके
पीछे हो लिया है।"

अपनी मृत्यु के बारे में यीशु का वचन

20फ़सह पर्व पर जो आराधना करने आये थे उनमें से
कुछ यूनानी थे। 21वे गलील में बैतसैदा के निवासी
फिलिप्पुस के पास गये और उससे विनती करते हुए कहने
लगे, "महोदय, हम यीशु के दर्शन करना चाहते हैं।" तब
फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को आकर बताया। 22फिर
अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु के पास आकर कहा।
23यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मानव–पुत्र के महिमावान
होने का समय आ गया है। 24मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि
जब तक गेहूँ का एक दाना धरती पर गिर कर मर नहीं
जाता, तब तक वह एक ही रहता है। पर जब वह मर
जाता है तो अनगिनत दानों को जन्म देता है।" 25जिसे
अपना जीवन प्रिय है, वह उसे खो देगा किन्तु वह, जिसे
इस संसार में अपने जीवन से प्रेम नहीं है, उसे अनन्त
जीवन के लिये रखेगा। 26यदि कोई मेरी सेवा करता है तो
वह निश्चय ही मेरा अनुसरण करे और जहाँ मैं हूँ, वहीं
मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो
परम पिता उसका आदर करेगा।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

27"अब मेरा जी घबरा रहा है। क्या मैं कहूँ, 'हे पिता,
मुझे दुख की इस घड़ी से बचा' किन्तु इस घड़ी के लिए ही
तो मैं आया हूँ। 28हे पिता, अपने नाम को महिमा प्रदान
कर!"

तब आकाशवाणी हुई, "मैंने इसकी महिमा की है और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा।"

29तब वहाँ मौजूद भीड़, जिसने यह सुना था, कहने
लगी कि कोई बादल गरजा है। दूसरे कहने लगे, "किसी
स्वर्गदूत ने उससे बात की है।"

30उत्तर में यीशु ने कहा, "यह आकाशवाणी मेरे लिए
नहीं बल्कि तुम्हारे लिए थी। 31अब इस जगत् के न्याय
का समय आ गया है। अब इस जगत् के शासक को निकाल
दिया जायेगा। 32और यदि मैं धरती के ऊपर उठा लिया
गया तो सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित करूँगा।"
33(वह यह बताने के लिए ऐसा कह रहा था कि वह कैसी
मृत्यु मरने जा रहा है।)

34इस पर भीड़ ने उसको जवाब दिया, "हमने व्यवस्था
की यह बात सुनी है कि मसीह सदा रहेगा इसलिये तुम
कैसे कहते हो कि मनुष्य के पुत्र को निश्चय ही ऊपर
उठाया जायेगा। यह मनुष्य का पुत्र कौन है?"

35तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे बीच ज्योति अभी
कुछ समय और रहेगी। जब तक ज्योति है चलते रहो।
ताकि अँधेरा तुम्हें घेर न ले क्योंकि जो अँधेरे में चलता
है, नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। 36जब तक ज्योति
तुम्हारे पास है उसमें विश्वास बनाये रखो ताकि तुम लोग
ज्योतिर्मय हो सको।" यीशु यह कहकर कहीं चला गया
और उनसे छुप गया।

यहूदियों का यीशु में अविश्वास

37यद्यपि यीशु ने उनके सामने ये सब आश्चर्य चिन्ह
प्रकट किये किन्तु उन्होंने विश्वास नहीं किया 38ताकि

सिय्योन की पुत्री अर्थात् यरूशलेम।

भविष्यवक्ता यशायाह ने जो यह कहा था सत्य सिद्ध हो

"प्रभु हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है?
किस पर प्रभु की शक्ति प्रकट की गयी है?"

यशायाह 53:1

39इसी कारण वे विश्वास नहीं कर सके। क्योंकि यशायाह ने फिर कहा था,

40 "उसने उनकी आँखे अंधी और
उनका हृदय कठोर बनाया ताकि
वे अपनी आँखों से देख न सकें और
बुद्धि से समझ न पायें और मेरी ओर
न मुड़ें जिससे मैं उन्हें चंगा कर सकूँ।"

यशायाह 6:10

41यशायाह ने यह इसलिये कहा था कि उसने उसकी महिमा देखी थी और उसके विषय में बातें भी की थीं।

42फिर भी बहुत थे यहाँ तक कि यहूदी नेताओं में से भी ऐसे अनेक थे जिन्होंने उसमें विश्वास किया। किन्तु फ़रीसियों के कारण अपने विश्वास की खुले तौर पर घोषणा नहीं की, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें आराधना सभा से निकाले जाने का भय था। 43उन्हें मनुष्यों द्वारा दिया गया सम्मान परमेश्वर द्वारा दिये गये सम्मान से अधिक प्यारा था।

यीशु के उपदेशों पर ही मनुष्य का न्याय होगा

44यीशु ने पुकार कर कहा, "वह जो मुझ में विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि उसमें विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है। 45और जो मुझे देखता है, वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। 46मैं जगत् में प्रकाश के रूप में आया ताकि हर वह व्यक्ति जो मुझ में विश्वास रखता है, अंधकार में न रहे।

47"यदि कोई मेरे शब्दों को सुनकर भी उनका पालन नहीं करता तो भी उसे मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत् को दोषी ठहराने नहीं बल्कि उसका उद्धार करने आया हूँ। 48जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को स्वीकार नहीं करता, उसके लिये एक है जो उसका न्याय करेगा। वह है मेरा वचन जिसका उपदेश मैंने दिया है। अन्तिम दिन वही उसका न्याय करेगा। 49क्योंकि मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है बल्कि परम पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ और क्या उपदेश दूँ। 50और मैं जानता हूँ कि उसके आदेश का अर्थ है अनन्त जीवन। इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह ठीक वही है जो परम पिता ने मुझ से कहा है।"

यीशु का अपने शिष्यों के पैर धोना

13 फ़सह पर्व से पहले यीशु ने देखा कि इस जगत को छोड़ने और परम पिता के पास जाने का उसका समय आ पहुँचा है तो इस जगत् में जो उसके अपने थे और जिन्हें वह प्रेम करता था, उन पर उसने चरम सीमा का प्रेम दिखाया।

2शाम का खाना चल रहा था। शैतान अब तक शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के मन में यह डाल चुका था कि वह यीशु को धोखे से पकड़वाएगा। 3यीशु यह जानता था कि परम पिता ने सब कुछ उसके हाथों सौंप दिया है और वह परमेश्वर से आया है, और परमेश्वर के पास ही वापस जा रहा है। 4इसलिये वह खाना छोड़ कर खड़ा हो गया। उसने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिये और एक अँगोछा अपने चारों ओर लपेट लिया। 5फिर एक घड़े में जल भरा और अपने शिष्यों के पैर धोने लगा और उस अँगोछे से जो उसने लपेटा हुआ था, उनके पाँव पोंछने लगा।

6फिर जब वह शमौन पतरस के पास पहुँचा तो पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धो रहा है।"

7उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तू नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ पर बाद में जान जायेगा।"

8पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव कभी भी नहीं धोयेगा।"

यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं न धोऊँ तो तू मेरे पास स्थान नहीं पा सकेगा।"

9शमौन पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, केवल मेरे पैर ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।"

10यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे अपने पैरों के सिवा कुछ भी और धोने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि वह पूरी तरह शुद्ध होता है। तुम लोग शुद्ध हो पर सबके सब नहीं।" 11वह उसे जानता था जो उसे धोखे से पकड़वाने वाला है। इसलिए उसने कहा था, "तुम में से सभी शुद्ध नहीं हैं।"

12जब वह उनके पाँव धो चुका तो उसने अपने बाहरी वस्त्र फिर पहन लिये और वापस अपने स्थान पर आकर बैठ गया। और उनसे बोला, “क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे लिये क्या किया है? 13तुम लोग मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु’ कहते हो। और तुम उचित हो। क्योंकि मैं वही हूँ। 14इसलिये यदि मैंनें प्रभु और गुरु होकर भी जब तुम्हारे पैर धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहियें। मैंनें तुम्हारे सामने एक उदाहरण रखा है 15ताकि तुम दूसरों के साथ वही कर सको जो मैनें तुम्हारे साथ किया है। 16मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही एक संदेशवाहक उससे बड़ा है जो उसे भेजता है। 17यदि तुम लोग इन बातों को जानते हो और उन पर चलते हो तो तुम सुखी होगे।

18“मैं तुम सब के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ जिन्हें मैंने चुना है। (और यह भी कि यहूदा विश्वासघाती है) किन्तु मैंने उसे इसलिये चुना है ताकि शास्त्र का यह वचन सत्य हो, ‘वही जिसने मेरी रोटी खायी मेरे विरोध में हो गया।’ 19अब यह घटित होने से पहले ही मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ कि जब यह घटित हो तब तुम विश्वास करो कि वह ‘मैं हूँ’। 20मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ कि वह जो किसी भी मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, मुझको ग्रहण करता है। और जो मुझे ग्रहण करता है, उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।”

यीशु का कथन: मरवाने के लिये उसे कौन पकड़वायेगा

21यह कहने के बाद यीशु बहुत व्याकुल हुआ और साक्षी दी, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, तुम में से एक मुझे धोखा देकर पकड़वायेगा।”

22तब उसके शिष्य एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे। वे निश्चय ही नहीं कर पा रहे थे कि वह किस के बारे में कह रहा है। 23उसका एक शिष्य यीशु के निकट ही बैठा हुआ था। इसे यीशु बहुत प्यार करता था। 24तब शमौन पतरस ने उसे इशारा किया कि पूछे वह कौन हो सकता है जिस के विषय में यीशु बता रहा था।

25यीशु के प्रिय शिष्य ने सहज में ही उसकी छाती पर झुक कर उससे पूछा, “हे प्रभु, वह कौन है?”

26यीशु ने उत्तर दिया, “रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबो कर जिसे मैं दूँगा, वही वह है।” फिर यीशु ने रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबोया और उसे उठा कर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। 27जैसे ही यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया उसमें शैतान समा गया। फिर यीशु ने उससे कहा, “जो तू करने जा रहा है, उसे तुरन्त कर।” 28किन्तु वहाँ बैठे हुओं में से किसी ने भी यह नहीं समझा कि यीशु ने उससे यह बात क्यों कही। 29कुछ ने सोचा कि रुपयों की थैली यहूदा के पास रहती है इसलिए यीशु उससे कह रहा है कि ‘पर्व’ के लिये आवश्यक सामग्री मोल ले आओ या कह रहा है कि ग़रीबों को वह कुछ दे दे। इसलिए यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया

30और तत्काल चला गया। यह रात का समय था।

अपनी मृत्यु के विषय में यीशु का वचन

31उसके चले जाने के बाद यीशु ने कहा, “मनुष्य का पुत्र अब महिमावान हुआ है। और उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है। 32यदि उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है तो परमेश्वर अपने द्वारा उसे महिमावान करेगा। और वह उसे महिमा शीघ्र ही देगा।”

33“हे मेरे प्यारे बच्चों, मैं अब थोड़ी ही देर और तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे और जैसा कि मैंने यहूदी नेताओं से कहा था, तुम वहाँ नहीं आ सकते, जहाँ मैं जा रहा हूँ, वैसा ही अब मैं तुमसे कहता हूँ।

34“मैं तुम्हें एक नयी आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। 35यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तभी हर कोई यह जान पायेगा कि तुम मेरे अनुयायी हो।”

यीशु का वचन–पतरस उसे पहचानने से इन्कार करेगा

36शमौन पतरस ने उससे पूछा, “हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?”

यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता। पर तू बाद में मेरे पीछे आयेगा।”

37पतरस ने उससे पूछा, “हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपने प्राण तक त्याग दूँगा।”

38यीशु ने उत्तर दिया, “तू अपना प्राण त्यागेगा? मैं तुझे सत्य कहता हूँ कि जब तक तू तीन बार इन्कार नहीं कर लेगा तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा।”

यीशु का शिष्यों को समझाना

14 “तुम्हारे हृदय दुखी नहीं होने चाहियें। परमेश्वर में विश्वास रखो और मुझमें भी विश्वास बनाये रखो। 2मेरे परम पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। (यदि ऐसा नहीं होता तो मैं तुमसे कह देता) मैं तुम्हारे लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ। 3और यदि मैं वहाँ जाऊँ और तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ तो मैं फिर यहाँ आऊँगा और अपने साथ तुम्हें भी वहाँ ले चलूँगा ताकि तुम भी वहीं रहो जहाँ मैं हूँ। 4और जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ का रास्ता जानते हो।”

5थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते तू कहाँ जा रहा है। फिर वहाँ का रास्ता कैसे जान सकते हैं?”

6यीशु ने उससे कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता। 7यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम पिता को भी जानता। अब तू उसे जानता है और उसे देख भी चुका है।”

8फिलिप्पुस ने उससे कहा, “हे प्रभु, हमे परम पिता के दर्शन करा दे। हमे संतोष हो जायेगा।”

9यीशु ने उससे कहा, “फिलिप्पुस मैं इतने लम्बे समय से तेरे साथ हूँ और तब भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है, उसने परम पिता को देख लिया है। फिर तू कैसे कहता है ‘हमें परम पिता के दर्शन करा दे।’ 10क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है? वे वचन जो मैं तुम लोगों से कहता हूँ, अपनी ओर से ही नहीं कहता। परम पिता जो मुझ में निवास करता है, अपने काम करता है। 11जब मैं कहता हूँ कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है तो मेरा विश्वास करो और यदि नहीं तो स्वयं कामों के कारण ही विश्वास करो। 12मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो मुझ में विश्वास करता है, वह भी उन कार्यो को करेगा जिन्हें मैं करता हूँ। वास्तव में वह इन कामों से भी बड़े काम करेगा। क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। 13और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता महिमावान हो। 14यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी माँगोगे तो मैं उसे करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

15“यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। 16मैं परम पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक* देगा ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रह सके। 17यानी सत्य का आत्मा* जिसे जगत् ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न तो देखता है और न ही उसे जानता है। तुम लोग उसे जानते हो क्योंकि वह आज तुम्हारे साथ रहता है और भविष्य में तुम में रहेगा।

18“मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। 19कुछ ही समय बाद जगत् मुझे और नहीं देखेगा किन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी जीवित रहोगे। 20उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुममें। 21वह जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है उसे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।”

22यहूदा ने (यहूदा इस्करियोती ने नहीं) उससे कहा, “हे प्रभु, ऐसा क्यों है कि तू अपने आपको हम पर प्रकट करना चाहता है और जगत् पर नहीं?”

23उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “यदि कोई मुझमें प्रेम रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और उससे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। और हम उसके पास आयेंगे और उसके साथ निवास करेंगे। 24जो मुझ में प्रेम नहीं रखता, वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। यह उपदेश जिसे तुम सुन रहे हो, मेरा नहीं है, बल्कि उस परम पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

25“ये बातें मैंने तुमसे तभी कही थीं जब मैं तुम्हारे साथ था। 26किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे परम पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद दिलायेगा।

27“मैं तुम्हारे लिये अपनी शांति छोड़ रहा हूँ। मैं तुम्हें स्वयं अपनी शांति दे रहा हूँ पर तुम्हें इसे मैं वैसे नहीं दे

सहायक उपदेशक अथवा ‘सुखदाता’ यहाँ यीशु पवित्र आत्मा के विषय में बता रहा है।

आत्मा पवित्र आत्मा। इसे परमेश्वर की आत्मा, और सुखदाता भी कहा है। वह मसीह से जुड़ा है। जगत में लोगों के बीच वह परमेश्वर का कार्य करता है। देखें यूहन्ना 16:13

रहा हूँ जैसे जगत देता है। तुम्हारा मन व्याकुल नहीं होना
चाहिये और न ही उसे डरना चाहिये। 28तुमने मुझे कहते
सुना है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास फिर आऊँगा।
यदि तुमने मुझसे प्रेम किया होता तो तुम प्रसन्न होते क्योंकि
मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। क्योंकि परम पिता मुझ
से महान है। 29और अब यह घटित होने से पहले ही मैंने
तुम्हें बता दिया है ताकि जब यह घटित हो तो तुम्हें विश्वास
हो। 30और अधिक समय तक मैं तुम्हारे साथ बात नहीं
करूँगा क्योंकि इस जगत का शासक आ रहा है। मुझ पर
उसका कोई बस नहीं चलता। किन्तु ये बातें इसलिए घट
रहीं हैं ताकि जगत् जान जाये कि मैं परम पिता से प्रेम
करता हूँ। 31और पिता ने जैसी आज्ञा मुझे दी है, मैं वैसा ही
करता हूँ।

"अब उठो, हम यहाँ से चलें।"

यीशु–सच्ची दाखलता

15 यीशु ने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूँ। और मेरा
परम पिता देख–रेख करने वाला माली है।
2मेरी हर उस शाखा को जिस पर फल नहीं लगता, वह
काट देता है। और हर उस शाखा को जो फलती है, वह
छाँटता है ताकि उस पर और अधिक फल लगें। 3तुम
लोग तो जो उपदेश मैंने तुम्हें दिया है, उसके कारण
पहले ही शुद्ध हो। 4तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा।
वैसे ही जैसे कोई शाखा जब तक दाखलता में बनी नहीं
रहती, तब तक अपने आप फल नहीं सकती वैसे ही तुम
भी तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक मुझ में नहीं
रहते।

5"वह दाखलता मैं हूँ और तुम उसकी शाखाएँ हो। जो
मुझमें रहता है, और मैं जिस में रहता हूँ वह बहुत फलता
है क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते। 6यदि
कोई मुझमें नहीं रहता तो वह टूटी शाखा की तरह फेंक
दिया जाता है और सूख जाता है। फिर उन्हें बटोर कर
आग में झोंक दिया जाता है और उन्हें जला दिया जाता
है।

7"यदि तुम मुझ में रहो, और मेरे उपदेश तुम में रहें, तो
जो कुछ तुम चाहते हो माँगो, वह तुम्हें मिलेगा। 8इससे मेरे
परम पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत सफल होवो
और मेरे अनुयायी रहो। 9जैसे परम पिता ने मुझे प्रेम किया
है, मैंने भी तुम्हें वैसे ही प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो।
10यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करोगे तो तुम मेरे प्रेम
में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैं अपने परम पिता के आदेशों
को पालते हुए उसके प्रेम में बना रहता हूँ। 11मैंने ये बातें
तुमसे इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में रहे और
तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो जाये। यह मेरा आदेश है 12कि
तुम आपस में प्रेम करो, वैसे ही जैसे मैंने तुम से प्रेम किया
है। 13बड़े से बड़ा प्रेम जिसे कोई व्यक्ति कर सकता है, वह
है अपने मित्रों के लिए प्राण न्योछावर कर देना। 14जो
आदेश तुम्हें मैं देता हूँ, यदि तुम उन पर चलते रहो तो तुम
मेरे मित्र हो। 15अब से मैं तुम्हें 'दास' नहीं कहूँगा क्योंकि
कोई दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है
बल्कि मैं तुम्हें 'मित्र' कहता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें वह हर
बात बता दी है, जो मैंने अपने परम पिता से सुनी है। 16तुमने
मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है और नियत किया
है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी
सफलता बनी रहे ताकि मेरे नाम में जो कुछ तुम चाहो,
परम पिता तुम्हें दे। 17मैं तुम्हें यह आदेश दे रहा हूँ कि तुम
एक दूसरे से प्रेम करो।

यीशु की चेतावनी

18"यदि संसार तुमसे बैर करता है तो याद रखो वह
तुमसे पहले मुझसे बैर करता है। 19यदि तुम जगत् के
होते तो जगत् तुम्हें अपनों की तरह प्यार करता पर तुम
जगत् के नहीं हो मैंनें तुम्हें जगत् में से चुन लिया है और
इसीलिए जगत् तुमसे बैर करता है। 20मेरा वचन याद रखो
एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है। इसलिये यदि उन्होंने
मुझे यातनाएँ दी हैं तो वे तुम्हें भी यातनाएँ देंगे। और यदि
उन्होंने मेरा वचन माना तो वे तुम्हारा वचन भी मानेंगे।
21पर वे मेरे कारण तुम्हारे साथ ये सब कुछ करेंगे क्योंकि
वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। 22यदि मैं न आता
और उनसे बातें न करता तो वे किसी भी पाप के दोषी न
होते। पर अब अपने पाप के लिए उनके पास कोई बहाना
नहीं है। 23जो मुझसे बैर करता है वह परम पिता से बैर
करता है। 24यदि मैं उनके बीच वे कार्य नहीं करता जो
कभी किसी ने नहीं किये तो वे पाप के दोषी न होते पर
अब जब वे देख चुके हैं तब भी मुझसे और मेरे परम पिता
दोनों से बैर रखते हैं। 25किन्तु यह इसलिये हुआ कि उनके
व्यवस्था–विधान में जो लिखा है वह सच हो सके। 'उन्होंने
बेकार ही मुझ से बैर किया है।'

26"जब वह सहायक (जो सत्य की आत्मा है और परम पिता की ओर से आता है) तुम्हारे पास आयेगा जिसे मैं परम पिता की ओर से भेजूँगा, वह मेरी ओर से साक्षी देगा। 27और तुम भी साक्षी दोगे क्योंकि तुम आदि से ही मेरे साथ रहे हो।

16 "ये बातें मैंने इसलिये तुमसे कही हैं कि तुम्हारा विश्वास न डगमगा जाये। 2वे तुम्हें आराधना सभा से निकाल देंगे। वास्तव में वह समय आ रहा है जब तुम में से किसी को भी मार कर हर कोई सोचेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। 3वे ऐसा इसलिए करेंगे कि वे न तो परम पिता को जानते हैं और न ही मुझे। 4किन्तु मैंने तुमसे यह इसलिये कहा है ताकि जब उनका समय आये तो तुम्हें याद रहे कि मैंने उनके विषय में तुमको बता दिया था।

पवित्र आत्मा के कार्य

"आरम्भ में ये बातें मैंने तुम्हें नहीं बतायी थीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5किन्तु अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है और तुममें से मुझ से कोई नहीं पूछेगा, 'तू कहाँ जा रहा है?' 6क्योंकि मैंने तुम्हें ये बातें बता दी हैं, तुम्हारे हृदय शोक से भर गये हैं। 7किन्तु मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इसमें तुम्हारा भला है कि मैं जा रहा हूँ। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आयेगा। किन्तु यदि मैं चला जाता हूँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8और जब वह आयेगा तो पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में जगत् के संदेह दूर करेगा। 9पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ में विश्वास नहीं रखते, 10धार्मिकता के विषय में इसलिये कि अब मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। और तुम मुझे अब और अधिक नहीं देखोगे। 11न्याय के विषय में इसलिये कि इस जगत के शासक को दोषी ठहराया जा चुका है।

12"मुझे अभी तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं किन्तु तुम अभी उन्हें सह नहीं सकते। 13किन्तु जब सत्य का आत्मा आयेगा तो वह तुम्हें पूर्ण सत्य की राह दिखायेगा क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। वह जो कुछ सुनेगा वही बतायेगा। और जो कुछ होने वाला है उसको प्रकट करेगा। 14वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि जो मेरा है उसे लेकर वह तुम्हें बतायेगा। हर वस्तु जो पिता की है, वह मेरी है। 15इसीलिए मैंने कहा है कि जो कुछ मेरा है वह उसे लेगा और तुम्हें बतायेगा।

शोक आनन्द में बदल जायेगा

16"कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख पाओगे। और थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे।"

17तब उसके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, "यह क्या है जो वह हमें बता रहा है, "थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देख पाओगे?' और 'थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे?' और 'मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ।'" 18फिर वे कहने लगे यह, "थोड़ी देर बाद क्या है! जिसके बारे में वह बता रहा है। वह क्या कह रहा है हम समझ नहीं रहे हैं।"

19यीशु समझ गया कि वे उससे प्रश्न करना चाहते हैं। इसलिये उसने उनसे कहा, "क्या तुम मैंने यह जो कहा है, उस पर आपस में सोच-विचार कर रहे हो, 'कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख पाओगे।' और 'फिर थोड़े समय बाद तुम मुझे देखोगे?' 20मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, तुम विलाप करोगे और रोओगे किन्तु यह जगत् प्रसन्न होगा। तुम्हें शोक होगा किन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जायेगा। 21जब कोई स्त्री जनने लगती है, तब उसे पीड़ा होती है क्योंकि उसकी पीड़ा की घड़ी आ चुकी होती है। किन्तु जब वह बच्चा जन चुकी होती है तो इस आनन्द से कि एक व्यक्ति इस संसार में पैदा हुआ है वह आनन्दित होती है और अपनी पीड़ा को भूल जाती है। 22सो तुम सब भी इस समय वैसे ही दुखी हो किन्तु मैं तुमसे फिर मिलूँगा और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे। और तुम्हारे आनन्द को तुमसे कोई छीन नहीं सकेगा। 23उस दिन तुम मुझसे कोई प्रश्न नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मेरे नाम में परम पिता से तुम जो कुछ भी माँगोगे वह उसे तुम्हें देगा। 24अब तक मेरे नाम में तुमने कुछ नहीं माँगा है। माँगो, तुम पाओगे। ताकि तुम्हें भरपूर आनन्द हो।

जगत पर विजय

25"मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्त देकर बतायी हैं। वह समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टान्त दे- देकर और अधिक समय बात नहीं करूँगा। बल्कि परम पिता के

विषय में खोल कर तुम्हें बताऊँगा। 26उस दिन तुम मेरे
नाम में माँगोगे और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि तुम्हारी
ओर से मैं परम पिता से प्रार्थना करूँगा। 27परम पिता
स्वयं तुम्हें प्यार करता है क्योंकि तुमने मुझे प्यार किया
है। और यह माना है कि मैं परम पिता से आया हूँ। 28मैं
परम पिता से प्रकट हुआ और इस जगत् में आया। और
अब मैं इस जगत् को छोड़कर परम पिता के पास जा रहा
हूँ।"

29उसके शिष्यों ने कहा, "देख अब तू बिना किसी
दृष्टान्त के खोल कर बता रहा है। 30अब हम समझ गये हैं
कि तू सब कुछ जानता है। अब तुझे अपेक्षा नहीं है कि
कोई तुझसे प्रश्न पूछे। इससे हमें यह विश्वास होता है कि
तू परमेश्वर से प्रकट हुआ है।"

31यीशु ने इस पर उनसे कहा, "क्या तुम्हें अब विश्वास
हुआ है? 32सुनो, समय आ रहा है, बल्कि आ ही गया है
जब तुम सब तितर-बितर हो जाओगे और तुम में से हर
कोई अपने-अपने घर लौट जायेगा और मुझे अकेला
छोड़ देगा किन्तु मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि मेरा परम पिता
मेरे साथ है।

33"मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कहीं कि मेरे द्वारा तुम्हें
शांति मिले। जगत् में तुम्हें यातना मिली है किन्तु साहस
रखो, मैंने जगत् को जीत लिया है!"

अपने शिष्यों के लिए यीशु की प्रार्थना

17 ये बातें कहकर यीशु ने आकाश की ओर देखा
और बोला, "हे परम पिता, वह घड़ी आ पहुँची
है अपने पुत्र को महिमा प्रदान कर ताकि तेरा पुत्र तेरी
महिमा कर सके। 2तूने उसे समूची मनुष्य जाति पर
अधिकार दिया है कि वह, हर उसको, जिसको तूने उसे
दिया है, अनन्त जीवन दे। 3अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ
एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को, जिसे तूने
भेजा है, जानें। 4जो काम तूने मुझे सौंपे थे, उन्हें पूरा करके
जगत् में मैंने तुझे महिमावान किया है। 5इसलिये अब तू
अपने साथ मुझे भी महिमावान कर। हे परम पिता! वही
महिमा मुझे दे जो जगत् से पहले, तेरे साथ मुझे प्राप्त थी।

6"जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें
तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने
उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया।
7अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह
तुझ ही से आती है। 8मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने
मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे
निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और
उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है। 9मैं उनके
लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं
कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे
दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। 10वह सब कुछ जो मेरा है, वह
तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा
महिमा पायी है। 11मैं अब और अधिक समय जगत् में नहीं
हूँ किन्तु वे जगत में हैं अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र
पिता अपने उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा कर जो
तूने मुझे दिया है ताकि जैसे तू और मैं एक हैं, वे भी एक
हो सकें। 12जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम की
शक्ति से उनकी रक्षा की, जो तूने मुझे दिया था। मैंने रक्षा
की और उनमें से कोई भी नष्ट नहीं हुआ सिवाय उसके
जो विनाश का पुत्र था ताकि शास्त्र का कहना सच हो।

13"अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ किन्तु ये बातें मैं जगत् में
रहते हुए कह रहा हूँ ताकि वे अपने हृदयों में मेरे पूर्ण
आनन्द को पा सकें। 14मैंने तेरा वचन उन्हें दिया है पर
संसार ने उनसे घृणा की क्योंकि वे सांसारिक नहीं हैं। वैसे
ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 15मैं यह प्रार्थना नहीं कर
रहा हूँ कि तू उन्हें संसार से निकाल ले बल्कि यह कि तू
उनकी दुष्ट शैतान से रक्षा कर। 16वे संसार के नहीं हैं,
वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 17सत्य के द्वारा तू उन्हें
अपनी सेवा के लिये समर्पित कर। तेरा वचन सत्य है।
18जैसे तूने मुझे इस जगत् में भेजा है, वैसे ही मैंने उन्हें
जगत में भेजा है। 19मैं उनके लिए अपने को तेरी सेवा में
अर्पित कर रहा हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा स्वयं को तेरी
सेवा में अर्पित करें।

20"किन्तु मैं केवल उन ही के लिये प्रार्थना नहीं कर
रहा हूँ बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ
में विश्वास करेंगे। 21वे सब एक हो। वैसे ही जैसे हे परम
पिता तू मुझ में है और मैं तुझ में। वे भी हममें एक हों।
ताकि जगत विश्वास करे कि मुझे तूने भेजा है। 22वह
महिमा जो तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दी है; ताकि वे भी वैसे
ही एक हो सकें जैसे हम एक हों। 23मैं उनमें होऊँगा और
तू मुझमें होगा, जिससे वे पूर्ण एकता को प्राप्त हों और
जगत जान जाये कि मुझे तूने भेजा है और तूने उन्हें भी
वैसे ही प्रेम किया है जैसे तू मुझे प्रेम करता है।

24“हे परम पिता! जो लोग तूने मुझे सौंपे हैं, मैं चाहता हूँ
कि जहाँ मैं हूँ, वे भी मेरे साथ हों ताकि वे मेरी उस महिमा
को देख सकें जो तूने मुझे दी है। क्योंकि सृष्टि की रचना
से भी पहले तूने मुझसे प्रेम किया है। 25हे धार्मिक–पिता,
जगत तुझे नहीं जानता किन्तु मैंने तुझे जान लिया है। और
मेरे शिष्य जानते हैं कि मुझे तूने भेजा है।26न केवल मैंने
तेरे नाम का उन्हें बोध कराया है बल्कि मैं इसका बोध
कराता भी रहूँगा ताकि वह प्रेम जो तूने मुझ पर दर्शाया है
उनमें भी हो। और मैं भी उनमें रहूँ।”

यीशु का बंदी बनाया जाना

18 यीशु यह कहकर अपने शिष्यों के साथ छोटी
नदी किद्रोन के पार एक बगीचे में चला गया।
2धोखे से उसे पकड़वाने वाला यहूदा भी उस जगह को
जानता था क्योंकि यीशु वहाँ प्राय: अपने शिष्यों से मिला
करता था। 3इसलिये यहूदा रोमी सिपाहियों की एक टुकड़ी
और महायाजकों और फरीसियों के भेजे लोगों और मन्दिर
के पहरेदारों के साथ मशालें दीपक और हथियार लिये
वहाँ आ पहुँचा।

4फिर यीशु जो सब कुछ जानता था कि उसके साथ
क्या होने जा रहा है, आगे आया और उनसे बोला, “तुम
किसे खोज रहे हो?”

5उन्होंने उसे उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।”

यीशु ने उनसे कहा, “वह मैं हूँ।” (तब उसे धोखे से
पकड़वाने वाला यहूदा भी वहाँ खड़ा था।) 6जब उसने उनसे
कहा, “वह मैं हूँ” तो वे पीछे हटे और धरती पर गिर पड़े।
7इस पर एक बार फिर यीशु ने उनसे पूछा, “तुम किसे
खोज रहे हो?” वे बोले, “यीशु नासरी को।”

8यीशु ने उत्तर दिया, “मैंनें तुमसे कहा, वह मैं ही हूँ।
यदि तुम मुझे खोज रहे हो तो इन लोगों को जाने दो।” 9यह
उसने इसलिये कहा कि जो उसने कहा था, वह सच हो,
“मैंने उनमें से किसी को भी नहीं खोया, जिन्हें तूने मुझे
सौंपा था।”

10फिर शमौन पतरस ने, जिसके पास तलवार थी,
अपनी तलवार निकाली और महायाजक के दास का
दाहिना कान काटते हुए उसे घायल कर दिया। (उस दास
का नाम मलखुस था।) 11फिर यीशु ने पतरस से कहा,
“अपनी तलवार म्यान में रख। क्या मैं यातना का वह
प्याला न पीऊँ जो परम पिता ने मुझे दिया है?”

यीशु का हन्ना के सामने लाया जाना

12फिर रोमी टुकड़ी के सिपाहियों और उनके सूबेदारों
तथा यहूदियों के मंदिर के पहरेदारों ने यीशु को बंदी बना
लिया। 13और उसे बाँध कर पहले हन्ना के पास ले गये जो
उस साल के महायाजक कैफा का ससुर था। 14यह कैफा
वही व्यक्ति था जिसने यहूदी नेताओं को सलाह दी थी कि
सब लोगों के लिए एक का मरना अच्छा है।

पतरस का यीशु को पहचानने से इन्कार

15शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे हो
लिये। महायाजक इस शिष्य को अच्छी तरह जानता था
इसलिए वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में घुस
गया। 16किन्तु पतरस बाहर द्वार के पास ही ठहर गया।
फिर महायाजक की जान पहचान वाला दूसरा शिष्य बाहर
गया और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले
आया। 17इस पर उस दासी ने जो द्वारपालिन थी कहा, “हो
सकता है कि तू भी यीशु का ही शिष्य है?”

पतरस ने उत्तर दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18क्योंकि ठंड बहुत थी दास और मंदिर के पहरेदार
आग जलाकर वहाँ खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके
साथ वहीं खड़ा था और ताप रहा था।

महायाजक की यीशु से पूछताछ

19फिर महायाजक ने यीशु से उसके शिष्यों और उसकी
शिक्षा के बारे में पूछा। 20यीशु ने उसे उत्तर दिया, “मैंने
सदा लोगों के बीच हर किसी से खुल कर बात की है। सदा
मैंने प्रार्थना सभाओं में और मन्दिर में, जहाँ सभी यहूदी
इकट्ठे होते हैं, उपदेश दिया है। मैंने कभी भी छिपा कर
कुछ नहीं कहा है। 21फिर तू मुझ से क्यों पूछ रहा है? मैंने
क्या कहा है उनसे पूछ जिन्होंने मुझे सुना है। मैंनें क्या
कहा, निश्चय ही वे जानते हैं।”

22जब उसने यह कहा तो मन्दिर के एक पहरेदार ने,
जो वहीं खड़ा था, यीशु को एक थप्पड़ मारा और बोला,
“तूने महायाजक को ऐसे उत्तर देने की हिम्मत कैसे की?”
23यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैंने कुछ बुरा कहा है
तो प्रमाणित कर और बता कि उसमें बुरा क्या था, और
यदि मैंने ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?”

24फिर हन्ना ने उसे बँधे हुए ही महायाजक कैफा के
पास भेज दिया।

पतरस का यीशु को पहचानने से फिर इन्कार

25जब शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था तो उससे पूछा गया, "क्या यह सम्भव है कि तू भी उसका एक शिष्य है?" उसने इससे इन्कार किया। वह बोला, "नहीं मैं नहीं हूँ।"

26महायाजक के एक सेवक ने जो उस व्यक्ति का सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काटा था, पूछा, "बता क्या मैंने तुझे उसके साथ बगीचे में नहीं देखा था?"

27इस पर पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया। और तभी मुर्गे ने बाँग दी।

यीशु का पिलातुस के सामने लाया जाना

28फिर वे यीशु को कैफा के घर से रोमी राज्यपाल के महल में ले गये। सुबह का समय था। यहूदी लोग राज्यपाल के भवन में आप नहीं जाना चाहते थे कि कहीं वे अपवित्र* न हो जायें। और फ़सह का भोजन न खा सकें। 29तब पिलातुस उनके पास बाहर आया और बोला, "इस व्यक्ति के ऊपर तुम क्या दोष लगाते हो?"

30उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "यदि यह अपराधी न होता तो हम इसे तुम्हें न सौंपते।"

31इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, "इसे तुम ले जाओ और अपनी व्यवस्था के विधान के अनुसार इसका न्याय करो।"

यहूदियों ने उससे कहा, "हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार नहीं है।" 32(यह इसलिए हुआ कि यीशु ने जो बात उसे कैसी मृत्यु मिलेगी, यह बताते हुए कही थी, सत्य सिद्ध हो।)

33तब पिलातुस राज्यपाल के महल में वापस चला गया। और यीशु को बुला कर उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

34यीशु ने उत्तर दिया, "यह बात क्या तू अपने आप कह रहा है या मेरे बारे में यह औरों ने तुझसे कही है?"

35पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तू सोचता है कि मैं यहूदी हूँ? तेरे लोगों और महायाजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है। तूने क्या किया है?"

36यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत् का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस जगत् का होता तो मेरी प्रजा मुझे यहूदियों को सौंपे जाने से बचाने के लिए युद्ध करती। किन्तु वास्तव में मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।"

37इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "तो तू राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं इसीलिए पैदा हुआ हूँ और इसी प्रयोजन से मैं इस संसार में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। हर वह व्यक्ति जो सत्य के पक्ष में है, मेरा वचन सुनता है।"

38पिलातुस ने उससे पूछा, "सत्य क्या है?" ऐसा कह कर वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे बोला, "मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ 39और तुम्हारी यह रीति है कि फ़सह पर्व के अवसर पर मैं तुम्हारे लिए किसी एक को मुक्त कर दूँ। तो क्या तुम चाहते हो कि मैं इस 'यहूदियों के राजा' को तुम्हारे लिये छोड़ दूँ?"

40एक बार वे फिर चिल्लाये, "इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा को छोड़ दो!" (बरअब्बा एक बाग़ी था।)

यीशु को मृत्यु-दण्ड

19 तब पिलातुस ने यीशु को पकड़वा कर कोड़े लगवाये। 2फिर सैनिकों ने कँटीली टहनियों को मोड़ कर एक मुकुट बनाया और उसके सिर पर रख दिया। और उसे बैंजनी रंग के कपड़े पहनाये। 3और उसके पास आ-आकर कहने लगे, "यहूदियों का राजा जीता रहे" और फिर उसे थप्पड़ मारने लगे।

4पिलातुस एक बार फिर बाहर आया और उनसे बोला, "देखो, मैं तुम्हारे पास उसे फिर बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान सको कि मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका।" 5फिर यीशु बाहर आया। वह काँटों का मुकुट और बैंजनी रंग का चोगा पहने हुए था। तब पिलातुस ने कहा, "यह रहा वह पुरुष।"

6जब उन्होंने उसे देखा तो महायाजकों और मंदिर के पहरेदारों ने चिल्ला कर कहा, "इसे क्रूस पर चढ़ा दो! इसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

पिलातुस ने उससे कहा, "तुम इसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ा दो, मैं इसमें कोई खोट नहीं पा सक रहा हूँ।"

7यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी व्यवस्था है जो कहती है, इसे मरना होगा क्योंकि इसने 'परमेश्वर का पुत्र' होने का दावा किया है।"

अपवित्र यहूदी यह मानते थे कि किसी ग़ैर यहूदी के घर में जाने से उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। देखें यूहन्ना 11:55

8अब जब पिलातुस ने उन्हें यह कहते सुना तो वह बहुत
डर गया। 9और फिर राज्यपाल के महल के भीतर जाकर
यीशु से कहा, “तू कहाँ से आया है? किन्तु यीशु ने उसे
उत्तर नहीं दिया।” 10फिर पिलातुस ने उससे कहा, “क्या तू
मुझसे बात नहीं करना चाहता? क्या तू नहीं जानता कि मैं
तुझे छोड़ने का अधिकार रखता हूँ और तुझे क्रूस पर
चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।”

11यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तुम्हें तब तक मुझ पर
कोई अधिकार नहीं हो सकता था जब तक वह तुम्हें
परम पिता द्वारा नहीं दिया गया होता। इसलिये जिस
व्यक्ति ने मुझे तेरे हवाले किया है, तुझसे भी बड़ा पापी
है।”

12यह सुन कर पिलातुस ने उसे छोड़ने का कोई उपाय
ढूँढने का यत्न किया। किन्तु यहूदी चिल्लाये, “यदि तू इसे
छोड़ता है, तो तू कैसर का मित्र नहीं है, कोई भी जो अपने
आप को राजा होने का दावा करता है, वह कैसर का
विरोधी है।”

13जब पिलातुस ने ये शब्द सुने तो वह यीशु को बाहर
उस स्थान पर ले गया जो “पत्थर का चबूतरा” कहलाता
था। (इसे इब्रानी भाषा में “गब्बता” कहा गया है।) और
वहाँ न्याय के आसन पर बैठा। 14यह फ़सह सप्ताह की
तैयारी का दिन था।* लगभग दोपहर हो रही थी। पिलातुस
ने यहूदियों से कहा, “यह रहा तुम्हारा राजा।”

15वे फिर चिल्लाये, “इसे ले जाओ। इसे ले जाओ। इसे
क्रूस पर चढ़ा दो।”

पिलातुस ने उनसे कहा, “क्या तुम चाहते हो तुम्हारे
राजा को मैं क्रूस पर चढ़ाऊँ?”

इस पर महायाजकों ने उत्तर दिया, “कैसर को छोड़कर
हमारा कोई दूसरा राजा नहीं है!”

16फिर पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें
सौंप दिया।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

इस तरह उन्होंने यीशु को हिरासत में ले लिया। 17अपना
क्रूस उठाये हुए वह उस स्थान पर गया जिसे, “खोपड़ी का
स्थान” कहा जाता था। (इसे इब्रानी भाषा में “गुलगुता”
कहते थे।) 18वहाँ से उन्होंने उसे दो अन्य के साथ क्रूस
पर चढ़ाया। एक इधर, दूसरा उधर और बीच में यीशु।
19पिलातुस ने दोषपत्र क्रूस पर लगा दिया। इसमें लिखा था,
“यीशु नासरी, यहूदियों का राजा” 20बहुत से यहूदियों ने
उस दोषपत्र को पढ़ा क्योंकि जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया
गया था, वह स्थान नगर के पास ही था। और वह ऐलान
इब्रानी, युनानी और लातीनी में लिखा था। तब प्रमुख यहूदी
नेता पिलातुस से कहने लगे–21यहूदियों का राजा मत कहो,
“बल्कि कहो, ‘उसने कहा था कि मैं यहूदियों का राजा
हूँ।’”

22पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैनें जो लिख दिया, सो लिख
दिया।”

23जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके तो उन्होंने
उसके वस्त्र लिए और उन्हें चार भागों में बाँट दिया। हर
भाग एक सिपाही के लिये। उन्होंने कुर्ता भी उतार लिया।
क्योंकि वह कुर्ता बिना सिलाई के ऊपर से नीचे तक बुना
हुआ था। 24इसलिये उन्होंने आपस में कहा, “इसे फाड़ें
नहीं बल्कि इसे कौन ले, इसके लिए पर्ची डाल लें।” ताकि
शास्त्र का यह वचन पूरा हो,

> “उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये
> और मेरे वस्त्र के लिए पर्ची डाली।”

भजन संहिता 22:18

इसलिए सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

25यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ, मौसी क्लोपास की
पत्नी मरियम, और मरियम मगदलिनी खड़ी थीं। 26यीशु
ने जब अपनी माँ और अपने प्रिय शिष्य को पास ही खड़े
देखा तो अपनी माँ से कहा, “प्रिय महिला, यह रहा तेरा
बेटा।” 27फिर वह अपने शिष्य से बोला, “यह रही तेरी
माँ।” और फिर उसी समय से वह शिष्य उसे अपने घर ले
गया।

यीशु की मृत्यु

28इसके बाद यीशु ने जान लिया कि सब कुछ पूरा हो
चुका है। फिर इसलिए कि शास्त्र सत्य सिद्ध हो उसने कहा,
“मैं प्यासा हूँ।” 29वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन रखा था।
इसलिये उन्होंने एक स्पंज को सिरके मैं पूरी तरह डुबो
कर हिस्सप अर्थात् जूफे की टहनी पर रखा और ऊपर
उठा कर, उसके मुँह से लगाया। 30फिर जब यीशु ने
सिरका ले लिया तो वह बोला, पूरा हुआ।” तब उसने अपना
सिर झुका दिया और प्राण त्याग दिये।

यह फसह ... दिन था अर्थात् शुक्रवार जब यहूदी सब्त की तैयारी करते थे।

31यह फ़सह की तैयारी का दिन था। सब्त के दिन
उनके शव क्रूस पर न लटके रहें क्योंकि सब्त का वह
दिन बहुत महत्त्वपूर्ण था इसके लिए यहूदियों ने पिलातुस से
कहा कि वह आज्ञा दे कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और
उनके शव वहाँ से हटा दिए जाएँ। 32तब सिपाही आये और
उनमें से पहले, पहले की और फिर दूसरे व्यक्ति की, जो
उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, टाँगें तोड़ी। 33पर जब
वे यीशु के पास आये, उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर
चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं 34पर
उनमें से एक सिपाही ने यीशु के पंजर में अपना भाला
बेधा जिससे तत्काल ही खून और पानी बह निकला।
35(जिसने यह देखा था उसने साक्षी दी; और उसकी साक्षी
सच है, वह जानता है कि वह सच कह रहा है ताकि तुम
लोग विश्वास करो।) 36यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का
वचन पूरा हो कि "उसकी कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जायेगी।"
37और धर्मशास्त्र में लिखा है, "जिसे उन्होंने भाले से बेधा,
वे उसकी ओर ताकेंगे।"*

यीशु की अन्त्येष्टि

38इसके बाद अरमतियाह के यूसुफ़ ने जो यीशु का
एक अनुयायी था किन्तु यहूदियों के डर से इसे छिपाये
रखता था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव
को वहाँ से ले जाने की अनुमति दी जाये। पिलातुस ने उसे
अनुमति दे दी। सो वह आकर उसका शव ले गया।
39निकुदेमुस भी, जो यीशु के पास रात को पहले आया
था, वहाँ कोई तीस किलो मिला हुआ गंधरस और एलवा
लेकर आया। फिर वे यीशु के शव को ले गये 40और
यहूदियों के शव को गाड़ने की व्यवस्था के अनुसार उसे
सुगंधित सामग्री के साथ कफ़न में लपेट दिया। 41जहाँ
यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ एक बगीचा था।
और उस बगीचे में एक नयी कब्र थी जिसमें अभी तक
किसी को रखा नहीं गया था। 42क्योंकि वह सब्त की
तैयारी का दिन शुक्रवार था और वह कब्र बहुत पास थी,
इसलिये उन्होंने यीशु को उसी में रख दिया।

यीशु की क़ब्र खाली

20 सप्ताह के पहले दिन अलख सुबह अन्धेरा
रहते मरियम मगदलिनी कब्र पर आयी। और
उसने देखा कि क़ब्र से पत्थर हटा हुआ है। 2फिर वह दौड़
कर शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जो यीशु
का प्रिय था, पहुँची। और उनसे बोली, "वे प्रभु को क़ब्र से
निकाल कर ले गये हैं। और हमें नहीं पता कि उन्होंने उसे
कहाँ रखा है।"

3फिर पतरस और वह दूसरा शिष्य वहाँ से क़ब्र को
चल पड़े। 4वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे पर दूसरा
शिष्य पतरस से आगे निकल गया और क़ब्र पर पहले जा
पहुँचा। 5उसने नीचे झुककर देखा कि वहाँ कफ़न के
कपड़े पड़े हैं। किन्तु वह भीतर नहीं गया। 6तभी शमौन
पतरस भी, जो उसके पीछे आ रहा था, आ पहुँचा। और
क़ब्र के भीतर चला गया। उसने देखा कि वहाँ कफ़न के
कपड़े पड़े हैं 7और वह कपड़ा जो गाड़ते समय उसके सिर
पर था कफ़न के साथ नहीं, बल्कि उससे अलग एक
स्थान पर तह करके रखा हुआ है। 8फिर दूसरा, शिष्य
भी जो क़ब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया। उसने देखा
और विश्वास किया। 9(वे अब भी शास्त्र के इस वचन
को नहीं समझे थे कि उसका मरे हुओं में से जी उठना
निश्चित है।)

मरियम मगदलिनी को यीशु ने दर्शन दिये

10फिर वे शिष्य अपने घरों को वापस लौट गये।
11मरियम रोती बिलखती कब्र के बाहर खड़ी थी।
रोते-बिलखते वह क़ब्र में अंदर झाँकने के लिये नीचे
झुकी। 12जहाँ यीशु का शव रखा था वहाँ उसने श्वेत
वस्त्र धारण किये, दो स्वर्गदूत, एक सिरहाने और दूसरा
पैताने, बैठे देखे।

13उन्होंने उससे पूछा, "हे स्त्री, तू क्यों विलाप कर रही
है?"

उसने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं और
मुझे पता नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है?" 14इतना
कह कर वह मुड़ी और उसने देखा कि वहाँ यीशु खड़ा है।
यद्यपि वह जान नहीं पायी कि वह यीशु था।

15यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू
किसे खोज रही है?" यह सोचकर कि वह माली है,
उसने उससे कहा, "श्रीमान, यदि कहीं तुमने उसे उठाया

जिसे ... ताकेंगे जकर्या. 12:10

है तो मुझे बताओ तुमने उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले जाऊँगी।"

16यीशु ने उससे कहा, "मरियम!" वह पीछे मुड़ी और इब्रानी में कहा, "रब्बूनी।" (अर्थात् "हे गुरु।")

17यीशु ने उससे कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अभी तक परम पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। बल्कि मेरे भाइयों के पास जा और उन्हें बता, "मैं अपने परम पिता और तुम्हारे परम पिता तथा अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"

18मरियम मगदलिनी यह कहती हुई शिष्यों के पास आई, "मैने प्रभु को देखा है, और उसने मुझे ये बातें बताई हैं।"

शिष्यों को दर्शन देना

19उसी दिन शाम को, जो सप्ताह का पहला दिन था, उसके शिष्य यहूदियों के डर के कारण दरवाज़े बंद किये हुए थे। तभी यीशु वहाँ आकर उनके बीच खड़ा हो गया और उनसे बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 20इतना कह चुकने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और अपनी बगल दिखाई। शिष्यों ने जब प्रभु को देखा तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

21तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "तुम्हें शांति मिले। वैसे ही जैसे परम पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेज रहा हूँ।" 22यह कह कर उसने उन पर फूँक मारी और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। 23जिस किसी भी व्यक्ति के पापों को तुम क्षमा करते हो, उन्हें क्षमा मिलती है और जिनके पापों को तुम क्षमा नहीं करते, वे बिना क्षमा पाए रहते हैं।"

यीशु का थोमा को दर्शन देना

24थोमा जो बारहों में से एक था और दिदिमस अर्थात् जुड़वाँ कहलाता था, जब यीशु आया था तब उनके साथ न था। 25दूसरे शिष्य उससे कह रहे थे, "हमने प्रभु को देखा है।" किन्तु उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और उनमें अपनी उँगली न डाल लूँ तथा उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।"

26आठ दिन बाद उसके शिष्य एक बार फिर घर के भीतर थे। और थोमा उनके साथ था। (यद्यपि दरवाज़े पर ताला पड़ा था।) यीशु आया और उनके बीच खड़ा होकर बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 27फिर उसने थोमा से कहा, "हाँ अपनी उँगली डाल और मेरे हाथ देख, अपना हाथ फैला कर मेरे पंजर में डाल। संदेह करना छोड़ और विश्वास कर।"

28उत्तर देते हुए थोमा बोला, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"

29यीशु ने उससे कहा, "तूने मुझे देखकर, मुझमें विश्वास किया है। किन्तु धन्य वे हैं जो बिना देखे विश्वास रखते हैं।"

यह पुस्तक यूहन्ना ने क्यों लिखी

30यीशु ने और भी अनेक आश्चर्य चिह्न अपने अनुयायियों को दर्शाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं। 31और जो बातें यहाँ लिखी हैं, वे इसलिए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है। और इसलिये कि विश्वास करते हुए उसके नाम से तुम जीवन पाओ।

यीशु झील पर प्रकट हुआ

21 इसके बाद झील तिबिरियास पर यीशु ने शिष्यों के सामने फिर अपने आपको प्रकट किया। उसने अपने आपको इस तरह प्रकट किया। 2शमौन पतरस, थोमा (जो जुड़वाँ कहलाता था) गलील के काना का नतनएल, जब्दी के बेटे और यीशु के दो अन्य शिष्य वहाँ इकट्ठे थे। 3शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।"

वे उससे बोले, "हम भी तेरे साथ चल रहे हैं।" तो वे उसके साथ चल दिये और नाव में बैठ गये। पर उस रात वे कुछ नहीं पकड़ पाये।

4अब तक सुबह हो चुकी थी। तभी वहाँ यीशु किनारे पर आ खड़ा हुआ। किन्तु शिष्य जान नहीं सके कि वह यीशु है। 5फिर यीशु ने उनसे कहा, "बालकों तुम्हारे पास कोई मछली है?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।"

6फिर उसने कहा, "नाव की दाहिनी तरफ़ जाल फेंको तो तुम्हें कुछ मिलेगा।" सो उन्होंने जाल फेंका किन्तु बहुत अधिक मछलियों के कारण वे जाल को वापस खेंच नहीं सके।

7फिर यीशु के प्रिय शिष्य ने पतरस से कहा, "यह तो प्रभु है।" जब शमौन ने यह सुना कि वह प्रभु है तो

उसने अपना बाहर पहनने का वस्त्र कस लिया (क्योंकि
वह नंगा था।) और पानी में कूद पड़ा। 8किन्तु दूसरे शिष्य
मछलियों से भरा हुआ जाल खेंचते हुए नाव से किनारे पर
आये (क्योंकि वे धरती से अधिक दूर नहीं थे, उनकी
दूरी कोई सौ मीटर की थी।) 9जब वे किनारे आए उन्होंने
वहाँ दहकते कोयलों की आग जलती देखी। उस पर मछली
और रोटी पकने को रखी थी। 10यीशु ने उनसे कहा,
“तुमने अभी जो मछलियाँ पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले
आओ।”

11फिर शमौन पतरस नाव पर गया और 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा। जाल में
यद्यपि इतनी अधिक मछलियाँ थीं, फिर भी जाल फटा
नहीं।

12यीशु ने उनसे कहा, “यहाँ आओ और भोजन करो।”
उसके शिष्यों में से किसी को साहस नहीं हुआ कि वह
उससे पूछे, “तू कौन है?” क्योंकि वे जान गये थे कि वह
प्रभु है। 13यीशु आगे बढ़ा। उसने रोटी ली और उन्हें दे दी
और ऐसे ही मछलियाँ भी दीं।

14अब यह तीसरी बार थी जब मरे हुओं में से जी उठने
के बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ था।

यीशु की पतरस से बातचीत

15जब वे भोजन कर चुके तो यीशु ने शमौन पतरस से
कहा, “यूहन्ना के पुत्र शमौन, जितना प्रेम ये मुझ से करते
हैं, तू मुझसे उससे अधिक प्रेम करता है?”

पतरस ने यीशु से कहा, “हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं
तुझे प्रेम करता हूँ।”

यीशु ने पतरस से कहा, “मेरे मेमनो* की रखवाली
कर।”

16वह उससे दोबारा बोला, “यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या
तू मुझे प्रेम करता है?”

पतरस ने यीशु से कहा, “हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं
तुझे प्रेम करता हूँ।”

यीशु ने पतरस से कहा, “मेरी भेड़ों की रखवाली कर।”

17यीशु ने फिर तीसरी बार पतरस से कहा, “यूहन्ना के
पुत्र शमौन, क्या तू मुझे प्रेम करता है?”

पतरस बहुत व्यथित हुआ कि यीशु ने उससे तीसरी
बार यह पूछा, “क्या तू मुझसे प्रेम करता है?” सो पतरस ने
यीशु से कहा, “हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू जानता है
कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ!”

यीशु ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा। 18मैं तुझसे
सत्य कहता हूँ, जब तू जवान था, तब तू अपनी कमर पर
फेंटा कस कर, जहाँ चाहता था, चला जाता था। पर जब
तू बूढ़ा होगा, तो हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तुझे बाँधकर
जहाँ तू नहीं जाना चाहता, वहाँ ले जायेगा।” 19(उसने यह
दर्शाने के लिए ऐसा कहा कि वह कैसी मृत्यु से परमेश्वर
की महिमा करेगा।) इतना कहकर उसने उससे कहा,
“मेरे पीछे चला आ!”

20पतरस पीछे मुड़ा और देखा कि वह शिष्य जिसे यीशु
प्रेम करता था, उनके पीछे आ रहा है। (यह वही था
जिसने भोजन करते समय उसकी छाती पर झुककर पूछा
था, “हे प्रभु, वह कौन है, जो तुझे धोखे से पकड़वायेगा?”)
21सो जब पतरस ने उसे देखा तो वह यीशु से बोला, “हे
प्रभु, इसका क्या होगा?”

22यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं यह चाहूँ कि जब तक
मैं आऊँ यह यहीं रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे चला
आ।”

23इस तरह यह बात भाइयों में यहाँ तक फैल गयी कि
वह शिष्य नहीं मरेगा। यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह
नहीं मरेगा। बल्कि यही कहा था, “यदि मैं यह चाहूँ कि
जब तक मैं आऊँ, यह यहीं रहे, तो तुझे क्या?”

24यही वह शिष्य है जो इन बातों की साक्षी देता है और
जिसने ये बातें लिखी हैं। हम जानते हैं कि उसकी साक्षी
सच है।

25यीशु ने और भी बहुत से काम किये। यदि एक-एक
करके वे सब लिखे जाते तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें
लिखी जातीं वे इतनी अधिक होतीं कि समूची धरती पर
नहीं समा पातीं।

मेमना और भेड़ इन शब्दों को यीशु अपने अनुयायिओं के
लिए प्रयोग में लाता था।

प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

1 हे थियुफिलुस, मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब कार्यों के बारे में लिखा जिन्हें प्रारंभ से ही यीशु ने किया और 2उस दिन तक उपदेश दिया जब तक पवित्र आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश दिए जाने के बाद उसे ऊपर स्वर्ग में उठा न लिया गया। 3अपनी मृत्यु के बाद उसने अपने आपको बहुत से ठोस प्रमाणों के साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह जीवित है। वह चालीस दिनों तक उनके सामने प्रकट होता रहा तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताता रहा। 4फिर एक बार जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था तो उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को मत छोड़ना बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, परम पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करना। 5क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही दिनों बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।"

यीशु का स्वर्ग में ले जाया जाना

6सो जब वे आपस में मिले तो उन्होंने उससे पूछा, " हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य की फिर से स्थापना कर देगा?"

7उसने उनसे कहा, "उन अवसरों या तिथियों को जानना तुम्हारा काम नहीं है, जिन्हें परम पिता ने स्वयं अपने अधिकार से निश्चित किया है। 8बल्कि जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो जायेगी। और यरुशलेम में, समूचे यहूदिया और सामरिया में और धरती के छोरों तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।"

9इतना कहने के बाद उनके देखते देखते उसे वर्ग में ऊपर उठा लिया गया। और फिर एक बादल ने उसे उनकी आँखों से ओझल कर दिया। 10जब वह जा रहा था तो वे आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये थे। तभी तत्काल श्वेत वस्त्र धारण किये हुए दो पुरुष उनके बराबर आ खड़े हुए 11और कहा, "हे गलीली लोगो, तुम वहाँ खड़े-खड़े आकाश में टकटकी क्यों लगाये हो? यह यीशु जिसे तुम्हारे बीच से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया, जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा, वैसे ही वह फिर वापस लोटेगा।"

एक नये प्रेरित का चुनाव

12फिर वे जैतून नाम के पर्वत से, जो यरूशलेम से कोई एक किलोमीटर* की दूरी पर स्थित है, यरूशलेम लौट आये। 13और वहाँ पहुँच कर वे ऊपर के उस कमरे में गये जहाँ वे ठहरे हुए थे। ये लोग थे-पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बर्तुलमै और मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, उत्साही शमौन और याकूब का पुत्र यहूदा।

14इनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु की माता मरियम और यीशु के भाई भी थे। ये सभी अपने आपको एक साथ प्रार्थना में लगाये रखते थे।

15फिर इन्हीं दिनों पतरस ने भाई-बंधुओं के बीच खड़े होकर, जिनकी संख्या कोई एक सौ बीस थी, कहा, 16"हे मेरे भाइयो, यीशु को बंदी बनाने वालों के अगुआ यहूदा के विषय में, पवित्र शास्त्र का वह लेख जिसे दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा ने बहुत पहले ही कह दिया था, उसका पूरा होना आवश्यक था। 17वह हम में ही गिना गया था और इस सेवा में उसका भी भाग था।"

18(इस मनुष्य ने जो धन उसे उसके नीचतापूर्ण काम के लिये मिला था, उससे एक खेत मोल लिया किन्तु वह पहले तो सिर के बल गिरा और फिर उसका शरीर फट गया और उसकी आँतें बाहर निकल आईं। 19और सभी

किलोमीटर शाब्दिक सब्त के एक दिन की दूरी पर यानी सब्त के दिन विधान के द्वारा जितनी दूर चलना वैध था।

यरूशलेम वासियों को इसका पता चल गया। इसीलिये उनकी भाषा में उस खेत को हक्लदमा कहा गया जिसका अर्थ है "लहू का खेत।")

20"क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है कि,
'उसका घर उजड़ जाये और
उसमें रहने को कोई न बचे।'
भजन संहिता 69:25
और 'उसका मुखियापन कोई
दूसरा व्यक्ति ले ले।"
भजन संहिता 109:8

21"इसलिये यह आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु हमारे बीच था तब जो लोग सदा हमारे साथ थे, उनमें से किसी एक को चुना जाये। 22यानी उस समय से लेकर जब से यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ किया था और जब तक यीशु को हमारे बीच से उठा लिया गया था। इन लोगों में से किसी एक को उसके फिर से जी उठने का हमारे साथ साक्षी होना चाहिये।"

23इसलिये उन्होंने दो व्यक्ति सुझाये! एक यूसुफ़ जिसे बरसब्बा कहा जाता था (यह यूसतुस नाम से भी जाना जाता था) और दूसरा मत्तियाह। 24फिर वे यह कहते हुए प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभु, तू सब के मनों को जानता है, हमें दर्शा कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है 25जो एक प्रेरित के रूप में सेवा के इस पद को ग्रहण करे जिसे अपने स्थान को जाने के लिए यहूदा छोड़ गया था।" 26फिर उन्होंने उनके लिये पर्चियाँ डालीं और पर्ची मत्तियाह के नाम की निकली। इस तरह वह ग्यारह प्रेरितों के दल में सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का आगमन

2 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक ही स्थान पर इकटठे थे। 2तभी अचानक वहाँ आकाश से भयंकर आँधी का सा शब्द आया। और जिस घर में वे बैठे थे, उसमें भर गया। 3और आग की फैलती लपटों जैसी जीभें वहाँ सामने दिखायी देने लगीं। वे आग की विभाजित जीभें उनमें से हर एक के ऊपर आ टिकीं। 4वे सभी पवित्र आत्मा से भावित हो उठे। और आत्मा के द्वारा दिये गये सामर्थ्य के अनुसार वे दूसरी भाषाओं में बोलने लगे।

5वहाँ यरुशलेम में आकाश के नीचे के सभी देशों से आये यहूदी भक्त रहा करते थे। 6जब यह शब्द गरजा तो एक भीड़ एकत्र हो गयी। वे लोग अचरज में पड़े थे क्योंकि हर किसी ने उन्हें उसकी अपनी भाषा में बोलते सुना। 7वे आश्चर्य में भर कर विस्मय के साथ बोले, "ये बोलने वाले सभी लोग क्या गलीली नहीं हैं? 8फिर हममें से हर एक उन्हें हमारी अपनी ही मातृभाषा में बोलते हुए कैसे सुन रहा है? 9वहाँ पारथी, मेदी और एलामी, मैसोपोटामिया के निवासी, यहूदिया और कप्पूदूकिया पुन्तुस और एशिया 10फ्रिगिया और पंफीलिया, मिस्र और साइरीन नगर के निकट लीबिया के कुछ प्रदेशों के लोग, रोम से आये यात्री जिनमें जन्मजात यहूदी और यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले लोग, क्रेती तथा अरब के रहने वाले 11हम सब परमेश्वर के आश्चर्य पूर्ण कामों को अपनी अपनी भाषाओं में सुन रहे हैं।" 12वे सब विस्मय में पड़ कर भौंचक्के हो आपस में पूछ रहे थे "यह सब क्या हो रहा है?" 13किन्तु दूसरे लोगों ने प्रेरितों का उपहास करते हुए कहा, "ये सब कुछ ज्यादा ही, नयी दाखरस चढ़ा गये हैं।"

पतरस का संबोधन

14फिर उन ग्यारहों के साथ पतरस खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में लोगों को सम्बोधित करने लगा, "यहूदी साथियो और यरुशलेम के सभी निवासियो! इसका अर्थ मुझे बताने दो। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। 15ये लोग पिये हुए नहीं हैं, जैसा कि तुम समझ रहे हो। क्योंकि अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। 16बल्कि यह वह बात है जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था:

17 'परमेश्वर कहता है:
अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं सभी
मनुष्यों पर अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा
फिर तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ
भविष्यवाणी करने लगेंगे।
तथा तुम्हारे युवा लोग दर्शन पायेंगे
और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे।
18 हाँ, उन दिनों मैं अपने सेवकों और
सेविकाओं पर अपनी आत्मा
उँड़ेल दूँगा
और वे भविष्यवाणी करेंगे।

[19]मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कर्म
और नीचे धरती पर चिह्न दिखाऊँगा
लहू, आग और धुएँ के बादल।
20 सूर्य अन्धेरे में और चाँद रक्त में बदल जायेगा।
21 और तब हर उस किसी का बचाव होगा
जो प्रभु का नाम पुकारेगा।'

योएल 2:28-32

[22]"हे इस्राएल के लोगों, इन वचनों को सुनो: नासरी
यीशु एक ऐसा पुरुष था जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे सामने
अद्भुत कर्मों, आश्चर्यो और चिह्नों समेत-जिन्हें परमेश्वर
ने उसके द्वारा किया था-तुम्हारे बीच प्रकट किया। जैसा
कि तुम स्वयं जानते ही हो। [23]इस पुरुष को परमेश्वर की
निश्चित योजना और निश्चित पूर्व ज्ञान के अनुसार तुम्हारे
हवाले कर दिया गया। और तुमने नीच मनुष्यों की सहायता
से उसे क्रूस पर चढ़ाया और कीलें ठुकवा कर मार डाला।
[24]किन्तु परमेश्वर ने उसे मृत्यु की वेदना से मुक्त करते
हुए फिर से जिला दिया। क्योंकि उसके लिये यह सम्भव
ही नहीं था कि मृत्यु उसे अपने वश में रख पाती। [25]जैसा
कि दाऊद ने उसके विषय में कहा है:

'मैंने प्रभु को सदा ही अपने सामने देखा है।
वह मेरी दाहिनी ओर विराजता है,
ताकि मैं डिग न जाऊँ।
26 इससे मेरा हृदय प्रसन्न है
और मेरी वाणी हर्षित है;
मेरी देह भी आशा में जियेगी
27 क्योंकि तू मेरी आत्मा को
अधोलोक में नहीं छोड़ देगा।
तू अपने पवित्र जन को क्षय की
अनुभूति नहीं होने देगा।
28 तूने मुझे जीवन की राह का ज्ञान कराया है।
अपनी उपस्थिति से तू मुझे
आनन्द से पूर्ण कर देगा।'

भजन संहिता 16:8-11

[29]"हे मेरे भाइयों! मैं विश्वास के साथ आदि पुरुष दाऊद
के बारे में तुमसे कह सकता हूँ कि उसकी मृत्यु हो गयी
और उसे दफ़ना दिया गया। और उसकी कब्र हमारे यहाँ
आज तक मौजूद है। [30]किन्तु क्योंकि वह एक नबी था
और जानता था कि परमेश्वर ने शपथपूर्वक उसे वचन
दिया है कि वह उसके वंश में से किसी एक को उसके
सिंहासन पर बैठायेगा। [31]इसलिये आगे जो घटने वाला है,
उसे देखते हुए उसने जब यह कहा था:

'उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया
और न ही उसकी देह ने सड़ने
गलने का अनुभव किया'

तो उसने मसीह के फिर से जी उठने के बारे में ही कहा
था। [32]इसी यीशु को परमेश्वर ने पुनर्जीवित कर दिया।
इस तथ्य के हम सब साक्षी हैं। [33]परमेश्वर के दाहिने
हाथ सब से ऊँचा पद पाकर यीशु ने परम पिता से प्रतिज्ञा
के अनुसार पवित्र आत्मा प्राप्त की और फिर उसने इस
आत्मा को उँडेल दिया जिसे अब तुम देख रहे हो और
सुन रहे हो। [34]दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया सो वह
स्वयं कहता है:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु से कहा:
मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं
35 तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले
पैर रखने की चौकी की तरह न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[36]"इसलिये समूचा इस्राएल निश्चय-पूर्वक जान ले कि
परमेश्वर ने इस यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया
था, 'प्रभु' और 'मसीह' दोनों ही ठहराया था!"

[37]लोगों ने जब यह सुना तो वे व्याकुल हो उठे और
पतरस तथा अन्य प्रेरितों से कहा, "तो बंधुओ, हमें क्या
करना चाहिये?"

[38]पतरस ने उनसे कहा, "मन फिरावओ और अपने
पापों की क्षमा पाने के लिये तुममें से हर एक को यीशु
मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिये। फिर तुम पवित्र
आत्मा का उपहार पा जाओगे। [39]क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे
लिये, तुम्हारी संतानों के लिए और उन सब के लिये है जो
बहुत दूर स्थित हैं। यह प्रतिज्ञा उन सबके लिए है जिन्हें
हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाता है।

[40]और बहुत से वचनों द्वारा उसने उन्हें चेतावनी दी
और आग्रह के साथ उनसे कहा "इस कुटिल पीढ़ी से
अपने आपको बचाये रखो।" [41]सो जिन्होंने उसके संदेश
को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। इस प्रकार उस
दिन उनके समूह में कोई तीन हज़ार व्यक्ति और जुड़ गये।
[42]उन्होंने प्रेरितों के उपदेश, संगत, रोटी के तोड़ने और
प्रार्थनाओं के प्रति अपने को समर्पित कर दिया।

विश्वासियों का साझा जीवन

43हर व्यक्ति पर भय मिश्रित विस्मय का भाव छाया रहा और प्रेरितों द्वारा आश्चर्य कर्म और चिह्न प्रकट किये जाते रहे। 44सभी विश्वासी एक साथ रहते थे और उनके पास जो कुछ था, उसे वे सब आपस में बाँट लेते थे। 45उन्होंने अपनी सभी वस्तुएँ और सम्पत्ति बेच डाली और जिस किसी को आवश्यकता थी, उन सब में उसे बाँट दिया। 46मंदिर में एक समूह के रूप में वे हर दिन मिलते-जुलते रहे। वे अपने घरों में रोटी को विभाजित करते और उदार मन से आनन्द के साथ, मिल-जुलकर खाते। 47सभी लोगों की सद्‌भावनाओं का आनन्द लेते हुए वे प्रभु की स्तुति करते। और प्रतिदिन परमेश्वर, जिन्हें उद्धार मिल जाता, उन्हें उनके दल में और जोड़ देता।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना

3 दोपहर बाद तीन बजे प्रार्थना के समय पतरस और यूहन्ना मंदिर जा रहे थे। 2तभी एक ऐसे व्यक्ति को जो जन्म से ही लँगड़ा था, ले जाया जा रहा था। वे हर दिन उसे मन्दिर के सुन्दर नामक द्वार पर बैठा दिया करते थे। ताकि वह मंदिर में जाने वाले लोगों से भीख में पैसे माँग लिया करे। 3इस व्यक्ति ने जब देखा कि यूहन्ना और पतरस मंदिर में प्रवेश करने ही वाले हैं तो उसने उनसे पैसे माँगे। 4यूहन्ना के साथ पतरस उसकी ओर एकटक देखते हुए बोला, "हमारी तरफ़ देख।" 5सो उसने उनसे कुछ मिल जाने की आशा करते हुए उनकी ओर देखा। 6किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास सोना या चाँदी तो है नहीं किन्तु जो कुछ है, मैं तुझे दे रहा हूँ। नासरी यीशु मसीह के नाम से खड़ा हो जा और चल दे।" 7फिर उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसने उसे उठाया। तुरन्त उसके पैरों और टखनों में जान आ गयी। 8और वह अपने पैरों के बल उछला और चल पड़ा। वह उछलते कूदते चलता और परमेश्वर की स्तुति करता उनके साथ ही मंदिर में गया। 9सभी लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की स्तुति करते देखा। 10लोगों ने पहचान लिया कि यह तो वही है जो मंदिर के सुन्दर द्वार पर बैठा भीख माँगा करता था। उसके साथ जो कुछ घटा था उस पर वे आश्चर्य और विस्मय से भर उठे।

पतरस का प्रवचन

11वह व्यक्ति अभी पतरस और यूहन्ना के साथ-साथ ही था। सो सभी लोग अचरज में भर कर उस स्थान पर उनके पास दौड़े-दौड़े आये जो सुलेमान की डयोढ़ी कहलाता था। 12पतरस ने जब यह देखा तो वह लोगों से बोला, "हे इस्राएल के लोगो, तुम इस बात पर चकित क्यों हो रहे हो? ऐसे घूर घूर कर हमें क्यों देख रहे हो, जैसे मानो हमने ही अपनी शक्ति या भक्ति के बल पर इस व्यक्ति को चलने फिरने योग्य बना दिया है। 13इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमा से मंडित किया। और तुमने उसे मरवा डालने को पकड़वा दिया। और फिर पिलातुस के द्वारा उसे छोड़ दिये जाने का निश्चय करने पर पिलातुस के सामने ही तुमने उसे नकार दिया। 14उस पवित्र और नेक बंदे को तुमने अस्वीकार किया और यह माँगा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाये। 15लोगों को जीवन की राह दिखाने वाले को तुमने मार डाला किन्तु परमेश्वर ने मरे हुओं में से उसे फिर से जिला दिया है। हम इसके साक्षी हैं। 16क्योंकि हम यीशु के नाम में विश्वास करते हैं इसलिये यह उसका नाम ही है जिसने इस व्यक्ति में जान फूँकी है जिसे तुम देख रहे हो और जानते हो। हाँ, उसी विश्वास ने जो यीशु से प्राप्त होता है, तुम सब के सामने इस व्यक्ति को पूरी तरह चंगा किया है।

17"हे भाइयो, अब मैं जानता हूँ कि जैसे अनजाने में तुमने वैसा किया, वैसे ही तुम्हारे नेताओं ने भी किया। 18परमेश्वर ने अपने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से पहले ही कहलवा दिया था कि उसके मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी। उसने उसे इस तरह पूरा किया। 19इसलिये तुम अपना मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट आओ ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें। 20ताकि प्रभु की उपस्थिति में आत्मिक शांति का समय आ सके और प्रभु तुम्हारे लिये मसीह को भेजे जिसे वह तुम्हारे लिये चुन चुका है, यानी यीशु को। 21मसीह को उस समय तक स्वर्ग में रहना होगा जब तक सभी बातें पहले जैसी न हो जायें जिनके बारे में बहुत पहले से ही परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों के मुख से बता दिया था। 22मूसा ने कहा था, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिये, तुम्हारे अपने लोगों में से ही एक मेरे जैसा नबी खड़ा करेगा। वह तुमसे जो कुछ कहे, तुम

उसी पर चलना। 23और जो कोई व्यक्ति उस नबी की
बातों को नहीं सुनेगा, लोगों में से उसे पूरी तरह नष्ट कर
दिया जायेगा।'* 24हाँ! शमूएल और उसके बाद आये सभी
नबियों ने जब कभी कुछ कहा तो इन ही दिनों की घोषणा
की। 25और तुम तो उन नबियों और उस करार के
उत्तराधिकारी हो जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ
किया था। उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी संतानों से
धरती के सभी लोग आशीर्वाद पायेंगे।'* 26परमेश्वर ने
जब अपने सेवक को पुनर्जीवित किया तो पहले-पहले
उसे तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम्हें तुम्हारे बुरे रास्तों से हटा
कर आशीर्वाद दे।"

पतरस और यूहन्ना: यहूदी सभा के सामने

4 अभी पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे
थे कि याजक, मंदिर के सिपाहियों का मुखिया और
कुछ सदूकी उनके पास आये। 2वे उनसे इस बात पर चिढ़े
हुए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश देते हुए
यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा पुनरुत्थान का
प्रचार कर रहे थे। 3सो उन्होंने उन्हें बंदी बना लिया और
क्योंकि उस समय साँझ हो चुकी थी, इसलिये अगले दिन
तक हिरासत में रख छोड़ा। 4किन्तु जिन्होंने वह संदेश
सुना उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया और इस
प्रकार उनकी संख्या लगभग पाँच हजार पुरुषों तक जा
पहुँची।

5अगले दिन उनके नेता, बुजुर्ग और यहूदी धर्मशास्त्री
यरूशलेम में इकट्ठे हुए। 6महायाजक हन्ना, कैफ़ा, यूहन्ना,
सिकन्दर और महायाजक के परिवार के सभी लोग भी
वहाँ उपस्थित थे। 7वे इन प्रेरितों को उनके सामने खड़ा
करके पूछने लगे, "तुम ने किस शक्ति या अधिकार से
यह कार्य किया?"

8फिर पवित्र आत्मा से भावित होकर पतरस ने उनसे
कहा, "हे लोगों के नेताओं और बुजुर्ग नेताओं! 9यदि आज
हमसे एक लँगड़े व्यक्ति के साथ की गयी भलाई के बारे में
यह पूछताछ की जा रही है कि वह अच्छा कैसे हो गया
10तो तुम सब को और इस्राएल के लोगों को यह पता हो
जाना चाहिये कि यह काम नासरी यीशु मसीह के नाम से
हुआ है जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया और जिसे परमेश्वर
ने मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया है। उसी के द्वारा
पूरी तरह से ठीक हुआ यह व्यक्ति तुम्हारे सामने खड़ा है।
11यह यीशु वही

'वह पत्थर जिसे तुम राज मिस्त्रियों
ने नाकारा ठहराया था,
वही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया है।'

भजन संहिता 118:22

12किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस
आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं
दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।"

13उन्होंने जब पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता को
देखा और यह समझा कि वे बिना पढ़े लिखे और साधारण
से मनुष्य हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। फिर वे जान गये
कि ये यीशु के साथ रह चुके लोग हैं। 14और क्योंकि वे
उस व्यक्ति को जो चंगा हुआ था, उन ही के साथ खड़ा
देख पा रहे थे सो उनके पास कहने को कुछ नहीं रहा।
15उन्होंने उनसे यहूदी महासभा से निकल जाने को कहा
और फिर वे यह कहते हुए आपस में विचार-विमर्श करने
लगे, 16"इन लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाये?
क्योंकि यरूशलेम में रहने वाला हर कोई जानता है कि
इनके द्वारा एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म किया गया है
और हम उसे नकार भी नहीं सकते। 17किन्तु हम इन्हें
चेतावनी दे दें कि वे इस नाम की चर्चा किसी और व्यक्ति
से न करें ताकि लोगों में इस बात को और फैलने से रोका
जा सके।"

18सो उन्होंने उन्हें भीतर बुलाया और आज्ञा दी कि
यीशु के नाम पर वे न तो किसी से कोई ही चर्चा करें और
न ही कोई उपदेश दें। 19किन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन्हें
उत्तर दिया, "तुम ही बताओ, क्या परमेश्वर के सामने
हमारे लिये यह उचित होगा कि परमेश्वर की न सुन कर
हम तुम्हारी सुनें? 20हम, जो कुछ हमने देखा है और सुना
है, उसे बताने से नहीं चूक सकते।" 21फिर उन्होंने उन्हें
और धमकाने के बाद छोड़ दिया। उन्हें दण्ड देने का उन्हें
कोई रास्ता नहीं मिल सका क्योंकि जो घटना घटी थी,
उसके लिये सभी लोग परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।
22जिस व्यक्ति पर अच्छा करने का यह आश्चर्य कर्म
किया गया था, उसकी आयु चालीस साल से ऊपर थी।

प्रभु परमेश्वर ... दिया जायेगा व्यवस्था. 18:15,19

तेरी ... पायेगा उत्पत्ति 22:18; 26:24

पतरस और यूहन्ना की वापसी

23जब उन्हें छोड़ दिया गया तो वे अपने ही लोगों के पास
आ गये और उनसे जो कुछ प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग
यहूदी नेताओं ने कहा था, वह सब उन्हें कह सुनाया।
24जब उन्होंने यह सुना तो मिल कर ऊँचे स्वर में वे
परमेश्वर को पुकारते हुए बोले, "स्वामी, तूने ही आकाश,
धरती, समुद्र और उनके भीतर जो कुछ है, उसकी रचना
की है। 25तूने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक,
हमारे पूर्वज दाऊद के मुख से कहा था:

'इन जातियों ने जाने क्यों
अपना अहंकार दिखाया?
लोगों ने व्यर्थ ही
षड़यन्त्र क्यों रच डाले?
26 धरती के राजाओं ने,
उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार किया।
और शासक प्रभु और
उसके मसीह के–विरोध में एकत्र हुए।'

भजन संहिता 2:1–2

27हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी इस नगर में
ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ मिल कर तेरे पवित्र
सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने मसीह के रूप में
अभिषिक्त किया था, वास्तव में एकजुट हो गये थे। 28वे
इकट्ठे हुए ताकि तेरी शक्ति और इच्छा के अनुसार जो
कुछ पहले ही निश्चित हो चुका था, वह पूरा हो। 29और
अब हे प्रभु, उनकी धमकियों पर ध्यान दे और अपने
सेवकों को निर्भयता के साथ 'तेरे वचन' सुनाने की शक्ति
दे 30जबकि चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ाये और
चिह्न तथा अदभुत कर्म तेरे पवित्र सेवकों द्वारा यीशु के
नाम पर किये जा रहे हों।"

31जब उन्होंने प्रार्थना पूरी की तो जिस स्थान पर वे
एकत्र थे, वह हिल उठा और उन सब में 'पवित्र आत्मा'
समा गया। और वे निर्भयता के साथ परमेश्वर के वचन
बोलने लगे।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

32विश्वासियों का यह समूचा दल एक मन और एक
तन था। कोई भी यह नहीं कहता था कि उसकी कोई भी
वस्तु उसकी अपनी है। उनके पास जो कुछ होता, उस सब
कुछ को वे बाँट लेते थे। 33और वे प्रेरित समूची शक्ति के
साथ प्रभु यीशु के फिर से जी उठने की साक्षी दिया करते
थे। परमेश्वर का महान बरदान उन सब पर बना रहता।
34उस दल में से किसी को भी कोई कमी नहीं थी। क्योंकि
जिस किसी के पास खेत या घर होते, वे उन्हें बेच दिया
करते थे और उससे जो धन मिलता, उसे लाकर 35प्रेरितों
के चरणों में रख देते। और जिसको जितनी आवश्यकता
होती, उसे उतना धन दे दिया जाता था।

36उदाहरण के लिये युसूफ़ नाम का, साइप्रस में पैदा
हुआ, एक लेवी था जिसे प्रेरित बरनाबास [अर्थात चैन का
पुत्र] भी कहा करते थे। 37उसने एक खेत बेच दिया जिसका
वह मालिक था और उस धन को लाकर प्रेरितों के चरणों
पर रख दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

5 हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी
सफ़ीरा ने मिलकर अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा
बेच दिया। 2और अपनी पत्नी की जानकारी में उसने
इसमें से कुछ धन बचा लिया। और कुछ धन प्रेरितों के
चरणों में रख दिया। 3इस पर पतरस ने कहा, "हे हनन्याह,
शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों डालने दी कि
तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और धरती को बेचने से
मिले धन में से थोड़ा बचा कर रख लिया? 4उसे बेचने से
पहले क्या वह तेरी ही नहीं थी? और जब तूने उसे बेच
दिया तो वह धन क्या तेरे ही अधिकार में नहीं था? तूने
इस बात की क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से
झूठ बोला है।" 5हनन्याह ने जब ये शब्द सुने तो वह पछाड़
खाकर गिर पड़ा और दम तोड़ दिया। जिस किसी ने भी
इस विषय में सुना, सब पर गहरा भय छा गया। 6फिर
जवान लोगों ने उठ कर उसे कफ़न में लपेटा और बाहर
ले जाकर गाड़ दिया।

7कोई तीन घण्टे बाद, जो कुछ घटा था, उससे अनजान
उसकी पत्नी भीतर आयी। 8पतरस ने उससे कहा, "बता,
तूने तेरे खेत क्या इतनें में ही बेचे थे?"

सो उसने कहा, "हाँ। इतने में ही।"

9तब पतरस ने उससे कहा, "तुम दोनों प्रभु की आत्मा
की परीक्षा लेने को सहमत क्यों हुए? देख तेरे पति को
दफनाने वालों के पैर दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं और वे
तुझे भी उठा ले जायेंगे।" 10तब वह उसके चरणों पर

गिर पड़ी और मर गयी। फिर युवक लोग भीतर आये और मरा पा कर उसे उठा ले गये और उसके पति के पास ही उसे दफ़ना दिया। 11सो समूची कलीसिया और जिस किसी ने भी इन बातों को सुना, उन सब पर गम्भीर भय छा गया।

प्रमाण

12प्रेरितों द्वारा लोगों के बीच बहुत से चिह्न प्रकट हो रहे थे और आश्चर्य कर्म किये जा रहे थे। वे सभी सुलेमान के दालान में एकत्र थे। 13उनमें सम्मिलित होने का साहस कोई नहीं करता था। पर लोग उनकी प्रशंसा अवश्य करते थे। 14उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले स्त्री और पुरुष अधिक से अधिक बढ़ते जा रहे थे। 15परिणामस्वरूप लोग अपने बीमारों को लाकर चारपाइयों और बिस्तरों पर गलियों में लिटाने लगे ताकि जब पतरस उधर से निकले तो उनमें से कुछ पर कम से कम उसकी छाया ही पड़ जाये। 16यरूशलेम के आसपास के नगरों से अपने बीमारों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लेकर ठट के ठट लोग आने लगे। और वे सभी अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

17फिर महायाजक और उसके साथी, यानी सदूकियों का दल, उनके विरोध में खड़े हो गये। वे ईर्ष्या से भरे हुए थे। 18सो उन्होंने प्रेरितों को बंदी बना लिया और उन्हें सार्वजनिक बंदीगृह में डाल दिया। 19किन्तु रात के समय प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार खोल दिये। उसने उन्हें बाहर ले जाकर कहा, 20"जाओ, मंदिर में खड़े हो जाओ और इस नये जीवन के विषय में लोगों को सब कुछ बताओ।" 21जब उन्होंने यह सुना तो भोर के तड़के वे मंदिर में प्रवेश कर गये और उपदेश देने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी वहाँ पहुचे तो उन्होंने यहूदी संघ तथा इस्राएल के बुज़ुर्गो की पूरी सभा बुलायी। फिर उन्होंने बंदीगृह से प्रेरितों को बुलवा भेजा। 22किन्तु जब अधिकारी बंदीगृह में पहुँचे तो वहाँ उन्हें प्रेरित नहीं मिले। उन्होंने लौट कर इसकी सूचना दी और 23कहा, "हमें बंदीगृह की सुरक्षा के ताले लगे हुए और द्वारों पर सुरक्षा–कर्मी खड़े मिले थे किन्तु जब हमने द्वार खोले तो हमें भीतर कोई नहीं मिला।" 24मंदिर के रखवालों के मुखिया ने और महायाजकों ने जब ये शब्द सुने तो वे उनके बारे में चक्कर में पड़ गये और सोचने लगे, "अब क्या होगा।" 25फिर किसी ने भीतर आकर उन्हें बताया, "जिन लोगों को तुमने जेल में डाल दिया था, वे मंदिर में खड़े लोगों को उपदेश दे रहे हैं।" 26सो मंदिर के सुरक्षा–कर्मियों का मुखिया अपने अधिकारियों के साथ वहाँ गया और प्रेरितों को बिना बल प्रयोग किये वापस ले आया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लोग उन्हें (मंदिर के सुरक्षाकर्मियों को) पत्थर न मारें।

27वे उन्हें भीतर ले आये और सर्वोच्च यहूदी सभा के सामने खड़ा कर दिया। फिर महायाजक ने उन से पूछते हुए कहा, 28"हमने इस नाम से उपदेश न देने के लिए तुम्हें कठोर आदेश दिया था और तुमने फिर भी समूचे यरुशलेम को अपने उपदेशों से भर दिया है। और तुम इस व्यक्ति की मृत्यु का अपराध हम पर लादना चाहते हो।"

29पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया, "हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की बात माननी चाहिये। 30उस यीशु को हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मृत्यु से फिर जिला कर खड़ा कर दिया है जिसे एक पेड़ पर लटका कर तुम लोगों ने मार डाला था। 31उसे ही प्रमुख और उद्धारकर्ता के रूप में महत्त्व देते हुए परमेश्वर ने अपने दाहिने स्थित किया है ताकि इस्राएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान की जा सके। 32इन सब बातों के हम साक्षी हैं और वैसे ही वह पवित्र आत्मा भी है जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।"

33जब उन्होंने यह सुना तो वे आग बबूला हो उठे और उन्हें मार डालना चाहा। 34किन्तु महासभा में से एक गमलिएल नामक फरीसी, जो धर्मशास्त्र का शिक्षक भी था, तथा जिसका सब लोग आदर करते थे, खड़ा हुआ और आज्ञा दी कि इन्हें थोड़ी देर के लिये बाहर कर दिया जाये। 35फिर वह उनसे बोला, "इस्राएल के पुरुषों, तुम इन लोगों के साथ जो कुछ करने पर उतारू हो, उसे सोच समझ कर करना। 36कुछ समय पहले अपने आपको बड़ा घोषित करते हुए थियूदास प्रकट हुआ था। और कोई चार सौ लोग उसके पीछे भी हो लिये थे, पर वह मार डाला गया और उसके सभी अनुयायी तितर–बितर हो गये। परिणाम कुछ नहीं निकला। 37उसके बाद जनगणना के समय गलील का रहने वाला यहूदा प्रकट हुआ। उसने भी कुछ लोगों को अपने पीछे आकर्षित कर लिया था। वह

भी मारा गया। उसके भी सभी अनुयायी इधर उधर बिखर
गये। 38इसीलिए इस वर्तमान विषय में मैं तुमसे कहता हूँ,
इन लोगों से अलग रहो, इन्हें ऐसे ही अकेले छोड़ दो क्योंकि
इनकी यह योजना या यह काम मनुष्य की ओर से है तो
स्वयं समाप्त हो जायेगा। 39किन्तु यदि यह परमेश्वर की
ओर से है तो तुम उन्हें रोक नहीं पाओगे। और तब हो
सकता है तुम अपने आपको ही परमेश्वर के विरोध में
लड़ते पाओ।"

उन्होंने उसकी सलाह मान ली। 40और प्रेरितों को
भीतर बुला कर उन्होंने कोड़े लगवाये और यह आज्ञा
देकर कि वे यीशु के नाम की कोई चर्चा न करें, उन्हें
चले जाने दिया। 41सो वे प्रेरित इस बात का आनन्द मनाते
हुए कि उन्हें उसके नाम के लिये अपमान सहने योग्य
गिना गया है, यहूदी महासभा से चले गये। 42फिर मंदिर
और घर-घर में हर दिन इस सुसमाचार का कि यीशु
मसीह है उपदेश देना और प्रचार करना उन्होंने कभी
नहीं छोड़ा।

विशेष कार्य के लिए सात पुरुषों का चुना जाना

6 उन्हीं दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, तो
यूनानी बोलने वाले और इब्रानी बोलने वाले यहूदियों
में एक विवाद उठ खड़ा हुआ क्योंकि वस्तुओं के दैनिक
वितरण में उनकी विधवाओं के साथ उपेक्षा बरती जा
रही थी। 2सो बारहों प्रेरितों ने शिष्यों की समूची मण्डली
को एक साथ बुला कर कहा, "हमारे लिये परमेश्वर के
वचन की सेवा को छोड़ कर भोजन का प्रबन्ध करना
उचित नहीं है। 3सो बंधुओ अच्छी साख वाले पवित्र आत्मा
और सूझबूझ से पूर्ण सात पुरुषों को अपने में से चुन लो।
हम उन्हें इस काम का अधिकारी बना देंगे। 4और अपने
आपको प्रार्थना और वचन की सेवा के कामों में समर्पित
रखेंगे।"

5इस सुझाव से सारी मण्डली बहुत प्रसन्न हुई। सो उन्होंने
विश्वास और पवित्र आत्मा से युक्त स्तिफनुस नाम के
व्यक्ति को और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर, तिमोन,
परमिनास और अंताकिया के निकुलाऊस को, जिसने
यहूदी धर्म अपना लिया था, चुन लिया। 6और इन लोगों
को फिर उन्होंने प्रेरितों के सामने उपस्थित कर दिया।
प्रेरितों ने प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे।

7इस प्रकार परमेश्वर का वचन फैलने लगा और
यरुशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी।
याजकों का एक बड़ा समूह भी इस मत को मानने लगा
था।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

8स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो अनुग्रह और सामर्थ्य
से परिपूर्ण था। वह लोगों के बीच बड़े-बड़े आश्चर्य कर्म
और अद्भुत चिन्ह प्रकट किया करता था। 9किन्तु
तथाकथित स्वतन्त्र किये गये लोगों के सभागार के कुछ
लोग जो कुरेनी और सिकन्दरिया से तथा किलिकिया
और एशिया से आये यहूदी थे, वे उसके विरोध में वाद-
विवाद करने लगे। 10किन्तु वह जिस बुद्धिमानी और आत्मा
से बोलता था, वे उसके सामने नहीं ठहर सके। 11फिर
उन्होंने कुछ लोगों को लालच देकर कहलवाया, "हमने
मूसा और परमेश्वर के विरोध में इसे अपमानपूर्ण शब्द
कहते सुना है।" 12इस तरह उन्होंने जनता को, बुजुर्ग यहूदी
नेताओं को और यहूदी धर्मशास्त्रियों को भड़का दिया।
फिर उन्होंने आकर उसे पकड़ लिया और सर्वोच्च यहूदी
महासभा के सामने ले आये। 13उन्होंने वे झूठे गवाह पेश
किये जिन्होंने कहा, "यह व्यक्ति इस पवित्र स्थान और
व्यवस्था के विरोध में बोलते कभी रुकता ही नहीं है।
14हमने इसे कहते सुना है कि यह नासरी यीशु इस स्थान
को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मूसा ने जिन रीति रिवाजों
को हमें दिया है उन्हें बदल देगा।" 15फिर सर्वोच्च यहूदी
महासभा में बैठे हुए सभी लोगों ने जब उसे ध्यान से देखा
तो पाया कि उसका मुख किसी स्वर्गदूत के मुख के समान
दिखाई दे रहा था।

स्तिफनुस का भाषण

7 फिर महायाजक ने कहा, "क्या यह बात ऐसे ही
है?" 2उसने उत्तर दिया, "बंधुओं और पितृ तुल्य
बुजुर्गों! मेरी बात सुनो। हारान में रहने से पहले अभी जब
हमारा पिता इब्राहीम मैसोपोटामिया में ही था, तो महिमामय
परमेश्वर ने उसे दर्शन दिये 3और कहा, 'अपने देश और
अपने लोगों को छोड़कर तू उस धरती पर चला जा,
जिसे तुझे मैं दिखाऊँगा।' 4सो वह कसदियों की धरती को
छोड़ कर हारान में जा बसा जहाँ से उसके पिता की मृत्यु
के बाद परमेश्वर ने उसे इस देश में आने की प्रेरणा दी

जहाँ तुम अब रह रहे हो। 5परमेश्वर ने यहाँ उसे
उत्तराधिकार में कुछ नहीं दिया, डग भर धरती तक नहीं।
यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी किन्तु परमेश्वर ने
उससे प्रतिज्ञा की कि यह देश वह उसे और उसके वंशजों
को उनकी सम्पत्ति के रूप में देगा। 6परमेश्वर ने उससे
यह भी कहा, 'तेरे वंशज कहीं विदेश में परदेसी होकर
रहेंगे और चार सौ साल तक उन्हें दास बनाकर, उनके
साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाएगा।' 7परमेश्वर ने कहा,
'दास बनाने वाली उस जाति को मैं दण्ड दूँगा और इसके
बाद वे उस देश से बाहर आ जायेंगे और इस स्थान पर वे
मेरी सेवा करेंगे।' 8परमेश्वर ने इब्राहीम को ख़तने की
मुद्रा से मुद्रित करके करार-प्रदान किया। और इस प्रकार
वह इसहाक का पिता बना। उसके जन्म के बाद आठवें
दिन उसने उसका ख़तना किया। फिर इसहाक से याकूब
और याकूब से बारह कुलों के आदि पुरुष पैदा हुए।

9"वे आदि पुरुष यूसुफ़ से ईर्ष्या रखते थे। सो उन्होंने
उसे मिस्र में दास बनने के लिए बेच दिया। किन्तु परमेश्वर
उसके साथ था 10और उसने उसे सभी विपत्तियों से बचाया।
परमेश्वर ने यूसुफ़ को विवेक दिया और उसे इस योग्य
बनाया जिससे वह मिस्र के राजा फ़ैरो का अनुग्रह पात्र बन
सका। फ़ैरो ने उसे मिस्र का राज्यपाल और अपने घर-
बार का अधिकारी नियुक्त किया। 11फिर समूचे मिस्र और
कनान देश में अकाल पड़ा और बड़ा संकट छा गया।
हमारे पूर्वज खाने को कुछ नहीं पा सके। 12जब याकूब ने
सुना कि मिस्र में अन्न है, तो उसने हमारे पूर्वजों को वहाँ
भेजा-यह पहला अवसर था। 13उनकी दूसरी यात्रा के
अवसर पर यूसुफ़ ने अपने भाइयों को अपना परिचय दे
दिया और तभी फ़ैरो को भी यूसुफ़ के परिवार की
जानकारी मिली। 14सो यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और
परिवार के सभी लोगों को, जो कुल मिलाकर पिचहत्तर
थे, बुलवा भेजा। 15तब याकूब मिस्र आ गया और उसने
वहाँ वैसे ही प्राण त्यागे जैसे हमारे पूर्वजों ने वहाँ प्राण त्यागे
थे। 16उनके शव वहाँ से वापस सेकेम ले जाये गये जहाँ
उन्हें मकबरे में दफ़ना दिया गया। यह वही मकबरा था
जिसे इब्राहीम ने हमोर के बेटों से कुछ धन देकर खरीदा
था।

17"जब परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वचन दिया था,
उसके पूरा होने का समय निकट आया तो मिस्र में हमारे
लोगों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। 18आख़िरकार
मिस्र पर एक ऐसे राजा का शासन हुआ जो यूसुफ को नहीं
जानता था। 19उसने हमारे लोगों के साथ धूर्तता पूर्ण व्यवहार
किया। उसने हमारे पूर्वजों को बड़ी निर्दयता के साथ विवश
किया कि वे अपने बच्चों को बाहर मरने को छोड़ें ताकि
वे जीवित ही न बच पायें। 20उसी समय मूसा का जन्म
हुआ। वह बहुत सुन्दर बालक था। तीन महीने तक वह
अपने पिता के घर के भीतर पलता बढ़ता रहा। 21फिर
जब उसे बाहर छोड़ दिया गया तो फ़ैरो की पुत्री उसे अपना
पुत्र बना कर उठा ले गयी। उसने अपने पुत्र के रूप में
उसका लालन-पालन किया। 22मूसा को मिस्रियों के सम्पूर्ण
कला-कौशल की शिक्षा दी गयी। वह वाणी और कर्म
दोनों में ही समर्थ था।

23"जब वह चालीस साल का हुआ तो उसने इस्राएल
की संतान, अपने भाई-बंधुओं के पास जाने का निश्चय
किया। 24सो जब एक बार उसने देखा कि उनमें से किसी
एक के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है तो उसने उसे
बचाया और मिस्री व्यक्ति को मार कर उस दलित व्यक्ति
का बदला ले लिया। 25उसने सोचा था कि उसके अपने
भाई बंधु जान जायेंगे कि उन्हें छुटकारा दिलाने के लिये
परमेश्वर उसका उपयोग कर रहा है। किन्तु वे इसे नहीं
समझ पाये। 26अगले दिन उनमें से (उसके अपने लोगों में
से) जब कुछ लोग झगड़ रहे थे तो वह उनके पास
पहुँचा और यह कहते हुए उनमें बीच-बचाव का जतन
करने लगा कि तुम लोग तो आपस में भाई-भाई हो। एक
दूसरे के साथ बुरा बर्ताव क्यों करते हो? 27किन्तु उस
व्यक्ति ने जो अपने पड़ोसी के साथ झगड़ रहा था, मूसा को
धक्का मारते हुए कहा, 'तुझे हमारा शासक और न्यायकर्ता
किसने बनाया? 28जैसे तूने कल उस मिस्री की हत्या कर
दी थी,' क्या तू वेसे ही मुझे भी मार डालना चाहता है?*
29मूसा ने जब यह सुना तो वह वहाँ से चला गया और
मिद्यान में एक परदेसी के रूप में रहने लगा। वहाँ उसके
दो पुत्र हुए।

30"चालीस वर्ष बीत जाने के बाद सिनाई पर्वत के पास
मरुभूमि में एक जलती झाड़ी की लपटों के बीच उसके
सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ। 31मूसा ने जब यह देखा
तो इस दृश्य पर वह आश्चर्य चकित हो उठा। जब और
अधिक निकटता से देखने के लिये वह उसके पास गया
तो उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी: 32'मैं तेरे पूर्वजों का

मुझे ... चाहता है निर्गमन 2:14

परमेश्वर हूँ, इब्राहीम का, इसहाक का और याकूब का
परमेश्वर हूँ।' * भय से काँपते हुए मूसा कुछ देखने का
साहस नहीं कर पा रहा था। 33तभी प्रभु ने उससे कहा,
'अपने पैरों की चप्पलें उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू
खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। 34मैंने मिस्र में अपने लोगों के
साथ हो रहे दुर्व्यवहार को देखा है, परखा है। मैंने उन्हें
विलाप करते हुए सुना है। उन्हें मुक्त कराने के लिये मैं
नीचे उतरा हूँ। आ, अब मैं तुझे मिस्र भेजूँगा।'*

35"यह वही मूसा है जिसे उन्होंने यह कहते हुए नकार
दिया था, 'तुझे शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया है?'
यह वही है जिसे परमेश्वर ने उस स्वर्गदूत द्वारा, जो
उसके लिए झाड़ी में प्रकट हुआ था, शासक और मुक्तिदाता
होने के लिये भेजा। 36वह उन्हें मिस्र की धरती और लाल
सागर तथा वनों में से चालीस साल तक आश्चर्य कर्म
करते हुए और चिह्न दिखाते हुए, बाहर निकाल लाया।
37यह वही मूसा है जिसने इस्राएल की संतानों से कहा
था, 'तुम्हारे भाइयों में से ही तुम्हारे लिये परमेश्वर एक
मेरे जैसा नबी भेजेगा।'* 38यह वही है जो वीराने में
सभा के बीच हमारे पूर्वजों और उस स्वर्गदूत के साथ
मौजूद था जिसने सिनाई पर्वत पर उससे बातें की थीं। इसी
ने हमें देने के लिये परमेश्वर से सजीव वचन प्राप्त किये
थे।

39"किन्तु हमारे पूर्वजों ने उसका अनुसरण करने को
मना कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उसे नकार दिया
और अपने हृदयों में वे फिर मिस्र की ओर लौट गये।
40उन्होंने आरों से कहा था, 'हमारे लिये ऐसे देवताओं की
रचना करो जो हमें मार्ग दिखायें। इस मूसा के बारे में, जो
हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया, हम नहीं जानते कि
उसके साथ क्या कुछ घटा।'* 41उन्हीं दिनों उन्होंने बछड़े
की एक मूर्ति बनायी। और उस मूर्ति पर बलि चढ़ाई। वे,
जिसे उन्होंने अपने हाथों से बनाया था, उस पर आनन्द
मनाने लगे। 42किन्तु परमेश्वर ने उनसे मुँह मोड़ लिया
था। उन्हें आकाश के ग्रह-नक्षत्रों की उपासना के लिये छोड़
दिया गया था। जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है:

'हे इस्राएल के परिवार के लोगो,
क्या तुम पशुबलि और अन्य बलियाँ
वीराने में मुझे नहीं चढ़ाते रहे?
चालीस वर्ष तक
43 तुम मोलेक के तम्बू और अपने देवता रिफान
के तारे को भी अपने साथ ले गये थे।
वे मूर्तियाँ भी तुम ले गये जिन्हें तुमने
उपासना के लिये बनाया था।
इसलिये मैं तुम्हें बेबिलोन से भी परे भेजूँगा।'

आमोस 5:25-27

44"साक्षी का तम्बू भी उस वीराने में हमारे पूर्वजों के
साथ था। यह तम्बू उसी नमूने पर बनाया गया था जैसा कि
उसने देखा था और जैसा कि मूसा से बात करने वाले ने
बनाने को उससे कहा था। 45हमारे पूर्वज उसे प्राप्त करके
तभी वहाँ से आये थे जब यहोशू के नेतृत्त्व में उन्होंने उन
जातियों से यह धरती ले ली थी जिन्हें हमारे पूर्वजों के
सम्मुख परमेश्वर ने निकाल बाहर किया था। दाऊद के
समय तक वह वहीं रहा। 46दाऊद ने परमेश्वर के अनुग्रह
का आनन्द उठाया। उसने चाहा कि वह याकूब के
परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनवा सके 47किन्तु वह
सुलेमान ही था जिसने उसके लिए मंदिर बनवाया।

48"कुछ भी हो परम परमेश्वर तो हाथों से बनाये भवनों
में नहीं रहता। जैसा कि नबी ने कहा है:

प्रभु न कहा,
'स्वर्ग मेरा सिंहासन है
49 और धरती चरण की चौकी बनी है।
किस तरह का मेरा घर तुम बनाओगे?
कहीं कोई जगह ऐसी है,
जहाँ विश्राम पाऊँ?
50 क्या यह सभी कुछ,
मेरे करों की रचना नही रही?'

यशायाह 66:1-2

51"हे बिना ख़तने के मन और कान वाले हठीले
लोगो! तुमने सदा ही पवित्र आत्मा का विरोध किया है।
तुम अपने पूर्वजों के जैसे ही हो। 52क्या कोई भी ऐसा
नबी था, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने तो
उन्हें भी मार डाला जिन्होंने बहुत पहले से ही उस धर्मी
के आने की घोषणा कर दी थी, जिसे अब तुमने धोखा
देकर पकड़वा दिया और मरवा डाला। 53तुम वही हो

मैं ... परमेश्वर हूँ निर्गमन 3:6
अपने पैरों ... मिस्र भेजूँगा निर्गमन 3:5-10
तुम्हारे .... भेजेगा व्यवस्था. 18:15
हमारे लिये ... कुछ घटा निर्गमन 32:1

जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये व्यवस्था के विधान को पा
तो लिया किन्तु उस पर चले नहीं!"

स्तिफनुस की हत्या

54जब उन्होंने यह सुना तो वे क्रोध से आगबबूला हो
उठे और उस पर दाँत पीसने लगे। **55**किन्तु पवित्र आत्मा
से भावित स्तिफनुस स्वर्ग की ओर देखता रहा। उसने
देखा परमेश्वर की महिमा को और परमेश्वर के दाहिने
खड़े यीशु को। **56**सो उसने कहा, "देखो! मैं देख रहा हूँ
कि स्वर्ग खुला हुआ है और मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के
दाहिने खड़ा है।"

57इस पर उन्होंने चिल्लाते हुए अपने कान बन्द कर
लिये और फिर वे सभी उस पर एक साथ झपट पड़े।
58वे उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले गये और उस पर
पथराव करने लगे। तभी गवाहों ने अपने वस्त्र उतार कर
शाउल नाम के एक युवक के चरणों में रख दिये।
59स्तिफ़नुस पर जब से उन्होंने पत्थर बरसाना प्रारम्भ
किया, वह यह कहते हुए प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु
यीशु, मेरी आत्मा को स्वीकार कर।" **60**फिर वह घुटनों
के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर में चिल्लाया, "प्रभु, इस
पाप को उनके विरुद्ध मत ले।" इतना कह कर वह चिर
निद्रा में सो गया।

विश्वासियों पर अत्याचार

8 इस तरह शाऊल ने स्तिफनुस की हत्या का समर्थन
किया। उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर
घोर अत्याचार होने आरम्भ हो गये। प्रेरितों को छोड़ वे
सभी लोग यहूदिया और सामरिया के गाँवों में तितर-बितर
हो कर फैल गये। **2**कुछ भक्त जनों ने स्तिफनुस को दफना
दिया और उसके लिये गहरा शोक मनाया। **3**शाऊल ने
कलीसिया को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। वह घर-
घर जा कर औरत और पुरुषों को घसीटते हुए जेल में
डालने लगा। **4**उधर तितर-बितर हुए लोग हर कहीं जा
कर सुसमाचार का संदेश देने लगे।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

5फिलिप्पुस सामरिया नगर को चला गया और वहाँ
लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। **6**फिलिप्पुस के
लोगों ने जब सुना और जिन अद्भुत चिन्हों को वह प्रकट
किया करता था, देखा, तो जिन बातों को वह बताया करता
था, उन पर उन्होंने गम्भीरता के साथ ध्यान दिया। **7**बहुत
से लोगों में से, जिनमें दुष्टात्माएँ समायी थीं, वे ऊँचे स्वर में
चिल्लाती हुई बाहर निकल आयीं थी। बहुत से लकवे के
रोगी और विकलांग अच्छे हो रहे थे। **8**उस नगर में उल्लास
छाया हुआ था।

9वहीं शमौन नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था। वह
काफी समय से उस नगर में जादू टोना किया करता था।
और सामरिया के लोगों को आश्चर्य में डालता रहता था।
वह महापुरुष होने का दावा किया करता था। **10**छोटे से
लेकर बड़े तक सभी लोग उसकी बात पर ध्यान देते और
कहते, "यह व्यक्ति परमेश्वर की वही शक्ति है जो महान
शक्ति कहलाती है।" **11**क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें
अपने चमत्कारों के चक्कर में डाल रखा था, इसीलिए वे
उस पर ध्यान दिया करते थे। **12**किन्तु उन्होंने जब
फिलिप्पुस पर विश्वास किया क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर
के राज्य का सुसमाचार और यीशु मसीह का नाम सुनाया
था, तो वे स्त्री और पुरुष दोनों ही बपतिस्मा लेने लगे।
13और स्वयं शमौन ने भी उन पर विश्वास किया। और
बपतिस्मा लेने के बाद फिलिप्पुस के साथ वह बड़ी निकटता
से रहने लगा। उन महान् चिह्नों और किये जा रहे अद्भुत
कार्यों को जब उसने देखा, तो वह दंग रह गया।

14उधर यरुशलेम में प्रेरितों ने जब यह सुना कि
सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार
कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास
भेजा। **15**सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने उनके लिये प्रार्थना
की कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो। **16**क्योंकि अभी तक
पवित्र आत्मा किसी पर भी नहीं उतरा था, उन्हें बस प्रभु
यीशु के नाम का बपतिस्मा ही दिया गया **17**सो पतरस
और यूहन्ना ने उन पर अपने हाथ रखे और उन्हें पवित्र
आत्मा प्राप्त हो गया।

18जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने भर से
पवित्र आत्मा दे दिया गया तो उनके सामने धन प्रस्तुत
करते हुए वह बोला, **19**"यह शक्ति मुझे दे दो ताकि जिस
किसी पर मैं हाथ रखूँ, उसे पवित्र आत्मा मिल जाये।"

20पतरस ने उससे कहा, "तेरा और तेरे धन का
सत्यानाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि तू धन से परमेश्वर
के वरदान को मोल ले सकता है। **21**इस विषय में न तेरा
कोई हिस्सा है, और न कोई साझा क्योंकि परमेश्वर के

सम्मुख तेरा हृदय ठीक नहीं है। 22इसलिये अपनी इस
दुष्टता से मन फिराव कर और प्रभु से प्रार्थना कर। हो
सकता है तेरे मन में जो विचार था, उस विचार के लिये तू
क्षमा कर दिया जाये। 23क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तू
कटुता से भरा है और पाप के चंगुल में फँसा है।"

24इस पर शमौन ने उत्तर दिया, "तुम प्रभु से मेरे लिये
प्रार्थना करो ताकि तुमने जो कुछ कहा है, उसमें से कोई
भी बात मुझ पर न घटे।!"

25फिर प्रेरित अपनी साक्षी देकर और प्रभु का वचन
सुना कर रास्ते के बहुत से सामरी गाँवों में सुसमाचार का
उपदेश करते हुए यरूशलेम लौट आये।

इथोपिया से आये व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

26प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस को कहते हुए बताया,
"तैयार हो, और दक्षिण दिशा में उस राह पर जा, जो
यरूशलेम से गाजा को जाती है।" (यह एक सुनसान मार्ग
है।) 27सो वह तैयार हुआ और चल पड़ा। वहीं एक इथोपिया
का खोजा था। वह इथोपिया की रानी कंदाके का एक
अधिकारी था जो उसके समुचे कोष का कोषपाल था।
वह आराधना के लिये यरूशलेम गया था। 28लौटते हुए
वह अपने रथ में बैठा भविष्यवक्ता यशायाह का ग्रंथ पढ़
रहा था। 29तभी फिलिप्पुस को आत्मा से प्रेरणा मिली,
"उस रथ के पास जा और वहीं ठहर।" 30फिलिप्पुस जब
उस रथ के पास दौड़ कर गया तो उसने उसे यशायाह को
पढ़ते सुना। सो वह बोला, "क्या जिसे तू पढ़ रहा है, उसे
समझता भी है?"

31उसने कहा, "मैं भला तब तक कैसे समझ सकता हूँ,
जब तक कोई मुझे इसकी व्याख्या नहीं करे?" फिर उसने
फिलिप्पुस को रथ पर अपने साथ बैठने को बुलाया।
32शास्त्र के जिस अंश को वह पढ़ रहा था, वह था:

"उसे वध की भेड़ सा ले जाया जा रहा था।
वह तो उस मेमने के समान चुप था।
जो अपनी ऊन काटने वाले के समक्ष
चुप रहता है, ठीक वैसे ही
उसने अपना मुँह खोला नहीं!
33 ऐसी दीन दशा में उसको
न्याय से वंचित किया गया!
उसकी पीढ़ी का कौन वर्णन करेगा?
क्योंकि धरती से उसका जीवन तो ले लिया था।"

यशायाह 53:7–8

34उस खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, "अनुग्रह करके
मुझे बता कि भविष्यवक्ता यह किसके बारे में कह रहा
है? अपने बारे में या किसी और के?" 35फिर फिलिप्पुस
ने कहना शुरू किया और इस शास्त्र से लेकर यीशु के
सुसमाचार तक सब उसे कह सुनाया।

36मार्ग में आगे बढ़ते हुए वे कहीं पानी के पास पहुँचे।
फिर उस खोजे ने कहा, "देख! यहाँ जल है। अब मुझे
बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?" [37"फिलिप्पुस ने उत्तर
दिया, 'यदि तू अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करता है, तो
ले सकता है।' उसने उत्तर दिया, 'हाँ! मैं विश्वास करता हूँ
कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'"]* 38तब उसने
रथ को रोकने की आज्ञा दी। फिर फिलिप्पुस और वह
खोजा दोनों ही पानी में उतर गये और फिलिप्पुस ने उसे
बपतिस्मा दिया। 39और फिर जब वे पानी से बाहर निकले
तो फिलिप्पुस को प्रभु का आत्मा कहीं उठा ले गया। और
उस खोजे ने फिर उसे कभी नहीं देखा। उधर खोजा आनन्द
मनाता हुआ अपने मार्ग पर आगे चला गया। 40उधर
फिलिप्पुस ने अपने आपको अशदोद में पाया और जब
तक वह कैसरिया नहीं पहुँच गया, सभी नगरों में सुसमाचार
का प्रचार करते हुए यात्रा करता रहा।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

9 शाऊल अभी प्रभु के अनुयायिओं को मार डालने
की धमकियाँ दिया करता था। वह प्रमुख याजक के
पास गया 2और उसने दमिश्क के प्रार्थना सभागारों के
नाम माँग कर अधिकार पत्र ले लिया जिससे उसे वहाँ यदि
कोई इस पंथ का अनुयायी मिले, फिर चाहे वह स्त्री हो,
चाहे पुरुष, तो वह उन्हें बंदी बना सके और फिर वापस
यरूशलेम ले आये।

3सो जब चलते चलते वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो
अचानक उसके चारों ओर आकाश से एक प्रकाश कौंध
गया 4और वह धरती पर जा पड़ा। उसने एक आवाज सुनी
जो उससे कह रही थी, "शाऊल, अरे ओ शाऊल। तू मुझे
क्यों सता रहा है?"

5शाऊल ने पूछा, "प्रभु, तू कौन है?" वह बोला, "मैं
यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है। 6पर तू अब खड़ा हो और

पद 37 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 37 जोड़ा
गया है।

नगर में जा। वहाँ तुझे बता दिया जायेगा कि तुझे क्या
करना चाहिये।”
7जो पुरुष उसके साथ यात्रा कर रहे थे, अवाक् खड़े
थे। उन्होंने आवाज़ तो सुनी किन्तु किसी को भी देखा
नहीं। 8फिर शाऊल धरती पर से खड़ा हुआ। किन्तु जब
उसने अपनी आखें खोलीं तो वह कुछ भी देख नहीं पाया।
सो वे उसे हाथ पकड़ कर दमिश्क ले गये। 9तीन दिन
तक वह न तो कुछ देख पाया, और न ही उसने कुछ
खाया या पिया।
10दमिश्क में हनन्याह नाम का एक शिष्य था। प्रभु ने
दर्शन देकर उससे कहा, “हनन्याह।” सो वह बोला, “प्रभु,
मैं यह रहा।”
11प्रभु ने उससे कहा, “खड़ा हो और सीधी कहलाने
वाली गली में जा। और वहाँ यहूदा के घर में जाकर
तरसुस निवासी शाऊल नाम के एक व्यक्ति के बारे में
पूछताछ कर क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है। 12उसने
एक दर्शन में देखा है कि हनन्याह नाम के एक व्यक्ति ने
घर में आकर उस पर हाथ रखे हैं ताकि वह फिर से देख
सके।”
13हनन्याह ने उत्तर दिया, “प्रभु, मैंने इस व्यक्ति के
बारे में बहुत से लोगों से सुना है। यरूशलेम में तेरे संतों के
साथ इसने जो बुरी बातें की हैं, वे सब मैंने सुनी हैं। 14और
यहाँ भी यह प्रमुख याजकों से तेरे नाम में सभी विश्वास
रखने वालों को बंदी बनाने का अधिकार लेकर आया
है।”
15किन्तु प्रभु ने उससे कहा, “तू जा क्योंकि इस व्यक्ति
को विधर्मियों, राजाओं और इस्राएल के लोगों के सामने
मेरा नाम लेने के लिये, एक साधन के रूप में मैंने चुना है।
16मैं स्वयं उसे वह सब कुछ बताऊँगा, जो उसे मेरे नाम
के लिए सहना होगा।”
17सो हनन्याह चल पड़ा और उस घर के भीतर पहुँचा
और शाऊल पर उसने अपने हाथ रख दिये और कहा,
“भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे भेजा है, जो तेरे मार्ग में तेरे
सम्मुख प्रकट हुआ था ताकि तू फिर से देख सके और
पवित्र आत्मा से भावित हो जाये।” 18फिर तुरंत छिलकों
जैसी कोई वस्तु उसकी आँखों से ढलकी और उसे फिर
दिखाई देने लगा। वह खड़ा हुआ और उसने बपतिस्मा
लिया। 19फिर थोड़ा भोजन लेने के बाद उसने अपनी
शक्ति पुन: प्राप्त कर ली।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार कार्य

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ समय ठहरा। 20फिर
वह सीधा यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा और यीशु का
प्रचार करने लगा। वह बोला, “यह यीशु परमेश्वर का पुत्र
है।”
21जिस किसी ने भी उसे सुना, चकित रह गया और
बोला, “क्या यह वही नहीं है, जो यरूशलेम में यीशु के
नाम में विश्वास रखने वालों को नष्ट करने का यत्न
किया करता था। और क्या यह उन्हें यहाँ पकड़ने और
प्रमुख याजकों के सामने ले जाने नहीं आया था?”
22किन्तु शाऊल अधिक से अधिक शक्तिशाली होता
गया और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को यह
प्रमाणित करते हुए कि यह यीशु ही मसीह है, पराजित
करने लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

23बहुत दिन बीत जाने के बाद यहूदियों ने उसे मार
डालने का षड्यन्त्र रचा। 24किन्तु उनकी योजनाओं का
शाऊल को पता चल गया। वे नगर द्वारों पर रात दिन घात
लगाये रहते थे ताकि उसे मार डालें। 25किन्तु उसके शिष्य
रात में उसे उठा ले गये और टोकरी में बैठा कर नगर की
चारदीवारी से लटका कर उसे नीचे उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

26फिर जब वह यरूशलेम पहुँचा तो वह शिष्यों के
साथ मिलने का जतन करने लगा। किन्तु वे तो सभी उससे
डरते थे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि वह भी एक शिष्य
है। 27किन्तु बरनाबास उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले
गया और उसने उन्हें बताया कि शाऊल ने प्रभु को मार्ग
में किस प्रकार देखा और प्रभु ने उससे कैसे बातें कीं।
और दमिश्क में किस प्रकार उसने निर्भयता से यीशु के
नाम का प्रचार किया।
28फिर शाऊल उनके साथ यरूशलेम में स्वतन्त्रतापूर्वक
आते जाते रहने लगा। वह निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम
का प्रवचन किया करता था। 29वह यूनानी भाषा-भाषी
यहूदियों के साथ वाद-विवाद और चर्चाएँ करता किन्तु वे
तो उसे मार डालना चाहते थे। 30किन्तु जब बंधुओं को
इस बात का पता चला तो वे उसे कैसरिया ले गये और
फिर उसे तरसुस पहुँचा दिया।

31इस प्रकार समूचे यहूदिया, गलील और सामरिया के कलीसिया का वह समय शांति से बीता। वह कलीसिया और अधिक शक्तिशाली होने लगी। क्योंकि वह प्रभु से डर कर अपना जीवन व्यतीत करती थी, और पवित्र आत्मा ने उसे और अधिक प्रोत्साहित किया था सो उसकी संख्या बढ़ने लगी।

32फिर उस समूचे क्षेत्र में घूमता फिरता पतरस लिद्दा के संतों से मिलने पहुँचा। 33वहाँ उसे अनियास नाम का एक व्यक्ति मिला जो आठ साल से बिस्तर में पड़ा था। उसे लकवा मार गया था। 34पतरस ने उससे कहा, "अनियास, यीशु मसीह तुझे स्वस्थ करता है। खड़ा हो और अपना बिस्तर ठीक कर।" सो वह तुरंत खड़ा हो गया। 35फिर लिद्दा और शारोन में रहने वाले सभी लोगों ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर मुड़ गये।

पतरस याफा में

36याफा में तबीता नाम की एक शिष्या रहा करती थी (जिसका यूनानी अनुवाद है दोरकास अर्थात् हिरणी)। वह सदा अच्छे अच्छे काम करती और गरीबों को दान देती। 37उन्हीं दिनों वह बीमार हुई और मर गयी। उन्होंने उसके शव को स्नान करा के सीढ़ियों के ऊपर कमरे में रख दिया। 38लिद्दा याफा के पास ही था, सो शिष्यों ने जब यह सुना कि पतरस लिद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो व्यक्ति भेजे कि वे उससे विनती करें, "अनुग्रह कर के जल्दी से जल्दी हमारे पास आ जा!" 39सो पतरस तैयार होकर उनके साथ चल दिया। जब पतरस वहाँ पहुँचा तो वे उसे सीढ़ियों के ऊपर कमरे में ले गये। वहाँ सभी विधवाएँ विलाप करते हुए और उन कुर्तियों और दूसरे वस्त्रों को जिन्हें दोरकास ने जब वह उनके साथ थी, बनाया था, दिखाते हुए उसके चारों ओर खड़ी हो गयीं। 40पतरस ने हर किसी को बाहर भेज दिया और घुटनों के बल झुक कर उसने प्रार्थना की। फिर शव की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "तबीता–खड़ी हो जा!" उसने अपनी आखें खोल दीं और पतरस को देखते हुए वह उठ बैठी। 41उसे अपना हाथ देकर पतरस ने खड़ा किया और फिर संतों और विधवाओं को बुलाकर उन्हें उसे जीवित सौंप दिया। 42समूचे याफा में हर किसी को इस बात का पता चल गया और बहुत से लोगों ने प्रभु में विश्वास किया। 43फिर याफा में शमोन नाम के एक चर्मकार के यहाँ पतरस बहुत दिनों तक ठहरा।

पतरस और कुरनेलियुस

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक व्यक्ति था। वह सेना के उस दल का नायक था जिसे इतालवी कहा जाता था। 2वह परमेश्वर से डरने वाला भक्त था और वैसा ही उसका परिवार भी था। वह गरीब लोगों की सहायता के लिये उदारतापूर्वक दान दिया करता था और सदा ही परमेश्वर की प्रार्थना करता रहता था। 3दिन के नवें पहर के आसपास उसने एक दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास आया है और उससे कह रहा है, "कुरनेलियुस।"

4सो कुरनेलियुस डरते हुए स्वर्गदूत की ओर देखते हुए बोला, "हे प्रभु, यह क्या है?"

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और दीन दुखियों को दिया हुआ तेरा दान एक स्मारक के रूप में तुझे याद दिलाने के लिए परमेश्वर के पास पहुचें हैं। 5सो अब कुछ व्यक्तियों को याफा भेज और शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो पतरस भी कहलाता है, यहाँ बुलवा ले। 6वह शमौन नाम के एक चर्मकार के साथ रह रहा है। उसका घर सागर के किनारे है।" 7वह स्वर्गदूत जो उससे बात कर रहा था, जब चला गया तो उसने अपने दो सेवकों और अपने निजी सहायकों में से एक भक्त सिपाही को बुलाया 8और जो कुछ घटित हुआ था, उन्हें सब कुछ बताकर याफा भेज दिया।

9अगले दिन जब वे चलते चलते नगर के निकट पहुँचने ही वाले थे, पतरस दोपहर के समय प्रार्थना करने को छत पर चढ़ा। 10उसे भूख लगी, सो वह कुछ खाना चाहता था। वे जब भोजन तैयार कर ही रहे थे तो उसकी समाधि लग गयी। 11और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है। उसे चारों कोनों से पकड़ कर धरती पर उतारा जा रहा है। 12उस पर हर प्रकार के पशु, धरती के रेंगने वाले जीव–जंतु और आकाश के पक्षी थे। 13फिर एक स्वर ने उससे कहा, "पतरस उठ। मार और खा।"

14पतरस ने कहा, "प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार अपवित्र आहार को नहीं लिया है।"

15इस पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, "किसी भी वस्तु को जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, तुच्छ मत कहना!" 16तीन बार ऐसा ही हुआ और वह वस्तु फिर तुरंत आकाश में वापस उठा ली गयी।

17पतरस ने जिस दृश्य को दर्शन में देखा था, उस पर वह अभी चक्कर में ही पड़ा हुआ था कि कुरनेलियुस के भेजे वे लोग दरवाजे पर खड़े पूछ रहे थे कि शमौन का घर कहाँ है? 18उन्होंने बाहर बुलाते हुए पूछा, "क्या पतरस कहलाने वाला शमौन अतिथि के रूप में यहीं ठहरा है?"

19पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहा था कि आत्मा ने उससे कहा, "सुन, तीन व्यक्ति तुझे ढूँढ रहे हैं। 20सो खड़ा हो, और नीचे उतर बेझिझक उनके साथ चला जा, क्योंकि उन्हें मैंने ही भेजा है।" 21इस प्रकार पतरस नीचे उतर आया और उन लोगों से बोला, "मैं वही हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो। तुम क्यों आये हो।?"

22वे बोले, "हमें सेनानायक कुरनेलियुस ने भेजा है। वह परमेश्वर से डरने वाला नेक पुरुष है। यहूदी लोगों में उसका बहुत सम्मान है। उससे पवित्र-स्वर्गदूत ने तुझे अपने घर बुलाने का निमन्त्रण देने को और जो कुछ तू कहे उसे सुनने को कहा है।" 23इस पर पतरस ने उन्हें भीतर बुला लिया और ठहरने को स्थान दिया।

फिर अगले दिन तैयार होकर वह उनके साथ चला गया। और याफा के निवासी कुछ अन्य बन्धु भी उसके साथ हो लिये। 24अगले ही दिन वह कैसरिया जा पहुँचा। वहाँ अपने सम्बन्धियों और निकट-मित्रों को बुलाकर कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। 25पतरस जब भीतर पहुँचा तो कुरनेलियुस से उसकी भेंट हुई। कुरनेलियुस ने उसके चरणों पर गिरते हुए उसको दण्डवत प्रणाम किया। 26किन्तु उसे उठाते हुए पतरस बोला, "खड़ा हो। मैं तो स्वयं मात्र एक मनुष्य हूँ।" 27फिर उसके साथ बात करते करते वह भीतर चला गया। और वहाँ उसने बहुत से लोगों को एकत्र पाया। 28उसने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि एक यहूदी के लिये किसी दूसरी जाति के व्यक्ति के साथ कोई सम्बन्ध रखना या उसके यहाँ जाना विधान के विरुद्ध है किन्तु फिर भी परमेश्वर ने मुझे दर्शाया है कि मैं किसी भी व्यक्ति को अशुद्ध या अपवित्र न कहूँ। 29इसीलिए मुझे जब बुलाया गया तो मैं बिना किसी आपत्ति के आ गया। इसलिये मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने मुझे किस लिये बुलाया है।"

30इस पर कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन पहले इसी समय दिन के नवें पहर (तीन बजे) मैं अपने घर में प्रार्थना कर रहा था। अचानक चमचमाते वस्त्रों में एक व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा हुआ। 31और कहा, 'कुरनेलियुस! तेरी विनती सुन ली गयी है और दीन दुखियों को दिये गये तेरे दान परमेश्वर के सामने याद किये गये हैं। 32इसलिये याफा भेजकर पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा भेज। वह सागर किनारे चर्मकार शमौन के घर ठहरा हुआ है।' 33इसीलिए मैंने तुरंत तुझे बुलवा भेजा और तूने यहाँ आने की कृपा करके बहुत अच्छा किया। सो अब प्रभु ने जो कुछ आदेश तुझे दिये हैं, उस सब कुछ को सुनने के लिये हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित हैं।"

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

34फिर पतरस ने अपना मुँह खोला। उसने कहा, "अब सचमुच मैं समझ गया हूँ कि परमेश्वर कोई भेद भाव नहीं करता 35बल्कि हर जाति का कोई भी ऐसा व्यक्ति जो उससे डरता है और नेक काम करता है, वह उसे स्वीकार करता है। 36यही है वह संदेश जिसे उसने यीशु मसीह के द्वारा शांति के सुसमाचार का उपदेश देते हुए इस्राएल के लोगों को दिया था। वह सभी का प्रभु है। 37तुम उस महान घटना को जानते हो, जो समूचे यहूदिया में घटी थी। गलील में प्रारम्भ होकर यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिए जाने के बाद से जिसका प्रचार किया गया था। 38तुम नासरी यीशु के विषय में जानते हो कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा और शक्ति से उसका अभिषेक कैसे किया था और उत्तम कार्य करते हुए तथा उन सब को जो शैतान के बस में थे, चंगा करते हुए चारों ओर वह कैसे घूमता रहा था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। 39और हम उन सब बातों के साक्षी हैं जिन्हें उसने यहूदियों के प्रदेश और यरुशलेम में किया था। उन्होंने उसे ही एक पेड़ पर लटका कर मार डाला। 40किन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन उसे फिर से जीवित कर दिया और उसे प्रकट होने को प्रेरित किया। 41सब लोगों के सामने नहीं वरन् बस उन साक्षियों के सामने जो परमेश्वर के द्वारा पहले से चुन लिये गये थे। अर्थात् हमारे सामने जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पिया। 42उसी ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों को उपदेश दें

और प्रमाणित करें कि यह वही है, जो परमेश्वर के द्वारा
जीवितों और मरे हुओं का न्यायकर्ता बनने को नियुक्त
किया गया है। 43सभी भविष्यवक्ताओं ने उसके विषय में
साक्षी दी है कि उसमें विश्वास करने वाला हर व्यक्ति
उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।”

ग़ैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

44पतरस अभी ये बातें कह ही रहा था कि उन सब पर
पवित्र आत्मा उतर आया जिन्होंने सुसंदेश सुना था।
45क्योंकि पवित्र आत्मा का वरदान ग़ैर यहूदियों पर भी
उँडेला जा रहा था, सो पतरस के साथ आये यहूदी विश्वासी
आश्चर्य में डूब गये। 46वे उन्हें नाना भाषाएँ बोलते और
परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस
बोला, 47“क्या कोई इन लोगों को बपतिस्मा देने के लिये,
जल सुलभ कराने को मना कर सकता है? इन्हें भी वैसे
ही पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ हैं, जैसे हमें।” 48इस प्रकार
उसने यीशु मसीह के नाम में उन्हें बपतिस्मा देने की आज्ञा
दी। फिर उन्होंने पतरस से अनुरोध किया कि वह कुछ
दिन उनके साथ ठहरे।

पतरस का यरूशलेम लौटना

11 समूचे यहूदिया में बंधुओं और प्रेरितों ने सुना
कि प्रभु का वचन ग़ैर यहूदियों ने भी ग्रहण कर
लिया है। 2सो जब पतरस यरुशलेम पहुँचा तो उन्होंने जो
ख़तना के पक्ष में थे, उसकी आलोचना की। 3वे बोले, “तू
ख़तना रहित लोगों के घर में गया है और तूने उनके साथ
खाना खाया है।”

4इस पर पतरस वास्तव में जो घटा था, उसे सुनाने
समझाने लगा। 5“मैंने याफा नगर में प्रार्थना करते हुए
समाधि में एक दृश्य देखा। मैंने देखा कि एक बड़ी चादर
जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है, उसे चारों कोनों से
पकड़ कर आकाश से धरती पर उतारा जा रहा है। फिर
वह उतर कर मेरे पास आ गयी। 6मैंने उस को ध्यान से
देखा। मैंने देखा कि उसमें धरती के चौपाये जीव-जंतु,
जँगली पशु रेंगने वाले जीव और आकाश के पक्षी थे।
7फिर मैंने एक आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह रही थी,
‘पतरस उठ, मार और खा।’ 8किन्तु मैंने कहा, ‘प्रभु,
निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ
या समय के अनुसार किसी अपवित्र आहार को नहीं
लिया है।’ 9आकाश से दूसरी बार उस स्वर ने फिर कहा,
‘जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, उसे तू अपवित्र मत
समझ।’ 10तीन बार ऐसा ही हुआ। फिर वह सब आकाश
में वापस उठा लिया गया। 11उसी समय जहाँ मैं ठहरा
हुआ था, उस घर में तीन व्यक्ति आ पहुचें। उन्हें मेरे पास
कैसरिया से भेजा गया था। 12आत्मा ने मुझसे उनके साथ
बेझिझक चले जाने को कहा। ये छह: बन्धु भी मेरे साथ
गये। और हमने उस व्यक्ति के घर में प्रवेश किया।
13उसने हमें बताया कि एक स्वर्गदूत को अपने घर में
खड़े उसने कैसे देखा था। जो कह रहा था याफा भेज कर
पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा ले। 14वह
तुझे वचन सुनायेगा जिससे तेरा और तेरे परिवार का
उद्धार होगा। 15जब मैंने प्रवचन आरम्भ किया तो पवित्र
आत्मा उन पर उतर आया। ठीक वैसे ही जैसे प्रारम्भ में
हम पर उतरा था। 16फिर मुझे प्रभु का कहा यह वचन
याद हो आया, ‘यूहन्ना जल से बपतिस्मा देता था किन्तु
तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।’ 17इस
प्रकार यदि परमेश्वर ने उन्हें भी वही बरदान दिया जिसे
उसने जब हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था,
तब हमें दिया था, तो विरोध करने वाला मैं कौन होता
था?”

18विश्वासियों ने जब यह सुना तो उन्होंने प्रश्न करना
बन्द कर दिया। वे परमेश्वर की महिमा करते हुए कहने
लगे, “अच्छा, तो परमेश्वर ने विधर्मियों तक को मन
फिराव का वह अवसर दिया है, जो जीवन की ओर ले
जाता है!”

अंताकिया में सुसमाचार का आगमन

19वे लोग जो स्तिफनुस के समय में दी जा रही यातनाओं
के कारण तितर-बितर हो गये थे, दूर-दूर तक फीनीक,
साइप्रस और अंताकिया तक जा पहुँचे। ये यहूदियों को
छोड़ किसी भी और को सुसमाचार नहीं सुनाते थे। 20इन्हीं
विश्वासियों में से कुछ साइप्रस और कुरैन के थे। सो जब
वे अंताकिया आये तो यूनानियों को भी प्रवचन देते हुए
प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे। 21प्रभु की शक्ति
उनके साथ थी। सो एक विशाल जन समुदाय विश्वास
धारण करके प्रभु की ओर मुड़ गया।

22इसका समाचार जब यरुशलेम में कलीसिया के
कानों तक पहुँचा तो उन्होंने बरनाबास को अंताकिया

जाने को भेजा। 23जब बरनाबास ने वहाँ पहुँच कर प्रभु
के अनुग्रह को सकारथ होते देखा तो वह बहुत प्रसन्न
हुआ और उसने उन सभी को प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण हृदय
से विश्‍वासी बने रहने को उत्साहित किया। 24क्योंकि वह
पवित्र आत्मा और विश्‍वास से पूर्ण एक उत्तम पुरुष था।
फिर प्रभु के साथ एक विशाल जनसमूह और जुड़ गया।
25बरनाबास शाऊल को खोजने तरसुस को चला गया।
26फिर वह उसे ढूँढ कर अंताकिया ले आया। सारे साल
वे कलीसिया से मिलते जुलते और विशाल जनसमूह को
उपदेश देते रहे। अंताकिया में सबसे पहले इन्हीं शिष्यों को
"मसीही" कहा गया।

27इसी समय यरुशलेम से कुछ नबी अंताकिया आये।
28उनमें से अगबुस नाम के एक भविष्यवक्ता ने खड़े
होकर पवित्र आत्मा के द्वारा यह भविष्यवाणी की कि
सारी दुनिया में एक भयानक अकाल पड़ने वाला है
(क्लोदियुस के काल में यह अकाल पड़ा था) 29तब हर
शिष्य ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने वाले
बन्धुओं की सहायता के लिये कुछ भेजने का निश्‍चय
किया था। 30सो उन्होंने ऐसा ही किया और उन्होंने
बरनाबास और शाऊल के हाथों अपने बुज़ुर्गों के पास
अपने उपहार भेजे

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

12 उसी समय के आसपास राजा हेरोदेस* ने
कलीसिया के कुछ सदस्यों को सताना प्रारम्भ
कर दिया। 2उसने यूहन्ना के भाई याकूब की, तलवार से
हत्या करवा दी। 3उसने जब यह देखा कि इस बात से
यहूदी प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी बंदी बनाने के
लिये हाथ बढ़ाया (यह बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव के
दिनों की बात है) 4हेरोदेस ने पतरस को पकड़ कर जेल
में डाल दिया। उसे चार चार सैनिकों की चार पंक्तियों के
पहरे के हवाले कर दिया गया। प्रयोजन यह था कि उस
पर मुकदमा चलाने के लिये फसह पर्व के बाद उसे लोगों
के सामने बाहर लाया जाये। 5सो पतरस को जेल में रोके
रखा गया। उधर कलीसिया हृदय से उसके लिये परमेश्‍वर
से प्रार्थना करती रही।

जेल से पतरस का छुटकारा

6जब हेरोदेस मुकदमा चलाने के लिये उसे बाहर लाने
को था, उस रात पतरस दो सैनिकों के बीच सोया हुआ
था। वह दो ज़ंजीरों से बँधा था और द्वार पर पहरेदार
जेल की रखवाली कर रहे थे। 7अचानक प्रभु का एक
स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ, जेल की कोठरी प्रकाश से
जगमग हो उठी, उसने पतरस की बगल थपथपाई और
उसे जगाते हुए कहा, "जल्दी खड़ा हो।" ज़ंजीरें उसके
हाथों से खुल कर गिर पड़ी। 8तभी स्वर्गदूत ने उसे आदेश
दिया, "तैयार हो और अपनी चप्पल पहन ले।" सो पतरस
ने वैसा ही किया। स्वर्गदूत ने उससे फिर कहा, "अपना
चोगा पहन ले और मेरे पीछे चला आ।" 9फिर उसके
पीछे-पीछे पतरस बाहर निकल आया। वह समझ नहीं
पाया कि स्वर्गदूत जो कुछ कर रहा था, वह यथार्थ था।
उसने सोचा कि वह कोई दर्शन देख रहा है। 10पहले और
दूसरे पहरेदार को छोड़ कर आगे बढ़ते हुए वे लोहे के
उस फाटक पर आ पहुँचे जो नगर की ओर जाता था।
वह उनके लिये आप से आप खुल गया। और वे बाहर
निकल गये। वे अभी गली पार ही गये थे कि वह स्वर्गदूत
अचानक उसे छोड़ गया।

11फिर पतरस को जैसे होश आया, वह बोला, "अब
मेरी समझ में आया कि यह वास्तव में सच है कि प्रभु ने
अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस के पंजे से मुझे छुड़ाया
है। यहूदी लोग मुझ पर जो कुछ घटने की सोच रहे थे,
उससे उसी ने मुझे बचाया है।"

12जब उसने यह समझ लिया तो वह यूहन्ना की माता
मरियम के घर चला गया। (यूहन्ना जो मरकुस भी कहलाता
है।) वहाँ बहुत से लोग एक साथ प्रार्थना कर रहे थे।
13पतरस ने द्वार को बाहर से खटखटाया। उसे देखने रूदे
नाम की एक दासी वहाँ आयी। 14पतरस की आवाज़ को
पहचान कर आनन्द के मारे उसके लिए द्वार खोले बिना
ही वह उल्टी भीतर दौड़ गयी और उसने बताया कि पतरस
द्वार पर खड़ा है। 15वे उससे बोले, "तू पागल हो गयी है।"
किन्तु वह बलपूर्वक कहती रही कि यह ऐसा ही है। इस
पर उन्होंने कहा, "वह उसका स्वर्गदूत होगा।"

16उधर पतरस द्वार खटखटाता ही रहा। फिर उन्होंने
जब द्वार खोला और उसे देखा तो वे अचरज में पड़ गये।
17उन्हें हाथ से चुप रहने का संकेत करते हुए उसने
खोलकर बताया कि प्रभु ने उसे जेल से कैसे बाहर

हेरोदेस यहाँ हेरोदेस से अभिप्राय है हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

निकाला है। उसने कहा, "याकूब तथा अन्य बन्धुओं को
इस विषय में बता देना।" और तब वह उस स्थान को
छोड़कर किसी दूसरे स्थान को चला गया।
18जब भोर हुई तो पहरेदारों में बड़ी खलबली फैल गयी।
वे अचरज में पड़े सोच रहे थे कि पतरस के साथ क्या
हुआ होगा। 19इसके बाद हेरोदेस जब उसकी खोज बीन
कर चुका और वह उसे नहीं मिला तो उसने पहरेदारों से
पूछताछ की और उन्हें मार डालने की आज्ञा दी।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर यहूदिया से जा कर कैसरिया में रहने
लगा। वहाँ उसने कुछ समय बिताया। 20वह सूर और सैदा
के लोगों से बहुत क्रोधित रहता था। वे एक समूह बनाकर
उससे मिलने आये। राजा के निजी सेवक बलासतुस की
मानमनौवल करके उन्होंने हेरोदेस से शांति की प्रार्थना
की क्योंकि उनके देश को राजा के देश से ही खाने को
मिलता था।
21एक निश्चित दिन हेरोदेस अपनी राजसी वेश-भूषा
पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा और लोगों को भाषण
देने लगा। 22लोग चिल्लाये, "यह तो किसी देवता की वाणी
है, मनुष्य की नहीं।" 23क्योंकि हेरोदेस ने परमेश्वर को
महिमा प्रदान नहीं की थी, इसलिए तत्काल प्रभु के एक
स्वर्गदूत ने उसे बीमार कर दिया। और उसमें कीड़े पड़
गये जो उसे खाने लगे और वह मर गया।
24किन्तु परमेश्वर का वचन प्रचार पाता रहा और
फैलता रहा।
25बरनाबास और शाऊल यरूशलेम में अपना काम
पूरा करके मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी साथ
लेकर अंताकिया लौट आये

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

13 अंताकिया के कलीसिया में कुछ नबी और
बरनाबास, काला कहलाने वाला शमौन, कुरेन
का लूकियुस, देश के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस के
साथ पालितपोषित मनाहेम और शाऊल जैसे कुछ शिक्षक
थे। 2वे जब उपवास करते हुए प्रभु की उपासना में लगे हुए
थे, तभी पवित्र आत्मा ने कहा, "बरनाबास और शाऊल
को जिस काम के लिये मैंने बुलाया है, उसे करने के लिये
मेरे निमित्त, उन्हें अलग कर दो।"
3सो जब शिक्षक और नबी अपना उपवास और प्रार्थना
पूरी कर चुके तो उन्होंने बरनाबास और शाऊल पर अपने
हाथ रखे और उन्हें विदा कर दिया।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

4पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे हुए वे सिलुकिया गये जहाँ
से जहाज़ में बैठ कर वे साइप्रस पहुँचें। 5फिर जब वे सलमीस
पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के सभागारों में परमेश्वर के
वचन का प्रचार किया। यूहन्ना सहायक के रूप में उनके
साथ था।
6उस समूचे द्वीप की यात्रा करते हुए वे पाफुस तक जा
पहुँचे। वहाँ उन्हें एक जादूगर मिला, वह झूठा नबी था।
उस यहूदी का नाम था बार-यीशु। 7वह एक अत्यंत
बुद्धिमान पुरुष था। वह राज्यपाल सिरगियुस पौलुस का
सेवक था जिसने परमेश्वर का वचन फिर सुनने के लिये
बरनाबास और शाऊल को बुलाया था। 8किन्तु इलीमास
जादूगर ने उनका विरोध किया। (यह बार-यीशु का
अनुवादित नाम है)। उसने नगर-पति के विश्वास को
डिगाने का जतन किया। 9फिर शाऊल ने जिसे पौलूस भी
कहा जाता था, पवित्र आत्मा से अभिभूत होकर इलीमास
पर पैनी दृष्टि डालते हुए कहा, 10"सभी प्रकार के छलों
और धूर्तताओं से भरे, अरे शैतान के बेटे, तू हर नेकी का
शत्रु है। क्या तू प्रभु के सीधे-सच्चे मार्ग को तोड़ना मरोड़ना
नहीं छोड़ेगा? 11अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर आ पड़ा है।
तू अंधा हो जायेगा और कुछ समय के लिये सूर्य तक को
नहीं देख पायेगा।"
तुरन्त एक धुंध और अँधेरा उस पर छा गया और वह
इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़
कर उसे चलाये। 12सो नगर-पति ने, जो कुछ घटा था,
जब उसे देखा तो उसने विश्वास धारण किया। वह प्रभु
सम्बन्धी उपदेशों से बहुत चकित हुआ।

पौलुस और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

13फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस से नाव के
द्वारा पम्फूलिया के पिरगा में आ गये। किन्तु यूहन्ना उन्हें
वहीं छोड़ कर यरुशलेम लौट आया। 14उधर वे अपनी
यात्रा पर बढ़ते हुए पिरगा से पिसिदिया के अंताकिया में
आ पहुँचे। फिर सब्त के दिन यहूदी प्रार्थना-सभागार में
जा कर बैठ गये। 15व्यवस्था के विधान और नबियों के

ग्रन्थों का पाठ कर चुकने के बाद यहूदी प्रार्थना सभागार
के अधिकारियों ने उनके पास यह संदेशा कहला भेजा,
"हे भाइयो, लोगों को शिक्षा देने के लिये तुम्हारे पास कहने
को कोई और वचन है तो उसे सुनाओ।"

16इस पर पौलुस खड़ा हुआ और अपने हाथ हिलाते
हुए बोलने लगा, "हे इस्राएल के लोगो और परमेश्वर से
डरने वाले ग़ैर यहूदियो, सुनो: 17इन इस्राएल के लोगों के
परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना था और जब हमारे
लोग मिस्र में ठहरे हुए थे, उसने उन्हें महान् बनाया था
और अपनी महान शक्ति से ही वह उनको उस धरती से
बाहर निकाल लाया था। 18और लगभग चालीस वर्ष तक
वह जंगल में उनकी सहता रहा। 19और कनान देश की
सात जातियों को नष्ट करके उसने वह धरती इस्राएल के
लोगों को उत्तराधिकार के रूप में दे दी। 20इस सब कुछ में
कोई लगभग साढ़े चार सौ वर्ष लगे।

"इसके बाद शमूएल नबी के समय तक उसने उन्हें
अनेक न्यायकर्ता दिये। 21फिर उन्होंने एक राजा की माँग
की, सो परमेश्वर ने बेंजामिन के गोत्र के एक व्यक्ति
कीश के बेटे शाऊल को चालीस साल के लिये उन्हें दे
दिया। 22फिर शाऊल को हटा कर उसने उनका राजा
दाऊद को बनाया जिसके विषय में उसने यह साक्षी दी थी,
'मैंने यिशे के बेटे दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में
पाया है, जो मेरे मन के अनुकूल है। जो कुछ मैं उससे
कराना चाहता हूँ, वह उस सब कुछ को करेगा।' 23इस ही
मनुष्य के एक वंशज को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार
परमेश्वर इस्राएल में उद्धार कर्ता यीशु के रूप में ला चुका
है। 24उसके आने से पहले यूहन्ना इस्राएल के सभी लोगों में
मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता रहा है। 25यूहन्ना
जब अपने काम को पूरा करने को था, तो उसने कहा
था, 'तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं हूँ। किन्तु एक
ऐसा है जो मेरे बाद आ रहा है। मैं जिसकी जूतियों के बन्ध
खोलने लायक भी नहीं हूँ।'

26"भाइयो, इब्राहीम की सन्तानो और परमेश्वर के
उपासक ग़ैर यहूदियो! उद्धार का यह सुसंदेश हमारे लिए
ही भेजा गया है। 27यरुशलेम में रहने वालों और उनके
शासकों ने यीशु को नहीं पहचाना। और उसे दोषी ठहरा
दिया। इस तरह उन्होंने नबियों के उन वचनों को ही पूरा
किया जिनका हर सब्त के दिन पाठ किया जाता है। 28और
यद्यपि उन्हें उसे मृत्यु दण्ड देने का कोई आधार नहीं मिला,
तो भी उन्होंने पिलातुस से उसे मरवा डालने की माँग की।
29उसके विषय में जो कुछ लिखा था, जब वे उस सब कुछ
को पूरा कर चुके तो उन्होंने उसे क्रूस पर से नीचे उतार
लिया और एक कब्र में रख दिया। 30किन्तु परमेश्वर ने
उसे मरने के बाद फिर से जीवित कर दिया। 31और फिर
जो लोग गलील से यरुशलेम तक उसके साथ रहे थे वह
उनके सामने कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये अब
लोगों के लिये उसकी साक्षी हैं। 32हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के
विषय में सुसमाचार सुना रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के साथ
की गयी थी 33यीशु को, मर जाने के बाद पुनर्जीवित करके,
उनकी संतानों के लिये परमेश्वर ने उसी प्रतिज्ञा को हमारे
लिए पूरा किया है। जैसा कि भजन संहिता के दूसरे भजन
में लिखा भी गया है:

'तू मेरा पुत्र है,
मैंने तुझे आज ही जन्म दिया है।'

भजन संहिता 2:7

34और उसने उसे मरे हुओं में से जिला कर उठाया
ताकि क्षय होने के लिये उसे फिर लौटना न पड़े। उसने
इस प्रकार कहा था:

'मैं तुझे वे पवित्र और अटल आशीश दूँगा
जिन्हें देने का वचन मैंने दाऊद को दिया।'

यशायाह 55:3

35इसी प्रकार एक अन्य भजन में वह कहता है:

'तू अपने उस पवित्र जन को
क्षय का अनुभव नहीं होने देगा।'

भजन संहिता 16:10

36फिर दाऊद अपने युग में परमेश्वर के प्रयोजन के
अनुसार अपना सेवा-कार्य पूरा करके चिर-निद्रा में सो
गया, उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया और
उसका क्षय हुआ। 37किन्तु जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं
के बीच से जिला कर उठाया, उसका क्षय नहीं हुआ। 38-
39सो हे भाइयों, तुम्हें जान लेना चाहिये कि यीशु के द्वारा
ही पापों की क्षमा का उपदेश तुम्हें दिया गया है। और इसी
के द्वारा हर कोई जो विश्वासी है, उन पापों से छुटकारा पा
सकता है, जिनसे तुम्हें मूसा की व्यवस्था छुटकारा नहीं
दिला सकती थी। 40सो सावधान रहो, कहीं नबियों ने जो
कुछ कहा है, तुम पर न घट जाये:

41 'निन्दा करने वालो, देखो,
भोचक्के हो कर मर जाओ,
क्योंकि तुम्हारे युग में एक कार्य ऐसा
करता हूँ, जिसकी चर्चा तक पर तुमको
कभी प्रतीति नहीं होने की!'"

हबक्कूक 1:5

42पौलुस और बरनाबास जब वहाँ से जा रहे थे तो लोगों ने उनसे अगले सब्त के दिन ऐसी ही और बातें बताने की प्रार्थना की। 43जब सभा समाप्त हुई तो बहुत से यहूदियों और ग़ैर यहूदी भक्तों ने पौलुस और बरनाबास का अनुसरण किया। पौलुस और बरनाबास ने उनसे बातचीत करते हुए आग्रह किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में स्थिति बनाये रखें।

44अगले सब्त के दिन तो लगभग समूचा नगर ही प्रभु का वचन सुनने के लिये उमड़ पड़ा। 45इस विशाल जन समूह को जब यहूदियों ने देखा तो वे बहुत कुढ़ गये और अपशब्दों का प्रयोग करते हुए पौलुस ने जो कुछ कहा था, उसका विरोध करने लगे। 46किन्तु पौलुस और बरनाबास ने निडर होकर कहा, "यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा तुम अपने आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, सो हम अब ग़ैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। 47क्योंकि प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा दी है:

'मैंने तुमको ज्योति बनाया,
उनके हेतु जो यहूदी नही,
ताकि सभी का उद्धार करें,
दूर धरा के अपर छोर तक।'"

यशायाह 49:6

48ग़ैर यहूदियों ने जब यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया। फिर उन्होंने जिन्हें अनन्त जीवन पाने के लिये निश्चित किया था, विश्वास ग्रहण कर लिया।

49इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में प्रभु के वचन का प्रचार प्रसार होता रहा। 50उधर यहूदियों ने उच्च कुल की भक्त महिलाओं और नगर के प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया तथा पौलुस और बरनाबास के विरुद्ध अत्याचार करने आरम्भ कर दिये और दबाव डाल कर उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर निकलवा दिया। 51फिर पौलुस और बरनाबास उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़ कर इकुनियुम को चल दिये। 52किन्तु उनके शिष्य, आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

14 इसी प्रकार पौलुस और बरनाबास इकुनियुम में यहूदी प्रार्थना सभागार में गये। वहाँ उन्होंने इस ढंग से व्याख्यान दिया कि यहूदियों के एक विशाल जन समूह ने विश्वास धारण किया। 2किन्तु उन यहूदियों ने जो विश्वास नहीं कर सके थे, ग़ैर यहूदियों को भड़काया और बन्धुओं के विरुद्ध उन के मनों में कटुता पैदा कर दी। 3सो पौलुस और बरनाबास वहाँ बहुत दिनों तक ठहरे रहे तथा प्रभु के विषय में निर्भयता से प्रवचन करते रहे। उनके द्वारा प्रभु अद्‌भुत चिन्ह और आश्चर्यकर्मो को करवाता हुआ अपने दया के संदेश की प्रतिष्ठा कराता रहा। 4उधर नगर के लोगों में फूट पड़ गयी। कुछ प्रेरितों की तरफ और कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गये।

5फिर जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने नेताओं के साथ मिलकर उनके साथ बुरा व्यवहार करने और उन पर पथराव करने की चाल चली, 6'तो पौलुस और बरनाबास को इसका पता चल गया और वे लुकाउनिया के लिस्तरा और दिरबे जैसे नगरों तथा आसपास के क्षेत्र में बच भागे। 7वहाँ भी वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

8लिस्तरा में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह अपने पैरों से अपंग था। वह जन्म से ही लँगड़ा था, चल फिर तो वह कभी नहीं पाया। 9इस व्यक्ति ने पौलुस को बोलते हुए सुना था। पौलुस ने उस पर दृष्टि गड़ाई और देखा कि अच्छा हो जाने का विश्वास उसमें है। 10सो पौलुस ने ऊँचे स्वर में कहा, "अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो जा।" सो वह ऊपर उछला और चलने-फिरने लगा। 11पौलुस ने जो कुछ किया था, जब भीड़ ने उसे देखा तो लोग लुकाउनिया की भाषा में पुकार कर कहने लगे, "हमारे बीच मनुष्यों का रूप धारण करके, देवता उतर आये हैं।" 12वे बरनाबास को "ज़ेअस"* और पौलुस को "हिरमेस"*

ज़ेअस यूनानी बहुदेववादी हैं। ज़ेअस उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवता था।

हिरमेस एक और दूसरा यूनानी देवता। यूनानियों के विश्वास के अनुसार हिरमेस दूसरे देवताओं का संदेशवाहक।

कहने लगे। (पौलुस को हिरमेस इसलिये कहा गया क्योंकि
वह प्रमुख वक्ता था।) 13नगर के ठीक बाहर बने ज़ेअस
के मंदिर का याजक नगर द्वार पर साँड़ों और मालाओं
को लेकर आ पहुँचा। वह भीड़ के साथ पौलुस और
बरनाबास के लिये बलि चढ़ाना चाहता था। 14किन्तु जब
प्रेरित बरनाबास और पौलुस ने यह सुना तो उन्होंने अपने
कपड़े फाड़ डाले* और वे ऊँचे स्वर में यह कहते हुए
भीड़ में घुस गये, 15"हे लोगो, तुम यह क्यों कर रहे हो?
हम भी वैसे ही मनुष्य हैं, जैसे तुम हो। यहाँ हम तुम्हें
सुसमाचार सुनाने आये हैं ताकि तुम इन व्यर्थ की बातों से
मुड़ कर उस सजीव परमेश्वर की ओर लौटो जिसने
आकाश, धरती, सागर और इनमें जो कुछ है, उसकी
रचना की। 16बीते काल में उसने सभी जातियों को उनकी
अपनी-अपनी राहों पर चलने दिया। 17किन्तु तुम्हें उसने
स्वयं अपनी साक्षी दिये बिना नहीं छोड़ा। क्योंकि उसने
तुम्हारे साथ भलाइयाँ कीं। उसने तुम्हें आकाश से वर्षा दी
और ऋतु के अनुसार फसलें दीं। वही तुम्हें भोजन देता है
और तुम्हारे मन को आनन्द से भर देता है।"

18इन वचनों के बाद भी वे भीड़ को उनके लिये बलि
चढ़ाने से प्राय: नहीं रोक पाये। 19फिर अंताकिया और
इकुनियुम से आये यहूदियों ने भीड़ को अपने पक्ष में
करके पौलुस पर पथराव किया और उसे मरा जान कर
नगर के बाहर घसीट ले गये। 20फिर जब शिष्य उसके
चारों ओर इकट्ठे हुए, तो वह उठा और नगर में चला
आया और फिर अगले दिन बरनाबास के साथ वह दिरबे
के लिए चल पड़ा।

सीरिया के अंताकिया को लौटना

21-22उस नगर में उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करके
बहुत से शिष्य बनाये। और उनकी आत्माओं को स्थिर
करके विश्वास में बने रहने के लिये उन्हें यह कह कर
प्रेरित किया "हमें बड़ी यातनाएँ झेल कर परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश करना है," वे लिस्तरा, इकुनियुम और
अंताकिया लौट आये। 23हर कलीसिया में उन्होंने उन्हें
उस प्रभु को सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास किया था।

24इसके पश्चात पिसिदिया से होते हुए वे पम्फूलिया
आ पहुचें। 25और पिरगा में जब सुसमाचार सुना चुके तो
इटली चले गये। 26वहाँ से वे अंताकिया को जहाज़ द्वारा
गये जहाँ जिस काम को अभी उन्होंने पूरा किया था, उस
काम के लिये वे परमेश्वर के अनुग्रह को समर्पित हो
गये।

27सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने कलीसिया के लोगों को
इकट्ठा किया और परमेश्वर ने उनके साथ जो कुछ
किया था, उसका विवरण कह सुनाया। और उन्होंने घोषणा
की कि परमेश्वर ने विधर्मियों के लिये भी विश्वास का
द्वार खोल दिया है। 28फिर अनुयायियों के साथ वे बहुत
दिनों तक वहाँ ठहरे रहे।

यरुशलेम में एक सभा

15 फिर कुछ लोग यहूदिया से आये और भाइयों
को शिक्षा देने लगे: "यदि मूसा की विधि के
अनुसार तुम्हारा ख़तना नहीं हुआ है तो तुम्हारा उद्धार
नहीं हो सकता।" 2पौलुस और बरनाबास उनसे सहमत
नहीं थे, सो उनमें एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। सो
पौलुस बरनाबास तथा उनके कुछ और साथियों को इस
समस्या के समाधान के लिये प्रेरितों और मुखियाओं के
पास यरुशलेम भेजने का निश्चय किया गया।

3वे कलीसिया के द्वारा भेजे जाकर फीनीके और
सामरिया होते हुए सभी भाइयों को अधर्मियों के हृदय
परिवर्तन का विस्तार के साथ समाचार सुनाकर उन्हें
हर्षित कर रहे थे। 4फिर जब वे यरूशलेम पहुँचे तो
कलीसिया ने, प्रेरितों ने और बुज़ुर्गों ने उनका स्वागत
सत्कार किया। और उन्होंने उनके साथ परमेश्वर ने जो
कुछ किया था, वह सब कुछ उन्हें कह सुनाया। 5इस पर
फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए और बोले,
"उनका खतना अवश्य किया जाना चाहिये और उन्हें
आदेश दिया जाना चाहिए कि वे मूसा की व्यवस्था के
विधान का पालन करें।"

6सो इस प्रश्न पर विचार करने के लिये प्रेरित तथा
बुज़ुर्ग लोग परस्पर एकत्र हुए। 7एक लम्बे चौड़े
वाद-विवाद के बाद पतरस खड़ा हुआ और उनसे बोला,
"भाइयो! तुम जानते हो कि बहुत दिनों पहले तुममें से प्रभु
ने एक चुनाव किया था कि मेरे द्वारा अधर्मी लोग
सुसमाचार का संदेश सुनेंगे और विश्वास करेंगे। 8और
अन्तर्यामी परमेश्वर ने हमारे ही समान उन्हें भी पवित्र
आत्मा का वरदान देकर, उनके सम्बन्ध में अपना समर्थन

पौलुस ... डाले लोगों के इस आचरण पर पौलुस और बरनाबास
ने क्रोध व्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले।

दर्शाया था। 9विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को पवित्र
करके हमारे और उनके बीच उसने कोई भेद भाव नहीं
किया। 10सो अब शिष्यों की गर्दन पर एक ऐसा जुआ लाद
कर जिसे न हम उठा सकते हैं और न हमारे पूर्वज, तुम
परमेश्वर को झमेले में क्यों डालते हो? 11किन्तु हमारा तो
यह विश्वास है कि प्रभु यीशु कॆ अनुग्रह से जैसे हमारा
उद्धार हुआ है, वैसे ही हमें भरोसा है कि उनका भी उद्धार
होगा।"

12इस पर समूचा दल चुप हो गया और बरनाबास तथा
पौलुस को सुनने लगा। वे, ग़ैर यहूदियों के बीच परमेश्वर
ने उनके द्वारा दो अद्भुत चिन्ह प्रकटाए थे, और आश्चर्य
कर्म किये थे, उनका विवरण दे रहे थे। 13वे जब बोल
चुके तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयो, मेरी सुनो, 14शमौन
ने बताया था कि परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों में से कुछ लोगों
को अपने नाम के लिये चुनकर सर्वप्रथम कैसे प्रेम प्रकट
किया था। 15नबियों के वचन भी इसका समर्थन करते
हैं। जैसा कि लिखा गया है:

16 'मैं इसके बाद आऊँगा।
फिर से मैं खड़ा करुँगा दाऊद के
उस घर को जो गिर चुका।
फिर से सँवारूँगा उसके खण्डहरों
को जीर्णोद्धार करुँगा।
17 ताकि जो बचे हैं वे ग़ैर यहूदी सभी
जो अब मेरे कहलाते हैं, प्रभु की खोज करें
18 यह बात वही प्रभु कहता है
जो युगयुग से इन बातो को प्रकटाता रहा है।'

आमोस 9:11–12

19"इस प्रकार मेरा यह निर्णय है कि हमें उन लोगों
को, जो ग़ैर यहूदी होते हुए भी परमेश्वर की ओर मुड़े हैं,
सताना नहीं चाहिये। 20बल्कि हमें तो उनके पास लिख
भेजना चाहिये कि वे मूर्तियों द्वारा अपवित्र किये गये खाने
से बचें। व्यभिचार से बचें, गला घोट कर मारे गये किसी
भी पशु का माँस खाने से बचें और लहू को कभी न खायें।
21अनादि काल से मूसा की व्यवस्था के विधान का
पाठ करने वाले नगर–नगर में पाए जाते रहे हैं। हर सब्त
के दिन मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रार्थना सभाओं
में पाठ होता रहा है।"

ग़ैर यहूदी–विश्वासियों के नाम पत्र

22फिर प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने समूचे कलीसिया के साथ
यह निश्चय किया कि उन्हीं में से कुछ लोगों को चुनकर
पौलुस और बरनाबास के साथ अंताकिया भेजा जाये। सो
उन्होंने बरसब्बा कहे जाने वाले यहूदा और सिलास को
चुन लिया। वे भाइयों में सर्व प्रमुख थे। 23उन्होंने उनके
हाथों यह पत्र भेजा:

तुम्हारे बंधु, बुज़ुर्गो और प्रेरितों की ओर से
अंताकिया, सीरिया और किलिकिया के
गैर यहूदी भाइयों को नमस्कार पहुँचे

24हमने जब से यह सुना है कि हमसे कोई आदेश
पाये बिना ही, हममें से कुछ लोगों ने जाकर अपने
शब्दों से तुम्हें दुःख पहुँचाया है, और तुम्हारे मन
को अस्थिर कर दिया है25हम सब ने परस्पर सहमत
होकर यह निश्चय किया है कि हम अपने में से
कुछ लोग चुनें और अपने प्रिय बरनाबास और पौलुस
के साथ उन्हें तुम्हारे पास भेजें। 26ये वे ही लोग हैं
जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये
अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। 27हम यहूदा और
सिलास को भेज रहे हैं। वे तुम्हें अपने मुँह से इन
सब बातों को बताएँगें। 28पवित्र आत्मा को और हमें
यही उचित जान पड़ा कि तुम पर इन आवश्यक
बातों के अतिरिक्त और किसी बात का बोझ न
डाला जाये:

29 मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन
तुम्हें नहीं लेना चाहिये।
रक्त, गला घोंट कर मारे गये
पशु और व्यभिचार से बचे रहो।

यदि तुम ने अपने आप को इन बातों से बचाये रखा
तो तुम्हारा कल्याण होगा।
अच्छा विदा।'

30इस प्रकार उन्हें विदा कर दिया गया और वे अंताकिया
जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म–सभा बुलाई और उन्हें वह
पत्र दे दिया। 31पत्र पढ़ कर जो प्रोत्साहन उन्हें मिला, उस
पर उन्होंने आनन्द मनाया। 32यहूदा और सिलास ने, जो
स्वयं ही दोनों नबी थे, भाइयों के सामने उन्हें उत्साहित
करते हुए और दृढ़ता प्रदान करते हुए, एक लम्बा प्रवचन
किया। 33वहाँ कुछ समय बिताने के बाद, भाइयों ने उन्हें

शांतिपूर्वक उन्हीं के पास लौट जाने को विदा किया जिन्होंने उन्हें भेजा था। 34* ['किन्तु सिलास ने वहीं ठहरे रहने का निश्चय किया।'] 35पौलुस तथा बरनाबास ने अंताकिया में कुछ समय बिताया। बहुत से दूसरे लोगों के साथ उन्होंने प्रभु के वचन का उपदेश देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

36कुछ दिनों बाद बरनाबास से पौलुस ने कहा, "आओ, जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु के वचन का प्रचार किया है, वहाँ अपने भाइयों के पास वापस चल कर यह देखें कि वे क्या कुछ कर रहे हैं।" 37बरनाबास चाहता था कि मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी वे अपने साथ ले चलें। 38किन्तु पौलुस ने यही ठीक समझा कि वे उसे अपने साथ न लें जिसने पम्फूलिया में उनका साथ छोड़ दिया था और (प्रभु के) कार्य में जिसने उनका साथ नहीं निभाया। 39इस पर उन दोनों में तीव्र विरोध पैदा हो गया। परिणाम यह हुआ कि वे आपस में एक दूसरे से अलग हो गये। बरनाबास मरकूस को लेकर पानी के जहाज़ से साइप्रस चला गया। 40पौलुस सिलास को चुनकर वहाँ से चला गया और भाइयों ने उसे प्रभु के संरक्षण में सौंप दिया। 41सो पौलुस सीरिया और किलिकिया की यात्रा करते हुए वहाँ की कलीसिया को सृदृढ़ करता रहा।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

16 पौलुस दिरबे और लुस्तरा में भी आया। वहीं तिमुथियुस नामक एक शिष्य हुआ करता था। वह किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था किन्तु उसका पिता यूनानी था। 2लिस्तरा और इकुनियुम के बंधुओं के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 3पौलुस तिमुथियुस को यात्रा पर अपने साथ ले जाना चाहता था। सो उसे उसने साथ ले लिया और उन स्थानों पर रहने वाले यहूदियों के कारण उसका ख़तना किया; क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसका पिता एक यूनानी था। 4नगरों से यात्रा करते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों को उन नियमों के बारे में बताया जिन्हें यरुशलेम में प्रेरितों और बुज़ुर्गो ने निश्चित किया था। 5इस प्रकार वहाँ की कलीसिया का विश्वास और सुदृढ़ होता गया और दिन प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ने लगी।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

6सो वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर निकले क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने को मना कर दिया था। 7फिर वे जब मूसिया की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने बितुनिया जाने का जतन किया। किन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें वहाँ भी नहीं जाने दिया। 8सो वे मूसिया होते हुए त्रोआस पहुँचे। 9रात के समय पौलुस ने दिव्यदर्शन में देखा कि मैसिडोनिया का एक पुरुष उस से प्रार्थना करते हुए कह रहा है, "मैसिडोनिया में आ और हमारी सहायता कर।" 10इस दिव्य दर्शन को देखने के बाद तुरन्त ही यह परिणाम निकालते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने हमें बुलाया है, हमने मैसिडोनिया जाने की ठान ली।

लीदिया का हृदय परिवर्तन

11इस प्रकार हमने त्रोआस से जल मार्ग द्वारा जाने के लिये अपनी नावें खोल दीं और सीधे समोथ्राके जा पहुँचे। फिर अगले दिन नियापुलिस चले गये। 12वहाँ से हम एक रोमी उपनिवेश फिलिप्पी पहुँचे जो मैसिडोनिया के उस क्षेत्र का एक प्रमुख नगर है। इस नगर में हमने कुछ दिन बिताये।

13फिर सब्त के दिन यह सोचते हुए कि प्रार्थना करने के लिये वहाँ कोई स्थान होगा हम नगर-द्वार के बाहर नदी पर गये। हम वहाँ बैठ गये और एकत्र स्त्रियों से बातचीत करने लगे। 14वहीं लीदिया नाम की एक महिला थी। वह बैंजनी रंग के कपड़े बेचा करती थी। वह परमेश्वर की उपासक थी। वह बड़े ध्यान से हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये थे ताकि, जो कुछ पौलुस कह रहा था, वह उन बातों पर ध्यान दे सके। 15अपने समूचे परिवार समेत बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमसे यह कहते हुए विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की सच्ची भक्त मानते हो तो आओ और मेरे घर ठहरो।" सो उसने हमें जाने के लिए तैयार कर लिया।

पौलुस और सिलास का बंदी बनाया जाना

16फिर ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना स्थल की ओर जा रहे थे, हमें एक दासी मिली जिसमें एक शकुन बताने

पद 34 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 34 जोड़ा गया है।

वाली आत्मा* समायी थी। वह लोगों का भाग्य बता कर
अपने स्वामियों को बहुत सा धन कमा कर देती थी। 17वह
हमारे और पौलुस के पीछे पीछे यह चिल्लाते हुए हो ली,
"ये लोग परम परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम्हें मुक्ति के
मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।" 18वह बहुत दिनों तक ऐसा ही
करती रही सो पौलुस परेशान हो उठा। उसने मुड़ कर
उस आत्मा से कहा, "मैं यीशु मसीह के नाम पर तुझे
आज्ञा देता हूँ, 'इस लड़की में से बाहर निकल आ!'" सो
वह उसमें से तत्काल बाहर निकल गयी।

19फिर उसके स्वामियों ने जब देखा कि उनकी कमाई
की आशा पर ही पानी फिर गया है तो उन्होंने पौलुस और
सिलास को धर दबोचा और उन्हें घसीटते हुए बाजार के
बीच अधिकारियों के सामने ले गये। 20फिर दण्डनायक
के पास उन्हें ले जाकर वे बोले, "ये लोग यहूदी हैं और
हमारे नगर में गड़बड़ी फैला रहे हैं। 21ये ऐसे रीति रिवाजों
की वकालत करते हैं जिन्हें अपनाना या जिन पर चलना
हम रोमियों के लिये न्यायपूर्ण नहीं है।" 22भीड़ भी विरोध
में लोगों के साथ हो कर उन पर चढ़ आयी। दण्डाधिकारी
ने उनके कपड़े फड़वा कर उतरवा दिये और आज्ञा दी कि
उन्हें पीटा जाये। 23उन पर बहुत मार पड़ चुकने के बाद
उन्होंने उन्हें जेल में डाल दिया और जेल के अधिकारी
को आज्ञा दी कि उन पर कड़ा पहरा बैठा दिया जाये।
24ऐसी आज्ञा पाकर उसने उन्हें जेल की भीतरी कोठरी में
डाल दिया। उसने उनके पैर काठ में कस दिये।

25लगभग आधी रात गये पौलुस और सिलास परमेश्वर
के भजन गाते हुए प्रार्थना कर रहे थे और दूसरे कैदी
उन्हें सुन रहे थे। 26तभी वहाँ अचानक एक ऐसा भयानक
भूचाल आया कि जेल की नीवें हिल उठीं। और तुरंत जेल
के फाटक खुल गये। हर किसी की बेड़ियाँ ढीली हो कर
गिर पड़ीं। 27जेल के अधिकारी ने जाग कर जब देखा कि
जेल के फाटक खुले पड़े हैं तो उसने अपनी तलवार खींच
ली और यह सोचते हुए कि कैदी भाग निकले हैं वह स्वयं
को जब मारने ही वाला था तभी 28पौलुस ने ऊँचे स्वर में
पुकारते हुए कहा, "अपने को हानि मत पहुँचा क्योंकि
हम सब यहीं हैं।"

29इस पर जेल के अधिकारी ने मशाल मँगवाई और
जल्दी से भीतर गया। और भय से काँपते हुए पौलुस और
सिलास के सामने गिर पड़ा। 30फिर वह उन्हें बाहर ले जा
कर बोला, "महानुभावो, उद्धार पाने के लिये मुझे क्या
करना चाहिये?"

31उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर।
इससे तेरा उद्धार होगा–तेरा और तेरे परिवार का।" 32फिर
उसके समूचे परिवार के साथ उन्होंने उसे प्रभु का वचन
सुनाया। 33फिर जेल का वह अधिकारी उसी रात और
उसी घड़ी उन्हें वहाँ से ले गया। उसने उनके घाव धोये
और अपने सारे परिवार के साथ उनसे बपतिस्मा लिया।
34फिर वह पौलुस और सिलास को अपने घर ले आया
और उन्हें भोजन कराया। परमेश्वर में विश्वास ग्रहण
कर लेने के कारण उसने अपने समूचे परिवार के साथ
आनन्द मनाया।

35जब पौ फटी तो दण्डाधिकारियों ने यह कहने अपने
सिपाहियों को वहाँ भेजा कि उन लोगों को छोड़ दिया
जाये।

36फिर जेल के अधिकारी ने ये बातें पौलुस को बतायीं
कि दण्डाधिकारी ने तुम्हें छोड़ देने के लिये कहलवा भेजा
है। इसलिये अब तुम बाहर आओ और शांति के साथ चले
जाओ।

37किन्तु पौलुस ने उन सिपाहियों से कहा, "यद्यपि हम
रोमी नागरिक हैं पर उन्होंने हमें अपराधी पाये बिना ही
सब के सामने मारा–पीटा और जेल में डाल दिया। और
अब चुपके–चुपके वे हमें बाहर भेज देना चाहते हैं, निश्चय
ही ऐसा नहीं होगा। होना तो यह चाहिये कि वे स्वयं आकर
हमें बाहर निकालें!"

38सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये शब्द जा सुनाये।
दण्डाधिकारियों को जब यह पता चला कि पौलुस और
सिलास रोमी हैं तो वे बहुत डर गये। 39सो वे वहाँ आये
और उनसे क्षमा याचना करके उन्हें बाहर ले गये और
उनसे उस नगर को छोड़ जाने को कहा। 40पौलुस और
सिलास जेल से बाहर निकल कर लीदिया के घर पहुँचे।
धर्म–बंधुओं से मिलते हुए उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया
और फिर वहाँ से चल दिये।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

17 फिर अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया की यात्रा
समाप्त करके वे थिस्सुलुनिके जा पहुँचे। वहाँ
यहूदियों का एक प्रार्थना सभागार था। 2अपने सामान्य

आत्मा यह आत्मा एक शैतान की रूह थी जिसने इस लड़की
को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

स्वभाव के अनुसार पौलुस उनके पास गया और तीन
सब्त तक उनके साथ शास्त्रों पर विचार–विनिमय करता
रहा। 3और शास्त्रों से लेकर उन्हें समझाते हुए यह सिद्ध
करता रहा कि मसीह को यातनाएँ झेलनी ही थीं और
फिर उसे मरे हुओं में से जी उठना था। वह कहता, "यह
यीशु ही, जिसका मैं तुम्हारे बीच प्रचार करता हूँ, मसीह
है।" 4उनमें से कुछ जो सहमत हो गए थे, पौलुस और
सिलास के मत में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर से डरने
वाले अनगिनत यूनानी भी उनमें मिल गये। इनमें अनेक
महत्त्वपूर्ण स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं।
5पर यहूदी तो डाह में जले जा रहे थे। उन्होंने कुछ
बाज़ारू गुंडों को इकट्ठा किया और एक हुजूम बना कर
नगर में दंगे करा दिये। उन्होंने यासोन के घर पर धावा
बोल दिया। और यह कोशिश करने लगे कि किसी तरह
पौलुस और सिलास को लोगों के सामने ले आयें। 6किन्तु
जब वे उन्हें नहीं पा सके तो यासोन को और कुछ दूसरे
बन्धुओं को नगर अधिकारियों के सामने घसीट लाये। वे
चिल्लाये, "ये लोग जिन्होंने सारी दुनिया में उथल पुथल
मचा रखी है, अब यहाँ आये हैं। 7और यासोन सम्मान के
साथ उन्हें अपने घर में ठहराये हुए है। और वे सभी कैसर
के आदेशों के विरोध में काम करते हैं। और कहते हैं
'एक राजा और है जिसका नाम है यीशु।'"
8जब भीड़ ने और नगर के अधिकारियों ने यह सुना
तो वे भड़क उठे। 9और इस प्रकार उन्होंने यासोन तथा
दूसरे लोगों को ज़मानती मुचलके लेकर छोड़ दिया।

पौलुस और सिलास बिरिया में

10फिर तुरन्त रातों रात भाइयों ने पौलुस और सिलास
को बिरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वे यहूदी, प्रार्थना
सभागार में गये। 11ये लोग थिस्सुलुनिके के लोगों से
अधिक अच्छे थे। इन लोगों ने पूरा मन लगाकर वचन
को सुना और हर दिन शास्त्रों को उलटते पलटते यह
जाँचते रहे कि पौलुस ने जो बातें बतायी हैं, क्या वे सत्य
हैं। 12परिणामस्वरुप बहुत से यहूदियों और महत्त्वपूर्ण
यूनानी स्त्री–पुरुषों ने भी विश्वास ग्रहण किया। 13किन्तु
जब थिस्सुलुनिके के यहूदियों को यह पता चला कि
पौलुस बिरिया में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार कर
रहा है तो वे वहाँ भी आ धमके। और वहाँ भी दंगे करना
और लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। 14इसलिए तभी
भाइयों ने तुरन्त पौलुस को सागर तट पर जाने को भेज
दिया। किन्तु सिलास और तिमुथियुस वहीं ठहरे रहे।
15पौलुस को ले जाने वाले लोगों ने उसे एथेंस पहुँचा दिया
और सिलास तथा तिमुथियुस के लिये यह आदेश देकर
कि वे जल्दी से जल्दी उसके पास आ जायें, वहाँ से चल
पड़े।

पौलुस एथेंस में

16पौलुस एथेंस में तिमुथियुस और सिलास की प्रतीक्षा
करते हुए नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखकर मन ही
मन तिलमिला रहा था। 17इसीलिये हर दिन वह यहूदी
धर्मसभा–भवन में यहूदियों और यूनानी भक्तों से वाद–
विवाद करता रहता था। वहाँ हाट–बाजार में जो कोई
होता वह उससे भी हर दिन बहस करता रहता। 18कुछ
इपीकुरी और स्तोइकी दार्शनिक भी उससे शास्त्रार्थ करने
लगे। उनमें से कुछ ने कहा, "यह अंटशंट बोलने वाला
कहना क्या चाहता है?" दूसरों ने कहा, "यह तो विदेशी
देवताओं का प्रचारक मालूम होता है।" उन्होंने यह इसलिये
कहा था कि वह यीशु के बारे में उपदेश देता था और
उसके फिर से जी उठने का प्रचार करता था। 19वे उसे
पकड़कर अरियुपगुस की सभा में अपने साथ ले गये और
बोले, "क्या हम जान सकते हैं कि तू जिसे लोगों के सामने
रख रहा है, वह नयी शिक्षा क्या है? 20तू कुछ विचित्र बातें
हमारे कानों में डाल रहा है, सो हम जानना चाहते हैं कि
इन बातों का अर्थ क्या है?" 21वहाँ रह रहे एथेंस के सभी
लोग और परदेसी केवल कुछ नया सुनने या उन्हीं बातों
की चर्चा के अतिरिक्त किसी भी और बात में अपना
समय नहीं लगाते थे।
22तब पौलुस ने अरियुपगुस के सामने खड़े होकर
कहा, "हे एथेंस के लोगो! मैं देख रहा हूँ तुम हर प्रकार
से धार्मिक हो। 23घूमते फिरते तुम्हारी उपासना की वस्तुओं
को देखते हुए मुझे एक ऐसी वेदी भी मिली जिस पर
लिखा था, 'अज्ञात परमेश्वर के लिये' सो तुम बिना जाने
ही जिस की उपासना करते हो, मैं तुम्हें उसी का वचन
सुनाता हूँ। 24परमेश्वर, जिसने इस जगत की और इस
जगत के भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की वही धरती
और आकाश का प्रभु है। वह हाथों से बनाये मंदिरों में
नहीं रहता। 25उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं है सो
मनुष्य के हाथों से उसकी सेवा नहीं हो सकती। वही सब

को जीवन, साँसें और अन्य सभी कुछ दिया करता है।
26एक ही मनुष्य से उसने मनुष्य की सभी जातियों का
निर्माण किया ताकि वे समूची धरती पर बस जायें और
उसी ने लोगों का समय निश्चित कर दिया और उस स्थान
की, जहाँ वे रहें, सीमाएँ बाँध दीं। 27उस का प्रयोजन यह
था कि लोग परमेश्वर को खोजें। हो सकता है वे उसे उस
तक पहुँच कर पा लें। इतना होने पर भी हममें से किसी से
भी वह दूर नहीं हैं:

28 'क्योंकि उसी में हम रहते हैं
उसी में हमारी गति है
और उसी में है हमारा अस्तित्व!'

इसी प्रकार स्वयं तुम्हारे ही कुछ लेखकों ने भी कहा
है:

'क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।'

29और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं इसलिये
हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि वह दिव्य अस्तित्व
सोने या चाँदी या पत्थर की बनी मानव कल्पना या कारीगरी
से बनी किसी मूर्ति जैसा है। 30ऐसे अज्ञान के युग की
परमेश्वर ने उपेक्षा कर दी है और अब हर कहीं के
मनुष्यों को वह मन फिरावने का आदेश दे रहा है। 31उसने
एक दिन निश्चित किया है जब वह अपने नियुक्त किये
गये एक पुरुष के द्वारा न्याय के साथ जगत का निर्णय
करेगा। मरे हुओं में से उसे जिलाकर उसने हर किसी को
इस बात का प्रमाण दिया है!"

32जब उन्होंने मरे हुओं में से जी उठने की बात सुनी तो
उनमें से कुछ तो उसकी हँसी उड़ाने लगे किन्तु कुछ ने
कहा, "हम इस विषय पर तेरा प्रवचन फिर कभी सुनेंगे।"
33तब पौलुस उन्हें छोड़ कर चल दिया। 34कुछ लोगों ने
विश्वास ग्रहण कर लिया और उसके साथ हो लिये। इनमें
अरियुपगुसका* सदस्य दियुनुसियुस और दमरिस नामक
एक महिला तथा उनके साथ के और लोग भी थे।

पौलुस कुरिन्थियुस में

18 इसके बाद पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थियुस
चला गया। 2वहाँ वह पुन्तुस के रहने वाले
अक्विला नाम के एक यहूदी से मिला। जो हाल में ही
अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था। उन्होंने
इटली इसलिये छोड़ी थी कि क्लौदियुस ने सभी यहूदियों
को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था। सो पौलुस
उनसे मिलने गया। 3और क्योंकि उनका काम धन्धा एक
ही था सो वह उन ही के साथ ठहरा और काम करने
लगा। व्यवसाय से वे तम्बू बनाने वाले थे। 4हर सब्त के
दिन वह यहूदी धर्मसभा भवनों में तर्क-वितर्क करके
यहूदियों और यूनानियों को समझाने बुझाने का जतन
करता।

5जब वे मैसिडोनिया से सिलास और तिमुथियुस आये
तब पौलुस ने अपना सारा समय वचन के प्रचार में लगा
रखा था। वह यहूदियों को यह प्रमाणित किया करता था
कि यीशु ही मसीह है। 6सो जब उन्होंने उसका विरोध
किया और उससे भला बुरा कहा तो उसने उनके विरोध
में अपने कपड़े झाड़ते हुए उनसे कहा, "तुम्हारा खून
तुम्हारे ही सिर पड़े। उसका मुझ से कोई सरोकार नहीं है।
अब से आगे मैं ग़ैर-यहूदियों के पास चला जाऊँगा।"
7इस तरह पौलुस वहाँ से चल पड़ा और तीतुस-यूसतुस
नाम के एक व्यक्ति के घर गया। वह परमेश्वर का
उपासक था। उसका घर यहूदी धर्म-सभा-भवन से लगा
हुआ था। 8क्रिसपुस ने, जो यहूदी प्रार्थना सभागार का
प्रधान था, अपने समूचे घराने के साथ प्रभु में विश्वास
ग्रहण किया। साथ ही उन बहुत से कुरिन्थियों ने जिन्होंने
पौलुस का प्रवचन सुना था, विश्वास ग्रहण करके बपतिस्मा
लिया।

9एक रात सपने में प्रभु ने पौलुस से कहा, "डर मत,
बोलता रह और चुप मत हो। 10क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। सो
तुझ पर हमला करके कोई भी तुझे हानि नहीं पहुँचायेगा
क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" 11सो पौलुस,
वहाँ डेढ़ साल तक परमेश्वर के वचन की उनके बीच
शिक्षा देते हुए, ठहरा।

पौलुस का गल्लियो के सामने लाया जाना

12जब अखाया का राज्यपाल गल्लियो था तभी यहूदी
एक जुट हो कर पौलुस पर चढ़ आये और उसे पकड़ कर
अदालत में ले गये 13और बोले, "यह व्यक्ति लोगों को
परमेश्वर की उपासना ऐसे ढंग से करने के लिये बहका
रहा है जो व्यवस्था के विधान के विपरीत है।"

अरियुपगुस एथेंस के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का एक दल। ये लोग न्यायधीशों के समान हुआ करते थे।

14पौलुस अभी अपना मुँह खोलने को ही था कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "अरे यहूदियो, यदि यह विषय किसी अन्याय या गम्भीर अपराध का होता तो तुम्हारी बात सुनना मेरे लिये न्यायसंगत होता 15किन्तु क्योंकि यह विषय शब्दों, नामों और तुम्हारी अपनी व्यवस्था के प्रश्नों से सम्बन्धित है, इसलिए इसे तुम अपने आप ही सुलटो। ऐसे विषयों में मैं न्यायाधीश नहीं बनना चाहता।" 16और फिर उसने उन्हें अदालत से बाहर निकाल दिया।

17सो उन्होंने प्रार्थना सभागार के नेता सोस्थिनेस को धर दबोचा और अदालत के सामने ही उसे पीटने लगे। किन्तु गल्लियो ने इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

पौलुस की वापसी

18बहुत दिनों बाद तक पौलुस वहाँ ठहरा रहा। फिर भाइयों से विदा लेकर वह नाव के रास्ते सीरिया को चल पड़ा। उसके साथ प्रिसकिल्ला तथा अक्विला भी थे। पौलुस ने किंखिया में अपने केश उतरवाये क्योंकि उसने एक मन्नत मानी थी। 19फिर वे इफिसुस पहुँचे और पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अक्विला को वहीं छोड़ दिया। और आप प्रार्थना सभागार में जाकर यहूदियों के साथ बहस करने लगा। 20जब वहाँ के लोगों ने उससे कुछ दिन और ठहरने को कहा तो उसने मना कर दिया। 21किन्तु जाते समय उसने कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।" फिर उसने इफिसुस से नाव द्वारा यात्रा की।

22फिर केसरिया पहुँच कर वह यरुशलेम गया और वहाँ कलीसिया के लोगों से भेंट की। फिर वह अंताकिया की ओर चला गया। 23वहाँ कुछ समय बिताने के बाद उसने विदा ली और गलातिया एवम् फ्रिगिया के क्षेत्रों में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए सभी अनुयायिओं के विश्वास को बढ़ाने लगा।

इफिसुस में अपुल्लोस

24वहीं अपुल्लोस नाम का एक यहूदी हुआ करता था। वह सिकंदरिया का निवासी था। वह विद्वान वक्ता था। वह इफिसुस में आया। शास्त्रों का उसे संपूर्ण ज्ञान था। 25उसे प्रभु के मार्ग की दीक्षा भी मिली थी। वह हृदय में उत्साह भर कर प्रवचन करता तथा यीशु के विषय में बड़ी सावधानी से उपदेश देता था। यद्यपि उसे केवल यूहन्ना के बपतिस्मा का ही ज्ञान था। 26यहूदी धर्म सभा में वह निर्भय हो कर बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे बोलते सुना तो वे उसे एक ओर ले गये और अधिक बारीकी के साथ उसे परमेश्वर के मार्ग की व्याख्या समझाई। 27सो जब उसने अखाया को जाना चाहा तो भाइयों ने उसका साहस बढ़ाया और वहाँ के अनुयायिओं को उसका स्वागत करने को लिख भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिये बड़ा सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास ग्रहण कर लिया था। 28क्योंकि शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु ही मसीह है, उसने यहूदियों को जनता के बीच जोरदार शब्दों में बोलते हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा था।

पौलुस इफ़िसुस में

19 ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था तभी पौलुस भीतरी प्रदेशों से यात्रा करता हुआ इफिसुस में आ पहुँचा। वहाँ उसे कुछ शिष्य मिले। 2और उसने उनसे कहा, "क्या जब तुमने विश्वास धारण किया था तब पवित्र आत्मा को ग्रहण किया था?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हमने तो सुना तक नहीं है कि कोई पवित्र आत्मा है भी।"

3सो वह बोला, "तो तुमने कैसा बपतिस्मा लिया है?"

उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"

4फिर पौलुस ने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा तो मनफिराव का बपतिस्मा था। उसने लोगों से कहा था कि जो मेरे बाद आ रहा है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करो।"

5यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा ले लिया। 6फिर जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे तो उन पर पवित्र आत्मा उतर आया और वे अलग अलग भाषाएँ बोलने और भविष्यवाणियाँ करने लगे। 7कुल मिला कर वे कोई बारह व्यक्ति थे।

8फिर पौलुस यहूदी प्रार्थना सभागार में चला गया और तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा। वह यहूदियों के साथ बहस करते हुए उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाया करता था। 9किन्तु उनमें से कुछ लोग बहुत हठी थे उन्होंने विश्वास ग्रहण करने को मना कर दिया और लोगों के सामने पंथ को भला बुरा कहते रहे। सो वह अपने शिष्यों को साथ ले उन्हें छोड़ कर चला गया।

और तरन्नुस की पाठशाला में हर दिन विचार-विमर्श करने लगा। **10**दो साल तक ऐसा ही होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी एशिया-निवासी यहूदियों और ग़ैर यहूदियों ने प्रभु का वचन सुन लिया।

स्कीवा के बेटे

11परमेश्वर पौलुस के हाथों अनहोने आश्चर्य कर्म कर रहा था। **12**यहाँ तक कि उसके छुए रूमालों और अँगोछों को रोगियों के पास ले जाया जाता और उन की बीमारियाँ दूर हो जातीं तथा दुष्टात्माएँ उनमें से निकल भागतीं।

13-14कुछ यहूदी लोग, जो दुष्टात्माएँ उतारते इधर-उधर घूमा फिरा करते थे। यह करने लगे कि जिन लोगों में दुष्टात्माएँ समायी थीं, उन पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करने का यत्न करते और कहते, "मैं तुम्हें उस यीशु के नाम पर जिसका प्रचार पौलुस करता है, आदेश देता हूँ।" एक स्कीवा नाम के यहूदी महायाजक के सात पुत्र जब ऐसा कर रहे थे,

15तो दुष्टात्मा ने (एक बार) उनसे कहा, "मैं यीशु को पहचानती हूँ और पौलुस के बारे में भी जानती हूँ, किन्तु तुम लोग कौन हो?"

16फिर वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्मा सवार थी, उन पर झपटा। उसने उन पर काबू पा कर उन दोनों को हरा दिया। इस तरह वे नंगे ही घायल होकर उस घर से निकल कर भाग गये। **17**इफिसुस में रहने वाले सभी यहूदियों और यूनानियों को इस बात का पता चल गया। वे सब लोग बहुत डर गये थे। इस प्रकार प्रभु यीशु के नाम का आदर और अधिक बढ़ गया। **18**उनमें से बहुत से जिन्होंने विश्वास ग्रहण किया था, अपने द्वारा किये गये बुरे कामों को सबके सामने स्वीकार करते हुए वहाँ आये। **19**जादू टोना करने वालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पुस्तकें लाकर वहाँ इकट्ठी कर दीं और सब के सामने उन्हें जला दिया। उन पुस्तकों का मूल्य पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर कूता गया। **20**इस प्रकार प्रभु का वचन अधिक प्रभावशाली होते हुए दूर दूर तक फैलने लगा।

पौलुस की यात्रा-योजना

21इन घटनाओं के बाद पौलुस ने अपने मन में मेसिडोनिया और अखाया होते हुए यरुशलेम जाने का निश्चय किया। उसने कहा, "वहाँ जाने के बाद मुझे रोम भी देखना चाहिये।" **22**सो उसने अपने तिमुथियुस और इरासतुस नामक दो सहायकों को मैसिडोनिया भेज दिया और स्वयं एशिया में थोड़ा समय और बिताया।

इफ़िसुस में उपद्रव

23उन्हीं दिनों इस पंथ को लेकर वहाँ बड़ा उपद्रव हुआ। **24**वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक चाँदी का काम करने वाला सुनार हुआ करता था। उसने अरतिमिस की चाँदी की हटरियाँ बनवायी थीं जिससे कारीगरों को बहुत कारोबार मिला था। **25**उसने उन्हें और इस काम से जुड़े हुए दूसरे कारीगरों को इक्ट्ठा किया और कहा, "देखो लोगो, तुम जानते हो कि इस काम से हमें एक अच्छी आमदनी होती है। **26**तुम देख सकते हो और सुन सकते हो कि इस पौलुस ने न केवल इफिसुस में बल्कि लगभग एशिया के समूचे क्षेत्र में लोगों को बहका-फुसला कर बदल दिया है। वह कहता है कि मनुष्य के हाथों के बनाये देवता सच्चे देवता नहीं हैं। **27**इससे न केवल इस बात का भय है कि हमारा व्यवसाय बदनाम होगा बल्कि महान देवी अरतिमिस के मंदिर की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने का भी डर है। और जिस देवी की उपासना समूचे एशिया और संसार द्वारा की जाती है, उसकी गरिमा छिन जाने का भी डर है।"

28जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, "इफ़िसियों की देवी अरतिमिस महान है!" **29**उधर सारे नगर में अव्यवस्था फैल गयी। सो लोगों ने मैसिडोनिया से आये तथा पौलुस के साथ यात्रा कर रहे गयुस और अरिस्तर्खुस को धर दबोचा और उन्हें रंगशाला* में ले भागे। **30**पौलुस लोगों के सामने जाना चाहता था किन्तु शिष्यों ने उसे नहीं जाने दिया। **31**कुछ प्रांतीय अधिकारियों ने जो उसके मित्र थे, उससे कहलवा भेजा कि वह वहाँ रंगशाला में आने का दुस्साहस न करे। **32**अब देखो कोई कुछ चिल्ला रहा था, और कोई कुछ, क्योंकि समूची सभा में हड़बड़ी फैली हुई थी। उनमें से अधिकतर यह नहीं जानते थे कि वे वहाँ एकत्र क्यों हुए हैं। **33**यहूदियों ने सिकन्दर को जिसका नाम भीड़ में से उन्होंने सुझाया था, आगे खड़ा कर रखा

रंगशाला एक विशेष स्थान जिसे रंगशाला के रूप में याजक सभाओं के लिये प्रयोग मे लाते थे।

था। सिकन्दर ने अपने हाथों को हिला हिला कर लोगों के सामने बचाव पक्ष प्रस्तुत करना चाहा। **34**किन्तु जब उन्हें यह पता चला कि वह एक यहूदी है तो वे सब कोई दो घण्टे तक एक स्वर में चिल्लाते हुए कहते रहे, “इफिसुसियों की देवी अरतिमिस महान है।”

35फिर नगर लिपिक ने भीड़ को शांत करके कहा, “हे इफिसुस के लोगो क्या संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह नहीं जानता कि इफिसुस नगर महान देवी अरतिमिस और स्वर्ग से गिरी हुई पवित्र शिला का संरक्षक है?’ **36**क्योंकि इन बातों से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिये तुम्हें शांत रहना चाहिये और बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिये। **37**तुम इन लोगों को पकड़ कर यहाँ लाये हो यद्यपि उन्होंने न तो कोई मंदिर लूटा है और न ही हमारी देवी का अपमान किया है। **38**फिर भी देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी के विरुद्ध कोई शिकायत है तो अदालतें खुली हैं और वहाँ राज्यपाल हैं। वहाँ आपस में एक दूसरे पर वे अभियोग चला सकते हैं। **39**किन्तु यदि तुम इससे कुछ अधिक जानना चाहते हो तो उसका फैसला नियमित सभा में किया जायेगा। **40**जो कुछ है उसके अनुसार हमें इस बात का डर है कि आज के उपद्रवों का दोष कहीं हमारे ही सिर न मढ़ दिया जाये। इस दंगे के लिये हमारे पास कोई भी हेतु नहीं है जिससे हम इसे उचित ठहरा सकें।” **41**इतना कहने के बाद उसने सभा विसर्जित कर दी।

पौलुस का मैसिडोनिया और यूनान जाना

20 फिर इस उपद्रव के शांत हो जाने के बाद पौलुस ने यीशु के शिष्यों को बुलाया और उनका हौसला बढ़ाने के बाद उनसे विदा ले कर वह मैसिडोनिया को चल दिया। **2**उस प्रदेश से होकर उसने यात्रा की और वहाँ के लोगों को उत्साह के अनेक वचन प्रदान किये। फिर वह यूनान आ गया। **3**वह वहाँ तीन महीने ठहरा और क्योंकि यहूदियों ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रच रखा था सो जब वह जल मार्ग से सीरिया जाने को ही था कि उसने निश्चय किया कि वह मैसिडोनिया को लौट जाये। **4**बिरिया के पिरूस का बेटा सोपत्रुस, थिसलुनिकिया के रहने वाले अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का निवासी गयूस और तिमुथियुस तथा एशियाई क्षेत्र के तुखिकुस और त्रुफिमुस उसके साथ थे। **5**ये लोग पहले चले गये थे और त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। **6**बिना ख़मीर की रोटी के दिनों के बाद हम फिलिप्पी से नाव द्वारा चल पड़े और पाँच दिन बाद त्रोआस में उनसे जा मिले। वहाँ हम सात दिन तक ठहरे।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

7सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी विभाजित करने के लिये आपस में इकट्ठे हुए तो पौलुस उनसे बातचीत करने लगा। उसे अगले ही दिन चले जाना था सो वह आधी रात तक बातचीत करता ही रहा। **8**सीढ़ियों के ऊपर के कमरे में जहाँ हम इकट्ठे हुए थे, वहाँ बहुत से दीपक थे। **9**वहीं युतुखुस नामक एक युवक खिड़की में बैठा था वह गहरी नींद में डूबा था। क्योंकि पौलुस बहुत देर से बोले ही चला जा रहा था सो उसे गहरी नींद आ गयी थी। इससे वह तीसरी मंजिल से नीचे लुढ़क पड़ा और जब उसे उठाया तो वह मर चुका था। **10**पौलुस नीचे उतरा और उस पर झुका। उसे अपनी बाहों में ले कर उसने कहा, “घबराओ मत क्योंकि उसके प्राण अभी उसी में हैं।” **11**फिर वह ऊपर चला गया और उसने रोटी को तोड़ कर विभाजित किया और उसे खाया। वह उनके साथ बहुत देर, पौ-फटे तक बातचीत करता रहा। फिर उसने उनसे विदा ली। **12**उस जीवित युवक को वे घर ले आये। इससे उन्हें बहुत चैन मिला।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

13हम जहाज़ पर पहले ही पहुँच गये और अस्सुस को चल पड़े। वहाँ पौलुस को हमें जहाज़ पर लेना था। उसने ऐसी ही योजना बनायी थी। वह स्वयं पैदल आना चाहता था। **14**वह जब अस्सुस में हमसे मिला तो हमने उसे जहाज़ पर चढ़ा लिया और हम मितेलेने को चल पड़े। **15**दूसरे दिन वहाँ से चल कर हम खियुस के सामने जा पहुँचे और अगले दिन उस पार सामोस आ गये। फिर उसके एक दिन बाद हम मिलेतुस आ पहुँचे। **16**क्योंकि पौलुस जहाँ तक हो सके पिन्तेकुस्त के दिन तक यरुशलेम पहुँचने की जल्दी कर रहा था, सो उसने निश्चय किया कि वह इफिसुस में रुके बिना आगे चला जायेगा जिससे उसे एशिया में समय न बिताना पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुजुर्गो से बातचीत

17उसने मिलेतुस से इफिसुस के बुजुर्गो और कलीसिया को संदेसा भेज कर अपने पास बुलाया। 18उनके आने पर पौलुस ने उनसे कहा, "यह तुम जानते हो कि एशिया पहुँचने के बाद पहले दिन से ही हर समय मैं तुम्हारे साथ कैसे रहा हूँ 19और दीनतापूर्वक आँसू बहा-बहा कर यहूदियों के षड्यन्त्रों के कारण मुझ पर पड़ी अनेक परीक्षाओं में भी मैं प्रभु की सेवा करता रहा। 20तुम जानते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे हित की कोई बात बताने से कभी हिचकिचाया नहीं। और मैं तुम्हें उन बातों का सब लोगों के बीच और घर-घर जा कर उपदेश देने में कभी नहीं झिझका। 21यहूदियों और यूनानियों को मैं समान भाव से मन फिराव के परमेश्वर की तरफ़ मुड़ने को कहता रहा हूँ और हमारे प्रभु यीशु में विश्वास के प्रति उन्हें सचेत करता रहा हूँ। 22और अब पवित्र आत्मा के अधीन होकर मैं यरुशलेम जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ क्या कुछ घटेगा। 23मैं तो बस इतना जानता हूँ कि हर नगर में पवित्र आत्मा यह कहते हुए मुझे सचेत करती रहती है कि बंदीगृह और कठिनताएँ मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। 24किन्तु मेरे लिये मेरे प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। मैं तो बस उस दौड़ धूप और उस सेवा को पूरा करना चाहता हूँ जिसे मैंने प्रभु यीशु से ग्रहण किया है वह है-परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की साक्षी देना।

25"और अब मैं जानता हूँ कि तुममें से कोई भी, जिनके बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह आगे कभी नहीं देख पायेगा। 26इसलिये आज मैं तुम्हारे सामने घोषणा करता हूँ कि तुममें से किसी के भी खून का दोषी मैं नहीं हूँ। 27क्योंकि मैं परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को तुम्हें बताने में कभी नहीं हिचकिचाया हूँ। 28अपनी और अपने समुदाय की रखवाली करते रहो। पवित्र आत्मा ने उनमें से तुम्हें उन पर दृष्टि रखने वाला बनाया है ताकि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया का ध्यान रखो जिसे उसने अपने रक्त के बदले मोल लिया था। 29मैं जानता हूँ कि मेरे विदा होने के बाद हिंसक भेड़िये तुम्हारे बीच आयेंगे और वे इस भोले-भाले समूह को नहीं छोड़ेंगे। 30यहाँ तक कि तुम्हारे अपने बीच में से ही ऐसे लोग भी उठ खड़े होंगे, जो शिष्यों को अपने पीछे लगा लेने के लिए बातों को तोड़-मरोड़ कर कहेंगे। 31इसलिये सावधान रहना। याद रखना कि मैंने तीन साल तक एक एक को दिन रात रो रो कर सचेत करना कभी नहीं छोड़ा था।

32"अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके सुसंदेश के अनुग्रह के हाथों सौंपता हूँ। वही तुम्हारा निर्माण कर सकता है और तुम्हें उन लोगों के साथ जिन्हें पवित्र किया जा चुका है, तुम्हारा उत्तराधिकार दिला सकता है। 33मैंने कभी किसी के सोने-चाँदी या वस्त्रों की अभिलाषा नहीं की। 34तुम स्वयं जानते हो कि मेरे इन हाथों ने ही मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताओं को पूरा किया है। 35मैंने अपने हर कर्म से तुम्हें यह दिखाया है कि कठिन परिश्रम करते हुए हमें निर्बलों की सहायता किस प्रकार करनी चाहिये और हमें प्रभु यीशु का वह वचन याद रखना चाहिये जिसे उसने स्वयं कहा था, 'लेने से देने में अधिक सुख है।' "

36यह कह चुकने के बाद वह उन सब के साथ घुटनों के बल झुका और उसने प्रार्थना की। 37हर कोई फूट फूट कर रो रहा था। गले मिलते हुए वे उसे चूम रहे थे। 38उसने जो यह कहा था कि वे उसका मुँह फिर कभी नहीं देखेगें, इससे लोग बहुत अधिक दुखी थे। फिर उन्होंने उसे सुरक्षा पूर्वक जहाज़ तक पहुँचा दिया।

पौलुस का यरुशलेम जाना

21 फिर उनसे विदा हो कर हम ने सागर में अपनी नाव खोल दी और सीधे रास्ते कास जा पहुँचे और अगले दिन रोदुस। फिर वहाँ से हम पतरा को चले गये। 2वहाँ हमने एक जहाज़ लिया जो फिनीके जा रहा था। 3जब साइप्रस दिखाई पड़ने लगा तो हम उसे बायीं तरफ़ छोड़ कर सीरिया की ओर मुड़ गये क्योंकि जहाज़ को सूर में माल उतारना था सो हम भी वहीं उतर पड़े। 4वहाँ हमें अनुयायी मिले जिनके साथ हम सात दिन तक ठहरे। उन्होंने आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस को यरुशलेम जाने से रोकना चाहा। 5फिर वहाँ ठहरने का अपना समय पूरा करके हमने विदा ली और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अपनी पत्नियों और बच्चों समेत वे सभी नगर के बाहर तक हमारे साथ आये। फिर वहाँ सागर तट पर हमने घुटनों के बल झुक कर प्रार्थना की। 6और एक दूसरे से विदा लेकर हम जहाज़ पर चढ़ गये। और वे अपने-अपने घरों को लौट गये।

7सूर से जल मार्ग द्वारा यात्रा करते हुए हम पतुलिमयिस में उतरे। वहाँ भाइयों का स्वागत सत्कार करते हम उनके साथ एक दिन ठहरे। 8अगले दिन उन्हें छोड़ कर हम कैसरिया आ गये। और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस के, जो चुने हुए विशेष सात सेवकों में से एक था, घर जा कर उसके साथ ठहरे। 9उसके चार कुवाँरी बेटियाँ थीं जो भविष्यवाणी किया करती थीं। 10वहाँ हमारे कुछ दिनों ठहरे रहने के बाद यहूदिया से अगबुस नामक एक नबी आया। 11हमारे निकट आते हुए उसने पौलुस का कमर बंध उठा कर उससे अपने ही पैर और हाथ बाँध लिये और बोला, "यह है जो पवित्र आत्मा कह रहा है–यानी यरुशलेम में यहूदी लोग, जिसका यह कमर बंध है, उसे ऐसे ही बाँध कर विधर्मियों के हाथों सौंप देगें।"

12हमने जब यह सुना तो हमने और वहाँ के लोगों ने उससे यरुशलेम न जाने की प्रार्थना की। 13इस पर पौलुस ने उत्तर दिया, "इस प्रकार रो–रो कर मेरा दिल तोड़ते हुए यह तुम क्या कर रहे हो? मैं तो यरुशलेम में न केवल बाँधे जाने के लिये बल्कि प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मरने तक को तैयार हूँ।"

14क्योंकि हम उसे मना नहीं पाये। सो बस इतना कह कर चुप हो गये, "जैसी प्रभु की इच्छा।"

15इन दिनों के बाद फिर हम तैयारी करके यरुशलेम को चल पड़े। 16कैसरिया से कुछ शिष्य भी हमारे साथ हो लिये थे। वे हमें साइप्रस के एक व्यक्ति मनासोन के यहाँ ले गये जो एक पुराना शिष्य था। हमें उसी के साथ ठहरना था।

पौलुस की याकूब से भेंट

17यरुशलेम पहुँचने पर भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ हमारा स्वागत सत्कार किया। 18अगले दिन पौलुस हमारे साथ याकूब से मिलने गया। वहाँ सभी अग्रज उपस्थित थे। 19पौलुस ने उनका स्वागत सत्कार किया और उन सब कामों के बारे में जो परमेश्वर ने उसके द्वारा विधर्मियों के बीच कराये थे, एक एक करके कह सुनाया। 20जब उन्होंने यह सुना तो वे परमेश्वर की स्तुति करते हुए उससे बोले, "बंधु तुम तो देख ही रहे हो यहाँ कितने ही हज़ारों यहूदी ऐसे हैं जिन्होंने विश्वास ग्रहण कर लिया है। किन्तु वे सभी व्यवस्था के प्रति अत्यधिक उत्साहित हैं। 21तेरे विषय में उनसे कहा गया है कि तू विधर्मियों के बीच रहने वाले सभी यहूदियों को मूसा की शिक्षाओं को त्यागने की शिक्षा देता है। और उनसे कहता है कि वे न तो अपने बच्चों का ख़तना करायें और न ही हमारे रीति–रिवाजों पर चलें। 22सो किया क्या जाये? वे यह तो सुन ही लेंगे कि तू आया हुआ है। 23इसलिये तू वही कर जो तुझ से हम कह रहे हैं। हमारे साथ चार ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने कोई मन्नत मानी है। 24इन लोगों को ले जा और उनके साथ शुद्धीकरण समारोह में सम्मिलित हो जा। और उनका खर्चा दे दे ताकि वे अपने सिर मुँडवा लें। इससे सब लोग जान जायेंगे कि उन्होंने तेरे बारे में जो सुना है, उसमें कोई सचाई नहीं है बल्कि तू तो स्वयं ही व्यवस्था के अनुसार जीवन जीता है। 25जहाँ तक विश्वास ग्रहण करने वाले ग़ैर यहूदियों का प्रश्न है, हमने उन्हें एक पत्र में लिख भेजा है,

'वे मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन,
लहू के खाने, गला घोट कर मारे हुए
पशुओं और यौन अनाचार से
अपने आप को दूर रखें।'"

26इस प्रकार पौलुस ने उन लोगों को अपने साथ लिया और उन लोगों के साथ अपने आप को भी अगले दिन शुद्ध कर लिया। फिर वह मंदिर में गया जहाँ उसने घोषणा की कि शुद्धीकरण के दिन कब पूरे होंगे और हममें से हर एक के लिये चढ़ावा कब चढ़ाया जायेगा।

27जब वे सात दिन लगभग पूरे होने वाले थे, कुछ यहूदियों ने उसे मंदिर में देख लिया। उन्होंने भीड़ में सभी लोगों को भड़का दिया और पौलुस को पकड़ लिया। 28फिर वे चिल्ला कर बोले, "इस्राएल के लोगो सहायता करो। यह वही व्यक्ति है जो हर कहीं हमारी जनता के, हमारी व्यवस्था के और हमारे इस स्थान के विरोध में लोगों को सिखाता फिरता है। और अब तो यह विधर्मियों को मंदिर में ले आया है। और इसने इस प्रकार इस पवित्र स्थान को ही भ्रष्ट कर दिया है।" 29(उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि त्रुफिमुस नाम के एक इफिसी को नगर में उन्होंने उसके साथ देखकर ऐसा समझा था कि पौलुस उसे मंदिर में ले गया है)

30सो सारा नगर विरोध में उठ खड़ा हुआ। लोग दौड़–दौड़ कर चढ़ आये और पौलुस को पकड़ लिया। फिर वे उसे घसीटते हुए मंदिर से बाहर ले गये और तत्काल फाटक बंद कर दिये गये। 31वे उसे मारने का जतन कर

ही रहे थे कि रोमी टुकड़ी के सेनानायक के पास यह सूचना पहुँची कि समुचे यरुशलेम में खलबली मची हुई है। 32उसने तुरंत कुछ सिपाहियों और सेना के अधिकारियों को अपने साथ लिया और पौलुस पर हमला करने वाले यहूदियों की ओर बढ़ा। यहूदियों ने जब उस सेनानायक और सिपाहियों को देखा तो उन्होंने पौलुस को पीटना बंद कर दिया। 33तब वह सेना नायक पौलुस के पास आया और उसे बंदी बना लिया। उसने उसे दो ज़ंजीरों में बाँध लेने का आदेश दिया। फिर उसने पूछा कि वह कौन है और उसने क्या किया है? 34भीड़ में से कुछ लोगों ने एक बात कही तो दूसरों ने दूसरी। इस हो–हुल्लड़ में क्योंकि वह यह नहीं जान पाया कि सच्चाई क्या है, इसलिये उसने आज्ञा दी कि उसे छावनी में ले चला जाये। 35पौलुस जब सीढ़ियों के पास पहुँचा तो भीड़ में फैली हिंसा के कारण सिपाहियों को उसे अपनी सुरक्षा में ले जाना पड़ा 36क्योंकि उसके पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ यह चिल्लाते हुए चल रही थी कि इसे मार डालो।

37जब वह छावनी के भीतर ले जाया जाने वाला ही था कि पौलुस ने सैनानायक से कहा, "क्या मैं तुझसे कुछ कह सकता हूँ?"

सेनानायक बोला, "क्या तू यूनानी बोलता है? 38तो तू वह मिस्री तो नहीं है न जिसने कुछ समय पहले विद्रोह शुरू कराया था और जो यहाँ रेगिस्तान में चार हज़ार आतंकवादियों की अगुआई कर रहा था?"

39पौलुस ने कहा, "मैं सिलिकिया के तरसुस नगर का एक यहूदी व्यक्ति हूँ। और एक प्रसिद्ध नगर का नागरिक हूँ। मैं तुझसे चाहता हूँ कि तू मुझे इन लोगों के बीच बोलने दे।"

40उससे अनुमति पा कर पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों की तरफ़ हाथ हिलाते हुए संकेत किया। जब सब शांत हो गया तो पौलुस इब्रानी भाषा में लोगों से कहने लगा।

पौलुस का भाषण

22 पौलुस ने कहा, "हे भाइयो और पितृ तुल्य सज्जनो! मेरे बचाव में अब मुझे जो कुछ कहना है, उसे सुनो।" 2उन्होंने जब उसे इब्रानी भाषा में बोलते हुए सुना तो वे और अधिक शांत हो गये। फिर पौलुस कहा, 3"मैं एक यहूदी व्यक्ति हूँ। किलिकिया के तरसुस में मेरा जन्म हुआ था और मैं इसी नगर में पल–पुस कर बड़ा हुआ। गमलिएल* के चरणों में बैठ कर हमारे परम्परागत विधान के अनुसार बड़ी कड़ाई के साथ मेरी शिक्षा–दीक्षा हुई। परमेश्वर के प्रति मैं बड़ा उत्साही था। ठीक वैसे ही जैसे आज तुम सब हो। 4इस पंथ के लोगों को मैंने इतना सताया कि उनके प्राण तक निकल गये। मैंने पुरूषों और स्त्रियों को बंदी बनाया और जेलों में ठूँस दिया। 5स्वयं महा याजक और बुज़ुर्गों की समूची सभा इसे प्रमाणित कर सकती है। मैंने दमिश्क में इनके भाइयों के नाम इनसे पत्र भी लिया था और इस पंथ के वहाँ रह रहे लोगों को पकड़ कर बंदी के रूप में यरुशलेम लाने के लिये मैं गया भी था ताकि उन्हें दण्ड दिलाया जा सके।

पौलुस का मन कैसे बदला

6"फिर ऐसा हुआ कि मैं जब यात्रा करते–करते दमिश्क के पास पहुँचा तो लगभग दोपहर के समय आकाश से अचानक एक तीव्र प्रकाश मेरे चारों और कौंध गया। 7मैं धरती पर जा पड़ा। तभी मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल, ओ शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?' 8तब मैंने उत्तर में कहा, 'प्रभु, तू कौन है?' वह मुझसे बोला, 'मैं वही नासरी यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है।' 9जो मेरे साथ थे, उन्होंने भी वह प्रकाश देखा किन्तु उस ध्वनि को जिस ने मुझे सम्बोधित किया था, वे समझ नहीं पाये। 10मैंने पूछा, 'हे प्रभु, मैं क्या करूँ?' इस पर प्रभु ने मुझसे कहा, 'खड़ा हो, और दमिश्क को चला जा। वहाँ तुझे वह सब बता दिया जायेगा, जिसे करने के लिये तुझे नियुक्त किया गया है।' 11क्योंकि मैं उस तीव्र प्रकाश की चौंध के कारण कुछ देख नहीं पा रहा था, सो मेरे साथी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे ले चले और मैं दमिश्क जा पहुँचा।

12"वहाँ हनन्या* नाम का एक व्यक्ति था। वह व्यवस्था का पालन करने वाला एक भक्त था। वहाँ के निवासी सभी यहूदियों के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 13वह मेरे पास आया और मेरे निकट खड़े हो कर बोला, 'भाई शाऊल, फिर से देखने लग' और उसी क्षण मैं उसे देखने

गमलीएल यहूदियों की एक धार्मिक शाखा फरीसियों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धर्म–गुरु।

हनन्याह 'प्रेरितों के काम' में हनन्याह नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। अन्य दो के लिए देखें प्र.क. 5:1; 23:2

योग्य हो गया। 14उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे चुन लिया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस धर्म-स्वरूप को देखे और उसकी वाणी को सुने। 15क्योंकि तूने जो देखा है और जो सुना है, उसके लिये सभी लोगों के सामने तू उसकी साक्षी होगा। 16सो अब तू किसकी बाट जोह रहा है, खड़ा हो बपतिस्मा ग्रहण कर और उसका नाम पुकारते हुए अपने पापों को धो डाल।'

17"फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरुशलेम लौट कर मंदिर में प्रार्थना कर रहा था तभी मेरी समाधि लग गयी 18और मेंने देखा वह मुझसे कह रहा है, 'जल्दी कर और तुरंत यरुशलेम से बाहर चला जा क्योंकि मेरे बारे में वे तेरी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।' 19सो मैंने कहा, 'प्रभु ये लोग तो जानते हैं कि तुझ पर विश्वास करने वालों को बंदी बनाते हुए और पीटते हुए मैं यहूदी धर्म सभागारों में घूमता फिरा हूँ। 20और तो और जब तेरे साक्षी स्तिफनुस का रक्त बहाया जा रहा था, तब भी मैं अपना समर्थन देते हुए वहीं खड़ा था। जिन्होंने उसकी हत्या की थी, मैं उनके कपड़ों की रखवाली कर रहा था। 21फिर वह मुझसे बोला, 'तू जा, क्योंकि मैं तुझे विधर्मियों के बीच दूर-दूर तक भेजूँगा।'"

22इस बात तक वे उसे सुनते रहे पर फिर ऊँचे स्वर में पुकार कर चिल्ला उठे, "ऐसे मनुष्य से धरती को मुक्त करो। यह जीवित रहने योग्य नहीं है!" 23वे जब चिल्ला रहे थे और अपने कपड़ों को उतार उतार कर फेंक रहे थे तथा आकाश में धूल उड़ा रहे थे, 24तभी सेना-नायक ने आज्ञा दी कि पौलुस को किले में ले जाया जाये। उसने कहा कि कोड़े लगा लगा कर उससे पूछ-ताछ की जाये ताकि पता चले कि उस पर लोगों के इस प्रकार चिल्लाने का कारण क्या है। 25किन्तु जब वे उसे कोड़े लगाने के लिये बाँध रहे थे तभी वहाँ खड़े सेनानायक से पौलुस ने कहा, "किसी रोमी नागरिक को, जो अपराधी न पाया गया हो, कोड़े लगाना क्या तुम्हारे लिये उचित है?"

26यह सुनकर सेना-नायक सेनापति के पास गया और बोला, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्योंकि यह तो रोमी नागरिक है।"

27इस पर सेनापति ने उसके पास आकर पूछा, "मुझे बता, क्या तू रोमी नागरिक है?"

पौलुस ने कहा, "हाँ।"

28इस पर सेना-पति ने उत्तर दिया, "इस नागरिकता को पाने में मुझे तो बहुत सा धन खर्च करना पड़ा है।"

पौलुस ने कहा, "किन्तु मैं तो जन्मजात रोमी नागरिक हूँ।"

29सो वे लोग जो उससे पूछताछ करने को थे तुरंत पीछे हट गये और वह सेनापति भी यह समझ कर कि वह एक रोमी नागरिक है और उसने उसे बंदी बनाया है, बहुत डर गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

30क्योंकि वह सेनानायक इस बात का ठीक ठीक पता लगाना चाहता था कि यहूदियों ने पौलुस पर अभियोग क्यों लगाया, इसलिये उसने अगले दिन उसके बन्धन खोल दिए। फिर प्रमुख याजकों और सर्वोच्च यहूदी महा सभा को बुला भेजा और पौलुस को उनके सामने ला कर खड़ा कर दिया।

23 पौलुस ने यहूदी महा सभा पर गम्भीर दृष्टि डालते हुए कहा, "मेरे भाइयो! मैंने परमेश्वर के सामने आज तक उत्तम निष्ठा के साथ जीवन जिया है।" 2इस पर महा याजक हनन्याह ने पौलुस के पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि वे उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। 3तब पौलुस ने उससे कहा, "अरे सफेदी पुती दीवार! तुझ पर परमेश्वर की मार पड़ेगी। तू यहाँ व्यवस्था के विधान के अनुसार मेरा कैसा न्याय करने बैठा है कि तू व्यवस्था के विरोध में मेरे थप्पड़ मारने की आज्ञा दे रहा है।"

4पौलुस के पास खड़े लोगों ने कहा, "परमेश्वर के महायाजक का अपमान करने का साहस तुझे हुआ कैसे?"

5पौलुस ने उत्तर दिया, "मुझे तो पता ही नहीं कि यह महायाजक है। क्योंकि शासन मे लिखा है 'तुझे अपनी प्रजा के शासक के लिये बुरा बोल नहीं बोलना चाहिये।'"*

6फिर जब पौलुस को पता चला कि उनमें से आधे लोग सदूकी हैं और आधे फ़रीसी तो महासभा के बीच उसने ऊँचे स्वर में कहा, "हे भाइयो, मैं फ़रीसी हूँ-एक फ़रीसी का बेटा हूँ। मरने के बाद फिर से जी उठने के प्रति मेरी मान्यता के कारण मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है!"

तुझे अपनी ... बोलना चाहिये निर्गमन 22:28

[7]उसके ऐसा कहने पर फ़रीसियों और सदूकियों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच फूट पड़ गयी। [8](सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान नहीं होता न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएँ। किन्तु फ़रीसियों का इनके अस्तित्त्व में विश्वास है।) [9]वहाँ बहुत शोरगुल मचा। फ़रीसियों के दल में से कुछ धर्मशास्त्री उठे और तीखी बहस करते हुए कहने लगे, "इस व्यक्ति में हम कोई खोट नहीं पाते हैं। यदि किसी आत्मा ने या किसी स्वर्गदूत ने इससे बातें की हैं तो इससे क्या?"

[10]क्योंकि यह विवाद हिंसक रूप ले चुका था, इससे वह सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें। सो उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे नीचे जा कर पौलुस को उनसे अलग करके छावनी में ले जायें।

[11]अगली रात प्रभु ने पौलुस के निकट खड़े होकर उससे कहा, "हिम्मत रख, क्योंकि तूने जैसे दृढ़ता के साथ यरुशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही रोम में भी तुझे मेरी साक्षी देनी है।"

[12]फिर दिन निकले। यहूदियों ने एक षड्यन्त्र रचा। उन्होंने शपथ उठायी कि जब तक वे पौलुस को मार नहीं डालेंगे, न कुछ खायेंगे, न पियेंगे। [13]उनमें से चालीस से भी अधिक लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा था [14]वे प्रमुख याजकों और बुजुर्गों के पास गये और बोले, "हमने सौगन्ध उठाई है कि हम जब तक पौलुस को मार नहीं डालते हैं, तब तक न हमें कुछ खाना है, न पीना।" [15]तो अब तुम और यहूदी महासभा, सेनानायक से कहो कि वह उसे तुम्हारे पास ले आए यह बहाना बनाते हुए कि तुम उसके विषय में और गहराई से छानबीन करना चाहते हो। इससे पहले कि वह यहाँ पहुँचे, हम उसे मार डालने को तैयार हैं।

[16]किन्तु पौलुस के भांजे को इस षड्यन्त्र की भनक लग गयी थी, सो वह छावनी में जा पहुँचा और पौलुस को सब कुछ बता दिया। [17]इस पर पौलुस ने किसी एक सेना-नायक को बुलाकर उससे कहा, "इस युवक को सेनापति के पास ले जाओ क्योंकि इसे उससे कुछ कहना है।" [18]सो वह उसे सेनापति के पास ले गया और बोला, "बंदी पौलुस ने मुझे बुलाया और मुझसे इस युवक को तेरे पास पहुँचाने को कहा क्योंकि यह तुझसे कुछ कहना चाहता है।"

[19]सेनापति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक ओर ले जाकर पूछा, "बता तू मुझ से क्या कहना चाहता है?"

[20]युवक बोला, "यहूदी इस बात पर एकमत हो गये हैं कि वे पौलुस से और गहराई के साथ पूछताछ करने के बहाने महासभा में उसे लाये जाने की तुझ से प्रार्थना करें। [21]इसलिये उनकी मत सुनना। क्योंकि चालीस से भी अधिक लोग घात लगाये उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने यह कसम उठाई है कि जब तक वे उसे मार न लें, उन्हें न कुछ खाना है, न पीना। बस अब तेरी अनुमति की प्रतीक्षा में वे तैयार बैठे हैं।"

[22]फिर सेनापति ने युवक को यह आदेश देकर भेज दिया, "तू यह किसी को मत बताना कि तूने मुझे इसकी सूचना दे दी है।"

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

[23]फिर सेनापति ने अपने दो सेना-नायकों को बुलाकर कहा, "दो सौ सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों, और सौ भालैतों को कैसरिया जाने के लिये तैयार रखो। रात के तीसरे पहर चल पड़ने के लिये तैयार रहना। [24]पौलुस की सवारी के लिये घोड़ों का भी प्रबन्ध रखना और उसे सुरक्षा पूर्वक राज्यपाल फ़ेलिक्स के पास ले जाना।" [25]उसने एक पत्र लिखा जिसका विषय था :

> [26] महामहिम राज्यपाल फेलिक्स को
> क्लोदियुस लूसियास का नमस्कार पहुँचे।
> [27]इस व्यक्ति को यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसकी हत्या करने ही वाले थे कि मैंने यह जानकर कि यह एक रोमी नागरिक है, अपने सैनिकों के साथ जा कर इसे बचा लिया। [28]मैं क्योंकि उस कारण को जानना चाहता था जिससे वे उस पर दोष लगा रहे थे, उसे उनकी महा-धर्म-सभा में ले गया। [29]मुझे पता चला कि उनकी व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों के कारण उस पर दोष लगाया गया था। किन्तु उस पर कोई ऐसा अभियोग नहीं था जो उसे मृत्यु दण्ड के योग्य या बंदी बनाये जाने योग्य सिद्ध हो। [30]फिर जब मुझे सूचना मिली कि वहाँ इस मनुष्य के विरोध में कोई षड्यन्त्र रचा गया है तो मैंने इसे तुरंत तेरे पास भेज दिया है। और इस पर अभियोग लगाने वालों को यह

आदेश दे दिया है कि वे इसके विरुद्ध लगाये गये
अपने अभियोग को तेरे सामने रखें।
31सो सिपाहियों ने इन आज्ञाओं को पूरा किया और वे
रात में ही पौलुस को अंतिपतरिस के पास ले गये। 32फिर
अगले दिन घुड़-सवारों को उसके साथ आगे जाने के
लिये छोड़ कर वे छावनी को लौट आये। 33जब वे
कैसरिया पहुँचे तो उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र देते हुए
पौलुस को उसे सौंप दिया। 34राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और
पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश का निवासी है। जब
उसे पता चला कि वह किलिकिया का रहने वाला है
35तो उसने उससे कहा, "तुझ पर अभियोग लगाने वाले
जब आ जायेंगे, मैं तभी तेरी सुनवाई करूँगा।" उसने आज्ञा
दी कि पौलुस को पहरे के भीतर हेरोदेस के महल में रखा
जाये।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

24 पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ बुजुर्ग
यहुदी नेताओं और तिरतुल्लुस नाम के एक
वकील को साथ लेकर कैसरिया आया। वे राज्य पाल के
सामने पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आये थे। 2फेलिक्स
के सामने पौलुस की पेशी होने पर मुकदमे की कार्यवाही
आरम्भ करते हुए तिरतुल्लुस बोला, "हे महोदय, तुम्हारे
कारण हम बड़ी शांति के साथ रह रहे हैं और तुम्हारी
दूर-दृष्टि से देश में बहुत से अपेक्षित सुधार आये हैं। 3हे
सर्वश्रेष्ट फेलिक्स, हम बड़ी कृतज्ञता के साथ इसे हर
प्रकार से हर कहीं स्वीकार करते हैं।
4तुम्हारा और अधिक समय न लेते हुए, मेरी प्रार्थना है
कि कृपया आप संक्षेप में हमें सुन लें। 5बात यह है कि इस
व्यक्ति को हमने एक उत्पाती के रूप में पाया है। सारी
दुनिया के यहूदियों में इसने दंगे भड़कवाए हैं। यह नासरियों
के पंथ का नेता है। 6इसने मंदिर को भी अपवित्र करने
का जतन किया है। हमने इसे इसीलिए पकड़ा है। हम इस
पर जो आरोप लगा रहे हैं, ["हम अपनी व्यवस्था के
अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे 7किन्तु सेनानायक
लिसिआस ने बलपूर्वक उसे हमसे छीन लिया 8और अपने
लोगों को आज्ञा दी कि वे इसे अभियोग लगाने के लिए तेरे
सामने ले जाये।"]* उन सब को आप स्वयं इससे पूछ ताछ
करके जान सकते हो।" 9इस अभियोग में यहूदी भी शामिल
हो गये। वे दृढ़ता के साथ कह रहे थे कि ये सब बातें सच
हैं।
10फिर राज्यपाल ने जब पौलुस को बोलने के लिये
इशारा किया तो उसने उत्तर देते हुए कहा, "तू बहुत दिनों
से इस देश का न्यायाधीश है। यह जानते हुए मैं प्रसन्नता
के साथ अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। 11तू स्वयं यह
जान सकता है कि अभी आराधना के लिए मुझे यरुशलेम
गये बस बारह दिन बीते हैं। 12वहाँ मंदिर में मुझे न तो
किसी के साथ बहस करते पाया गया है और न ही
प्रार्थना सभाओं या नगर में कहीं और लोगों को दंगों के
लिए भड़काते हुए 13और अब तेरे सामने जिन अभियोगों
को ये मुझ पर लगा रहे हैं उन्हें प्रमाणित नहीं कर सकते
हैं। 14किन्तु मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं
अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना अपने पंथ के
अनुसार करता हूँ, जिसे ये एक पंथ कहते हैं। मैं हर उस
बात में विश्वास करता हूँ जिसे व्यवस्था बताती है और जो
नबियों के ग्रन्थों में लिखी है। 15और मैं परमेश्वर में
वैसे ही भरोसा रखता हूँ जैसे स्वयं ये लोग रखते हैं कि
धर्मियों और अधर्मियों दोनों का ही पुनरुत्थान होगा।
16इसीलिये मैं भी परमेश्वर और लोगों के समक्ष सदा अपनी
अन्तरात्मा को शुद्ध बनाये रखने के लिए प्रयत्न करता
रहता हूँ।
17"बरसों तक दूर रहने के बाद मैं अपने दीन जनों के
लिये उपहार ले कर भेंट चढ़ाने आया था। और 18जब मैं
यह कर ही रहा था उन्होंने मुझे मंदिर में पाया, तब मैं
विधि-विधान पूर्वक शुद्ध था। न वहाँ कोई भीड़ थी और
न कोई अशांति। 19एशिया से आये कुछ यहूदी वहाँ मौजूद
थे। यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है तो उन्हें तेरे सामने
उपस्थित हो कर मुझ पर आरोप लगाने चाहियें। 20या ये
लोग जो यहाँ हैं वे बतायें कि जब मैं यहूदी महासभा के
सामने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया21सिवाय
इसके कि जब मैं उनके बीच में खड़ा था तब मैंने ऊँचे
स्वर में कहा था, 'मरे हुओं में से जी उठने के विषय में
आज तुम्हारे द्वारा मेरा न्याय किया जा रहा है।'"
22फिर फेलिक्स, जो इस-पंथ की पूरी जानकारी रखता
था, मुकदमे की सुनवाई को स्थगित करते हुए बोला,
"जब सेनानायक लुसिआस आयेगा, मैं तभी तुम्हारे इस
मुकदमे पर अपना निर्णय दूँगा।" 23फिर उसने सूबेदार

हम अपनी ... ले जायें कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

को आज्ञा दी कि थोड़ी छूट देकर पौलुस को पहरे के
भीतर रखा जाये और उसके मित्रों को उसकी
आवश्यकताएँ पूरी करने से न रोका जाये।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

[24]कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के
साथ वहाँ आया। वह एक यहूदी महिला थी। फेलिक्स ने
पौलुस को बुलवा भेजा और यीशु मसीह में विश्वास के
विषय में उससे सुना। [25]किन्तु जब पौलुस नेकी, आत्मसंयम
और आने वाले न्याय के विषय में बोल रहा था तो
फेलिक्स डर गया और बोला, "इस समय तू चला जा, अवसर
मिलने पर मैं तुझे फिर बुलवाऊँगा।" [26]उसी समय उसे
यह आशा भी थी कि पौलुस उसे कुछ धन देगा इसीलिए
फेलिक्स पौलुस को बातचीत के लिए प्राय: बुलवा भेजता
था।

[27]दो साल ऐसे ही बीत जाने के बाद फेलिक्स का स्थान
पुरखियुस फेस्तुस ने ग्रहण कर लिया। और क्योंकि
फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न रखना चाहता था इसीलिये
उसने पौलुस को बंदीगृह में ही रहने दिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

25 फिर फेस्तुस ने उस प्रदेश में प्रवेश किया
और तीन दिन बाद वह कैसरिया से यरुशलेम
को रवाना हो गया। [2]वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदियों के
मुखियाओं ने पौलुस के विरुद्ध लगाये गये अभियोग
उसके सामने रखे और उससे प्रार्थना की[3]कि वह पौलुस
को यरुशलेम भिजवा कर उन का पक्ष ले। (वे रास्ते में ही
उसे मार डालने का षड्यन्त्र बनाये हुए थे।) [4]फेस्तुस ने
उत्तर दिया, "पोलुस कैसरिया में बंदी है और वह जल्दी
ही वहाँ जाने वाला है।" उसने कहा, [5]"तुम अपने कुछ
मुखियाओं को मेरे साथ भेज दो और यदि उस व्यक्ति ने
कोई अपराध किया है तो वे वहाँ उस पर अभियोग
लगायें।"

[6]उनके साथ कोई आठ दस दिन बिता कर फेस्तुस
कैसरिया चला गया। अगले ही दिन अदालत में न्यायासन
पर बैठ कर उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पेश किया
जाये। [7]जब वह पेश हुआ तो यरुशलेम से आये यहूदी उसे
घेर कर खड़े हो गये। उन्होंने उस पर अनेक गम्भीर
आरोप लगाये किन्तु उन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके।
[8]पौलुस ने स्वयं अपना बचाव करते हुए कहा, "मैंने यहूदियों
के विधान के विरोध में कोई काम नहीं किया है, न ही
मंदिर के विरोध में और न ही कैसर के विरोध में।"

[9]किन्तु क्योंकि फेस्तुस यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता
था, उत्तर में उसने पौलुस से कहा, "तो क्या तू यरुशलेम
जाना चाहता है ताकि मैं वहाँ तुझ पर लगाये गये इन
अभियोगों का न्याय करूँ?"

[10]पौलुस ने कहा, "इस समय मैं कैसर की अदालत के
सामने खड़ा हूँ। मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिये। मैंने
यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया है, इसे तू भी बहुत
अच्छी तरह जानता है। [11]यदि मैं किसी अपराध का दोषी
हूँ और मैंने कुछ ऐसा किया है, जिसका दण्ड मृत्यु है तो मैं
मरने से बचना नहीं चाहूँगा, किन्तु यदि ये लोग मुझ पर जो
अभियोग लगा रहे हैं, उनमें कोई सत्य नहीं है तो मुझे
कोई भी इन्हें नहीं सौंप सकता। यही कैसर से मेरी प्रार्थना
है।"

[12]अपनी परिषद् से सलाह करने के बाद फेस्तुस ने
उसे उत्तर दिया, "तूने कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना की
है, इसलिये तुझे कैसर के सामने ही ले जाया जायेगा।"

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

[13]कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके फेस्तुस
से मिलते कैसरिया आये। [14]जब वे वहाँ कई दिन बिता
चुके तो फेस्तुस ने राजा के सामने पौलुस के मुकदमे को
इस प्रकार समझाया, "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे
फेलिक्स बंदी के रूप में छोड़ गया था। [15]जब मैं यरुशलेम
में था, प्रमुख याजकों और बुजुर्गों ने उसके विरुद्ध मुकदमा
प्रस्तुत किया था और माँग की थी कि उसे दंडित किया
जाये। [16]मैंने उनसे कहा, 'रोमियों में ऐसा चलन नहीं है
कि किसी व्यक्ति को, जब तक वादी–प्रतिवादी को
आमने–सामने न करा दिया जाये और उस पर लगाये
गये अभियोगों से उसे बचाव का अवसर न दे दिया जाये,
उसे दण्ड के लिये, सौंपा जाये।' [17]सो वे लोग जब मेरे
साथ यहाँ आये तो मैंने बिना देर लगाये अगले ही दिन
न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति को पेश किये जाने की
आज्ञा दी। [18]जब उस पर दोष लगाने वाले बोलने खड़े
हुए तो उन्होंने उस पर ऐसा कोई दोष नहीं लगाया जैसा कि
मैं सोच रहा था। [19]बल्कि उनके अपने धर्म की कुछ
बातों पर ही और यीशु नाम के एक व्यक्ति पर जो मर

चुका है, उनमें कुछ मतभेद था। यद्यपि पौलुस का दावा है
कि वह जीवित है। [20]मैं समझ नहीं पा रहा था कि इन
विषयों की छानबीन कैसे की जाये, इसलिये मैंने उससे
पूछा कि क्या वह अपने इन अभियोगों का न्याय कराने
के लिये यरुशलेम जाने को तैयार है? [21]किन्तु पौलुस ने
जब प्रार्थना की कि उसे सम्राट के न्याय के लिये ही वहाँ
रखा जाये, तो मैंने आदेश दिया, कि मैं जब तक उसे
कैसर के पास न भिजवा दूँ, उसे यहीं रखा जाये।"

[22]इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "इस व्यक्ति की
सुनवाई मैं स्वयं करना चाहता हूँ।"

फेस्तुस ने कहा, "तुम उसे कल सुन लेना।"

[23]सो अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनिके बड़ी सजधज
के साथ आये और उन्होंने सेना-नायकों तथा नगर के
प्रमुख व्यक्तियों के साथ सभाभवन में प्रवेश किया। फेस्तुस
ने आज्ञा दी और पौलुस को वहाँ ले आया गया। [24]फिर
फेस्तुस बोला, "महाराजा अग्रिप्पा तथा उपस्थित सज्जनो!
तुम इस व्यक्ति को देख रहे हो जिसके विषय में समूचा
यहूदी-समाज, यरुशलेम में और यहाँ, मुझसे चिल्ला-
चिल्ला कर माँग करता रहा है कि इसे अब और जीवित
नहीं रहने देना चाहिये। [25]किन्तु मैंने जाँच लिया है कि
इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे मृत्यु-दण्ड दिया
जाये। और क्योंकि इसने स्वयं सम्राट से पुनर्विचार की
प्रार्थना की है इसलिये मैंने इसे वहाँ भेजने का निर्णय लिया
है। [26]किन्तु इसके विषय में सम्राट के पास लिख भेजने
को मेरे पास कोई निश्चित बात नहीं है। मैं इसे इसीलिये
आप लोगों के सामने, और विशेष रूप से हे महाराजा
अग्रिप्पा! तुम्हारे सामने लाया हूँ ताकि इस जाँच पड़ताल
के बाद लिखने को मेरे पास कुछ हो। [27]कुछ भी हो मुझे
किसी बंदी को उसका अभियोग-पत्र तैयार किये बिना
वहाँ भेज देना असंगत जान पड़ता है।"

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे स्वयं अपनी
ओर से बोलने की अनुमति है।" इस पर पौलुस
ने अपना हाथ उठाया और अपने बचाव में बोलना आरम्भ
किया, [2]"हे राजा अग्रिप्पा! मैं अपने आप को भाग्यवान
समझता हूँ कि यहूदियों ने मुझ पर जो आरोप लगाये हैं,
उन सब बातों के बचाव में, मैं तेरे सामने बोलने जा रहा
हूँ। [3]विशेष रूप से यह इसलिये सत्य है कि तुझे सभी
यहूदी प्रथाओं और उनके विवादों का ज्ञान है। इसलिये मैं
तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि धैर्य के साथ मेरी बात सुनी
जाये।

[4]"सभी यहूदी जानते हैं कि प्रारम्भ से ही स्वयं अपने
देश में और यरुशलेम में भी बचपन से ही मैंने कैसा जीवन
जिया है। [5]वे मुझे बहुत समय से जानते हैं और यदि वे चाहें
तो इस बात की गवाही दे सकते हैं कि मैंने हमारे धर्म के
एक सबसे अधिक कट्टर पंथ के अनुसार एक फ़रीसी के
रूप में जीवन जिया है। [6]और अब इस विचाराधीन स्थिति
में खड़े हुए मुझे उस वचन का ही भरोसा है जो परमेश्वर
ने हमारे पूर्वजों को दिया था। [7]यह वही वचन है जिसे
हमारी बारहों जातियाँ दिन रात तल्लीनता से परमेश्वर
की सेवा करते हुए, प्राप्त करने का भरोसा रखती हैं। हे
राजन्, इसी भरोसे के कारण मुझ पर यहूदियों द्वारा आरोप
लगाया जा रहा है। [8]तुम में से किसी को भी यह बात
विश्वास के योग्य क्यों नहीं लगती है कि परमेश्वर मरे
हुए को जिला देता है।

[9]"मैं भी सोचा करता था नासरी यीशु के नाम का
विरोध करने के लिए जो भी बन पड़े, वह बहुत कुछ
करूँ। [10]और ऐसा ही मैंने यरुशलेम में किया भी। मैंने
परमेश्वर के बहुत से भक्तों को जेल में ठूँस दिया क्योंकि
प्रमुख याजकों से इसके लिये मुझे अधिकार प्राप्त था।
और जब उन्हें मारा गया तो मैंने अपना मत उन के विरोध
में दिया। [11]यहूदी धर्म सभागारों में मैं उन्हें प्राय: दण्ड दिया
करता और परमेश्वर के विरोध में बोलने के लिए उन
पर दबाव डालने का यत्न करता रहता। उनके प्रति मेरा
क्रोध इतना अधिक था कि उन्हें सताने के लिए मैं बाहर
के नगरों तक गया।

पौलुस द्वारा यीशु के दर्शन के विषय में बताना

[12]"ऐसी ही एक यात्रा के अवसर पर जब मैं प्रमुख
याजकों से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क जा रहा
था, [13]तभी दोपहर को जब मैं अभी मार्ग में ही था कि
मैंने हे राजन, स्वर्ग से एक प्रकाश उतरते देखा। उसका
तेज सूर्य से भी अधिक था। वह मेरे और मेरे साथ के
लोगों के चारों ओर कौंध गया। [14]हम सब धरती पर
लुढ़क गये। फिर मुझे एक वाणी सुनाई दी। वह इब्रानी
भाषा में मुझसे कह रही थी, 'हे शाऊल, हे शाऊल, तू
मुझे क्यों सता रहा है? पैंने की नोक पर लात मारना तेरे

बस की बात नहीं है।' 15फिर मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तू कौन है?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू यातनाएँ दे रहा है। 16किन्तु अब तू उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो जा। मैं तेरे सामने इसीलिए प्रकट हुआ हूँ कि तुझे एक सेवक के रूप में नियुक्त करूँ और जो कुछ तूने मेरे विषय में देखा है और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा, उसका तू साक्षी रहे। 17मैं जिन यहूदियों और विधर्मियों के पास 18उनकी आँखें खोलने, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर लाने और शैतान की ताकत से परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये, तुझे भेज रहा हूँ, उनसे तेरी रक्षा करता रहूँगा। इससे वे पापों की क्षमा प्राप्त करेंगे और उन लोगों के बीच स्थान पायेंगे जो मुझ में विश्वास रखने के कारण पवित्र हुए हैं।'

पौलुस के कार्य

19"हे राजन अग्रिप्पा, इसीलिये तभी से उस दर्शन की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करते हुए 20बल्कि उसके विपरीत मैं पहले उन्हें दमिश्क में, फिर यरुशलेम में और यहूदिया के समूचे क्षेत्र में और ग़ैर यहूदियों को भी उपदेश देता रहा कि मन फिराव के, परमेश्वर की ओर मुड़ने और मनफिराव के योग्य का करें। 21इसी कारण जब मैं यहाँ मंदिर में था, यहूदियों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी हत्या का यत्न किया। 22किन्तु आज तक मुझे परमेश्वर की सहायता मिलती रही है और इसीलिए मैं यहाँ छोटे और बड़े सभी लोगों के सामने साक्षी देता खड़ा हूँ। मैं बस उन बातों को छोड़ कर और कुछ नहीं कहता जो नबियों और मूसा के अनुसार घटनी ही थी 23कि मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी और वही मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला होगा और वह यहूदियों और ग़ैर यहूदियों को ज्योति का सन्देश देगा।"

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

24वह अपने बचाव में जब इन बातों को कह ही रहा था कि फेस्तुस ने चिल्ला कर कहा, "पौलुस, तेरा दिमाग ख़राब हो गया है! तेरी अधिक पढ़ाई तुझे पागल बनाये डाल रही है!"

25पौलुस ने कहा, "हे परमगुणी फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूँ बल्कि जो बातें मैं कह रहा हूँ, वे सत्य हैं और संगत भी। 26स्वयं राजा इन बातों को जानता है और मैं मुक्त भाव से उससे कह सकता हूँ। मेरा निश्चय है कि इनमें से कोई भी बात उसकी आँखों से ओझल नहीं है। मैं ऐसा इसलिये कह रहा हूँ कि यह बात किसी कोने में नहीं की गयी। 27हे राजन अग्रिप्पा! नबियों ने जो लिखा है, क्या तू उसमें विश्वास रखता है? मैं जानता हूँ कि तेरा विश्वास है।"

28इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "क्या तू यह सोचता है कि इतनी सरलता से तू मुझे मसीही बनने को मना लेगा?"

29पौलुस ने उत्तर दिया, "थोड़े समय में, चाहे अधिक समय में, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि न केवल तू बल्कि वे सब भी, जो आज मुझे सुन रहे हैं, वैसे ही हो जायें, जैसा मैं हूँ, सिवाय इन ज़ंजीरों के।"

30फिर राजा खड़ा हो गया और उसके साथ ही राज्यपाल, बिरनिके और साथ में बैठे हुए लोग भी उठ खड़े हुए। 31वहाँ से बाहर निकल कर वे आपस में बात करते हुए कहने लगे, इस व्यक्ति ने तो ऐसा कुछ नहीं किया है, जिससे इसे मृत्यु-दण्ड या कारावास मिल सके। 32अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "यदि इसने कैसर के सामने पुनर्विचार की प्रार्थना न की होती, तो इस व्यक्ति को छोड़ा जा सकता था।"

पौलुस को रोम भेजा जाना

27 जब यह निश्चय हो गया कि हमें जहाज़ से इटली जाना है तो पौलुस तथा कुछ दूसरे बंदियों को सम्राट की सेना के यूलियस नाम के एक सेना-नायक को सौंप दिया गया। 2अद्रमुत्तियुम से हम एक जहाज. पर चढ़े जो एशिया के तटीय क्षेत्रों से हो कर जाने वाला था और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े। थिस्सलुनीके निवासी एक मकदूनी, जिसका नाम अरिस्तर्खुस था, भी हमारे साथ था। 3अगले दिन हम सैदा में उतरे। वहाँ यूलियस ने पौलुस के साथ अच्छा व्यवहार किया और उसे उसके मित्रों का स्वागत सत्कार ग्रहण करने के लिए उनके यहाँ जाने की अनुमति दे दी। 4वहाँ से हम समुद्र-मार्ग से फिर चल पड़े। हम साइप्रस की आड़ लेकर चल रहे थे क्योंकि हवाएँ हमारे प्रतिकूल थीं। 5फिर हम किलिकिया और पंफूलिया के सागर को पार करते हुए लुकिया और मीरा पहुँचे। 6वहाँ सेनानायक को

सिकन्दरिया का इटली जाने वाला एक जहाज़ मिला। उसने
हमें उस पर चढ़ा दिया।

7कई दिन तक हम धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए बड़ी
कठिनाई के साथ कनिदुस के सामने पहुँचे किन्तु क्योंकि
हवा हमें अपने मार्ग पर नहीं बने रहने दे रही थी, सो हम
सलभौने के सामने से क्रीत की ओट में अपनी नाव बढ़ाने
लगे। 8क्रीत के किनारे-किनारे बड़ी कठिनाई से नाव
को आगे बढ़ाते हुए हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसका
नाम था सुरक्षित बंदरगाह। यहाँ से लसेआ नगर पास ही
था।

9समय बहुत बीत चुका था और नाव को आगे बढ़ाना
भी संकटपूर्ण था क्योंकि तब तक उपवास का दिन समाप्त
हो चुका था इसलिए पौलुस ने चेतावनी देते हुए उनसे
कहा, 10"हे पुरुषो, मुझे लगता है कि हमारी यह सागर-
यात्रा विनाशकारी होगी, न केवल माल असबाब और जहाज़
के लिए बल्कि हमारे प्राणों के लिये भी।" 11किन्तु पौलुस
ने जो कहा था, उस पर कान देने के बजाय उस सेना
नायक ने जहाज़ के मालिक और कप्तान की बातों का
अधिक विश्वास किया। 12और क्योंकि वह बन्दरगाह
शीत ऋतु के अनुकूल नहीं था, इसलिए अधिकतर लोगों
ने, यदि हो सके तो फिनिक्स पहुँचने का प्रयत्न करने की
ही ठानी। और सर्दी वहीं बिताने का निश्चय किया।
फिनिक्स क्रीत का एक ऐसा बन्दरगाह है जिसका मुख
दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दोनों के ही सामने
पड़ता है।

तूफ़ान

13जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा तो उन्होंने
सोचा कि जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा उन्हें मिल गया है।
सो उन्होंने लंगर उठा लिया और क्रीत के किनारे-किनारे
जहाज़ बढ़ाने लगे। 14किन्तु अभी कोई अधिक समय नहीं
बीता था कि द्वीप की ओर से एक भीषण आँधी उठी और
आरपार लपेटती चली गयी। यह 'उत्तर-पूर्वी' आंधी
कहलाती थी। 15जहाज़ तूफ़ान में घिर गया। वह आँधी को
चीर कर आगे नहीं बढ़ पा रहा था सो हमने उसे यों ही
छोड़ कर हवा के रूख बहने दिया। 16हम क्लोदा नाम के
एक छोटे से द्वीप की ओट में बहते हुए बड़ी कठिनाई से
रक्षा नौकाओं को पा सके। 17फिर रक्षा-नौकाओं को
उठाने के बाद जहाज़ को रस्सों से लपेट कर बाँध दिया
गया और कहीं सुरतिस के उथले पानी में फँस न जायें,
इस डर से उन्होंने पालें उतार दीं और जहाज़ को बहने
दिया। 18दूसरे दिन तूफ़ान के घातक थपेड़े खाते हुए वे
जहाज़ से माल-असबाब बाहर फेंकने लगे। 19और तीसरे
दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ पर रखे उपकरण
फेंक दिये। 20फिर बहुत दिनों तक जब न सूरज दिखाई
दिया, न तारे और तूफ़ान अपने घातक थपेड़े मारता ही
रहा तो हमारे बच पाने की आशा पूरी तरह जाती रही।

21बहुत दिनों से किसी ने भी कुछ खाया नहीं था। तब
पौलुस ने उनके बीच खड़े हो कर कहा, "हे पुरुषो, यदि
क्रीत से रवाना न होने की मेरी सलाह तुमने मानी होती तो
तुम इस विनाश और हानि से बच जाते। 22किन्तु मैं तुमसे
अब भी आग्रह करता हूँ कि अपनी हिम्मत बाँधे रखो।
क्योंकि तुममें से किसी को भी अपने प्राण नहीं खोने हैं।
हाँ! बस यह जहाज़ नष्ट हो जायेगा 23क्योंकि पिछली
रात उस परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, जिसका मैं हूँ और
जिसकी सेवा करता हूँ, मेरे पास आकर खड़ा हुआ।
24और बोला, 'पौलुस डर मत। तुझे निश्चय ही कैसर के
सामने खड़ा होना है और उन सब को जो तेरे साथ यात्रा
कर रहे हैं, परमेश्वर ने तुझे दे दिया है।' 25सो लोगो!
अपना साहस बनाये रखो क्योंकि परमेश्वर में मेरा विश्वास
है, इसलिये जैसा मुझे बताया गया है, ठीक वैसा ही होगा।
26किन्तु हम किसी टापू के उथले पानी में अवश्य जा
फँसेंगे।"

27फिर जब चौदहवीं रात आयी हम अद्रिया के सागर
में थपेड़े खा रहे थे तभी आधी रात के आसपास जहाज़
के चालकों को लगा जैसे कोई तट पास में ही हो।
28उन्होंने सागर की गहराई नापी तो पाया कि वहाँ कोई
अस्सी हाथ गहराई थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने पानी की
गहराई फिर नापी और पाया कि अब गहराई साठ हाथ
रह गयी थी। 29इस डर से कि वे कहीं किसी चट्टानी
उथले किनारे में न फँस जायें, उन्होंने जहाज के पिछले
हिस्से से चार लंगर फेंके और प्रार्थना करने लगे कि
किसी तरह दिन निकल आये। 30उधर जहाज़ के चलाने
वाले जहाज़ से भाग निकलने का प्रयत्न कर रहे थे।
उन्होंने यह बहाना बनाते हुए कि वे जहाज़ के अगले भाग
से कुछ लंगर डालने के लिये जा रहे हैं, रक्षा-नौकाएँ
समुद्र में उतार दीं। 31तभी सेना-नायक से पौलुस ने
कहा, "यदि ये लोग जहाज़ पर नहीं रुके तो तुम भी नहीं

बच पाओगे।" 32सो सैनिकों ने रस्सियों को काट कर
रक्षा नौकाओं को नीचे गिरा दिया।

33भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने यह कहते हुए सब
लोगों से थोड़ा भोजन कर लेने का आग्रह किया कि चौदह
दिन हो चुके हैं और तुम निरन्तर चिंता के कारण भूखे
रहे हो। तुमने कुछ भी तो नहीं खाया है। 34मैं तुमसे अब
कुछ खाने के लिए इसलिए आग्रह कर रहा हूँ कि तुम्हारे
जीवित रहने के लिये यह आवश्यक है। क्योंकि तुममें से
किसी के सिर का एक बाल तक बाँका नहीं होना है।
35इतना कह चुकने के बाद उसने थोड़ी रोटी ली और
सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर रोटी
को विभाजित किया और खाने लगा। 36इससे उन सब की
हिम्मत बढ़ी और उन्होंने भी थोड़ा भोजन लिया। 37जहाज़
पर कुल मिलाकर हम दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे। 38पूरा
खाना खा चुकने के बाद उन्होंने समुद्र में अनाज फेंक
कर जहाज़ को हल्का किया।

जहाज़ का टूटना

39जब भोर हुई तो वे उस धरती को पहचान नहीं पाये
किन्तु उन्हें लगा जैसे वहाँ कोई किनारेदार खाडी है।
उन्होंने निश्चय किया कि यदि हो सके तो जहाज़ को
वहाँ टिका दें। 40सो उन्होंने लंगर काट कर ढीले कर
दिये और उन्हें समुद्र मे नीचे गिर जाने दिया। उसी समय
उन्होंने पतवारों से बँधे रस्से ढीले कर दिये; फिर जहाज़
के अगले पतवार चढ़ा कर तट की ओर बढ़ने लगे।
41और उनका जहाज़ रेते में जा टकराया। जहाज़ का
अगला भाग उसमें फँस कर अचल हो गया। और
शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से जहाज़ का पिछला भाग
टूटने लगा।

42तभी सैनिकों ने कैदियों को मार डालने की एक
योजना बनायी ताकि उनमें से कोई भी तैर कर बच न
निकले। 43किन्तु सेना-नायक पौलुस को बचाना चाहता
था, इसलिये उसने उन्हें उनकी योजना को अमल में लाने
से रोक दिया। उसने आज्ञा दी कि जो भी तैर सकते हैं, वे
पहले ही कूद कर किनारे जा लगें 44और बाकी के
लोग तख्तों या जहाज़ के दूसरे टुकड़ों के सहारे चले
जायें। इस प्रकार हर कोई सुरक्षा के साथ किनारे आ
लगा।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

28 इस सब कुछ से सुरक्षापुर्वक बच निकलने के
बाद हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा
था। 2वहाँ के मूल निवासियों ने हमारे साथ असाधारण
रूप से अच्छा व्यवहार किया। क्योंकि सर्दी थी और वर्षा
होने लगी थी, इसलिए उन्होंने आग जलाई और हम सब
का स्वागत किया। 3पौलुस ने लकड़ियों का एक गट्ठर
बनाया और वह जब लकड़ियों को आग पर रख रहा था
तभी गर्मी खा कर एक विषैला नाग बाहर निकला और
उसने उसके हाथ को डस लिया। 4वहाँ के निवासियों ने
जब उस जंतु को उसके हाथ से लटकते देखा तो वे आपस
में कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति एक हत्यारा है।
यद्यपि यह सागर से बच निकला है किन्तु न्याय इसे जीने
नहीं दे रहा है।" 5किन्तु पौलुस ने उस नाग को आग में ही
झटक दिया। पौलुस को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।
6लोग सोच रहे थे कि वह या तो सूज जायेगा या फिर
बरबस धरती पर गिर कर मर जायेगा। किन्तु बहुत देर
तक प्रतीक्षा करने के बाद और यह देख कर कि उसे
असाधारण रूप से कुछ भी नहीं हुआ है, उन्होंने अपनी
धारणा बदल दी और बोले, "यह तो कोई देवता है।"

7उस स्थान के पास ही उस द्वीप के प्रधान अधिकारी
पबलियुस के खेत थे। उसने अपने घर ले जा कर हमारा
स्वागत-सत्कार किया। बड़े मुक्त भाव से तीन दिन तक
वह हमारी आवभगत करता रहा। 8पबलियुस का पिता
बिस्तर में था। उसे बुखार और पेचीश हो रही थी। पौलुस
उससे मिलने भीतर गया। फिर प्रार्थना करने के बाद उसने
उस पर अपने हाथ रखे और वह अच्छा हो गया। 9इस
घटना के बाद तो उस द्वीप के शेष सभी रोगी भी वहाँ
आये और वे ठीक हो गये। 10अनेक उपहारों द्वारा उन्होंने
हमारा मान बढ़ाया और जब हम वहाँ से नाव पर आगे
को चले तो उन्होंने सभी आवश्यक वस्तुएँ ला कर हमें
दीं।

पौलुस का रोम जाना

11फिर सिकंदरिया के एक जहाज़ पर हम वही चल
पड़े। इस द्वीप पर ही जहाज़ जाड़े में रुका हुआ था। जहाज़
के अगले भाग पर जुड़वाँ भाइयों का चिन्ह अंकित था।
12फिर हम सरकुस जा पहुँचे जहाँ हम तीन दिन ठहरे।

13वहाँ से जहाज़ द्वारा हम रेगियुम पहुँचे और फिर अगले
ही दिन दक्षिणी हवा चल पड़ी। सो अगले दिन हम पुतियुली
आ गये। **14**वहाँ हमें कुछ बंधु मिले और उन्होंने हमें वहाँ
सात दिन ठहरने को कहा और इस तरह हम रोम आ
पहुँचे। **15**जब वहाँ के बंधुओं को हमारी सूचना मिली तो वे
अप्पियुस का बाज़ार और तीन सराय' तक हमसे मिलने
आये। पौलुस ने जब उन्हें देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद
देकर वह बहुत उत्साहित हुआ।

पौलुस का रोम आना

16जब हम रोम पहुँचे तो एक सिपाही की देखरेख में
पौलुस को अपने आप अलग से रहने की अनुमति दे दी
गयी।

17तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदी नेताओं को बुलाया
और उनके एकत्र हो जाने पर वह उनसे बोला, "हे
भाइयो, चाहे मैंने अपनी जाति या अपने पूर्वजों के विधि–
विधान के प्रतिकूल कुछ भी नहीं किया है, तो भी यरुशलेम
में मुझे बंदी के रूप में रोमियों को सौंप दिया गया था।
18उन्होंने मेरी जाँच पड़ताल की और मुझे छोड़ना चाहा
क्योंकि ऐसा कुछ मैंने किया ही नहीं था जो मृत्युदण्ड के
लायक होता**19**किन्तु जब यहूदियों ने आपत्ति की तो मैं
कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना करने को विवश हो गया।
इसलिये नहीं कि मैं अपने ही लोगों पर कोई आरोप
लगाना चाहता था। **20**यही कारण है जिससे मैं तुमसे
मिलना और बातचीत करना चाहता था क्योंकि यह इस्राएल
का वह भरोसा ही है जिसके कारण मैं ज़ंजीर में बँधा
हूँ।"

21यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा, "तुम्हारे बारे में
यहूदिया से न तो कोई पत्र ही मिला है, और न ही वहाँ से
आने वाले किसी भी भाई ने तेरा कोई समाचार दिया और
न तेरे बारे में कोई बुरी बात कही। **22**किन्तु तेरे विचार
क्या हैं, यह हम तुझसे सुनना चाहते हैं क्योंकि हम जानते
हैं कि लोग सब कहीं इस पंथ के विरोध में बोलते
हैं।"

23सो उन्होंने उसके साथ एक दिन निश्चित किया।
और फिर जहाँ वह ठहरा था, बड़ी संख्या में आकर वे
लोग एकत्र हो गये। मूसा की व्यवस्था और नबियों के
ग्रंथों से यीशु के विषय में उन्हें समझाने का जतन करते
हुए उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में अपनी साक्षी दी
और समझाया। वह सुबह से शाम तक इसी में लगा रहा।

24उसने जो कुछ कहा था, उससे कुछ तो सहमत हो
गये किन्तु कुछ ने विश्वास नहीं किया। **25**फिर आपस में
एक दूसरे से असहमत होते हुए वे वहाँ से जाने लगे। तब
पौलुस ने एक यह बात और कही, "यशायाह भविष्यवक्ता
के द्वारा पवित्र आत्मा ने तुम्हारे पूर्वजों से कितना ठीक
कहा था,

26 'जाकर इन लोगों से कह दे:
तुम सुनोगे, पर न समझोगे कदाचित्!
तुम बस देखते ही देखते रहोगे
पर न बूझोगे कभी भी!
27 क्योंकि इनका हृदय जड़ता से भर गया
कान इनके कठिनता से श्रवण करते
और इन्होंने अपनी आँखे बंद कर ली
क्योंकि कभी ऐसा न हो जाये कि ये
अपनी आँख से देखें, और कान से सुनें
और हृदय से समझे, और कदाचित् लौटें
मुझको स्वस्थ करना पड़े उनको।'

यशायाह 6:9–10

28"इसलिये तुम्हें जान लेना चाहिये कि परमेश्वर का
यह उद्धार विधर्मियों के पास भेज दिया गया है। वे इसे
सुनेंगे।" **29**["जब पौलुस ये बातें कह चुका तो आपस में
विवाद करते हुए यहूदी बहाँ से चले गये।"]*

30वहाँ किराये के अपने मकान में पौलुस पूरे दो साल
तक ठहरा। जो कोई भी उससे मिलने आता, वह उसका
स्वागत करता। **31**वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता
और प्रभु यीशु मसीह के विषय में उपदेश देता। वह इस
कार्य को पूरी निर्भयता और बिना कोई बाधा माने किया
करता था।

पद 29 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 29
जोड़ा गया है।

रोमियों

1 पौलुस जो यीशु मसीह का दास है, जिसे परमेश्वर
ने प्रेरित होने के लिए बुलाया, जिसे परमेश्वर के
उस सुसमाचार के प्रचार के लिए चुना गया
2जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा
कर दी गयी 3जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से
दाऊद का वंशज है 4किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे
हुओं में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य के साथ
परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह हमारा
प्रभु है। 5इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई मिली,
ताकि सभी ग़ैर यहूदियों में, उसके नाम में, वह आस्था जो
विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके। 6उनमें परमेश्वर
के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये तुम लोग भी बुलाये
गये हो।
7वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और परमेश्वर
के प्यारे हो, जो परमेश्वर के पवित्र जन होने के लिए
बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ।
हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें उसका अनुग्रह और शांति मिले।

धन्यवाद की प्रार्थना

8सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि
तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं हो रही है।
9प्रभु, जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश
देते हुए मैं अपने हृदय से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है, कि
मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ। 10अपनी प्रार्थनाओं
में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि परमेश्वर की
इच्छा से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा किसी तरह पूरी
हो। 11मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैं तुमसे मिल
कर कुछ आत्मिक उपहार देना चाहता हूँ, जिससे तुम
शक्तिशाली बन सको। 12या मुझे कहना चाहिये कि मैं
जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के विश्वास से हम
परस्पर प्रोत्साहित हों। 13भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें
पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना बार-बार चाहा है
ताकि जैसा फल मैंने ग़ैर यहूदियों में पाया है, वैसा ही तुमसे
भी पा सकूँ, किन्तु अब तक बाधा आती ही रही।
14मुझ पर यूनानियों और ग़ैर यूनानियों, बुद्धिमानों और
मूर्खों सभी का क़र्ज़ है। 15इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को
भी सुसमाचार का उपदेश देने को तैयार हूँ।
16मैं सुसमाचार के लिए शर्मिंदा नहीं हूँ क्योंकि उसमें
पहले यहूदी और फिर ग़ैर यहूदी-जो भी उसमें विश्वास
रखता है-उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य
है। 17क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर
मनुष्य को अपने प्रति सही कैसे बनाता है। यह आदि से
अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में लिखा
है, "धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"

सबने पाप किया है

18उन लोगों के-जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं, बुरे
कर्मों और हर बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप
प्रकट होगा। 19और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर के
बारे में वे पूरी तरह जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसे
उन्हें जनाया है। 20जब से संसार की रचना हुई उसकी
अदृश्य-विशेषताएँ अनन्त शक्ति और परमेश्वरत्व-साफ
साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह
जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं। इसलिए लोगों
के पास कोई बहाना नहीं। 21यद्यपि वे परमेश्वर को जानते
हैं किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान या धन्यवाद
नहीं देते। बल्कि वे अपने विचारों में निरर्थक हो गये।
और उनके जड़ मन अन्धेरे से भर गये। 22वे बुद्धिमान
होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये। 23और अविनाशी
परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, चिड़ियाओं,

पशुओं और साँपो से मिलती जुलती मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।

24इसीलिये परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे दुराचार में पड़ कर एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे। 25उन्होंने झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और वे सृष्टि के बनाने वाले को छोड़ कर उसकी बनायी सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य है। आमीन।

26इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगीं। 27इसी तरह पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़ दिया और वे आपस में ही वासना में जलने लगे। और पुरुष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म करने लगे। उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने लगा।

28और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से मना कर दिया सो परमेश्वर ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो नहीं करने चाहिये थे। 29वे हर तरह के अधर्म, पाप, लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या, लड़ाई–झगड़े, छल–छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा अहित सोचते हैं। वे कहानियाँ घड़ते रहते हैं। 30वे पर निन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्दण्ड हैं, अहंकारी हैं, बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं और माता–पिता की आज्ञा नहीं मानते। 31वे मूढ़, वचन–भंग करने वाले, प्रेम–रहित और निर्दय हैं। 32चाहे वे परमेश्वर की धर्म–पूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो ऐसी बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन कामों को करते हैं, बल्कि वैसा करने वालों का समर्थन भी करते हैं।

तुम लोग भी पापी हो

2 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। 2अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। 3किन्तु अरे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा। 4या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति और धैर्य को हीन समझता है? और इस बात की उपेक्षा करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ़ ले जाती है। 5किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा नहीं करने वाले मन के कारण उसके क्रोध को अपने लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा। 6परमेश्वर हर किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। 7जो लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त जीवन देगा। 8किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा। 9हर उस मनुष्य पर दुःख और संकट आएँगे जो बुराई पर चलता है। पहले यहूदी पर और फिर ग़ैर यहूदी पर। 10और जो कोई अच्छाई पर चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी। पहले यहूदी को और फिर ग़ैर यहूदी को 11क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

12जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में रहते हुए पाप किया उन्हें व्यवस्था के अनुसार ही दण्ड मिलेगा। 13क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं हैं। बल्कि जो व्यवस्था पर चलते हैं वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे। 14सो जब ग़ैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से ही व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था आप हैं। 15वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही साक्षी देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है। 16ये बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर मनुष्य की छुपी बातों का, जिसका मैं उपदेश देता हूँ उस सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

यहूदी और व्यवस्था

17किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था में तेरा विश्वास है और अपने परमेश्वर का

तुझे अभिमान है **18**और तू उसकी इच्छा को जानता है
और उत्तम बातों को ग्रहण करता है, क्योंकि व्यवस्था से
तुझे सिखाया गया है, **19**तू यह मानता है कि तू अंधों का
अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके लिए तू प्रकाश
है, **20**अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों का उपदेशक
है क्योंकि व्यवस्था में तुझे साक्षात् ज्ञान और सत्य ठोस
रूप में प्राप्त हैं **21**तो तू जो औरों को सिखाता है, अपने को
क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी नहीं करने का उपदेश देता
है, स्वयं चोरी क्यों करता है? **22**तू जो कहता है व्यभिचार
नहीं करना चाहिये, स्वयं व्यभिचार क्यों करता है? तू जो
मूर्तियों से घृणा करता है मंदिरों का धन क्यों छीनता है?
23तू जो व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर
परमेश्वर का निरादर क्यों करता है? **24**"तुम्हारे कारण
ही ग़ैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता
है।" जैसा कि शास्त्र में लिखा है।

25यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने
का महत्त्व है पर यदि तुम व्यवस्था को तोड़ते हो तो तुम्हारा
ख़तना रहित होने के समान ठहरा। **26**यदि किसी का
ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के पवित्र नियमों
पर चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित होने को भी
ख़तना न गिना जाये? **27**वह मनुष्य जिसका शरीर से ख़तना
नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का पालन करता है, तुझे
अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास लिखित व्यवस्था का
विधान है, और जिसका ख़तना भी हुआ है, और जो
व्यवस्था को तोड़ता है,

28जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं
है। शरीर का ख़तना वास्तव में ख़तना नहीं है। **29**सच्चा
यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना आत्मा
द्वारा मन का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था का। ऐसे
व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर
से की जाती है।

3 सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या
मूल्य? **2**हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे
पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें ही सौंपा गया। **3**यदि
उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या
उनका विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता को
बेकार कर देगा? **4**निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई झूठा
भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा। जैसा कि शास्त्र में
लिखा है:

"ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो
और जब तेरा न्याय हो, तू विजय पाये।"

भजन संहिता 51:4

5सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता
सिद्ध करे तो हम क्या कहें? क्या यह कि वह अपना कोप
हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं एक मनुष्य
के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।) **6**निश्चय ही नहीं,
नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।

7किन्तु तुम कह सकते हो: "जब मेरी मिथ्यापूर्णता से
परमेश्वर की सत्यपूर्णता और अधिक उजागर होती है तो
इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी करार
क्यों दिया जाता हूँ?" **8**और फिर क्यों न कहें: "आओ!
बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।" जैसा कि हमारे
बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर आरोप लगाते
हैं कि हम ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी करार दिये जाने
योग्य हैं। वे सभी दोषी हैं

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से
किसी भी तरह अच्छे हैं, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि हम
यह दर्शा चुके हैं कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सभी
पाप के वश में हैं। **10**शास्त्र कहता है:

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी!
11 कोई समझदार नहीं, एक भी!
कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता!
12 सब के सब भटके हैं एक से खोटे हुए,
साथ–साथ सब के सब, कोई भी यहाँ पर
दया तो दिखाता नहीं, एक भी नहीं!"

भजन संहिता 14:1−3

13 "उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं
वे अपनी जबान से छल करते हैं।"

भजन संहिता 5:9

"उनके होंठों पर नाग विष रहता है"

भजन संहिता 140:3

14 "शाप से–कटुता से मुँह भरे रहते हैं।"

भजन संहिता 10:7

15 "हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते है।
16 वे जहाँ कहीं जाते नाश ही
करते हैं, संताप देते हैं।
17 उनको शांति के मार्ग का पता नहीं।"

यशायाह 59:7−8

18 “उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।”

भजन संहिता 36:1

19अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। 20व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

21किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिए यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने इसकी साक्षी दी है। 22सभी विश्वासियों के लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के। 23क्योंकि सभी ने पाप किये हैं और सभी परमेश्वर की महिमा से विहीन हैं। 24किन्तु यीशु मसीह में संपन्न किए गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से वे एक सेंतमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं। 25परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा दिलाने के लिये, लोगों को दिया। उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में किया। ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने पहले उन्हें उनके पापों का दंड दिये बिना छोड़ दिया था 26आज भी अपना न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता भी है; उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।

27तो फिर घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो गया। भला कैसे? क्या उस विधि से जिसमें व्यवस्था जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है? नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है। 28कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है। 29या परमेश्वर क्या बस यहूदियों का है? क्या वह ग़ैर यहूदियों का नहीं है? हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है। 30क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके विश्वास के आधार पर ख़तना हुआ है, और उनको जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा, धर्मी ठहरायेगा। 31सो क्या हम विश्वास के आधार पर व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे हैं? निश्चय ही नहीं। बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली बना रहे हैं।

इब्राहीम का उदाहरण

4 तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को इसमें क्या मिला? 2क्योंकि यदि इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया जाता है तो उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं कर सकता। 3पवित्र शास्त्र क्या कहता है? “इब्राहीम ने परमेश्वर में विश्वास किया और वह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया”*

4काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं है, वह तो उसका अधिकार है। 5किन्तु यदि कोई व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास करता है, जो पापी को भी छोड़ देता है; तो उसका विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण बन जाता है। 6ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के आधार के बिना ही परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब कहता है:

7 “धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित कामों को
क्षमा मिली और जिनके पापों को
ढक दिया गया!

8 धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को
परमेश्वर ने गिना नहीं है!”

भजन संहिता 32:1−2

9तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये हैं जिनका ख़तना हुआ है, या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है जिनका ख़तना नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। 10तो यह कब गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह बिना ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं बल्कि ख़तना होने की स्थिति से पहले। 11और फिर एक चिह्न के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस विश्वास के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी जो उसने उस समय दर्शाया था जब उसका ख़तना नहीं हुआ था। इसीलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि बिना ख़तने के हैं

इब्राहीम ... गया उत्पत्ति 15:6

किन्तु विश्वासी हैं। (इसलिए वे भी धर्मी गिने जाएँगे) [12]और
वह उनका भी पिता है जिनका ख़तना हुआ है किन्तु जो
हमारे पूर्वज इब्राहीम के विश्वास का जिसे उसने ख़तना
होने से पहले प्रकट किया था, अनुसरण करते हैं।

विश्वास और परमेश्वर का वचन

[13]इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार
के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था बल्कि
उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा उत्पन्न
होती है। [14]यदि जो व्यवस्था को मानते हैं, वे जगत के
उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का कोई अर्थ नहीं रहता
और वचन भी बेकार हो जाता है। [15]लोगों द्वारा व्यवस्था
का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर का क्रोध उपजता
है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है वहाँ व्यवस्था का तोड़ना
ही क्या?

[16]इसीलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास
का फल है और यह सेंतमेत में ही मिलता है। इस प्रकार
उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए सुनिश्चित
है; न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को मानते हैं बल्कि
उन सब के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वास रखते
हैं। वह हम सब का पिता है। [17]शास्त्र बताता है, "मैंने तुझे
(इब्राहीम) अनेक राष्टों का पिता बनाया।"* उस परमेश्वर
की दृष्टि में वह इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका
विश्वास है। परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और
जो नहीं है, उसे अस्तित्व देता है।

[18]सभी मानवीय आशाओं के विरुद्ध अपने मन में आशा
सँजोये हुए इब्राहीम ने उसमें विश्वास किया, इसीलिए वह
कहे गये के अनुसार अनेक राष्टों का पिता बना। "तेरे
अनगिनत वंशज होंगे।"* [19]अपने विश्वास को बिना
डगमगाये और यह जानते हुए भी कि उसकी देह सौ साल
की बूढ़ी मरियल हो चुकी है और सारा बाँझ है, [20]परमेश्वर
के वचन में विश्वास बनाये रखा। इतना ही नहीं, विश्वास
को और मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमा दी। [21]उसे
पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचन दिया है,
उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है। [22]इसलिये, "यह
विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"* [23]शास्त्र
का यह वचन कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना
गया, न केवल उसके लिये है, [24]बल्कि हमारे लिये भी है
परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, धार्मिकता
स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु यीशु को फिर से जीवित
किया। [25]यीशु जिसे हमारे पापों के लिए मारे जाने को
सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने के लिए, मरे हुओं में से
पुन: जीवित किया गया।

परमेश्वर का प्रेम

5 क्योंकि हम अपन विश्वास के कारण परमेश्वर
के लिए धर्मी हो गये हैं, सो अपने प्रभु यीशु मसीह
के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। [2]उसी के
द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी
स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम
परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का
आनन्द लेते हैं। [3]इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में
भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्ति धीरज
को जन्म देती है। [4]और धीरज से परखा हुआ चरित्र
निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को जन्म देता है।
[5]और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र
आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम
हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।

[6]क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय
पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया।
[7]अब देखो, किसी धर्मी मनुष्य के लिए भी कोई कठिनाई
से मरता है। किसी अच्छे आदमी के लिए अपने प्राण
त्यागने का साहस तो कोई कर भी सकता है। [8]पर
परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो
पापी ही थे; किन्तु यीशु ने हमारे लिए प्राण त्यागे।

[9]क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो
गये हैं तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य
ही बचाये जायेंगे। [10]क्योंकि जब हम उसके बैरी थे उसने
अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप कराया
तो अब तो जब हमारा मेलमिलाप हो चुका है उसके जीवन
से हमारी और कितनी अधिक रक्षा होगी। [11]इतना ही
नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति
पाकर अब उसमें आनन्द लेते हैं।

शास्त्र बताता ... बनाया उत्पत्ति 17:5
तेरें ... होंगे उत्पत्ति 15:5
यह विश्वास ... गया उत्पत्ति 15:6

आदम और यीशु

12इसीलिये एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे। 13अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप था किन्तु जब तक कोई व्यवस्था नहीं होती किसी का भी पाप नहीं गिना जाता 14किन्तु आदम से लेकर मूसा के समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत उन पर भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे जैसे आदम पर। आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह) आने वाला था। 15किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि उस एक व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई तो उस एक व्यक्ति यीशु मसीह की करुणा के कारण मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी लोगों की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक हैं। 16और यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए परिणाम के समान नहीं है क्योंकि दंड के हेतु न्याय का आगमन एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह वरदान, जो दोष–मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक अपराधों के बाद आया था। 17अत: यदि एक व्यक्ति की उस अपराध के कारण मृत्यु का शासन हो गया। तो जो परमेश्वर के अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता का–जिसमें धर्मी का निवास है–उपभोग कर रहे हैं–वे तो जीवन में उस एक व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा और भी अधिक शासन करेंगे।

18सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने वाली धार्मिकता मिली। 19अत: जैसे उस एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये वैसे ही उस एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे। 20व्यवस्था का आगमन इसलिये हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा। 21ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य किया ठीक वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन को लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह धार्मिकता के द्वारा राज्य करे।

पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़ता रहे? 2निश्चय ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही कैसे जियेंगे? 3या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने यीशु मसीह में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा लिया है। 4सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे ताकि जैसे परम पिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।

5क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। 6हम यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्त्व यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ा दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये पाप के दास न बने रहें। 7क्योंकि जो मर गया वह पाप के बन्धन से छुटकारा पा गया।

8और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा विश्वास है कि हम उसी के साथ जियेंगे भी। 9हम जानते हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया था अमर है। उस पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा। 10जो मौत वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए मरा है किन्तु जो जीवन वह जी रहा है, वह जीवन परमेश्वर के लिए है। 11इसी तरह तुम अपने लिए भी सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित हो।

12इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न चलो। 13अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुओं में से जी उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। 14तुम पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के सहारे नहीं जीते हो बल्कि परमेश्वर की अनुग्रह के सहारे जीते हो।

धार्मिकता के सेवक

15तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के

अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं। 16क्या तुम नहीं जानते
कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप
को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फिर
चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे
आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता की तरफ ले जायेगी।
17किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि यद्यपि तुम पाप के दास
थे, तुमने अपने मन से उन उपदेशों की रीति को माना जो
तुम्हें सौंपे गये थे। 18तुम्हें पापों से छुटकारा मिल गया और
तुम धार्मिकता के सेवक बन गए हो। 19(मैं एक उदाहरण
दे रहा हूँ जिसे सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना
तुम लोगों के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर
के अंगों को अपवित्रता और व्यवस्था हीनता के आगे
उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था हीनता
पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने शरीर के अंगों
को दास के रूप में धार्मिकता के हाथों सौंप दो ताकि
संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो।

20क्योंकि तुम जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की
ओर से तुम पर कोई बन्धन नहीं था। 21और देखो उस
समय तुम्हें कैसा फल मिला? जिसके लिए आज तुम शर्मिन्दा
हो। जिसका अंतिम परिणाम मृत्यु है। 22किन्तु अब तुम्हें
पाप से छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास
बना दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर
के प्रति संपूर्ण समर्पण में ले जायेगी। जिसका अंतिम परिणाम
है अनन्त जीवन। 23क्योंकि पाप का मूल्य तो बस मृत्यु ही
है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर
का सेंतमेतका वरदान है।

विवाह का दृष्टान्त

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से कह
रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं) कि व्यवस्था का
शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह जीता
है? 2उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने पति के
साथ विधान के अनुसार तभी तक बँधी है जब तक वह
जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह
विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है। 3पति के जीते जी
यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे व्यभिचारिणी
कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर जाता है तो
विवाह सम्बन्धी नियम उस पर नहीं लगता
और इसीलिये यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी
वह व्यभिचारिणी नहीं है।

4हे मेरे भाइयो, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था
के लिये तुम भी मर चुके हो। इसीलिये अब तुम भी किसी
दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे हुओं में से
पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर के लिए
कर्मों की उत्तम खेती कर सकें। 5क्योंकि जब हम मानव
स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पाप-पूर्ण वासनाएँ
जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर हावी थीं।
ताकि हम कर्मों की ऐसी खेती करें जिसका अंत मौत में
होता है। 6किन्तु अब हमें व्यवस्था से छुटकारा दे दिया
गया है क्योंकि जिस व्यवस्था के अधीन हमें बंदी बनाया
हुआ था, हम उसके लिये मर चुके हैं। और अब पुरानी
लिखित व्यवस्था से नहीं, बल्कि आत्मा की नयी रीति से
प्रेरित हो कर हम अपने स्वामी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

पाप से लड़ाई

7तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था
पाप है? निश्चय ही नहीं। जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं
होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है? यदि
व्यवस्था नहीं बताती, "जो अनुचित है उसकी चाहत मत
करो" तो निश्चय ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि अनुचित
इच्छा क्या है।" 8किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था
का लाभ उठाते हुए मुझमें हर तरह की ऐसी इच्छाएँ भर
दीं जो अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो
मर गया। 9एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित था,
किन्तु जब व्यवस्था का आदेश आया तो पाप जीवन में
उभर आया। 10और मैं मर गया। वही व्यवस्था का आदेश
जो जीवन देने के लिए था, मेरे लिये मृत्यु ले आया।
11क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने उसी
व्यवस्था के आदेश के द्वारा मुझे छला और उसी के द्वारा
मुझे मार डाला।

12इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र,
धर्मी और उत्तम है। 13तो फिर क्या इसका यह अर्थ है कि
जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण बना? निश्चय ही
नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का
इसलिये कारण बना कि पाप को पहचाना जा सके। और
व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी भयानक पाप-पूर्णता
दिखाई जा सके।

मानसिक द्वन्द्व

14क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है
और मैं हाड़–माँस का भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की
दासता के लिए बिका हुआ है। 15मैं नहीं जानता मैं क्या
कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता,
बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ।
16और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो
मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था उत्तम है। 17किन्तु
वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है,
बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है। 18हाँ, मैं जानता हूँ कि
मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव शरीर में किसी अच्छी
वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने की इच्छा तो मुझ में है
पर नेक काम मुझ से नहीं होते। 19क्योंकि जो अच्छा
काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं
नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ। 20और
यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो
वास्तव में उनका कर्त्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ,
बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है।

21इसीलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब
अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता
हूँ। 22अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को
सहर्ष मानता हूँ। 23पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही
नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चिन्तन पर
शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे
पाप की व्यवस्था का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे
शरीर में क्रियाशील है। 24मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे
इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा कौन
दिलायेगा? 25अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर
का धन्यवाद करता हूँ! सो अपने हाड़ माँस के शरीर से मैं
पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से
परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

आत्मा से जीवन

8 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में
स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के
अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।]*
2क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन
देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले
जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है। 3जिसे मूसा की वह व्यवस्था
जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण दुर्बल बना दी
गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को
हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर–जिससे हम पाप करते
हैं–उसकी भौतिक देह को पाप वाली बनाकर पाप को
निरस्त कर के पूरा किया। 4जिससे कि हमारे द्वारा, जो
देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की विधि से
जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।

5क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार
जीते हैं, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टिकी
रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते हैं, उनकी
बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं में लगी रहती
है। 6भौतिक मानव स्वभाव के बस में रहने वाले मन का
अन्त मृत्यु है; किन्तु आत्मा के वश में रहनेवाली बुद्धि का
परिणाम है जीवन और शांति। 7इस तरह भौतिक मानव
स्वभाव से अनुशासित मन परमेश्वर का विरोधी है।
क्योंकि वह न तो परमेश्वर के नियमों के अधीन है और
न हो सकता है। 8और वे जो भौतिक मानव स्वभाव के
अनुसार जीते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन
नहीं हो, बल्कि आत्मा के अधीन हो यदि वास्तव में तुममें
परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि किसी में
यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है।
10दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह
पाप के हेतु मर चुकी है पवित्र आत्मा, परमेश्वर के साथ
तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन बन जाती
है। 11और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से
जिलाया था, तुम्हारे भीतर वास करती है, तो वह परमेश्वर
जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे
नाशवान शरीरों को अपनी आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर
बसती है, जीवन देगा।

12इसलिए मेरे भाइयो, हम पर इस भौतिक शरीर का
क़र्ज़ तो है किन्तु ऐसा नहीं कि हम इसके अनुसार जियें।
13क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो
मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों
का अंत कर दोगे तो तुम जी जाओगे।

14जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे
परमेश्वर की संतान हैं। 15क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें
मिली है, तुम्हें फिर से दास बन डरने के लिए नहीं है,

क्योंकि ... है कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है

बल्कि वह आत्मा जो तुमने पायी है तुम्हें परमेश्वर की
संपालित संतान बनाती है। जिससे हम पुकार उठते हैं, "हे
अब्बा, हे पिता!" [16]वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा
के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की
संतान हैं। [17]और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी
उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह
के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके साथ
दुख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी ही।

हमें महिमा मिलेगी

[18]क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ
प्रकट होने वाली भावी महिमा के आगे कुछ भी नहीं है।
[19]क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का इंतज़ार
कर रही है जब परमेश्वर की संतान को प्रकट किया
जायेगा। [20]यह सृष्टि नि:सार थी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि
उसकी इच्छा से जिसने इसे इस आशा के अधीन किया [21]कि
यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पा कर
परमेश्वर की संतान की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।

[22]क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि
पीड़ा में कराहती और तड़पती रही है। [23]न केवल यह
सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला
है, अपने भीतर कराहते रहे हैं। क्योंकि हमें उसके द्वारा
पूरी तरह अपनाये जाने का इंतजार है कि हमारी देह–मुक्ति
हो जायेगी। [24]हमारा उद्धार हुआ है। इसी से हमारे मन में
आशा है किन्तु जब हम जिसकी आशा करते हैं, उसे देख
लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो दिख रहा है उसकी
आशा कौन कर सकता है। [25]किन्तु यदि जिसे हम देख
नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो धीरज और सहनशीलता
के साथ उसकी बाट जोहते हैं।

[26]ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता में
हमारी सहायता करने आती है क्योंकि हम नहीं जानते
कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा स्वयं
ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं की
जा सकती, हमारे लिए विनती करती है। [27]किन्तु वह
अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि
परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर के पवित्र जनों
के लिए मध्यस्थता करती है।

[28]और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा
परमेश्वर के भक्तों के साथ मिल कर वह काम करता है
जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें उसके प्रयोजन
के अनुसार ही बुलाया गया है। [29]जिन्हें उसने पहले ही
चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में ठहराया ताकि
बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई बन सके। [30]जिन्हें
उसने पहले से निश्चित किया, उन्हें भी उसने बुलाया
और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया। और
जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी प्रदान की।

परमेश्वर का प्रेम

[31]तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे
पक्ष में है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है? [32]उसने
जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा बल्कि उसे
हम सब के लिए मरने को सौंप दिया। वह भला हमें उसके
साथ और सब कुछ क्यों नहीं देगा? [33]परमेश्वर के चुने
हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो, दोष लगायेगा? वह परमेश्वर
ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता है। [34]ऐसा कौन है जो उन्हें
दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु वह है जो मर गया और (और
इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि) उसे फिर जिलाया
गया। जो परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है और हमारी
ओर से विनती भी करता है [35]कौन है जो हमें मसीह के
प्यार से अलग करेगा? यातना या कठिनाई या अत्याचार
या अकाल या नंगापन या जोख़िम या तलवार? [36]जैसा
कि शास्त्र कहता है:

"तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा जाता है।
हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।"
भजन संहिता 44:22

[37]तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब
बातों में हम एक शानदार विजय पा रहे हैं। [38]क्योंकि मैं
मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत और
न शासन करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की कोई वस्तु
और न भविष्य की कोई वस्तु, न आत्मिक शक्तियाँ, [39]न
कोई हमारे ऊपर का, और न हमसे नीचे का, न सृष्टि
की कोई और वस्तु हमें प्रभु के उस प्रेम से, जो हमारे
भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें अलग कर सकेगी।

परमेश्वर और यहूदी लोग

9 मसीह में मैं सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता
और मेरी चेतना जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित

है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है [2]कि मुझे गहरा दुःख है और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है। [3]काश मैं चाह सकता कि अपने भाई बंदों और दुनियावी संबन्धियों के लिए मैं मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे अलग हो जाता। [4]जो इस्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की संपालित संतान होने का अधिकार है, जो परमेश्वर की महिमा का दर्शन कर चुके हैं, जो परमेश्वर के करार के भागीदार हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना और वचन प्रदान किया गया है। [5]पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है! आमीन।

[6]ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं किया है क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्राएली नहीं हैं। [7]और न ही इब्राहीम के वंशज होने के कारण वे सब सचमुच इब्राहीम की संतान हैं। बल्कि (जैसा परमेश्वर ने कहा), "तेरे वंशज इसहाक के द्वारा अपनी परम्परा बढ़ाएंगे।"* [8]अर्थात् यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर शरीर से पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर के वंशज हैं, बल्कि परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके वंशज माने जाते हैं। [9]वचन इस प्रकार कहा गया था: "निश्चित समय पर मैं लौटूँगा और सारा पुत्रवती होगी।"*

[10]इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे पूर्व पिता इसहाक से गर्भवती हुई [11]तो बेटों के पैदा होने से पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले कहा गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो जो चुनाव से सिद्ध होता है। [12]और जो व्यक्ति के कर्मों पर नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है जो बुलाने वाला है। रिबका से कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे बेटे की सेवा करेगा।"* [13]शास्त्र कहता है: "मैंने याकूब को चुना और इसाऊ को नकार दिया।"*

[14]तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है? [15]निश्चय ही नहीं। क्योंकि उसने मूसा से कहा था, "मैं जिस किसी पर भी दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा। और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना चाहूँगा, अनुग्रह करूँगा।"* [16]इसलिये न तो यह किसी की इच्छा पर निर्भर करता है और न किसी की दौड़ धूप पर बल्कि दयालु परमेश्वर पर निर्भर करता है। [17]क्योंकि शास्त्र में परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, "मैंने तुझे इसीलिए खड़ा किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ। और मेरा नाम समूची धरती पर घोषित किया जाये।"* [18]सो परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है कठोर बना देता है।

[19]तो फिर तू शायद मुझ से कहे, "यदि हमारे कर्मों का नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है तो फिर भी वह उसमें हमारा दोष क्यों समझता है?" आख़िरकार उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? [20]मनुष्य तू कौन होता है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे? क्या कोई रचना अपने रचने वाले से पूछ सकती है, "तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" [21]क्या किसी कुम्हार को मिट्टी पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक लौंदे से एक भाँडा विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा हीन प्रयोजन के लिए बनाये?

[22]किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन भाँडों की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को था, बड़े धीरज के साथ सही, [23]उसने उनकी सही ताकि वह उन भाँड़ों के लाभ के लिए जो दया के पात्र थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर अपनी महिमा प्रकट कर सके। [24]अर्थात् हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि ग़ैर यहूदियों में से भी [25]जैसा कि होशे की पुस्तक में लिखा है:

"जो लोग मेरे नहीं थे उन्हें मैं अपना कहूँगा।
और वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी
मैं उसे प्रिया कहूँगा।"

होशे 2:23

26 "और वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में
उनसे कहा गया था,
'तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।'
वहीं वे जीवित परमेश्वर की
सन्तान कहलाएँगे।"

होशे 1:10

तेरे वंशज ... बढ़ाएंगे उत्पत्ति 21:12
निश्चित ... होगी उत्पत्ति 18:10,14
बड़ा ... करेगा उत्पत्ति 25:23
मैंने याकूब ... दिया मलाकी 1:2−3
मैं ... करूँगा निर्गमन 33:19
मैंने ... जाये निर्गमन 9:16

27और यशायाह इस्राएल के बारे में पुकार कर कहता है:

> “यद्यपि इस्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के कणों के समान असंख्य हैं तो भी उनमें से केवल थोड़े से ही बच पायेंगे। 28क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपने न्याय को पूरी तरह से और जल्दी ही पूरा करेगा।”*

29और जैसी कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

> “यदि सर्वशक्तिशाली प्रभु हमारे लिए वंशज न छोड़ता तो हम सदोम जैसे और अरोमा जैसे ही हो जाते।”*

30तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए। 31किन्तु इस्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी सके। 32क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है। 33जैसा कि शास्त्र कहता है:

> “देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ
> जो ठोकर दिलाता है और
> एक चट्टान जो अपराध कराती है।
> किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है,
> उसे कभी निराश नहीं होना होगा।”

यशायाह 8:14;23:16

10 हे भाइयो, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर से उन सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि उनका उद्धार हो 2क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर नहीं टिकी है 3क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर से मिलती है और वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं स्वीकारा। 4मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के लिए धार्मिक हो।

5धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है, मूसा ने लिखा है, “जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।”* 6किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता है, “तू अपने से यह मत पूछ, ‘स्वर्ग में ऊपर कौन जायेगा?’*” (यानी, “मसीह को नीचे धरती पर लाने।”) 7“या, ‘नीचे पाताल में कौन जायेगा?’*” (यानी, “मसीह को धरती के नीचे से ऊपर लाने।” यानी मसीह को मरे हुओं में से वापस लाने।”) 8शास्त्र यह कहता है, “वचन तेरे पास है, तेरे ओठों पर है और तेरे मन में है।”* यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते है। 9कि यदि तू अपने मुँह से कहे, “यीशु मसीह प्रभु है” और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो जायेगा। 10क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है। 11शास्त्र कहता है, “जो कोई उसमें विश्वास रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।”* 12यह इसलिये है कि यहूदियों और ग़ैर यहूदियों में कोई भेद नहीं क्योंकि सब का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया उन सब के लिये, जो उसका नाम लेते हैं, अपरम्पार है। 13“हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।”*

14किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका नाम कैसे पुकारेंगे? और वे जिन्होने उसके बारे में सुना ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे कैसे सुन सकेंगे? 15और उपदेशक तब तक उपदेश कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो? जैसा कि शास्त्रों में कहा है: “सुसमाचार लाने वालों के चरण कितने सुंदर हैं।”*

16किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह कहता है, “हे प्रभु, हमारे उपदेश को किसने स्वीकार किया?”* 17सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है और उपदेश तब सुना जाता है जब कोई मसीह के विषय में उपदेश देता है।

यद्यपि ... करेगा यशायाह 10:22−23
यदि ... जाते यशायाह 1:9

जो ... रहेगा लैव्य. 18:5
तू अपने ... कौन जायेगा व्यवस्था. 30:12
मसीह ... लाने व्यवस्था. 30:12
वचन ... है व्यवस्था. 30:14
जो ... पड़ेगा यशा. 28:16
हर ... पायेगा योएल 2:32
सुसमाचार ... है यशा. 52:7
हे प्रभु ... किया यशा. 53:1

18किन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने हमारे उपदेश को
नहीं सुना?” हाँ, निश्चय ही। शास्त्र कहता है:

“उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया
और उनके वचन जगत के एक छोर से
दूसरे छोर तक पहुँचे।”

भजन संहिता 19:4

19किन्तु मैं पूछता हूँ, “क्या इस्राएली नहीं समझते थे?”
मूसा कहता है:

“पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के
द्वारा जो वास्तव में कोई जाति नहीं है,
डाह पैदा करूँगा।
मैं विश्वासहीन जाति के द्वारा
तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।”

व्यवस्था विवरण 32:21

20फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

“मुझे उन लोगों ने पा लिया
जो मुझे नहीं खोज रहे थे।
मैं उनके लिए प्रकट हो गया
जो मेरी खोज खबर में नहीं थे।”

यशायाह 65:1

21किन्तु परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में कहा है,
“मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले और अपने विरोधियों
के आगे हाथ फैलाए रहा।”*

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

11 तो मैं पूछता हूँ, “क्या परमेश्वर ने अपने ही
लोगों को नकार नहीं दिया?” निश्चय ही नहीं।
क्योंकि मैं भी एक इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और
बैंजामिन के गोत्र से हूँ। 2परमेश्वर ने अपने लोगों को
नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था। अथवा
क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या
कहता है जब एलिय्याह परमेश्वर से इस्राएल के लोगों के
विरोध में प्रार्थना कर रहा था? 3“हे प्रभु, उन्होंने तेरे
नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़ कर गिरा
दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मार
डालने का जतन कर रहे हैं।”* 4किन्तु तब परमेश्वर ने
उसे कैसे उत्तर दिया था, “मैंने अपने लिए सात हजार लोग
बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।”*
5सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके
अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं। 6और यदि यह परमेश्वर
के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं, यह
उन कर्मों का परिणाम नहीं है। नहीं तो परमेश्वर की
अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं ठहरती।

7तो इससे क्या? इस्राएल के लोग जिसे खोज रहे थे, वे
उसे नहीं पा सके। किन्तु चुने हुओं को वह मिल गया।
जबकि बाकी सब को जड़ बना दिया गया। 8शास्त्र कहता
है:

“परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्य
आत्मा प्रदान की”

यशायाह 29:10

“ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं
और ऐसे कान दिए जो सुन नहीं सकते थे।
और यही दशा ठीक आज तक बनी हुई है।”

व्यवस्था विवरण 29:4

9 दाऊद कहता है:

“अपने ही भोगों में फँसकर वे बंदी बन जाएँ
उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।
10 उनकी आँखें धुँधली हो जायें
ताकि वे देख न सकें और तू उनकी
पीड़ाओं तले, उनकी कमर
सदा–सदा झुकाए रखे।”

भजन संहिता 69:22−23

11सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि
वे गिर कर नष्ट हो जायें? निश्चय ही नहीं। बल्कि उनके
गलती करने से ग़ैर यहूदी लोगों को छुटकारा मिला ताकि
यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो। 12इस प्रकार यदि उनके ग़लती
करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ है और यदि
उनके भटकने से ग़ैर यहूदियों का लाभ है तो उनकी
संपूर्णता से तो बहुत कुछ होगा।

13यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो।
क्योंकि मैं विशेष रूप से ग़ैर–यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ,
मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ 14इस आशा से
कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें से
कुछ का उद्धार करूँ। 15क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा
उनके नकार दिये जाने से जगत् में परमेश्वर के साथ

मैं ... रहा यशा. 65:2
हे प्रभु ... है 1 राजा 19:10−14

मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुओं में से जिलाया जाना नहीं होगा?

16यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह समूचा ही पवित्र नहीं है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।

17किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं और तू जो एक जँगली जैतून की टहनी है उस पर पेबंद चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की जड़ों की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे 18तो तुझे उन टहनियों के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयीं, अभिमान नहीं करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद रख यह तू नहीं है जो जड़ों को पाल रहा है, बल्कि यह तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है। 19अब तू कहेगा, "हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिये तोड़ी गयीं कि मेरा पेबंद चढ़े।" 20यह सत्य है, वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने विश्वास के बल पर अपनी जगह टिके रहे। इसलिये इसका गर्व मत कर बल्कि डरता रह। 21यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने देगा।

22इसलिये तू परमेश्वर की कोमलता को देख और उसकी कठोरता पर ध्यान दे। यह कठोरता उनके लिए है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिये है यदि तू अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से तू भी काट फेंका जायेगा। 23और यदि वे अपने अविश्वास में न रहें तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे। 24जब तुझे प्राकृतिक रूप से जँगली जैतून के पेड़ से एक शाखा की तरह काट कर प्रकृति के विरुद्ध एक उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़ की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर से क्यों नहीं जोड़ दी जायेंगी।

25हे भाइयो! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं रखना चाहता। (कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने लगो) कि इस्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर बना दिए गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि काफी ग़ैर यहूदी परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं बन जाते। 26और इस तरह समुचे इस्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:

"उद्धार करने वाला सिय्योन से आयेगा।
वह याकूब के परिवार से
सभी बुराइयाँ दूर करेगा।
27 मेरा यह वाचा उनके साथ तब होगा
जब मैं उनके पापों को हर लूँगा।"

यशायाह 59:20−21; 27:9

28जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित में परमेश्वर के शत्रु हैं किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं। 29क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी तरफ़ से अपना मन कभी नहीं बदलता। 30क्योंकि जैसे तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे किन्तु अब तुम्हें उसकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर की दया प्राप्त है। 31वैसे ही अब वे उसकी आज्ञा नहीं मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर है। ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले। 32क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसीलिए डाल रखा है कि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

33परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने गहन हैं; उसके रास्ते कितने गूढ़ हैं। शास्त्र कहता है:

34 "प्रभु के मन को कौन जानता है?
और उसे सलाह देने वाला कौन हो सकता है"

यशायाह 40:13

35 "परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है
कि वह किसी को उसके बदले कुछ दे।"

अय्यूब 41:11

36क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब स्थिर हैं और यह उसी के लिए है। उसकी सदा महिमा हो! आमीन।

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

12 इसलिए हे भाइयो, परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को

प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है। 2अब और आगे इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को नया करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे लिए क्या चाहता है। यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।

3इसलिये उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने मुझे दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात् जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार अपने को समझना चाहिये। 4क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों का काम एक जैसा नहीं है। 5हम अनेक हैं किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। 6तो फिर उसके अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग–अलग उपहार मिले हैं, हम उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी की क्षमता दी गयी है तो वह उसके पास जितना विश्वास है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे। 7यदि किसी को सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा के लिये अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का काम मिला है तो उसे अपने आप को प्रचार में लगाना चाहिये। 8यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी चाहिये। यदि किसी को दान देने का उपहार मिला है तो उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को अगुआई करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के साथ अगुआई करे। जिसे दया दिखाने को मिली है, वह प्रसन्नता से दया करे।

9तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बदी से घृणा करो। नेकी से जुड़ो। 10भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो। आपस में एक दूसरे को आदर के साथ अपने से अधिक महत्त्व दो। 11उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो। 12अपनी आशा में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो। 13परमेश्वर के जनों की आवश्यकताओं में हाथ बटाओ। अतिथि–सत्कार के अवसर ढूँढते रहो।

14जो तुम्हें सताते हों उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप मत दो, आशीर्वाद दो। 15जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो। जो दुःखी हैं, उनके दुःख में दुखी होओ। 16मेल–मिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की संगति करो। अपने को बुद्धिमान मत समझो।

17बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी लोगों की आँखों में जो अच्छा हो उसे ही करने की सोचो। 18जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शांति से रहो। 19किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ दो क्योंकि शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा काम है। प्रतिदान में दूँगा।"* 20"बल्कि तू तो यदि तेरा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन करा, यदि वह प्यासा है तो उसे पीने को दे। क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह तुझसे शर्मिन्दा होगा।"* 21बदी से मत हार बल्कि अपनी नेकी से बदी को हरा दे।

13 हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता स्वीकारनी चाहिये। क्योंकि शासन का अधिकार परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद हैं उन्हें परमेश्वर ने नियत किया है। 2इसलिए जो सत्ता का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं, वे दण्ड पायेंगे। 3अब देखो कोई शासक, उस व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि उसी को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से नहीं डरना चाहते हो, तो भले काम करते रहो। तुम्हें सत्ता की प्रशंसा मिलेगी। 4जो सत्ता में है वह परमेश्वर का सेवक है वह तेरा भला करने के लिए है। किन्तु यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी तलवार बेकार नहीं है। वह परमेश्वर का सेवक है जो बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है। 5इसलिये समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण बल्कि तुम्हारी अपनी चेतना के कारण।

6इसीलिये तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो अपने कर्तव्यों को ही पूरा करने में लगे रहते हैं। 7जिस किसी का तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे। जिसकी चुंगी तुझ पर निकलती है, उसे चुंगी दे। जिससे तुझे डरना चाहिये, तू उससे डर। जिसका आदर करना चाहिये उसका आदर कर।

प्रभु ... दूँगा व्यवस्था. 32:35
बल्कि ... होगा नीति. 25:21−22

प्रेम ही विधान है

8आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋ ण अपने ऊपर मत रख क्योंकि जो अपने साथियों से प्रेम करता है, वह इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है। 9मैं यह इसलिये कह रहा हूँ, "व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, लालच मत रख।"* और जो भी दूसरी व्यवस्थाएँ हो सकती हैं, इस वचन में समा जाती हैं, "तुझे अपने साथी को ऐसे ही प्यार करना चाहिये, जैसे तू अपने आप को करता है।"* 10प्रेम अपने साथी का बुरा कभी नहीं करता। इसीलिए प्रेम करना व्यवस्था के विधान को पूरा करना है।

11यह सब कुछ तुम इसलिये करो कि जैसे समय में तुम रह रहो हो, उसे जानते हो। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा है, क्योंकि जब हमने विश्वास धारण किया था हमारा उद्धार अब उससे अधिक निकट है। 12"रात" लगभग पूरी हो चुकी है, "दिन" पास ही है, इसलिए आओ हम उन कर्मों से छुटकारा पा लें जो अंधकार के हैं। आओ हम प्रकाश के अस्त्रों को धारण करें। 13इसलिए हम वैसे ही उत्तम रीति से रहें जैसे दिन के समय रहते हैं। बहुत अधिक दावतों में जाते हुए खा पीकर धुत्त न हो जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार में न पड़ें। न झगड़ें और न ही डाह रखें। 14बल्कि प्रभु यीशु मसीह को धारण करें। और अपनी मानव देह की इच्छाओं को पूरा करने में ही मत लगे रहो।

दूसरों में दोष मत निकाल

14 जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा करने के लिए नहीं। 2कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है, किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस साग-पात ही खाता है। 3तो वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को हीन नहीं समझना चाहिये जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता। वैसे ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे सब कुछ खाने वाले को बुरा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपना लिया है। 4तू किसी दूसरे घर के दास पर दोष लगाने वाला कौन होता है? उसका अनुमोदन या उसे अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है। वह अवलम्बित रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित होकर टिके रहने की शक्ति दी।

5और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से श्रेष्ठ मानता है और दूसरा उसे सब दिनों के बराबर मानता है तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की बात माननी चाहिये। 6जो किसी विशेष दिन को मनाता है वह उसे प्रभु को आदर देने के लिये ही मनाता है। और जो सब कुछ खाता है वह भी प्रभु को आदर देने के लिये ही खाता है। क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है। और जो किन्हीं वस्तुओं को नहीं खाता, वह भी ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह भी प्रभु को ही आदर देना चाहता है। वह भी परमेश्वर को ही धन्यवाद देता है। 7हम में से कोई भी न तो अपने लिये जीता है, और न अपने लिये मरता है। 8हम जीते हैं तो प्रभु के लिये और यदि मरते हैं तो भी प्रभु के लिये। सो चाहे हम जियें चाहे मरें, हम हैं तो प्रभु के ही।

9इसीलिये मसीह मरा; और इसीलिए जी उठा ताकि वह, वे जो अब मर चुके हैं और वे जो अभी जीवित हैं, दोनों का प्रभु हो सके। 10सो तू अपने विश्वास में सशक्त भाई पर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने विश्वास में निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होना है। 11शास्त्र में लिखा है:

"प्रभु ने कहा है, मेरे जीवन की शपथ हर
किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे।
और हर ज़ुबान परमेश्वर को पहचानेगी।"

12सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना लेखा-जोखा देना होगा।

पाप के लिए प्रेरित मत कर

13सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह निश्चय करें कि अपने भाई के रास्ते में हम कोई अड़चन खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये उकसायेंगे। 14प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण मैं मानता हूँ कि अपने आप में कोई भोजन अपवित्र नहीं है। वह केवल उसके लिए अपवित्र है, जो उसे अपवित्र मानता है। उसके लिए उसका खाना अनुचित है। 15यदि तेरे भाई को तेरे भोजन से ठेस पहँचती है तो तू वास्तव में प्यार का

व्यभिचार ... रख निर्गमन 20:13-15,17
तुझे ... है लैव्य. 19:18

व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू अपने भोजन से उसे ठेस
मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने उस तक के लिए भी अपने
प्राण तजे। **16**सो जो तेरे लिए अच्छा है उसे निन्दनीय मत
बनने दे। **17**क्योंकि परमेश्वर का राज्य बस खाना–पीना
नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता है, शांति है, और पवित्र
आत्मा से प्राप्त आनन्द है। **18**जो मसीह की इस तरह सेवा
करता है, उससे परमेश्वर प्रसन्न रहता है और लोग उसे
सम्मान देते हैं।

19इसलिए, उन बातों में लगें जो शांति को बढ़ाती हैं
और जिनसे एक दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता
मिलती है। **20**भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत
बिगाड़ो। हर तरह का भोजन पवित्र है किन्तु किसी भी
व्यक्ति के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी
और भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये। **21**माँस नहीं
खाना श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी
ऐसा नहीं करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता
हो।

22अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही
रख। वह धन्य है जो जिसे उत्तम समझता है, उसके लिए
अपने को दोषी नहीं पाता। **23**किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु
को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त नहीं है
तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके
विश्वास के अनुसार नहीं है और वह सब कुछ जो विश्वास
पर नहीं टिका है, पाप है।

15 हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें
उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये जो शक्तिशाली
नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें। **2**हम में
से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना के
साथ कि उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न करे।
3यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं किया
था। बल्कि जैसा कि मसीह के बारे में शास्त्र कहता है,
“उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया है, मुझ पर
आ पड़ा है।”* **4**हर वह बात जो शास्त्रों में पहले लिखी
गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि जो धीरज और
बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे आशा प्राप्त करें।
5और समूचे धीरज और बढ़ावे का स्रोत परमेश्वर तुम्हें
वरदान दे कि तुम लोग एक दूसरे के साथ यीशु मसीह के
उदाहरण पर चलते हुए आपस में मिल जुल कर रहो।
6ताकि तुम सब एक साथ एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु
मसीह के परम पिता, परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।
7इसलिए एक दूसरे को अपनाओ जैसे तुम्हें मसीह ने
अपनाया। यह परमेश्वर की महिमा के लिए करो। **8**मैं
तुम लोगों को बताता हूँ कि यह प्रकट करने को कि
परमेश्वर विश्वसनीय है उनके पुरखों को दिये गए
परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने को मसीह यहूदियों का
सेवक बना। **9**ताकि ग़ैर यहूदी लोग भी परमेश्वर को उसकी
करुणा के लिए महिमा प्रदान करें। शास्त्र कहता है:

“इसलिये मैं ग़ैर यहूदियों के बीच तुझे पहचानूँगा
और तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।”

भजन संहिता 18:49

10और यह भी कहा गया है,

“हे ग़ैर यहूदियो, परमेश्वर के चुने हुए
लोगों के साथ प्रसन्न रहो।”

व्यवस्था विवरण 32:43

11और फिर शास्त्र यह भी कहता है,

“हे ग़ैर यहूदी लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो।
और सभी जातियो,
परमेश्वर की स्तुति करो।”

भजन संहिता 117:1

12और फिर यशायाह भी कहता है,

“यिशै का एक वंशज प्रकट होगा
जो ग़ैर यहूदियों के शासक के रूप में उभरेगा।
ग़ैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।”

यशायाह 11:10

13सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण
आनन्द और शांति से भर दे। जैसा कि उसमें तुम्हारा
विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा
से भरपूर हो जाओ।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14हे मेरे भाइयो, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम
नेकी से भरे हो और ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे
को शिक्षा दे सकते हो। **15**किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने
के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ साफ लिखा है।
मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है, उसके कारण
यह किया है। **16**यानी मैं ग़ैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह
का सेवक बन कर परमेश्वर के सुसमाचार के लिए एक

उनका ... है भजन. 69:9

याजक के रूप में काम करूँ ताकि ग़ैर यहूदी परमेश्वर
के आगे स्वीकार करने योग्य भेंट बन सकें और पवित्र
आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिये पूरी तरह पवित्र बनें।
17सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर
के प्रति अपनी सेवा का मुझे गर्व है। 18क्योंकि मैं बस
उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह ने
ग़ैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का रास्ता
दिखाने का काम मेरे वचनों, मेरे कर्मों, 19आश्चर्य चिह्नों
और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की आत्मा
के सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम से लेकर
इल्लुरिकुम के चारों ओर मसीह के सुसमाचार के उपदेश
का काम मैंने पूरा किया। 20मेरे मन में सदा यह अभिलाषा
रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ जहाँ कोई
मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं किसी दूसरे
व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ। 21किन्तु शास्त्र कहता
है:

"जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है,
वे उसे देखेंगे।
और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेंगे।"

यशायाह 32:15

पौलुस की रोम जाने की योजना

22मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार
रोकते रहे हैं।

23किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई स्थान नहीं
बचा है और बहुत बरसों से मैं तुमसे मिलना चाहता रहा
हूँ, 24सो मैं जब स्पेन जाऊँगा तो आशा करता हूँ तुमसे
मिलूँगा! मुझे उम्मीद है कि स्पेन जाते हुए तुमसे भेंट होगी।
तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का आनन्द लेने के बाद
मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के लिए मुझे तुम्हारी मदद
मिलेगी। 25किन्तु अब मैं परमेश्वर के पवित्र जनों की
सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। 26क्योंकि मकदूनिया और
अखैया के कलीसिया के लोगों ने यरूशलेम में परमेश्वर
के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं, उनके लिए कुछ देने का
निश्चय किया है। 27हाँ. उनके प्रति उनका कर्तव्य भी
बनता है क्योंकि यदि ग़ैर यहूदियों ने यहूदियों के
आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा बँटाया है तो ग़ैर यहूदियों को
भी उनके लिये भौतिक सुख जुटाने चाहिये। 28सो अपना
यह काम पूरा करके और इकट्ठा किये गये इस धन को
सुरक्षा के साथ उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से
होता हुआ स्पेन के लिये रवाना होऊँगा 29और मैं जानता
हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह
के पूरे आर्शीवादों समेत आऊँगा।

30हे भाइयो, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से
आत्मा से जो प्रेम हम पाते हैं, उसकी साक्षी दे कर प्रार्थना
करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के प्रति सच्ची
प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो 31कि मैं यहूदियों में अविश्वासियों
से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति मेरी सेवा को परमेश्वर
के पवित्र जन स्वीकार करें। 32ताकि परमेश्वर की इच्छा
के अनुसार मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पास आकर तुम्हारे
साथ आनन्द मना सकूँ। 33सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर
तुम्हारे साथ रहे। आमीन।

रोम के मसीहियों को पौलूस का संदेश

16 मैं किंखिया की कलीसिया की विशेष सेविका
हमारी बहन फ़ीबे की तुम से सिफारिश करता
हूँ 2कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण करो जैसी रीति
परमेश्वर के लोगों के योग्य है। उसे तुमसे जो कुछ अपेक्षित
हो सब कुछ से तुम उसकी मदद करना क्योंकि वह मुझ
समेत बहुतों की सहायक रही है।

3प्रिस्का और अक्विला को मेरा नमस्कार। वे यीशु
मसीह में मेरे सहकर्मी हैं। 4उन्होंने मेरे प्राण बचाने के
लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था। न केवल
मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि ग़ैर यहूदियों की सभी
कलीसिया भी उनके धन्यवादी हैं। 5उस कलीसिया को
भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में एकत्र होती है। मेरे
प्रिय मित्र इपनितुस को मेरा नमस्कार जो एशिया में मसीह
को अपनाने वालों में पहला है। 6मरियम को, जिसने
तुम्हारे लिये बहुत काम किया है, नमस्कार। 7मेरे कुटुम्बी
अन्द्रनीकुस और यूनियास को, जो मेरे साथ कारागार में
थे और जो प्रमुख धर्म-प्रचारकों में प्रसिद्ध हैं, और जो
मुझ से भी पहले मसीह में थे, मेरा नमस्कार। 8प्रभु में मेरे
प्रिय मित्र अम्पलियातुस को नमस्कार। 9मसीह में हमारे
सहकर्मी उरबानुस तथा मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को
नमस्कार। 10मसीह में खरे और सच्चे अपिल्लेस को
नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार।
11यहूदी साथी हिरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के

परिवार के उन लोगों को नमस्कार जो प्रभु में हैं। 12त्रुफेना
और त्रुफोसा को जो प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं,
नमस्कार। मेरी प्रिया परसिस को, जिसनें प्रभु में कठिन
परिश्रम किया है, मेरा नमस्कार। 13प्रभु के असाधारण
सेवक रूफुस को और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही
है, नमस्कार।

14असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिर्मास और
उनके साथी बंधुओं को नमस्कार। 15फिलुलुगुस, यूलिया,
नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी साथी
संतों को नमस्कार।

16तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा एक दूसरे का स्वागत
करो। तुम्हें सभी मसीही कलीसियों की ओर से
नमस्कार।

17हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो
शिक्षा पाई हैं, उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते हैं
और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान
रहो, और उनसे दूर रहो। 18क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु
यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की उपासना करते
हैं। और अपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी बातों से
भोले भाले लोगों के हृदय को छलते हैं। 19तुम्हारी
आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी तक पहुँच चुकी
है। इस लिये तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु मैं चाहता हूँ
कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान बने रहो और बदी के
लिये अबोध रहो।

20शांति का स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे
पैरों तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर
अनुग्रह हो।

21हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे
यहूदी साथी लूकियुस, यासोन तथा सोसिपत्रुस की ओर से
तुम्हें नमस्कार। 22इस पत्र के लेखक मुझ तिरतियुस का
प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

23मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस
का तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर का ख़जांची है
और हमारे बन्धु क्वारतुस का तुम को नमस्कार।
24["हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ
रहे। आमीन।"]*

परमेश्वर की महिमा

25उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार–
यानी यीशु मसीह के सन्देश के जिस सुसमाचार का मैं
उपदेश देता हूँ उसके अनुसार–तुम्हें सुदृढ़ बनाने में समर्थ
है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्णसत्य युगयुगान्तर से छिपा
हुआ था। 26किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के आदेश से
भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा अब हमें और ग़ैर यहूदियों
को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे विश्वास से पैदा
होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो। 27यीशु मसीह द्वारा उस
एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त काल तक महिमा
हो। आमीन!

पद 24 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 24 जोड़ा गया है।

1 कुरिन्थियों

1 हमारे भाई सोस्थिनिस के साथ पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर ने अपनी इच्छानुसार यीशु मसीह का प्रेरित बनने के लिए चुना

2 कुरिन्थुस में स्थित परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम; जो यीशु मसीह में पवित्र किये गये, जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र लोग बनने के लिये उनके साथ ही चुना है। जो हर कहीं हमारे और उनके प्रभु यीशु मसीह का नाम पुकारते रहते हैं।

3 हमारे परम पिता की ओर से तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम सब को उसकी अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

4 तुम्हें प्रभु यीशु में जो अनुग्रह प्रदान की गयी है, उसके लिये मैं तुम्हारी ओर से परमेश्वर का सदा धन्यवाद करता हूँ। 5 तुम्हारी यीशु मसीह में स्थिति के कारण तुम्हें हर किसी प्रकार से अर्थात् समस्त वाणी और सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न किया गया है। 6 मसीह के विषय में हमने जो साक्षी दी है वह तुम्हारे बीच प्रमाणित हुई है। 7 और इसी के परिणामस्वरूप तुम्हारे पास उसके किसी पुरस्कार की कमी नहीं है। तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते रहते हो। 8 वह तुम्हें अन्त तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन एक दम निष्कलंक, खरा बनाये रखेगा। 9 परमेश्वर विश्वासपूर्ण है। उसी के द्वारा तुम्हें हमारे प्रभु और उसके पुत्र यीशु मसीह की सत् संगति के लिये चुना गया है।

कुरिन्थुस के कलीसिया की समस्याएँ

10 हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में मेरी तुमसे प्रार्थना है कि तुम में कोई मतभेद न हो। तुम सब एक साथ जुटे, रहो और तुम्हारा चिंतन और लक्ष्य एक ही हो। 11 मुझे खलोए के घराने के लोगों से पता चला है कि तुम्हारे बीच आपसी झगड़े हैं। 12 मैं यह कह रहा हूँ कि तुम में से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" तो कोई कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ।" किसी का मत है, "वह पतरस का है" तो कोई कहता है, "वह मसीह का है।" 13 क्या मसीह बँट गया है? पौलुस तो तुम्हारे लिये क्रूस पर नहीं चढ़ा था। क्या वह चढ़ा था? तुम्हें पौलुस के नाम का बपतिस्मा तो नहीं दिया गया। बताओ क्या दिया गया था? 14 परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैंने तुममें से क्रिसपुस और गयुस को छोड़ कर किसी भी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 15 ताकि कोई भी यह न कह सके कि तुम लोगों को मेरे नाम का बपतिस्मा दिया गया है। 16 (मैंने स्तिफनुस के परिवार को भी बपतिस्मा दिया था किन्तु जहाँ तक बाकी के लोगों की बात है, सो मुझे याद नहीं कि मैंने किसी भी और को कभी बपतिस्मा दिया हो।) 17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि वाणी के किसी तर्क-वितर्क के बिना सुसमाचार का प्रचार करने के लिये भेजा था ताकि मसीह का क्रूस यूँ ही व्यर्थ न चला जाये।

परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान-स्वरूप मसीह

18 वे जो भटक रहे हैं, उनके लिए क्रूस का सन्देश एक निरी मूर्खता है। किन्तु जो उद्धार पा रहे हैं उनके लिये वह परमेश्वर की शक्ति है। 19 शास्त्रों में लिखा है:

"ज्ञानियों के ज्ञान को मैं नष्ट कर दूँगा;
और सारी चतुर की चतुरता मैं कुंठित करूँगा।"

यशायाह 29:14

20 कहाँ है ज्ञानी व्यक्ति? कहाँ है विद्वान? और इस युग का शास्त्रार्थी कहाँ है? क्या परमेश्वर ने सांसारिक बुद्धिमानी को मूर्खता नहीं सिद्ध किया? 21 इसीलिये क्योंकि परमेश्वरीय ज्ञान के द्वारा यह संसार अपने बुद्धि बल से

परमेश्वर को नहीं पहचान सका तो हम संदेश की
तथाकथित मूर्खता का प्रचार करते हैं। 22यहूदी लोग तो
चमत्कारपूर्ण संकेतों की माँग करते हैं और ग़ैर यहूदी
विवेक की खोज में हैं। 23किन्तु हम तो बस क्रूस पर चढ़ाये
गये मसीह का ही उपदेश देते हैं। एक ऐसा उपदेश जो
यहूदियों के लिये विरोध का कारण है और ग़ैर यहूदियों के
लिये निरी मूर्खता। 24किन्तु उनके लिये जिन्हें बुला लिया
गया है, फिर चाहे वे यहूदी हैं या ग़ैर यहूदी, यह उपदेश
मसीह है जो परमेश्वर की शक्ति है, और परमेश्वर का
विवेक है। 25क्योंकि परमेश्वर की तथाकथित 'मूर्खता'
मनुष्यों के ज्ञान से कहीं अधिक विवेकपूर्ण है। और
परमेश्वर की तथाकथित 'दुर्बलता' मनुष्य की शक्ति से
कहीं अधिक सक्षम है।

26हे भाइयो, अब तनिक सोचो कि जब परमेश्वर ने
तुम्हें बुलाया था तो तुममें से बहुतेरे न तो सांसारिक दृष्टि से
बुद्धिमान थे और न ही शक्तिशाली। तुममें से अनेक का
सामाजिक स्तर भी कोई ऊँचा नहीं था। 27बल्कि परमेश्वर
ने तो संसार में जो तथाकथित मूर्खतापूर्ण था, उसे चुना
ताकि बुद्धिमान लोग लज्जित हों। परमेश्वर ने संसार में
दुर्बलों को चुना ताकि जो शक्तिशाली हैं, वे लज्जित हों।
28परमेश्वर ने संसार में से उन्हें को चुना जो नीचे थीं,
जिनसे घृणा की जाती थी और जो कुछ भी नहीं है। परमेश्वर
ने इन्हें चुना ताकि संसार जिसे कुछ समझता है, उसे वह
नष्ट कर सके। 29ताकि परमेश्वर के सामने कोई भी
व्यक्ति अभिमान न कर पाये। 30किन्तु तुम यीशु मसीह में
उसी के कारण स्थित हो। वही परमेश्वर के वरदान के
रूप में हमारी बुद्धि बन गया है। उसी के द्वारा हम निर्दोष
ठहराये गये ताकि परमेश्वर को समर्पित हो सकें और हमें
पापों से छुटकारे मिल पाये31जैसा कि शास्त्र में लिखा है:
"यदि किसी को कोई गर्व करना है तो वह प्रभु में अपनी
स्थिति का गर्व करे।"*

क्रूस पर चढ़े मसीह के विषय में संदेश

2 हे भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास आया था तो परमेश्वर
के रहस्यपूर्ण सत्य का, वाणी की चतुरता अथवा
मानव बुद्धि के साथ उपदेश देते हुए नहीं आया था 2क्योंकि
मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे बीच रहते, मैं
यीशु मसीह और क्रूस पर हुई उसकी मृत्यु को छोड़ कर
किसी और बात को जानूँगा तक नहीं। 3सो मैं दीनता के
साथ भय से पूरी तरह काँपता हुआ तुम्हारे पास आया।
4और मेरी वाणी तथा मेरा संदेश मानव बुद्धि के लुभावने
शब्दों से युक्त नहीं थे बल्कि उनमें था आत्मा की शक्ति
का प्रमाण 5ताकि तुम्हारा विश्वास मानव बुद्धि के बजाय
परमेश्वर की शक्ति पर टिके।

परमेश्वर का ज्ञान

6जो समझदार हैं, उन्हें हम बुद्धि देते हैं किन्तु यह बुद्धि
इस युग की बुद्धि नहीं है, न ही इस युग के उन शासकों
की बुद्धि है जिन्हें विनाश के कगार पर लाया जा रहा है।
7इसके स्थान पर हम तो परमेश्वर के उस रहस्यपूर्ण
विवेक को देते हैं जो छिपा हुआ था और जिसे अनादि
काल से परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिये निश्चित किया
था। 8और जिसे इस युग के किसी भी शासक ने नहीं
समझा क्योंकि यदि वे उसे समझ पाये होते तो वे उस
महिमावान प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। 9किन्तु शास्त्र में
लिखा है:

"जिन्हें आँखों ने देखा नहीं
और कानों ने सुना नहीं;
जहाँ मनुष्य की बुद्धि तक कभी नहीं पहुँची
ऐसी बातें उनके हेतु प्रभु ने बनायी
जो जन उसके प्रेमी होते।"

यशायाह 64:4

10किन्तु परमेश्वर ने उन ही बातों को आत्मा के द्वारा
हमारे लिये प्रकट किया है क्योंकि आत्मा हर किसी बात
को ढूँढ निकालती है यहाँ तक कि परमेश्वर की छिपी
गहराइयों तक को। 11ऐसा कौन है जो दूसरे मनुष्य के मन
की बातें जान ले सिवाय उस व्यक्ति के उस आत्मा के जो
उसके अपने भीतर ही है। इसी प्रकार परमेश्वर के विचारों
को भी परमेश्वर की आत्मा को छोड़ कर और कौन
जान सकता है। 12किन्तु हमने तो सांसारिक आत्मा नहीं
बल्कि वह आत्मा पायी है जो परमेश्वर से मिलती है
ताकि हम उन बातों को जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने हमें
मुक्त रूप से दिया है। 13उन ही बातों को हम मानवबुद्धि
द्वारा विचारे गये शब्दों में नहीं बोलते बल्कि आत्मा द्वारा
विचारे गये शब्दों से आत्मा की वस्तुओं की व्याख्या करते
हुए बोलते हैं। 14एक प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर की
आत्मा द्वारा प्रकाशित सत्य को ग्रहण नहीं करता क्योंकि

यदि ... गर्व करे यिर्म. 9:24

उसके लिए वे बातें निरी मूर्खता होती हैं, वह उन्हें समझ
नहीं पाता क्योंकि वे आत्मा के आधार पर ही परखी जा
सकती हैं। 15आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों का न्याय कर
सकता है किन्तु उसका न्याय कोई नहीं कर सकता। क्योंकि
शास्त्र कहता है:

16 “प्रभु के मन को किसने जाना?
उसको कौन सिखाए?”

यशायाह 40:13

किन्तु हमारे पास यीशु का मन है।

मनुष्यों का अनुसरण उचित नहीं

3 किन्तु हे भाइयो, मैं तुम लोगों से वैसे बात नहीं कर
सका जैसे आध्यात्मिक लोगों से करता हूँ। मुझे इसके
विपरीत तुम लोगों से वैसे बात करनी पड़ी जैसे सांसारिक
लोगों से की जाती है। यानी उनसे जो अभी मसीह में बच्चे
हैं। 2मैंने तुम्हें पीने को दूध दिया, ठोस आहार नहीं; क्योंकि
तुम अभी उसे खा नहीं सकते थे और न ही तुम इसे आज
भी खा सकते हो 3क्योंकि तुम अभी तक सांसारिक हो।
क्या तुम सांसारिक नहीं हो? जबकि तुममें आपसी ईर्ष्या
और कलह मौजूद है। और तुम सांसारिक व्यक्तियों जैसा
व्यवहार करते हो। 4जब तुममें से कोई कहता है, “मैं पौलुस
का हूँ” और दूसरा कहता है, “मैं अपुल्लोस का हूँ” तो क्या
तुम सांसारिक मनुष्यों का सा आचरण नहीं करते?

5अच्छा तो बताओ अपुल्लोस क्या है और पौलुस क्या
है? हम तो केवल वे सेवक हैं जिनके द्वारा तुमने विश्वास
को ग्रहण किया है। हममें से हर एक ने बस वह काम
किया है जो प्रभु ने हमें सौंपा था। 6मैंने बीज बोया, अपुल्लोस
ने उसे सींचा; किन्तु उसकी बढ़वार तो परमेश्वर ने ही
की। 7इस प्रकार न तो वह जिसने बोया, बड़ा है, और न ही
वह जिसने उसे सींचा। बल्कि बड़ा तो परमेश्वर है
जिसने उसकी बढ़वार की। 8वह जो बोता है और वह जो
सींचता है, दोनों का प्रयोजन समान है। सो हर एक अपने
कर्मों के परिणामों के अनुसार ही प्रतिफल पायेगा।
9परमेश्वर की सेवा में हम सब सहकर्मी हैं। तुम परमेश्वर
के खेत हो। परमेश्वर के मन्दिर हो। 10परमेश्वर के उस
अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया था, मैंने एक
कुशल प्रमुख शिल्पी के रूप में नींव डाली किन्तु उस पर
निर्माण तो कोई और ही करता है; किन्तु हर एक को
सावधानी के साथ ध्यान रखना चाहिये कि वह उस पर
निर्माण कैसे कर रहा है। 11क्योंकि जो नींव डाली गई है
वह स्वयं यीशु मसीह ही है और उससे भिन्न दूसरी नींव
कोई डाल ही नहीं सकता। 12यदि लोग उस नींव पर
निर्माण करते हैं, फिर चाहे वे उसमें सोना लगायें, चाँदी
लगायें, बहुमूल्य रत्न लगायें, लकड़ी लगायें, फूस लगायें
या तिनकों का प्रयोग करें, 13हर व्यक्ति का कर्म स्पष्ट
रूप से दिखाई देगा। क्योंकि वह दिन* उसे उजागर कर
देगा। क्योंकि वह दिन ज्वाला के साथ प्रकट होगा और
वही ज्वाला हर व्यक्ति के कर्मों को परखेगी कि वे कर्म
कैसे हैं। 14यदि उस नींव पर किसी व्यक्ति के कर्मों की
रचना टिकाऊ होगी 15तो वह उसका प्रतिफल पायेगा
और यदि किसी का कर्म उस ज्वाला में भस्म हो जायेगा
तो उसे हानि उठानी होगी। किन्तु फिर भी वह स्वयं वैसे
ही बच निकलेगा जैसे कोई आग लगे भवन में से भाग
कर बच निकले।

16क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग स्वयं परमेश्वर
का मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुममें निवास
करती है? 17यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को हानि
पहुँचाता है तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा। क्योंकि
परमेश्वर का मंदिर तो पवित्र है। हाँ, तुम ही तो वह मंदिर
हो।

18अपने आपको मत छलो। यदि तुममें से कोई यह
सोचता है कि इस युग के अनुसार वह बुद्धिमान है तो उसे
बस तथाकथित मूर्ख ही बने रहना चाहिये ताकि वह
सचमुच बुद्धिमान बन जाये; 19क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि
में सांसारिक चतुरता मूर्खता है। शास्त्र कहता है, “वही
(परमेश्वर) फँसा देता बुद्धिमानों को उनकी ही चतुरता
में।” 20और फिर, “जानता है प्रभु बुद्धिमानों के विचार
सब व्यर्थ हैं।” 21इसलिये मनुष्यों पर किसी को भी गर्व
नहीं करना चाहिये क्योंकि यह सब कुछ तुम्हारा ही तो
है। 22फिर चाहे वह पौलुस हो, अपुल्लोस हो या पतरस
चाहे संसार हो, जीवन हो या मृत्यु हो, चाहे ये आज की
बातें हों या आने वाले कल की। सभी कुछ तुम्हारा ही
तो है। 23और तुम मसीह के हो और मसीह परमेश्वर
का।

वह दिन वह दिन जब यीशु सभी लोगों का न्याय करने के
लिये आयेगा

मसीह के संदेशवाहक

4 हमारे बारे में किसी व्यक्ति को इस प्रकार सोचना
चाहिये कि हम लोग मसीह के सेवक हैं। परमेश्वर
ने हमें और रहस्यपूर्ण सत्य सौंपे हैं। 2और फिर जिन्हें ये
रहस्य सौंपे हैं, उन पर यह दायित्व भी है कि वे विश्वास
योग्य हों। 3मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं है कि तुम
लोग मेरा न्याय करो या मनुष्यों की कोई और अदालत। मैं
स्वयं भी अपना न्याय नहीं करता। 4क्योंकि मेरा मन
स्वच्छ है। किन्तु इसी कारण मैं छूट नहीं जाता। प्रभु तो
एक ही है जो न्याय करता है। 5इसलिये ठीक समय आने
से पहले अर्थात् जब तक प्रभु न आ जाये, तब तक
किसी भी बात का न्याय मत करो। वही अन्धेरे में छिपी
बातों को उजागर करेगा और मन की प्रेरणा को प्रकट
करेगा। उस समय परमेश्वर की ओर से हर किसी की
उपयुक्त प्रशंसा होगी।

6हे भाइयो, मैंने इन बातों को अपुल्लोस पर और स्वयं
अपने पर तुम लोगों के लिये ही चरितार्थ किया है ताकि
तुम हमारा उदाहरण देखते हुए उन बातों को न उलाँघ
जाओ जो शास्त्र में लिखी हैं। ताकि एक व्यक्ति का पक्ष लेते
हुए और दूसरे का विरोध करते हुए अहंकार में न भर
जाओ। 7कौन कहता है कि तू किसी दूसरे से अधिक
अच्छा है। तेरे पास अपना ऐसा क्या है? जो तुझे दिया नहीं
गया है? और जब तुझे सब कुछ किसी के द्वारा दिया गया है
तो फिर इस रूप में अभिमान किस बात का कि जैसे तूने
किसी से कुछ पाया ही न हो।

8तुम लोग सोचते हो कि जिस किसी वस्तु की तुम्हें
आवश्यकता थी, अब वह सब कुछ तुम्हारे पास है। तुम
सोचते हो अब तुम सम्पन्न हो गए हो। तुम हमारे बिना ही
राजा बन बैठे हो। कितना अच्छा होता कि तुम सचमुच
राजा होते ताकि तुम्हारे साथ हम भी राज्य करते। 9क्योंकि
मेरा विचार है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को कर्म–क्षेत्र
में उन लोगों के समान सबसे अंत में स्थान दिया है जिन्हें
मृत्यु–दण्ड दिया जा चुका है। क्योंकि हम समूचे संसार,
स्वर्गदूतों और लोगों के सामने तमाशा बने हैं। 10हम
मसीह के लिये मूर्ख बने हैं किन्तु तुम लोग मसीह में बहुत
बुद्धिमान हो। हम दुर्बल हैं किन्तु तुम तो बहुत सबल हो।
तुम सम्मानित हो और हम अपमानित। 11इस घड़ी तक
हम तो भूखे–प्यासे हैं। फटे–पुराने चिथड़े पहने हैं।
हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हम बेघर हैं।
12अपने हाथों से काम करते हुए हम मेहनत मज़दूरी करते
हैं। 13गाली खा कर भी हम आशीर्वाद देते हैं। सताये जाने
पर हम उसे सहते हैं। जब हमारी बदनामी हो जाती है, हम
तब भी मीठा बोलते हैं। हम अभी भी जैसे इस दुनिया का
मल–फेन और कूड़ा कचरा बने हुए हैं।

14तुम्हें लज्जित करने के लिये मैं यह नहीं लिख रहा
हूँ। बल्कि अपने प्रिय बच्चों के रूप में तुम्हें चेतावनी दे
रहा हूँ। 15क्योंकि चाहे तुम्हारे पास मसीह में तुम्हारे
दसियों हजार संरक्षक मौजूद हैं, किन्तु तुम्हारे पिता तो
अनेक नहीं हैं। क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह यीशु में मैं
तुम्हारा पिता बना हूँ। 16इसलिये तुमसे मेरा आग्रह है, मेरा
अनुकरण करो। 17मैंने इसीलिये तिमुथियुस को तुम्हारे
पास भेजा है। वह प्रभु में स्थित मेरा प्रिय एवम् विश्वास
करने योग्य पुत्र है। यीशु मसीह में मेरे आचरणों की वह
तुम्हें याद दिलायेगा। जिनका मैंने हर कहीं, हर कलीसिया
में उपदेश दिया है।

18कुछ लोग अंधकार में इस प्रकार फूल उठे हैं जैसे
अब मुझे तुम्हारे पास कभी आना ही न हो। 19अस्तु यदि
परमेश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास आऊँगा और
फिर अहंकार में फूले उन लोगों की मात्र वाचालता को
नहीं बल्कि उनकी शक्ति को देख लूँगा। 20क्योंकि परमेश्वर
का राज्य वाचालता पर नहीं, शक्ति पर टिका है। 21तुम
क्या चाहते हो:

हाथ में छड़ी थामे मैं तुम्हारे पास
आऊँ या कि प्रेम और
कोमल आत्मा साथ में लाऊँ?

कलीसिया में दुराचार

5 सचमुच ऐसा बताया गया है कि तुम लोगों में
दुराचार फैला हुआ है। ऐसा दुराचार– व्यभिचार
तो अधर्मियों तक में नहीं मिलता। जैसे कोई तो अपनी
विमाता तक के साथ सहवास करता है। 2और फिर तुम
लोग अभिमान में फूले हुए हो। किन्तु क्या तुम्हें इसके
लिये दुखी नहीं होना चाहिये? जो कोई ऐसा दुराचार
करता है उसे तो तुम्हें अपने बीच से निकाल बाहर करना
चाहिये था। 3मैं यद्यपि शारीरिक रूप से तुम्हारे बीच नहीं
हूँ किन्तु आत्मिक रूप से तो वहीं उपस्थित हूँ। और मानो
वहाँ उपस्थित रहते हुए जिसने ऐसे बुरे काम किये हैं,
उसके विरुद्ध मैं अपना यह निर्णय दे चुका हूँ 4कि जब

तुम मेरे साथ हमारे प्रभु यीशु के नाम में मेरी आत्मा और
हमारे प्रभु यीशु की शक्ति के साथ एकत्रित होओगे 5तो ऐसे
व्यक्ति को उसके पापपूर्ण मानव स्वभाव को नष्ट कर
डालने के लिये शैतान को सौंप दिया जायेगा ताकि प्रभु के
दिन उसकी आत्मा का उद्धार हो सके।

6तुम्हारा यह बड़बोलापन अच्छा नहीं है। तुम इस कहावत
को तो जानते ही हो, "थोड़ा सा ख़मीर आटे के पूरे लौंदे को
खमीरमय कर देता है।" 7पुराने ख़मीर से छुटकारा पाओ
ताकि तुम आटे का नया लौंदा बन सको। तुम तो बिना
ख़मीर वाली फ़सह की रोटी के समान हो। हमें पवित्र
करने के लिये मसीह को फ़सह के मेमने के रूप में बलि
चढ़ा दिया गया। 8इसलिये आओ हम अपना फ़सह पर्व
बुराई और दुष्टता से युक्त पुराने ख़मीर की रोटी से नहीं
बल्कि निष्ठा और सत्य से युक्त बिना ख़मीर की रोटी से
मनायें।

9अपने पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि तुम्हें उन
लोगों से अपना नाता नहीं रखना चाहिए जो व्यभिचारी
हैं। 10मेरा यह प्रयोजन बिलकुल नहीं था कि तुम इस
दुनिया के व्यभिचारियों, लोभियों, ठगों या मूर्ति-पूजकों
से कोई सम्बन्ध ही मत रखो। ऐसा होने पर तो तुम्हें इस
संसार से ही निकल जाना होगा। 11किन्तु मैंने तुम्हें जो
लिखा है, वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति से नाता मत
रखो जो अपने आपको मसीही बन्धु कहला कर भी
व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक चुगलखोर, पियक्कड़ या
एक ठग है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो भोजन भी ग्रहण मत
करो।

12जो लोग बाहर के हैं, कलीसिया के नहीं, उनका
न्याय करने का भला मेरा क्या काम। क्या तुम्हें उन ही
का न्याय नहीं करना चाहिये जो कलीसिया के भीतर के
हैं? 13कलीसिया के बाहर वालों का न्याय तो परमेश्वर
करेगा। शास्त्र कहता है, "अपने बीच से, निकाल करो
बाहर तुम पापी को।"*

आपसी विवादों का निबटारा

6 क्या तुममें से कोई ऐसा है जो अपने साथी के साथ
कोई झगड़ा होने पर परमेश्वर के पवित्र पुरुषों के
पास न जा कर अधर्मी लोगों की अदालत में जाने का
साहस करता हो? 2अथवा क्या तुम नहीं जानते कि
परमेश्वर के पवित्र पुरुष ही जगत का न्याय करेंगे? और
जब तुम्हारे द्वारा सारे संसार का न्याय किया जाना है तो
क्या अपनी इन छोटी-छोटी बातों का न्याय करने योग्य
तुम नहीं हो? 3क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का
भी न्याय करेंगे? फिर इस जीवन की इन रोज़मर्रा की
छोटी मोटी बातों का तो कहना ही क्या। 4यदि हर दिन
तुम्हारे बीच कोई न कोई विवाद रहता ही है तो क्या
न्यायाधीश के रूप में तुम ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति करोगे
जिनका कलीसिया में कोई स्थान नहीं है। 5यह मैं तुमसे
इस लिये कह रहा हूँ कि तुम्हें कुछ लाज आये। क्या स्थिति
इतनी बिगड़ चुकी है कि तुम्हारे बीच कोई ऐसा बुद्धिमान
पुरुष है ही नहीं जो अपने मसीही भाइयों के आपसी झगड़े
सुलझा सके? 6क्या एक भाई कभी अपने दूसरे भाई से
मुकदमा लड़ता है! और तुम तो अविश्वासियों के सामने
ऐसा कर रहे हो।

7वास्तव में तुम्हारी पराजय तो इसी में हो चुकी
कि तुम्हारे बीच आपस में कानूनी मुकदमे हैं। इसके स्थान
पर तुम आपस में अन्याय ही क्यों नहीं सह लेते? अपने
आप को क्यों नहीं लुट जाने देते। 8तुम तो स्वयं
अन्याय करते हो और अपने ही मसीही भाइयों को लूटते
हो!

9अथवा क्या तुम नहीं जानते कि बुरे लोग परमेश्वर के
राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे? अपने आप को मूर्ख
मत बनाओ। यौनानाचार करने वाले, मूर्ति पूजक,
व्यभिचारी, गुदा-भंजन कराने वाले, लौंडेबाज़, 10लुटेरे,
लालची, पियक्कड़, चुगलखोर और ठग परमेश्वर के राज्य
के उत्तराधिकारी नहीं होंगे। 11तुममें से कुछ ऐसे ही थे।
किन्तु अब तुम्हें धोया गया और पवित्र कर दिया है। तुम्हें
परमेश्वर की सेवा में अर्पित कर दिया गया है। प्रभु यीशु
मसीह के नाम और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा
उन्हें धर्मी करार दिया जा चुका है।

अपने शरीर को परमेश्वर की महिमा में लगाओ

12 "मैं कुछ भी करने को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु हर कोई
बात हितकर नहीं होती। हाँ! "मैं सब कुछ करने को
स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु मैं अपने पर किसी को भी हावी नहीं
होने दूँगा। 13कहा जाता है, "भोजन पेट के लिये, और
पेट भोजन के लिये है।" किन्तु परमेश्वर इन दोनों को ही
समाप्त कर देगा। और हमारे शरीर भी तो यौन-अनाचार

अपने ... पापी को व्यवस्था. 22:21-24

के लिये नहीं हैं बल्कि प्रभु की सेवा के लिये हैं। और प्रभु
हमारी देह के कल्याण के लिये है। [14]परमेश्वर ने केवल
प्रभु को ही पुनर्जीवित नहीं किया बल्कि अपनी शक्ति से
वह मृत्यु से हम सब को भी जिला उठायेगा। [15]क्या तुम
नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर स्वयं यीशु मसीह से जुड़े हैं?
तो क्या मुझे उन्हें, जो मसीह के अंग हैं, किसी वेश्या के
अंग बना देना चाहिये? [16]निश्चय ही नहीं। अथवा क्या तुम
यह नहीं जानते, कि जो अपने आपको वेश्या से जोड़ता है,
वह उसके साथ एक देह हो जाता है। शास्त्र में कहा गया है:
“क्योंकि वे दोनों एक देह हो जायेंगे।”* [17]किन्तु वह जो
अपनी लौ प्रभु से लगाता है, उसकी आत्मा में एकाकार हो
जाता है।

[18]यौनाचार से दूर रहो। दूसरे सभी पाप जिन्हें एक व्यक्ति
करता है, उसके शरीर से बाहर होते हैं किन्तु ऐसा व्यक्ति
जो व्यभिचार करता है वह तो अपने शरीर के ही विरुद्ध
पाप करता है। [19]अथवा क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे
शरीर उस पवित्र आत्मा के मंदिर हैं जिसे तुमने परमेश्वर
से पाया है और जो तुम्हारे भीतर निवास करता है। और
वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं है [20]क्योंकि परमेश्वर ने
तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा है इसलिये अपने शरीरों के
द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।

विवाह

7 अब उन बातों के बारे में जो तुमने लिखीं थीं:
अच्छा यह है कि कोई पुरुष किसी स्त्री को छुए ही
नहीं। [2]किन्तु यौन अनैतिकता की घटनाओं की
सम्भावनाओं के कारण हर पुरुष की अपनी पत्नी होनी
चाहिये और हर स्त्री का अपना पति। [3]पति को चाहिये कि
पत्नी के रूप में जो कुछ पत्नी का अधिकार बनता है, उसे
दे। और इसी प्रकार पत्नी को भी चाहिये कि पति को
उसका यथोचित प्रदान करे। [4]अपने शरीर पर पत्नी का
कोई अधिकार नहीं हैं बल्कि उसके पति का है। और इसी
प्रकार पति का भी उसके अपने शरीर पर कोई अधिकार
नहीं है, बल्कि उसकी पत्नी का है। [5]अपने आप को प्रार्थना
में समर्पित करने के लिये थोड़े समय तक एक दूसरे से
समागम न करने की आपसी सहमति को छोड़कर, एक
दूसरे को संभोग से वंचित मत करो। फिर आत्म–संयम के
अभाव के कारण कहीं शैतान तुम्हें किसी परीक्षा में न
डाल दे, इसलिये तुम फिर समागम कर लो। [6]मैं यह एक
छूट के रूप में कह रहा हूँ, आदेश के रूप में नहीं। [7]मैं तो
चाहता हूँ सभी लोग मेरे जैसे होते। किन्तु हर व्यक्ति को
परमेश्वर से एक विशेष बरदान मिला है। किसी का जीने
का एक ढंग है तो दूसरे का दूसरा।

[8]अब मुझे अविवाहितों और विधवाओं के बारे में यह
कहना है: यदि वे मेरे समान अकेले ही रहें तो उनके लिए
यह उत्तम रहेगा। [9]किन्तु यदि वे अपने आप पर काबू न
रख सकें तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिये; क्योंकि वासना
की आग में जलते रहने से विवाह कर लेना अच्छा है।

[10]अब जो विवाहित हैं उनको मेरा यह आदेश है,
(यद्यपि यह मेरा नहीं है, बल्कि प्रभु का आदेश है) कि
किसी पत्नी को अपना पति नहीं त्यागना चाहिये [11]किन्तु
यदि वह उसे छोड़ ही दे तो उसे फिर अनब्याहा ही रहना
चाहिये या अपने पति से मेल–मिलाप कर लेना चाहिये।
और ऐसे ही पति को भी अपनी पत्नी को छोड़ना नहीं
चाहिये।

[12]अब शेष लोगों से मेरा यह कहना है: (यह मैं कह रहा
हूँ न कि प्रभु) यदि किसी मसीही भाई की कोई ऐसी पत्नी
है जो इस मत में विश्वास नहीं रखती और उसके साथ
रहने को सहमत है तो उसे त्याग नहीं देना चाहिये। [13]ऐसे
ही यदि किसी स्त्री का कोई ऐसा पति है जो पंथ का विश्वासी
नहीं है किन्तु उसके साथ रहने को सहमत है तो उस स्त्री
को भी अपना पति त्यागना नहीं चाहिये। [14]क्योंकि वह
अविश्वासी पति विश्वासीपत्नी से निकट संबन्धों के कारण
पवित्र हो जाता है और इसी प्रकार वह अविश्वासिनी पत्नी
भी अपने विश्वासी पति के निरन्तर साथ रहने से पवित्र हो
जाती है। नहीं तो तुम्हारी संतान अस्वच्छ हो जाती किन्तु
अब तो वे पवित्र हैं।

[15]फिर भी यदि कोई अविश्वासी अलग होना चाहता है
तो वह अलग हो सकता है। ऐसी स्थितियों में किसी मसीही
भाई या बहन पर कोई बंधन लागू नहीं होगा। परमेश्वर ने
हमें शांति के साथ रहने को बुलाया है। [16]हे पत्नियो, क्या
तुम जानती हो? हो सकता है तुम अपने अविश्वासी पति
को बचा लो।

जैसे हो, वैसे जिओ

[17]प्रभु ने जिसको जैसा दिया है और जिसको जिस
रूप में चुना है, उसे वैसे ही जीना चाहिये। सभी चर्चों में

क्योंकि ... जायेंगे उत्पत्ति 2:24

मैं इसी का आदेश देता हूँ। 18जब किसी को परमेश्वर के
द्वारा बुलाया गया, तब यदि वह ख़तना युक्त था तो उसे
अपना ख़तना छिपाना नहीं चाहिये। और किसी को ऐसी
दशा में बुलाया गया जब वह बिना ख़तने के था तो उसका
ख़तना कराना नहीं चाहिये। 19ख़तना तो कुछ नहीं है,
और न ही ख़तना नहीं होना कुछ है। बल्कि परमेश्वर के
आदेशों का पालन करना ही सब कुछ है। 20हर किसी को
उसी स्थिति में रहना चाहिये, जिसमें उसे बुलाया गया है।
21क्या तुझे दास के रूप में बुलाया गया है? तू इसकी चिंता
मत कर। किन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सकता है तो आगे बढ़
और अवसर का लाभ उठा। 22क्योंकि जिसे प्रभु के दास
के रूप में बुलाया गया, वह तो प्रभु का स्वतन्त्र व्यक्ति है।
इसी प्रकार जिसे स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में बुलाया गया, वह
मसीह का दास है। 23परमेश्वर ने कीमत चुका कर तुम्हें
खरीदा है। इसलिए मनुष्यों के दास मत बनो। 24हे भाइयो,
तुम्हें जिस भी स्थिति में बुलाया गया है, परमेश्वर के सामने
उसी स्थिति में रहो।

विवाह करने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

25अविवाहितों के सम्बन्ध में प्रभु की ओर से मुझे कोई
आदेश नहीं मिला है। इसीलिये मैं प्रभु की दया प्राप्त करके
विश्वसनीय होने के कारण अपनी राय देता हूँ। 26मैं सोचता
हूँ कि इस वर्तमान संकट के कारण यही अच्छा है कि
कोई व्यक्ति मेरे समान ही अकेला रहे। 27यदि तुम विवाहित
हो तो उससे छुटकारा पाने का यत्न मत करो। यदि तुम
स्त्री से मुक्त हो तो उसे खोजो मत। 28किन्तु यदि तुम्हारा
जीवन विवाहित है तो तुमने कोई पाप नहीं किया है। और
यदि कोई कुँवारी कन्या विवाह करती है, तो कोई पाप
नहीं करती है किन्तु ऐसे लोग शारीरिक कष्ट उठायेंगे
जिनसे मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

29हे भाइयो, मैं तो यही कह रहा हूँ, वक्त बहुत थोड़ा
है। इसलिये अब से आगे, जिनके पास पत्नियाँ हैं, वे ऐसे
रहें, मानो उनके पास पत्नियाँ हैं ही नहीं। 30और वे जो
बिलख रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानो कभी दुखी ही न हुए हों।
और जो आनन्दित हैं, वे ऐसे रहें, मानो प्रसन्न ही न हुए हों।
और वे जो वस्तुएँ मोल लेते हैं, ऐसे रहें मानो उनके पास
कुछ भी न हो। 31और जो सांसारिक सुख–विलासों का
भोग कर रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानों वे वस्तुएँ उनके
लिए कोई महत्त्व नहीं रखतीं। क्योंकि यह संसार अपने
वर्तमान स्वरूप में नाशमान है।

32मैं चाहता हूँ आप लोग चिंताओं से मुक्त रहें। एक
अविवाहित व्यक्ति प्रभु सम्बन्धी विषयों के चिंतन में लगा
रहता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। 33किन्तु एक
विवाहित व्यक्ति सांसारिक विषयों में ही लिप्त रहता है कि
वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न कर सकता है। 34इस
प्रकार उसका व्यक्तित्व बँट जाता है। और ऐसे ही किसी
अविवाहित स्त्री या कुँवारी कन्या को जिसे बस प्रभु सम्बन्धी
विषयों की ही चिंता रहती है। जिससे वह अपने शरीर और
अपनी आत्मा से पवित्र हो सके। किन्तु एक विवाहित स्त्री
सांसारिक विषयभोगों में इस प्रकार लिप्त रहती है कि वह
अपने पति को रिझाती रह सके। 35ये मैं तुमसे तुम्हारे भले
के लिये ही कह रहा हूँ तुम पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये
नहीं। बल्कि अच्छी व्यवस्था के हित में और इसलिए भी
कि तुम चित्त की चंचलता के बिना प्रभु को समर्पित हो
सको।

36यदि कोई सोचता है कि वह अपनी युवा हो
चुकी कुँवारी प्रिया के प्रति उचित नहीं कर रहा है
और यदि उसकी कामभावना तीव्र है, तथा दोनों को ही
आगे बढ़ कर विवाह कर लेने की आवश्यकता है, तो
जैसा वह चाहता है, उसे आगे बढ़ कर वैसा कर लेना
चाहिये। वह पाप नहीं कर रहा है। उन्हें विवाह कर
लेना चाहिये। 37किन्तु जो अपने मन में बहुत पक्का है
और जिस पर कोई दबाव भी नहीं हैं, बल्कि जिसका
अपनी इच्छाओं पर भी पूरा बस है और जिसने अपने मन
में पूरा निश्चय कर लिया है कि वह अपनी प्रिया से
विवाह नहीं करेगा तो वह अच्छा ही कर रहा है। 38सो वह
जो अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है, अच्छा करता है
और जो उससे विवाह नहीं करता, वह और भी अच्छा
करता है।

39जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तभी
तक वह विवाह के बन्धन में बँधी होती है किन्तु यदि
उसके पति का देहान्त हो जाता है, तो जिसके साथ चाहे,
विवाह करने, वह स्वतन्त्र है किन्तु केवल प्रभु में। 40पर
यदि जैसी वह है, वैसी ही रहती है तो अधिक प्रसन्न रहेगी।
यह मेरा विचार है। और मैं सोचता हूँ कि मुझमें भी परमेश्वर
के आत्मा का ही निवास है।

चढ़ावे का भोजन

8 अब मूर्तियों पर चढ़ाई गई बलि के विषय में: हम
यह जानते हैं, “हम सभी ज्ञानी है।” “ज्ञान” लोगों को
अहंकार से भर देता है। किन्तु प्रेम से व्यक्ति अधिक
शक्तिशाली बनता है। 2यदि कोई सोचे कि वह कुछ जानता
है तो जिसे जानना चाहिये उसके बारे में तो उसने अभी
कुछ जाना ही नहीं। 3यदि कोई परमेश्वर को प्रेम करता है
तो वह परमेश्वर के द्वारा जाना जाता है।

4सो मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन के बारे में हम जानते
हैं कि इस संसार में वास्तविक प्रतिमा कहीं नहीं है। और
यह कि ‘परमेश्वर केवल एक ही है।’ 5और धरती या
आकाश में यद्यपि तथाकथित देवता बहुत से हैं (बहुत से
“देवता” हैं, बहुत से “प्रभु” हैं।) 6किन्तु हमारे लिये तो एक
ही परमेश्वर है, हमारा पिता। उसी से सब कुछ आता है।
और उसी के लिये हम जीते हैं। प्रभु केवल एक है, यीशु
मसीह। उसी के द्वारा सब वस्तुओं का अस्तित्व है और
उसी के द्वारा हमारा जीवन है।

7किन्तु यह ज्ञान हर किसी के पास नहीं है। कुछ लोग
जो अब तक मूर्ति उपासना के आदी हैं, ऐसी वस्तुएँ खाते हैं
और सोचते हैं जैसे मानो वे वस्तुएँ मूर्ति का प्रसाद हों।
उनके इस कर्म से उनकी आत्मा निर्बल होने के कारण
दूषित हो जाती है। 8किन्तु वह प्रसाद तो हमें परमेश्वर के
निकट नहीं ले जायेगा। यदि हम उसे न खायें तो कुछ घट
नहीं जाता और यदि खायें तो कुछ बढ़ नहीं जाता।

9सावधान रहो। कहीं तुम्हारा यह अधिकार उनके लिये,
जो दुर्बल हैं, पाप में गिरने का कारण न बन जाये।
10क्योंकि दुर्बल मन का कोई व्यक्ति यदि तुझ जैसे इस
विषय के जानकार को मूर्ति वाले मंदिर में खाते हुए
देखता है तो उसका दुर्बल मन क्या उस हद तक नहीं
भटक जायेगा कि वह मूर्ति पर बलि चढ़ाई गयी वस्तुओं
को खाने लगे। 11तेरे ज्ञान से, दुर्बल मन के व्यक्ति का तो
नाश ही हो जायेगा तेरे उसी बन्धु का, जिसके लिए मसीह
ने जान दे दी। 12इस प्रकार अपने भाइयों के विरुद्ध पाप
करते हुए और उनके दुर्बल मन को चोट पहुँचाते हुए तुम
लोग मसीह के विरुद्ध पाप कर रहे हो। 13इस लिए यदि
भोजन मेरे भाई को पाप की राह पर बढ़ाता है तो मैं फिर
कभी भी माँस नहीं खाऊँगा ताकि मैं अपने भाई के लिए,
पाप करने की प्रेरणा न बनूँ।

पौलुस भी दूसरे प्रेरितों जैसा ही है

9 क्या मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ? क्या मैं भी एक प्रेरित नहीं
हूँ? क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के दर्शन नहीं
किये हैं? क्या तुम लोग प्रभु में मेरे ही कर्म का परिणाम
नहीं हो? 2चाहे दूसरों के लिये मैं प्रेरित न भी होऊँ –तो भी
मैं तुम्हारे लिये तो प्रेरित हूँ ही। क्योंकि तुम एक ऐसी मुहर
के समान हो जो प्रभु में मेरे प्रेरित होने को प्रमाणित
करती है।

3वे लोग जो मेरी जाँच करना चाहते हैं, उनके प्रति
आत्मरक्षा में मेरा उत्तर यह है: 4क्या मुझे खाने पीने का
अधिकार नहीं है? 5क्या मुझे यह अधिकार नहीं कि मैं
अपनी विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ ले जाऊँ? जैसा
कि दूसरे प्रेरित, प्रभु के बन्धु और पतरस ने किया है।
6अथवा क्या बरनाबास और मुझे ही अपनी आजीविका
कमाने के लिये कोई काम करना चाहिए? 7सेना में ऐसा
कौन होगा जो अपने ही खर्च पर एक सिपाही के रूप में
काम करे। अथवा कौन होगा जो अंगूर की बगिया लगाकर
भी उसका फल न चखे? या कोई ऐसा है जो भेड़ों के रेवड़
की देखभाल तो करता हो पर उनका थोड़ा बहुत भी दूध न
पीता हो?

8क्या मैं मानवीय चिन्तन के रूप में ही ऐसा कह
रहा हूँ? आखिरकार क्या व्यवस्था का विधान भी
ऐसा ही नहीं कहता? 9मूसा की व्यवस्था के विधान
में लिखा है, “खलिहान में बैल का मुँह मत बाँधो।”*
परमेश्वर क्या केवल बैलों के बारे में बता रहा है?
10नहीं! निश्चित रूप से वह इसे क्या हमारे लिये नहीं
बता रहा? हाँ, यह हमारे लिये ही लिखा गया था।
क्योंकि खेत जोतने वाला किसी आशा से ही खेत जोतने
और खलिहान में भूसे से अनाज अलग करने वाला
फसल का कुछ भाग पाने की आशा तो रखेगा ही।
11फिर यदि हमने तुम्हारे हित के लिये आध्यात्मिकता के
बीज बोये हैं तो हम तुमसे भौतिक वस्तुओं की फसल
काटना चाहते हैं, यह क्या कोई बहुत बड़ी बात है? 12यदि
दूसरे लोग तुमसे भौतिक वस्तुएँ पाने का अधिकार
रखते हैं तो हमारा तो तुम पर क्या और भी अधिक
अधिकार नहीं हैं? किन्तु हमने इस अधिकार का
उपयोग नहीं किया है। बल्कि हम तो सब कुछ सहते रहे हैं

खलिहान ... बाँधो व्यवस्था. 25:4

ताकि हम मसीह के सुसमाचार के मार्ग में कोई बाधा न
डाल दें। [13]क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग मंदिर में काम
करते हैं, वे अपना भोजन मन्दिर से ही पाते हैं। और जो
नियमित रूप से वेदी की सेवा करते हैं, वेदी के चढ़ावे में
उनका हिस्सा होता है? [14]इसी प्रकार प्रभु ने व्यवस्था दी है
कि सुसमाचार के प्रचारकों की आजीविका सुसमाचार के
प्रचार से ही होनी चाहिये।

[15]किन्तु इन अधिकारों में से मैंने एक का भी कभी
प्रयोग नहीं किया। और ये बातें मैंने इसलिये लिखी भी
नहीं हैं कि ऐसा कुछ मेरे विषय में किया जाये। बजाय
इसके कि कोई मुझ से उस बात को ही छीन ले जिसका
मुझे गर्व है। इस से तो मैं मर जाना ही ठीक समझूँगा।
[16]इसलिये यदि मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ तो इसमें
मुझे गर्व करने का कोई हेतु नहीं हैं क्योंकि मेरा तो यह
कर्तव्य है। और यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ तो
मेरे लिए यह कितना बुरा होगा। [17]फिर यदि यह मैं अपनी
इच्छा से करता हूँ तो मैं इसका फल पाने योग्य हूँ, किन्तु
यदि अपनी इच्छा से नहीं बल्कि किसी नियुक्ति के कारण
यह काम मुझे सौंपा गया है [18]तो फिर मेरा प्रतिफल काहे
का। इसलिये जब मैं सुसमाचार का प्रचार करूँ तो बिना
कोई मूल्य लिये ही उसे करूँ। ताकि सुसमाचार के प्रचार
में जो कुछ पाने का मेरा अधिकार है, मैं उसका पूरा
उपयोग न करूँ।

[19]यद्यपि मैं किसी भी व्यक्ति के बन्धन में नहीं हूँ, फिर
भी मैंने स्वयं को आप सब का सेवक बना लिया है। ताकि
मैं अधिकतर लोगों को जीत सकूँ। [20]यहूदियों के लिये मैं
एक यहूदी जैसा बना, ताकि मैं यहूदियों को जीत सकूँ।
जो लोग व्यवस्था के विधान के अधीन हैं, उनके लिये मैं
एक ऐसा व्यक्ति बना जो व्यवस्था के विधान के अधीन
जैसा है। यद्यपि मैं स्वयं व्यवस्था के विधान के अधीन
नहीं हूँ। यह मैंने इसलिये किया कि मैं व्यवस्था के विधान
के अधीनों को जीत सकूँ। [21]मैं एक ऐसा व्यक्ति भी बना
जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानता। यद्यपि मैं परमेश्वर
की व्यवस्था से रहित नहीं हूँ बल्कि मसीह की व्यवस्था
के अधीन हूँ। ताकि मैं जो व्यवस्था के विधान को नहीं
मानते हैं उन्हें जीत सकूँ। [22]जो दुर्बल हैं, उनके लिये मैं
दुर्बल बना ताकि मैं दुर्बलों को जीत सकूँ। हर किसी के
लिये मैं हर किसी के जैसा बना ताकि हर सम्भव उपाय
से उनका उद्धार कर सकूँ। [23]यह सब कुछ मैं सुसमाचार
के लिये करता हूँ ताकि इसके वरदानों में मेरा भी कुछ
भाग हो।

[24]क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि खेल के मैदान में
दौड़ते तो सभी धावक हैं किन्तु पुरस्कार किसी एक को
ही मिलता है। एसे दौड़ो कि जीत तुम्हारी ही हो! [25]किसी
खेल प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतियोगी को हर प्रकार का
आत्मसंयम करना होता है। वे एक नाशमान जयमाल से
सम्मानित होने के लिये ऐसा करते हैं किन्तु हम तो एक
अविनाशी मुकुट को पाने के लिए यह करते हैं। [26]इस
प्रकार मैं उस व्यक्ति के समान दौड़ता हूँ जिसके सामने
एक लक्ष्य है। मैं हवा में मुक्के नहीं मारता। [27]बल्कि मैं तो
अपने शरीर को कठोर अनुशासन में तपा कर, उसे अपने
वश में करता हूँ। ताकि कहीं ऐसा न हो जाय कि दूसरों को
उपदेश देने के बाद परमेश्वर के द्वारा मैं ही व्यर्थ ठहरा
दिया जाऊँ।

यहूदियों जैसे मत बनो

10 हे भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो
कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छत्र छाया में
सुरक्षा पूर्वक लाल सागर पार कर गए थे। [2]उन सब को
बादल के नीचे, समुद्र के बीच मूसा के अनुयायियों के रूप
में बपतिस्मा दिया गया था। [3]उन सभी ने समान आध्यात्मिक
भोजन खाया था [4]और समान आध्यात्मिक जल पिया था
क्योंकि वे अपने साथ चल रही उस आध्यात्मिक चट्टान से
ही जल ग्रहण कर रहे थे। और वह चट्टान थी मसीह।
[5]किन्तु उनमें से अधिकांश लोगों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं
था, इसीलिये वे मरुभूमि में मारे गये।

[6]ये बातें ऐसे घटीं कि हमारे लिये उदाहरण सिद्ध हों और
हम बुरी बातों की कामना न करें जैसे उन्होंने की थी।
[7]मूर्ति-पूजक मत बनो, जैसे कि उनमें से कुछ थे। शास्त्र
कहता है: "व्यक्ति खाने पीने के लिये बैठा और परस्पर
आनन्द मनाने के लिए उठा।" [8]सो आओ हम कभी
व्यभिचार न करें जैसे उनमें से कुछ किया करते थे। इसी
नाते उनमें से 23,000 व्यक्ति एक ही दिन मर गए। [9]आओ
हम मसीह की परीक्षा न लें, जैसे कि उनमें से कुछ ने ली
थी। परिणामस्वरूप साँपों से डसे जाकर वे मारे गए।
[10]शिकवा शिकायत मत करो जैसे कि उनमें से कुछ किया
करते थे और इसी कारण विनाश के स्वर्गदूत द्वारा मार
डाले गए।

11ये बातें उनके साथ ऐसे घटीं कि उदाहरण रहे। और
उन्हें लिख दिया गया कि हमारे लिए जिन पर युगों का
अन्त उतरा हुआ है, चेतावनी रहे। 12इस लिये जो यह
सोचता है कि वह दृढ़ता के साथ खड़ा है, उसे सावधान
रहना चाहिये कि वह गिर न पड़े। 13तुम किसी ऐसी परीक्षा
में नहीं पड़े हो, जो मनुष्यों के लिये सामान्य नहीं है। परमेश्वर
विश्वसनीय है। वह तुम्हारी सहन शक्ति से अधिक तुम्हें
परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। परीक्षा के साथ साथ उससे बचने
का मार्ग भी वह तुम्हें देगा ताकि तुम परीक्षा को उत्तीर्ण
कर सको।

14हे मेरे प्रिय मित्रो, अंत में मैं कहता हूँ मूर्ति उपासना से
दूर रहो। 15तुम्हें समझदार समझ कर मैं ऐसा कह रहा हूँ।
जो मैं कह रहा हूँ, उसे अपने आप परखो। 16धन्यवाद का
वह प्याला जिसके लिये हम धन्यवाद देते हैं, वह क्या मसीह
के लहू में हमारी साझेदारी नहीं है? वह रोटी जिसे हम
विभाजित करते हैं, क्या यीशु की देह में हमारी साझेदारी
नहीं? 17रोटी का होना एक ऐसा तथ्य है, जिसका अर्थ है
कि हम सब एक ही शरीर से हैं। क्योंकि उस एक रोटी में
ही हम सब साझेदार हैं।

18उन इस्राएलियों के बारे में सोचो, जो बलि की वस्तुएँ
खाते हैं। क्या वे उस वेदी के साझेदार नहीं हैं? 19इस बात
को मेरे कहने का प्रयोजन क्या है? क्या मैं यह कहना
चाहता हूँ कि मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन कुछ है या
कि मूर्ति कुछ भी नहीं है। नहीं। 20बल्कि मेरा आशय तो
यह है कि वे अधर्मी जो बलि चढ़ाते हैं, वे उन्हें परमेश्वर
के लिये नहीं, बल्कि दुष्ट आत्माओं के लिये चढ़ाते हैं।
और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के साझेदार बनो।
21तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे में से
एक साथ नहीं पी सकते। तुम प्रभु के भोजन की चौकी
और दुष्टात्माओं के भोजन की चौकी, दोनों में एक साथ
हिस्सा नहीं बँटा सकते। 22क्या हम प्रभु को चिड़ाना चाहते
हैं? क्या जितना शक्तिशाली वह है, हम उससे अधिक
शक्तिशाली हैं?

अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करो

23जैसा कि कहा गया है कि हम कुछ भी करने के
लिये स्वतन्त्र हैं। पर सब कुछ हितकारी तो नहीं है। ‘हम
कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं’ किन्तु हर किसी बात से
विश्वास सुदृढ़ तो नहीं होता। 24किसी को भी मात्र स्वार्थ
की ही चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि औरों के परमार्थ
की भी सोचनी चाहिये।

25बाजार में जो कुछ बिकता है, अपने अन्तर्मन के
अनुसार वह सब कुछ खाओ। उसके बारे में कोई प्रश्न
मत करो। 26क्योंकि शास्त्र कहता है: “यह धरती और इस
पर जो कुछ है, सब प्रभु का है।”*

27यदि अविश्वासियों में से कोई व्यक्ति तुम्हें भोजन पर
बुलाये और तुम वहाँ जाना चाहो तो तुम्हारे सामने जो भी
परोसा गया है, अपने अन्तर्मन के अनुसार सब खाओ।
कोई प्रश्न मत पूछो। 28किन्तु यदि कोई तुम लोगों को यह
बताये, “यह देवता पर चढ़ाया गया चढ़ावा है” तो जिसने
तुम्हें यह बताया है, उसके कारण और अपने अन्तर्मन के
कारण उसे मत खाओ। 29मैं जब अन्तर्मन कहता हूँ तो
मेरा अर्थ तुम्हारे अन्तर्मन से नहीं बल्कि उस दूसरे व्यक्ति
के अन्तर्मन से है। एकमात्र यही कारण है। क्योंकि मेरी
स्वतन्त्रता भला दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन द्वारा लिये गये
निर्णय से सीमित क्यों रहे? 30यदि मैं धन्यवाद देकर, भोजन
में हिस्सा लेता हूँ तो जिस वस्तु के लिये मैं परमेश्वर को
धन्यवाद देता हूँ, उसके लिये मेरी आलोचना नहीं की जानी
चाहिये।

31इसलिये चाहे तुम खाओ, चाहे पिओ, चाहे कुछ
और करो, बस सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये
करो। 32यहूदियों के लिये या ग़ैर यहूदियों के लिये या जो
परमेश्वर के कलीसिया के हैं, उन के लिये कभी बाधा
मत बनो 33जैसे मैं स्वयं हर प्रकार से हर किसी को प्रसन्न
रखने का जतन करता हूँ, और बिना यह सोचे कि मेरा
स्वार्थ क्या है, परमार्थ की सोचता हूँ ताकि उनका उद्धार
हो।

11 सो तुम लोग वैसे ही मेरा अनुसरण करो जैसे मैं
मसीह का अनुसरण करता हूँ।

अधीन रहना

2मैं तुम्हारी प्रशँसा करता हूँ। क्योंकि तुम मुझे हर
समय याद करते रहते हो; और जो शिक्षाएँ मैंने तुम्हें दी
हैं, उनका सावधानी से पालन कर रहे हो। 3पर मैं चाहता
हूँ कि तुम यह जान लो कि स्त्री का सिर पुरुष है, पुरुष
का सिर मसीह है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

यह ... का है भजन. 24:1; 50:12; 89:11

4हर ऐसा पुरुष जो सिर ढक कर प्रार्थना करता है या परमेश्वर की ओर से बोलता है, वह परमेश्वर का अपमान करता है जो अपना सिर है। 5पर हर ऐसी स्त्री जो बिना सिर ढके प्रार्थना करती है या जनता में परमेश्वर की ओर से बोलती है, वह अपने पुरुष का अपमान करती है जो उसका सिर है। वह ठीक उस स्त्री के समान है जिसने अपना सिर मुँडवा दिया है। 6यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने बाल भी क्यों नहीं मुँडवा लेती। किन्तु यदि स्त्री के लिये बाल मुँडवाना लज्जा की बात है तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये। 7किन्तु पुरुष के लिये अपना सिर ढकना उचित नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप और महिमा का प्रतिबिम्ब है। किन्तु एक स्त्री अपने पुरुष की महिमा को प्रतिबिंबित करती है 8मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि पुरुष किसी स्त्री से नहीं, बल्कि स्त्री पुरुष से बनी है। 9पुरुष स्त्री के लिये नहीं रचा गया बल्कि स्त्री की रचना पुरुष के लिये की गयी है। 10इसलिये परमेश्वर ने उसे जो अधिकार दिया है, उसके प्रतीक रूप में स्त्री को चाहिये कि वह अपना सिर ढके। उसे स्वर्गदूतों के कारण भी ऐसा करना चाहिये।

11फिर भी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतन्त्र हैं और न ही पुरुष स्त्री से। 12क्योंकि जैसे पुरुष से स्त्री आयी, वैसे ही स्त्री ने पुरुष को जन्म दिया। किन्तु सब कोई परमेश्वर से आते हैं। 13स्वयं निर्णय करो। क्या जनता के बीच एक स्त्री का सिर उघाड़े परमेश्वर की प्रार्थना करना अच्छा लगता है? 14क्या स्वयं प्रकृति तुम्हें नहीं सिखाती कि यदि कोई पुरुष अपने बाल लम्बे बढ़ने दे तो यह उसके लिए लज्जा की बात है, 15और यह कि एक स्त्री के लिए यही उसकी शोभा है? वास्तव में उसे उसके लंबे बाल एक प्राकृतिक ओढ़नी के रूप में दिये गये हैं। 16अब इस पर यदि कोई विवाद करना चाहे तो मुझे कहना होगा कि न तो हमारे यहाँ कोई ऐसी प्रथा है और न ही परमेश्वर की कलीसिया में।

प्रभु का भोज

17अब यह अगला आदेश देते हुए मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा आपस में मिलना तुम्हारा भला करने की बजाय तुम्हें हानि पहुँचा रहा है। 18सबसे पहले यह कि मैंने सुना है कि तुम लोग सभा में जब परस्पर मिलते हो तो तुम्हारे बीच मतभेद रहता है। कुछ अंश तक मैं इस पर विश्वास भी करता हूँ। 19(आखिरकार तुम्हारे बीच मतभेद भी होंगे ही। जिससे कि तुम्हारे बीच में जो उचित ठहराया गया है, वह सामने आ जाये।) 20सो जब तुम आपस में इकट्ठे होते हो तो सचमुच प्रभु का भोज पाने के लिये नहीं इकट्ठे होते, 21बल्कि जब तुम भोज ग्रहण करते हो तो तुममें से हर कोई आगे बढ़ कर अपने ही खाने पर टूट पड़ता है। और बस कोई व्यक्ति तो भूखा ही चला जाता है, जबकि कोई व्यक्ति अत्यधिक खा–पी कर मस्त हो जाता है। 22क्या तुम्हारे पास खाने पीने के लिये अपने घर नहीं हैं। अथवा इस प्रकार तुम परमेश्वर की कलीसिया का अनादर नहीं करते? और जो दीन हैं उनका तिरस्कार करने की चेष्टा नहीं करते? मैं तुमसे क्या कहूँ? इसके लिये क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ। इस विषय में मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा।

23क्योंकि जो सीख मैंने तुम्हें दी है, वह मुझे प्रभु से मिली थी। प्रभु यीशु ने उस रात, जब उसे मरवा डालने के लिये पकड़वाया गया था, एक रोटी ली 24और धन्यवाद देने के बाद उसने उसे तोड़ा और कहा, "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए है। मुझे याद करने के लिए तुम ऐसा ही किया करो।" 25उनके भोजन कर चुकने के बाद इसी प्रकार उसने प्याला उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे लहू के द्वारा किया गया एक नया वाचा है। जब कभी तुम इसे पिओ तभी मुझे याद करने के लिये ऐसा करो।" 26क्योंकि जितनी बार भी तुम इस रोटी को खाते हो और इस प्याले को पीते हो, उतनी ही बार जब तक वह आ नहीं जाता, तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो।

27अत: जो कोई भी प्रभु की रोटी या प्रभु के प्याले को अनुचित रीति से खाता पीता है, वह प्रभु की देह और उस के लहू के प्रति अपराधी होगा। 28व्यक्ति को चाहिये कि वह पहले अपने को परखे और तब इस रोटी को खाये और इस प्याले को पिये। 29क्योंकि प्रभु के देह का अर्थ समझे बिना जो इस रोटी को खाता और इस प्याले को पीता है, वह इस प्रकार खा–पी कर अपने ऊपर दण्ड को बुलाता है। 30इसी लिये तो तुममें से बहुत से लोग दुर्बल हैं, बीमार हैं और बहुत से तो चिरनिद्रा में सो गये हैं। 31किन्तु यदि हमने अपने आप को अच्छी तरह से परख लिया होता तो हमें प्रभु का दण्ड न भोगना पड़ता।

32प्रभु हमें अनुशासित करने के लिये दण्ड देता है। ताकि हमें संसार के साथ दंडित न किया जाये।

33इसलिये हे मेरे भाइयो, जब भोजन करने तुम इकट्ठे होते हो तो परस्पर एक दूसरे की प्रतीक्षा करो। 34यदि सचमुच किसी को बहुत भूख लगी हो तो उसे घर पर ही खा लेना चाहिये ताकि तुम्हारा एकत्र होना तुम्हारे लिये दण्ड का कारण न बने। अस्तु; दूसरी बातों को जब मैं आऊँगा, तभी सुलझाऊँगा।

पवित्र आत्मा के वरदान

12 हे भाइयो, अब मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मा के वरदानों के विषय में अनजान रहो। 2तुम जानते हो कि जब तुम विधर्मी थे तब तुम्हें गूँगी जड़ मूर्तियों की ओर जैसे भटकाया जाता था, तुम वैसे ही भटकते थे। 3सो मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर के आत्मा की ओर से बोलने वाला कोई भी यह नहीं कहता, "यीशु को शाप लगे" और पवित्र आत्मा के द्वारा कहने वाले को छोड़ कर न कोई यह कह सकता है, "यीशु प्रभु है।"

4हर एक को आत्मा के अलग–अलग वरदान मिले हैं। किन्तु उन्हें देने वाली आत्मा तो एक ही है। 5सेवाएँ अनेक प्रकार की निश्चित की गयी हैं किन्तु हम सब जिसकी सेवा करते हैं, वह प्रभु तो एक ही है। 6काम–काज तो बहुत से बताये गये हैं किन्तु सभी के बीच सब कर्मों को करने वाला वह परमेश्वर तो एक ही है। 7हर किसी में आत्मा किसी न किसी रूप में प्रकट होता है जो हर एक की भलाई के लिये होता है। 8किसी को आत्मा के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होकर बोलने की योग्यता दी गयी है तो किसी को उसी आत्मा द्वारा दिव्य ज्ञान के प्रवचन की योग्यता। 9और किसी को उसी आत्मा द्वारा विश्वास का वरदान दिया गया है तो किसी को चंगा करने की क्षमताएँ उसी आत्मा के द्वारा दी गयी हैं। 10और किसी अन्य व्यक्ति को आश्चर्यपूर्ण शक्तियाँ दी गयी हैं तो किसी दूसरे को परमेश्वर की ओर से बोलने का सामर्थ्य दिया गया है। और किसी को मिली है भली बुरी आत्माओं के अंतर को पहचानने की शक्ति। किसी को अलग–अलग भाषाएँ बोलने की शक्ति प्राप्त हुई है, तो किसी को भाषाओं की व्याख्या करके उनका अर्थ निकालने की शक्ति। 11किन्तु यह वही एक आत्मा है जो जिस–जिस को जैसा–जैसा ठीक समझता है, देते हुए, इन सब बातों को पूरा करता है।

मसीह की देह

12जैसे हममें से हर एक का शरीर तो एक है, पर उसमें अंग अनेक हैं। और यद्यपि अंगों के अनेक रहते हुए भी उनसे देह एक ही बनती है, वैसे ही मसीह है 13क्योंकि चाहे हम यहूदी रहे हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सेवक रहे हों या स्वतन्त्र। एक ही देह के विभिन्न अंग बन जाने के लिए हम सब को एक ही आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया गया और प्यास बुझाने को हम सब को एक ही आत्मा प्रदान की गयी।

14अब देखो, मानव शरीर किसी एक अंग से ही तो बना नहीं होता, बल्कि उसमें बहुत से अंग होते हैं। 15यदि पैर कहे, "क्योंकि मैं हाथ नहीं हूँ, इसलिये मेरा शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं" तो इसीलिये क्या वह शरीर का अंग नहीं रहेगा। 16इसी प्रकार यदि कान कहे, "क्योंकि मैं आँख नहीं हूँ, इसलिये मैं शरीर का नहीं हूँ" तो क्या इसी कारण से वह शरीर का नहीं रहेगा। 17यदि एक आँख ही सारा शरीर होता तो सुना कहाँ से जाता? यदि कान ही सारा शरीर होता तो सूँघा कहाँ से जाता। 18किन्तु वास्तव में परमेश्वर ने जैसा ठीक समझा, हर अंग को शरीर में वैसा ही स्थान दिया। 19सो यदि शरीर के सारे अंग एक से हो जाते तो शरीर ही कहाँ होता। 20किन्तु स्थिति यह है कि अंग तो अनेक होते हैं किन्तु शरीर एक ही रहता है।

21आँख हाथ से यह नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं!" या ऐसे ही सिर, पैरों से यह नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं!" 22इसके बिल्कुल विपरीत शरीर के जिन अंगों को हम दुर्बल समझते हैं, वे बहुत आवश्यक होते हैं। 23और शरीर के जिन अंगों को हम कम आदरणीय समझते हैं, उनका हम अधिक ध्यान रखते हैं। और हमारे गुप्त अंग और अधिक शालीनता पा लेते हैं। 24जबकि हमारे प्रदर्शनीय अंगों को इस प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु परमेश्वर ने हमारे शरीर की रचना इस ढंग से की है जिससे उन अंगों को जो कम सुन्दर हैं और अधिक आदर प्राप्त हो। 25ताकि देह में कहीं कोई फूट न पड़े बल्कि देह के अंग परस्पर एक दूसरे का समान रूप से ध्यान रखें। 26यदि शरीर का कोई एक अंग दुख पाता है तो उसके साथ शरीर के और सभी अंग दुखी होते हैं। यदि किसी एक

अंग का मान बढ़ता है तो उसकी प्रसन्नता में सभी अंग हिस्सा बटाते हैं।

[27]इस प्रकार तुम सभी लोग मसीह का शरीर हो और अलग–अलग रूप में उसके अंग हो। [28]इतना ही नहीं परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरितों को, दूसरे नबियों को, तीसरे उपदेशकों को, फिर आश्चर्यकर्म करने वालों को, फिर चंगा करने की शक्ति से युक्त व्यक्तियों को, फिर उनको जो दूसरों की सहायता करते हैं, प्रस्थापित किया है, फिर अगुवाई करने वालों को और फिर उन लोगों को जो विभिन्न भाषाएँ बोल सकते हैं। [29]क्या ये सभी प्रेरित हैं? ये सभी क्या नबी हैं? क्या ये सभी उपदेशक हैं? क्या ये सभी आश्चर्यकार्य करते हैं? [30]क्या इन सब के पास चंगा करने की शक्ति है? क्या ये सभी दूसरी भाषाएँ बोलते हैं? क्या ये सभी अन्य भाषाओं की व्याख्या करते हैं? [31]हाँ, किन्तु तुम आत्मा के और बड़े वरदान पाने के लिए यत्न करते रहो। और इन सब के लिए उत्तम मार्ग तुम्हें अब मैं दिखाऊँगा।

प्रेम महान है

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ तो बोल सकूँ किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं एक बजता हुआ घड़ियाल या झंकारती हुई झाँझ मात्र हूँ। [2]यदि मुझमें परमेश्वर की ओर से बोलने की शक्ति हो और मैं परमेश्वर के सभी रहस्यों को जानता होऊँ तथा समूचा दिव्य ज्ञान भी मेरे पास हो और इतना विश्वास भी मुझमें हो कि पहाड़ों को अपने स्थान से सरका सकूँ, किन्तु मुझमें प्रेम न हो [3]तो मैं कुछ नहीं हूँ। यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति थोड़ी–थोड़ी कर के जरूरत मन्दों के लिए दान कर दूँ और अब चाहे अपने शरीर तक को जला डालने के लिए सौंप दूँ किन्तु यदि मैं प्रेम नहीं करता तो। [4]इससे मेरा भला होने वाला नहीं है।

प्रेम धैर्यपूर्ण है, प्रेम दयामय है, प्रेम में ईर्ष्या नहीं होती, प्रेम अपनी प्रशंसा आप नहीं करता। [5]वह अभिमानी नहीं होता। वह अनुचित व्यवहार कभी नहीं करता, वह स्वार्थी नहीं है, प्रेम कभी झुँझलाता नहीं, वह बुराइयों का कोई लेखा–जोखा नहीं रखता। [6]बुराई पर कभी उसे प्रसन्नता नहीं होती। वह तो दूसरों के साथ सत्य पर आनंदित होता है। [7]वह सदा रक्षा करता है, वह सदा विश्वास करता है। प्रेम सदा आशा से पूर्ण रहता है। वह सहनशील है।

[8]प्रेम अमर है। जबकि भविष्यवाणी का सामर्थ्य तो समाप्त हो जायेगा, दूसरी भाषाओं को बोलने की क्षमता युक्त जीभें एक दिन चुप हो जायेंगी, दिव्य ज्ञान का उपहार जाता रहेगा, [9]क्योंकि हमारा ज्ञान तो अधूरा है, हमारी भविष्यवाणियाँ अपूर्ण हैं। [10]किन्तु जब पूर्णता आयेगी तो वह अधूरापन चला जायेगा। [11]जब मैं बच्चा था तो एक बच्चे की तरह ही बोला करता था, वैसे ही सोचता था और उसी प्रकार सोच विचार करता था, किन्तु अब जब मैं बड़ा होकर पुरुष बन गया हूँ, तो वे बचपने की बातें जाती रही हैं। [12]क्योंकि अभी तो दर्पण में हमें एक धुँधला सा प्रतिबिंब दिखायी पड़ रहा है किन्तु पूर्णता प्राप्त हो जाने पर हम पूरी तरह आमने–सामने देखेंगे। अभी तो मेरा ज्ञान आंशिक है किन्तु समय आने पर वह परिपूर्ण होगा। वैसे ही जैसे परमेश्वर मुझे पूरी तरह जानता है। [13]इस दौरान विश्वास, आशा और प्रेम तो बने ही रहेंगे और इन तीनों में भी सबसे महान् है प्रेम।

आध्यात्मिक वरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाओ

14 प्रेम के मार्ग पर प्रयत्नशील रहो। और आध्यात्मिक वरदानों की निष्ठा के साथ अभिलाषा करो। विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से बोलने की। [2]क्योंकि जिसे दूसरे की भाषा में बोलने का वरदान मिला है, वह तो वास्तव में लोगों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से बातें कर रहा है। क्योंकि उसे कोई समझ नहीं पाता, वह तो आत्मा की शक्ति से रहस्यमय वाणी बोल रहा है। [3]किन्तु वह जिसे परमेश्वर की ओर से बोलने का बरदान प्राप्त है, वह लोगों से उन्हें आत्मा में दृढ़ता, प्रोत्साहन और चैन पहुँचाने के लिए बोल रहा है। [4]जिसे विभिन्न भाषाओ में बोलने का बरदान प्राप्त है वह तो बस अपनी आत्मा को ही सुदृढ़ करता है किन्तु जिसे परमेश्वर की ओर से बोलने का सामर्थ्य मिला है वह समूची कलीसिया को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाता है। [5]अब मैं चाहता हूँ कि तुम सभी दूसरी अनेक भाषाएँ बोलो किन्तु इससे भी अधिक मैं यह चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर की ओर से बोल सको क्योंकि कलीसिया की आध्यात्मिक सुदृढ़ता के लिये अपने कहे की व्याख्या करने वाले को छोड़ कर, दूसरी भाषाएँ बोलने वाले से परमेश्वर की ओर से बोलने वाला बड़ा है।

6हे भाइयो, यदि दूसरी भाषाओं में बोलते हुए मैं
तुम्हारे पास आऊँ तो इससे तुम्हारा क्या भला होगा,
जब तक कि तुम्हारे लिये मैं कोई रहस्य उद्घाटन,
दिव्यज्ञान, परमेश्वर का सन्देश या कोई उपदेश न दूँ।
7यह बोलना तो ऐसे ही होगा जैसै किसी बाँसुरी या
सारंगी जैसे निर्जीव वाद्य की ध्वनि। यदि किसी वाद्य के
स्वरों में परस्पर स्पष्ट अन्तर नहीं होगा तो कोई कैसे
पता लगा पायेगा कि बाँसुरी या सारंगी पर कौन सी धुन
बजायी जा रही है। 8और यदि बिगुल से अस्पष्ट ध्वनि
निकलने लगे तो फिर युद्ध के लिये तैयार कौन होगा?
9इसी प्रकार किसी दूसरे की भाषा में जब तक कि तुम
साफ–साफ न बोलो, तब तक कोई कैसे समझ पायेगा कि
तुमने क्या कहा है। क्योंकि ऐसे में तुम तो बस हवा में
बोलने वाले ही रह जाओगे। 10इसमें कोई सन्देह नहीं है कि
संसार में भाँति–भाँति की बोलियाँ हैं और उनमें से कोई
भी निरर्थक नहीं है। 11सो जब तक मैं उस भाषा का
जानकार नहीं हूँ, तब तक बोलने वाले के लिये मैं एक
अजनबी ही रहूँगा। और वह बोलने वाला मेरे लिये भी
अजनबी ही ठहरेगा। 12तुम पर भी यही बात लागू होती है
क्योंकि तुम आध्यात्मिक वरदानों को पाने के लिये उत्सुक
हो। इसलिये उनमें भरपूर होने का प्रयत्न करो, जिससे
कलीसिया को आध्यात्मिक सुदृढ़ता प्राप्त हो।

13परिणामस्वरूप जो दूसरी भाषा में बोलता है, उसे
प्रार्थना करनी चाहिये कि वह अपने कहे का अर्थ भी
बता सके। 14क्योंकि यदि मैं किसी अन्य भाषा में प्रार्थना
करूँ तो मेरी आत्मा तो प्रार्थना कर रही होती है किन्तु
मेरी बुद्धि व्यर्थ रहती है। 15तो फिर क्या करना चाहिये?
मैं अपनी आत्मा से तो प्रार्थना करूँगा ही किन्तु साथ ही
अपनी बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा। अपनी आत्मा से तो
उसकी स्तुति करूँगा ही किन्तु अपनी बुद्धि से भी उसकी
स्तुति करूँगा। 16क्योंकि यदि तू केवल अपनी आत्मा से
ही कोई आशीर्वाद दे तो वहाँ बैठा कोई व्यक्ति जो बस
सुन रहा है, तेरे धन्यवाद पर "आमीन" कैसे कहेगा
क्योंकि तू जो कह रहा है, उसे वह जानता ही नहीं।
17अब देख तू तो चाहे भली–भाँति धन्यवाद दे रहा है किन्तु
दूसरे व्यक्ति की तो उससे कोई आध्यात्मिक सुदृढ़ता नहीं
होती।

18मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मैं तुम सब से
बढ़कर विभिन्न भाषाएँ बोल सकता हूँ। 19किन्तु कलीसिया
सभा के बीच किसी दूसरी भाषा में दसियों हज़ार शब्द
बोलने की अपेक्षा अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए बस
पाँच शब्द बोलना अच्छा समझता हूँ ताकि दूसरों को भी
शिक्षा दे सकूँ।

20हे भाइयो, अपने विचारों में बचकाने मत रहो बल्कि
बुराइयों के विषय में अबोध बच्चे जैसे बने रहो। किन्तु
अपने चिन्तन में सयाने बनो। 21व्यवस्था के विधान में
लिखा है:

"उनका उपयोग करते हुए
जो अन्य बोली बोलते हैं,
उनके मुखों का उपयोग करते हुए
जो पराए हैं मैं इनसे बात करूँगा,
पर तब भी ये मेरी न सुनेंगे।

यशायाह 28:11–12

प्रभु ऐसा ही कहता है।

22सो दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान अविश्वासियों के
लिए संकेत है न कि विश्वासियों के लिये। जबकि परमेश्वर
की ओर से बोलना अविश्वासियों के लिये नहीं, बल्कि
विश्वासियों के लिये है। 23सो यदि समूचा कलीसिया एकत्र
हो और हर कोई दूसरी–दूसरी भाषाओं में बोल रहा हो
तभी बाहर के लोग या अविश्वासी भीतर आ जायें तो क्या
वे तुम्हें पागल नहीं कहेंगे। 24किन्तु यदि हर कोई परमेश्वर
की ओर से बोल रहा हो और तब तक कुछ अविश्वासी या
बाहर के आ जाएँ तो क्या सब लोग उसे उसके पापों का
बोध नहीं करा देंगे। सब लोग जो कह रहे हैं, उसी पर
उसका न्याय होगा। 25जब उसके मन के भीतर छिपे भेद
खुल जायेंगे तब तक वह यह कहते हुए "सचमुच तुम्हारे
बीच परमेश्वर है" दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की
उपासना करेगा।

तुम्हारी सभाएँ और कलीसिया

26हे भाइयो, तो फिर क्या करना चाहिये? तुम जब
इकट्ठे होते हो तो तुममें से कोई भजन, कोई उपदेश
और कोई आध्यात्मिक रहस्य का उद्घाटन करता है।
कोई किसी अन्य भाषा में बोलता है तो कोई उसकी
व्याख्या करता है। ये सब बातें कलीसिया की आत्मिक
सुदृढ़ता के लिये की जानी चाहियें। 27यदि किसी अन्य
भाषा में बोलना है तो अधिक से अधिक दो या तीन को ही

बोलना चाहिये–बारी–बारी, एक–एक करके। और जो कुछ कहा गया है, एक को उसकी व्याख्या करनी चाहिये। 28यदि वहाँ व्याख्या करने वाला कोई न हो तो बोलने वाले को चाहिये कि वह सभा में चुप ही रहे और फिर उसेअपने आप से और परमेश्वर से ही बातें करनी चाहियें।

29परमेश्वर की ओर से उसके दूत के रूप में बोलने का जिन्हें वरदान मिला है, ऐसे दो या तीन व्यक्तियों को ही बोलना चाहिये और दूसरों को चाहिये कि जो कुछ उन्होंने कहा है, वे उसे परखते रहें। 30यदि वहाँ किसी बैठे हुए पर किसी बात का रहस्य उद्घाटन होता है तो परमेश्वर की ओर से बोल रहे पहले वक्ता को चुप हो जाना चाहिये। 31क्योंकि तुम एक–एक करके परमेश्वर की ओर से बोल सकते हो ताकि सभी लोग सीखें और प्रोत्साहित हों। 32नबियों की आत्माएँ नबियों के वश में रहती हैं। 33क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था नहीं, शांति देता है। जैसा कि सन्तों की सभी कलीसियों में होता है।

34स्त्रियों को चाहिये कि वे सभाओं में चुप रहें क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। बल्कि जैसा कि व्यवस्था के विधान में भी कहा गया है, उन्हें दब कर रहना चाहिये। 35यदि वे कुछ जानना चाहती हैं तो उन्हें घर पर अपने–अपने पति से पूछना चाहिये क्योंकि एक स्त्री के लिये यह शोभा नहीं देता कि वह सभा में बोले। 36क्या परमेश्वर का वचन तुमसे उत्पन्न हुआ? या वह मात्र तुम तक पहुँचा? निश्चित ही नहीं।

37यदि कोई सोचता है कि वह नबी है अथवा उसे आध्यात्मिक वरदान प्राप्त है तो उसे पहचान लेना चाहिये कि मैं तुम्हें जो कुछ लिख रहा हूँ, वह प्रभु का आदेश है। 38सो यदि कोई इसे नहीं पहचान पाता तो उसे भी नहीं पहचाना जायेगा।

39इसलिये हे मेरे भाइयो, परमेश्वर की ओर से बोलने को तत्पर रहो तथा दूसरी भाषाओं में बोलने वालों को भी मत रोको। 40किन्तु ये सभी बातें सही ढँग से और व्यवस्थानुसार की जानी चाहियें।

यीशु का सुसमाचार

15 हे भाइयो, अब मैं तुम्हें उस सुसमाचार की याद दिलाना चाहता हूँ जिसे मैंने तुम्हें सुनाया था और तुमने भी जिसे ग्रहण किया था और जिसमें तुम निरन्तर स्थिर बने हुए हो। 2और जिसके द्वारा तुम्हारा उद्धार भी हो रहा है बशर्ते तुम उन शब्दों को जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, अपने में दृढ़ता से थामे रखो। (नहीं तो तुम्हारा विश्वास धारण करना ही बेकार गया।)

3जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी, उसे मैंने तुम तक पहुँचा दिया कि शास्त्रों के अनुसार: मसीह हमारे पापों के लिये मरा 4और उसे दफना दिया गया। और शास्त्र कहता है कि फिर तीसरे दिन उसे जिला कर उठा दिया गया। 5और फिर वह पतरस के सामने प्रकट हुआ और उसके बाद बारहों प्रेरितों को उसने दर्शन दिये। 6फिर वह पाँच सौ से भी अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया। उनमें से बहुतेरे आज तक जीवित हैं। यद्यपि कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। 7इसके बाद वह याकूब के सामने प्रकट हुआ। और तब उसने सभी प्रेरितों को फिर दर्शन दिये। 8और सब से अंत में उसने मुझे भी दर्शन दिये। मैं तो समय से पूर्व असामान्य जन्मे सतमासे बच्चे जैसा हूँ। 9क्योंकि मैं तो प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ। यहाँ तक कि मैं तो प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं हूँ क्योंकि मैं तो परमेश्वर की कलीसिया को सताया करता था। 10किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मैं वैसा बना हूँ जैसा आज हूँ। मुझ पर उसका अनुग्रह बेकार नहीं गया। मैंने तो उन सब से बढ़ चढ़कर परिश्रम किया है, यद्यपि वह परिश्रम करने वाला मैं नहीं था, बल्कि परमेश्वर का वह अनुग्रह था जो मेरे साथ रहता था। 11सो चाहे तुम्हें मैंने उपदेश दिया हो चाहे उन्होंने, हम सब यही उपदेश देते हैं और इसी पर तुमने विश्वास किया है।

हमारा पुनर्जीवन

12किन्तु जब कि मसीह को मरे हुओं में से पुनरुत्थापित किया गया तो तुममें से कुछ ऐसा क्यों कहते हो कि मृत्यु के बाद फिर से जी उठना सम्भव नहीं है। 13और यदि मृत्यु के बाद जी उठना है ही नहीं तो फिर मसीह भी मृत्यु के बाद नहीं जिलाया गया। 14और यदि मसीह को नहीं जिलाया गया तो हमारा उपदेश देना बेकार है और तुम्हारा विश्वास भी बेकार है। 15और हम भी फिर तो परमेश्वर के बारे में झूठे गवाह ठहरते हैं क्योंकि हमने परमेश्वर के सामने कसम उठा कर यह साक्षी दी है कि उसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया। किन्तु उनके कथन के अनुसार यदि मरे हुए जिलाये नहीं जाते तो फिर परमेश्वर

ने मसीह को भी नहीं जिलाया। 16क्योंकि यदि मरे हुए नहीं
जिलाये जाते हैं तो मसीह को भी नहीं जिलाया गया। 17और
यदि मसीह को फिर से जीवित नहीं किया गया है, फिर तो
तुम्हारा विश्वास ही निरर्थक है और तुम अभी भी अपने
पापों में फँसे हो। 18हाँ, फिर तो जिन्होंने मसीह के लिए
अपने प्राण दे दिये, वे यूँ ही नष्ट हुए। 19यदि हमने केवल
अपने इस भौतिक जीवन के लिये ही यीशु मसीह में अपनी
आशा रखी है तब तो हम और सभी लोगों से अधिक अभागे
हैं।

20किन्तु अब वास्तविकता यह है कि मसीह को मरे
हुओं में से जिलाया गया है। वह मरे हुओं की फ़सह का
पहला फल है। 21क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु
आयी तो एक मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु से पुनर्जीवित हो
उठना भी आया। 22क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे आदम के
कर्मों के कारण हर किसी के लिए मृत्यु आयी, वैसे ही
मसीह के द्वारा सब को फिर से जिला उठाया जायेगा 23किन्तु
हर एक को उसके अपने कर्म के अनुसार सबसे पहले
मसीह को, जो फसल का पहला फल है और फिर उसके
पुन: आगमन पर उनको, जो मसीह के हैं। 24इसके बाद
जब मसीह सभी शासकों, अधिकारियों, हर प्रकार की
शक्तियों का अंत करके राज्य को परम पिता परमेश्वर
के हाथों सौंप देगा, तब प्रलय हो जायेगी। 25किन्तु जब तक
परमेश्वर मसीह के शत्रुओं को उसके पैरों तले न कर दे
तब तक उसका राज्य करते रहना आवश्यक है। 26सबसे
अंतिम शत्रु के रूप में मृत्यु का नाश किया जायेगा।
27क्योंकि “परमेश्वर ने हर किसी को मसीह के चरणों के
अधीन रखा है।* अब देखो जब शास्त्र कहता है, सब
कुछ” को उसके अधीन कर दिया गया है। तो जिसने “सब
कुछ” को उसके चरणों के अधीन किया है, वह स्वयं
इसका अपवाद है। 28और जब सब कुछ मसीह के अधीन
कर दिया गया है, तो यहाँ तक कि स्वयं पुत्र को भी उस
परमेश्वर के अधीन कर दिया जायेगा जिसने सब कुछ को
मसीह के अधीन कर दिया ताकि हर किसी पर पूरी तरह
परमेश्वर का शासन हो।

29नहीं तो जिन्होंने अने प्राण दे दिये हैं, उनके कारण
जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, वे क्या करेंगे। यदि मरे हुए
कभी पुनर्जीवित होते ही नहीं तो लोगों को उनके लिये
बपतिस्मा दिया ही क्यों जाता है?

30और हम भी हर घड़ी संकट क्यों झेलते रहते हैं?
31भाइयो! तुम्हारे लिए मेरा वह गर्व जिसे मैं हमारे प्रभु
यीशु मसीह में स्थित होने के नाते रखता हूँ, उसे साक्षी
करके शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं हर दिन मरता हूँ।
32यदि मैं इफ़िसुस में जँगली पशुओं के साथ मानवीय स्तर
पर ही लड़ा था तो उससे मुझे क्या मिला। यदि मरे हुए
जिलाये नहीं जाते, “तो आओ, खायें, पीएँ (मौज मनायें)
क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”*

33भटकना बंद करो: “बुरी संगति से अच्छी आदतें नष्ट
हो जाती हैं।” 34होश में आओ, अच्छा जीवन अपनाओ,
जैसा कि तुम्हें होना चाहिये। पाप करना बंद करो। क्योंकि
तुममें से कुछ तो ऐसे हैं जो परमेश्वर के बारे में कुछ भी
नहीं जानते। मैं यह इसलिये कह रहा हूँ कि तुम्हें लज्जा
आए।

हमें कैसी देह मिलेगी?

35किन्तु कोई पूछ सकता है, “मरे हुए कैसे जिलाये
जाते हैं? और वे फिर कैसी देह धारण करके आते हैं?”
36तुम कितने मूर्ख हो। तुम जो बोते हो वह जब तक
पहले मर नहीं जाता, जीवित नहीं होता। 37और जहाँ
तक जो तुम बोते हो, उसका प्रश्न है, तो जो पौधा
विकसित होना है, तुम उस भरेपूरे पौधे को तो धरती में
नहीं बोते। बस केवल बीज बोते हो, चाहे वह गेहूँ का
दाना हो और चाहे कुछ और। 38फिर परमेश्वर जैसा चाहता
है, वैसा रूप उसे देता है। हर बीज को वह उसका
अपना शरीर प्रदान करता है। 39सभी जीवित प्राणियों के
शरीर एक जैसे नहीं होते। मनुष्यों का शरीर एक तरह का
होता है जबकि पशुओं का शरीर दूसरी तरह का।
चिड़ियाओं की देह अलग प्रकार की होती है और मछलियों
की अलग। 40कुछ देह दिव्य होती हैं और कुछ पार्थिव
किन्तु दिव्य देह की आभा एक प्रकार की होती है और
पार्थिव शरीरों की दूसरे प्रकार की। 41सूरज का तेज एक
प्रकार का होता है और चाँद का दूसरे प्रकार का। तारों में
भी एक भिन्न प्रकार का प्रकाश रहता है। और हाँ, तारों
का प्रकाश भी एक दूसरे से भिन्न रहता है।

42सो जब मरे हुए जी उठेंगे तब भी ऐसा ही होगा। वह
देह जिसे धरती में दफ़ना कर “बोया” गया है, नाशमान
है किन्तु वह देह जिसका पुनरुत्थान हुआ है, अविनाशी

परमेश्वर ... रखा है भजन. 8:6

आओ ... जान है यशा. 22:13; 56:12

है। 43वह काया जो धरती में “दफनाई” गयी है, अनादरपूर्ण
है किन्तु वह काया जिसका पुनरुत्थान हुआ है, महिमा से
मंडित है। वह काया जिसे धरती मे “गाड़ा” गया है, दुर्बल है
किन्तु वह काया जिसे पुनर्जीवित किया गया है, शक्तिशाली
है। 44जिस काया को धरती में “दफनाया” गया है, वह
प्राकृतिक है किन्तु जिसे पुनर्जीवित किया गया है, वह
आध्यात्मिक शरीर है। यदि प्राकृतिक शरीर होते हैं तो
आध्यात्मिक शरीरों का भी अस्तित्व है। 45शास्त्र कहता
है: “पहला मनुष्य (आदम) एक सजीव प्राणी बना।”* किन्तु
अंतिम आदम (मसीह) जीवनदाता आत्मा बना।
46आध्यात्मिक पहले नहीं आता, बल्कि पहले आता है
भौतिक और फिर उसके बाद ही आता है आध्यात्मिक।
47पहले मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया गया और
दूसरा मनुष्य (मसीह) स्वर्ग से आया। 48जैसे उस मनुष्य
की रचना मिट्टी से हुई, वैसे ही सभी लोग मिट्टी से ही बने।
और उस दिव्य पुरुष के समान अन्य दिव्य पुरुष भी स्वर्गीय
हैं। 49सो जैसे हम उस मिट्टी से बने का रूप धारण करते हैं,
वैसे ही उस स्वर्गिक का रूप भी हम धारण करेंगे।

50हे भाइयो, मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ: मांस और लहू
(हमारे ये पार्थिक शरीर) परमेश्वर के राज्य के
उत्तराधिकार नहीं पा सकते। और न ही जो विनाशमान है,
वह अविनाशी का उत्तराधिकारी हो सकता है। 51सुनो, मैं
तुम्हें एक रहस्यपूर्ण सत्य बताता हूँ: हम सभी मरेंगे नहीं,
बल्कि हम सब बदल दिये जायेंगे। 52जब अंतिम तुरही बजेगी
तब पलक झपकते एक क्षण में ही ऐसा हो जायेगा क्योंकि
तुरही बजेगी और मरे हुए अमर हो कर जी उठेंगे और हम
जो अभी जीवित हैं, बदल दिये जायेंगे। 53क्योंकि इस
नाशवान देह का अविनाशी चोले को धारण करना
आवश्यक है और इस मरणशील काया का अमर चोला
धारण कर लेना अनिवार्य है। 54सो जब यह नाशमान देह
अविनाशी चोले को धारण कर लेगी और वह मरणशील काया अमर
चोले को ग्रहण कर लेगी तो शास्त्र का लिखा यह पूरा हो जायेगा:

“विजय ने मृत्यु को निगल लिया।”

यशायाह 25:8

55 “मृत्यु को विजय ने निगल लिया।
ओ मृत्यु, तेरा दंश कहाँ है?”

होशे 13:14

56पाप मृत्यु का दंश है और पाप को शक्ति मिलती है
व्यवस्था से। 57किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाता है।

58सो मेरे प्यारे भाइयो, अटल बने डटे रहो। प्रभु के
कार्य के प्रति अपने आपको सदा पूरी तरह समर्पित कर
दो। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि प्रभु में किया गया
तुम्हारा कार्य व्यर्थ नहीं है।

दूसरे विश्वासियों के लिये भेंट

16 अब देखो, संतों के लिये दान इकट्ठा करने
के बारे में मैंने गलातिया की कलीसियाओं को
जो आदेश दिया है तुम भी वैसे ही करो। 2हर रविवार को
अपनी आय में से कुछ न कुछ अपने घर पर ही इकट्ठा
करते रहो। ताकि जब मैं आऊँ, उस समय दान इकट्ठा न
करना पड़े। 3मेरे वहाँ पहुँचने पर जिस किसी व्यक्ति को
तुम चाहोगे, मैं उसे परिचय पत्र देकर तुम्हारा उपहार
यरुशलेम ले जाने के लिए भेज दूँगा। 4और यदि मेरा जाना
भी उचित हुआ तो वे मेरे साथ ही चले जायेंगे।

पौलुस की योजनाएँ

5मैं जब मैसिडोनिया होकर जाऊँगा तो तुम्हारे पास भी
आऊँगा क्योंकि मैसिडोनिया से होते हुए जाने का कार्यक्रम
मैं निश्चित कर चुका हूँ। 6हो सकता है मैं कुछ समय
तुम्हारे साथ ठहरूँ या सर्दियाँ ही तुम्हारे साथ बिताऊँ ताकि
जहाँ कहीं मुझे जाना हो, तुम मुझे विदा कर सको। 7मैं यह
तो नहीं चाहता कि वहाँ से जाते जाते ही बस तुमसे मिल लूँ
बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं यदि प्रभु ने चाहा तो कुछ
समय तुम्हारे साथ रहूँगा भी। 8मैं पिन्तेकुस्त के उत्सव
तक इफिसुस में ही ठहरूँगा। 9क्योंकि ठोस काम करने
की सम्भावनाओं का वहाँ बड़ा द्वार खुला है और फिर वहाँ
मेरे विरोधी भी तो बहुत से हैं।

10यदि तिमुथियुस आ पहुँचे तो ध्यान रखना उसे तुम्हारे
साथ कष्ट न हो क्योंकि मेरे समान ही वह भी प्रभु का
काम कर रहा है। 11इसलिये कोई भी उसे छोटा न समझे।
उसे उसकी यात्रा पर शान्ति के साथ विदा करना ताकि
वह मेरे पास आ पहुँचे। मैं दूसरे भाइयों के साथ उसके
आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

12अब हमारे भाई अपुल्लौस की बात यह है कि मैंने
उसे दूसरे भाइयों के साथ तुम्हारे पास जाने को अत्यधिक

पहला ... बना उत्पत्ति 2:7

प्रोत्साहित किया है। किन्तु परमेश्वर की यह इच्छा बिल्कुल नहीं थी कि वह अभी तुम्हारे पास आता। सो अवसर पाते ही वह आ जायेगा।

पौलुस के पत्र की समाप्ति

13सावधान रहो। दृढ़ता के साथ अपने विश्वास में अटल बने रहो। 14साहसी बनो, शक्तिशाली बनो। तुम जो कुछ करो, प्रेम से करो।

15तुम लोग स्तिफनुस के घराने को तो जानते ही हो कि वे अरवाया की फसल के पहले फल हैं। उन्होने परमेश्वर के पुरुषों की सेवा का बीड़ा उठाया है। सो भाइयो! तुम से मेरा निवेदन है कि 16तुम लोग भी अपने आप को ऐसे लोगों की और हर उस व्यक्ति की अगुवाई में सौंप दो जो इस काम से जुड़ता है और प्रभु के लिये परिश्रम करता है।

17स्तिफ़नुस, फुरतुनातुस और अखइकुस की उपस्थिति से मैं प्रसन्न हूँ। क्योंकि मेरे लिये जो तुम नहीं कर सके, वह उन्होंने कर दिखाया। 18उन्होंने मेरी तथा तुम्हारी आत्मा को आनन्दित किया है। इसलिये ऐसे लोगों का सम्मान करो।

19एशिया प्रान्त की कलीसियाओं की ओर से तुम्हें प्रभु में नमस्कार। अक्विला और प्रिस्किल्ला! उनके घर पर एकत्र होने वाली कलीसिया की ओर से तुम्हें हार्दिक नमस्कार। 20सभी बंधुओं की ओर से तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुम्बन के साथ तुम आपस में एक दूसरे का सत्कार करो।

21मैं, पौलुस, तुम्हें अपने हाथों से नमस्कार लिख रहा हूँ।

22यदि कोई प्रभु में प्रेम नहीं रखे तो उसे अभिशाप मिले। हमारे प्रभु आओ!*

23प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हें प्राप्त हो। 24यीशु मसीह में तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम तुम सबके साथ रहे।

हमारे प्रभु आओ अरामिक भाषा मे: "मारनाथा।"

2 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु के प्रेरित पौलुस तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से कुरिन्थुस परमेश्वर की कलीसिया तथा अखाया के समूचे क्षेत्र के पवित्र जनों के नाम:

[2]हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर धन्य है। वह करुणा का स्वामी है और आनन्द का स्रोत है।
[4]हमारी हर विपत्ति में वह हमें शांति देता है ताकि हम भी हर प्रकार की विपत्ति में पड़े लोगों को वैसे ही शांति दे सकें, जैसे परमेश्वर ने हमें दी है। [5]क्योंकि जैसे मसीह की यातनाओं में हम सहभागी हैं, वैसे ही मसीह के द्वारा हमारा आनन्द भी तुम्हारे लिये उमड़ रहा है। [6]यदि हम कष्ट उठाते हैं तो वह तुम्हारे आनन्द और उद्धार के लिए है। यदि हम आनन्दित हैं तो वह तुम्हारे आनन्द के लिये है। यह आनन्द उन्हीं यातनाओं को जिन्हें हम भी सह रहे हैं तुम्हें धीरज के साथ सहने को प्रेरित करता है। [7]तुम्हारे विषय में हमें पूरी आशा है क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हमारे कष्टों को तुम बँटाते हो, वैसे ही हमारे आनन्द में भी तुम्हारा भाग है।

[8]हे भाइयो, हम यह चाहते हैं कि तुम उन यातनाओं के बारे में जानो जो हमें एशिया में झेलनी पड़ी थीं। वहाँ हम, हमारी सहन शक्ति की सीमा से कहीं अधिक बोझ के तले दब गये थे। यहाँ तक कि हमें जीने तक की कोई आशा नहीं रह गयी थी। [9]हाँ अपने-अपने मन में हमें ऐसा लगता था जैसे हमें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है ताकि हम अपने आप पर और अधिक भरोसा न रख कर उस परमेश्वर पर भरोसा करें जो मरे हुए को भी फिर से जिला देता है। [10]हमें उस भयानक मृत्यु से उसी ने बचाया और हमारी वर्तमान परिस्थितियों में भी वही हमें बचाता रहेगा। हमारी आशा उसी पर टिकी है। वही हमें आगे भी बचाएगा। [11]यदि तुम भी हमारी ओर से प्रार्थना करके सहयोग दोगे तो हमें बहुत से लोगों की प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला है, उसके लिये बहुत से लोगों को हमारी ओर से धन्यवाद देने का हेतु मिल जायेगा।

पौलुस की योजनाओं में परिवर्तन

[12]हमें इसका गर्व है कि हम यह बात साफ मन से कह सकते हैं कि हमने इस जगत के साथ-और खासकर तुम लोगों के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के अनुरूप व्यवहार किया है। हमने उस सरलता और सच्चाई के साथ व्यवहार किया है जो परमेश्वर से मिलती है न कि दुनियावी बुद्धि से। [13]हाँ। इसी लिये हम उसे छोड़ तुम्हें बस और कुछ नहीं लिख रहे हैं, जिससे तुम हमें पूरी तरह वैसे ही समझ लोगे। [14]जैसे तुमने हमें आंशिक रूप से समझा है। तुम हमारे लिये वैसे ही गर्व कर सकते हो जैसे हम तुम्हारे लिये उस दिन गर्व करेंगे जब हमारा प्रभु यीशु फिर आयेगा।

[15]और इसी विश्वास के कारण मैंने पहले तुम्हारे पास आने की ठानी थी ताकि तुम्हें दोबारा से आशीर्वाद का लाभ मिल सके। [16]मैं सोचता हूँ कि मैसिडोनिया जाते हुए तुमसे मिलूँ और जब मैसिडोनिया से लौटूँ तो फिर तुम्हारे पास जाऊँ। और फिर, तुम्हारे द्वारा ही यहूदिया के लिये विदा किया जाऊँ। [17]मैंने जब ये योजनाएँ बनायी थीं, तो मुझे कोई संशय नहीं था। या मैं जो योजनाएँ बनाता हूँ तो क्या उन्हें सांसारिक ढंग से बनाता हूँ कि एक ही समय "हाँ, हाँ" भी कहता रहूँ और "ना, ना" भी करता रहूँ।

[18]परमेश्वर विश्वसनीय है और वह इसकी साक्षी देगा कि तुम्हारे प्रति हमारा जो वचन है एक साथ "हाँ" और

“ना” नहीं कहता। 19क्योंकि तुम्हारे बीच जिस परमेश्वर
के पुत्र यीशु मसीह का हमने, यानी सिलवानुस, तिमुथियुस
और मैंने, प्रचार किया है, वह “हाँ” और “ना” दोनों एक
साथ नहीं है बल्कि उसके द्वारा एक चिरन्तन “हाँ” की ही
घोषणा की गयी है। 20क्योंकि परमेश्वर ने जो अनन्त
प्रतिज्ञाएँ की हैं, वे यीशु में सब के लिए “हाँ” बन जाती हैं।
इसीलिये हम उसके द्वारा भी जो “आमीन” कहते हैं, वह
परमेश्वर की ही महिमा के लिये होता है। 21वह जो तुम्हें
मसीह के व्यक्ति के रूप में हमारे साथ सुनिश्चित करता है
और जिसने हमें भी अभिशिक्त किया है वह परमेश्वर ही
है। 22जिसने हम पर अपने स्वामित्व की मुहर लगायी
और हमारे भीतर बयाने के रूप में वह पवित्र आत्मा दी जो
इस बात का आश्वासन है कि जो देने का वचन उसने हमें
दिया है, उसे वह हमें देगा।

23साक्षी के रूप में परमेश्वर की दुहाई देते हुए और
अपने जीवन की शपथ लेते हुए मैं कहता हूँ कि मैं दोबारा
कुरिन्थुस इसलिये नहीं आया था कि मैं तुम्हें पीड़ा से बचाना
चाहता था। 24इसका अर्थ यह नहीं है कि हम तुम्हारे
विश्वास पर काबू पाना चाहते हैं। तुम तो अपने विश्वास में
अड़िग हो। बल्कि बात यह है कि हम तो तुम्हारी प्रसन्नता
के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं।

2 इसीलिए मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हें
फिर से दुःख देने तुम्हारे पास न आऊँ 2क्योंकि यदि
मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो फिर भला ऐसा कौन होगा जो मुझे
सुखी करेगा? सिवाय तुम्हें जिन्हें मैंने दुःख दिया है। 3यही
बात तो मैंने तुम्हें लिखी है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो
जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिये, उनके द्वारा मुझे दुःख
न पहुँचाया जाये। क्योंकि तुम सब में मेरा यह विश्वास रहा
है कि मेरी प्रसन्नता में ही तुम सब प्रसन्न होगे। 4क्योंकि
तुम्हें मैंने दुःख भरे मन और वेदना के साथ आँसू बहा-बहा
कर यह लिखा है। पर तुम्हें दुःखी करने के लिये नहीं,
बल्कि इस लिये कि तुम्हारे प्रति जो मेरा प्रेम है, वह कितना
महान् है, तुम इसे जान सको।

बुरा करने वाले को क्षमा कर

5किन्तु यदि किसी ने मुझे कोई दुःख पहुँचाया है तो वह
मुझे ही नहीं, बल्कि किसी न किसी मात्रा में तुम सब को
पहुँचाया है। 6ऐसे व्यक्ति को तुम्हारे समुदाय ने जो दण्ड दे
दिया है, वही पर्याप्त है। 7इसलिये तुम तो अब उसके विपरीत
उसे क्षमा कर दो और उसे प्रोत्साहित करो ताकि वह कहीं
बढ़े चढ़े दुःख में ही डूब न जाये। 8इसीलिये मेरी तुमसे
विनती है कि तुम उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ाओ। 9यह
मैंने तुम्हें यह देखने के लिये लिखा है कि तुम परीक्षा में पूरे
उतरते हो कि नहीं और सब बातों में आज्ञाकारी रहोगे या
नहीं। 10किन्तु यदि तुम किसी को किसी बात के लिये
क्षमा करते हो तो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ और जो कुछ
मैंने क्षमा किया है (यदि कुछ क्षमा किया है) तो वह मसीह
की उपस्थिति में तुम्हारे लिये ही किया है। 11ताकि हम
शैतान से मात न खा जायें। क्योंकि उसकी चालों से हम
अनजान नहीं हैं।

पौलुस की अशांति

12जब मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये मैं
त्रोवास आया तो वहाँ मेरे लिये प्रभु का द्वार खुला हुआ था।
13अपने भाई तितुस को वहाँ न पा कर मेरा मन बहुत
व्याकुल था। सो उनसे विदा लेकर मैं मैसिडोनिया को चल
पड़ा।

मसीह से विजय

14किन्तु परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा अपने
विजय-अभियान में हमें सदा राह दिखाता है। और हमारे
द्वारा हर कहीं अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता है। 15क्योंकि
उनके लिये, जो अभी उद्धार की राह पर हैं और उनके
लिये भी जो विनाश के मार्ग पर हैं, हम मसीह की परमेश्वर
को समर्पित मधुर भीनी सुगंधित धूप हैं 16किन्तु उनके
लिये जो विनाश के मार्ग पर हैं, यह मृत्यु की ऐसी दुर्गन्धि है,
जो मृत्यु की ओर ले जाती है। पर उनके लिये जो उद्धार के
मार्ग पर बढ़ रहे हैं, यह जीवन की ऐसी सुगंध है, जो जीवन
की ओर अग्रसर करती है। किन्तु इस काम के लिए सुपात्र
कौन हैं? 17परमेश्वर के वचन को अपने लाभ के लिये,
उसमें मिलावट करके बेचने वाले बहुत से दूसरे लोगों जैसे
हम नहीं हैं। नहीं! हम तो परमेश्वर के सामने परमेश्वर
की ओर से भेजे हुए व्यक्तियों के समान मसीह में स्थित
होकर, सच्चाई के साथ बोलते हैं।

नयी वाचा

3 इससे क्या ऐसा लगता है कि हम फिर से अपनी
प्रशंसा अपने आप करने लगे हैं? अथवा क्या हमें

तुम्हारे लिये या तुमसे परिचय–पत्र लेने की आवश्यकता
है? जैसा कि कुछ लोग करते हैं। निश्चय ही नहीं 2हमारा
पत्र तो तुम स्वयं हो जो हमारे मन में लिखा है, जिसे सभी
लोग जानते हैं और पढ़ते हैं 3और तुम भी तो ऐसा ही
दिखाते हो मानो तुम मसीह का पत्र हो। जो हमारी सेवा का
परिणाम है। जिसे स्याही से नहीं बल्कि सजीव परमेश्वर
की आत्मा से लिखा गया है। जिसे पथरीली शिलाओं* पर
नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय पटल पर लिखा गया है।

4हमें मसीह के कारण परमेश्वर के सामने ऐसा दावा
करने का भरोसा है। 5ऐसा नहीं है कि हम अपने आप में
इतने समर्थ हैं जो सोचने लगे हैं कि हम अपने आप से कुछ
कर सकते हैं बल्कि हमें सामर्थ्य तो परमेश्वर से मिलता
है। 6उसी ने हमें एक नये करार का सेवक बनने योग्य
ठहराया है। यह कोई लिखित संहिता नहीं है बल्कि आत्मा
का वाचा है क्योंकि लिखित संहिता तो मारती है जबकि
आत्मा जीवन देता है।

पौलुस की सेवा मूसा की सेवा से महान् है

7किन्तु वह सेवा जो मृत्यु से युक्त थी यानी व्यवस्था
का विधान जो पत्थरों पर अंकित किया गया था उसमें
इतना तेज था कि इस्राएल के लोग मूसा के उस तेजस्वी
मुख को एकटक न देख सके। और यद्यपि उस का वह
तेज बाद में क्षीण हो गया। 8फिर भला आत्मा से युक्त
सेवा और अधिक तेजस्वी क्यों नहीं होगी। 9और फिर
जब दोषी ठहराने वाली सेवा में इतना तेज है तो उस सेवा
में कितना अधिक तेज होगा जो धर्मी ठहराने वाली सेवा
है। 10क्योंकि जो पहले तेज से परिपूर्ण था वह अब उस
तेज के सामने जो उससे कहीं अधिक तेजस्वी है, तेज
रहित हो गया है। 11क्योंकि वह सेवा जिसका तेजहीन हो
जाना निश्चित था, वह तेजस्वी थी, तो जो नित्य है, वह
कितनी तेजस्वी होगी।

12अपनी इसी आशा के कारण हम इतने निर्भय हैं।
13हम उस मूसा के जैसे नहीं हैं जो अपने मुख पर पर्दा
डाले रहता था कि कहीं इस्राएल के लोग (यहूदी) अपनी
आँखें गड़ा कर जिसका विनाश सुनिश्चित था, उस सेवा
के अंत को न देख लें। 14किन्तु उनकी बुद्धि जड़ हो गयी
थी, क्योंकि आज तक जब वे उस पुराने वाचा को पढ़ते
हैं, तो वही पर्दा उन पर बिना हटाये पड़ा रहता है।
क्योंकि वह पर्दा बस मसीह के द्वारा ही हटाया जाता है।
15आज तक जब जब मूसा का ग्रंथ पढ़ा जाता है तो
पढ़ने वालों के मन पर वह पर्दा पड़ा ही रहता है।
16किन्तु जब किसी का हृदय प्रभु की ओर मुड़ता है तो
वह पर्दा हटा दिया जाता है। 17देखो। जिस प्रभु की ओर
मैं इंगित कर रहा हूँ, वही आत्मा है। और जहाँ प्रभु की
आत्मा है, वहाँ छुटकारा है। 18सो हम सभी अपने खुले
मुख के साथ दर्पण में प्रभु के तेज का जब ध्यान करते
हैं तो हम भी वैसे ही होने लगते हैं और हमारा तेज
अधिकाधिक बढ़ने लगता है। यह तेज उस प्रभु से ही
प्राप्त होता है। यानी आत्मा से।

माटी के भाँडों में अध्यात्म का धन

4 क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह से यह सेवा हमें प्राप्त
हुई है, इसीलिये हम निराश नहीं होते। 2हमने तो
लज्जापूर्ण गुप्त कार्यो को छोड़ दिया है। हम कपट नहीं
करते और न ही हम परमेश्वर के वचन में मिलावट
करते हैं, बल्कि सत्य को सरल रूप में प्रकट करके
लोगों की चेतना में परमेश्वर के सामने अपने आप को
प्रशंसा के योग्य ठहराते हैं। 3जिस सुसमाचार का हम
प्रचार करते हैं, उस पर यदि कोई पर्दा पड़ा है तो यह
केवल उनके लिये पड़ा है, जो विनाश की राह पर चल
रहे हैं। 4इस युग के स्वामी (शैतान) ने इन अविश्वासियों
की बुद्धि को अंधा कर दिया है ताकि वे परमेश्वर के
साक्षात् प्रतिरूप मसीह की महिमा के सुसमाचार से फूट
रहे प्रकाश को न देख पायें। 5हम स्वयं अपना प्रचार नहीं
करते बल्कि प्रभु के रूप में मसीह यीशु का उपदेश देते
हैं। और अपने बारे में तो यही कहते हैं कि हम यीशु के
नाते तुम्हारे सेवक हैं। 6क्योंकि उसी परमेश्वर ने, जिसने
कहा था, "अंधकार से ही प्रकाश चमकेगा" वही हमारे
हृदयों में प्रकाशित हुआ है, ताकि हमें यीशु मसीह के
व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति मिल
सके।

7किन्तु हम जैसे मिट्टी के भाँडों में यह सम्पत्ति इस
लिये रखी गयी है कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नहीं;
बल्कि परमेश्वर की सिद्ध हो। 8हम हर समय हर किसी
प्रकार से कठिन दबावों में जीते हैं, किन्तु हम कुचले नहीं

शिलाओं परमेश्वर ने सिनाई पर्वत पर मूसा को जो व्यवस्था का विधान दिया था वह शिला पटलो पर लिखा हुआ था। देखें निर्गमन 24:12; 25:16

गये हैं। हम घबराये हुए हैं किन्तु निराश नहीं हैं। 9हमें यातनाएँ दी जाती हैं किन्तु हम बिसराये नहीं गये हैं। हम झुका दिये गये हैं, पर नष्ट नहीं हुए हैं। 10हम सदा अपनी देह में यीशु की हत्या को हर कहीं लिये रहते हैं। ताकि यीशु का जीवन भी हमारी देहों में स्पष्ट रूप से प्रकट हो। 11यीशु के कारण हम जीवितों को निरन्तर मौत के हाथों सौंपा जाता है ताकि यीशु का जीवन भी नाशवान शरीरों में स्पष्ट रूप से उजागर हो। 12इसी से मृत्यु हममें और जीवन तुममें सक्रिय हैं।

13शास्त्र में लिखा है, "मैंने विश्वास किया था इसीलिये मैं बोला।" हममें भी विश्वास की वही आत्मा है और हम भी विश्वास करते हैं इसीलिए हम भी बोलते हैं। 14क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिला कर उठाया, वह हमें भी उसी तरह जीवित करेगा जैसे उसने यीशु को जिलाया था। और हमें भी तुम्हारे साथ अपने सामने खड़ा करेगा। 15ये सब बातें तुम्हारे लिये ही की जा रही हैं, ताकि अधिक से अधिक लोगों में फैलती जा रही परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर को महिमा मंडित करने वाले अधिकाधिक धन्यवाद देने में प्रतिफलित हो सके।

विश्वास से जीवन

16इसी लिए हम निराश नहीं होते। यद्यपि हमारे भौतिक शरीर क्षीण होते जा रहे हैं, तो भी हमारी अंतरात्मा प्रतिदिन नयी से नयी होती जा रही है। 17हमारा पल भर का यह छोटा–मोटा दुःख एक अनन्त अतुलनीय महिमा पैदा कर रहा है। 18जो कुछ देखा जा सकता है, हमारी आँखें उस पर नहीं टिकी हैं, बल्कि अदृश्य पर टिकी हैं। क्योंकि जो देखा जा सकता है, वह विनाशी है, जबकि जिसे नहीं देखा जा सकता, वह अविनाशी है।

5 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी यह काया अर्थात् यह तम्बू जिसमें हम इस धरती पर रहते हैं गिरा दिया जाये तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में एक चिरस्थायी भवन मिल जाता है जो मनुष्य के हाथों बना नहीं होता। 2सो हम जब तक इस आवास में हैं, हम रोते–धोते रहते हैं और यही चाहते रहते हैं कि अपने स्वर्गीय भवन में जा बसें। 3(निश्चय ही हमारी यह धारणा है कि हम उसे पायेंगे और फिर बेघर नहीं रहेंगे)। 4हममें से वे जो इस तम्बू यानी भौतिक शरीर में स्थित हैं, बोझ से दबे कराह रहे हैं। कारण यह है कि हम इन वस्त्रों को त्यागना नहीं चाहते बल्कि उनके ही ऊपर उन्हें धारण करना चाहते हैं ताकि जो कुछ नाशवान है, उसे अनन्त जीवन निगल ले। 5जिसने हमें इस प्रयोजन के लिये ही तैयार किया है, वह परमेश्वर ही है। उसी ने इस आश्वासन के रूप में कि अपने वचन के अनुसार वह हमको देगा, बयाने के रूप में हमें आत्मा दी है।

6हमें पूरा विश्वास है, क्योंकि हम जानते हैं कि जब तक हम अपनी देह में रह रहे हैं, प्रभु से दूर हैं। 7क्योंकि हम विश्वास के सहारे जीते हैं। बस आँखों देखी के सहारे नहीं। 8हमें विश्वास है, इसी से मैं कहता हूँ कि हम अपनी देह को त्याग, जा कर प्रभु के साथ रहने को अच्छा समझते हैं। 9इसी से हमारी यह अभिलाषा है कि हम चाहे उपस्थित रहें और चाहे अनुपस्थित, उसे अच्छे लगते रहें। 10हम सब को अपने शरीर में स्थित रह कर भला या बुरा, जो कुछ किया है, उसका फल पाने के लिये मसीह के न्यायासन के सामने अवश्य उपस्थित होना होगा।

परोपकारी परमेश्वर के मित्र होते हैं

11इसी लिये प्रभु से डरते हुए हम सत्य को ग्रहण करने के लिये लोगों को समझाते–बुझाते हैं। हमारे और परमेश्वर के बीच कोई पर्दा नहीं है। और मुझे आशा है कि तुम भी हमें पूरी तरह जानते हो। 12हम तुम्हारे सामने फिर से अपनी कोई प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। बल्कि तुम्हें एक अवसर दे रहे हैं कि तुम हम पर गर्व कर सको। ताकि, जो प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तु पर गर्व करते हैं, न कि उस पर जो कुछ उनके मन में है, उन्हें उसका उत्तर मिल सके। 13क्योंकि यदि हम दीवाने हैं तो परमेश्वर के लिये हैं और यदि सयाने हैं तो वह तुम्हारे लिये हैं। 14हमारा नियन्ता तो मसीह का प्रेम है क्योंकि हमने अपने मन में यह धार लिया है कि वह एक व्यक्ति (मसीह) सब लोगों के लिये मरा। अत: सभी मर गये। 15और वह सब लोगों के लिए मरा क्योंकि जो लोग जीवित हैं, वे अब आगे बस अपने ही लिये न जीते रहें, बल्कि उसके लिये जियें जो मरने के बाद फिर जीवित कर दिया गया।

16परिणामस्वरूप अब से आगे हम किसी भी व्यक्ति को सांसारिक दृष्टि से न देखें यद्यपि एक समय हमने मसीह को भी सांसारिक दृष्टि से देखा था। कुछ भी हो, अब हम उसे उस प्रकार नहीं देखते। 17इसीलिये यदि कोई

मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही हैं। सब कुछ नया हो गया है 18और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर की ओर से हुआ करती हैं, जिसने हमें मसीह के द्वारा अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से मिलाप का काम हमें सौंपा है। 19हमारा संदेश है कि परमेश्वर लोगों के पापों की अनदेखी करते हुए मसीह के द्वारा उन्हें अपने में मिला रहा है और उसी ने मनुष्य को परमेश्वर से मिलाने का संदेश हमें सौंपा है। 20इसीलिये हम मसीह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं। मानो परमेश्वर हमारे द्वारा तुम्हें चेता रहा है। मसीह की ओर से हम तुमसे विनती करते हैं कि परमेश्वर के साथ मिल जाओ।

21जो पाप रहित है, उसे उसने इसलिये पाप–बली बनाया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के सामने नेक ठहराये जायें।

6 परमेश्वर के कार्य में साथ–साथ काम करने के नाते हम तुम लोगों से आग्रह करते हैं कि परमेश्वर का जो अनुग्रह तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ मत जाने दो। 2क्योंकि उसने कहा है:

"मैंने उचित समय पर तेरी सुन ली,
और मैं उद्धार के दिन
तुझे सहारा देना आया।"

यशायाह 49:8

देखो। "उचित समय" यही है। देखो। "उद्धार का दिन" यही है।

3हम किसी के लिए कोई विरोध उपस्थित नहीं करते जिससे हमारे काम में कोई कमी आये। 4बल्कि परमेश्वर के सेवक के रूप में हम हर तरह से अपने आप को अच्छा सिद्ध करते रहते हैं। धैर्य के साथ सब कुछ सहते हुए यातनाओं के बीच, विपत्तियों के बीच, कठिनाइयों के बीच 5मार खाते हुए, बंदी गृहों में रहते हुए, अशांति के बीच, परिश्रम करते हुए, रातों–रात पलक भी न झपका कर, भूखे रह कर 6अपनी पवित्रता, ज्ञान और धैर्य से, अपनी दयालुता, पवित्र आत्मा के वरदानों और सच्चे प्रेम, 7अपने सच्चे संदेश और परमेश्वर की शक्ति से नेकी को ही अपने दायें–बायें हाथों में ढाल के रूप में लेकर 8हम आदर और निरादर के बीच अपमान और सम्मान में अपने को उपस्थित करते रहते हैं। हमें ठग समझा जाता है, यद्यपि हम सच्चे हैं। 9हमें गुमनाम समझा जाता है, जबकि हमें सभी जानते हैं। हमें मरते हुओं सा जाना जाता है, पर देखो हम तो जीवित हैं। हमें दंड भोगते हुओं सा जाना जाता है, तब भी देखो हम मृत्यु को नहीं सौंपे जा रहे हैं। 10हमें शोक से व्याकुल समझा जाता है, जबकि हम तो सदा ही प्रसन्न रहते हैं। हम दीन–हीनों के रूप में जाने जाते हैं, जबकि हम बहुत सों को वैभवशाली बना रहे हैं। लोग समझते हैं हमारे पास कुछ नहीं है, जबकि हमारे पास तो सब कुछ है।

11हे कुरिन्थियो, हमने तुमसे पूरी तरह खुल कर बातें की हैं। तुम्हारे लिये हमारा मन खुला है। 12हमारा प्यार तुम्हारे लिये कम नहीं हुआ है। किन्तु तुमने हमसे प्यार करना रोक दिया है। 13तुम्हें अपना बच्चा समझते हुए मैं कह रहा हूँ कि उचित प्रतिदान के रूप में अपना मन तुम्हें भी हमारे लिये पूरी तरह खुला रखना चाहिये।

ग़ैर मसीहियों की संगत के विरुद्ध चेतावनी

14अविश्वासियों के साथ बेमेल संगत मत करो क्योंकि नेकी और बदी की भला कैसी समानता? या प्रकाश और अंधेरे में भला मित्रता कैसे हो सकती है? 15ऐसे ही मसीह का शैतान से कैसा तालमेल? अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासी का कैसा साझा? 16परमेश्वर के मंदिर का मूर्तियों से क्या नाता? क्योंकि हम स्वयं उस सजीव परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा था :

"मैं उनमें अधिवास करूँगा;
चलूँ–फिरूँगा,
उनका परमेश्वर होऊँगा
और वे मेरे जन बनेंगे।

लैव्यव्यवस्था 26:11−12

17 "इसीलिये तुम उनमें से बाहर आ जाओ,
उनसे अपने को अलग करो
अब तुम कभी कुछ भी न छूओ
जो अशुद्ध है तब मैं तुमको अपनाऊँगा।"

यशायाह 52:11

18 "और मैं तुम्हारा पिता बनूँगा,
तुम मेरे पुत्र और पुत्री होवोगे,
सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।"

2 शमूएल 7:14; 7:8

7 हे प्रिय मित्रो, क्योंकि हमारे पास ये प्रतिज्ञाएँ हैं, इसलिये आओ, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा के कारण

हम अपनी पवित्रता को परिपूर्ण करते हुए अपने बाहरी और भीतरी सभी दोषों को धो डालें।

पौलुस का आनन्द

2अपने मन में हमें स्थान दो। हमने किसी का भी कुछ बिगाड़ा नहीं है। हमने किसी को भी ठेस नहीं पहुँचाई है। हमने किसी के साथ छल नहीं किया है। 3मैं तुम्हें नीचा दिखाने के लिये ऐसा नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ कि तुम तो हमारे मन में बसते हो। यहाँ तक कि हम तुम्हारे साथ मरने को या जीने को तैयार हैं। 4मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ। तुम पर मुझे बड़ा गर्व है। मैं सुख चैन से हूँ। अपनी सभी यातनाएँ झेलते हुए मुझमें आनन्द उमड़ता रहता है।

5जब हम मैसिडोनिया आये थे तब भी हमें आराम नहीं मिला था, बल्कि हमें तो हर प्रकार के दुःख उठाने पड़े थे बाहर झगड़ों से और मन के भीतर डर से। 6किन्तु दीन दुखियों को सुखी करने वाले परमेश्वर ने तितुस को यहाँ पहुँचा कर हमें सान्त्वना दी है। 7और वह भी केवल उसके, यहाँ पहुँचने से नहीं बल्कि इससे हमें और अधिक सान्त्वना मिली कि तुमने उसे कितना सुख दिया था। उसने हमें बताया कि हमसे मिलने को तुम कितने व्याकुल हो। तुम्हें हमारी कितनी चिंता हैं। इससे हम और भी प्रसन्न हुए।

8यद्यपि अपने पत्र से मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है किन्तु फिर भी मुझे उस के लिखने का खेद नहीं हैं। चाहे पहले मुझे इसका दुःख हुआ था किन्तु अब मैं देख रहा हूँ कि उस पत्र से तुम्हें बस पल भर को ही दुःख पहुँचा था। 9सो अब मैं प्रसन्न हूँ। इसलिये नहीं कि तुम को दुख पहुँचा था बल्कि इसलिये कि उस दुःख के कारण ही तुमने पछतावा किया। तुम्हें वह दुख परमेश्वर की ओर से ही हुआ था ताकि तुम्हें हमारे कारण कोई हानि न पहुँच पाये। 10क्योंकि वह दुख जिसे परमेश्वर देता है एक ऐसे मनफिराव को जन्म देता है जिसके लिए पछताना नहीं पड़ता और जो मुक्ति दिलाता है। किन्तु वह दुख जो सांसारिक होता है, उससे तो बस मृत्यु जन्म लेती है। 11देखो। यह दुख जिसे परमेश्वर ने दिया है, उसने तुममें कितना उत्साह जगा दिया है, अपने भोलेपन की कितनी प्रतिरक्षा, कितना आक्रोश, कितनी आकुलता, हमसे मिलने की कितनी बेचैनी, कितना साहस, पापी के प्रति न्याय चुकाने की कैसी भावना पैदा कर दी है। तुमने हर बात में यह दिखा दिया है कि इस बारे में तुम कितने निर्दोष थे। 12सो यदि मैंने तुम्हें लिखा था तो उस व्यक्ति के कारण नहीं जो अपराधी था और न ही उसके कारण जिसके प्रति अपराध किया गया था। बल्कि इस लिए लिखा था कि परमेश्वर के सामने हमारे प्रति तुम्हारी चिंता का तुम्हें बोध हो जाये। 13इससे हमें प्रोत्साहन मिला है। हमारे इस प्रोत्साहन के अतिरिक्त तितुस के आनन्द से हम और अधिक आनन्दित हुए, क्योंकि तुम सब के कारण उसकी आत्मा को चैन मिला है। 14तुम्हारे लिए मैंने उससे जो बढ़ चढ़ कर बातें की थीं, उसके लिए मुझे लजाना नहीं पड़ा है। बल्कि हमने जैसे तुमसे सब कुछ सच–सच कहा था, वैसे ही तुम्हारे बारे में हमारा गर्व तितुस के सामने सत्य सिद्ध हुआ है। 15वह जब यह याद करता है कि तुम सब ने किस प्रकार उसकी आज्ञा मानी और डर से थरथर काँपते हुए तुमने कैसे उसको अपनाया तो तुम्हारे प्रति उसका प्रेम और भी बढ़ जाता है। 16मैं प्रसन्न हूँ कि मैं तुममें पूरा भरोसा रख सकता हूँ।

हमारा दान

8 देखो, हे भाइयो, अब हम यह चाहते हैं कि तुम परमेश्वर के उस अनुग्रह के बारे में जानो जो मैसिडोनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर किया गया है। 2मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि उनकी कठिन परीक्षा ली गयी तो भी वे प्रसन्न रहे और अपनी गहन दरिद्रता के रहते हुए भी उनकी सम्पूर्ण उदारता उमड़ पड़ी। 3मैं प्रमाणित करता हूँ कि उन्होंने जितना दे सकते थे दिया। इतना ही नहीं, बल्कि अपने सामर्थ्य से भी अधिक मन भर के दिया। 4वे बड़े आग्रह के साथ संत जनों की सहायता करने में हमें सहयोग देने को विनय करते रहे। 5उन्होंने जैसी हमें अपेक्षा थी, वैसे नहीं बल्कि पहले अपने आप को प्रभु को समर्पित किया और फिर परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल वे हमें अर्पित हो गये। 6इसीलिये हमने तितुस से प्रार्थना की कि जैसे वह अपने कार्य का प्रारम्भ कर ही चुका है, वैसे ही इस अनुग्रह के कार्य को वह तुम्हारे लिये करे। 7और जैसे कि तुम हर बात में यानी विश्वास में, वाणी में, ज्ञान में, अनेक प्रकार से उपकार करने में और हमने तुम्हें जिस प्रेम की शिक्षा दी है उस प्रेम में, भरपूर हो, वैसे ही अनुग्रह के इस कार्य में भी भरपूर हो जाओ।

8यह मैं आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा हूँ बल्कि अन्य
व्यक्तियों के मन में तुम्हारे लिए जो तीव्रता है, उस प्रेम की
सच्चाई को प्रमाणित करने के लिये ऐसा कह रहा हूँ।
9क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से तुम परिचित
हो। तुम यह जानते हो कि धनी होते हुए भी तुम्हारे लिये
वह निर्धन बन गया। ताकि उसकी निर्धनता से तुम
मालामाल हो जाओ।

10इस विषय में मैं तुम्हें अपनी सलाह देता हूँ। तुम्हें यह
शोभा देता है। तुम पिछले साल न केवल दान देने की इच्छा
में सबसे आगे थे बल्कि दान देने में भी सबसे आगे रहे।
11अब दान करने की उस तीव्र इच्छा को तुम जो कुछ
तुम्हारे पास है, उसी से पूरा करो। तुम इसे उतनी ही लगन
से “पूरा करो” जितनी लगन से तुमने इसे “चाहा” था।
12क्योंकि यदि दान देने की लगन है तो व्यक्ति के पास जो
कुछ है, उसी के अनुसार उसका दान ग्रहण करने योग्य
बनता है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।
13हम यह नहीं चाहते कि दूसरों को तो सुख मिले और
तुम्हें कष्ट; बल्कि हम तो बराबरी चाहते हैं। 14हमारी
इच्छा है कि उनके इस अभाव के समय में तुम्हारी सम्पन्नता
उनकी आवश्यकताएँ पूरी करे ताकि आवश्यकता पड़ने
पर आगे चल कर उनकी सम्पन्नता भी तुम्हारे अभाव को
दूर कर सके ताकि समानता स्थापित हो। 15जैसा कि शास्त्र
कहता है:

“जिसने बहुत बटोरा उसके पास अधिक न रहा;
और जिसने अल्प बटोरा, उसके पास स्वल्प न रहा।”

निर्गमन 16:18

तितुस और उसके साथी

16परमेश्वर का धन्यवाद है जिसने तितुस के मन में
तुम्हारी सहायता के लिए वैसी ही तीव्र इच्छा भर दी है, जैसी
हमारे मन में है। 17क्योंकि उसने हमारी प्रार्थना स्वीकार
की और वह उसके लिए विशेष रूप से अपनी इच्छा भी
रखता है, इसलिए वह स्वयं अपनी इच्छा से ही तुम्हारे पास
आने को विदा हो रहा है। 18हम उसके साथ उस भाई को
भी भेज रहे हैं, जिसका सुसमाचार के प्रचार के रूप में
सभी कलीसियाओं में हर कहीं यश फैल रहा है। 19इसके
अतिरिक्त इस दयापूर्ण कार्य में कलीसियाओं ने उसे हमारे
साथ यात्रा करने को नियुक्त भी किया है। यह दया कार्य
जिसका प्रबन्ध हमारे द्वारा किया जा रहा है, स्वयं प्रभु को
सम्मानित करने के लिये और परोपकार में हमारी तत्परता
को दिखाने के लिए है।

20हम सावधान रहने की चेष्टा कर रहे हैं इस बड़े धन
के लिए जिसका प्रबन्ध कर रहे हैं, कोई हमारी आलोचना
न करे। 21क्योंकि हमें अपनी अच्छी साख बनाए रखने की
चिंता है। न केवल प्रभु के आगे, बल्कि लोगों के बीच भी।

22और उनके साथ हम अपने उस भाई को भी भेज रहे
हैं, जिसे बहुत से विषयों में और बहुत से अवसरों पर हमने
परोपकार के लिए उत्सुक व्यक्ति के रुप में प्रमाणित किया
है। और अब तो तुम्हारे लिये उसमें जो असीम विश्वास है,
उससे उसमें सहायता करने का उत्साह और अधिक हो
गया है।

23जहाँ तक तितुस का क्षेत्र है, तो वह तुम्हारे बीच
सहायता कार्य में मेरा साथी और साथ साथ काम करने
वाला रहा है। और जहाँ तक हमारे बन्धुओं का प्रश्न है, वे
तो कलीसियाओं के प्रतिनिधि तथा मसीह के सम्मान हैं।
24सो तुम उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण देना और तुम्हारे लिये
हम इतना गर्व क्यों रखते हैं, इसे सिद्ध करना ताकि सभी
कलीसिया उसे देख सकें।

साथियों की मदद करो

9 अब संतों की सेवा के विषय में: तुम्हें इस प्रकार
लिखते चले जाना मेरे लिये आवश्यक नहीं है
2क्योंकि सहायता के लिये तुम्हारी तत्परता को मैं जानता
हूँ और उसके लिए मैसिडोनिया निवासियों के सामने यह
कहते हुए मुझे गर्व है कि अखाया के लोग तो, पिछले
साल से ही तैयार हैं और तुम्हारे उत्साह ने उन में से
अधिकतर को कार्य के लिए प्रेरणा दी है। 3किन्तु मैं
भाइयों को तुम्हारे पास इसलिये भेज रहा हूँ कि तुम को
लेकर हम जो गर्व करते हैं, वह इस बारे में व्यर्थ सिद्ध न
हो। और इसलिये भी कि तुम तैयार रहो, जैसा कि मैं
कहता आया हूँ। 4नहीं तो जब कोई मैसिडोनिया वासी मेरे
साथ तुम्हारे पास आयेगा और तुम्हें तैयार नहीं पायेगा तो
हम उस विश्वास के कारण जिसे हमने तुम्हारे प्रति दर्शाया
है, लज्जित होंगे। (और तुम तो और भी अधिक लज्जित
होगे।) 5इसीलिये मैंने भाइयों से यह कहना आवश्यक
समझा कि वे हमसे पहले ही तुम्हारे पास जायें और जिन
उपहारों को देने का तुम पहले ही वचन दे चुके हो उन्हें
पहले ही से उदारतापूर्वक तैयार रखें। इसलिये यह दान

स्वेच्छापूर्वक तैयार रखा जाये न कि दबाव के साथ तुमसे
छीनी गयी किसी वस्तु के रूप में।

6इसे याद रखो। जो छितरा बोता है, वह छितरा ही काटेगा
और जिस की बुआई सघन है, वह सघन ही काटेगा। 7हर
कोई बिना किसी कष्ट के या बिना किसी दबाव के, उतना
ही दे जितना उसने मन में सोचा है। क्योंकि परमेश्वर
प्रसन्न–दाता से ही प्रेम करता है। 8और परमेश्वर तुम पर
हर प्रकार के उत्तम वरदानों की वर्षा कर सकता है जिससे
तुम अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुओं में सदा प्रसन्न हो
सकते हो और सभी अच्छे कार्यों के लिये फिर तुम्हारे पास
आवश्यकता से भी अधिक रहेगा। 9जैसा कि शास्त्र में
लिखा है:

"वह मुक्त भाव से देता है, वह दीन
जनों को देता है, और उसकी चिरउदारता
सदा–सदा को बनी रहती है।"

भजन संहिता 112:9

10वह परमेश्वर ही बोने वाले को बीज और
खाने वाले को भोजन सुलभ कराता है। वही तुम्हें बीज
देगा और उसकी बढ़वार करेगा, उसी से तुम्हारे धर्म की
खेती फूलेगी फलेगी। 11तुम हर प्रकार से सम्पन्न बनाये
जाओगे ताकि तुम हर अवसर पर उदार बन सको।
तुम्हारी उदारता परमेश्वर के प्रति लोगों के धन्यवाद को
पैदा करेगी। 12दान की इस पवित्र सेवा से न केवल पवित्र
लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं बल्कि परमेश्वर
के प्रति अत्यधिक धन्यवाद का भाव भी उपजता है।
13क्योंकि तुम्हारी इस सेवा से जो प्रमाण प्रकट होता है,
उससे संत जन परमेश्वर की स्तुति करेंगे। क्योंकि यीशु
मसीह के सुसमाचार में तुम्हारे विश्वास की घोषणा से
उत्पन्न हुई तुम्हारी आज्ञाकारिता के कारण और अपनी
उदारता के कारण उनके लिये तथा दूसरे सभी लोगों के
लिये तुम दान देते हो। 14और वे भी तुम्हारे लिए प्रार्थना
करते हुए तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा करेंगे। तुम पर
परमेश्वर के असीम अनुग्रह के कारण 15उस वरदान के
लिये जिसका बखान नहीं किया जा सकता, परमेश्वर का
धन्यवाद है।

पौलुस द्वारा अपनी सेवा का समर्थन

10 मैं, पौलुस, निजी तौर पर मसीह की कोमलता
और सहनशीलता को साक्षी करके तुमसे
निवेदन करता हूँ। लोगों का कहना है कि मैं जो तुम्हारे
बीच रहते हुए विनम्र हूँ किन्तु वही मैं जब तुम्हारे बीच नहीं
हूँ, तो तुम्हारे लिये निर्भय हूँ। 2अब मेरी तुमसे प्रार्थना है
कि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँतो उसी विश्वास के साथ वैसी
निर्भयता दिखाने को मुझ पर दबाव मत डालना जैसी कि
मेरे विचार में मुझे कुछ उन लोगों के विरुद्ध दिखानी होगी
जो सोचते हैं कि हम एक संसारी जीवन जीते हैं। 3क्योंकि
यद्यपि हम भी इस संसार में ही रहते हैं किन्तु हम संसारी
लोगों की तरह नहीं लड़ते हैं। 4क्योंकि जिन शस्त्रों से हम
युद्ध लड़ते हैं, वे सांसारिक नहीं हैं, बल्कि उनमें गढ़ों को
तहस–नहस कर डालने के लिए परमेश्वर की शक्ति निहित
है। 5और उन्हीं शस्त्रों से हम लोगों के तर्कों का और उस
प्रत्येक अवरोध का, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध
खड़ा है, खण्डन करते हैं। 6जब तुममें पूरी आज्ञाकारिता है
तो हम हर प्रकार की अनाज्ञा को दण्ड देने के लिए तैयार
हैं।

7तुम्हारे सामने जो तथ्य हैं उन्हें देखो। यदि कोई अपने
मन में यह मानता है कि वह मसीह का है, तो वह अपने
बारे में फिर से याद करे कि वह भी उतना ही मसीह का है
जितना कि हम है। 8और यदि मैं अपने उस अधिकार के
विषय में कुछ और गर्व करूँ, जिसे प्रभु ने हमें तुम्हारे
विनाश के लिये नहीं बल्कि आध्यात्मिक निर्माण के लिये
दिया है 9तो इसके लिये मैं लज्जित नहीं हूँ। मैं अपने पर
नियत्रण रखूँगा कि अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें भयभीत करने
वाले के रूप में न दिखूँ। 10मेरे विरोधियों का कहना है,
"पौलुस के पत्र तो भारी भरकम और प्रभावपूर्ण होते हैं।
किन्तु मेरा व्यक्तित्व दुर्बल, और वाणी अर्थहीन है।" 11किन्तु
ऐसे कहने वाले व्यक्ति को समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे
बीच न रहते हुए जब हम अपने पत्रों में कुछ लिखते हैं तो
उसमें और तुम्हारे बीच रहते हुए हम जो कर्म करते हैं
उनमें कोई अन्तर नहीं है।

12हम उन कुछ लोगों के साथ अपनी तुलना करने का
साहस नहीं करते जो अपने आपको बहुत महत्त्वपूर्ण
मानते हैं। किन्तु जब वे अपने को एक दूसरे से नापते हैं
और परस्पर अपनी तुलना करते हैं तो वे यह दर्शाते हैं
कि वे नहीं जानते कि वे कितने मूर्ख हैं। 13जो भी हो, हम
उचित सीमाओं से बाहर बढ़ चढ़ कर बात नहीं करेंगे,
बल्कि परमेश्वर ने हमारी गतिविधियों की जो सीमाएँ हमें
सौंपी हैं, हम उन्हीं में रहते हैं और वे सीमाएँ तुम तक

पहुँचती हैं। [14]हम अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यदि हम तुम तक नहीं पहुँच पाते तो हो जाता। किन्तु तुम तक यीशु मसीह का सुसमाचार लेकर हम तुम्हारे पास सबसे पहले पहुँचे हैं। [15]अपनी उचित सीमा से बाहर जाकर किसी दूसरे व्यक्ति के काम पर हम गर्व नहीं करते किन्तु हमें आशा है कि तुम्हारा विश्वास जैसे जैसे बढ़ेगा तो वैसे वैसे ही हमारी गतिविधियों के क्षेत्र के साथ तुम्हारे बीच हम भी व्यापक रूप से फैलेंगे। [16]इससे तुम्हारे क्षेत्र से आगे भी हम सुसमाचार का प्रचार कर पायेंगे। किसी अन्य को जो काम सौंपा गया था उस क्षेत्र में अब तक जो काम हो चुका है हम उसके लिए शेखी नहीं बघारते। [17]जैसा कि शास्त्र कहता है: "जिसे गर्व करना है वह, प्रभु ने जो कुछ किया है, उसी पर गर्व करे।"* [18]क्योंकि अच्छा वही माना जाता है जिसे प्रभु अच्छा स्वीकारता है, न कि वह जो अपने आप को स्वयं अच्छा समझता है।

बनावटी प्रेरित और पौलुस

11 काश, तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते। हाँ, तुम उसे सह ही लो। [2]क्योंकि मैं तुम्हारे लिये ऐसी सजगता के साथ, जो परमेश्वर से मिलती है, सजग हूँ। मैंने तुम्हारी मसीह से सगाई करा दी है ताकि तुम्हें एक पवित्र कन्या के समान उसे अर्पित कर सकूँ। [3]किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं जैसे उस सर्प ने हव्वा को अपने कपट से भ्रष्ट कर दिया था, वैसे ही कहीं तुम्हारा मन भी उस एकनिष्ठ भक्ति और पवित्रता से, जो हमें मसीह के प्रति रखनी चाहिये, भटका न दिया जाये। [4]क्योंकि जब कोई तुम्हारे पास आकर जिस यीशु का उपदेश हमने तुम्हें दिया है, उसे छोड़ किसी दूसरे यीशु का तुम्हें उपदेश देता है, अथवा जो आत्मा तुमने ग्रहण की है, उससे अलग किसी और आत्मा को तुम ग्रहण करते हो अथवा छुटकारे के जिस संदेश को तुमने ग्रहण किया है, उससे भिन्न किसी दूसरे संदेश को भी ग्रहण करते हो।

[5]तो तुम बहुत प्रसन्न होते हो। पर मैं अपने आप को तुम्हारे उन "बड़े प्रेरितों" से बिलकुल भी छोटा नहीं मानता। [6]हो सकता है मेरी बोलने की शक्ति सीमित है किन्तु मेरा ज्ञान तो असीम है। इस बात को हमने सभी बातों में तुम्हें स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

[7]और फिर मैंने सेंत मेंत में सुसमाचार का उपदेश देकर तुम्हें ऊँचा उठाने के लिये अपने आप को झुकाते हुए, क्या कोई पाप किया है? [8]मैंने दूसरी कलीसियाओं से अपना पारिश्रमिक लेकर उन्हें लूटा है ताकि मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँ। [9]और जब मैं तुम्हारे साथ था तब भी आवश्यकता पड़ने पर मैंने किसी पर बोझ नहीं डाला क्योंकि मैसिडोनिया से आये भाइयों ने मेरी आवश्यकताएँ पूरी कर दी थीं। मैंने हर बात में अपने आप को तुम पर न बोझ बनने दिया है और न बनने दूँगा। [10]और क्योंकि मुझमें मसीह का सत्य निवास करता है, इसलिये अखाया के समूचे क्षेत्र में मुझे बढ़ चढ़कर बोलने से कोई नहीं रोक सकता। [11]भला क्यों? क्या इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? परमेश्वर जानता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

[12]किन्तु जो मैं कर रहा हूँ उसे तो करता ही रहूँगा; ताकि उन तथाकथित प्रेरितों के गर्व को, जो गर्व करने का कोई ऐसा बहाना चाहते हैं जिससे वे भी उन कामों में हमारे बराबर समझे जा सकें जिनका उन्हें गर्व है; मैं उनके उस गर्व को समाप्त कर सकूँ। [13]ऐसे लोग नकली प्रेरित हैं। वे छली हैं, वे मसीह के प्रेरित होने का ढोंग करते हैं। [14]इसमें कोई अचरज नहीं है, क्योंकि शैतान भी तो परमेश्वर के दूत का रूप धारण कर लेता है। [15]इसलिये यदि उसके सेवक भी नेकी के सेवकों का सा रूप धर लें तो इसमें क्या बड़ी बात है? किन्तु अंत में उन्हें अपनी करनी के अनुसार फल तो मिलेगा ही।

पौलुस की यातनाएँ

[16]मैं फिर दोहराता हूँ कि मुझे कोई मूर्ख न समझे। किन्तु यदि फिर भी तुम ऐसे समझते हो तो मुझे मूर्ख बनाकर ही स्वीकार करो। ताकि मैं भी कुछ गर्व कर सकूँ। [17]अब यह जो मैं कह रहा हूँ, वह प्रभु के अनुसार नहीं कह रहा हूँ बल्कि एक मूर्ख के रूप में गर्वपूर्ण विश्वास के साथ कह रहा हूँ। [18]क्योंकि बहुत से लोग अपने सांसारिक जीवन पर ही गर्व करते हैं। [19]फिर तो मैं भी गर्व करूँगा। और फिर तुम तो इतने समझदार हो कि मूर्खों की बातें प्रसन्नता के साथ सह लेते हो। [20]क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाये, तुम्हारा शोषण करे, तुम्हें किसी जाल में फँसाये, अपने को तुमसे बड़ा बनाये अथवा तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मारे तो तुम उसे सह लेते हो। [21]मैं

जिसे ... करे यिर्म. 9:24

लज्जा के साथ कह रहा हूँ, हम बहुत दुर्बल रहे हैं। (मैं
मूर्खतापूर्वक कह रहा हूँ) यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर
गर्व करने का साहस करता है तो वैसा ही साहस मैं भी
करूँगा। 22इब्रानी वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इस्राएली वे ही
तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इब्राहीम की संतान वे ही तो नहीं हैं। मैं
भी हूँ। 23क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? (एक सनकी की
तरह मैं यह कहता हूँ) कि मैं तो उससे भी बड़ा मसीह का
दास हूँ। मैने बहुत कठोर परिश्रम किया है। मैं बार बार
जेल गया हूँ। मुझे बार बार पीटा गया है। अनेक अवसरों
पर मेरा मौत से सामना हुआ है। 24पाँच बार मैंने यहूदियों
से एक कम चालीस चालीस कोड़े खाये हैं। 25मैं तीन–तीन
बार लाठियों से पीटा गया हूँ। एक बार तो मुझ पर पथराव
भी किया गया। तीन बार मेरा जहाज़ डूबा। एक दिन और
एक रात मैंने समुद्र के गहरे जल में बिताई। 26मैंने भयानक
नदियों, खूँखार डाकुओं, स्वयं अपने लोगों, विधर्मियों, नगरों,
ग्रामों, समुद्रों और दिखावटी बंधुओं के संकटों के बीच
अनेक यात्राएँ की हैं। 27मैंने कड़ा परिश्रम करके थकावट
से चूर हो कर जीवन जीया है। अनेक अवसरों पर मैं सो
तक नहीं पाया हूँ। भूखा और प्यासा रहा हूँ। प्राय: मुझे
खाने तक को नहीं मिल पाया है। बिना कपड़ों के ठण्ड में
ठिठुरता रहा हूँ। 28और अब और अधिक क्या कहूँ? मुझ
पर सभी कलीसियाओं की चिंता का भार भी प्रतिदिन बना
रहा है। 29किसकी दुर्बलता मुझे शक्तिहीन नहीं कर देती है
और किसका पाप में प्रवृत्त होना मुझे बैचेन नहीं बना
डालता है।

30यदि मुझे बढ़चढ़कर बातें करनी ही हैं तो मैं उन
बातों को करूँगा जो मेरी दुर्बलता की हैं। 31परमेश्वर और
प्रभु यीशु का परम पिता जो सदा ही धन्य है, जानता है कि
मैं कोई झूठ नहीं बोल रहा हूँ। 32जब मैं दमिश्क में था तो
महाराजा अरितास के राज्यपाल ने दमिश्क पर घेरा डाल
कर मुझे बंदी कर लेने का जतन किया था। 33किन्तु मुझे
नगर की चारदीवारी की खिड़की से टोकरी में बैठा कर
नीचे उतार दिया गया और मैं उसके हाथों से बच निकला।

पौलुस पर प्रभु का विशेष अनुग्रह

12 अब तो मुझे गर्व करना ही होगा। इससे कुछ
मिलना नहीं है, किन्तु मैं तो प्रभु के दर्शनों और
प्रभु के दैवी संदेशों पर गर्व करता ही रहूँगा। 2मैं मसीह में
स्थित एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे चौदह साल
पहले (मैं नहीं जानता बस परमेश्वर ही जानता है) देह
सहित या देह रहित तीसरे स्वर्ग में उठा लिया गया था।
3और मैं जानता हूँ कि इसी व्यक्ति को (मैं नहीं जानता,
बस परमेश्वर ही जानता है) बिना शरीर के या शरीर
सहित 4स्वर्गलोक में उठा लिया गया था। और उसने
अनिर्वचनीय शब्द सुने जिन्हें बोलने की अनुमति मनुष्य
को नहीं है। 5हाँ, ऐसे मनुष्य पर मैं अभिमान करूँगा किन्तु
स्वयं अपने पर, अपनी दुर्बलताओं को छोड़कर अभिमान
नहीं करूँगा। 6क्योंकि यदि मैं अभिमान करने की सोचूँ
तो भी मैं मूर्ख नहीं बनूँगा क्योंकि तब मैं सत्य कह रहा
होऊँगा। किन्तु तुम्हें मैं इससे बचाता हूँ ताकि कोई मुझे
जैसा करते देखता है या कहते सुनता है, उससे अधिक श्रेय
न दे।

7असाधारण दैवी संदेशों के कारण मुझे कोई गर्व न हो
जाये इसीलिये मुझे सालते रहने वाला एक काँटा भी दे दिया
है। जो शैतान का दूत है, वह मुझे दुखता रहता है ताकि
मुझे बहुत अधिक घमण्ड न हो जाये। 8काँटे की इस समस्या
के बारे में मैंने प्रभु से तीन बार प्रार्थना की है कि वह इस
काँटे को मुझमें से निकाल ले, 9किन्तु उसने मुझसे कह
दिया है "तेरे लिये मेरा अनुग्रह पर्याप्त है क्योंकि निर्बलता
में ही मेरी शक्ति सबसे अधिक होती है, इसीलिये मैं अपनी
निर्बलता पर प्रसन्नता के साथ गर्व करता हूँ। ताकि मसीह
की शक्ति मुझ में रहे। 10इस प्रकार मसीह की ओर से मैं
अपनी निर्बलताओं, अपमानों, कठिनाइयों, यातनाओं और
बाधाओं में आनन्द लेता हूँ क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ,
तभी शक्तिशाली होता हूँ।

कुरिन्थियों के प्रति पौलुस का प्रेम

11मैं मूर्खों की तरह बतियाता रहा हूँ किन्तु ऐसा करने
को मुझे विवश तुमने किया। तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी
चाहिये थी यद्यपि वैसे तो मैं कुछ नहीं हूँ पर तुम्हारे उन
"महाप्रेरितों" से मैं किसी प्रकार भी छोटा नहीं हूँ। 12किसी
को प्रेरित सिद्ध करने वाले आश्चर्य पूर्ण संकेत, अदभुत
कर्म और आश्चर्य कर्म भी तुम्हारे बीच धीरज के साथ
प्रकट किये गये हैं। मैंने हर प्रकार की यातना झेली है।
चाहे संकेत हो, चाहे कोई चमत्कार या आश्चर्य कर्म 13तुम
दूसरी कलीसियाओं से किस दृष्टि से कम हो? सिवाय इसके
कि मैं तुम पर किसी प्रकार भी कभी भार नहीं बना हूँ?
मुझे इस के लिए क्षमा करो।

14देखो, तुम्हारे पास आने को अब मैं तीसरी बार तैयार
हूँ। पर मैं तुम पर किसी तरह का बोझ नहीं बनूँगा। मुझे
तुम्हारी सम्पत्तियों की नहीं तुम्हारी चाहत है। क्योंकि बच्चों
को अपने माता पिता के लिये कोई बचत करने की
आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने बच्चों के लिये
माता–पिता को ही बचत करनी होती है। 15जहाँ तक मेरी
बात है, मेरे पास जो कुछ है, तुम्हारे लिए प्रसन्नता के साथ
खर्च करूँगा यहाँ तक कि अपने आप को भी तुम्हारे लिए
खर्च कर डालूँगा। यदि मैं तुमसे अधिक प्रेम रखता हूँ, तो
भला तुम मुझे कम प्यार कैसे करोगे।

16हो सकता है, मैंने तुम पर कोई बड़ा बोझ न डाला हो
किन्तु (तुम्हारा कहना है) मैं कपटी था मैंने तुम्हें अपनी
चालाकी से फँसा लिया। 17क्या जिन लोगों को मैंने तुम्हारे
पास भेजा था, उनके द्वारा तुम्हें छला था? नहीं! 18तितुस
और उसके साथ हमारे भाई को मैंने तुम्हारे पास भेजा था।
क्या उसने तुम्हें कोई धोखा दिया? नहीं क्या हम उसी
निष्कपट आत्मा से नहीं चलते रहे? क्या हम उन्हीं चरण
चिह्नों पर नहीं चले?

19अब तुम क्या यह सोच रहे हो कि एक लम्बे समय से
हम तुम्हारे सामने अपना पक्ष रख रहे हैं। किन्तु हम तो
परमेश्वर के सामने मसीह के अनुयायी के रूप में बोल
रहे हैं। मेरे प्रिय मित्रो! हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह
तुम्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए है।
20क्योंकि मुझे भय है कि कहीं जब मैं तुम्हारे पास आऊँ
तो तुम्हें वैसा न पाऊँ, जैसा पाना चाहता हूँ और तुम भी
मुझे वैसा न पाओ जैसा मुझे पाना चाहते हो। मुझे भय है
कि तुम्हारे बीच मुझे कहीं आपसी झगड़े, ईर्ष्या, क्रोधपूर्ण
कहा–सुनी, व्यक्तिगत षड्यन्त्र, अपमान, काना–फूसी,
हेकड़पन और अव्यवस्था न मिले। 21मुझे डर है कि जब
मैं फिर तुमसे मिलने आऊँ तो तुम्हारे सामने मेरा परमेश्वर
कहीं मुझे लज्जित न करे; और मुझे उन बहुतों के लिए
विलाप न करना पड़े जिन्होंने पहले पाप किये हैं और
अपवित्रता, व्यभिचार तथा भोग–विलास में डूबे रहने के
लिये पछतावा नहीं किया है।

अंतिम चेतावनी और नमस्कार

13 यह तीसरा अवसर है जब मैं तुम्हारे पास आ
रहा हूँ। शास्त्र कहता है: "हर बात की पुष्टि,
दो या तीन गवाहियों की साक्षी पर की जायेगी।" 2जब दूसरी
बार मैं तुम्हारे साथ था, मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी और अब
जब मैं तुमसे दूर हूँ, मैं तुम्हें फिर चेतावनी देता हूँ कि यदि
मैं फिर तुम्हारे पास आया तो जिन्होंने पाप किये हैं और जो
पाप कर रहे हैं उन्हें और शेष दूसरे लोगों को भी नहीं
छोड़ूँगा। 3ऐसा मैं इसलिये कर रहा हूँ कि तुम इस बात का
प्रमाण चाहते हो कि मुझमें मसीह बोलता है। वह तुम्हारे
लिए निर्बल नहीं है, बल्कि समर्थ है। 4यह सच है कि उसे
उसकी दुर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया किन्तु अब
वह परमेश्वर की शक्ति के कारण ही जी रहा है। यह भी
सच है कि मसीह में स्थित हम निर्बल हैं किन्तु तुम्हारे लाभ
के लिए परमेश्वर की शक्ति के कारण हम उसके साथ
जीयेंगे।

5यह देखने के लिए अपने आप को परखो कि क्या तुम
विश्वासपूर्वक जी रहे हो। अपनी जाँच पड़ताल करो अथवा
क्या तुम नहीं जानते कि वह यीशु मसीह तुम्हारे भीतर ही
है। यदि ऐसा नहीं है, तो तुम इस परीक्षा में पूरे नहीं उतरे।
6मैं आशा करता हूँ कि तुम यह जान जाओगे कि हम इस
परीक्षा में किसी भी तरह विफल नहीं हुए। 7हम परमेश्वर
से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई बुराई न करो। इसलिये
नहीं कि हम इस परीक्षा में खरे दिखाई दें, बल्कि इसलिए
कि तुम वही करो जो उचित है। चाहे हम इस परीक्षा में
विफल हुए ही क्यों न दिखाई दें। 8वास्तव में हम सत्य के
विरुद्ध कुछ कर ही नहीं सकते। हम तो जो करते हैं, सत्य
के लिये ही करते हैं। 9हमारी निर्बलता और तुम्हारी सबलता
हमें प्रसन्न करती है और हम इसी के लिये प्रार्थना करते
रहते हैं कि तुम दृढ़ से दृढ़तर बनो। 10इसीलिये तुमसे दूर
रहते हुए भी मैं इन बातों को तुम्हें लिख रहा हूँ ताकि जब
मैं तुम्हारे बीच होऊँतो मुझे प्रभु के द्वारा दिये गये अधिकार
से तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे
आध्यात्मिक विकास के लिए तुम्हारे साथ कठोरता न
बरतनी पड़े।

11अब हे भाइयो, मैं तुमसे विदा लेता हूँ। अपने आचरण
ठीक रखो। वैसा ही करते रहो जैसा करने को मैंने कहा
है। एक जैसा सोचो। शांतिपूर्वक रहो। जिससे प्रेम और शांति
का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

12पवित्र चुम्बन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो। 13सभी
संतों का तुम्हें नमस्कार।

14तुम पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का
प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ रहे।

गलातियों

1 पौलुस की ओर से, जो एक प्रेरित है, जिसने एक ऐसा सेवा व्रत धारण किया है, जो उसे न तो मनुष्यों से प्राप्त हुआ है और न किसी एक मनुष्य द्वारा दिया गया है, बल्कि यीशु मसीह द्वारा उस परम पिता परमेश्वर से, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से फिर से जिला दिया था, दिया गया है।

2और मेरे साथ जो भाई हैं, उन सब की ओर से गलातिया* क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम:

3हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।। 4जिसने हमारे
पापों के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया ताकि इस पापपूर्ण संसार से, जिसमें हम रह रहे हैं, वह हमें छुटकारा दिला सके। हमारे परम पिता परमेश्वर की यही
इच्छा है। 5वह सदा सर्वदा महिमावान हो आमीन!

सच्चा सुसमाचार एक ही है

6मुझे अचरज है! कि तुम लोग इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़ कर, जिसने मसीह के अनुग्रह द्वारा तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे
हो। 7कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही नहीं, किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हें भरमा रहे हैं और मसीह
के सुसमाचार में हेर–फेर का जतन कर रहे हैं। 8किन्तु
चाहे हम हों और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हें हमारे द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है
तो उसे धिक्कार है। 9जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर दोहरा रहा हूँ कि यदि चाहे हम हों, और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हारे द्वारा स्वीकार किए गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है।

10क्या इससे तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं मनुष्यों का समर्थन चाहता हूँ? या यह कि मुझे परमेश्वर का समर्थन मिले? अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का जतन कर रहा हूँ? यदि मैं मनुष्यों को प्रसन्न करता तो मैं मसीह के सेवक का सा नहीं होता।

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

11हे भाइयों, मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि वह सुसमाचार
जिसका उपदेश तुम्हें मैंने दिया है, 12कोई मनुष्य से प्राप्त
सुसमाचार नहीं हैं क्योंकि न तो मैंने इसे किसी मनुष्य से पाया है और न ही किसी मनुष्य ने इसकी शिक्षा मुझे दी है। बल्कि दैवी संदेश के रूप में यह यीशु मसीह द्वारा मेरे सामने प्रकट हुआ है।

13यहूदी धर्म में मैं पहले कैसे जीया करता था, उसे तुम सुन चुके हो, और तुम यह भी जानते हो कि मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर कितना अत्याचार किया है और उसे
मिटा डालने का प्रयास तक किया है। 14यहूदी धर्म के
पालने में मैं अपने युग के समकालीन यहूदियों से आगे था क्योंकि मेरे पूर्वजों से जो परम्पराएँ मुझे मिली थीं, उनमें मेरी उत्साहपूर्ण आस्था थी।

15किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे चुन
लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया था। 16ताकि
वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे मैं ग़ैर यहूदियों के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ। उस समय
तत्काल मैंने किसी मनुष्य से कोई राय नहीं ली। 17और न
ही मैं उन लोगों के पास यरूशलेम गया जो मुझसे पहले प्रेरित बने थे। बल्कि मैं अरब को गया और फिर वहाँ से दमिश्क लौट आया।

गलातिया कदाचित यह वही क्षेत्र रहा होगा जहाँ अपनी पहली धार्मिक सेवा यात्रा के अवसर पर पौलुस ने उपदेश दिया था और कलीसिया की स्थापना की थी। देखें प्रेरितों के काम 13 और 14

18फिर तीन साल के बाद पतरस से मिलने के लिए मैं यरूशलेम पहुँचा और उसके साथ एक पखवाड़े ठहरा। 19किन्तु वहाँ मैं प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर किसी भी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला। 20मैं परमेश्वर के सामने शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ में लिख रहा हूँ उसमें झूठ नहीं है। 21उसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के प्रदेशों में गया।

22किन्तु यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते थे। 23किन्तु वे लोगों को कहते सुनते थे, "वही व्यक्ति जो पहले हमें सताया करता था, उसी विश्वास, यानी उसी मत का प्रचार कर रहा है, जिसे उसने कभी नष्ट करने का प्रयास किया था।" 24मेरे कारण उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

2 चौदह साल बाद मैं फिर से यरूशलेम गया। बरनाबास मेरे साथ था और तितुस को भी मैंने साथ ले लिया था। 2मैं परमेश्वर के दिव्य दर्शन के कारण वहाँ गया था। मैं ग़ैर यहूदियों के बीच जिस सुसमाचार का उपदेश दिया करता हूँ, उसी सुसमाचार को मैंने एक निजी सभा के बीच कलीसिया के मुखियाओं को सुनाया। मैं वहाँ इसलिए गया था कि परमेश्वर ने मुझे दर्शाया था कि मुझे वहाँ जाना चाहिए। ताकि जो काम मैंने पिछले दिनों किया था, या जिसे मैं कर रहा हूँ, वह बेकार न चला जाये। 3परिणाम–स्वरूप तितुस तक को, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी है, फिर भी उसे ख़तना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। 4किन्तु उन झूठे बंधुओं के कारण जो लुके–छिपे हमारे बीच भेदिये के रूप में यीशु मसीह में हमारी स्वतन्त्रता का पता लगाने को इसलिए घुस आये थे कि हमें दास बना सकें, यह बात उठी 5किन्तु हमने उनकी अधीनता में घुटने नहीं टेके ताकि वह सत्य जो सुसमाचार में निवास करता है, तुम्हारे भीतर बना रहे।

6किन्तु जाने माने प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कुछ नहीं मिला। (वे कैसे भी थे, मुझे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। बिना किसी भेदभाव के सभी मनुष्य परमेश्वर के सामने एक जैसे हैं।) उन सम्मानित लोगों से मुझे या मेरे सुसमाचार को कोई लाभ नहीं हुआ। 7किन्तु इन मुखियाओं ने देखा कि परमेश्वर ने मुझे वैसे ही एक विशेष काम सौंपा है जैसे पतरस को परमेश्वर ने यहूदियों को सुसमाचार सुनाने का काम दिया था। किन्तु परमेश्वर ने ग़ैर यहूदी लोगों को सुसमाचार सुनाने का काम मुझे दिया। 8परमेश्वर ने पतरस को एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी थी। पतरस ग़ैर यहूदी लोगों के लिए एक प्रेरित है। परमेश्वर ने मुझे भी एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी है। किन्तु मैं उन लोगों का प्रेरित हूँ जो यहूदी नहीं हैं। 9इस प्रकार उन्होंने मुझ पर परमेश्वर के उस अनुग्रह को समझ लिया और कलीसिया के स्तम्भ समझे जाने वाले याकूब, पतरस और यूहन्ना ने बरनाबास और मुझसे साझेदारी के प्रतीक रूप में हाथ मिला लिया। और वे सहमत हो गये कि हम विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें और वे यहूदियों के बीच। 10उन्होंने हमसे बस यही कहा कि हम उनके निर्धनों का ध्यान रखें। और मैं इसी काम को न केवल करना चाहता था बल्कि इसके लिए लालायित भी था।

पौलुस की दृष्टि में पतरस अनुचित

11किन्तु जब पतरस अंताकिया आया तो मैंने खुल कर उसका विरोध किया क्योंकि वह अनुचित था। 12क्योंकि याकूब द्वारा भेजे हुए कुछ लोगों के यहाँ पहुँचने से पहले वह ग़ैर यहूदियों के साथ खाता पीता था। किन्तु उन लोगों के आने के बाद उसने ग़ैर यहूदियों से अपना हाथ खींच लिया और स्वयं को उनसे अलग कर लिया। उसने उन लोगों के डर से ऐसा किया जो चाहते थे कि ग़ैर यहूदियों का भी ख़तना होना चाहिए। 13दूसरे यहूदियों ने भी इस दिखावे में उसका साथ दिया। यहाँ तक कि इस दिखावे के कारण बरनाबास तक भटक गया। 14मैंने जब यह देखा कि सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार वे सीधे रास्ते पर नहीं चल रहे हैं तो सब के सामने पतरस से कहा, "जब तुम यहूदी होकर भी ग़ैर यहूदी का सा जीवन जीते हो, तो फिर ग़ैर यहूदियों को यहूदियों की रीति पर चलने को विवश कैसे कर सकते हो?"

15हम तो जन्म के यहूदी हैं। हमारा पापी ग़ैर यहूदी से कोई सम्बन्ध नहीं है। 16फिर भी हम यह जानते हैं कि किसी व्यक्ति को व्यवस्था के विधान का पालन करने के कारण नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के कारण नेक ठहराया जाता है। हमने इसी लिये यीशु मसीह का विश्वास धारण किया है ताकि इस विश्वास के कारण हम नेक ठहराये जायें, न कि व्यवस्था के विधान के पालन के

कारण। क्योंकि उसे पालने से तो कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं
होता।
17किन्तु यदि हम जो यीशु मसीह में अपनी स्थिति के
कारण धर्मी ठहराया जाना चाहते हैं, हम ही विधर्मियों के
समान पापी पाये जायें तो इसका अर्थ क्या यह नहीं है कि
मसीह पाप को बढ़ावा देता है। निश्चय ही नहीं।" 18यदि
जिसका मैं त्याग कर चुका हूँ, उस रीति का ही फिर से
उपदेश देने लगूँ तब तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करने वाला
अपराधी बन जाऊँगा। 19क्योंकि व्यवस्था के विधान के
द्वारा व्यवस्था के लिये तो मैं मर चुका ताकि परमेश्वर के
लिये मैं फिर से जी जाऊँ मसीह के साथ मुझे क्रूस पर
चढ़ा दिया है। 20इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु
मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस
जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है।
परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम
करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर
दिया। 21मैं परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ,
किन्तु यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर
से नाता जुड़ा पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों
देता।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

3 हे मूर्ख गलातियो, तुम पर किसने जादू कर दिया
है? तुम्हें तो, सब के सामने यीशु मसीह को क्रूस
पर कैसे चढ़ाया गया था, इसका पूरा विवरण दे दिया
गया था। 2मैं तुमसे बस इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने
आत्मा का वरदान क्या व्यवस्था के विधान को पालने से
पाया था अथवा सुसमाचार के सुनने और उस पर विश्वास
करने से? 3क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते हो कि जिस
जीवन को तुमने आत्मा से आरम्भ किया, उसे अब
हाड़-माँस के शरीर की शक्ति से पूरा करोगे? 4तुमने
इतने कष्ट क्या बेकार ही उठाये? आशा है कि वे बेकार
नहीं थे। 5परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और
जो तुम्हारे बीच आश्चर्य कर्म करता है, वह यह इसलिए
करता है कि तुम व्यवस्था के विधान को पालते हो या
इसलिए कि तुमने सुसमाचार को सुना है और उस पर
विश्वास किया है।
6 यह वैसे ही है जैसे कि इब्राहीम के विषय में शास्त्र
कहता है: "उसने परमेश्वर में विश्वास किया और यह
उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।"* 7 तो फिर तुम यह
जान लो, "इब्राहीम के सच्चे वंशज वे ही हैं जो विश्वास
करते हैं। 8शास्त्र ने पहले ही बता दिया था, "परमेश्वर
ग़ैर यहूदियों को भी उनके विश्वास के कारण धर्मीज्ञ
ठहरायेगा। और इन शब्दों के साथ पहले से ही इब्राहीम
को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार से अवगत करा दिया गया
था।"* 9 इसी लिये वे लोग जो विश्वास करते हैं विश्वासी
इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं। 10किन्तु वे सभी लोग
जो व्यवस्था के विधानों के पालन पर निर्भर रहते हैं, वे
तो किसी अभिशाप के अधीन हैं। शास्त्र में लिखा है:
"ऐसा हर व्यक्ति शापित है जो व्यवस्था के विधान की
पुस्तक में लिखी हर बात का लगन के साथ पालन नहीं
करता।"* 11अब यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के
द्वारा परमेश्वर के सामने कोई भी नेक नहीं ठहरता है।
क्योंकि शास्त्र के अनुसार "धर्मी व्यक्ति विश्वास के सहारे
जीयेगा।"* 12किन्तु व्यवस्था का विधान तो विश्वास पर
नहीं टिका है बल्कि शास्त्र के अनुसार, "जो व्यवस्था के
विधान को पालेगा, वह उन ही के सहारे जीयेगा।"*
13मसीह ने हमारे शाप को अपने ऊपर ले कर व्यवस्था
के विधान के शाप से हमें मुक्त कर दिया। शास्त्र कहता
है: "हर कोई जो वृक्ष पर टाँग दिया जाता है, शापित
है।"* 14मसीह ने हमें इसलिये मुक्त किया कि, इब्राहीम
को दी गयी आशीश मसीह यीशु के द्वारा ग़ैर यहूदियों को
भी मिल सके ताकि विश्वास के द्वारा हम उस आत्मा को
प्राप्त करें, जिसका वचन दिया गया था।

व्यवस्था का विधान और वचन

15हे भाइयो, अब मैं तुम्हें दैनिक जीवन से एक उदाहरण
देने जा रहा हूँ। देखो, जैसे किसी मनुष्य द्वारा कोई करार
कर लिया जाने पर, न तो उसे रद्द किया जा सकता है
और न ही उस में से कुछ घटाया जा सकता है। और न
बढ़ाया, 16वैसे ही इब्राहीम और उसके भावी वंशज के
साथ की गयी प्रतिज्ञा के संदर्भ में भी है। (देखो, शास्त्र यह

उसने ... गिनी गई उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ग़ैर ... गया था उत्पत्ति 12:3
ऐसा हर ... नहीं करता व्यवस्था. 27:26
धर्मी ... जीयेगा हबक. 2:4
जो व्यवस्था ... जीयेगा लैव्य. 18:5
हर कोई ... शापित है व्यवस्था. 21:22-23

नहीं कहता, "और उसके वंशजों को" यदि ऐसा होता तो बहुतों की ओर संकेत होता किन्तु शास्त्र में एक वचन का प्रयोग है। शास्त्र कहता है "और तेरे वंशज को" जो मसीह है।) 17मेरा अभिप्राय यह है कि जिस करार को परमेश्वर ने पहले ही सुनिश्चित कर दिया उसे चार सौ तीस साल बाद आने वाला व्यवस्था का विधान नहीं बदल सकता और न ही उसके वचन को नाकारा ठहरा सकता है। 18क्योंकि यदि उत्तराधिकार व्यवस्था के विधान पर टिका है तो फिर वह वचन पर नहीं टिकेगा। किन्तु परमेश्वर ने उत्तराधिकार वचन के द्वारा मुक्त रूप से इब्राहीम को दिया था।

19फिर भला व्यवस्था के विधान का प्रयोजन क्या रहा? आज्ञाउल्लंघन के अपराध के कारण व्यवस्था के विधान को वचन से जोड़ दिया गया था ताकि जिस के लिए वचन दिया गया था, उस वंशज के आने तक वह रहे। व्यवस्था का विधान एक मध्यस्थ के रूप में मूसा की सहायता से स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। 20अब देखो, मध्यस्थ तो दो के बीच होता है, किन्तु परमेश्वर तो एकही है।

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

21क्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था का विधान परमेश्वर के वचन का विरोधी है? निश्चित रूप से नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया होता जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता तो वह व्यवस्था का विधान ही परमेश्वर के सामने धार्मिकता को सिद्ध करने का साधन बन जाता। 22किन्तु शास्त्र ने घोषणा की है कि यह समूचा संसार पाप की शक्ति के अधीन है। ताकि यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर जो वचन दिया गया है, वह विश्वासी जनों को भी मिले।

23इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के विधान की देखरेख में, इस आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक, बंदी के रूप में रखा गया। 24इस प्रकार व्यवस्था का विधान हमें मसीह तक ले जाने के लिए एक कठोर अभिभावक था ताकि अपने विश्वास के आधार पर हम नेक ठहरें। 25अब जब यह विश्वास प्रकट हो चुका है तो हम उस कठोर अभिभावक के अधीन नहीं हैं।

26यीशु मसीह में विश्वास के कारण तुम सभी परमेश्वर की संतान हो। 27क्योंकि तुम सभी जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा ले लिया है, मसीह में समा गये हो। 28सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं रहा न कोई यहूदी रहा, न ग़ैर यहूदी, न दास रहा, न स्वतन्त्र, न पुरुष रहा, न स्त्री, क्योंकि मसीह यीशु में तुम सब एक हो। 29और क्योंकि तुम मसीह के हो तो फिर तुम इब्राहीम के वंशज हो। और परमेश्वर ने जो वचन इब्राहीम को दिया था, उस वचन के उत्तराधिकारी हो।

4 मैं कहता हूँ कि उत्तराधिकारी जब तक बालक है तो चाहे सब कुछ का स्वामी वही होता है, फिर भी वह दास से अधिक कुछ नहीं रहता। 2वह अभिभावकों और घर के सेवकों के तब तक अधीन रहता है, जब तक उसके पिता द्वारा निश्चित समय नहीं आ जाता। 3हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हम भी जब बच्चे थे तो सांसारिक नियमों के दास थे। 4किन्तु जब उचित अवसर आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। 5ताकि वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें।

6और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही आत्मा "हे अब्बा," "हे पिता" कहते हुए पुकारती है। 7इसलिये अब तू दास नहीं है बल्कि पुत्र है और क्योंकि तू पुत्र है, इसलिये तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया है।

गलाती मसीहियों के लिए पौलुस का प्रेम

8पहले तुम लोग जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तो तुम लोग देवताओं के दास थे। वे वास्तव में परमेश्वर नहीं थे। 9किन्तु अब तुम परमेश्वर को जानते हो, या यूँ कहना चाहिये कि परमेश्वर के द्वारा अब तुम्हें पहचान लिया गया है। फिर तुम उन साररहित, दुर्बल नियमों की ओर क्यों लौट रहे हो। तुम फिर से उनके अधीन क्यों होना चाहते हो? 10तुम किन्ही विशेष दिनों, महीनों, ऋतुओं और वर्षों को मानने लगे हो। 11तुम्हारे बारे में मुझे डर है कि तुम्हारे लिए जो काम मैंने किया है, वह सारा कहीं बेकार तो नहीं हो गया है।

12हे भाइयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ। देखो, मैं भी तो तुम्हारे जैसा बन गया हूँ, यह मेरी तुमसे प्रार्थना है, ऐसा नहीं है कि तुमने मेरे प्रति कोई अपराध किया है। 13तुम तो जानते ही हो कि अपनी शारीरिक व्याधि के

कारण मैंने पहली बार तुम्हें ही सुसमाचार सुनाया था। [14]और तुमने भी, मेरी अस्वस्थता के कारण, जो तुम्हारी परीक्षा ली गयी थी, उससे मुझे छोटा नहीं समझा और न ही मेरा निषेध किया। बल्कि तुमने परमेश्वर के स्वर्ग दूत के रूप में मेरा स्वागत किया। मानों मैं स्वयं मसीह यीशु ही था।
[15]सो तुम्हारी उस प्रसन्नता का क्या हुआ? मैं तुम्हारे लिये स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि यदि तुम समर्थ होते तो तुम अपनी आँखें तक निकाल कर मुझे दे देते। [16]सो क्या सच बोलने से ही मैं तुम्हारा शत्रु हो गया?

[17]तुम्हें व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले तुममें बड़ी गहरी रुचि लेते हैं। किन्तु उनका उद्देश्य अच्छा नहीं है। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं। ताकि तुम भी उनमें गहरी रुचि ले सको। [18]कोई किसी में सदा गहरी रुचि लेता रहे, यह तो एक अच्छी बात है किन्तु यह किसी अच्छे के लिए होना चाहिये। और बस उसी समय नहीं, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ। [19]मेरे प्रिय बच्चो! मैं तुम्हारे लिये एक बार फिर प्रसववेदना को झेल रहा हूँ, जब तक तुम मसीह जैसे ही नहीं हो जाते। [20]मैं चाहता हूँ कि अभी तुम्हारे पास आ पहुँचूँ और तुम्हारे साथ अलग ही तरह से बातें करूँ, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या किया जाये।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

[21]व्यवस्था के विधान के अधीन रहना चाहने वालों से मैं पूछना चाहता हूँ: क्या तुमने व्यवस्था के विधान का यह कहना नहीं सुना [22]कि इब्राहीम के दो पुत्र थे। एक का जन्म एक दासी से हुआ था और दूसरे का एक स्वतन्त्र स्त्री से। [23]दासी से पैदा हुआ पुत्र प्राकृतिक परिस्थितियों में जन्मा था किन्तु स्वतन्त्र स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था, वह परमेश्वर के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा का परिणाम था।

[24]इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है: ये दो स्त्रियाँ, दो वाचओं का प्रतीक हैं। एक वाचा सिनै पर्वत से प्राप्त हुआ था जिसने उन लोगों को जन्म दिया जो दासता के लिये थे। यह वाचा हाजिरा से सम्बन्धित है। [25]हाजिरा अरब में स्थित सिनै पर्वत का प्रतीक है, वह वर्तमान यरूशलेम की ओर संकेत करती है क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ दासता भुगत रही है। [26]किन्तु स्वर्ग में स्थित यरूशलेम स्वतन्त्र है। और वही हमारी माता है। [27]शास्त्र कहता है:

"बाँझ! आनन्द मना,
तूने किसी को न जना;
हर्ष नाद कर, तुझ को प्रसव वेदना न हुई,
और हँसी–खुशी में खिलखिला।
क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत संतानें हैं
उसकी उतनी नहीं है जो पतिवंती है।"

यशायाह 54:1

[28]सो भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी परमेश्वर के वचन की संतान हो। [29] किन्तु जैसे उस समय प्राकृतिक परिस्थितियों के अधीन पैदा हुआ आत्मा की शक्ति से उत्पन्न हुए को सताता था, वैसी ही स्थिति आज है। [30]किन्तु देखो, पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इस दासी और इसके पुत्र को निकाल कर बाहर करो क्योंकि यह दासी पुत्र तो स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।"* [31]इसीलिए हे भाइयो, हम उस दासी की संतान नहीं हैं, बल्कि हम तो स्वतन्त्र स्त्री की संताने हैं।

स्वतन्त्र बने रहो

5 मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता का आनन्द ले सकें। इसलिये अपने विश्वास को दृढ़ बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के जुए का बोझ मत उठाओ। [2]सुनो! स्वयं मैं, पौलुस तुमसे कह रहा हूँ कि यदि ख़तना करा कर तुम फिर से व्यवस्था के विधान की ओर लौटते हो तो तुम्हारे लिये मसीह का कोई महत्व नहीं रहेगा। [3]अपना ख़तना कराने देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, मैं एक बार फिर से जताये देता हूँ कि उसे समूचे व्यवस्था के विधान पर चलना अनिवार्य है। [4]तुममें से जितने भी लोग व्यवस्था के पालन के कारण धर्मी के रूप में स्वीकृत होना चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं। [5]किन्तु हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी स्वीकार किये जाने की आशा रखते हैं। आत्मा की सहायता से हम इसकी बाट जोह रहे हैं। [6]क्योंकि मसीह यीशु में स्थिति के लिये न तो ख़तना कराने का कोई महत्त्व है और न ख़तना नहीं कराने का बल्कि उसमें तो प्रेम से पैदा होने वाले विश्वास का ही महत्त्व है।

[7]तुम तो बहुत अच्छी तरह एक मसीह का जीवन जीते रहे हो। अब तुम्हें, ऐसा क्या है जो सत्य पर चलने से

इस दासी ... नहीं होगा उत्पत्ति 21:10

रोक रहा है। 8ऐसी विमति जो तुम्हें सत्य से दूर कर रही है, तुम्हारे बुलाने वाले परमेश्वर की ओर से नहीं आयी है।

9"थोड़ा सा ख़मीर गुँधे हुए समूचे आटे को ख़मीर से उठा लेता है।" 10प्रभु के प्रति मेरा पूरा भरोसा है कि तुम किसी भी दूसरे मत को नहीं अपनाओगे किन्तु तुम्हें विचलित करने वाला चाहे कोई भी हो, उचित दंड पायेगा।

11हे भाइयों, यदि मैं आज भी, जैसा कि कुछ लोग मुझ पर लांछन लगाते हैं कि मैं ख़तने का प्रचार करता हूँ तो मुझे अब तक यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और यदि मैं अब भी ख़तने की आवश्यकता का प्रचार करता हूँ, तब तो मसीह के क्रूस के कारणपैदा हुई मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो जानी चाहियें। 12मैं तो चाहता हूँ कि वे जो तुम्हें डिगाना चाहते हैं, ख़तना कराने के साथ साथ अपने आपको बधिया ही करा डालते।

13किन्तु भाइयो, तुम्हें परमेश्वर ने स्वतन्त्र रहने को चुना है। किन्तु उस स्वतन्त्रता को अपने आप पूर्ण स्वभाव की पूर्ति का साधन मत बनने दो, इसके विपरीत प्रेम के कारण परस्पर एक दूसरे की सेवा करो। 14क्योंकि समूचे व्यवस्था के विधान का सार संग्रह इस एक कथन में ही है: "अपने साथियों से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो।"* 15किन्तु आपस में काट करते हुए यदि तुम एक दूसरे को खाते रहोगे तो देखो! तुम आपस में ही एक दूसरे को समाप्त कर दोगे।

मानव-प्रकृति और आत्मा

16किन्तु मैं कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की इच्छाओं की पूर्ति मत करो। 17क्योंकि शारीरिक भौतिक अभिलाषाएँ पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं के और पवित्र आत्मा की अभिलाषाएँ शारीरिक भौतिक अभिलाषाओं के विपरीत होती हैं। इनका आपस में विरोध है। इसीलिए तो जो तुम करना चाहते हो, वह कर नहीं सकते। 18किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के अनुशासन में चलते हो तो फिर व्यवस्था के विधान के अधीन नहीं रहते।

19अब देखो। हमारे शरीर की पापपूर्ण प्रकृति के कामों को तो सब जानते हैं। वे हैं: व्यभिचार अपवित्रता, भोगविलास, 20मूर्ति पूजा, जादू-टोना, बैरभाव, लड़ाई-झगड़ा, डाह, क्रोध, स्वार्थीपन, मतभेद, फूट, ईर्ष्या, 21नशा, लंपटता या ऐसी ही और बातें। अब मैं तुम्हें इन बातों के बारे में वैसे ही चेता रहा हूँ जैसे मैंने तुम्हें पहले ही चेता दिया था कि जो लोग ऐसी बातों में भाग लेंगे, वे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे। 22जबकि पवित्र आत्मा प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज, दयालुता, नेकी, विश्वास, 23नम्रता और आत्म-संयम उपजाता है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था का विधान नहीं है। 24उन लोगों ने जो यीशु मसीह के हैं, अपने पापपूर्ण मानव-स्वभाव को वासनाओं और इच्छाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। 25क्योंकि जब हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है तो आओ आत्मा के ही अनुसार चलें। 26हम अभिमानी न बनें। एक दूसरे को न चिड़ायें। और न ही परस्पर ईर्ष्या रखें।

एक दूसरे की सहायता करो

6 हे भाइयो, तुममें से यदि कोई व्यक्ति कोई पाप करते पकड़ा जाए तो तुम आध्यात्मिक जनों को चाहिये कि नम्रता के साथ उसे धर्म के मार्ग पर वापस लाने में सहायता करो। और स्वयं अपने लिये भी सावधानी बरतो कि कहीं तुम स्वयं भी किसी परीक्षा में न पड़ जाओ। 2परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ। इस प्रकार तुम मसीह की व्यवस्था का पालन करोगे। 3यदि कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी अपने को महत्त्वपूर्ण समझता है तो वह अपने को धोखा देता है। 4अपने कर्म का मूल्यांकन हर किसी को स्वयं करते रहना चाहिये। ऐसा करने पर ही उसे अपने आप पर, किसी दूसरे के साथ तुलना किये बिना, गर्व करने का अवसर मिलेगा। 5क्योंकि अपना दायित्व हर किसी को स्वयं ही उठाना है।

6जिसे परमेश्वर का वचन सुनाया गया है, उसे चाहिये कि जो उत्तम वस्तुएँ उसके पास हैं, उनमें अपने उपदेशक को साझी बनाए।

जीवन खेत-बोने जैसा है

7अपने आपको मत छलो। परमेश्वर को कोई बुद्धू नहीं बना सकता क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही काटेगा। 8जो अपनी काया के लिए बोयेगा, वह अपनी काया से विनाश की फसल काटेगा। किन्तु जो आत्मा के खेत में बीज बोएगा, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की फसल

अपने साथियों ... करते हो लैव्य. 19:18

काटेगा। 9इसलिये आओ हम भलाई करते कभी न थकें,
क्योंकि यदि हम भलाई करते ही रहेंगे तो उचित समय
आने पर हमें उसका फल मिलेगा। 10सो जैसे ही कोई
अवसर मिले, हमें सभी के साथ भलाई करनी चाहिये,
विशेषकर अपने धर्म–भाइयों के साथ।

पत्र का समापन

11देखो, मैंने तुम्हें स्वयं अपने हाथ से कितने बड़े बड़े
अक्षरों में लिखा है। 12ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से अच्छा
दिखावा करना चाहते हैं, तुम पर ख़तना कराने का दबाव
डालते हैं। किन्तु वे ऐसा बस इसलिए करते हैं कि उन्हें
मसीह के क्रूस के कारण यातनाएँ न सहनीं पड़ें।
13क्योंकि वे स्वयं भी जिनका ख़तना हो चुका है,
व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते किन्तु फिर भी
वे चाहते हैं कि तुम ख़तना कराओ ताकि वे तुम्हारे द्वारा
इस शारीरिक प्रथा को अपनाए जाने पर डींगे मार सकें।
14किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये और संसार मेरे
लिये मर गया, प्रभु यीशु मसीह के उस क्रूस को छोड़ कर
मुझे और किसी पर गर्व न हो। 15क्योंकि न तो ख़तने का
कोई महत्त्व है और न बिना ख़तने का। यदि महत्त्व है तो
वह नयी सृष्टि का है। 16इसलिये जो लोग इस धर्म–नियम
पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शांति
तथा दया होती रहे।

17पत्र को समाप्त करते हुए मैं तुमसे विनती करता हूँ
कि अब मुझे कोई और दुःख मत दो। क्योंकि मैं तो पहले
ही अपने देह में यीशु के घावों को लिए घूम रहा हूँ।

18हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी
आत्माओं के साथ बना रहे। आमीन।

इफिसियों

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु
मसीह का एक प्रेरित है, इफिसुस के रहने वाले संत
जनों और मसीह यीशु में विश्वास रखने वालों के नाम:
2तुम्हें हमारे परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की
ओर से अनुग्रह तथा शांति मिले।

मसीह में स्थितों के लिये आध्यात्मिक आशीषें

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर धन्य
हो। उसने हमें मसीह के रूप में स्वर्ग के क्षेत्र में हर तरह
के आशीर्वाद दिये हैं। 4–5संसार की रचना से पहले ही
परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र
और निर्दोष बनने के लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम
है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने
बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया।
यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था। 6उसने
ऐसा इसलिये किया कि वह अपनी महिमाय अनुग्रह के
कारण स्वयं को प्रशंसित करे। उसने इसे हमें, जो उसके
प्रिय पुत्र में स्थित हैं मुक्त भाव से प्रदान किया। 7उसकी
बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का
आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें
हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार
जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था।
8उसने हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है। 9जैसा
कि मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था। 10परमेश्वर
की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की
और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र
करे। 11सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के
अनुसार की जाती हैं। और परमेश्वर ने अपने निजी प्रयोजन
के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के लिये चुना है।
यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर ने अनादिकाल
से सुनिश्चित कर रखा था। 12ताकि हम उसकी महिमा
की प्रशंसा के कारण बन सकें। हम, यानी जिन्होंने अपनी
सभी आशाएँ मसीह पर केन्द्रित कर दी हैं। 13जब तुमने
उस सत्य का संदेश सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार
था, और जिस मसीह पर तुमने विश्वास किया था, तो जिस
पवित्र आत्मा का वचन दिया था, मसीह के माध्यम से
उसकी छाप परमेश्वर के द्वारा तुम लोगों पर भी लगायी
गयी। 14वह आत्मा हमारे उत्तराधिकार के भाग की जमानत
के रूप में उस समय तक के लिये हमें दिया गया है, जब
तक कि वह हमें, जो उसके अपने हैं, पूरी तरह छुटकारा
नहीं दे देता। इसके कारण लोग उसकी महिमा की प्रशंसा
करेंगे।

इफिसियों के लिये पौलुस की प्रार्थना

15इसीलिये जब से मैंने प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास
और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है,
16मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर कर रहा
हूँ। अपनी प्रार्थनाओं में मैं तुम्हारा उल्लेख किया करता
हूँ। 17मैं प्रार्थना किया करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह
का परमेश्वर तुम्हें विवेक और दिव्यदर्शन की ऐसी आत्मा
की शक्ति प्रदान करे जिससे तुम उस महिमावान परम
पिता को जान सको। 18मेरी विनती है कि तुम्हारे हृदय
की आँखे खुल जायें और तुम प्रकाश का दर्शन कर
सको ताकि तुम्हें पता चल जाये कि वह आशा क्या है
जिसके लिये तुम्हें उसने बुलाया है। और जिस उत्तराधिकार
को वह अपने सभी लोगों को देगा, वह कितना अद्भुत
और सम्पन्न है। 19तथा हम विश्वासियों के लिये उसकी
शक्ति अतुलनीय रूप से कितनी महान है। यह शक्ति
अपनी महान शक्ति के उस प्रयोग के समान है, 20जिसे
उसने मसीह में तब काम में लिया था जब मरे हुओं में से
उसे फिर से जिला कर स्वर्ग के क्षेत्र में अपनी दाहिनी
ओर बिठाकर 21सभी शासकों, अधिकारियों, सामर्थ्यों

और प्रभुताओं तथा हर किसी ऐसी शक्तिशाली पदवी के ऊपर स्थापित किया था, जिसे न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी किसी को दिया जा सकता है। 22परमेश्वर ने सब कुछ को मसीह के चरणों के नीचे कर दिया और उसी ने मसीह को कलीसिया का सर्वोच्च शिरोमणि बनाया। 23कलीसिया मसीह की देह है और सब विधियों से सब कुछ को उसकी पूर्णता ही परिपूर्ण करती है।

मृत्यु से जीवन की ओर

2 एक समय था जब तुम लोग उन अपराधों और पापों के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे 2जिनमें तुम पहले, संसार के बुरे रास्तों पर चलते हुए और उस आत्मा का अनुसरण करते हुए जीते थे जो इस धरती के ऊपर की आत्मिक शक्तियों की स्वामी है। वही आत्मा अब उन व्यक्तियों में काम कर रही है जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। 3एक समय हम भी उन्हीं के बीच जीते थे और अपनी पापपूर्ण प्रकृति की भौतिक इच्छाओं को तृप्त करते हुए अपने हृदयों और पापपूर्ण प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए संसार के दूसरे लोगों के समान परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे।

4किन्तु परमेश्वर करुणा का धनी है। हमारे प्रति अपने महान् प्रेम के कारण 5उस समय अपराधों के कारण हम आध्यात्मिक रूप से अभी मरे ही हुए थे, मसीह के साथ साथ उसने हमें भी जीवन दिया (परमेश्वर के अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है।) 6और क्योंकि हम यीशु मसीह में हैं इसलिये परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ ही फिर से जी उठाया और उसके साथ ही स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया। 7ताकि वह आने वाले हर युग में अपने अनुग्रह के अनुपम धन को दिखाये जिसे उसने मसीह यीशु में अपनी दया के रूप में हम पर दर्शाया है। 8परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें तुम्हारी ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का वरदान है। 9यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है कि हम इसका गर्व कर सकें। 10क्योंकि परमेश्वर हमारा सृजनहार है। उसने मसीह यीशु में हमारी सृष्टि इसलिए की है कि हम नेक काम करें जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही इसलिये तैयार किया हुआ है कि हम उन्हीं को करते हुए अपना जीवन बितायें।

मसीह में एक

11इसलिये याद रखो, वे लोग, जो अपने शरीर में मानव हाथों द्वारा किये गये ख़तने के कारण अपने आपको "ख़तना युक्त" बताते हैं, विधर्मी के रूप में जन्मे तुम लोगों को "ख़तना रहित" कहते थे। 12उस समय तुम बिना मसीह के थे, तुम इस्राएल की बिरादरी से बाहर थे। परमेश्वर ने अपने भक्तों को जो वचन दिए थे उन पर आधारित वाचा से अनजाने थे। तथा इस संसार में बिना परमेश्वर के निराश जीवन जीते थे। 13किन्तु अब तुम्हें, जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के बलिदान के द्वारा मसीह यीशु में तुम्हारी स्थिति के कारण, परमेश्वर के निकट ले आया गया है 14यहूदी और गैर यहूदी आपस में एक दूसरे से नफ़रत करते थे और अलग हो गये थे। ठीक ऐसे जैसे उन के बीच कोई दीवार खड़ी हो। किन्तु मसीह ने स्वयं अपनी देह का बलिदान देकर नफ़रत की उस दीवार को गिरा दिया। 15उसने ऐसा तब किया जब अपने समूचे नियमों और व्यवस्थाओं के विधान को समाप्त कर दिया। उसने ऐसा इसलिये किया कि वह अपने में इन दोनों को ही एक में मिला सके। और इस प्रकार मिलाप करा दे। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उसने उस घृणा का अंत कर दिया। और उन दोनों को परमेश्वर के साथ उस एकदेह में मिला दिया। 16और क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा वैर भाव का नाश करके एक ही देह में उन दोनों को संयुक्त करके परमेश्वर से फिर मिला दे। 17सो आकर उसने तुम्हें, जो परमेश्वर से बहुत दूर थे और जो उसके निकट थे, उन्हें शांति का सुसमाचार सुनाया। 18क्योंकि उसी के द्वारा एक ही आत्मा से परम पिता के पास तक हम दोनों की पहुँच हुई।

19परिणामस्वरूप अब तुम न अनजान रहे और न ही पराये। बल्कि अब तो तुम संत जनों के स्वदेशी संगी–साथी हो गये हो। 20तुम एक ऐसा भवन हो जो प्रेरितों और नबियों की नींव पर खड़ा है। तथा स्वयं मसीह यीशु जिसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कोने का पत्थर है। 21–22मसीह में स्थित एक ऐसे स्थान की रचना के रूप में, जहाँ आत्मा के द्वारा स्वयं परमेश्वर निवास करता है, दूसरे लोगों के साथ तुम्हारा भी निर्माण किया जा रहा है।

ग़ैर यहूदियों में पौलुस का प्रचार–कार्य

3 इसीलिये मैं, पौलुस तुम ग़ैर यहूदियों के लिये मसीह यीशु के हेतु बंदी बना हूँ। 2तुम्हारे कल्याण के लिए परमेश्वर ने अनुग्रह के साथ जो काम मुझे सौंपा है, उसके बारे में तुमने अवश्य ही सुना होगा। 3कि वह रहस्यमयी योजना दिव्यदर्शन द्वारा मुझे जनाई गयी थी, जैसा कि मैं तुम्हें संक्षेप में लिख ही चुका हूँ। 4और यदि तुम उसे पढ़ोगे तो मसीह विषयक रहस्यपूर्ण सत्य में मेरी अन्तर्दृष्टि की समझ तुम्हें हो जायेगी। 5यह रहस्य पिछली पीढ़ी के लोगों को वैसे नहीं जनाया गया था जैसे अब उसके अपने पवित्र प्रेरितों और नबियों को आत्मा के द्वारा जनाया जा चुका है। 6यह रहस्य है कि यहूदियों के साथ ग़ैर यहूदी भी सह उत्तराधिकारी हैं, एक ही देह के अंग हैं और मसीह यीशु में जो वचन हमें दिया गया है, उसमें सहभागी हैं।

7सुसमाचार के कारण मैं उस सुसमाचार का प्रचार करने वाला एक सेवक बन गया, जो उसकी शक्ति के अनुसार परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान स्वरूप मुझे दिया गया था। 8यद्यपि सभी संत जनों में मैं छोटे से भी छोटा हूँ किन्तु मसीह के अनन्त धन रूपी सुसमाचार का ग़ैर यहूदियों में प्रचार करने का यह अनुग्रह मुझे दिया गया 9कि मैं सभी लोगों के लिए उस रहस्यपूर्ण योजना को स्पष्ट करूँ जो सब कुछ के सिरजनहार परमेश्वर में सृष्टि के प्रारम्भ से ही छिपी हुई थी। 10ताकि वह स्वर्गिक क्षेत्र की शक्तियों और प्रशासकों को अब उस परमेश्वर के बहुविध ज्ञान को कलीसिया के द्वारा प्रकट कर सके। 11यह उस सनातन प्रयोजन के अनुसार सम्पन्न हुआ जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूरा किया था। 12मसीह में विश्वास के कारण हम परमेश्वर तक भरोसे और निर्भीकता के साथ पहुँच रखते हैं। 13इसलिये मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे लिये मैं जो यातनाएँ भोग रहा हूँ, उन से आशा मत छोड़ बैठना क्योंकि इस यातना में ही तो तुम्हारी महिमा है।

मसीह का प्रेम

14इसीलिए मैं परम पिता के आगे झुकता हूँ। 15उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं। 16मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को शक्तिपूर्वक सुदृढ़ करे। 17और विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में मसीह का निवास हो। तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें 18जिससे तुम्हें अन्य सभी संत जनों के साथ यह समझने की शक्ति मिल जाये कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, विस्तृत, विशाल और गम्भीर है। 19और तुम मसीह के उस प्रेम को जान लो जो सभी प्रकार के ज्ञानों से परे है ताकि तुम परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से भर जाओ।

20अब उस परमेश्वर के लिये जो अपनी उस शक्ति से जो हममें काम कर रही है, जितना हम माँग सकते हैं या जहाँ तक हम सोच सकते हैं, उससे भी कहीं अधिक कर सकता है, 21उसकी कलीसिया में और मसीह यीशु में अनन्त पीढ़ियों तक सदा सदा के लिये महिमा होती रहे। आमीन।

एक देह

4 सो मैं, जो प्रभु का होने के कारण बंदी बना हुआ हूँ, तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें अपना जीवन वैसे ही जीना चाहिए जैसा कि सन्तों के अनुकूल होता है। 2सदा नम्रता और कोमलता के साथ, धैर्यपूर्वक आचरण करो। एक दूसरे की प्रेम से सहते रहो। 3वह शांति, जो तुम्हें आपस में बाँधती है, उससे उत्पन्न आत्मा की एकता को बनाये रखने के लिये हर प्रकार का यत्न करते रहो। 4देह एक है और पवित्र आत्मा भी एक ही है। ऐसे ही जब तुम्हें भी बुलाया गया तो एक ही आशा में भागीदार होने के लिये ही बुलाया गया। 5एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है और है एक ही बपतिस्मा। 6परमेश्वर एक ही है और वह सबका पिता है। वही सब का स्वामी है, हर किसी के द्वारा वही क्रियाशील है, और हर किसी में वही समाया है।

7हममें से हर किसी को उसके अनुग्रह का एक विशेष उपहार दिया गया है जो मसीह की उदारता के अनुकूल ही है। 8इसीलिए शास्त्र कहता है,

“उसने विजयी को ऊँचे चढ़,
बंदी बनाया और उसने
लोगों को अपने आनन्दी वर दिये।”

भजन संहिता 68:18

9अब देखो, जब वह कहता है “ऊँचे चढ़” तो इसका अर्थ इसके अतिरिक्त क्या है? कि वह धरती के निचले

भागों पर भी उतरा था। 10जो नीचे उतरा था, वह वही है
जो ऊँचे भी चढ़ा था–इतना ऊँचा कि सभी आकाशों से भी
ऊपर, ताकि वह सब कुछ को सम्पूर्ण कर दे। 11उसने
स्वयं ही कुछ को प्रेरित होने का बरदान दिया तो कुछ को
नबी होने का तो कुछ को सुसमाचार के प्रचारक होने का
तो कुछ को परमेश्वर के जनों की सुरक्षा और शिक्षा का।
12मसीह ने उन्हें ये वरदान संत जनों की सेवा कार्य के, हेतु
तैयार करने को दिये ताकि हम जो मसीह की देह हैं,
आत्मा में और दृढ़ हों। 13जब तक कि हम सभी विश्वास
में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एकाकार होकर
परिपक्व पुरुष बनने के लिये विकास करते हुए मसीह के
सम्पूर्ण गौरव की ऊँचाई को न छू लें।

14ताकि हम ऐसे बच्चे ही न बने रहें जो हर किसी ऐसी
नयी शिक्षा की हवा से उछले जायें, जो हमारे रास्ते में
बहती है, लोगों के छलपूर्ण व्यवहार से, ऐसी धूर्तता से, जो
ठगी से भरी योजनाओं को प्रेरित करती है, इधर उधर
भटका दिये जाते हैं। 15बल्कि हम प्रेम के साथ सत्य
बोलते हुए हर प्रकार से मसीह के जैसे बनने के लिये
विकास करते जायें। मसीह सिर है, 16जिस पर समूची देह
निर्भर करती है। यह देह उससे जुड़ती हुई प्रत्येक सहायक
नस से संयुक्त होती है और जब इसका हर अंग जो काम
उसे करना चाहिये, उसे पूरा करता है तो प्रेम के साथ
समूची देह का विकास होता है और यह देह स्वयं सुदृढ़
होती है।

ऐसे जीओ

17मैं इसीलिये यह कहता हूँ और प्रभु को साक्षी करके
तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि उनके व्यर्थ के विचारों के साथ
अधर्मियों के जैसा जीवन मत जीते रहो। 18उनकी बुद्धि
अंधकार से भरी है। वे परमेश्वर से मिलने वाले जीवन से
दूर हैं। क्योंकि वे अबोध हैं और उनके मन जड़ हो गये हैं।
19लज्जा की भावना उनमें से जाती रही है। और उन्होंने
अपने को इन्द्रिय उपासना में लगा दिया है। बिना कोई
बन्धन माने वे हर प्रकार की अपवित्रता में जुटे हैं। 20किन्तु
मसीह के विषय में तुमने जो जाना है, वह तो ऐसा नहीं है।
21(मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुमने उसके विषय में सुना
है; और वह सत्य जो यीशु में निवास करता है, उसके
अनुसार तुम्हें उसके शिष्यों के रूप में शिक्षित भी किया
गया है।) 22जहाँ तक तुम्हारे पुराने जीवन–प्रकार का संबन्ध
हैं तुम्हें शिक्षा दी गयी थी कि तुम अपने पुराने व्यक्तित्व को
उतार फेंको जो उसकी भटकाने वाली इच्छाओं के कारण
भ्रष्ट बना हुआ है। 23जिससे बुद्धि और आत्मा में तुम्हें नया
किया जा सके। 24और तुम उस नये स्वरूप को धारण कर
सको जो परमेश्वर के अनुरूप सचमुच धार्मिक और पवित्र
बनने के लिए रचा गया है।

25सो तुम लोग झूठ बोलने का त्याग कर दो। अपने
साथियों से हर किसी को सच बोलना चाहिये, क्योंकि हम
सभी एक शरीर के ही अंग हैं। 26क्रोध मे आकर पाप मत
कर बैठो। सूरज ढलने से पहले ही अपने क्रोध को समाप्त
कर दो। 27शैतान को अपने पर हावी मत होने दो। 28जो
चोरी करता आ रहा है, वह आगे चोरी न करे। बल्कि उसे
काम करना चाहिये, स्वयं अपने हाथों से कोई उपयोगी
काम। ताकि उसके पास, जिसे आवश्यकता है, उसके
साथ बटाने को कुछ हो सके।

29तुम्हारे मुख से कोई अनुचित शब्द नहीं निकलना
चाहिये, बल्कि लोगों के विकास के लिये जिसकी अपेक्षा
है, ऐसी उत्तम बात ही निकलनी चाहिये, ताकि जो सुनें
उनका उससे भला हो। 30परमेश्वर की पवित्र आत्मा को
दुःखी मत करते रहो क्योंकि परमेश्वर की सम्पत्ति के
रूप में तुम पर छुटकारे के दिन के लिए आत्मा के साथ
मुहर लगा दिया गया है। 31समूची कड़वाहट, झुँझलाहट,
क्रोध, चीख–चिल्लाहट और निन्दा को तुम अपने भीतर
से हर तरह की बुराई के साथ निकाल बाहर फेंको।
32परस्पर एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणावान बनो।
तथा आपस में एक दूसरे के अपराधों को वैसे ही क्षमा
करो जैसे मसीह के द्वारा तुम को परमेश्वर ने भी क्षमा
किया है।

ज्योतिर्मय जीवन

5 प्यारे बच्चों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो।
2प्रेम के साथ जीओ। ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने
हमसे प्रेम किया है और अपने आप को, मधुर–गंध–भेंट
के रूप में, हमारे लिए परमेश्वर को अर्पित कर दिया
है।

3तुम्हारे बीच व्यभिचार और हर किसी तरह की
अपवित्रता अथवा लालच की चर्चा तक नहीं चलनी
चाहिये। जैसा कि संत जनों के लिये उचित ही है। 4तुममें न
तो अश्लील भाषा का प्रयोग होना चाहिये, न मूर्खतापूर्ण

बातें या भद्दा हँसी ठट्टा। ये तुम्हारे अनुकूल नहीं हैं। बल्कि
तुम्हारे बीच धन्यवाद ही दिये जायें। 5क्योंकि तुम निश्चय
के साथ यह जानते हो कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो दुराचारी
है, अपवित्र है, अथवा लालची है (जो एक मूर्ति पूजक होने
जैसा है) मसीह के और परमेश्वर के, राज्य का
उत्तराधिकार नहीं पा सकता।

6देखो, तुम्हें कोरे शब्दों से कोई छल न ले। क्योंकि इन
बातों के कारण ही आज्ञा का उल्लंघन करने वालों पर
परमेश्वर का कोप होने को है। 7इसलिये उनके साथी मत
बनो। 8यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि एक समय था जब
तुम अंधकार से भरे थे किन्तु अब तुम प्रभु के अनुयायी
के रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो। इसलिए प्रकाश–पुत्रों का
सा आचरण करो। 9हर प्रकार के धार्मिकता, नेकी और
सत्य में ज्योति का प्रतिफलन दिखायी देता है। 10हर समय
यह जानने का जतन करते रहो कि परमेश्वर को क्या
भाता है। 11ऐसे काम जो अंधकारपूर्ण हैं, उन बेकार के
कामों में हिस्सा मत बटाओ बल्कि उनका भाँडा–फोड़
करो। 12क्योंकि ऐसे काम जिन्हें वे गुपचुप करते हैं, उनके
बारे में की गयी चर्चा तक लज्जा की बात है। 13ज्योति जब
प्रकाशित होती है तो सब कुछ दृश्यमान हो जाता है 14और
जो कुछ दृश्यमान हो जाता है, वह स्वयं ज्योति ही बन जाता
है। इसीलिये हमारा भजन कहता है:

"अरे जाग, हे सोने वाले!
मृतकों में से जी उठ बैठ,
तेरे ही सिर स्वयं मसीह प्रकाशित होगा।"

15इसलिये सावधानी के साथ देखते रहो कि तुम कैसा
जीवन जी रहे हो। विवेकहीन का सा आचरण मत करो,
बल्कि बुद्धिमान का सा आचरण करो। 16जो हर अवसर
का अच्छे कर्म करने के लिये पूरा–पूरा उपयोग करते हैं,
क्योंकि ये दिन बुरे हैं 17इसलिए मूर्ख मत बनो बल्कि यह
जानो कि प्रभु की इच्छा क्या है। 18मदिरा पान करके
मतवाले मत बने रहो क्योंकि इससे कामुकता पैदा होती है।
इसके विपरीत आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ। 19आपस में
भजनों, स्तुतियों और आध्यात्मिक गीतों का, परस्पर
आदानप्रदान करते रहो। अपने मन में प्रभु के लिये गीत
गाते उसकी स्तुति करते रहो। 20हर किसी बात के लिये
हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हमारे परम पिता
परमेश्वर का सदा धन्यवाद करो।

पत्नी और पति

21मसीह के प्रति सम्मान के कारण एक दूसरे को समर्पित
हो जाओ।

22हे पत्नियो, अपने–अपने पतियों के प्रति ऐसे समर्पित
रहो, जैसे तुम प्रभु को समर्पित होती हो। 23क्योंकि अपनी
पत्नी के ऊपर उसका पति ही प्रमुख है। वैसे ही जैसे हमारी
कलीसिया का सिर मसीह है। वह स्वयं ही इस देह का
उद्धार करता है। 24जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है,
वैसे ही पत्नियों को सब बातों में अपने अपने पतियों के प्रति
समर्पित रहना चाहिये।

25हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो। वैसे ही जैसे
मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको
उसके लिये बलि दे दिया। 26ताकि वह उसे प्रभु की सेवा में
जल में स्नान करा के पवित्र कर हमारी घोषणा के साथ
परमेश्वर को अर्पित कर दे। 27इस प्रकार वह कलीसिया
को एक ऐसी चमचमाती दुलहन के रूप में स्वयं के लिए
प्रस्तुत कर सकता है जो निष्कलंक हो, झुरियों से रहित हो
या जिसमें ऐसी और कोई कमी न हो। बल्कि वह पवित्र हो
और सर्वथा निर्दोष हो। 28पतियों को अपनी–अपनी
पत्नियों से उसी प्रकार प्रेम करना चाहिये जैसे वे स्वयं
अपनी देहों से करते हैं। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है,
वह स्वयं अपने आप से ही प्रेम करता है। 29कोई अपनी
देह से तो कभी घृणा नहीं करता, बल्कि वह उसे
पालता–पोसता है और उसका ध्यान रखता है। वैसे ही जैसे
मसीह अपनी कलीसिया का 30क्योंकि हम भी तो उसकी
देह के अंग ही हैं। 31(शास्त्र कहता है): "इसीलिये एक
पुरुष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से बंध
जाता है और दोनों एक देह हो जाते हैं।"* 32यह रहस्यपूर्ण
सत्य बहुत महत्त्वपूर्ण है और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह
मसीह और कलीसिया पर भी लागू होता है। 33सो कुछ भी
हो, तुममें से हर एक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना
चाहिये जैसे तुम स्वयं अपने आपको करते हो। और एक
पत्नी को भी अपने पति का डर मानते हुए उसका आदर
करना चाहिये।

बच्चे और माता–पिता

6 हे बालको, प्रभु में आस्था रखते हुए माता–पिता
की आज्ञा का पालन करो क्योंकि यही उचित है।

इसीलिये एक … जाते है उत्पत्ति 2:24

2“अपने माँ–बाप का सम्मान कर।”* यह पहली आज्ञा है
जो इस प्रतिज्ञा से भी युक्त है, 3“तेरा भला हो और तू धरती
पर चिरायु हो।”*
4और हे पिताओ, तुम भी अपने बालकों को क्रोध मत
दिलाओ बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा और निर्देशों को देते
हुए उनका पालन–पोषण करो।

सेवक और स्वामी

5 हे सेवको, तुम अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा
निष्कपट हृदय से भय और आदर के साथ उसी प्रकार
मानो जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो। 6केवल किसी
के देखते रहते ही काम मत करो जैसे तुम्हें लोगों के समर्थन
की आवश्यकता हो। बल्कि मसीह के सेवक के रूप में
काम करो जो अपना मन लगाकर परमेश्वर की इच्छा
पूरी करते हैं। 7उत्साह के साथ एक सेवक के रूप में ऐसे
काम करो जैसे मानो तुम लोगों की नहीं प्रभु की सेवा कर
रहे हो। 8याद रखो, तुममें से हर एक, चाहे वह सेवक या
स्वतन्त्र है यदि कोई अच्छा काम करता है, तो प्रभु से
उसका प्रतिफल पायेगा।
9हे स्वामियो, तुम भी अपने सेवकों के साथ वैसा ही
व्यवहार करो और उन्हें डराना–धमकाना छोड़ दो। याद
रखो, उनका और तुम्हारा स्वामी स्वर्ग में है और वह कोई
पक्षपात नहीं करता।

प्रभु का अभेद्य कवच धारण करो

10मतलब यह कि प्रभु में स्थित हो कर उसकी असीम
शक्ति के साथ अपने आपको शक्तिशाली बनाओ।
11परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो। ताकि तुम
शैतान की योजनाओं के सामने टिक सको। 12क्योंकि
हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं है, बल्कि शासकों, अधिकारियों,
इस अन्धकारपूर्ण युग की आकाशी शक्तियों और अम्बर
की दुष्टात्मिक शक्तियों के साथ है। 13इसीलिये परमेश्वर
के सम्पूर्ण कवच को धारण करो ताकि जब बुरे दिन
आयें तो जो कुछ सम्भव है, उसे कर चुकने के बाद तुम
दृढ़तापूर्वक अडिग रह सको। 14-15सो अपनी कमर पर
सत्य का फेंटा कस कर धार्मिकता की झिलम पहन कर
तथा पैरों में शांति के सुसमाचार सुनाने की तत्परता के
जूते धारण करके तुम लोग अटल खड़े रहो। 16इन सब
से बड़ी बात यह है कि विश्वास को ढाल के रूप में ले
लो। जिसके द्वारा तुम उन सभी जलते तीरों को बुझा
सकोगे, जो बदी के द्वारा छोड़े गये हैं। 17छुटकारे का
शिरस्त्राण पहन लो और परमेश्वर के संदेश रूपी आत्मा
की तलवार उठा लो। 18हर प्रकार की प्रार्थना और निवेदन
सहित आत्मा की सहायता से हर अवसर पर विनती
करते रहो। इस लक्ष्य से सभी प्रकार का यत्न करते
हुए सावधान रहो। तथा सभी संतों के लिये प्रार्थना
करो।
19और मेरे लिये भी प्रार्थना करो कि मैं जब भी अपना
मुख खोलूँ, मुझे एक सुसंदेश प्राप्त हो ताकि निर्भयता के
साथ सुसमाचार के रहस्यपूर्ण सत्य को, प्रकट कर सकूँ।
20इसी के लिये मैं ज़ंजीरों में जकड़े हुए राजदूत के समान
सेवा कर रहा हूँ। प्रार्थना करो कि मैं, जिस प्रकार मुझे
बोलना चाहिये, उसी प्रकार निर्भयता के साथ सुसमाचार
का प्रवचन कर सकूँ।

अंतिम नमस्कार

21तुम भी, मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ, इसे जान
जाओ। सो तुखिकुस तुम्हें सब कुछ बता देगा। वह हमारा
प्रिय बंधु है और प्रभु में स्थित एक विश्वासपूर्ण सेवक है
22इसीलिये मैं उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ ताकि तुम मेरे
समाचार जान सको और इसलिये भी कि वह तुम्हारे मन
को शांति दे सके।
23हे भाइयो, तुम सब को परम पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से विश्वास शांति और प्रेम प्राप्त हो।
24जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम रखते हैं, उन पर
परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

अपने ... कर निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16
तेरा ... चिरायु हो निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

फिलिप्पियों

1 यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की
ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले
सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया
के सेवकों के साथ निवास करते हैं:
2हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

पौलुस की प्रार्थना

3मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर को
धन्यवाद देता हूँ। 4अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा प्रसन्नता के
साथ तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ। 5क्योंकि पहले ही दिन
से आज तक तुम सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे
हो। 6मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि वह परमेश्वर
जिसने तुम्हारे बीच ऐसा उत्तम कार्य प्रारम्भ किया है, वही
उसे उसी दिन तक बनाए रखेगा, जब मसीह यीशु फिर
आकर उसे पूरा करेगा।
7तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही है।
क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न केवल तब
जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं सुसमाचार के सत्य
की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा में लगा था, तुम सब
इस विशेषाधिकार में मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी रहे हो।
8परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से
मैं तुम सब के लिये व्याकुल रहता हूँ।
9मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ:

तुम्हारा प्रेम गहन दृष्टि और
ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े।
10 ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके,
सदा भले को अपना लोगे।
और इस तरह तुम पवित्र अकलुष
बन जाओगे उस दिन को
जब मसीह आयेगा।
11 यीशु मसीह की करुणा को पा कर
तुम अति उत्तम काम करोगे
जो प्रभु को महिमा देते हैं,
और उसकी स्तुति बनते।

पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

12हे भाइयों, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे
साथ जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही
मिला है। 13परिणामस्वरूप संसार के समूचे सुरक्षा
दल तथा अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि
मुझे मसीह का अनुयायी होने के कारण ही बंदी
बनाया गया है। 14इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर
भाई मेरे बंदी होने के कारण उत्साहित हुए हैं और
अधिकाधिक साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक
सुना रहे हैं।
15यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और वैर के
कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग सद्भावना
से प्रेरित होकर मसीह का उपदेश देते हैं। 16ये लोग प्रेम के
कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि परमेश्वर ने
सुसमाचार का बचाव करने के लिए ही मुझे यहाँ रखा है।
17किन्तु कुछ और लोग तो सचाई के साथ नहीं, बल्कि
स्वार्थ पूर्ण इच्छा से मसीह का प्रचार करते हैं क्योंकि वे
सोचते हैं कि इससे वे बंदी-गृह में मेरे लिये कष्ट पैदा कर
सकेंगे।
18किन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो
यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य हो,
चाहे भला प्रचार तो मसीह का ही होता है और इससे मुझे
आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही रहेगा। 19क्योंकि
मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा और उस
सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से प्राप्त होती है,
परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। 20मेरी तीव्र

इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास है कि मैं किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि पूर्ण निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा सदा होती रही है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी; चाहे मैं जीऊँ और चाहे मर जाऊँ। 21क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है मसीह और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि। 22किन्तु यदि मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपने कर्म के परिणाम का आनन्द लूँ। सो मैं नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ। 23दोनों विकल्पों के बीच चुनाव में मुझे कठिनाई हो रही है। मैं अपने जीवन से विदा होकर मसीह के पास जाना चाहता हूँ क्योंकि वह अति उत्तम होगा। 24किन्तु इस शरीर के साथ ही मेरा यहाँ रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। 25और क्योंकि यह मैं निश्चय के साथ जानता हूँ कि मैं यहीं रहूँगा और तुम सब की आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न आनन्द के लिये तुम्हारे साथ रहता ही रहूँगा। 26ताकि तुम्हारे पास मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह यीशु में स्थित मुझ पर गर्व करने का और अधिक आधार मिल जाये।

27किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे। जिससे चाहे मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ, तुम्हारे बारे में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता के साथ स्थिर हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के लिए एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हो। 28तथा मैं यह भी सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी प्रकार भी नहीं डर रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके विनाश का प्रमाण है और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति का और परमेश्वर की ओर से ऐसा ही किया जायेगा। 29क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उसमें विश्वास करने का बल्कि उसके लिये यातनाएँ झेलने का भी विशेषाधिकार दिया गया है। 30तुम जानते हो कि तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं जुटा था और जैसा कि तुम सुनते हो आज तक मैं उसी में लगा हूँ।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

2 फिर तुम लोगों में यदि मसीह में कोई उत्साह है, प्रेम से पैदा हुई कोई सांत्वना है, यदि आत्मा में कोई भागेदारी है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति है 2तो मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता हूँ, तुम एक तरह से सोचो, परस्पर एक जैसा प्रेम करो, आत्मा में एका रखो और एक जैसा ही लक्ष्य रखो। 3ईर्ष्या और बेकार के अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र बनो तथा दूसरों को अपने से उत्तम समझो। 4तुममें से हर एक को चाहिये कि केवल अपना ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

5अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का था।

6जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था, किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही रहे।

7बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया। और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया 8तो उसने अपने आप को नवा लिया। और इतना आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये और वह भी क्रूस पर।

9इसीलिये परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के ऊपर है 10ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का उच्चारण होते हुए सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग के हों, धरती पर के हों और चाहे धरती के नीचे के हों। 11और हर जीभ परम पिता परमेश्वर की महिमा के लिए स्वीकार करे, "यीशु मसीह ही प्रभु है।"

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

12इसलिये मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था, अब जबकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आदर भाव के साथ अपने उद्धार को पूरा करने के लिये तुम लोग काम करते जाओ। 13क्योंकि वह परमेश्वर ही है जो उन कामों की इच्छा और उन्हें पूरा करने का कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुममें पैदा करता है।

14बिना कोई शिकायत या लड़ाई–झगड़ा किये सब काम
करते रहो 15ताकि तुम भोले भाले और पवित्र बन जाओ।
तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के लोगों के बीच
परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन जाओ। उन के बीच
अन्धेरी दुनिया में तुम उस समय तारे बन कर चमको
16जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश सुनाते होवो। तुम ऐसा
ही करते रहो ताकि मसीह के फिर से लौटने के दिन मैं
यह देख कर कि मेरे जीवन की भाग दौड़ बेकार नहीं
गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।

17तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि
मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाख मधु के समान उँडेल दिया
भी जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में मेरा भी
सहभाग है। 18उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो और मेरे साथ
आनन्द मनाओ।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

19प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे
पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों
से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। 20क्योंकि दूसरा कोई ऐसा
व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे
कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित हो। 21क्योंकि और
सभी अपने–अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों
में कोई नहीं लगा है। 22तुम उसके चरित्र को जानते हो
कि सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने वैसे ही सेवा
की है, जैसे एक पुत्र अपने पिता के साथ करता है। 23सो
मुझे जैसे ही यह पता चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने
जा रहा है मैं उसे तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ।
24और मेरा विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी
जल्दी ही आऊँगा।

25मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को
तुम्हारे पास भेजूँ जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है और
सहयोगी कर्म–वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने पर
मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है, 26क्योंकि
वह तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था और इससे
बहुत खिन्न था कि तुमने यह सुना था कि वह बीमार पड़
गया था। 27हाँ, वह बीमार तो था, और वह भी इतना कि
जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह
किया (न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी) ताकि मुझे
दुख पर दुख न मिलें। 28इसीलिये मैं उसे और भी तत्परता
से भेज रहा हूँ ताकि जब तुम उसे देखो तो एक बार फिर
प्रसन्न हो जाओ और मेरा दु:ख भी जाता रहे। 29इसलिये
प्रभु में बड़ी प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत करो और ऐसे
लोगों का अधिकाधिक आदर करते रहो। 30क्योंकि मसीह
के काम के लिये वह लगभग मर गया था ताकि तुम्हारे
द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो कमी रह गई थी, उसे वह
पूरा कर दे, इसके लिये उसने अपने प्राणों की बाजी लगा
दी।

मसीह सबके ऊपर है

3 अत: मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें
फिर–फिर उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे
कोई कष्ट नहीं होता है और तुम्हारे लिये तो यह सुरक्षित
है ही। 2इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों में लगे हैं।
उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो। 3क्योंकि
सच्चे ख़तना युक्त व्यक्ति तो हम हैं जो अपनी उपासना
को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते हैं। और
मसीह यीशु पर गर्व रखते हैं तथा जो कुछ शारीरिक है,
उस पर भरोसा नहीं करते हैं। 4यद्यपि मैं स्वयं जो कुछ
शारीरिक है, उस पर भरोसा कर सकता था। पर यदि
कोई और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर
विश्वास करने का हेतु है तो मेरे पास तो वह और भी
अधिक है। 5जब मैं आठ दिन का था, मेरा ख़तना कर
दिया गया था। मैं इस्राएली हूँ। मैं बेंजमीन के वंश का हूँ।
मैं इब्रानी माता–पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ। जहाँ
तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न है, मैं
एक फरीसी हूँ। 6जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है, मैंने
कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस धार्मिकता
का सवाल है जिसे व्यवस्था का विधान सिखाता है, मैं
निर्दोष था। 7किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज उसी को
मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझता हूँ। 8इससे भी
बड़ी बात यह है कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान
की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को हीन
समझता हूँ। उसी के लिए मैंने सब कुछ का त्याग कर
दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु समझने लगा
हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ 9और उसी में पाया जा सकूँ–
मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो व्यवस्था के
विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता के कारण
जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है, जो परमेश्वर

से मिलती है और जिसका आधार विश्वास है। 10मैं मसीह को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का अनुभव करना चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था। मैं उसकी यातनाओं का भी सहभोगी होना चाहता हूँ। और उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ जिसे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पाया था। 11इस आशा के साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे हुओं में से उठ कर पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

लक्ष्य पर पहुँचने को यत्न करते रहो

12ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस उपलब्धि को पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बँधुआ बनाया था। 13हे भाइयों! मैं यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त कर चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर, जो मेरे सामने है, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मैं संघर्ष करता रहता हूँ। 14मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर यत्न करता रहता हूँ कि मैं अपने उस पारितोषिक को जीत लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने हमें ऊपर बुलाया है।

15ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी बात को किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये उसका स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। 16जिस सत्य तक हम पहुँच चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना चाहिये।

17हे भाइयों, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है, उसके अनुसार जो जीते हैं, उन पर ध्यान दो। 18क्योंकि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते हुए जीते हैं। (मैंने तुम्हें बहुत बार बताया है और अब भी मैं यह बिलख बिलख कर कह रहा हूँ।) 19उनका नाश उनकी नियति है। उनका पेट ही उनका ईश्वर है। और जिस पर उन्हें लजाना चाहिये, उस पर वे गर्व करते हैं। उन्हें बस भौतिक वस्तुओं की चिंता है। 20किन्तु हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं। 21अपनी उस शक्ति के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को वह अपने अधीन कर लेता है, हमारी दुर्बल देह को बदल कर अपनी दिव्य देह जैसा बना देगा।

फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

4 हे मेरे प्रिय भाइयो, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही दृढ़ बने रहो।

2मैं यूहोदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता हूँ कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। 3मेरे सच्चे साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं की सहायता करना। ये क्लेमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों सहित सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं। इनके नाम जीवनकी पुस्तक में लिखे गये हैं।

4प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो।

5इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो। तुम्हारी सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास ही है। 6किसी बात की चिंता मत करो, बल्कि हर परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। 7इसी से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये रखेगी।

8हे भाइयों, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य हैं, जो भव्य हैं, जो उचित हैं, जो पवित्र हैं, जो आनन्द-दायी हैं, जो सराहने योग्य हैं या कोई भी अन्य गुण या कोई प्रशंसा 9जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या सुना है या जिसे करते मुझे देखा है। उन बातों का अभ्यास करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिये पौलुस का धन्यवाद

10तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता जागी है। इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ। 11किसी आवश्यकता के कारण मैं यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में संतोष करना सीख लिया है। 12मैं अभावों के बीच रहने का रहस्य भी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि सम्पन्नता में कैसे रहा जाता है। कैसा भी समय हो और कैसी भी परिस्थिति, चाहे पेट भरा हो और चाहे भूखा, चाहे पास में बहुत

कुछ हो और चाहे कुछ भी नहीं, मैंने उन सब में सुखी रहे
का भेद सीख लिया है। 13जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा
मैं सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता हूँ।

14कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर अच्छा
ही किया है। 15हे फिलिप्पियो, तुम तो जानते ही हो,
सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में जब मैंने
मैसिडोनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में केवल
मात्र तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी और कलीसिया
ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। 16मैं जब थिस्सिलुनीके में
था, मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये तुमने बार बार
मुझे सहायता भेजी थी। 17ऐसा नहीं है कि मैं उपहारों
का इच्छुक हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारे
खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये। 18तुमने इपफ्रुदीतुस
के हाथों जो उपहार मधुर गंध भेंट के रूप में मेरे पास
भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान है
जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उन उपहारों के कारण
मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है,
मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि उससे भी अधिक
भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर गंध भेंट के रूप में हैं,
एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान जिससे परमेश्वर
प्रसन्न होता है। 19मेरा परमेश्वर तुम्हारी सभी
आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त अपने भव्य धन
से पूरा करेगा। 20हमारे परम पिता परमेश्वर की सदा सदा
महिमा होती रहे। आमीन!

पत्र का समापन

21मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे
साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। 22तुम्हें सभी संत
और विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार करते
हैं।

23तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों

1 पौलुस जो परमेश्वर की इच्छानुसार यीशु मसीह का प्रेरित है उसकी, तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से।

2मसीह में स्थित कुलुस्से में रहने वाले विश्वासी भाइयों और सन्तों के नाम:

हमारे परम पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

3जब हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, सदा ही अपने
प्रभु यीशु मसीह के परम पिता परमेश्वर का धन्यवाद करते
हैं। 4क्योंकि हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास तथा
सभी संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है। 5यह
उस आशा के कारण हुआ है जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में
सुरक्षित है और जिस के विषय में तुम पहले ही सच्चे संदेश
अर्थात् सुसमाचार के द्वारा सुन चुके हो। 6सुसमाचार समूचे
संसार में सफलता पा रहा है। यह वैसे ही सफल हो रहा है
जैसे तुम्हारे बीच यह उस समय से ही सफल होने लगा था
जब तुमने परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में सुना था और
सचमुच उसे समझा था। 7हमारे प्रिय साथी दास इपफ्रास से,
जो हमारे लिये मसीह का विश्वासी सेवक है, तुमने
सुसमाचार की शिक्षा पायी थी। 8आत्मा के द्वारा उत्तेजित
तुम्हारे प्रेम के विषय में उसने भी हमें बताया है।

9इसीलिये जिस दिन से हमने इसके बारे में सुना है, हमने भी तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह विनती करना नहीं छोड़ा है:

प्रभु का अभिमत तुम्हें ज्ञात हो,
सब प्रकार की समझ–बूझ
जो आत्मा देता; और
तुम बुद्धि भी प्राप्त करो
10 ताकि वैसे जी सको, जैसे प्रभु को साजे।
हर प्रकार से तुम प्रभु को सदा प्रसन्न करो।
तुम्हारे सब सत् कर्म सतत सफलता पावें
तुम्हारे जीवन से सत्कर्मों के फल लगें
तुम प्रभु परमेश्वर के ज्ञान में निरन्तर बढ़ते रहो।
11 वह तुम्हें अपनी महिमापूर्ण
शक्ति से सुदृढ़ बनाता जाये
ताकि विपत्ति के काल खुशी से
महाधैर्य से तुम सब सह लो।

12उस परम पिता का धन्यवाद करो, जिसने तुम्हें इस
योग्य बनाया कि परमेश्वर के उन संत जनों के साथ जो
ज्योतिर्मय जीवन जीते हैं, तुम उत्तराधिकार पाने में सहभागी
बन सके 13परमेश्वर ने अन्धकार की शक्ति से हमारा
उद्धार किया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में हमारा प्रवेश
कराया। 14उस पुत्र द्वारा ही हमें छुटकारा मिला है यानी हमें
मिली है हमारे पापों की क्षमा।

मसीह के दर्शन में, परमेश्वर के दर्शन

15वह अदृश्य परमेश्वर का दृश्य रूप है। वह सारी
सृष्टि का सिरमौर है। 16क्योंकि जो कुछ स्वर्ग में है और
धरती पर है, उसी की शक्ति से उत्पन्न हुआ है। कुछ भी
चाहे दृश्यमान हो और चाहे अदृश्य, चाहे सिंहासन हो चाहे
राज्य, चाहे कोई शासक हो और चाहे अधिकारी, सब
कुछ उसी के द्वारा रचा गया है और उसी के लिए रचा गया
है। 17सबसे पहले उसी का अस्तित्व था, उसी की शक्ति से
सब वस्तुएँ बनी रहती हैं। 18इस देह, अर्थात् कलीसिया का
सिर वही है। वही आदि है और मरे हुओं को फिर से जी
उठाने का सर्वोच्च अधिकारी भी वही है ताकि हर बात में
पहला स्थान उसी को मिले। 19क्योंकि अपनी समग्रता के
साथ परमेश्वर ने उसी में वास करना चाहा। 20उसी के
द्वारा समूचे ब्रह्माण्ड को परमेश्वर ने अपने से पुन: संयुक्त
करना चाहा–उन सभी को जो धरती के हैं और स्वर्ग के
हैं। उसी लहू के द्वारा परमेश्वर ने मिलाप कराया जिसे
मसीह ने क्रूस पर बहाया था।

21एक समय था जब तुम अपने विचारों और बुरे
कामों के कारण परमेश्वर के लिये अनजाने और उसके
विरोधी थे। 22किन्तु अब जब मसीह अपनी भौतिक देह में
था, तब मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें
स्वयं अपने आप से ले लिया। ताकि तुम्हें अपने सम्मुख
पवित्र, निश्कलंक और निर्दोष बना कर प्रस्तुत किया
जाये। 23यह तभी हो सकता है जब तुम अपने विश्वास
में स्थिरता के साथ अटल बने रहो और सुसमाचार के
द्वारा दी गयी उस आशा का परित्याग न करो, जिसे तुमने
सुना है। इस आकाश के नीचे हर किसी प्राणी को
उसका उपदेश दिया गया है, और मैं पौलुस उसी का सेवक
बना हूँ।

कलीसिया के लिये पौलुस का कार्य

24अब देखो, मैं तुम्हारे लिये जो कष्ट उठाता हूँ, उनमें
आनन्द का अनुभव करता हूँ और मसीह की देह, अर्थात्
कलीसिया के लिये मसीह की यातनाओं में जो कुछ कमी
रह गयी थी, उसे अपने शरीर में पूरा करता हूँ। 25परमेश्वर
ने तुम्हारे लाभ के लिये मुझे जो आदेश दिया था, उसी के
अनुसार मैं उसका एक सेवक ठहराया गया हूँ। ताकि मैं
परमेश्वर के समाचार का पूरी तरह प्रचार करुँ। 26यह
संदेश रहस्यपूर्ण सत्य है। जो आदिकाल से सभी की
आँखों से ओझल था। किन्तु अब इसे परमेश्वर के द्वारा
संत जनों पर प्रकट कर दिया गया है। 27परमेश्वर अपने
संत जनों को यह प्रकट कर देना चाहता था कि वह
रहस्यपूर्ण सत्य कितना वैभवपूर्ण है। उसके पास यह
रहस्यपूर्ण सत्य सभी के लिये है। और वह रहस्यपूर्ण सत्य
यह है कि मसीह तुम्हारे भीतर ही रहता है और परमेश्वर
की महिमा प्राप्त करने के लिये वही हमारी एक मात्र
आशा है। 28हमें जो ज्ञान प्राप्त है उस समूचे का उपयोग
करते हुए हम हर किसी को निर्देश और शिक्षा प्रदान
करते हैं ताकि हम उसे मसीह में एक परिपूर्ण व्यक्ति
बनाकर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। व्यक्ति
को उसी की सीख देते हैं तथा अपनी समस्त बुद्धि से हर
व्यक्ति को उसी की शिक्षा देते हैं ताकि हर व्यक्ति को
मसीह में परिपूर्ण बना कर परमेश्वर के आगे उपस्थित
कर सकें। 29मैं इसी प्रयोजन से मसीह का उस शक्ति से जो
मुझमें शक्तिपूर्वक कार्यरत है, संघर्ष करते हुए कठोर परिश्रम
कर रहा हूँ।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस बात का पता चल जाये
कि मैं तुम्हारे लिए, लौदीकिया के रहने वालों के
लिये और उन सब के लिए जो निजी तौर पर मुझसे कभी
नहीं मिले हैं, कितना कठोर परिश्रम कर रहा हूँ 2ताकि
उनके मन को प्रोत्साहन मिले और वे परस्पर प्रेम में बँध
जायें। तथा विश्वास का वह सम्पूर्ण धन जो सच्चे ज्ञान से
प्राप्त होता है, उन्हें मिल जाये तथा परमेश्वर का रहस्यपूर्ण
सत्य उन्हें प्राप्त हो वह रहस्यपूर्ण सत्य स्वयं मसीह है।
3जिसमें विवेक और ज्ञान की सारी निधियाँ छिपी हुई हैं।
4ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कोई तुम्हें मीठी मीठी
तर्कपूर्ण युक्तियों से भरमा न दे। 5यद्यपि दैहिक रूप से मैं
तुममें नहीं हूँ फिर भी आध्यात्मिक रूप से मैं तुम्हारे भीतर
हूँ। मैं तुम्हारे जीवन के अनुशासन और मसीह में तुम्हारे
विश्वास की दृढ़ता को देख कर प्रसन्न हूँ।

मसीह में बने रहो

6सो तुमने जैसे यीशु को मसीह और प्रभु के रूप में
ग्रहण किया है, तुम उसमें वैसे ही बने रहो। 7तुम्हारी जड़ें
उसी में हों और तुम्हारा निर्माण उसी पर हो तथा तुम अपने
विश्वास में दृढ़ता पाते रहो जैसा कि तुम्हें सिखाया गया है।
परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी बनो।

8ध्यान रखो कि तुम्हें अपने उन भौतिक विचारों और
खोखले प्रपंच से कोई भरमा न ले जो मानवीय परम्परा से
प्राप्त होते हैं, जो ब्रह्माण्ड को अनुशासित करने वाली
आत्माओं की देन है, न कि मसीह की। 9क्योंकि परमेश्वर
अपनी सम्पूर्णता के साथ सदैव उसी में निवास करता है।
10और उसी में स्थित होकर तुम परिपूर्ण बने हो। वह हर
शासक और अधिकारी का शिरोमणि है।

11तुम्हारा ख़तना भी उसी में हुआ है। यह ख़तना मनुष्य
के हाथों से सम्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह ख़तना जब तुम्हें
तुम्हारी पापपूर्ण मानव प्रकृति के प्रभाव से छुटकारा
दिला दिया गया था तब मसीह के द्वारा सम्पन्न हुआ।
12यह इसलिए हुआ कि जब तुम्हें बपतिस्मा में उसके
साथ गाड़ दिया गया तो जिस परमेश्वर ने उसे मरे हुओं
के बीच से जिला दिया था, उस परमेश्वर के कार्य में
तुम्हारे विश्वास के कारण, उसी के साथ तुम्हें भी पुन:
जीवित कर दिया गया। 13अपने पापों और अपने ख़तना
रहित शरीर के कारण तुम मरे हुए थे किन्तु तुम्हें परमेश्वर
ने मसीह के साथ–साथ जीवन प्रदान किया तथा हमारे

सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर दिया। 14परमेश्वर ने
उस अभिलेख को हमारे बीच में से हटा दिया जिसमें उन
विधियों का उल्लेख किया गया था जो हमारे प्रतिकूल
और हमारे विरुद्ध था। उसने उसे कीलों से क्रूस पर जड़कर
मिटा दिया है। 15परमेश्वर ने क्रूस के द्वारा आध्यात्मिक
शासकों और अधिकारियों को साधन विहीन कर दिया
और अपने विजय अभियान में बंदियों के रूप में अपने
पीछे–पीछे चलाया।

मनुष्य की शिक्षा और उसके बनाये नियमों पर मत चलो

16सो खाने पीने की वस्तुओं अथवा पर्वों नये चाँद के
त्योहारों, या सब्त के दिनों को लेकर कोई तुम्हारी आलोचना
न करे। 17ये तो, जो बातें आने वाली हैं, उनकी छाया भर
हैं। किन्तु इस छाया की वास्तविक काया तो मसीह की ही
है। 18कोई व्यक्ति जो अपने आप को प्रताड़ित करने के
कर्मों या स्वर्गदूतों की उपासना के कामों में लगा हुआ हो,
उसे तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल को पाने में बाधक नहीं बनने
देना चाहिये। ऐसा व्यक्ति सदा ही उन दिव्य दर्शनों की डींग
मारता रहता है जिन्हें उसने देखा है और अपने दुनियावी
सोच की वजह से झूठे अभिमान से भरा रहता है। 19वह
अपने आपको मसीह के अधीन नहीं रखता जो प्रमुख है
जो जोड़ों और नसों से सम्बद्ध तथा समर्थित होकर सारी देह
का उपकार करता है, और जिससे आध्यात्मिक विकास
का अनुभव होता है।

20क्योंकि तुम मसीह के साथ मर चुके हो और तुम्हे
"संसार की बुनियादी शिक्षाओं से छुटकारा दिलाया जा चुका
है।" तो इस तरह का आचरण क्यों करते हो जैसे तुम इस
दुनिया के हो और ऐसे नियमों का पालन करते हो जैसे
21"इसे हाथ मत लगाओ," "इसे चखो मत" या "इसे छुओ
मत।" 22ये सब वस्तुएँ तो काम में आते–आते नष्ट हो जाने
के लिये हैं। ऐसे आचार व्यवहारों की अधीनता स्वीकार
करके तो तुम मनुष्य के बनाये आचार व्यवहारों और
शिक्षाओं का ही अनुसरण कर रहे हो। 23मनमानी उपासना,
अपने शरीर को प्रताड़ित करने और अपनी काया को
कष्ट देने से सम्बन्धित ये नियम बुद्धि पर आधारित प्रतीत
होते हैं पर वास्तव में इन मूल्यों का कोई नियम नहीं है। ये
नियम तो वास्तव में लोगों को उनकी पापपूर्ण मानव प्रकृति
में लगा डालते हैं।

मसीह में नया जीवन

3 क्योंकि यदि तुम्हें मसीह के साथ मरे हुओं में से
जिला कर उठाया गया है तो उन वस्तुओं के लिये
प्रयत्नशील रहो जो स्वर्ग में हैं जहाँ परमेश्वर की दाहिनी
ओर मसीह विराजित है। 2स्वर्ग की वस्तुओं के सम्बन्ध में
ही सोचते रहो। भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मत सोचो।
3क्योंकि तुम लोगों का पुराना व्यक्तित्व मर चुका है और
तुम्हारा नया जीवन मसीह के साथ साथ परमेश्वर में
छिपा है। 4जब मसीह, जो हमारा जीवन है, फिर से
प्रकट होगा तो तुम भी उसके साथ उसकी महिमा में प्रकट
होओगे।

5इसलिये तुममें जो कुछ सांसारिक है, उसका अंत कर
दो–व्यभिचार, अपवित्रता, वासना, बुरी इच्छाएँ और लालच
जो मूर्ति उपासना का ही एक रूप है, 6इन ही बातों के
कारण परमेश्वर का क्रोध प्रकट होने जा रहा है।* 7एक
समय था जब तुम भी ऐसे कर्म करते हुए इसी प्रकार का
जीवन जीया करते थे।

8किन्तु अब तुम्हें इन सब बातों के साथ साथ क्रोध,
झुँझलाहट, शत्रुता, निन्दा–भाव, और अपशब्द बोलने से
छुटकारा पा लेना चाहिये। 9आपस में झूठ मत बोलो क्योंकि
तुमने अपने पुराने व्यक्तित्व को उसके कर्मों सहित उतार
फेंका है 10और नये व्यक्तित्व को धारण कर लिया है जो
अपने रचयिता के स्वरूप में स्थित होकर परमेश्वर के
सम्पूर्ण ज्ञान के निमित्त निरन्तर नया होता जा रहा है।
11परिणामस्वरूप वहाँ यहूदी और ग़ैर यहूदी में कोई अन्तर
नहीं रह गया है, न किसी ख़तना युक्त और खतना रहित
में, न किसी असभ्य और बर्बर* में, न दास और एक
स्वतन्त्र व्यक्ति में कोई अन्तर है। मसीह सर्वेसर्वा है और
सब विश्वासियों में उसी का निवास है।

12क्योंकि तुम परमेश्वर के चुने हुए पवित्र और प्रिय
जन हो इसलिए सहानुभूति, दया, नम्रता, कोमलता और
धीरज को धारण करो। 13तुम्हें आपस में जब कभी किसी
से कोई कष्ट हो तो एक दूसरे की सह लो और परस्पर
एक दूसरे को मुक्त भाव से क्षमा कर दो। तुम्हें आपस में

पद 6 कुछ यूनानी प्रतियों मे ये शब्द जोड़े गये है: "उन पर जो आज्ञा को नहीं मानते।"

बर्बर शाब्दिक सिथियन, ये लोग बड़े जंगली और असभ्य समझे जाते थे।

एक दूसरे को ऐसे ही क्षमा कर देना चाहिए जैसे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त भाव से क्षमा कर दिया। 14इन बातों के अतिरिक्त प्रेम को धारण करो। प्रेम ही सब को आपस में बाँधता और परिपूर्ण करता है। 15तुम्हारे मन पर मसीह से प्राप्त होने वाली शांति का शासन हो। इसी के लिये तुम्हें उसी एक देह* में बुलाया गया है। सदा धन्यवाद करते रहो। 16अपनी सम्पन्नता के साथ मसीह का संदेश तुम में वास करे। भजनों, स्तुतियों और आत्मा के गीतों को गाते हुए बड़े विवेक के साथ एक दूसरे को शिक्षा और निर्देश देते रहो। परमेश्वर को मन ही मन धन्यवाद देते हुए गाते रहो। 17और तुम जो कुछ भी करो या कहो, वह सब प्रभु यीशु के नाम पर हो। उसी के द्वारा तुम हर समय परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो।

नये जीवन के नियम

18हे पत्नियो, अपने पतियों के प्रति उस प्रकार समर्पित रहो जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता है।

19हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, उनके प्रति कठोर मत बनो।

20हे बालको, सब बातों में अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करो। क्योंकि प्रभु के अनुयायिओं के इस व्यवहार से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

21हे पिताओ, अपने बालकों को कड़ुवाहट से मत भरो। कहीं ऐसा न हो कि वे जतन करना ही छोड़ दें।

22हे सेवको, अपने सांसारिक स्वामियों की सब बातों का पालन करो। केवल लोगों को प्रसन्न भर करने के लिये उसी समय नहीं जब वे देख रहे हों, बल्कि सच्चे मन से उनकी मानो। क्योंकि तुम प्रभु का आदर करते हो। 23तुम जो कुछ करो अपने समूचे मन से करो। मानों तुम उसे लोगों के लिये नहीं बल्कि प्रभु के लिये कर रहे हो। 24याद रखो कि तुम्हें प्रभु से उत्तराधिकार का प्रतिफल प्राप्त होगा। अपने स्वामी मसीह की सेवा करते रहो25क्योंकि जो बुरा कर्म करेगा, उसे उसका फल मिलेगा और वहाँ कोई पक्षपात नहीं है।

4 हे स्वामियो, तुम अपने सेवकों को जो उनका बनता है और उचित है, दो। याद रखो स्वर्ग में तुम्हारा भी कोई स्वामी है।

पौलुस की मसीहियों के लिये सलाह

2प्रार्थना में सदा लगे रहो। और जब तुम प्रार्थना करो तो सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो। 3साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें अपने संदेश के प्रचार का तथा मसीह से संबंधित रहस्यपूर्ण सत्य के प्रवचन का अवसर प्रदान करे क्योंकि इस के कारण ही मैं बंदीगृह में हूँ। 4प्रार्थना करो कि मैं इसे ऐसे स्पष्टता के साथ बता सकूँजैसे मुझे बताना चाहिये।

5बाहर के लोगों के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करो। हर अवसर का पूरा–पूरा उपयोग करो। 6तुम्हारी बोली सदा मीठी रहे और उससे बुद्धि की छटा बिखरे ताकि तुम जान लो कि किस व्यक्ति को कैसे उत्तर देना है।

पौलुस के साथियों के समाचार

7 हमारा प्रिय बंधु तुखिकुस जो एक विश्वासी सेवक और प्रभु में स्थित साथी दास है, तुम्हें मेरे सभी समाचार बता देगा। 8मैं उसे तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा हूँ कि तुम्हें उससे हमारे हालचाल का पता चल जाये वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करेगा। 9मैं अपने विश्वासी तथा प्रिय बंधु उनेसिमुस को भी उसके साथ भेज रहा हूँ जो तुम्हीं में से एक है। वे, यहाँ जो कुछ घट रहा है, उसे तुम्हें बतायेंगे।

10अरिस्तरखुस का जो बंदी गृह में मेरे साथ रहा है तथा बरनाबास के बंधु मरकुस का तुम्हें नमस्कार, (उसके विषय में तुम निर्देश पा ही चुके हो कि यदि वह तुम्हारे पास आये तो उसका स्वागत करना,) 11यूसतुस कहलाने वाले यीशु का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। यहूदी विश्वासियों में बस ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे साथ काम कर रहे हैं। ये मेरे लिये आनन्द का कारण रहे हैं।

12इपफ्रास का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। वह तुम्हीं में से एक है और मसीह यीशु का सेवक है। वह सदा बड़ी वेदना के साथ तुम्हारे लिये लगनपूर्वक प्रार्थना करता रहता है कि तुम आध्यात्मिक रूप से सम्पूर्ण बनने के लिये विकास करते रहो। तथा विश्वासपूर्वक परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल बने रहो। 13मैं इसका साक्षी हूँ कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया तथा हियरापुलिस के रहने वालों के लिये सदा कड़ा परिश्रम करता रहा है। 14प्रिय चिकित्सक लूका तथा वेमास तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

देह मसीह का आत्मिक शरीर अर्थात् उसकी कलीसिया अथवा उसके लोग।

15लौदीकिया में रहने वाले भाइयों को तथा नमुफास
और उस कलीसिया को जो उसके घर में जुड़ती है,
नमस्कार पहुँचे। 16और देखो, पत्र जब तुम्हारे सम्मुख
पढ़ा जा चुके, तब इस बात का निश्चय कर लेना कि इसे
लौदीकिया के कलीसिया में भी पढ़वा दिया जाये। और
लौदीकिया से मेरा जो पत्र तुम्हें मिले, उसे तुम भी पढ़
लेना। 17अखिप्पुस से कहना कि वह इस बात का ध्यान
रखे कि प्रभु में जो सेवा उसे सौंपी गयी है, वह उसे निश्चय
के साथ पूरा करे।

18मैं पौलुस स्वयं अपनी लेखनी से यह नमस्कार लिख
रहा हूँ। याद रखना मैं कारागार में हूँ, परमेश्वर का अनुग्रह
तुम्हारे साथ रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस
और तीमुथियुस की ओर से:
परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

[2]हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते
रहते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद बनी
रहती है। [3]प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस काम की
याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम से पैदा हुए
तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में
आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्य पूर्ण सहनशीलता का हमें सदा
ध्यान बना रहता है। [4]परमेश्वर के प्रिय हमारे भाइयो, हम
जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो। [5]क्योंकि हमारे
सुसमाचार का विवरण तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं
पहुँचा है बल्कि पवित्र आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के
साथ पहुँचा है। तुम जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे,
तुम्हारे लाभ के लिये कैसा जीवन जीते थे। [6]कठोर यातनाओं
के बीच तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के
साथ सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का
अनुकरण करने लगे। [7]और इसीलिये मैसीडोनिया और
अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श बन
गये [8]क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी, वह न
केवल मैसिडोनिया और अखाया में सुनी गयी बल्कि
परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना माना
गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है।
[9-10]क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुमने
हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा सच्चे
परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से उसके पुत्र
के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम मूर्तियों की ओर
से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े थे। पुत्र अर्थात् यीशु
को उसने मरे हुओं में से फिर से जिला उठाया था। और
वही परमेश्वर के आने वाले कोप से हमारी रक्षा करता
है।

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाइयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में
तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था।
[2]तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और
दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से हमें
कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार को
सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। [3]निश्चय ही हम जब लोगों
का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते हैं तो वह
इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और न ही इसलिए
कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए भी नहीं कि हम
लोगों को छलने का जतन करते हैं। [4]हम लोगों को खुश
करने की कोशिश नहीं करते बल्कि हम तो उस परमेश्वर
को प्रसन्न करते हैं जो हमारे मन का भेद जानता है। [5]निश्चय
ही हम कभी भी ठकुर सुहाती वाणी के साथ तुम्हारे सामने
नहीं आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी
लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है [6]हमने लोगों से
कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही किसी
और से।

[7]यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार
जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के
साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर
उसका पालन–पोषण करती है। [8]हमने तुम्हारे प्रति वैसी
ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिये परमेश्वर से मिले
सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने आपको भी
हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि तुम हमारे प्रिय

किन्तु ... रहे कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग भी मिलता है: किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे।

हो गये हो। 9हे भाइयो, तुम हमारे कठोर परिश्रम और
कठिनाई को याद रखो जो हमने दिन–रात इसलिये किया
है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाते हुए तुम
पर बोझ न बनें।

10तुम साक्षी हो और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम
विश्वासियों के प्रति हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और
दोष रहितता के साथ व्यवहार किया है। 11तुम जानते ही हो
कि जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता
है12वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ सुख
चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है जिससे
परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुला
भेजा है, प्रसन्न होता है।

13और इसीलिये हम परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर
करते रहते हैं क्योंकि हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन
ग्रहण किया तो उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं, बल्कि
परमेश्वर के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह
वास्तव में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी
है। 14हे भाइयो, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर
की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने अपने
साथी देश–भाइयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं जैसी उन्होंने
उन यहूदियों के हाथों झेली थीं 15जिन्होंने प्रभु यीशु को मार
डाला और नबियों को बाहर खदेड़ दिया। वे परमेश्वर को
प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची मानवता के विरोधी हैं। 16वे
विधर्मियों को सुसमाचार का उपदेश देने में बाधा खड़ी
करते हैं कि कहीं उन लोगों का उद्धार न हो जाये। इन
बातों से वे सदा अपने पापों का घड़ा भरते रहते हैं और
अन्तत: अब तो परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से
आ पड़ा है

फिर मिलने की इच्छा

17हे भाइयो, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय
के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल
शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो उठे।
हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। 18हाँ! हम तुमसे मिलने के
लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने अनेक बार
प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा डाली। 19भला
बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास या हमारा वह
मुकुट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है? क्या वह तुम्हीं
नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने पर जब हम
उसके सामने उपस्थित होंगे 20तो वहाँ तुम हमारी महिमा
और हमारे आनन्द होंगे।

3 क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे
इसलिये हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का
निश्चय कर लिया। 2और हमने हमारे बन्धु तथा परमेश्वर
के लिये मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी
तिमुथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित
करने को तुम्हारे पास भेज दिया 3ताकि इन वर्तमान
यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो
जानते ही हो कि हम तो यातना के लिये ही निश्चित किये
गये हैं। 4वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें पहले से ही
कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले हैं, और यह
ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते ही हो। 5इसलिए
क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था, इसलिये
मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय में जानने तिमुथियुस को
भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था कि लुभाने वाले ने कहीं
तुम्हें प्रलोभित करके हमारे कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो
नहीं कर दिया है।

6तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी अभी हमारे पास
वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और
तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया है
कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे मिलने
को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे मिलने को।
7सो हे भाइयो, हमारी सभी पीड़ाओं और यातनाओं में
तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा उत्साह बहुत बढ़ा है।
8हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे हैं क्योंकि हम जान
गये हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े हो। 9तुम्हारे विषय में
तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें मिला है, उसके लिये हम
परमेश्वर का धन्यवाद कैसे करें। अपने परमेश्वर के
सामने 10रात–दिन यथासम्भव लगन से हम प्रार्थना करते
रहते हैं कि किसी प्रकार तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और
तुम्हारे विश्वास में जो कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा
करें।

11हमारा परम पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु
यीशु तुम्हारे पास आने को हमें मार्ग दिखाये। 12और
प्रभु एक दूसरे के प्रति तथा सभी के लिए तुममें जो
प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिये
हमारा प्रेम उमड़ा पड़ता है। 13इस प्रकार वह तुम्हारे
हृदयों को सुदृढ़ करे और उन्हें हमारे परम पिता

परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु यीशु के आगमन पर
अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ पवित्र एवम् दोष–रहित
बना दे

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाइयो, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी हैं।
यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना एवम्
निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार उपदेश
ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये
उसी के अनुसार चलना चाहिये। निश्चय ही तुम उसी
प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और अधिक से
अधिक करते चलो। 2क्योंकि तुम यह जानते हो कि प्रभु
यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश दिये हैं।
3और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उसे पवित्र हो
जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, 4अपने शरीर की वासनाओं*
पर नियन्त्रण रखना सीखो–ऐसे ढंग से जो पवित्र है और
आदरणीय भी। 5न कि उस वासनापूर्ण भावना से जो
परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों की जैसी है।
6यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस विषय में कोई
अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे या कोई
अनुचित लाभ न उठाये; क्योंकि ऐसे सभी पापों के लिये
प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं और तुम्हें
सावधान भी कर चुके हैं। 7परमेश्वर ने हमें अपवित्र बनने
के लिये नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र बनने के लिये बुलाया
है। 8इसलिये जो इस शिक्षा को नकारता है वह किसी मनुष्य
को नहीं नकार रहा है बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा
है। उस परमेश्वर को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी
प्रदान करता है।

9अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी
लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि
परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने की
शिक्षा दी है। 10और वास्तव में तुम अपने सभी भाइयों के
साथ समूचे मैसिडोनिया में ऐसा ही कर भी रहे हो। किन्तु
भाइयो! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से अधिक करने को
कहते हैं।

11शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने
काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो। जैसा
कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। 12इससे कलीसिया से बाहर
के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे। इससे तुम्हें
किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

13हे भाइयो, हम चाहते हैं कि जो चिर–निद्रा में सो गये
हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन औरों के
समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न करना पड़े।
14क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु की मृत्यु
हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो उसी प्रकार जिन्होंने
उसमें विश्वास करते हुए प्राण त्याग दिए हैं, उनके साथ भी
परमेश्वर वैसा ही करेगा। और यीशु के साथ वापस ले
जायेगा। 15जब प्रभु का फिर से आगमन होगा तो हम जो
जीवित हैं और अभी यहीं हैं उनसे आगे नहीं निकल पाएँगे
जो मर चुके हैं। 16क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने
ऊँचे स्वर से आदेश देगा तथा जब परमेश्वर की बिगुल
बजेगी तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने
मसीह में प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। 17उसके बाद हमें जो
जीवित हैं, और अभी भी यहीं हैं उनके साथ ही हवा में प्रभु
से मिलने के लिये बादलों के बीच ऊपर उठा लिया जाएगा
और इस प्रकार हम सदा के लिये प्रभु के साथ हो जायेंगे।
18अत: इन शब्दों के साथ एक दूसरे को उत्साहित करते
रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाइयो, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें
लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है 2क्योंकि तुम
स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात में
चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से लौटने
का दिन भी आ जायेगा। 3जब लोग कह रहे होंगे कि
"सब कुछ शांत और सुरक्षित है" तभी जैसे एक गर्भवती
स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे ही उन पर
विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर भाग नहीं
पायेंगे। 4किन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार के वासी नहीं हो
कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की तरह आ जाये।
5तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन की संतान हो।
हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न ही अन्धेरे से।
6इसलिये हमें औरों की तरह सोते नहीं रहना चाहिये,
बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने पर नियन्त्रण रखना

वासनाओं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

चाहिये। **7**क्योंकि जो सोते हैं, रात में सोते हैं और जो नशा
करते हैं, वे भी रात में ही मदमस्त होते हैं। **8**किन्तु हम तो
दिन से सम्बन्धित हैं इसलिए हमें अपने पर काबू रखना
चाहिये। आओ विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें
और उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़
लें। **9**क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिये नहीं,
बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिये
बनाया है। **10**यीशु मसीह ने हमारे लिये प्राण त्याग दिये
ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुन: आए
उसके साथ जीवित रहें।

11इसलिये एक दूसरे को सुख पहुँचाओ और एक दूसरे
को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम
कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

12हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग तुम्हारे
बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में जो तुम्हें राह दिखाते
हैं, उनका आदर करते रहो। **13**हमारा तुमसे निवेदन है कि
उनके काम के कारण प्रेम के साथ उन्हें पूरा आदर देते
रहो।

परस्पर शांति से रहो। **14**हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन
है आलसियों को चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो,
दीनों की सहायता में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो।
15देखते रहो कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि
सब लोग सदा एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन
करें।

16सदा प्रसन्न रहो। **17** प्रार्थना करना कभी न छोड़ो।
18हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।

19पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो।
20नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। **21**हर बात
की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण किये रहो
22और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।

23शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह पवित्र
करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और तुम अपने
सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और देह को हमारे
प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णत: दोष रहित बनाये
रखो। **24**वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया है,
विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही
करेगा।

25हे भाइयो! हमारे लिये भी प्रार्थना करो। **26**सब भाइयों
का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। **27**तुम्हें प्रभु की शपथ
देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को सब भाइयों
को पढ़ कर सुनाया जाये। **28**हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से हमारे
परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में स्थित
थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम:
2तुम्हें परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की ओर
से अनुग्रह तथा शांति प्राप्त हो।

पौलुस का धन्यवाद तथा परमेश्वर के न्याय की चर्चा

3हे भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद
करना चाहिये: ऐसा करना उचित भी है। क्योंकि तुम्हारे
विश्वास का आश्चर्यजनक रूप से विकास हो रहा है
तथा तुममें आपसी प्रेम भी बढ़ रहा है। 4इसीलिये
परमेश्वर की कलीसियाओं में हम स्वयं तुम पर गर्व करते
हैं। तुम्हारी यातनाओं के बीच तथा कष्टों को सहते हुए
धैर्य पूर्वक सहन करना तुम्हारे विश्वास को प्रकट करता
है।

5यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि परमेश्वर का
न्याय सच्चा है। उसका उद्देश्य यही है कि तुम परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करने योग्य ठहरो। तुम अब उसी
के लिये तो कष्ट उठा रहे हो। 6निश्चय ही परमेश्वर
की दृष्टि में यह न्यायोचित है कि तुम्हें जो दुख दे रहे हैं,
उन्हें बदले में दुख ही दिया जाये। 7और तुम जो कष्ट
उठा रहे हो, उन्हें हमारे साथ उस समय विश्राम दिया
जाये जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान दूतों के साथ स्वर्ग
से 8धधकती आग में प्रकट हो। और जो परमेश्वर को
नहीं जानते तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार
पर नहीं चलते, उन्हें दण्ड दिया जाएगा। 9उन्हें अनन्त
विनाश का दण्ड दिया जायेगा। तथा उन्हें प्रभु और
उसकी महिमापूर्ण शक्ति के सामने से हटा दिया
जायेगा। 10ऐसा तब होगा जब वह अपने पवित्र जनों के
बीच महिमा मंडित तथा सभी विश्वासियों के लिए
आश्चर्य का हेतु बनने के लिए आयेगा उसमें तुम लोग भी
शामिल होवोगे क्योंकि हमने उसके विषय में जो साक्षी
दी थी, उस पर तुमने विश्वास किया था।

11इसीलिये हम तुम्हारे हेतु परमेश्वर से सदा प्रार्थना करते
हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें उस जीवन के योग्य समझे
जिसे जीने के लिए तुम्हें बुलाया गया है। और वह तुम्हारी
हर उत्तम इच्छा को प्रबल रूप से परिपूर्ण करे और हर उस
काम को वह सफल बनाये जो तुम्हारे विश्वास का परिणाम
है। 12इस प्रकार हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम्हारे
द्वारा आदर पायेगा। और तुम उसके द्वारा आदर पाओगे।
यह सब कुछ हमारे परमेश्वर के और यीशु मसीह के अनुग्रह
से होगा।

प्रभु के आने से पूर्व दुर्घटनाएँ घटेंगी

2 हे भाइयो,अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के फिर से
आने और उसके साथ परस्पर एकत्र होने के विषय
में निवेदन करते हैं 2कि तुम अचानक अपने विवेक को
किसी भविष्यवाणी किसी उपदेश अथवा किसी ऐसे पत्र से
मत खोना जिसे हमारे द्वारा लिखा गया समझा जाता हो और
तथाकथित रूप से जिसमें बताया गया हो कि प्रभु का दिन
आ चुका है, तुम अपने मन में डावाँडोल मत होना। 3तुम
अपने आपको किसी के भी द्वारा किसी भी प्रकार छला मत
जाने दो। मैं ऐसा इसीलिये कह रहा हूँ क्योंकि वह दिन उस
समय तक नहीं आयेगा जब तक कि परमेश्वर से मुँह मोड़
लेने का समय नहीं आ जाता और व्यवस्थाहीनता का व्यक्ति
प्रकट नहीं हो जाता। उस व्यक्ति की नियति तो विनाश है।
4वह अपने को हर वस्तु से ऊपर कहेगा और उनका विरोध
करेगा। ऐसी वस्तुओं का जो परमेश्वर की हैं या जो पूजनीय
हैं। यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में जा कर सिंहासन
पर बैठ यह दावा करेगा कि वही परमेश्वर है।
5क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब मैं तुम्हारे साथ ही था
तो तुम्हें यह सब बताया गया था। 6और तुम तो अब यह

जानते ही हो कि उसे क्या रोके हुए हैं ताकि वह उचित
अवसर आने पर ही प्रकट हो। 7मैं ऐसा इसलिये कह रहा हूँ
क्योंकि व्यवस्थाहीनता की रहस्यमयी शक्ति अभी भी अपना
काम कर रही है। अब कोई इसे रोक रहा है और वह तब
तक इसे रोकता रहेगा, जब तक, उसे रोके रखने वाले को
रास्ते से हटा नहीं दिया जायेगा। 8तब ही वह व्यवस्थाहीन
प्रकट होगा। जब प्रभु यीशु अपनी महिमा में फिर प्रकट
होगा वह इसे मार डालेगा तथा अपने पुन:आगमन के अवसर
पर अपनी उपस्थिति से उसे नष्ट कर देगा। 9उस
व्यवस्थाहीन का आना शैतान की शक्ति से होगा तथा वह
बहुत बड़ी शक्ति, झूठे चिह्नों और आश्चर्यकर्मों 10तथा हर
प्रकार के पाप पूर्ण छल–प्रपंच से भरा होगा। वह इनका
उपयोग उन व्यक्तियों के विरुद्ध करेगा जो सर्वनाश के मार्ग
में खोये हुए हैं। वे भटक गए हैं क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम
नहीं किया है; कहीं उनका उद्धार न हो जाये 11इसीलिये
परमेश्वर उनमें एक छली शक्ति को कार्यरत कर देगा
जिससे वे झूठ में विश्वास करने लगे थे। इससे उनका
विश्वास जो झूठा है, उस पर होगा। 12इससे वे सभी जिन्होंने
सत्य पर विश्वास नहीं किया और झूठ में आनन्द लेते रहे,
दण्ड पायेंगे।

तुम्हें छुटकारे के लिये चुना गया है

13प्रभु में प्रिय भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर
का धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा के
द्वारा तुम्हें पवित्र करके और सत्य में तुम्हारे विश्वास के
कारण उद्धार पाने के लिये तुम्हें चुना है। जिन व्यक्तियों का
उद्धार होना है, तुम उस पहली फसल के एक हिस्से हो।
14और इसी उद्धार के लिए जिस सुसमाचार का हमने तुम्हें
उपदेश दिया है उसके द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया ताकि
तुम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को धारण कर
सको। 15इसलिये भाइयो, अटल बने रहो तथा जो उपदेश
तुम्हें मौखिक रूप से या हमारे पत्रों के द्वारा दिया गया है,
उसे थामे रखो।

16अब हमारा प्रभु स्वयं यीशु मसीह और हमारा परम
पिता परमेश्वर जिसने हम पर अपना प्रेम दर्शाया है और
हमें परम आनन्द प्रदान किया है तथा जिसने हमें अपने
अनुग्रह में सुदृढ़ आशा प्रदान की है। 17तुम्हारे हृदयों को
आनन्द दे और हर अच्छी बात में जिसे तुम कहते हो या
करते हो, तुम्हें सुदृढ़ बनाये।

हमारे लिये प्रार्थना करो

3 हे भाइयो, तुम्हें कुछ और बातें हमें बतानी हैं। हमारे
लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का संदेश तीव्रता से फैले
और महिमा पाये। जैसा कि तुम लोगों के बीच हुआ है।
2प्रार्थना करो कि हम भटके हुओं और दुष्ट मनुष्यों से दूर
रहें। (क्योंकि सभी लोगों का तो प्रभु में विश्वास नहीं होता।)

3किन्तु प्रभु तो विश्वासपूर्ण है। वह तुम्हारी शक्ति बढ़ायेगा
और तुम्हें उस दुष्ट से बचाये रखेगा। 4हमें प्रभु में तुम्हारी
स्थिति के विषय में विश्वास है। और हमें पूरा निश्चय है
कि हमने तुम्हें जो कुछ करने को कहा है, तुम वैसे ही कर
रहे हो और करते रहोगे। 5प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर
के प्रेम और मसीह की धैर्यपूर्ण दृढ़ता की ओर अग्रसर करे।

कर्म की अनिवार्यता

6भाइयो! अब तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में
यह आदेश है कि तुम हर उस भाई से दूर रहो जो ऐसा
जीवन जीता है जो उस के लिए उचित नहीं है। 7मैं यह
इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि तुम तो स्वयं ही जानते हो कि
तुम्हें हमारा अनुकरण कैसे करना चाहिये क्योंकि तुम्हारे
बीच रहते हुए हम कभी आलसी नहीं रहे। 8हमने बिना
मूल्य चुकाये किसी से भोजन ग्रहण नहीं किया, बल्कि
जतन और परिश्रम करते हुए हम दिन रात काम में जुटे
रहे ताकि तुममें से किसी पर भी बोझ न पड़े। 9ऐसा नहीं
कि हमें तुमसे सहायता लेने का कोई अधिकार नहीं है,
बल्कि हम इसलिये कड़ी मेहनत करते रहे ताकि तुम उसका
अनुसरण कर सको। 10इसीलिये हम जब तुम्हारे साथ थे,
हमने तुम्हें यह आदेश दिया था: "यदि कोई काम न करना
चाहे तो वह खाना भी न खाये।"

11हमें ऐसा बताया गया है कि तुम्हारे बीच कुछ ऐसे भी हैं
जो ऐसा जीवन जीते हैं जो उनके अनुकूल नहीं है। वे कोई
काम नहीं करते, दूसरों की बातों में टाँग अड़ाते हुए
इधर–उधर घूमते फिरते हैं। 12ऐसे लोगों को हम यीशु
मसीह के नाम पर समझाते हुए आदेश देते हैं कि वे शांति
के साथ अपना काम करें और अपनी कमाई का ही खाना
खायें। 13किन्तु हे भाइयो, जहाँ तक तुम्हारी बात है,
भलाई करते हुए कभी थको मत।

14इस पत्र के माध्यम से दिये गये हमारे आदेशों पर यदि
कोई न चले तो उस व्यक्ति पर नजर रखो और उसकी
संगत से दूर रहो ताकि उसे लज्जा आये। 15किन्तु उसके

साथ शत्रु जैसा व्यवहार मत करो बल्कि भाई के समान उसे चेताओ।

पत्र का समापन

16अब शांति का प्रभु स्वयं तुम्हें हर समय, हर प्रकार से
शांति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

17मैं पौलुस स्वयं अपनी लिखावट में यह नमस्कार लिख
रहा हूँ।

मैं इसी प्रकार हर पत्र पर हस्ताक्षर करता हूँ। मेरे लिखने की शैली यही है।

18हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर बना
रहे।

1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

2तिमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

3मार्कदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी शिक्षाएँ देते रहने, 4काल्पनिक कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर जो लड़ाई–झगड़ों को बढ़ावा देती हैं और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देतीं, जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। 5 इस आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है। 6कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं और बेकार के वाद–विवादों में जा फँसे हैं। 7 वे व्यवस्था के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते।

8हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था उत्तम है। 9अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्दण्डों, विद्रोहियों, अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता–पिता को मार डालने वालों, हत्यारों, 10व्यभिचारियों, समलिंग कामुकों, शोषण कर्त्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा के विरोध में हैं। 11वह शिक्षा परमेश्वर के महिमा–मय सुसमाचार के अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

12मैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वसनीय समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। 13यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया 14और प्रभु का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला, और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है।

15यह कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ। 16और इसीलिये तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे, उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता प्रदर्शित कर सके। 17अब उस अनन्त सम्राट अविनाशी, अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान और महिमा होती रहे। आमीन!

18मेरे पुत्र तीमुथियुस, भविष्यवक्ताओं के वचनों के अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू उनके अनुसार 19विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। 20हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया है

ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ। 2शासकों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें। 3यह हमारे उद्धार-कर्त्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है। 4वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचानें 5क्योंकि परमेश्वर एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु। 6उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर इसकी साक्षी दी। 7तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया। (यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी ठहराया गया।

8इसीलिये मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो बिना किसी क्रोध अथवा मन-मुटाव के प्रार्थना करें।

9इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे सीधी-सादी वेश-भूषा में शालीनता और आत्म-नियन्त्रण के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिये वे केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें 10बल्कि ऐसी स्त्रियों को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती हैं, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम कार्यों से सजायें।

11एक स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से समग्र समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे। 12मैं यह नहीं चाहता कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना चाहिए। 13क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और तब पीछे हव्वा को। 14आदम को बहकाया नहीं जा सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप में पतित हो गयी। 15किन्तु यदि वे माँ पने के कर्तव्यों को निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे काम की इच्छा रखता है। 2अब देखो उसे एक ऐसा जीवन जीना चाहिये जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिये। उसे शालीन होना चाहिये, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथिसत्कार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपुण होना चाहिये। 3वह पियक्कड़ नहीं होना चाहिये, न ही उसे झगड़ालू होना चाहिये। उसे तो सज्जन तथा शांति-प्रिय होना चाहिये।उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिये। 4अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान करते हों। 5(यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का प्रबन्ध कैसे कर पायेगा?) 6वह एक नया शिष्य नहीं होना चाहिये ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े। 7इसके अतिरिक्त बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़ जाये।

कलीसिया के सेवक

8इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्मानीय होना चाहिये जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो। मदिरा पान में उसकी रुचि नहीं होनी चाहिये। बुरे रास्तों से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिये। 9उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों को थामे रखना चाहिये। 10इनको भी पहले निरीक्षकों के समान परखा जाना चाहिये। फिर यदि उनके विरोध में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में सेवा-कार्य करने देना चाहिये। 11इसी प्रकार स्त्रियों को भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निंदक नहीं होनी चाहियें बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय होनी चाहियें। 12कलीसिया के सेवक के केवल एक ही पत्नी होनी चाहिये तथा उसे अपने बाल-बच्चों तथा अपने घरानों

का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिये। 13क्योंकि यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्ण स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

14मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। 15यदि मुझे आने में समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है, किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये। कलीसिया ही सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है। 16हमारे धर्म के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान् है :

वह नर देह धर प्रकट हुआ,
आत्मा ने उसे नेक साधा,
स्वर्गदूतों ने उसे देखा,
वह राष्ट्रों में प्रचारित हुआ,।
जग ने उस पर विश्वास किया,
और उसे महिमा में ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवक्ताओं के उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे और विश्वास से भटक जायेंगे। 2उन झूठे पाखण्डी लोगों के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानो तपते लोहे से दाग दिया गया हो। 3वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिये धन्यवाद देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। 4क्योंकि परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाये। 5क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

6यदि तुम भाइयों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका पालन–पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा के द्वारा होता है जिसे तू ने ग्रहण किया है। 7बुढ़ियाओं की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा परमेश्वर की सेवा के लिये अपने को साधने में लगे रहो। 8क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन के लिये दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। 9इस बात पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी तरह ग्रहण करने योग्य है। 10और हम लोग इसीलिये कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्त्ता सजीव परमेश्वर पर टिका दी हैं।

11इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। 12तू अभी युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू अपनी बात–चीत, चाल–चलन, प्रेम–प्रकाशन, अपने विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिये एक उदाहरण बन जा। 13जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में अपने आप को लगाये रख। 14तुझे जो वरदान प्राप्त है, तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप बुजुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख कर दिया गया है। 15इन बातों पर पूरा ध्यान लगाये रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के सामने प्रकट हो। 16अपने जीवन और उपदेशों का विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

व्यवहार के कुछ नियम

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों जैसा बर्ताव करो। 2बड़ी महिलाओं को माँ समझो तथा युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के साथ बर्ताव करो।

3उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में विधवा हैं। 4किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र–पुत्री अथवा नाती–पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते

हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिये।
उन्हें चाहिये कि वे अपने माता–पिताओं के पालन–पोषण
का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।
5वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका ध्यान रखने
वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही जिसकी आशाओं
का सहारा है वह दिन रात विनती तथा प्रार्थना में लगी
रहती है। 6किन्तु विषय भोग की दास विधवा जीते जी मरे
हुए के समान है। 7इसलिये विश्वासी लोगों को इन बातों का
(उनकी सहायता का) आदेश दो ताकि कोई भी उनकी
आलोचना न कर पाये। 8किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों,
विशेषकर अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं
करता, तो वह विश्वास से फिर गया है तथा किसी
अविश्वासी से भी अधिक बुरा है।

9उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता
ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाये जो कम से कम
साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही हो 10तथा
जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार करते हुए,
पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की सहायता करते
हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो कर सब तरह के
उत्तम कार्यों के लिये जानी–मानी जाती हो।

11किन्तु युवती–विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित
मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब
उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे फिर
विवाह करना चाहतीं हैं। 12वे अपराधिनी हैं क्योंकि उन्होंने
अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है। 13इसके अतिरिक्त उन्हें
आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक घर से दूसरे घर
घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल आलसी हो जाती हैं,
बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के कामों में टाँग अड़ाने
लगती हैं और ऐसी बातें बोलने लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी
चाहियें। 14इसलिए मैं चाहता हूँ कि युवती– विधवाएँ विवाह
कर लें और संतान का पालनपोषण करते हुए अपने घर
बार की देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर
कटाक्ष करने का कोई अवसर न मिल पाये। 15मैं यह
इसलिये बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान
के पीछे चलने लगी हैं।

16यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं तो
उसे उनकी सहायता स्वयं करनी चाहिए और कलीसिया
पर कोई भार नहीं डालना चाहिये ताकि कलीसिया सच्ची
विधवाओं की सहायता कर सके।

17जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे
दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहियें। विशेष कर वे जिनका
काम उपदेश देना और पढ़ाना है। 18क्योंकि शास्त्र में
कहा गया है, "बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह मत
बाँधो।'* तथा, "मज़दूर को अपनी मज़दूरी पाने का
अधिकार है।"*

19किसी बुज़ुर्ग पर लगाये गये किसी लांछन को तब तक
स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन गवाहियाँ न हों।
20जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने
डाँटो–फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।

21परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने
मैं सचाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना किसी पूर्वाग्रह
के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के साथ कोई काम
मत कर।

22बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया बनाने
के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी के पापों में
भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र रख।

23केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने हाज़मे
और बार बार बीमार पड़ने से बचने के लिए थोड़ा सा
दाखरस भी ले लिया कर।

24कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं और
न्याय के लिये प्रस्तुत कर दिये जाते हैं किन्तु दूसरे लोगों के
पाप बाद में प्रकट होते हैं। 25इसी प्रकार भले कार्य भी
स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट नहीं होते वे
भी छिपे नहीं रह सकते।

6 लोग जो अंधविश्वासियों के जूए के नीचे दास बने
हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य समझना
चाहिये ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेशों की
निन्दा न हो। 2और ऐसे दासों को भी जिनके स्वामी विश्वासी
हैं, बस इसलिये कि वे उनके धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम
सम्मान नहीं दिखाना चाहिये, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों
की और अधिक सेवा करनी चाहिये क्योंकि जिन्हें इसका
लाभ मिल रहा है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते
रहो। 3यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे

बैल ... बाँधो व्यवस्था. 25:4
मजदूर ... है लूका 10:7

प्रभु यीशु मसीह के उन सद्वचनों को नहीं मानता है तथा
भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है 4तो वह अहंकार
में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह तो कुतर्क
करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग से घिरा है।
इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा–भाव तथा गाली–गलौज
5एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि बिगड़ गयी है, निरन्तर
बने रहने वाले मतभेद पैदा होते हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे
लोगों का विचार है कि परमेश्वर की सेवा धन कमाने का
ही एक साधन है।

6निश्चय ही परमेश्वर की सेवा–भक्ति से ही व्यक्ति
सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। 7क्योंकि हम
संसार में न तो कुछ लेकर आये थे और न ही यहाँ से कुछ
लेकर जा पाएँगे। 8सो यदि हमारे पास रोटी और कपड़ा है
तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। 9किन्तु वे जो धनवान बनना
चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में फँस जाते हैं तथा
उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और विनाशकारी इच्छाएँ घेर
लेती हैं जो लोगों को पतन और विनाश की खाई में ढकेल
देती हैं। 10क्योंकि धन का प्रेम हर प्रकार की बुराई को
जन्म देता है। कुछ लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही
विश्वास से भटक गये हैं और उन्होंने अपने लिये महान
दुख की सृष्टि कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

11किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह
तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य और
सज्जनता में लगा रह। 12हमारा विश्वास जिस उत्तम
स्पर्द्धा की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिये संघर्ष करता
रह और अपने लिये अनन्त जीवन को अर्जित कर ले।
तुझे उसी के लिये बुलाया गया है। तूने बहुत से साक्षियों
के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है। 13परमेश्वर
के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा यीशु मसीह के
सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सामने बहुत अच्छी
साक्षी दी थी, मैं तुझे यह आदेश देता हूँ कि 14जब तक
हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है, तब तक तुझे जो
आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना कोई कमी छोड़े
हुए निर्दोष भाव से चलता रह। 15वह उस परम धन्य,
एक छत्र, राजाओं के राजा और सम्राटों के प्रभु को
उचित समय आने पर प्रकट कर देगा। 16वह अगम्य प्रकाश
का निवासी है। उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख
सकता है। उसका सम्मान और उसकी अनन्त शक्ति का
विस्तार होता रहे। आमीन।

17वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान बने
हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें। अथवा उस
धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न रखें। परमेश्वर
पर ही अपनी आशा टिकायें जो हमें हमारे आनन्द के लिये
सब कुछ भरपूर देता है। 18उन्हें आज्ञा दे कि वे अच्छे–अच्छे
काम करें। उत्तम कामों से ही धनी बनें। उदार रहें और
दूसरों के साथ अपनी वस्तुएँ बाँटें। 19ऐसा करने से ही वे
एक स्वर्गीय कोष का संचय करेंगे जो भविष्य के लिये
सुदृढ़ नींव सिद्ध होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे
रहेंगे।

20तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षा कर।
व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो "मिथ्या
ज्ञान" से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास हैं, उनसे दूर
रह क्योंकि 21कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए विश्वास
से डिग गये हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

2 तीमुथियुस

तिमुथियुस के नाम

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है और जिसे यीशु मसीह में जीवन पाने की प्रतिज्ञा का प्रचार करने के लिये भेजा गया है:

[2]प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुझे करुणा, अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

[3]रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुम्हारी याद करते हुए, मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और उसकी सेवा अपने पूर्वजों की रीति के अनुसार शुद्ध मन से करता हूँ। [4]मेरे लिये तुमने जो आँसू बहाये हैं, उनकी याद करके मैं तुमसे मिलने को आतुर हूँ, ताकि आनन्द से भर उठूँ। [5]मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है जो पहले तेरी नानी लोईस और तेरी माँ यूनीके में था। मुझे भरोसा है कि वही विश्वास तुझमें भी है। [6]इसीलिये मैं तुझे याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर के बरदान की उस ज्वाला को जलाये रख जो तुझे तब प्राप्त हुई थी जब तुझ पर मैंने अपना हाथ रखा था। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।

[8]इसलिये तू हमारे प्रभु या मेरी जो उसके लिये बंदी बना हुआ है, साक्षी देने से लजा मत। बल्कि तुझे परमेश्वर ने जो शक्ति दी है, उससे सुसमाचार के लिये यातनाएँ झेलने में मेरा साथ दे। [9]उसी ने हमारी रक्षा की है और पवित्र जीवन के लिये हमें बुलाया है–हमारे अपने किये कमो5 के आधार पर नहीं, बल्कि उसके अपने उस प्रयोजन और अनुग्रह के अनुसार जो परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में हमें पहले ही अनादि काल से सौंप दिया गया है। [10]किन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने के साथ–साथ हमारे लिये प्रकाशित किया गया है। उसने मृत्यु का अंत कर दिया तथा जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशित किया है। [11]इसी सुसमाचार को फैलाने के लिये मुझे एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। [12]और यही कारण है जिससे मैं इन बातों का दुख उठा रहा हूँ। और फिर भी लज्जित नहीं हूँ क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं उसे जानता हूँ और मैं यह मानता हूँ कि उसने मुझे जो सौंपा है, वह उसकी रक्षा करने में समर्थ है जब तक वह दिन* आये, [13]उस उत्तम शिक्षा को जिसे तूने मुझसे यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले विश्वास और प्रेम के साथ सुना है तू जो सिखाता है उसका आदर्श वही उत्तम शिक्षा है। [14]हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा के द्वारा तू उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर जिसे तुझे सौंपा गया है।

[15]जैसा कि तू जानता है कि वे सभी जो एशिया में रहते हैं, मुझे छोड़ गये हैं। फुगिलुस और हिरमुगिनेस उन्हीं में से हैं। [16]उनेसिफिरुस के परिवार पर प्रभु अनुग्रह करे। क्योंकि उसने अनेक अवसरों पर मुझे सुख पहुँचाया है। तथा वह मेरे जेल में रहने से लज्जित नहीं हुआ है। [17]बल्कि वह तो जब रोम आया था, जब तक मुझसे मिल नहीं लिया, यत्नपूर्वक मुझे ढूँढता रहा। [18]प्रभु करे उसे, उस दिन प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो, उसने इफिसुस में मेरी तरह तरह से जो सेवाएँ की हैं तू उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।

मसीह यीशु का सच्चा सिपाही

2 जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरे पुत्र, यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से सुदृढ़ हो जा। [2]बहुत से

वह दिन अर्थात् वह दिन जब सभी लोगों का न्याय करने के लिए यीशु मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

लोगों की साक्षी में मुझसे तूने जो कुछ सुना है, उसे उन
विश्वास करने योग्य व्यक्तियों को सौंप दे जो दूसरों को भी
शिक्षा देने में समर्थ हों। 3यातनाएँ झेलने में मसीह यीशु के
एक उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ आ मिल। 4ऐसा कोई
भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको
साधारण जीवन के जंजाल में नहीं फँसाता क्योंकि वह
अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिये यत्नशील
रहता है। 5और ऐसे ही यदि कोई किसी दौड़ प्रतियोगिता में
भाग लेता है, तो उसे विजय का मुकुट उस समय तक नहीं
मिलता, जब तक कि वह नियमों का पालन करते हुए
प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता। 6परिश्रमी कामगार किसान
ही उपज का सबसे पहला भाग पाने का अधिकारी है। 7मैं
जो बताता हूँ, उस पर विचार कर। प्रभु तुझे सब कुछ
समझने की क्षमता प्रदान करेगा।

8यीशु मसीह का स्मरण करते रहो जो मरे हुओं में से
पुनर्जीवित हो उठा है और जो दाऊद का वंशज है। यही
उस सुसमाचार का सार है जिसका मैं उपदेश देता हूँ 9इसी
के लिये मैं यातनाएँ झेलता हूँ। यहाँ तक कि एक अपराधी
के समान मुझे ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया है। किन्तु परमेश्वर
का वचन तो बंधन रहित है। 10इसी कारण परमेश्वर के
चुने हुए लोगों के लिये मैं हर दुःख उठाता रहता हूँ ताकि वे
भी मसीह यीशु में प्राप्त होने वाले उद्धार को अनन्त महिमा
के साथ प्राप्त कर सकें।

11यह वचन विश्वास के योग्य है कि:

यदि हम उसके साथ मरे हैं,
तो उस ही के साथ जीयेंगे,
12 यदि दुःख उठाये हैं
तो उसके साथ शासन भी करेंगे।
यदि हम उसको छोड़ तजेंगे,
तो वह भी हमको तज देगा,
13 हम चाहे विश्वास हीन हों
पर वह सदा सर्वदा विश्वसनीय रहेगा
क्योंकि नहीं हो सकता है
वह आत्म निषेधी,
अपने ही प्रति, मिथ्या वादी।

स्वीकृत कार्यकर्त्ता

14लोगों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहो और
परमेश्वर को साक्षी करके उन्हें सावधान करते रहो कि
वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें। ऐसे लड़ाई झगड़ों
से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि इन्हें जो सुनते हैं, वे भी
नष्ट हो जाते हैं। 15अपने आप को परमेश्वर द्वारा ग्रहण
करने योग्य बनाकर एक ऐसे सेवक के रूप में प्रस्तुत
करने का यत्न करते रहो जिससे किसी बात के लिये
लज्जित होने की आवश्यकता न हो। और जो परमेश्वर
के सत्य वचन का सही ढंग से उपयोग करता है। 16और
सांसारिक वाद विवादों तथा व्यर्थ की बातों से बचा रहता
है। क्योंकि ये बातें लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।
17ऐसे लोगों की शिक्षाएँ नासूर की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस
और फिलेतुस ऐसे ही हैं। 18जो सचाई के बिन्दु से भटक
गये हैं। उनका कहना है कि पुनरुत्थान तो अब तक हो
भी चुका है। ये कुछ लोगों के विश्वास को नष्ट कर रहे
हैं। 19कुछ भी हो परमेश्वर ने जिस सुदृढ़ नींव को डाला
है, वह दृढ़ता के साथ खड़ी है। उस पर अंकित है, "प्रभु
अपने भक्तों को जानता है।"* और "वह हर एक, जो
कहता है कि वह प्रभु का है, उसे बुराइयों से बचे रहना
चाहिये।"

20एक बड़े घर में बस सोने–चाँदी के ही पात्र तो नहीं
होते हैं, उसमें लकड़ी और मिट्टी के बरतन भी होते हैं।
कुछ विशेष उपयोग के लिए होते हैं और कुछ साधारण
उपयोग के लिये। 21इसलिये यदि व्यक्ति अपने आपको
बुराइयों से शुद्ध कर लेता है तो वह विशेष उपयोग का
बनेगा और फिर पवित्र बन कर अपने स्वामी के लिये
उपयोगी सिद्ध होगा। और किसी भी उत्तम कार्य के लिए
तत्पर रहेगा।

22जवानी की बुरी इच्छाओं से दूर रहो धार्मिक जीवन,
विश्वास, प्रेम और शांति के लिये उन सब के साथ जो
शुद्ध मन से प्रभु का नाम पुकारते हैं, प्रयत्नशील रहो।
23मूर्खतापूर्ण, बेकार के तर्क वितर्कों से सदा बचे रहो।
क्योंकि तुम जानते ही हो कि इनसे लड़ाई–झगड़े पैदा
होते हैं। 24और प्रभु के सेवक को तो झगड़ना ही नहीं
चाहिये। उसे तो सब पर दया करनी चाहिये। उसे शिक्षा
देने में योग्य होना चाहिये। उसे सहनशील होना चाहिये।
25उसे अपने विरोधियों को भी इस आशा के साथ कि
परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव करने की शक्ति देगा,
विनम्रता के साथ समझाना चाहिये। ताकि उन्हें भी सत्य
का ज्ञान हो जाये 26और वे सचेत हो कर शैतान के उस

"प्रभु ... है" गिनती 16:5

फन्दे से बच निकलें जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा है ताकि वे परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर सकें।

अंतिम दिनों में

3 याद रखो अंतिम दिनों में हम पर बहुत बुरा समय आयेगा। [2]लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्दण्ड, परमेश्वर के निन्दक, माता–पिता की अवहेलना करने वाले, निर्दय, अपवित्र, [3]प्रेम रहित, क्षमा–हीन, निन्दक, असंयमी, बर्बर, जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, [4]विश्वासघाती, अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर–प्रेमी होने की अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे। [5]वे धर्म के दिखावटी रूप का पालन तो करेंगे किन्तु उसकी भीतरी शक्ति को नकार देंगे। उनसे सदा दूर रहो। [6]क्योंकि इनमें से कुछ ऐसे हैं जो घरों में घुस पैठ करके पापी, दुर्बल इच्छा शक्ति की पापपूर्ण हर प्रकार की इच्छाओं से चलायमान स्त्रियों को वश में कर लेते हैं। [7]ये स्त्रियाँ सीखने का जतन तो सदा करती रहती हैं, किन्तु सत्य के सम्पूर्ण ज्ञान तक वे कभी नहीं पहुँच पातीं। [8]यन्नेस और यम्ब्रेस ने जैसे मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग सत्य के विरोधी हैं। इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट है और विश्वास का अनुसरण करने में ये असफल हैं। [9]किन्तु ये और अधिक आगे नहीं बढ़ पायेंगे क्योंकि जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस की मूर्खता प्रकट हो गयी थी, वैसे ही इनकी मूर्खता भी सबके सामने उजागर हो जायेगी।

अंतिम आदेश

[10]कुछ भी हो, तूने मेरी शिक्षा का पालन किया है। मेरी जीवन–पद्धति, मेरे जीवन के उद्देश्य, मेरे विश्वास, मेरी सहनशीलता, मेरे प्रेम, मेरे धैर्य [11]मेरी उन यातनाओं और पीड़ाओं में मेरा साथ दिया है तुम तो जानते ही हो कि अंताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझे कितनी भयानक यातनाएँ दी गयी थीं जिन्हें मैंने सहा था। किन्तु प्रभु ने उन सबसे मेरी रक्षा की। [12]वास्तव में परमेश्वर की सेवा में जो नेकी के साथ जीना चाहते हैं, सताये ही जायेंगे। [13]किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते हुए तथा स्वयं छले जाते हुए बुरे से बुरे होते चले जायेंगे।

[14]किन्तु तुमने जिन बातों को सीखा और माना है, उन्हें करते जाओ। तुम जानते हो कि उन बातों को तुमने किनसे सीखा है। [15]और तुझे पता है कि तू बचपन से ही पवित्र शास्त्रों को भी जानता है। वे तुझे उस विवेक को दे सकते हैं जिससे मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा छुटकारा मिल सकता है। [16]सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। वह लोगों को सत्य की शिक्षा देने, उनको सुधारने, उन्हें उनकी बुराइयाँ दर्शाने और धार्मिक जीवन के प्रशिक्षण में उपयोगी है। [17]जिससे परमेश्वर का प्रत्येक सेवक शास्त्रों का प्रयोग करते हुए हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये समर्थ और साधन सम्पन्न होगा।

4 परमेश्वर को साक्षी करके और मसीह यीशु को अपनी साक्षी बना कर जो सभी जीवितों और जो मर चुके हैं, उनका न्याय करने वाला है, और क्योंकि उसका पुन: आगमन तथा उसका राज्य निकट है, मैं तुझे शपथ पूर्वक आदेश देता हूँ: [2]सुसमाचार का प्रचार कर। चाहे तुझे सुविधा हो चाहे असुविधा, अपना कर्तव्य करने को तैयार रह। लोगों को क्या करना चाहिये, उन्हें समझा। जब वे कोई बुरा काम करें, उन्हें चेतावनी दे। लोगों को धैर्य के साथ समझाते हुए प्रोत्साहित कर। [3]मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि एक समय ऐसा आयेगा जब लोग उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं चाहेंगे। वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल अपने लिए बहुत से गुरु इकट्ठे कर लेंगे, जो वही सुनाएँगे जो वे सुनना चाहते हैं। [4]वे अपने कानों को सत्य से फेर लेंगे और कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे। [5]किन्तु तू निश्चयपूर्वक हर परिस्थिति में अपने पर नियन्त्रण रख, यातनाएँ झेल और सुसमाचार के प्रचार का काम कर। जो सेवा तुझे सौंपी गयी है, उसे पूरा कर।

[6]जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अब अर्घ के समान उँडेला जाने पर हूँ। और मेरा तो इस जीवन से विदा लेने का समय भी आ पहुँचा है। [7]मैं उत्तम प्रतिस्पर्द्धा में लगा रहा हूँ। मैं अपनी दौड़ दौड़ चुका हूँ। मैंने विश्वास के पन्थ की रक्षा की है। [8]अब विजय मुकुट मेरी प्रतीक्षा में है। जो धार्मिक जीवन के लिये मिलना है। उस दिन न्यायकर्ता प्रभु मुझे विजय मुकुट पहनायेगा। न केवल मुझे, बल्कि उन सब को जो प्रेम के साथ उसके प्रकट होने की बाट जोहते रहे हैं।

निजी संदेश

[9]मुझसे जितना शीघ्र हो सके, मिलने आने का पूरा प्रयत्न करना। [10]क्योंकि इस जगत के मोह में पड़ कर

देमास ने मुझे त्याग दिया है और वह थिस्सलुनी के चला
गया है। क्रेस कैंस गलातिया को तथा तीतुस दलमतिया को
चला गया है। 11केवल लूका ही मेरे पास है। मरकुस के
पास जाना और जब तू आये, उसे अपने साथ ले आना
क्योंकि मेरे काम में वह मेरा सहायक हो सकता है।
12तिखिकुस को मैं इफिसुस भेज रहा हूँ।

13जब तू आये, तो उस कोट को, जिसे मैं त्रोआस में
करपुस के घर छोड़ आया था, ले आना। मेरी पुस्तकों,
विशेष कर चर्म–पत्रों को भी ले आना।

14ताम्रकार सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। उसने
जैसा किया है, प्रभु उसे वैसा ही फल देगा। 15तू भी उस से
सचेत रहना क्योंकि वह हमारे उपदेश का घोर विरोध
करता रहा है।

16प्रारम्भ में जब मैं अपना बचाव प्रस्तुत करने लगा
तो मेरे पक्ष में कोई सामने नहीं आया। बल्कि उन्होंने
तो मुझे अकेला छोड़ दिया था। परमेश्वर करे उन्हें
इसका हिसाब न देना पड़े। 17मेरे पक्ष में तो प्रभु ने खड़े
होकर मुझे शक्ति दी। ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का
भरपूर प्रचार हो सके, जिसे सभी ग़ैर यहूदी सुन पायें। सिंह
के मुँह से मुझे बचा लिया गया है। 18किसी भी पापपूर्ण
हमले से प्रभु मुझे बचायेगा और अपने स्वर्गीय राज्य में
सुरक्षा पूर्वक ले जायेगा। उसकी महिमा सदा सदा होती
रहे। आमीन।

पत्र का समापन

19प्रिसकिल्ला, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार
को नमस्कार कहना। 20इरास्तुस कुरिन्थुस में ठहर गया
है। मैंने त्रुफिमुस को उसकी बीमारी के कारण मिलेतुस में
छोड़ दिया है।

21जाड़ों से पहले आने का जतन करना। यूबुलुस, पूदेंस,
लिनुस तथा क्लौदिया तथा और सभी भाइयों का तुझे
नमस्कार पहुँचे।

22प्रभु तेरे साथ रहे। तुम सब पर प्रभु का अनुग्रह हो।

तीतुस

1 पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों
को उनके विश्वास में सहायता देने के लिये और
हमारे धर्म की सचाई के सम्पूर्ण ज्ञान की रहनुमाई के लिए
भेजा गया है; 2वह मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ कि परमेश्वर
के चुने हुओं को अनन्त जीवन की आस बँधे। परमेश्वर
ने, जो कभी झूठ नहीं बोलता, अनादि काल से अनन्त
जीवन का वचन दिया है। 3उचित समय पर परमेश्वर ने
अपने सुसन्देश को उपदेशों के द्वारा प्रकट किया। वही
सुसन्देश हमारे उद्धार कर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा से मुझे
सौंपा गया है।

4हमारे समान विश्वास में मेरे सच्चे पुत्र तीतुस को:
हमारे परमपिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह यीशु
की ओर से अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

क्रेते में तीतुस का कार्य

5मैंने तुझे क्रेते में इसलिये छोड़ा था कि वहाँ जो कुछ
अधूरा रह गया है, तू उसे ठीक ठाक कर दे और मेरे
आदेश के अनुसार हर नगर में बुजुर्गों को नियुक्त करे।
6उसे नियुक्त तभी किया जाये जब वह निर्दोष हो। एक
पत्नी व्रती हो। उसके बच्चे विश्वासी हों और
अनुशासनहीनता का दोष उन पर न लगाया जा सके।
तथा वे निरंकुश भी न हों। 7निरीक्षक को निर्दोष तथा
किसी भी बुराई से अछूता होना चाहिये। क्योंकि जिसे
परमेश्वर का काम सौंपा गया है, उसे अड़ियल, चिड़चिड़ा
और दाखमधु पीने में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए। उसे
झगड़ालू, नीच कमाई का लोलुप नहीं होना चाहिये 8बल्कि
उसे तो अतिथियों की आवभगत करने वाला, नेकी को
चाहने वाला, विवेक-पूर्ण, धर्मी, भक्त, तथा अपने पर
नियंत्रण रखने वाला होना चाहिये। 9उसे उस विश्वास
करने योग्य संदेश को दृढ़ता से धारण किये रहना चाहिये
जिसकी उसे शिक्षा दी गयी है, ताकि वह लोगों को
सद्शिक्षा देकर उन्हें प्रबोधित कर सके। तथा जो इसके
विरोधी हों, उनका खण्डन कर सके।

10यह इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग
विद्रोही हो कर व्यर्थ की बातें बनाते हुए दूसरों को भटकाते
हैं। मैं विशेष रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के लोगों का उल्लेख
कर रहा हूँ। 11उनका तो मुँह बन्द किया ही जाना चाहिये।
क्योंकि वे जो बातें नहीं सिखाने की हैं, उन्हें सिखाते हुए
घर के घर बिगाड़ रहे हैं। बुरे रास्तों से धन कमाने के
लिये ही वे ऐसा करते हैं। 12एक क्रेते के निवासी ने अपने
लोगों के बारे में स्वयं कहा है: "क्रेते के निवासी सदा झूठ
बोलते हैं, वे जंगली पशु हैं, वे आलसी हैं, पेटू हैं।"
13यह कथन सत्य है, इसीलिये उन्हें बलपूर्वक डाँटो-
फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का हो सके। 14यहूदियों
के पुराने वृत्तान्तों पर और उन लोगों के आदेशों पर, जो
सत्य से भटक गये हैं, कोई ध्यान मत दो। 15पवित्र लोगों
के लिये सब कुछ पवित्र है, किन्तु अशुद्ध और जिन में
विश्वास नहीं है, उनके लिये कुछ भी पवित्र नहीं है। 16वे
परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं। किन्तु उनके
कर्म दर्शाते हैं कि वे उसे जानते ही नहीं। वे घृणित और
आज्ञा का उल्लंघन करने वाले हैं। तथा किसी भी अच्छे
काम को करने में वे असमर्थ हैं।

सच्ची शिक्षा का अनुसरण

2 किन्तु तुम सदा ऐसी बातें बोला करो जो सदशिक्षा के
अनुकूल हों। 2वृद्ध पुरुषों को शिक्षा दो कि वे शालीन
और अपने पर नियन्त्रण रखने वाले बनें। वे गंभीर, विवेकी,
प्रेम और विश्वास में दृढ़ और धैर्यपूर्वक सहनशील हों।

3इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं को सिखाओ कि वे
पवित्रजनों के योग्य उत्तम व्यवहार वाली बनें। निन्दक न
बनें तथा बहुत अधिक दाखमधु पान की लत उन्हें न हो।
वे अच्छी अच्छी बातें सिखाने वाली बनें 4ताकि युवतियों

को अपने–अपने बच्चों और पतियों से प्रेम करने की सीख
दे सकें। 5जिससे वे संयमी, पवित्र, अपने–अपने घरों की
देखभाल करने वाली, दयालु, अपने पतियों की आज्ञा मानने
वाली बनें जिससे परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो।

6इसी तरह युवकों को सिखाते रहो कि वे संयमी बनें।
7तुम अपने आप को हर बात में आदर्श बना कर दिखाओ।
तेरा उपदेश शुद्ध और गम्भीर होना चाहिये। 8ऐसी सद्वाणी
का प्रयोग करो, जिसकी आलोचना न की जा सके ताकि
तेरे विरोधी लज्जित हों क्योंकि उनके पास तेरे विरोध में
बुरा कहने को कुछ नहीं होगा।

9दासों को सिखाओ कि वे हर बात में अपने स्वामियों
की आज्ञा का पालन करें। उन्हें प्रसन्न करते रहें। उलट
कर बात न बोलें। 10चोरी चालाकी न करें। बल्कि सम्पूर्ण
विश्वसनीयता का प्रदर्शन करें। ताकि हमारे मुक्तिदाता
परमेश्वर के उपदेश की हर प्रकार से शोभा बढ़े।

11क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों के उद्धार
के लिए प्रकट हुआ है। 12इससे हमें सीख मिलती है कि हम
परमेश्वर विहीनता को नकारें और सांसारिक इच्छाओं
का निषेध करते हुए ऐसा जीवन जीयें जो विवेकपूर्ण नेक,
भक्ति से भरपूर और पवित्र हो। आज के इस संसार में
13आशा के उस धन्य दिन की प्रतीक्षा करते रहें जब हमारे
परम परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा
प्रकट होगी। 14उसने हमारे लिये अपने आपको दे डाला।
ताकि वह सभी प्रकार की दुष्टताओं से हमें बचा सके और
अपने चुने हुए लोगों के रूप में अपने लिये हमें शुद्ध कर
ले–हमें, जो उत्तम कर्म करने को लालायित हैं।

15इन बातों को पूरे अधिकार के साथ कह और समझाता
रह, उत्साहित करता रह और विरोधियों को झिड़कता
रह। ताकि कोई तेरी अनसुनी न कर सके।

जीवन की उत्तम रीति

3 लोगों को याद दिलाता रह कि वे राजाओं और
अधिकारियों के अधीन रहें। उनकी आज्ञा का पालन
करें। हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये तैयार
रहें। 2किसी की निन्दा न करें। शांति–प्रिय और सज्जन
बनें। सब लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें।

3यह मैं इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि हम भी, एक समय
था, जब मूर्ख थे। आज्ञा का उल्लंघन करते थे। भ्रम में पड़े
थे। तथा वासनाओं एवम् हर प्रकार के सुख–भोग के दास
बने थे। हम दुष्टता और ईर्ष्या में अपना जीवन जीते थे। हम
से लोग घृणा करते थे तथा हम भी परस्पर एक दूसरे को
घृणा करते थे। 4किन्तु जब हमारे उद्धार कर्ता परमेश्वर
की मानवता के प्रति करुणा और प्रेम प्रकट हुए 5उसने
हमारा उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के
लिये हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ
बल्कि उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस
स्नान के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते है और पवित्र
आत्मा के द्वारा नये बनाये जाते हैं। 6उसने हम पर पवित्र
आत्मा को हमारे उद्धार कर्ता यीशु मसीह के द्वारा भरपूर
उँडेला है। 7अब परमेश्वर ने हमें अपनी अनुग्रह के द्वारा
निर्दोष ठहराया है ताकि जिसकी हम आशा कर रहे थे
उस अनन्त जीवन के उत्तराधिकार को पा सकें। 8यह
कथन विश्वास करने योग्य है और मैं चाहता हूँ कि तुम
इन बातों पर डटे रहो ताकि वे जो परमेश्वर में विश्वास
करते हैं, अच्छे कर्मों में ही लगे रहें। ये बातें लोगों के लिए
उत्तम और हितकारी हैं।

9वंशावलि सम्बन्धी विवादों, व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों
झमेलों और मूर्खतापूर्ण मतभेदों से बचा रह क्योंकि उनसे
कोई लाभ नहीं, वे व्यर्थ हैं। 10जो व्यक्ति फूट डालता हो,
उससे एक या दो बार चेतावनी देकर अलग हो जाओ।
11क्योंकि तुम जानते हो कि ऐसा व्यक्ति मार्ग से भटक गया
है और पाप कर रहा है। उसने तो स्वयं अपने को दोषी
ठहराया है।

याद रखने की कुछ बातें

12मैं तुम्हारे पास जब अरतिमास या तुखिकुस को भेजूँ
तो मेरे पास निकुपुलिस आने का भरपूर जतन करना
क्योंकि मैंने वहीं सर्दियाँ बिताने का निश्चय कर रखा है।
13वकील जेनास और अप्पुलोस को उनकी यात्रा के लिये
जो कुछ आवश्यक हो, उसके लिये तुम भरपूर सहायता
जुटा देना ताकि उन्हें किसी बात की कोई कमी न रहे।
14हमारे लोगों को भी सत्कर्मों में लगे रहना सीखना चाहिये।
उनमें से भी जिनको अत्यधिक आवश्यकता हो, उसको
पूरी करना ताकि वे विफल न हों।

15जो मेरे साथ हैं, उन सब का तुम्हें नमस्कार। हमारे
विश्वास के कारण जो लोग हमसे प्रेम करते हैं, उन्हें भी
नमस्कार।

परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे।

फिलेमोन

यीशु मसीह के लिये बंदी बने पौलुस तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से: हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन, [2]हमारी बहन अफफ़िया, हमारे साथी सैनिक अरखिप्पुस तथा तुम्हारे घर पर एकत्रित होने वाली कलीसिया को:

[3]हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

[4]अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए मैं सदा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। [5]क्योंकि मैं संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास के विषय में सुनता रहता हूँ। [6]मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न उदार सहभागिता लोगों का मार्ग दर्शन करे। जिससे उन्हें उन सभी उत्तम वस्तुओं का ज्ञान हो जाये जो मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में हमारे बीच घटित हो रही हैं। [7]हे भाई, तेरे प्रयत्नों से संत जनों के हृदय हरे–भरे हो गये हैं, इसलिये तेरे प्रेम से मुझे बहुत आनन्द मिला है।

उनेसिमुस को भाई स्वीकारो

[8]इसलिये कि मसीह में मुझे तुम्हारे कर्त्तव्यों के लिये आदेश देने का अधिकार है [9]किन्तु प्रेम के आधार पर मैं तुमसे निवेदन करना ही ठीक समझता हूँ। मैं पौलुस जो अब बूढ़ा हो चला है और मसीह यीशु के लिये अब बंदी भी बना हुआ है, [10]उस उनेसिमुस के बारे में निवेदन कर रहा हूँ जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था,ज़ब मैं बंदीगृह में था। [11]एक समय था जब वह तेरे किसी काम का नहीं था, किन्तु अब न केवल तेरे लिए बल्कि मेरे लिये भी वह बहुत काम का है।

[12]मैं उसे फिर तेरे पास भेज रहा हूँ (बल्कि मुझे तो कहना चाहिये अपने हृदय को ही तेरे पास भेज रहा हूँ।) [13]मैं उसे यहाँ अपने पास ही रखना चाहता था, ताकि सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की वह तेरी ओर से सेवा कर सके। [14]किन्तु तेरी अनुमति के बिना मैं कुछ भी करना नहीं चाहता ताकि तेरा कोई उत्तम कर्म किसी विवशता से नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छा से ही हो।

[15]हो सकता है कि उसे थोड़े समय के लिये तुझसे दूर करने का कारण यही हो कि तू उसे फिर सदा के लिए पा ले। [16]दास के रूप में नहीं, बल्कि दास से अधिक एक प्रिय बन्धु के रूप में। मैं उस से बहुत प्रेम करता हूँ किन्तु तू उसे और अधिक प्रेम करेगा। केवल एक मनुष्य के रूप में ही नहीं बल्कि प्रभु में स्थित एक बन्धु के रूप में भी।

[17]सो यदि तू मुझे अपने साझीदार के रूप में समझता है तो उसे भी मेरी तरह ही समझ। [18]और यदि उसने तेरा कुछ बुरा किया है या उसे तेरा कुछ देना है तो उसे मेरे खाते में डाल दे। [19]मैं पौलुस स्वयं अपने हस्ताक्षरों से यह लिख रहा हूँ। उसकी भरपाई तुझे मैं करूँगा। (मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि तू तो अपने जीवन तक के लिए मेरा ऋणी है।) [20]हाँ भाई, मुझे तुझसे यीशु मसीह में यह लाभ प्राप्त हो कि मेरे हृदय को चैन मिले। [21]तुझ पर विश्वास रखते हुए यह पत्र मैं तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुझसे मैं जितना कह रहा हूँ, तू उससे कहीं अधिक करेगा।

[22]मेरे लिये निवास का प्रबन्ध करते रहना क्योंकि मेरा विश्वास है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मुझे सुरक्षित रुप से तुम्हें सौंप दिया जायेगा।

पत्र का समापन

[23]यीशु मसीह में स्थित मेरे साथी बंदी इपफ्रास का तुम्हें नमस्कार। [24]मेरे साथी कार्यकर्ता, मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का तुम्हें नमस्कार पहुँचे।

[25]तुम सब पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह बना रहे।

इब्रानियों

परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलता है

1 परमेश्वर ने अतीत में नबियों के द्वारा अनेक अवसरों
पर अनेक प्रकार से हमारे पूर्वजों से बातचीत की।
2किन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के माध्यम
से बातचीत की, जिसे उसने सब कुछ का उत्तराधिकारी
नियुक्त किया है और जिसके द्वारा उसने समूचे ब्रह्माण्ड की
रचना की है। 3वह पुत्र परमेश्वर की महिमा का तेज–मंडल
है तथा उसके स्वरूप का यथावत प्रतिनिधि। वह अपने
समर्थ वचन के द्वारा सब वस्तुओं की स्थिति बनाये रखता
है। सबको पापों से मुक्त करने का विधान करके वह स्वर्ग
में उस महामहिम के दाहिने हाथ बैठ गया। 4इस प्रकार वह
स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम बन गया जितना कि उनके
नामों से वह नाम उत्तम है जो उसने उत्तराधिकार में पाया
है।

5क्योंकि परमेश्वर ने किसी भी स्वर्गदूत से कभी ऐसा
नहीं कहा:

"तू मेरा पुत्र;
आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ।"

भजन संहिता 2:7

और न हीं किसी स्वर्गदूत से उसने यह कहा है,

"मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।"

2 शमूएल 7:14

6और फिर वह जब अपनी प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण संतान को
संसार में भेजता है तो कहता है,

"परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसका नमन करें।"

व्यवस्था विवरण 32:43

7स्वर्गदूत के विषय में बताते हुए वह कहता है:

"उसने अपने सब स्वर्गदूत को पवन बनाये
और अपने सेवक आग की लपट बनाये।"

भजन संहिता 104:4

8किन्तु अपने पुत्र के विषय में वह कहता है:

"हे परमेश्वर! तेरा सिंहासन शाश्वत है,
तेरा राजदण्ड धार्मिकता है;
9 तुझको धार्मिकता ही प्रिय है,
तुझको घृणा पापों से रही
सो परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तुझको चुना है,
और उस आदर का आनन्द दिया।
तुझको तेरे साथियों से कहीं अधिक दिया।

भजन संहिता 45:6–7

10वह यह भी कहता है,

"हे प्रभु, जब सृष्टि का जन्म हो रहा था,
तूने धरती की नींव धरी।
और ये सारे स्वर्ग तेरे हाथ का कतृत्व हैं।
11 ये नष्ट हो जायेंगे पर तू चिरन्तन रहेगा,
ये सब वस्त्र से फट जायेंगे।
12 और तू परिधान सा उनको लपेटेगा।
वे फिर वस्त्र जैसे बदल जायेंगे।
किन्तु तू यूँ ही, यथावत रहेगा ही,
तेरे काल का अंत युग युग न होगा।"

भजन संहिता 102: 25–27

13परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से ऐसा नहीं कहा:

"तू मेरे दाहिने बैठ जा
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को,
तेरे चरण तल की चौकी न बना दूँ।"

भजन संहिता 110:1

14क्या सभी स्वर्गदूत उद्धार पाने वालों की सेवा के लिये
भेजी गयी सहायक आत्माएँ नहीं हैं?

सावधान रहने को चेतावनी

2 इसीलिये हमें और अधिक सावधानी के साथ, जो
कुछ हमने सुना है, उस पर ध्यान देना चाहिये
ताकि हम भटकने न पायें। 2क्योंकि यदि स्वर्गदूतों द्वारा
दिया गया संदेश प्रभावशाली था तथा उसके प्रत्येक
उल्लंघन और अवज्ञा के लिए उचित दण्ड दिया गया तो
यदि हम ऐसे महान् उद्धार की उपेक्षा कर देते हैं 3तो
हम कैसे बच पायेंगे। इस उद्धार की पहली घोषणा प्रभु
के द्वारा की गयी थी। और फिर जिन्होंने इसे सुना था,
उन्होंने हमारे लिये इसकी पुष्टि की। 4परमेश्वर ने भी
चिह्नों, आश्चर्यो तथा तरह–तरह के चमत्कारपूर्ण
कर्मों तथा पवित्र आत्मा के उन उपहारों द्वारा, जो
उसकी इच्छा के अनुसार बाँटे गये थे, इसे प्रमाणित
किया।

उद्धारकर्त्ता मसीह का मानव देह धारण

5उस भावी संसार को, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं,
उसने स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया 6बल्कि शास्त्र में
किसी स्थान पर किसी ने यह साक्षी दी है:

"मनुष्य क्या है, जो तू उसकी सुध लेता है?
पुत्र मानव का क्या है
जिसके लिए तू चिंतित है?
7 तूने स्वर्गदूतों से उसे थोड़े से
समय को किंचित कम किया।
उसके सिर महिमा और
आदर का राजमुकुट रख दिया।
8 और उसके चरणों तले उसकी अधीनता मे
सभी कुछ रख दिया।"

भजन संहिता 8:4–6

सब कुछ को उसके अधीन रखते हुए परमेश्वर ने कुछ
भी ऐसा नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो। फिर भी आजकल
हम प्रत्येक वस्तु को उसके अधीन नहीं देख रहे हैं। 9किन्तु
हम यह देखते हैं कि वह यीशु जिसको थोड़े समय के लिये
स्वर्गदूतों से नीचे कर दिया गया था, अब उसे महिमा और
आदर का मुकुट पहनाया गया है क्योंकि उसने मृत्यु की
यातना झेली थी। जिससे परमेश्वर के अनुग्रह के कारण
वह प्रत्येक के लिये मृत्यु का अनुभव करे।

10अनेक पुत्रों को महिमा प्रदान करते हुए उस परमेश्वर
के लिये जिसके द्वारा और जिसके लिये सब का अस्तित्त्व
बना हुआ है, उसे यह शोभा देता है कि वह उनके छुटकारे
के विधाता को यातनाओं के द्वारा सम्पूर्ण सिद्ध करे।

11वे दोनों ही–वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता है तथा
वे जो पवित्र बनाए जाते हैं, एक ही परिवार के हैं। इसीलिए
यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जा नहीं करता। 12उसने कहा:

"मैं सभा के बीच अपने बन्धुओं में तेरे
नाम का उदघोष करूँगा।
सबके सामने मैं तेरे प्रशंसा गीत गाऊँगा।"

भजन संहिता 22:22

13और फिर,

"मैं उसका विश्वास करूँगा।"

यशायाह 8:17

और फिर वह कहता है:

"मैं यहाँ हूँ।
और वे संतान जो मेरे साथ हैं।
जिनको मुझे परमेश्वर ने दिया है।"

यशायाह 8:18

14क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसीलिये वह
भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि अपनी
मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट कर सके
जिसके पास मारने की शक्ति है। 15और उन व्यक्तियों को
मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु के प्रति अपने भय
के कारण दासता में बीता है। 16क्योंकि यह निश्चित है कि
वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि इब्राहीम के वंशजों की सहायता
करता है। 17इसीलिये उसे हर प्रकार से उसके भाइयों के
जैसा बनाया गया ताकि वह परमेश्वर की सेवा में दयालु
और विश्वसनीय महायाजक बन सके। और लोगों को
उनके पापों की क्षमा दिलाने के लिए बलि दे सके। 18क्योंकि
उसने स्वयं उस समय, जब उसकी परीक्षा ली जा रही थी,
यातनाएँ भोगी हैं। इसलिये जिनकी परीक्षा ली जा रही है,
वह उनकी सहायता करने में समर्थ है।

यीशु मूसा से महान

3 अत: स्वर्गीय बुलावे में भागीदार हे पवित्र भाइयों,
अपना ध्यान उस यीशु पर लगाये रखो जो परमेश्वर

का प्रतिनिधि तथा हमारे घोषित विश्वास के अनुसार प्रमुख याजक है। 2जैसे परमेश्वर के समूचे घराने में मूसा विश्वसनीय था, वैसे ही यीशु भी, जिसने उसे नियुक्त किया था उस परमेश्वर के प्रति, विश्वासपूर्ण था। 3जैसे भवन का निर्माण करने वाला स्वयं भवन से अधिक आदर पाता है, वैसे ही यीशु मूसा से अधिक आदर का पात्र माना गया। 4क्योंकि प्रत्येक भवन का कोई न कोई बनाने वाला होता है, किन्तु परमेश्वर तो हर वस्तु का सिरजनहार है। 5परमेश्वर के समूचे घराने में मूसा एक सेवक के समान विश्वास पात्र था, वह उन बातों का साक्षी था जो भविष्य में परमेश्वर के द्वारा कही जानी थीं। 6किन्तु परमेश्वर के घराने में मसीह तो एक पुत्र के रूप में विश्वास करने योग्य है और यदि हम अपने साहस और उस आशा में विश्वास को बनाये रखते हैं तो हम ही उसका घराना हैं।

अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी

7इसीलिए पवित्र आत्मा कहता है:

8 “आज यदि उसकी आवाज़ सुनो!
अपने हृदय जड़ मत करो।
जैसे बगावत के दिनों में किये थे।
जब मरुस्थल में परीक्षा हो रही थी।
9 मुझे तुम्हारे पूर्वजों ने परखा था, उन्होंने मेरे
धैर्य की परीक्षा ली और मेरे कार्य देखे,
जिन्हें मैं चालीस वर्षों से करता रहा!
10 वह यही हेतु था
जिससे मैं उन जनों से क्रोधित था,
और फिर मैंने कहा था,
इनके हृदय सदा भटकते रहते हैं
ये मेरे मार्ग जो जानते नहीं हैं।’
11 मैंने क्रोध में इसी से
तब शपथ ले कर कहा था,
‘ये कभी मेरी विश्रान्ति में
सम्मिलित नहीं होंगे।’”

भजन संहिता 95:7–11

12हे भाइयो, देखते रहो कहीं तुममें से किसी के मन में पाप और अविश्वास न समा जाय जो तुम्हें सजीव परमेश्वर से ही दूर भटका दे। 13जब तक यह “आज” का दिन कहलाता है, तुम प्रतिदिन परस्पर एक दूसरे का ढाँढ़स बँधाते रहो ताकि तुममें से कोई भी पाप के छलावे में पड़कर जड़ न बन जाये। 14यदि हम अंत तक दृढ़ता के साथ अपने प्रारम्भ के विश्वास को थामे रहते हैं तो हम मसीह के भागीदार बन जाते हैं। 15जैसा कि कहा भी गया है:

“यदि आज उसकी आवाज सुनो,
अपने हृदय जड़ मत करो
जैसे बगावत के दिनों में किये थे।”

भजन संहिता 95:7–8

16भला वे कौन थे जिन्होंने सुना और विद्रोह किया? क्या वे, वे ही नहीं थे जिन्हें मूसा ने मिस्र से बचा कर निकाला था? 17वह चालीस बरसों तक किन पर क्रोधित रहा? क्या उन्हीं पर नहीं जिन्होंने पाप किया था और जिनके शव मरुस्थल में पड़े रहे थे? 18परमेश्वर ने किनके लिये शपथ उठायी थी कि वे उसकी विश्रान्ति में प्रवेश नहीं कर पायेंगे? क्या वे ही नहीं थे जिन्होंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था? 19इस प्रकार हम देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण ही वहाँ प्रवेश पाने में समर्थ नहीं हो सके थे।

संतों के लिए विश्रान्ति

4 अत: जब उसकी विश्रान्ति में प्रवेश की प्रतिज्ञा अब तक बनी हुई है तो हमें सावधान रहना चाहिये कि तुममें से कोई अनुपयुक्त सिद्ध न हो। 2क्योंकि हमें भी उन्हीं के समान सुसमाचार का उपदेश दिया गया है। किन्तु जो सुसंदेश उन्होंने सुना, वह उनके लिये व्यर्थ था। क्योंकि उन्होंने जब उसे सुना तो इसे विश्वास के साथ धारण नहीं किया। 3अब देखो, हमने, जो विश्वासी हैं, उस विश्रान्ति में प्रवेश पाया है। जैसा कि परमेश्वर ने कहा भी है:

“मैंने क्रोध में इसीसे तब शपथ लेकर कहा था,
‘ये कभी मेरी विश्रान्ति में सम्मिलित नहीं होंगे।’”

भजन संहिता 95:11

जब संसार की सृष्टि करने के बाद उसका काम पूरा हो गया था। 4उसने सातवें दिन के सम्बन्ध में इन शब्दों में कहीं शास्त्रों में कहा है, “और फिर सातवें दिन अपने सभी कामों से परमेश्वर ने विश्राम लिया।” 5और फिर उपरोक्त सन्दर्भ में भी वह कहता है:“ये कभी मेरी विश्रान्ति में सम्मिलित नहीं होंगे।”*

ये कभी … होंगे उत्पत्ति 2:2

6जिन्हें पहले सुसन्देश सुनाया गया था अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण वे तो विश्रान्ति में प्रवेश नहीं पा सके किन्तु औरों के लिए विश्रान्ति का द्वार अभी भी खुला है। 7इसलिये परमेश्वर ने फिर एक विशेष दिन निश्चित किया और उसे नाम दिया "आज" कुछ वर्षों के बाद दाऊद के द्वारा परमेश्वर ने उस दिन के बारे में शास्त्र में बताया था। जिसका उल्लेख हमने अभी किया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो,
अपने हृदय जड़ मत करो।"

भजन संहिता 95:7–8

8अत: यदि यहोशू उन्हें विश्रान्ति में ले गया होता तो परमेश्वर बाद में किसी और दिन के विषय में नहीं बताता। 9तो खैर जो भी हो। परमेश्वर के भक्तों के लिये एक वैसी विश्रान्ति रहती ही है जैसी विश्रान्ति सातवें दिन परमेश्वर की थी। 10क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर की विश्रान्ति में प्रवेश करता है, अपने कर्मों से विश्राम पा जाता है। वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने कर्मों से विश्राम पा लिया। 11सो आओ हम भी उस विश्रान्ति में प्रवेश पाने के लिये प्रत्येक प्रयत्न करें ताकि उनकी अनाज्ञाकारिता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए किसी का भी पतन न हो।

12परमेश्वर का वचन तो सजीव और क्रियाशील है, वह किसी दुधारी तलवार से भी अधिक पैना है। वह आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में गहरा बेध जाता है। वह मन की वृत्तियों और विचारों को परख लेता है। 13परमेश्वर की दृष्टि से इस समूची सृष्टि में कुछ भी ओझल नहीं है। उसकी आँखों के सामने, जिसे हमें लेखा–जोखा देना है, हर वस्तु बिना किसी आवरण के उघड़ी हुई है।

महान महायाजक यीशु

14इसीलिये क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु एक ऐसा महान् महायाजक है, जो स्वर्गों में से होकर गया है तो हमें अपने अंगीकृत एवं घोषित विश्वास को दृढ़ता के साथ थामे रखना चाहिये। 15क्योंकि हमारे पास जो महायाजक है, वह ऐसा नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं के साथ सहानुभूति न रख सके। उसे हर प्रकार से वैसे ही परखा गया है जैसे हमें फिर भी वह सर्वथा पाप रहित है। 16तो फिर आओ, हम भरोसे के साथ अनुग्रह पाने परमेश्वर के सिंहासन की ओर बढ़ें ताकि आवश्यकता पड़ने पर हमारी सहायता के लिए हम दया और अनुग्रह को प्राप्त कर सकें।

5 प्रत्येक महायाजक मनुष्यों में से ही चुना जाता है। और परमात्मा सम्बन्धी विषयों में लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिये उसकी नियुक्ति की जाती है ताकि वह पापों के लिये भेंट या बलियाँ चढ़ाये। 2क्योंकि वह स्वयं भी दुर्बलताओं के अधीन है, इसलिये वह ना समझों और भटके हुओं के साथ कोमल व्यवहार कर सकता है। 3इसीलिये उसे अपने पापों के लिये और वैसे ही लोगों के पापों के लिये बलियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

4इस सम्मान को कोई भी अपने पर नहीं लेता। जब तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाता। 5इसी प्रकार मसीह ने भी महा याजक बनने की महिमा को स्वयं ग्रहण नहीं किया, बल्कि परमेश्वर ने उससे कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मै तेरा पिता बना हूँ।"

भजन संहिता 2:7

6और एक अन्य स्थान पर भी वह कहता है,

"तू एक शाश्वत याजक है,
मलिकिसिदक* के जैसा!"

भजन संहिता 110:4

7यीशु ने इस धरती पर के जीवन काल में जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, ऊँचे स्वर में पुकारते हुए और रोते हुए उससे प्रार्थनाएँ तथा विनतियाँ की थीं और आदरपूर्ण समर्पण के कारण उसकी सुनी गयी। 8यद्यपि वह उसका पुत्र था फिर भी यातनाएँ झेलते हुए उसने आज्ञा का पालन करना सीखा। 9और एक बार सम्पूर्ण बन जाने पर उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वह अनन्त छुटकारे का स्रोत बन गया। 10तथा परमेश्वर के द्वारा मिलिकिसिदक की परम्परा में उसे महायाजक बनाया गया।

पतन के विरुद्ध चेतावनी

11इसके विषय में हमारे पास कहने को बहुत कुछ है, पर उसकी व्याख्या कठिन है क्योंकि तुम्हारी समझ बहुत धीमी है। 12वास्तव में इस समय तक तो तुम्हें शिक्षा देने

मलिकिसिदक इब्राहिम के समया का एख याजक और सम्राट था। देखें उत्पत्ति 14:17–24

वाला बन जाना चाहिये था। किन्तु तुम्हें तो अभी किसी ऐसे
व्यक्ति की ही आवश्यकता है जो तुम्हें नये सिरे से परमेश्वर
की शिक्षा की प्रारम्भिक बातें ही सिखाये। तुम्हें तो बस
अभी दूध ही चाहिये, ठोस आहार नहीं। 13जो अभी दुध-मुहा
बच्चा ही है, उसे धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं
होती 14किन्तु ठोस आहार तो उन बड़ों के लिये ही होता है
जिन्होंने अपने अनुभव से भले-बुरे में पहचान करना सीख
लिया है।

6 अत: आओ, मसीह सम्बन्धी आरम्भिक शिक्षा को
छोड़ कर हम परिपक्वता की ओर बढ़ें हमें उन बातों
की ओर नहीं बढ़ना चाहिए जिनसे हमने शुरूआत की
जैसे-मृत्यु की ओर ले जाने वाले कर्मों के लिए मन फिराव,
परमेश्वर में विश्वास, 2बपतिस्माओं* की शिक्षा हाथ
रखना, मरने के बाद फिर से जी उठना और वह न्याय
जिससे हमारा भावी अनन्त जीवन निश्चित होगा। 3और
यदि परमेश्वर ने चाहा तो हम ऐसा ही करेंगे।

4-6जिन्हें एक बार प्रकाश प्राप्त हो चुका है, जो स्वर्गीय
वरदान का आस्वादन कर चुके हैं, जो पवित्र आत्मा के
सहभागी हो गए हैं जो परमेश्वर के वचन की उत्तमता तथा
आने वाले युग की शक्तियों का अनुभव कर चुके हैं, यदि
वे भटक जायें तो उन्हें मन-फिराव की ओर लौटा लाना
असम्भव है। उन्होंने जैसे अपने ढंग से नये सिरे से परमेश्वर
के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाया तथा उसे सब के सामने
अपमान का विषय बनाया।

7वे लोग ऐसी धरती के जैसे हैं जो प्राय: होने वाली वर्षा
के जल को सोख लेती है, और जोतने बोने वाले के लिए
उपयोगी फसल प्रदान करती है, वह परमेश्वर की आशीष
पाती है। 8किन्तु यदि वह धरती काँटे और गोखरू उपजाती
है, तो वह बेकार की है। और उसे अभिशप्त होने का भय
है। अन्त में उसे जला दिया जायेगा।

9हे प्रिय मित्रो, चाहे हम इस प्रकार कहते हैं किन्तु
तुम्हारे विषय में हमें इससे भी अच्छी बातों का विश्वास
है-बातें जो उद्धार से सम्बन्धित हैं। 10तुमने उसके जनों की
सहायता करके और निरन्तर सहायता करते हुए जो प्रेम
दर्शाया है, उसे और तुम्हारे दूसरे कामों को परमेश्वर
कभी नहीं भुलायेगा। वह अन्यायी नहीं है। 11हम चाहते हैं
कि तुममें से हर कोई जीवन भर ऐसा ही कठिन परिश्रम
करता रहे। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम निश्चय ही उसे
पा जाओगे जिसकी तुम आशा करते रहे हो। 12हम यह नहीं
चाहते कि तुम आलसी हो जाओ। बल्कि तुम उनका
अनुकरण करो जो विश्वास और धैर्य के साथ उन वस्तुओं
को पा रहे हैं जिनका परमेश्वर ने वचन दिया था।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा अटल है

13जब परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी, तब क्योंकि
स्वयं उससे बड़ा कोई और नहीं था, जिसकी शपथ ली जा
सके, इसलिये अपनी शपथ लेते हुए वह 14कहने लगा,
"निश्चय ही मैं तुझे आशीर्वाद दूँगा तथा मैं तुझे अनेक
वंशज दूँगा।"* 15और इस प्रकार धीरज के साथ बाट
जोहने के बाद उसने वह प्राप्त किया, जिसकी उससे प्रतिज्ञा
की गयी थी।

16लोग उसकी शपथ लेते हैं, जो कोई उनसे महान
होता है और वह शपथ सभी तर्क-वितर्कों का अन्त करके
जो कुछ कहा जाता है, उसे पक्का कर देती है। 17परमेश्वर
इसे उन लोगों के लिये, पूरी तरह स्पष्ट कर देना चाहता
था, जिन्हें उसे पाना था, जिसे देने की उसने प्रतिज्ञा की
थी कि वह अपने प्रयोजन को कभी नहीं बदलेगा। इसीलिए
अपने वचन के साथ उसने अपनी शपथ को जोड़ दिया।
18तो फिर यहाँ दो बातें हैं-उसकी प्रतिज्ञा और उसकी
शपथ-जो कभी नहीं बदल सकतीं और जिनके बारे में
परमेश्वर कभी झूठ नहीं कह सकता। इसलिए हम जो
परमेश्वर के निकट सुरक्षा पाने को आये हैं और जो आशा
उसने हमें दी है, उसे थामे हुए हैं, अत्यधिक उत्साहित
हैं। 19इस आशा को हम आत्मा के सुदृढ़ और सुनिश्चित
लंगर के रूप में रखते हैं। यह परदे के पीछे भीतर से भीतर
अन्तरतम तक पहुँचती है। 20जहाँ यीशु ने हमारी
ओर से हम से पहले प्रवेश किया। वह मिलिकिसिदक
की परम्परा में सदा सर्वदा के लिये प्रमुख याजक बन
गया।

याजक मिलिकिसिदक

7 यह मिलिकिसिदक सालेम का राजा था और
सर्वोच्च परमेश्वर का याजक था। जब इब्राहीम
राजाओं को पराजित करके लौट रहा था तो वह इब्राहीम

बपत्तिस्मा बपत्तिसमाओं से यहा या तो अभिप्राय मसीही बपत्तिस्मा से है या यहूदी रीति की जल में गोता लेने की बपतिस्मा से।

निश्चय ... दूँगा उत्पत्ति 22:17

से मिला और उसे आशीर्वाद दिया। 2और इब्राहीम ने उसे
उस सब कुछ में से जो उसने युद्ध में जीता था उसका दसवाँ
भाग प्रदान किया। (उसके नाम का पहला अर्थ
है–"धार्मिकता का राजा" और फिर उसका यह अर्थ भी
है–"सालेम का राजा" अर्थात् "शांति का राजा।") 3उसके
पिता अथवा उसकी माँ अथवा उसके पूर्वजों का कोई
इतिहास नहीं मिलता है। उसके जन्म अथवा मृत्यु का भी
कहीं कोई उल्लेख नहीं है। परमेश्वर के पुत्र के समान ही
वह सदा–सदा के लिये याजक बना रहता है।

4तनिक सोचो, वह कितना महान था। जिसे कुल प्रमुख
इब्राहीम तक ने अपनी प्राप्ति का दसवाँ भाग दिया था।
5अब देखो व्यवस्था के अनुसार लेवी वंशज जो याजक
बनते हैं, लोगों से अर्थात् अपने ही बंधुओं से दसवाँ भाग लें।
यद्यपि उनके वे बंधु इब्राहीम के वंशज हैं। 6फिर भी
मिलिकिसिदक ने, जो लेवी वंशी भी नहीं था, इब्राहीम से
दसवाँ भाग लिया। और उस इब्राहीम को आशीर्वाद दिया
जिसके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ थीं। 7इसमें कोई सन्देह
नहीं है कि जो आशीर्वाद देता है वह आशीर्वाद लेने वाले से
बड़ा होता है। 8जहाँ तक लेवियों का प्रश्न है, उनमें दसवाँ
भाग उन व्यक्तियों द्वारा इकट्ठा किया जाता है, जो मरण
शील हैं किन्तु मिलिकिसिदक का जहाँ तक प्रश्न है दसवाँ
भाग उसके द्वारा एकत्र किया जाता है जो शास्त्र के अनुसार
अभी भी जीवित है। 9तो फिर कोई यहाँ तक कह सकता है
कि वह लेवी जो दसवाँ भाग एकत्र करता है, उसने इब्राहीम
के द्वारा दसवाँ भाग प्रदान कर दिया। 10क्योंकि जब
मिलिकिसिदक इब्राहीम से मिला था, तब भी लेवी अपने
पूर्वजों के शरीर में वर्तमान था।

11यदि लेवी सम्बन्धी याजकता के द्वारा सम्पूर्णता प्राप्त
की जा सकती (क्योंकि इसी के आधार पर लोगों को
व्यवस्था का विधान दिया गया था) तो किसी दूसरे याजक
के आने की आवश्यकता ही क्या थी? एक ऐसे याजक की
जो मिलिकिसिदक की परम्परा का हो, न कि औरों की
परम्परा का। 12क्योंकि जब याजकता बदलती है, तो व्यवस्था
में भी परिवर्तन होना चाहिये। 13जिसके विषय में ये बातें
कही गयी हैं, वह किसी दूसरे गोत्र का है, और उस गोत्र का
कोई भी व्यक्ति कभी वेदी का सेवक नहीं रहा। 14क्योंकि
यह तो स्पष्ट ही है कि हमारा प्रभु यहूदा का वंशज था और
मूसा ने उस गोत्र के लिए याजकों के विषय में कुछ नहीं
कहा था।

यीशु मिलिकिसिदक के समान है

15और जो कुछ हमने कहा है, वह और भी स्पष्ट है कि
मिलिकिसिदक के जैसा एक दूसरा याजक प्रकट होता है।
16वह अपनी वंशावली के नियम के आधार पर नहीं, बल्कि
एक अमर जीवन की शक्ति के आधार पर याजक बना है।
17क्योंकि घोषित किया गया था: "तू है एक याजक शाश्वत
मिलिकिसिदक के जैसा"*

18पहला नियम इसलिये रद्द कर दिया गया क्योंकि वह
निर्बल और व्यर्थ था। 19(क्योंकि व्यवस्था के विधान ने
किसी को सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया।) और एक उत्तम आशा
का सूत्रपात किया गया जिसके द्वारा हम परमेश्वर के निकट
खिंचते हैं।

20यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने यीशु को
शपथ के द्वारा प्रमुख याजक बनाया था। जबकि औरों को
बिना शपथ के ही प्रमुख याजक बनाया गया था। 21किन्तु
यीशु तब एक शपथ से याजक बना था, जब परमेश्वर ने
उससे कहा था,

"प्रभु ने शपथ ली है,
और वह अपना मत कभी नहीं बदलेगा:
'तू एक शाश्वत याजक है।'"

भजन संहिता 110:4

22इस शपथ के कारण यीशु एक और अच्छे वाचा की
जमानत बन गया है।

23अब देखो, ऐसे बहुत से याजक हुआ करते थे जिन्हें
मृत्यु ने अपने पदों पर नहीं बने रहने दिया। 24किन्तु
क्योंकि यीशु अमर है, इसलिये उसका याजकपन भी
सदा–सदा बना रहने वाला है। 25अत: जो उसके द्वारा
परमेश्वर तक पहुँचते हैं, वह उनका सर्वदा के लिए उद्धार
करने में समर्थ है क्योंकि वह उनकी मध्यस्थता के लिये
ही सदा जीता है।

26ऐसा ही महायाजक हमारी आवश्यकता को पूरा
कर सकता है, जो पवित्र हो, दोषरहित हो, शुद्ध हो,
पापियों के प्रभाव से दूर रहता हो, स्वर्गों से भी जिसे
ऊँचा उठाया गया हो। 27जिसके लिये दूसरे महायाजकों
के समान यह आवश्यक न हो कि वह दिन प्रतिदिन
पहले अपने पापों के लिये और फिर लोगों के पापों के

तू ... जैसा भजन. 110:4

लिए बलियाँ चढ़ाये। उसने तो सदा–सदा के लिये उनके पापों के हेतु स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया। 28किन्तु परमेश्वर ने शपथ के साथ एक वाचा दिया। यह वाचा व्यवस्था के विधान के बाद आया और इस वाचा ने प्रमुख याजक के रूप में पुत्र को नियुक्त किया जो सदा–सदा के लिये सम्पूर्ण बन गया।

नये वाचा का प्रमुख याजक

8 जो कुछ हम कह रहे हैं, उसकी मुख्य बात यह है: निश्चय ही हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग में उस महा महिमावान के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान है। 2वह उस पवित्र गर्भ गृह में यानी स्वर्गिक रावटी, में जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया था, न कि मनुष्य ने, सेवा कार्य करता है।

3प्रत्येक महायाजक को इसलिये नियुक्त किया जाता है कि वह भेंटों और बलिदानों–दोनों को ही अर्पित करे। और इसीलिये इस महायाजक के लिए भी यह आवश्यक था कि उसके पास भी चढ़ावे के लिये कुछ हो। 4यदि वह धरती पर होता तो वह याजक नहीं हो पाता क्योंकि वहाँ पहले से ही ऐसे व्यक्ति हैं जो व्यवस्था के विधान के अनुसार भेंट चढ़ाते हैं। 5पवित्र उपासना स्थान में उनकी सेवा–उपासना स्वर्ग के यथार्थ की एक छाया प्रतिकृति है। इसीलिए जब मूसा पवित्र तम्बू का निर्माण करने ही वाला था, तभी उसे चेतावनी दे दी गयी थी। "ध्यान रहे कि तू हर वस्तु ठीक उसी प्रतिरूप के अनुसार बनाये जो तुझे पर्वत पर दिखाया गया था।" 6किन्तु जो सेवा कार्य यीशु को प्राप्त हुआ है, वह उनके सेवा कार्य से श्रेष्ठ है। क्योंकि वह जिस वाचा का मध्यस्थ है वह पुराने वाचा से उत्तम है और उत्तम वस्तुओं की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।

7क्योंकि यदि पहली वाचा में कोई भी खोट नहीं होता तो दूसरे वाचा के लिये कोई स्थान ही नहीं रह जाता। 8किन्तु परमेश्वर को उन लोगों में खोट मिला। उसने कहा:

"प्रभु घोषित करता है:
वह समय आ रहा जब मैं इस्राएल के
घराने से यहूदा के घराने से
एक नयी वाचा करूँगा।
9 यह वाचा वैसा नहीं होगा जैसा मैंने उनके
पूर्वजों के साथ उस समय किया था।
जब मैंने उनका हाथ मिस्र से
निकाल लाने पकड़ा था।
क्योंकि प्रभु कहता है,
वे मेरे वाचा के विश्वासी नहीं रहे।
मैंने उनसे मुँह फेर लिया।
10 यह है वह वाचा जिसे मैं
इस्राएल के घराने से करूँगा।
और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
उनके मनों में अपनी व्यवस्था बसाऊँगा,
उनके हृदयों पर मैं उसको लिख दूँगा।
मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे जन होंगे।
11 फिर तो कभी कोई भी, जन अपने पड़ोसी को
ऐसे न सिखायेगा अथवा कोई जन अपने बन्धु
से न, कभी कहेगा तुम प्रभु को पहचानो।
क्योंकि तब तो वे सभी छोटे से लेकर
बड़े से बड़े तक मुझे जानेंगे।
12 क्योंकि मैं उनके दुष्कर्मो को क्षमा करूँगा
और कभी उनके पापों को यदि नहीं रखूँगा।"

यिर्मयाह 31:31–34

13इस वाचा को नया कहकर उसने पहले को व्यवहार के अयोग्य ठहराया और जो पुराना पड़ रहा है तथा व्यवहार के अयोग्य है, वह तो फिर शीघ्र ही लुप्त हो जायेगा।

पुराने वाचा की उपासना

9 अब देखो पहले वाचा में भी उपासना के नियम थे। तथा एक मनुष्य के हाथों का बना उपासना गृह भी था। 2एक तम्बू बनाया गया था जिसके पहले कक्ष में दीपाधार थे, मेज़ थी, और भेंट की रोटी थी। इसे पवित्र स्थान कहा जाता था। 3दूसरे परदे के पीछे एक और कमरा था जिसे परम पवित्र कहा जाता है। 4इसमें सुगन्धित सामग्री के लिये सोने की वेदी और सोने की मढ़ी वाचा की सन्दूक थी। इस सन्दूक में सोने का बना मन्ना का एक पात्र था, हारून की वह छड़ी थी जिस पर कोंपलें फूटी थीं तथा वाचा के पत्थर के पतरे थे। 5सन्दूक के ऊपर परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति के प्रतीक यानी करूब बने थे जो क्षमा के स्थान पर छाया कर रहे थे। किन्तु इस समय हम इन बातों की विस्तार के साथ चर्चा नहीं कर सकते।

6सब कुछ के इस प्रकार व्यवस्थित हो जाने के बाद
याजक बाहरी कक्ष में प्रति दिन प्रवेश करके अपनी सेवा
का काम करने लगे। 7किन्तु भीतरी कक्ष में केवल प्रमुख
याजक ही प्रवेश करता था और वह भी साल में एक बार।
वह बिना उस लहू के कभी प्रवेश नहीं करता था जिसे वह
स्वयं अपने द्वारा और लोगों के द्वारा अनजाने में किये गये
पापों के लिए भेंट चढ़ाता था। 8इसके द्वारा पवित्र आत्मा
यह दर्शाया करता था कि जब तक अभी पहला तम्बू खड़ा
हुआ है, तब तक परम पवित्र स्थान का मार्ग उजागर नहीं
हो पाता। 9यह आज के युग के लिये एक प्रतीक है जो यह
दर्शाता है कि वे भेंटे और बलिदान जिन्हें अर्पित किया जा
रहा है, उपासना करने वाले की चेतना को शुद्ध नहीं कर
सकतीं। 10ये तो बस खाने–पीने और अनेक पर्व
विशेष–स्थानों के बाहरी नियम हैं और नयी व्यवस्था के
समय तक के लिए ही ये लागू होते हैं।

मसीह का लहू

11किन्तु अब मसीह इस और अच्छी व्यवस्था का, जो
अब हमारे पास है, प्रमुख याजक बनकर आ गया है।
उसने उस अधिक उत्तम और सम्पूर्ण तम्बू में से होकर
प्रवेश किया जो मनुष्य के हाथों की बनायी हुई नहीं थी।
अर्थात् जो सांसारिक नहीं है। 12बकरों और बछड़ों के
लहू को लेकर उसने प्रवेश नहीं किया था बल्कि
सदा–सर्वदा के लिये भेंट स्वरूप अपने ही रक्त को
लेकर परम पवित्र स्थान में प्रविष्ट हुआ था। इस प्रकार
उसने हमारे लिये पापों से अनन्त छुटकारे सुनिश्चित कर
दिए हैं।

13बकरों और साँडों का लहू तथा बछिया की भभूत
का उन पर छिड़का जाना, अशुद्धों को शुद्ध बनाता है
ताकि वे बाहरी तौर पर पवित्र हो जायें। 14जब यह सच है
तो मसीह का लहू कितना प्रभावशाली होगा। उसने
अनन्त आत्मा के द्वारा अपने आपको एक सम्पूर्ण बलि
के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर दिया। सो उसका लहू
हमारी चेतना को उन कर्मों से छुटकारा दिलायेगा जो मृत्यु
की ओर ले जाते हैं ताकि हम सजीव परमेश्वर की सेवा
कर सकें।

15इसी कारण से मसीह एक नये वाचा का मध्यस्थ
बना ताकि जिन्हें बुलाया गया है, वे उत्तराधिकार का
अनन्त आशीर्वाद पा सकें जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की
थी। अब देखो, पहले वाचा के अधीन किये गये पापों से
उन्हें मुक्त कराने के लिये फिरौती के रूप में वह अपने
प्राण दे चुका है।

16जहाँ तक वसीयतनामे* का प्रश्न है, तो उसके लिए
जिसने उसे लिखा है, उसकी मृत्यु को प्रमाणित किया जाना
आवश्यक है 17क्योंकि कोई वसीयतनामा केवल तभी
प्रभावी होता है जब उसके लिखने वाले की मृत्यु हो जाती
है। जब तक उसको लिखने वाला जीवित रहता है, वह
कभी प्रभावी नहीं होता। 18इसीलिए पहली वाचा भी बिना
एक मृत्यु और लहू के गिराए कार्यान्वित नहीं किया गया।
19मूसा जब व्यवस्था के विधान के सभी आदेशों की सब
लोगों को घोषणा कर चुका तो उसने जल के साथ बकरों
और बछड़ों के लहू को लाल ऊन और हिस्सप की टहनियों
से चर्म पत्रों और सभी लोगों पर छिड़क दिया था। 20उसने
कहा था, "यह उस वाचा का लहू है, परमेश्वर ने जिसके
पालन की आज्ञा तुम्हें दी है।" 21उसने इसी प्रकार तम्बू
और उपासना उत्सवों में काम आने वाली हर वस्तु पर लहू
छिड़का था। 22वास्तव में व्यवस्था चाहती है कि प्राय: हर
वस्तु को लहू से शुद्ध किया जाये। और बिना लहू बहाये
क्षमा है ही नहीं।

मसीह का बलिदान पापों को धो डालता है

23तो फिर यह आवश्यक है कि वे वस्तुएँ जो स्वर्ग की
प्रतिकृति हैं, उन्हें पशुओं के बलिदानों से शुद्ध किया जाये
किन्तु स्वर्ग की वस्तुएँ तो इनसे भी उत्तम बलिदानों से शुद्ध
किए जाने की अपेक्षा करती हैं। 24मसीह ने मनुष्य के
हाथों के बने परम पवित्र स्थान में, जो सच्चे परम पवित्र
स्थान की एक प्रतिकृति मात्र था, प्रवेश नहीं किया। उसने
तो स्वयं स्वर्ग में ही प्रवेश किया ताकि अब वह हमारी
ओर से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट हो। 25और न
ही अपना फिर–फिर बलिदान चढ़ाने के लिये उसने
स्वर्ग में उस प्रकार प्रवेश किया जैसे महायाजक उस लहू
के साथ, जो उसका अपना नहीं है, परम पवित्र स्थान में
हर साल प्रवेश करता है। 26नहीं तो फिर मसीह को सृष्टि
के आदि से ही अनेक बार यातनाएँ झेलनी पड़तीं। किन्तु
अब देखो, इतिहास के चरम बिन्दु पर अपने बलिदान के
द्वारा पापों का अंत करने के लिए वह सदा सदा के लिये

वसीयतनामे यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत का अर्थ भी देता है।

एक ही बार प्रकट हो गया है। 27जैसे एक बार मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना मनुष्य की नियति है 28सो वैसे ही मसीह को, एक ही बार अनेक व्यक्तियों के पापों को हर लेने के लिये बलिदान कर दिया गया। और वह पापों को वहन करने के लिए नहीं, बल्कि जो उसकी बाट जोह रहे हैं, उनके लिए उद्धार लाने को फिर दूसरी बार प्रकट होगा।

अंतिम बलिदान

10 व्यवस्था का विधान तो आने वाली उत्तम बातों की छाया मात्र प्रदान करता है। अपने आप में वे बातें यथार्थ नहीं हैं। इसीलिये उन्हीं बलियों के द्वारा जिन्हें निरन्तर प्रतिवर्ष अनन्त रूप से दिया जाता रहता है, उपासना के लिये निकट आने वालों को सदा–सदा के लिये सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया जा सकता। 2यदि ऐसा हो पाता तो क्या उनका चढ़ाया जाना बंद नहीं हो जाता? क्योंकि फिर तो उपासना करने वाले एक ही बार में सदा सर्वदा के लिये पवित्र हो जाते। और अपने पापों के लिये फिर कभी स्वयं को अपराधी नहीं समझते। 3किन्तु वे बलियाँ तो बस पापों की एक वार्षिक स्मृति मात्र हैं। 4क्योंकि साँडों और बकरों का लहू पापों को दूर कर दे, यह सम्भव नहीं है।

5 इसीलिये जब यीशु इस जगत् में आया था तो उसने कहा था:

“तूने बलिदान और कोई भेंट नहीं चाहा, किन्तु
मेरे हेतु, एक देह तैयार की
6 तू किसी किसी होमबलि से न ही पापबलि से
प्रसन्न नहीं हुआ
7 तब फिर मैंने कहा था,
‘और पुस्तक में मेरे लिये यह भी लिखा है,
मैं यहाँ हूँ।
हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करने को आया हूँ।’”

भजन संहिता 40: 6–8

8उसने पहले कहा था, “बलियाँ और भेंटें, होमबलियाँ और पापबलियाँ न तो तू चाहता है और न ही तू उनसे प्रसन्न होता है।” (यद्यपि व्यवस्था का विधान यह चाहता है कि वे चढ़ाई जायें।) 9तब उसने कहा था, “मैं यहाँ हूँ। मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।” तो वह दूसरी व्यवस्था को स्थापित करने के लिये, पहली को रद्द कर देता है। 10सो परमेश्वर की इच्छा से एक बार ही सदा–सर्वदा के लिये यीशु मसीह की देह के बलिदान द्वारा हम पवित्र कर दिये गये।

11हर याजक एक दिन के बाद दूसरे दिन खड़ा हो होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता है। वह पुन: पुन: एक जैसी ही बलियाँ चढ़ाता है जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकतीं। 12किन्तु याजक के रूप में मसीह तो पापों के लिये, सदा के लिए एक ही बलि चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा 13और उसी समय से उसे अपने विरोधियों को उसके चरण की चौकी बना दिये जाने की प्रतीक्षा है। 14क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा, जो पवित्र किये जा रहे हैं, उन्हें सदा–सर्वदा के लिए सम्पूर्ण सिद्ध कर दिया।

15इसके लिये पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है। पहले वह बताता है:

16 “यह वह वाचा है जिसे मैं उनसे करूँगा।
और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
अपनी व्यवस्था उनके हृदयों में बसाऊँगा
मैं उनके मनो पर उनको लिख दूँगा।”

यिर्मयाह 31:33

17वह यह भी कहता है:

“उनके पापों और उनके दुष्कर्मों को
और अब मैं कभी याद नहीं रखूँगा।”

यिर्मयाह 31:34

18और फिर जब पाप क्षमा कर दिये गये तो पापों के लिये किसी बलि की कोई आवश्यकता रह ही नहीं जाती।

परमेश्वर के निकट आओ

19इसलिये भाइयो, क्योंकि यीशु के लहू के द्वारा हमें उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का निडर भरोसा है 20जिसे उसने परदे के द्वारा, अर्थात् जो उसका शरीर ही है, एक नये और सजीव मार्ग के माध्यम से हमारे लिये खोल दिया है। 21और क्योंकि हमारे पास एक ऐसा महान याजक है जो परमेश्वर के घराने का अधिकारी है। 22तो फिर आओ, हम सच्चे हृदय, निश्चयपूर्ण विश्वास अपनी अपराधपूर्ण चेतना से हमें शुद्ध करने के लिये किए गए छिड़काव से युक्त अपने हृदयों को लेकर शुद्ध जल से धोये हुए अपने शरीरों के साथ परमेश्वर के निकट पहुँचते हैं। 23तो आओ जिस आशा को हमने अंगीकार

किया है, हम अडिग भाव से उस पर डटे रहें क्योंकि जिसने
हमें वचन दिया है, वह विश्वासपूर्ण है।
24तथा आओ, हम ध्यान रखें कि हम प्रेम और अच्छे
कर्मों के प्रति एक दूसरे को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। 25हमारी
सभाओं में आना मत छोड़ो। जैसी कि कुछों को तो वहाँ
नहीं आने की आदत ही पड़ गयी है। बल्कि हमें तो एक
दूसरे को उत्साहित करना चाहिये। और जैसा कि तुम देख
ही रहे हो–कि वह दिन* निकट आ रहा है– सो तुम्हें तो
यह और अधिक करना चाहिये।

मसीह से मुँह मत फेरो

26सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी यदि हम जानबूझ
कर पाप करते ही रहते हैं फिर तो पापों के लिए कोई
बलिदान बचा ही नहीं रहता। 27बल्कि फिर तो न्याय की
भयानक प्रतीक्षा और भीषण अग्नि ही शेष रह जाती है जो
परमेश्वर के विरोधियों को चट कर जायेगी। 28जो कोई
मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करने सेमना करता
है, उसे बिना दया दिखाये दो या तीन साक्षियों की साक्षी पर
मार डाला जाता है। 29सोचो, वह मनुष्य कितने अधिक
कड़े दंड का पात्र है, जिसने अपने पैरों तले परमेश्वर के
पुत्र को कुचला, जिसने वाचा के उस लहू को, जिसने उसे
पवित्र किया था, एक अपवित्र वस्तु माना और जिसने
अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। 30क्योंकि हम उसे
जानते हैं जिसने कहा था: "बदला लेना काम है मेरा, मैं ही
बदला लूँगा।" * और फिर, "प्रभु अपने लोगों का न्याय
करेगा।"*
31किसी पापी का सजीव परमेश्वर के हाथों में पड़ जाना
एक भयानक बात है।

विश्वास बनाये रखो

32आरम्भ के उन दिनों को याद करो जब तुमने प्रकाश
पाया था, और उसके बाद जब तुम कष्टों का सामना
करते हुए कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ डटे रहे थे।
33तब कभी तो सब लोगों के सामने तुम्हें अपमानित किया
गया और सताया गया और कभी जिनके साथ ऐसा बर्ताव
किया जा रहा था, तुमने उनका साथ दिया। 34तुमने, जो
बंदीगृह में पड़े थे, उनसे सहानुभूति की तथा अपनी सम्पत्ति
का जब्त किया जाना सहर्ष स्वीकार किया क्योंकि तुम यह
जानते थे कि स्वयं तुम्हारे अपने पास उनसे अच्छी और
टिकाऊ सम्पत्तियाँ हैं।
35सो अपने निडर विश्वास को मत त्यागो क्योंकि इसका
भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा। 36तुम्हें धैर्य की आवश्यकता
है ताकि तुम जब परमेश्वर की इच्छा पूरी कर चुको तो
जिसका वचन उसने दिया है, उसे तुम पा सको। 37क्योंकि
बहुत शीघ्र ही,

"जिसको आना है वह शीघ्र ही आयेगा,
38 मेरा धर्मी जन विश्वास से जियेगा
और यदि वह पीछे हटेगा
तो मैं उससे प्रसन्न न रहूँगा।"

हबक्कूक 2:3–4

39किन्तु हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटते हैं और नष्ट हो
जाते हैं बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास करते हैं और उद्धार
पाते हैं।

विश्वास की महिमा

11 विश्वास का अर्थ है, जिसकी हम आशा करते
हैं, उस के लिए सुनिश्चित होना। और विश्वास
का अर्थ है कि हम चाहे किसी वस्तु को देख नहीं रहे हों
किन्तु उसके अस्तित्त्व के विषय में सुनिश्चित होना कि
वह है। 2इसी कारण प्राचीन काल के लोगों को परमेश्वर
का आदर प्राप्त हुआ था।
3विश्वास के आधार पर ही हम यह जानते हैं कि
परमेश्वर के आदेश से ब्रह्माण्ड की रचना हुई थी। इसीलिये
जो दृश्य है, वह दृश्य से ही नहीं बना है।
4हाबिल ने विश्वास के कारण ही परमेश्वर को
कैन से उत्तम बलि चढ़ाई थी। विश्वास के कारण ही उसे
एक धर्मी पुरुष के रूप में तब सम्मान मिला था जब
परमेश्वर ने उसकी भेंटों की प्रशंसा की थी। और विश्वास
के कारण ही वह आज भी बोलता है यद्यपि वह मर चुका
है।
5विश्वास के कारण ही हनोक को इस जीवन से ऊपर
उठा लिया गया ताकि उसे मृत्यु का अनुभव न हो। परमेश्वर
ने क्योंकि उसे दूर हटा दिया था इसलिये वह पाया नहीं
गया। क्योंकि उसे उठाये जाने से पहले परमेश्वर को
प्रसन्न करने वाले के रूप में उसे सम्मान मिल चुका था।

वह दिन अर्थात् वह जब मसीह फिर प्रकट होगा।
बदला ... लूँगा व्यवस्था. 32:35
प्रभु ... करेगा भजन. 135:14

6और विश्वास के बिना तो परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है। क्योंकि हर एक वह जो उसके पास आता है, उसके लिये यह आवश्यक है कि वह इस बात का विश्वास करे कि परमेश्वर का अस्तित्त्व है और वे जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं, वह उन्हें उसका प्रतिफल देता है।

7विश्वास के कारण ही नूह को जब उन बातों की चेतावनी दी गयी जो उसने देखी तक नहीं थीं तो उसने पवित्र भयपूर्वक अपने परिवार को बचाने के लिये एक नाव का निर्माण किया था। अपने विश्वास से ही उसने इस संसार को दोषपूर्ण माना और उस धार्मिकता का उत्तराधिकारी बना जो विश्वास से आती है।

8विश्वास के कारण ही, जब इब्राहीम को ऐसे स्थान पर जाने के लिये बुलाया गया था, जिसे बाद में उत्तराधिकार के रूप में उसे पाना था, यद्यपि वह यह जानता तक नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी उसने आज्ञा मानी और वह चला गया। 9विश्वास के कारण ही जिस धरती को देने का उसे वचन दिया गया था, उस पर उसने एक अनजाने परदेसी के समान अपना घर बना कर निवास किया। वह तम्बुओं में वैसे ही रहा जैसे इसहाक और याकूब रहे थे जो उसके साथ परमेश्वर की उसी प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे। 10वह सुदृढ़ आधार वाली उस नगरी की बाट जोह रहा था जिसका शिल्पी और निर्माणकर्त्ता परमेश्वर है।

11विश्वास के कारण ही, इब्राहीम जो बूढ़ा हो चुका था और सारा जो स्वयं बाँझ थी, जिसने वचन दिया था, उसे विश्वसनीय समझकर गर्भवती हुई और इब्राहीम को पिता बना दिया। 12और इस प्रकार इस एक ही व्यक्ति से जो मरियल सा था, आकाश के तारों जितनी असंख्य और सागर–तट के रेत–कणों जितनी अनगिनत संतानें हुई।

13विश्वास को अपने मन में लिए हुए ये लोग मर गए। जिन वस्तुओं की प्रतिज्ञा दी गयी थी, उन्होंने वे वस्तुएँ नहीं पायीं। उन्होंने बस उन्हें दूर से ही देखा और उनका स्वागत किया तथा उन्होंने यह मान लिया कि वे इस धरती पर परदेसी और अनजाने हैं। 14वे लोग जो ऐसी बातें कहते हैं, वे यह दिखाते हैं कि वे एक ऐसे देश की खोज में हैं जो उनका अपना है। 15यदि वे उस देश के विषय में सोचते जिसे वे छोड़ चुके हैं तो उनके फिर से लौटने का अवसर रहता 16किन्तु उन्हें तो स्वर्ग के एक श्रेष्ठ प्रदेश की उत्कट अभिलाषा है। इसीलिये परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में संकोच नहीं होता क्योंकि उसने तो उनके लिये एक नगर तैयार कर रखा है।

17विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने, जब परमेश्वर उसकी परीक्षा ले रहा था, इसहाक की बलि चढ़ाई। वही जिसे प्रतिज्ञाएँ प्राप्त हुई थीं, अपने एक मात्र पुत्र की जब बलि देने वाला था 18तो यद्यपि परमेश्वर ने उससे कहा था, "इसहाक के द्वारा ही तेरा वंश बढ़ेगा।" 19किन्तु इब्राहीम ने सोचा कि परमेश्वर मरे हुए को भी जिला सकता है और यदि आलंकारिक भाषा में कहा जाये तो उसने इसहाक को मृत्यु से फिर वापस पा लिया।

20विश्वास के कारण ही इसहाक ने याकूब और इसाऊ को उनके भविष्य के विषय में आशीर्वाद दिया। 21विश्वास के कारण ही याकूब ने, जब वह मर रहा था, यूसुफ के हर पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपनी लाठी के ऊपरी सिरे पर झुक कर सहारा लेते हुए परमेश्वर की उपासना की।

22विश्वास के कारण ही युसुफ ने जब उसका अंत निकट था, इस्राएल निवासियों के मिस्र से निर्गमन के विषय में बताया तथा अपनी अस्थियों के बारे में आदेश दिये।

23विश्वास के आधार पर ही, मूसा के माता–पिता ने, मूसा के जन्म के बाद उसे तीन महीने तक छुपाये रखा क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह कोई सामान्य बालक नहीं था और वे राजा की आज्ञा से नहीं डरे।

24विश्वास से ही, मूसा जब बड़ा हुआ तो उसने फिरौन की पुत्री का बेटा कहलाने से इन्कार कर दिया। 25उसने पाप के क्षणिक सुख भोगों की अपेक्षा परमेश्वर के संत जनों के साथ दुर्व्यवहार झेलना ही चुना। 26उसने मसीह के लिये अपमान झेलने को मिस्र के धन भंडारों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान माना क्योंकि वह अपना प्रतिफल पाने की बाट जोह रहा था। 27विश्वास के कारण ही, राजा के कोप से न डरते हुए उसने मिस्र का परित्याग कर दिया; वह डटा रहा, मानो उसे अदृश्य परमेश्वर दिख रहा हो।

28विश्वास से ही, उसने फसह पर्व और लहू छिड़कने का पालन किया, ताकि पहली संतानों का विनाश करने वाला, इस्राएल की पहली संतान को छू तक न पाये।

29विश्वास के कारण ही, लोग लाल सागर से ऐसे पार हो गये जैसे वह कोई सूखी धरती हो। किन्तु जब मिस्र के लोगों ने ऐसा करना चाहा तो वे डूब गये।

30विश्वास के कारण ही, यरिहो का नगर–परकोटा लोगों के सात दिन तक उसके चारों ओर परिक्रमा कर लेने के बाद ढह गया।

31विश्वास के कारण ही, राहब नाम की वेश्या आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के साथ नहीं मारी गयी थी क्योंकि उसने गुप्तचरों का स्वागत सत्कार किया था।

32अब मैं और अधिक क्या कहूँ। गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिफ्तह, दाऊद, शमुएल तथा उन नबियों की चर्चा करने का मेरे पास समय नहीं है 33जिन्होंने विश्वास से, राज्यों को जीत लिया, धार्मिकता के कार्य किये तथा परमेश्वर ने जो देने का वचन दिया था, उसे प्राप्त किया। जिन्होंने सिंहों के मुँह बन्द कर दिये, 34लपलपाती लपटों के क्रोध को शांत किया तथा तलवार की धार से बच निकले; जिनकी दुर्बलता ही शक्ति में बदल गयी; और युद्ध में जो शक्तिशाली बने तथा जिन्होंने विदेशी सेनाओं को छिन्न–भिन्न कर डाला। 35स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर से जीवित पाया। बहुतों को सताया गया, किन्तु उन्होंने छुटकारा पाने से मना कर दिया ताकि उन्हें एक और अच्छे जीवन में पुनरुत्थान मिल सके। 36कुछ को उपहासों और कोड़ों का सामना करना पड़ा जबकि कुछ को ज़ंजीरों से जकड़ कर बंदी गृह में डाल दिया गया। 37कुछ पर पथराव किया गया। उन्हें आरे से चीर कर दो फाँक कर दिया गया, उन्हें तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया। वे ग़रीब थे, उन्हें यातनाएँ दी गई और उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। वे भेड़–बकरियों की खालें ओढ़े इधर–उधर भटकते रहे। 38यह संसार उनके योग्य नहीं था। वे बियाबानों, और पहाड़ों में घूमते रहे और गुफाओं और धरती में बने बिलों में, छिपते–छिपाते फिरे।

39अपने विश्वास के कारण ही, इन सब को सराहा गया। फिर भी परमेश्वर को जिसका महान वचन उन्हें दिया था, उसे इनमें से कोई भी नहीं पा सका। 40परमेश्वर के पास अपनी योजना के अनुसार हमारे लिये कुछ और अधिक उत्तम था जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ ही सम्पूर्ण सिद्ध किया जाये।

परमेश्वर अपने पुत्रों को सिधाता है

12 क्योंकि हम साक्षियों की ऐसी इतनी बड़ी भीड़ से घिरे हुए हैं, जो हमें विश्वास का अर्थ क्या है इस की साक्षी देती है इसलिये आओ बाधा पहुँचाने वाली प्रत्येक वस्तु को और उस पाप को जो सहज में ही हमें उलझा लेता है झटक फेंकें और वह दौड़ जो हमें दौड़नी है, आओ धीरज के साथ उसे दौड़ें। 2हमारे विश्वास के अगुआ और उसे सम्पूर्ण सिद्ध करने वाले यीशु पर आओ हम दृष्टि लगायें। जिसने अपने सामने उपस्थित आनन्द के लिये क्रूस की यातना झेली, उसकी लज्जा की कोई चिंता नहीं की और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान हो गया। 3उसका ध्यान करो जिसने पापियों का ऐसा विरोध इसलिये सहन किया ताकि थक कर तुम्हारा मन हार न मान बैठे।

4पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में तुम्हें इतना नहीं अड़ना पड़ा है कि अपना लहू ही बहाना पड़ा हो। 5तुम उस साहसपूर्ण वचन को भूल गये हो। जो तुम्हें पुत्र के नाते सम्बोधित है:

> "हे मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन का
> तिरस्कार मत कर, उसकी फटकार का
> 6 बुरा कभी मत मान, क्योंकि प्रभु
> उनको डाँटता है जिनसे वह प्रेम करता है।
> वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र को दण्ड देता,
> जो उसको अति प्रिय है।"

नीतिवचन 3:11–12

7कठिनाई को अनुशासन के रूप में सहन करो। परमेश्वर तुम्हारे साथ अपने पुत्र के समान व्यवहार करता है। ऐसा पुत्र कौन होगा जो अपने पिता के द्वारा सिधाया न गया हो? 8यदि तुम्हें वैसे ही नहीं सिधाया गया है जैसे सबको सिधाया जाता है तो तुम अपने पिता से पैदा हुए पुत्र नहीं हो और सच्ची संतान नहीं हो। 9और फिर यह भी कि इन सब को वे पिता भी जिन्होंने हमारे शरीर को जन्म दिया है, हमें सिधाते हैं। और इसके लिये हम उन्हें मान देते हैं तो फिर हमें अपनी आत्माओं के पिता के अनुशासन के तो कितना अधिक अधीन रहते हुए जीना चाहिये। 10हमारे पिताओं ने थोड़े से समय के लिये जैसा उन्होंने उत्तम समझा, हमें सिधाया, किन्तु परमेश्वर हमें हमारी भलाई के लिये सिधाता है, जिससे हम उसकी पवित्रता के सह भागी हो सकें। 11जिस समय सिधाया जा रहा होता है, उस समय सिधाना अच्छा नहीं लगता, बल्कि वह दुखद लगता है किन्तु कुछ भी हो, वे जो इसके द्वारा सिधाये जा चुके हैं, उनके लिये यह आगे चलकर नेकी और शांति का सुफल प्रदान करता है।

[12]इसलिये अपनी दुर्बल बाहों और निर्बल घुटनों को सबल बनाओ। [13]अपने पैरों के लिए मार्ग बना तू समतल। ताकि जो लँगड़ा है, वह अपंग नहीं, वरन चंगा हो जाये।

चेतावनी: परमेश्वर को नकारो मत

[14]सभी के साथ शांति के साथ रहने और पवित्र होने के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील रहो; बिना पवित्रता के कोई भी प्रभु का दर्शन नहीं कर पायेगा। [15]इस बात का ध्यान रखो कि परमेश्वर के अनुग्रह से कोई भी विमुख न हो जाये और तुम्हें कष्ट पहुँचाने तथा बहुतसों को विकृत करने के लिये कोई झगड़े की जड़ न फूट पड़े। [16]देखो कि कोई भी व्यभिचार न करे अथवा उस इसाऊ के समान परमेश्वर विहीन न हो जाये जिसे सबसे बड़ा पुत्र होने के नाते उत्तराधिकार पाने का अधिकार था किन्तु जिसने उसे बस एक जून के खाने भर के लिये बेच दिया। [17]जैसा कि तुम जानते ही हो बाद में जब उसने इस वरदान को प्राप्त करना चाहा तो उसे अयोग्य ठहराया गया। यद्यपि उसने रो-रो कर वरदान पाना चाहा किन्तु वह अपने किये को अनकिया नहीं कर पाया।

[18]तुम अग्नि से जलते हुए इस पर्वत के पास नहीं आये जिसे छुआ जा सकता था और न ही अंधकार, विषाद और बवंडर के निकट आये हो। [19]और न ही तुरही की तीव्र ध्वनि अथवा किसी ऐसे स्वर के सम्पर्क में आये जो वचनों का उच्चारण कर रही हो, जिससे जिन्होंने उसे सुना, प्रार्थना की कि उनके लिये किसी और वचन का उच्चारण न किया जाये। [20]क्योंकि जो आदेश दिया गया था, वे उसे झेल नहीं पाये: "यदि कोई पशु तक उस पर्वत को छुए तो उस पर पथराव किया जाये।"* [21]वह दृश्य इतना भयभीत कर डालने वाला था कि मूसा ने कहा, "मैं भय से थर थर काँप रहा हूँ।"*

[22]किन्तु तुम तो सिओन पर्वत, सजीव परमेश्वर की नगरी, स्वर्ग के यरूशलेम के निकट आ पहुँचे हो। तुम तो हज़ारों-हज़ार स्वर्गदूतों की आनन्दपूर्ण सभा, [23]परमेश्वर की पहली संतानों, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं, उनकी सभा के निकट पहुँच चुके हो। तुम सबके न्यायकर्त्ता परमेश्वर और उन धर्मात्मा, सिद्ध पुरुषों की आत्माओं, [24]तथा एक नये करार के मध्यस्थ यीशु और छिड़के हुए उस लहू से निकट आ चुके हो जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम वचन बोलता है।

[25]ध्यान रहे! कि तुम उस बोलने वाले को मत नकारो। यदि वे उसको नकार कर नहीं बच पाये जिसने उन्हें धरती पर चेतावनी दी थी तो यदि हम उससे मुँह मोड़ेंगे जो हमें स्वर्ग से चेतावनी दे रहा है, तो हम तो दण्ड से बिल्कुल भी नहीं बच पायेंगे। [26]उसकी वाणी ने उस समय धरती को झकझोर दिया था किन्तु अब उसने प्रतिज्ञा की है, "एक बार फिर न केवल धरती को ही बल्कि आकाशों को भी मैं झकझोर दूँगा।" [27]"एक बार फिर" ये शब्द उस हर वस्तु की ओर इंगित करते हैं जिसे रचा गया है (यानी वे वस्तुएँ जो अस्थिर हैं) वे नष्ट हो जायेंगी। केवल वे वस्तुएँ ही बचेंगी जो स्थिर हैं।

[28]अत: क्योंकि जब हमें एक ऐसा राज्य मिल रहा है, जिसे झकझोरा नहीं जा सकता, तो आओ हम धन्यवादी बनें और आदर मिश्रित भय के साथ परमेश्वर की उपासना करें। [29]क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म कर डालने वाली एक आग है।

निष्कर्ष

13 भाई के समान परस्पर प्रेम करते रहो। [2]अतिथियों का सत्कार करना मत भूलो, क्योंकि ऐसा करते हुए कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्गदूतों का स्वागत-सत्कार किया है। [3]बंदियों को इस रूप में याद करो जैसे तुम भी उनके साथ बंदी रहे हो। जिनके साथ बुरा व्यवहार हुआ है उनकी इस प्रकार सुधि लो जैसे मानो तुम स्वयं पीड़ित हो।

[4]विवाह का सब को आदर करना चाहिये। विवाह की सेज को पवित्र रखो। क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और दुराचारियों को दण्ड देगा। [5]अपने जीवन को धन के लालच से मुक्त रखो। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी में संतोष करो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है:

"मैं तुझको कभी नहीं छोड़ूँगा,
मैं तुझे कभी नहीं तजूँगा।

व्यवस्था विवरण 31:6

यदि कोई ... जायें निर्गमन 19:12
मैं ... रहा हूँ व्यवस्था. 9:19

6इसीलिये हम विश्वास के साथ कहते हैं:

"प्रभु मेरी सहाय करता है,
मैं कभी भयभीत न बनूँगा।
कोई मनुज मेरा क्या करे?"

भजन संहिता 118:6

7अपने मार्ग दर्शकों को याद रखो जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है। उनकी जीवन–विधि के परिणाम पर विचार करो तथा उनके विश्वास का अनुसरण करो। 8यीशु मसीह कल भी वैसा ही था, आज भी वैसा ही है और युग–युगान्तर तक वैसा ही रहेगा।

9हर प्रकार की विचित्र शिक्षाओं से भरमाये मत जाओ। तुम्हारे मनों के लिये यह अच्छा है कि वे अनुग्रह के द्वारा सुदृढ़ बनें न कि खाने पीने सम्बन्धी नियमों के मानने से, जिनसे उनका कभी कोई भला नहीं हुआ, जिन्होंने उन्हें माना।

10हमारे पास एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उनको नहीं है जो रावटी में सेवा करते हैं। 11महायाजक परम पवित्र स्थान पर पाप–बलि के रूप में पशुओं का लहू तो ले जाता है, किन्तु उनके शरीर डेरों के बाहर जला दिये जाते हैं। 12इसी लिये यीशु ने भी स्वयं अपने लहू से लोगों को पवित्र करने के लिये नगर द्वार के बाहर यातना झेली। 13तो फिर आओ हम भी इसी अपमान को झेलते हुए जिसे उसने झेला था, डेरों के बाहर उसके पास चलें। 14क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थायी नगर नहीं है बल्कि हम तो उस नगर की बाट जोह रहे हैं जो आनेवाला है।

15अत: आओ हम यीशु के द्वारा परमेश्वर को स्तुति रूपी बलि अर्पित करें जो उन ओठों का फल है जिन्होंने उसके नाम को पहचाना है। 16तथा नेकी करना और अपनी वस्तुओं को औरों के साथ बाँटना मत भूलो। क्योंकि परमेश्वर ऐसी ही बलियों से प्रसन्न होता है।

17अपने मार्ग दर्शकों की आज्ञा मानो। उनके अधीन रहो। वे तुम पर ऐसे चौकसी रखते हैं जैसे उन व्यक्तियों पर रखी जाती है जिनको अपना लेखा जोखा उन्हें देना है। उनकी आज्ञा मानो जिससे उनका कर्म आनन्द बन जाये। न कि एक बोझ बने। क्योंकि उससे तो तुम्हारा कोई लाभ नहीं होगा।

18हमारे लिए विनती करते रहो। हमें निश्चय है कि हमारी चेतना शुद्ध है। और हम हर प्रकार से वही करना चाहते हैं जो उचित है। 19मैं विशेष रूप से आग्रह करता हूँ कि तुम प्रार्थना किया करो ताकि शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास आ सकूँ।

20जिसने भेड़ों के उस महान रखवाले हमारे प्रभु यीशु के लहू द्वारा उस सनातन करार पर मुहर लगाकर मरे हुओं में से जिला उठाया, वह शांति–दाता परमेश्वर 21तुम्हें सभी उत्तम साधनों से सम्पन्न करे। जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी कर सको। और यीशु मसीह के द्वारा वह हमारे भीतर उस सब कुछ को सक्रिय करे जो उसे भाता है। युग–युगान्तर तक उसकी महिमा होती रहे। आमीन!

22हे भाइयो, मेरा आग्रह है कि तुम प्रेरणा देने वाले मेरे इस वचन को धारण करो मैंने तुम्हें यह पत्र बहुत संक्षेप में लिखा है। 23मैं चाहता हूँ कि तुम्हें ज्ञात हो कि हमारा भाई तिमुथियुस रिहा कर दिया गया है। यदि वह शीघ्र ही आ पहुँचा तो मैं उसी के साथ तुमसे मिलने आऊँगा।

24अपने सभी अग्रणियों और संत जनों को नमस्कार कहना। इटली से आये लोग तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

25परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे!

याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

[2]हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं
में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। [3]क्योंकि तुम
यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल
होता है तो उससे धैर्य पूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है।
[4]और वह धैर्य पूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म
देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई
कमी नहीं रह जाती है। [5]सो यदि तुममें से किसी में विवेक
की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह
सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। [6]बस
विश्वास के साथ माँगा जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं
होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर
की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और
थरथराती है। [7]ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये
कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। [8]ऐसे मनुष्य का मन
तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर
रहता है।

सच्चा धन

[9]साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये
कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। [10]और धनी
भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी
है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान
झड़ जाना है। [11]सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और
पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं
और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार धनी व्यक्ति
भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

[12]वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि
परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय
मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने अपने प्रेम
करने वालों को देने का वचन दिया है। [13]परीक्षा की घड़ी
में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी
परीक्षा ले रहा है," क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई
लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। [14]हर
कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में
पड़ता है। [15]फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप
पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

[16]सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। [17]प्रत्येक उत्तम
दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे
उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म
दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से
उत्पन्न छाया से कभी बदलता नही है। [18]सत्य के सुसंदेश के
द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि
हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल
सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

[19]हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता
के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध
करने में उतावली मत बरतो। [20]क्योंकि मनुष्य के क्रोध से
परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। [21]हर
घिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो।
तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर
के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को
उद्धार दिला सकता है।

[22]परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि
केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो

तो तुम अपने आपको छल रहे हो। 23 क्योंकि यदि कोई
परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता
नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने
भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। 24वह स्वयं को
अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो
तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। 25किन्तु जो
परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता
है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण
भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने
आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये
धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ
पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में है।
उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर के सामने
सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं
की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये और स्वयं को कोई
सांसारिक कलंक न लगने दिया जाये।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में
जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो।
2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की अँगूठी
और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और तभी मैले
कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी आता है। 3और
तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं, उसको विशेष महत्त्व
देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम स्थान पर बैठो", जबकि
उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो, "वहाँ खड़ा रह" या "मेरे
पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा करते हुए क्या तुमने अपने
बीच कोई भेद–भाव नहीं किया और बुरे विचारों के साथ
न्यायकर्ता नहीं बन गये?

5हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार की
आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य
के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका उसने, जो
उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है। 6किन्तु तुमने तो
उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी है। क्या ये धनिक
व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा शोषण करते है और
तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते है? 7 क्या ये वे ही नहीं
हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम की निन्दा करते हैं, जो
तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम व्यवस्था
का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम
करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो"* तो तुम अच्छा ही
करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात दिखाते हो तो तुम पाप
कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था के विधान को तोड़ने
वाला ठहराया जायेगा। 10क्योंकि कोई भी यदि समग्र
व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता
है तो वह समूची व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता
है। 11क्योंकि जिसने यह कहा था, "व्यभिचार मत करो"*
उस ही ने यह भी कहा था, "हत्या मत करो।"* सो यदि
तुम व्यभिचार नहीं करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम
व्यवस्था को तोड़ने वाले हो। 12तुम उन्हीं लोगों के समान
बोलो और उन ही के जैसा आचरण करो जिनका उस
व्यवस्था के अनुसार न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा
मिलता है। 13जो दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का
न्याय भी बिना दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी
है।

विश्वास और सत् कर्म

14हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह
विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके कर्म
विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या उसका
उद्धार कर सकता है? 15यदि भाइयों और बहनों को वस्त्रों
की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक को न हो
16और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से जाओ,
परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को गरमाओ तथा
अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम उनकी देह की
आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो तो फिर इसका क्या
मूल्य है? 17इसी प्रकार यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं है
तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

18किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है,
जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना
विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने
कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" 19क्या तुम विश्वास करते हो

अपने ... हो लैव्य. 19:18

व्यभिचार मत करो निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

हत्या मत करो निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

कि परमेश्वर केवल एक है? अदभुत! दुष्टात्माएँ यह
विश्वास करती है कि परमेश्वर है और वे काँपती रहती
हैं।

[20]अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित
विश्वास व्यर्थ है? [21]क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों
के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया था जब
उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर अर्पित कर दिया
था? [22]तू देख कि उसका वह विश्वास उसके कर्मों के
साथ ही सक्रिय हो रहा था। और उसके कर्मो से ही उसका
विश्वास परिपूर्ण किया गया था। [23]इस प्रकार शास्त्र का
यह कहा पूरा हुआ था, "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास
किया और विश्वास के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा"*
और इसी से वह "परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। [24]तुम
देखो कि केवल विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मो से ही
व्यक्ति धर्मी ठहरता है।

[25]इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने
कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने
घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से कहीं भेज
दिया।

[26]इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है, वैसे
ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने
की इच्छा नहीं करनी चाहिये। तुम जानते ही हो कि
हम शिक्षकों का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया
जायेगा। [2]मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ कि हम सबसे
बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई
भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा
कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता हैं? [3]हम
घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में
रहें। और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर
सकते हैं। [4]अथवा जलयानों का उदाहरण भी लिया जा
सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और
शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाये जाते है, किन्तु एक छोटी
सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना
चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। [5]इसी
प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी
बातें कर डालने की डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल
को जला सकती है। [6]हाँ, जीभ: एक लपट है। यह बुराई
का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक
ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और
हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ
नरक की आग से धधकती रहती है। [7]देखो, हर प्रकार के
हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले
प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते हैं और किये भी
गए हैं। [8]किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर
सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी
चैन से नहीं रहती। [9]हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर
की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की
समरूपता में उत्पन्न किये गये हैं, कोसते भी हैं। [10]एक ही
मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे
भाइयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिये। [11]सोते के एक ही मुहाने
से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल
सकता है। [12]मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या
अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही
नहीं। और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता
है।

सच्चा विवेक

[13]भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है,
उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके कर्म
उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से जुड़ी है।
[14]किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और
स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो।
ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए असत्य बोल
रहे हो। [15]ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त
नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है।
तथा शैतान का है। [16]क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण
महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार
की बुरी बातें रहती हैं। [17]किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान
सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील,
सहज–प्रसन्न, करुणा–पूर्ण होता है। और उससे उत्तम
कर्मों की फ़सल उपजती है। वह पक्षपात–रहित और
सच्चा भी होता है। [18]शांति के लिए काम करने वाले लोगों

इब्राहीम ... ठहरा उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ... मित्र 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण
वातावरण में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई–झगड़े क्यों होते हैं? क्या
उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है?
तुम्हारी वे भोग–विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर
निरन्तर द्वन्द्व करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं
होते? 2तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता।
तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी
जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते
झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं कर
पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते। 3और जब
माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता। क्योंकि
तुम उन्हें अपने भोग–विलास में ही उड़ाने को माँगते हो।
4अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम नहीं जानते कि
संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा ही है?
जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है, वह अपने
आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। 5अथवा क्या तुम
ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही कहता है
कि, "परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी है, वह ईर्ष्या
पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।" 6किन्तु परमेश्वर ने हम
पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसीलिए शास्त्र में कहा
गया है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोधी है, जबकि
दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता है।"* 7इसीलिए अपने
आपको परमेश्वर के अधीन कर दो। शैतान का विरोध
करो, वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा। 8परमेश्वर के
पास आओ, वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने
हाथ शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने
हृदयों को पवित्र करो। 9 शोक करो, विलाप करो और
दुःखी होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल
जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये।
10प्रभु के सामने स्वयं को नवाओ। वह तुम्हें ऊँचा
उठायेगा।

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

11हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद करो।
जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा उसे
दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में बोलता है
और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि तुम व्यवस्था
पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान का पालन करने
वाले नहीं रहते वरन उसके न्यायकर्त्ता बन जाते हो।
12व्यवस्था के विधान को देने वाला और उसका न्याय
करने वाला तो बस एक ही है। और वही रक्षा कर सकता
है और वही नष्ट करता है। तो फिर अपने साथी का न्याय
करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

13ऐसा कहने वालो सुनो, "आज या कल हम इस या उस
नगर में जाकर साल–एक भर वहाँ व्यापार में धन लगा
बहुत सा पैसा बना लेंगे।" 14किन्तु तुम तो इतना भी नहीं
जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा! देखो, तुम
तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को उठती है और
फिर खो जाती है। 15सो इसके स्थान पर तुम्हें तो सदा यही
कहना चाहिये "यदि प्रभु ने चाहा तो हम जीयेंगे और यह या
वह करेंगे।" 16किन्तु स्थिति तो यह है कि तुम तो अपने
आडम्बरों के लिये स्वयं पर गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व
बुरे हैं। 17तो फिर यह जानते हुए भी कि यह उचित है, उसे
नहीं करना पाप है।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने वाली हैं,
उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो।
2तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा
खा ली गयी हैं। 3तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़
गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी
और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी।
तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर रख
दिया है जिसका अंत आने को है। 4देखो, तुम्हारे खेतों में
जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका मेहनताना रोक
रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार कर रहा है और
खेतों में काम करने वालों की वे चीख पुकारें सर्वशक्तिमान
प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं। 5धरती पर तुमने
विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने आपको
भोग–विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार तुमने अपने

परमेश्वर ... है नीति. 3:34

आपको वध किये जाने के दिन के लिये पाल–पोसकर
हृष्ट–पुष्ट कर लिया है। 6तुमने भोले लोगों को दोषी
ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के अभाव में ही उनकी
हत्याएँ कर डालीं।

धैर्य रखो

7सो भाइयो, प्रभु के फिर से आने तक धीरज धरो।
उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की मूल्यवान
उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके लिये वह
आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक निरन्तर धैर्य
के साथ बाट जोहता रहता है। 8तुम्हें भी धैर्य के साथ बाट
जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़ बनाये रखो क्योंकि
प्रभु का दुबारा आना निकट ही है। 9हे भाइयों, आपस में
एक दूसरे की शिकायतें मत करो ताकि तुम्हें अपराधी न
ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्त्ता तो भीतर आने के लिये द्वार
पर ही खड़ा है। 10हे भाइयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद
रखो जिन्होंने प्रभु के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ
झेलने और धैर्य पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। 11ध्यान
रखना, हम उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य
मानते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना ही है
और प्रभु ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी
तुम जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण
है।

सोच विचार कर बोलो

12हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की
अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें
खाना छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिये, और "ना" ना
होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न
पड़े।

प्रार्थना की शक्ति

13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना
करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति–गीत
गाने चाहिये। 14यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे
कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके
लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें
15विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता
है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने
पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। 16इसलिये अपने
पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना
करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की
प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है। 17एलिय्याह
एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा। उसने तीव्रता के साथ
प्रार्थना की कि वर्षा न हो और साढ़े तीन साल तक
धरती पर वर्षा नहीं हुई। 18उसने फिर प्रार्थना की और
आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा धरती ने अपनी फसलें
उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा

19हे मेरे भाइयो, तुममें से कोई यदि सत्य से भटक जाये
और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता होना चाहिये
कि 20जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है वह
उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु से बचाता है और
उसके अनेक पापों के क्षमा किये जाने का कारण बनता
है।

1 पतरस

1 पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का प्रेरित है: परमेश्वर के उन चुने हुए लोगों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया के क्षेत्रों में सब कहीं फैले हुए हैं। 2तुम, जिन्हें परम पिता परमेश्वर के पूर्व–ज्ञान के अनुसार चुना गया है, जो अपनी आत्मा के कार्य द्वारा उसे समर्पित हो, जिन्हें उसके आज्ञाकारी होने के लिए और जिन पर यीशु मसीह के लहू के छिड़काव के पवित्र किये जाने के लिए चुना गया है। तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह और शांति अधिक से अधिक होते रहें।

सजीव आशा

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर धन्य हो। मरे हुओं में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उसकी अपार करुणा में एक सजीव आशा पा लेने के लिये उसने हमें नया जन्म दिया है। 4ताकि तुम तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित रूप से रखे हुए अजर–अमर दोष रहित अविनाशी उत्तराधिकार को पा लो। 5जो विश्वास से सुरक्षित है, उन्हें वह उद्धार जो समय के अंतिम छोर पर प्रकट होने को है, प्राप्त हो। 6इस पर तुम बहुत प्रसन्न हो। यद्यपि अब तुमको थोड़े समय के लिए तरह तरह की परीक्षाओं में पड़कर दुखी होना बहुत आवश्यक है। 7ताकि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग में परखे हुए सोने से भी अधिक मूल्यवान है, उसे जब यीशु मसीह प्रकट होगा तब परमेश्वर से प्रशंसा, महिमा और आदर प्राप्त हो 8यद्यपि तुमने उसे देखा नहीं है, फिर भी तुम उसे प्रेम करते हो। यद्यपि तुम अभी उसे देख नहीं पा रहे हो, किन्तु फिर भी उसमें विश्वास रखते हो और एक ऐसे आनन्द से भरे हुए हो जो अकथनीय एवं महिमामय है। 9और तुम अपने विश्वास के परिणामस्वरूप अपनी आत्मा का उद्धार कर रहे हो। 10इस उद्धार के विषय में उन नबियों ने, बड़े परिश्रम के साथ खोजबीन की है और बड़ी सावधानी के साथ पता लगाया है, जिन्होंने तुम पर प्रकट होने वाले अनुग्रह के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर दी थी। 11उन नबियों ने मसीह की आत्मा से यह जाना जो मसीह पर होने वाले दुःखों को बता रही थी और वह महिमा जो इन दुःखों के बाद प्रकट होगी। यह आत्मा उन्हें बता रही थी। यह बातें इस दुनिया पर कब होंगी और तब इस दुनिया का क्या होगा। 12उन्हें यह दर्शा दिया गया था कि उन बातों का प्रवचन करते हुए वे स्वयं अपनी सेवा नहीं कर रहे थे बल्कि तुम्हारी कर रहे थे। वे बातें स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार का उपदेश देने वालों के माध्यम से बता दी गयी थीं। और उन बातों को जानने के लिए तो स्वर्गदूत तक तरसते हैं।

पवित्र जीवन के लिए बुलावा

13इसलिए मानसिक रूप से सचेत रहो और अपने पर नियन्त्रण रखो। उस वरदान पर पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें दिया जाने को है। 14आज्ञा मानने वाले बच्चों के समान उस समय की बुरी इच्छाओं के अनुसार अपने को मत ढालो जो तुममें पहले थीं, जब तुम अज्ञानी थे। 15बल्कि जैसे तुम्हें बुलाने वाला परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने प्रत्येक कर्म में पवित्र बनो। 16शास्त्र भी ऐसा ही कहता है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"*

17और यदि तुम, प्रत्येक के कर्मों के अनुसार पक्षपात रहित होकर न्याय करने वाले परमेश्वर को हे पिता कह कर पुकारते हो तो इस परदेसी धरती पर अपने निवास काल में सम्मानपूर्ण भय के साथ जीवन जीओ। 18तुम यह जानते हो कि चाँदी या सोने जैसी वस्तुओं से तुम्हें उस व्यर्थ जीवन से छुटकारा नहीं मिल सकता, जो तुम्हें

पवित्र ... हूँ लैव्य. 11:44,45; 19:2; 20:7

तुम्हारे पूर्वजों से मिला है 19बल्कि वह तो तुम्हें निर्दोष और
कलंक रहित मेमने के समान मसीह के बहुमूल्य रक्त से
ही मल सकता है। 20इस जगत की सृष्टि से पहले ही उसे
चुन लिया गया था किन्तु तुम लोगों के लिये उसे इन अंतिम
दिनों में प्रकट किया गया। 21उस मसीह के कारण ही तुम
उस परमेश्वर में विश्वास करते रहे जिसने उसे मरे हुओं
में से पुनर्जीवित कर दिया और उसे महिमा प्रदान की। इस
प्रकार तुम्हारी आशा और तुम्हारा विश्वास परमेश्वर में
स्थिर हो।

22अब देखो जब तुमने सत्य का पालन करते हुए, सच्चे
भाईचारे के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए अपने आत्मा
को पवित्र कर लिया है तो पवित्र मन से तीव्रता के साथ
परस्पर प्रेम करने को अपना लक्ष्य बना लो। 23तुमने
नाशमान बीज से पुनर्जीवन प्राप्त नहीं किया है बल्कि यह
उस बीज का परिणाम है जो अमर है। तुम्हारा पुनर्जन्म
परमेश्वर के उस सुसंदेश से हुआ है जो सजीव और अटल
है। 24क्योंकि शास्त्र कहता है:

"प्राणी तो सभी घास के समान हैं
और उनकी सज-धज
सब घास के फूलों सी
घास सूख जाती है और फूल उड़ जाते हैं
25 किन्तु प्रभु का सुसंदेश
सदा सर्वदा टिका रहता है।"

यशायाह 40:6-8

यह वही सुसंदेश है जिसका तुम्हें उपदेश दिया गया है।

सजीव पत्थर और पवित्र प्रजा

2 इसलिये सभी बुराइयों, छल-छद्मों, पाखण्ड तथा
वैर-विरोधों और परस्पर दोष लगाने से बचे रहो।
2नवजात बच्चों के समान शुद्ध आध्यात्मिक दूध के लिये
लालायित रहो ताकि उससे तुम्हारा विकास और उद्धार
हो। 3अब देखो, तुमने तो प्रभु के अनुग्रह का स्वाद ले ही
लिया है।"

4यीशु मसीह के निकट आओ। वह सजीव "पत्थर"
है। उसे संसारी लोगों ने नकार दिया था किन्तु जो परमेश्वर
के लिये बहुमूल्य है और जो उसके द्वारा चुना गया है।
5तुम भी सजीव पत्थरों के समान एक आध्यात्मिक मन्दिर
के रूप में बनाये जा रहे हो ताकि एक ऐसे पवित्र
याजकमण्डल के रूप में सेवा कर सको जिसका कर्तव्य
ऐसे आध्यात्मिक बलिदान समर्पित करना है जो यीशु
मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। 6शास्त्र में लिखा
है:

"देखो, सिय्योन में एक कोने का
पत्थर रख रहा हूँ,
जो बहुमूल्य है और चुना हुआ है
इस पर जो कोई भी विश्वास करेगा
उसे कभी भी नहीं लजाना पड़ेगा।"

यशायाह 28:16

7इसका मूल्य तो तुम विश्वासियों के लिये है किन्तु उनके
लिये जो विश्वास नहीं करते हैं:

"वही पत्थर जिसे शिल्पियों ने नकारा था
सब से महत्त्वपूर्ण बन गया कोने का सिर।"

भजन संहिता 118:22

8तथा वह बन गया:

"एक पत्थर जहाँ लोग ठोकर खायें
और ऐसी एक चट्टान
जहाँ से जन फिसल जायें।"

यशायाह 8:14

लोग ठोकर खाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन का
पालन नहीं करते और बस यही उनकी नियति रही है।

9किन्तु तुम तो चुने हुए लोग हो याजकों का एक राज्य,
एक पवित्र प्रजा एक ऐसा नर-समूह जो परमेश्वर का
अपना है, ताकि तुम परमेश्वर के अद्भुत कर्मों की घोषणा
कर सको। वह परमेश्वर जिसने तुम्हें अन्धकार से अद्भुत
प्रकाश में बुलाया। 10एक समय था जब तुम प्रजा नहीं थे
किन्तु अब तुम परमेश्वर की प्रजा हो। एक समय था जब
तुम दया के पात्र नहीं थे किन्तु अब तुम पर परमेश्वर ने
दया दिखायी है।

परमेश्वर के लिये जीओ

11हे प्रिय मित्रो, मैं तुमसे, जो इस संसार में अजनबियों के
रूप में हो, निवेदन करता हूँ कि उन शारीरिक इच्छाओं से
दूर रहो जो तुम्हारी आत्मा से जूझती रहती हैं। 12विधर्मियों
के बीच अपना व्यवहार इतना उत्तम बनाये रखो कि चाहे
वे अपराधियों के रूप में तुम्हारी आलोचना करें किन्तु
तुम्हारे उत्तम कर्मों के परिणामस्वरूप परमेश्वर के आने
के दिन वे परमेश्वर को महिमा प्रदान करें।

अधिकारी की आज्ञा मानो

[13]प्रभु के लिये हर मानव अधिकारी के अधीन रहो।
[14]राजा के अधीन रहो। वह सर्वोच्च अधिकारी है। शासकों
के अधीन रहो। उन्हें उसने कुकर्मियों को दण्ड देने और
उत्तम कर्म करने वालों की प्रशंसा के लिये भेजा है। [15]क्योंकि
परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम अपने उत्तम कार्यों से
मूर्ख लोगों की अज्ञान से भरी बातों को चुप करा दो।
[16]स्वतन्त्र व्यक्ति के समान जीओ किन्तु उस स्वतन्त्रता को
बुराई के लिये आड़ मत बनने दो। परमेश्वर के सेवकों के
समान जीओ। [17]सबका सम्मान करो। अपने धर्म भाइयों से
प्रेम करो। परमेश्वर का आदर के साथ भय मानो। शासक
का सम्मान करो।

मसीह की यातना का दृष्टांत

[18]हे सेवको, यथोचित आदर के साथ अपने स्वामियों
के अधीन रहो। न केवल उनके, जो अच्छे हैं और दूसरों
के लिये चिंता करते हैं बल्कि उनके भी जो कठोर हैं।
[19]क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के प्रति सचेत रहते हुए
यातनाएँ सहता है और अन्याय झेलता है तो वह प्रशंसनीय
है। [20]किन्तु यदि बुरे कर्मों के कारण तुम्हें पीटा जाता है
और तुम उसे सहते हो तो इसमें प्रशंसा की क्या बात है।
किन्तु यदि तुम्हें तुम्हारे अच्छे कामों के लिये सताया जाता
है तो परमेश्वर के सामने वह प्रशंसा के योग्य है।
[21]परमेश्वर ने तुम्हें इसीलिये बुलाया है क्योंकि मसीह ने
भी हमारे लिये दुःख उठाये हैं और ऐसा करके हमारे लिए
एक उदाहरण छोड़ा है ताकि हम भी उसी के चरण चिह्नों
पर चल सकें।

22 "उसने कोई पाप नहीं किया
और न ही उसके मुख से कोई
छल की बात ही निकली।"

यशायाह 53:9

[23]जब वह अपमानित हुआ तब उसने किसी का अपमान
नहीं किया, जब उसने दुःख झेले, उसने किसी को धमकी
नहीं दी, बल्कि उस सच्चे न्याय करने वाले परमेश्वर के
आगे अपने आपको अर्पित कर दिया। [24]उसने क्रूस पर
अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़ लिया। ताकि अपने
पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये और जो कुछ नेक है
उसके लिये हम जीयें। यह उसके उन घावों के कारण
ही हुआ जिनसे तुम चंगे किये गये हो। [25]क्योंकि तुम
भेड़ों के समान भटक रहे थे किन्तु अब तुम अपने
गडरिये और तुम्हारी आत्माओं के रखवाले के पास लौट
आये हो।

पत्नी और पति

3 इसी प्रकार हे पत्नियो! अपने अपने पतियों के प्रति
समर्पित रहो। ताकि यदि उनमें से कोई परमेश्वर के
वचन का पालन नहीं करते हों तो तुम्हारे पवित्र और
आदरपूर्ण चाल चलन को देखकर बिना किसी बातचीत
के ही अपनी–अपनी पत्नियों के व्यवहार से जीत लिये
जायें। [3]तुम्हारा साज–श्रृंगार दिखावटी नहीं होना चाहिए।
अर्थात् जो केशों की वेणियाँ सजाने, सोने के आभूषण
पहनने और अच्छे–अच्छे कपड़ों से किया जाता है,
[4]बल्कि तुम्हारा श्रृंगार तो तुम्हारे मन का भीतरी व्यक्तित्व
होना चाहिये जो कोमल और शान्त आत्मा के अविनाशी
सौन्दर्य से युक्त हो। परमेश्वर की दृष्टि में जो मूल्यवान
हो। [5]क्योंकि बीते युग की उन पवित्र महिलाओं का,
अपने आपको सजाने–सँवारने का यही ढंग था, जिनकी
आशाएँ परमेश्वर पर टिकी हैं। वे अपने अपने पति के
अधीन वैसे ही रहा करती थीं [6]जैसे इब्राहीम के अधीन
रहने वाली सारा जो उसे अपना स्वामी मानती थी। तुम भी
बिना कोई भय माने यदि नेक काम करती हो तो उसी की
बेटी हो।

[7]ऐसे ही हे पतियो, तुम अपनी पत्नियों के साथ समझदारी
पूर्वक रहो। उन्हें निर्बल समझ कर, उनका आदर करो।
जीवन के वरदान में उन्हें अपना सह उत्तराधिकारी भी
मानो ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में बाधा न पड़े।

सतकर्मों के लिये दुःख झेलना

[8]अन्त में तुम सब को समानविचार, सहानुभूतिशील,
अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला, दयालु और नम्र बनना
चाहिये। [9]एक बुराई का बदला दूसरी बुराई से मत दो। अथवा
अपमान के बदले अपमान मत करो बल्कि बदले में
आशीर्वाद दो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें ऐसा ही करने को
बुलाया है। इसी से तुम्हें परमेश्वर के आशीर्वाद का
उत्तराधिकारी मिलेगा। [10]शास्त्र कहता है:

"जो जीवन का आनन्द उठाना चाहे
जो समय की सद्‌गति को देखना चाहे
उसे चाहिए वह कभी कहीं बुरे बोल न बोले।

वह अपने अधरों को छल वाणी से रोके
11 उसे चाहिये वह मुँह फेरे
उससे जो नेक नहीं होता
वह उन कर्मों को सदा करे जो उत्तम है,
उसे चाहिये यत्नशील हो शांति पाने को
उसे चाहिये वह शांति का अनुसरण करे
12 प्रभु की आँखें टिकी है उन्हीं पर जो उत्तम हैं
प्रभु के कान लगे उनकी प्रार्थनाओं पर
पर जो बुरे कर्म करते हैं
प्रभु उनसे सदा मुख फेरता है।"

भजन संहिता 34:12−16

13यदि जो उत्तम है तुम उसे ही करने को लालायित
रहो तो भला तुम्हें कौन हानि पहुँचा सकता है? 14किन्तु
यदि तुम्हें भले के लिये दुःख उठाना ही पड़े तो तुम धन्य
हो। "इसलिए उनके किसी भी भय से न तो भयभीत होवो
और न ही विचलित।" 15अपने मन में मसीह को प्रभु के
रुप में आदर दो। तुम सब जिस विश्वास को रखते हो,
उसके विषय में यदि कोई तुमसे पूछे तो उसे उत्तर देने के
लिये सदा तैयार रहो। 16किन्तु विनम्रता और आदर के
साथ ही ऐसा करो। अपना हृदय शुद्ध रखो ताकि यीशु
मसीह में तुम्हारे उत्तम आचरण की निन्दा करने वाले
लोग तुम्हारा अपमान करते हुए लजायें। 17यदि परमेश्वर
की इच्छा यही है कि तुम दुःख उठाओ तो उत्तम कार्य
करते हुए दुःख झेलो न कि बुरे काम करते हुए। 18क्योंकि
मसीह ने भी हमारे पापों के लिये दुःख उठाया। अर्थात् वह
जो निर्दोष था हम पापियों के लिये एक बार मर गया कि
हमें परमेश्वर के समीप ले जाये। शरीर के भाव से तो
वह मारा गया पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।
19आत्मा की स्थिति में ही उसने जाकर उन स्वर्गीय
आत्माओं को जो बंदी थीं उन बंदी आत्माओं को संदेश
दिया 20जो उस समय परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने
वाली थीं जब नूह की नाव बनायी जा रही थी और परमेश्वर
धीरज के साथ प्रतीक्षा कर रहा था उस नाव में थोड़े से
अर्थात् केवल आठ−व्यक्ति ही पानी से बच पाये थे। 21यह
पानी उस बपतिस्मा के समान है जिससे अब तुम्हारा उद्धार
होता है। इस में शरीर का मैल छुड़ाना नहीं, वरन एक शुद्ध
अन्तःकरण के लिये परमेश्वर से विनती है। अब तो
बपतिस्मा तुम्हे यीशु मसीह वे पुनरूत्थान के द्वारा बचाता
है। 22वह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने विराजमान है, और
अब स्वर्गदूत, अधिकारीगण और सभी शक्तियाँ उसके
अधीन कर दी गयी हैं।

बदला हुआ जीवन

4 जब मसीह ने शारीरिक दुःख उठाया तो तुम भी
उसी मानसिकता को शस्त्र के रूप में धारण करो
क्योंकि जो शारीरिक दुःख उठाता है, वह पापों से छुटकारा
पा लेता है। 2इसलिए वह फिर मानवीय इच्छाओं का
अनुसरण न करे, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार
कर्म करते हुए अपने शेष भौतिक जीवन को समर्पित कर
दे। 3क्योंकि तुम अब तक अबोध व्यक्तियों के समान
विषय−भोगों, वासनाओं, पियक्कड़पन, उन्माद से भरे
आमोद−प्रमोदों, मधुपान−उत्सवों और घृणा−पूर्ण
मूर्ति−पूजाओं में पर्याप्त समय बिता चुके हो। 4अब जब तुम
इस घृणित रहन−सहन में उनका साथ नहीं देते हो तो उन्हें
आश्चर्य होता है। वे तुम्हारी निन्दा करते हैं। 5उन्हें जो अभी
जीवित हैं या मर चुके हैं, अपने व्यवहार का लेखा−जोखा
उस मसीह को देना होगा जो उनका न्याय करने वाला है।
6इसीलिए उन विश्वासियों को जो मर चुके हैं, सुसमाचार
का उपदेश दिया गया कि शारीरिक रूप से चाहे उनका
न्याय मानवीय स्तर पर हो किन्तु आत्मिक रूप से वे
परमेश्वर के अनुसार रहें।

अच्छे प्रबन्ध−कर्ता बनो

7वह समय निकट है जब सब कुछ का अंत हो जायेगा।
इसलिये समझदार बनो और अपने पर काबू रखो ताकि
तुम्हें प्रार्थना करने में सहायता मिले। 8और सबसे बड़ी बात
यह है कि एक दूसरे के प्रति निरन्तर प्रेम बनाये रखो
क्योंकि प्रेम से अनगिनत पापों का निवारण होता है। 9बिना
कुछ कहे सुने एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो। 10जिस
किसी को परमेश्वर की ओर से जो भी वरदान मिला है,
उसे चाहिये कि परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम
प्रबन्धकों के समान, एक दूसरे की सेवा के लिए उसे काम
में लाये। 11जो कोई प्रवचन करे, वह ऐसे करे, जैसे मानो
परमेश्वर से प्राप्त वचनों को ही सुना रहा हो। जो कोई सेवा
करे, वह उस शक्ति के साथ करे, जिसे परमेश्वर प्रदान
करता है ताकि सभी बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर
की महिमा हो। महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा उसी की
है। आमीन!

मसीही के रूप में दुःख उठाना

12हे प्रिय मित्रो, तुम्हारे बीच की इस अग्नि-परीक्षा
पर जो तुम्हें परखने को है, ऐसे अचरज मत करना जैसे
तुम्हारे साथ कोई अनहोनी घट रही हो, 13बल्कि आनन्द
मनाओ कि तुम मसीह की यातनाओं में हिस्सा बटा रहे
हो। ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो तब तुम भी
आनन्दित और मगन हो सको। 14यदि मसीह के नाम पर
तुम अपमानित होते हो तो उस अपमान को सहन करो
क्योंकि तुम मसीह के अनुयायी हो, तुम धन्य हो क्योंकि
परमेश्वर की महिमावान आत्मा तुममें निवास करती है।
15सो तुममें से कोई भी एक हत्यारा, चोर, कुकर्मी अथवा
दूसरे के कामों में बाधा पहुँचाने वाला बनकर दुःख न
उठाये। 16किन्तु यदि वह एक मसीही होने के नाते दुःख
उठाता है तो उसे लज्जित नहीं होना चाहिये; बल्कि उसे तो
परमेश्वर को महिमा प्रदान करनी चाहिये कि वह इस
नाम को धारण करता है। 17क्योंकि परमेश्वर के अपने
परिवार से ही आरम्भ होकर न्याय प्रारम्भ करने का समय
आ पहुँचा है। और यदि यह हमसे ही प्रारम्भ होता है तो
जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं किया है,
उनका परिणाम क्या होगा? 18और "यदि एक धार्मिक व्यक्ति
का ही उद्धार पाना कठिन है तो परमेश्वर विहीन और
पापियों के साथ क्या घटेगा।"* 19तो फिर जो परमेश्वर
की इच्छानुसार दुःख उठाते हैं, उन्हें उत्तम कार्य करते हुए,
उस विश्वास मय, सृष्टि के रचयिता को अपनी-अपनी
आत्माएँ सौंप देनी चाहियें।

परमेश्वर का जन-समूह

5 अब मैं तुम्हारे बीच जो बुजुर्ग हैं, उनसे निवेदन
करता हूँ: (मैं, जो स्वयं एक बुजुर्ग हूँ और मसीह ने
जो यातनाएँ झेली हैं, उनका साक्षी हूँ तथा वह भावी
महिमा जो प्रकट होने को है, उसका सहभागी हूँ) 2राह
दिखाने वाले परमेश्वर का जन-समूह तुम्हारी देख-रेख
में है और निरीक्षक के रूप में तुम उसकी सेवा करते हो;
किसी दबाव के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की
इच्छानुसार ऐसा करने की स्वेच्छा के कारण तुम अपना
यह काम धन के लालच में नहीं बल्कि सेवा करने के
प्रति अपनी तत्परता के कारण करते हो। 3देखरेख के
लिये जो तुम्हें सौंपे गये हैं, तुम उनके कठोर निरंकुश
शासक मत बनो। बल्कि लोगों के लिये एक आदर्श बनो।
4ताकि जब वह प्रधान रखवाला प्रकट हो तो तुम्हें विजय
का वह भव्य मुकुट प्राप्त हो जिसकी शोभा कभी घटती
नहीं है।

5इसी प्रकार हे नव युवको! तुम अपने धर्मवृद्धों के
अधीन रहो। तुम एक दूसरे के प्रति विनम्रता धारण करो,
क्योंकि

> "परमेश्वर अभिमानी का विरोध करता है
> किन्तु दीन जनों पर सदा अनुग्रह रहता है।"
>
> *नीतिवचन 3:34*

6इसलिए परमेश्वर के महिमावान हाथ के नीचे अपने
आपको नवाओ। ताकि वह उचित अवसर आने पर तुम्हें
ऊँचा उठाये। 7तुम अपनी सभी चिंताएँ उस पर छोड़ दो
क्योंकि वह तुम्हारे लिये चिंतित है।

8अपने पर नियन्त्रण रखो। सावधान रहो। तुम्हारा शत्रु
शैतान एक गरजते सिंह के समान इधर-उधर घूमते हुए
इस ताक में रहता है कि जो मिले उसे फाड़ खाये। 9उसका
विरोध करो और अपने विश्वास पर डटे रहो क्योंकि तुम
तो जानते ही हो कि समूचे संसार में तुम्हारे भाई बहन ऐसी
ही यातनाएँ झेल रहे हैं।

10किन्तु सम्पूर्ण अनुग्रह का स्रोत परमेश्वर जिसने तुम्हें
यीशु मसीह में अनन्त महिमा का सहभागी होने के लिये
बुलाया है, तुम्हारे थोड़े समय यातनाएँ झेलने के बाद स्वयं
ही तुम्हें फिर से स्थापित करेगा, समर्थ बनाएगा और स्थिरता
प्रदान करेगा। 11उसकी शक्ति अनन्त है। आमीन।

पत्र का समापन

12मैंने तुम्हें यह छोटा-सा पत्र, सिलवानुस के सहयोग
से, जिसे मैं अपना विश्वासपूर्ण भाई मानता हूँ, तुम्हें
प्रोत्साहित करने के लिये कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह
यही है, इस बात की साक्षी देने के लिए लिखा है। इसी पर
डटे रहो।

13बेबिलोन की कलीसिया जो तुम्हारे ही समान परमेश्वर
द्वारा चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार कहती है। मसीह में मेरे
पुत्र मरकुस का भी तुम्हें नमस्कार। 14प्रेमपूर्ण चुम्बन से
एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो।

तुम सब को, जो मसीह में हो, शान्ति मिले।

यदि एक ... घटेगा नीति. 11:31

2 पतरस

1 यीशु मसीह के सेवक तथा प्रेरित शमौन पतरस की ओर से उन लोगों के नाम जिन्हें परमेश्वर से हमारे जैसा ही विश्वास प्राप्त है। क्योंकि हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह न्यायपूर्ण हैं।

2तुम परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान चुके हो इसलिए तुम्हें परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह अधिक से अधिक प्राप्त हों।

परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है

3अपने जीवन के लिये और परमेश्वर की सेवा के लिये जो कुछ हमें चाहिये, अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा उसने सब कुछ हमें दिया है। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने अपनी धार्मिकता और महिमा के कारण हमें बुलाया है। 4इन्हीं के द्वारा उसने हमें वे महान और अमूल्य वरदान दिये हैं, जिन्हें देने की उसने प्रतिज्ञा की थी ताकि उनके द्वारा तुम स्वयं परमेश्वर के समान हो जाओ और उस विनाश से बच जाओ जो लोगों की बुरी इच्छाओं के कारण इस जगत में स्थित है।

5सो इसीलिये अपने विश्वास में उत्तम गुणों को, उत्तम गुणों में ज्ञान को, 6ज्ञान में आत्मसंयम को, आत्मसंयम में धैर्य को, धैर्य में परमेश्वर की भक्ति को, 7भक्ति में भाईचारे को और भाईचारे में प्रेम को उदारता के साथ बढ़ाते चलो। 8क्योंकि यदि ये गुण तुममें हैं और उनका विकास हो रहा है तो वे तुम्हें कर्मशील और सफल बना देंगे तथा उनसे तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा 9किन्तु जिसमें ये गुण नहीं हैं, उसमें दूर-दृष्टि नहीं है, वह अन्धा है। तथा वह यह भूल चुका है कि उसके पूर्व पापों को धोया जा चुका है।

10इसलिये हे भाइयो, यह दिखाने के लिये और अधिक तत्पर रहो कि तुम्हें वास्तव में परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है और चुना गया है क्योंकि यदि तुम इन बातों को करते हो तो न कभी ठोकर खाओगे और न ही गिरोगे 11और इस प्रकार हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हें प्रवेश देकर परमेश्वर अपनी उदारता दिखायेगा।

12इसी कारण मैं तुम्हें, यद्यपि तुम उन्हें जानते ही हो और जो सत्य तुम्हें मिला है, उस पर टिके भी हुए हो, इन बातों को सदा याद दिलाता रहूँगा। 13मैं जब तक इस काया में हूँ, तुम्हें याद दिलाकर सचेत करते रहने को उचित समझता हूँ। 14क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मुझे अपनी इस काया को शीघ्र ही छोड़ देना है। जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे समझाया है। 15इसलिये मैं भरसक प्रयत्न करूँगा कि मेरे मर जाने के बाद भी तुम इन बातों को सदा याद कर सको।

हमने मसीह की महिमा के दर्शन किये हैं

16जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के समर्थ आगमन के विषय में हमने तुम्हें बताया था, तब चतुरतापूर्वक गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया था क्योंकि हम तो उसकी महानता के स्वयं साक्षी हैं। 17जब परम पिता परमेश्वर से उसने सम्मान और महिमा प्राप्त की तो उस दिव्य-महिमा से विशिष्ट वाणी प्रकट हुई-"यह मेरा प्रिय पुत्र है, मैं इससे प्रसन्न हूँ।" 18हमने आकाश से आयी वह वाणी सुनी थी। तब हम पवित्र पर्वत पर उसके साथ ही थे।

19हमें भी नबियों के वचन पर और अधिक आस्था हुई। इस पर ध्यान देकर तुम भी अच्छा कर रहे हो क्योंकि यह तो एक प्रकाश है, जो एक अन्धेरे स्थान में तब तक चमक रहा है जब तक पौ फटती है और तुम्हारे हृदयों में भोर के तारे का उदय होता है। 20किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी नबी के निजी विचारों का परिणाम नहीं है 21क्योंकि कोई मनुष्य जो

कहना चाहता है, उसके अनुसार भविष्यवाणी नहीं होती।
बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मनुष्य परमेश्वर की
वाणी बोलते हैं।

झूठे शिक्षक

2 जैसा भी रहा हो उन संत जनों के बीच जैसे झूठे
नबी दिखाई पड़ने लगे थे बिलकुल वैसे ही झूठे
नबी तुम्हारे बीच भी प्रकट होंगे। वे घातक धारणओं का
सूत्र–पात करेंगे और उस स्वामी तक को नकार देंगे
जिसने उन्हें स्वतन्त्रता दिलायी। ऐसा करके वे अपने शीघ्र
विनाश को निमन्त्रण देंगे। 2बहुत से लोग उनकी
भोग–विलास की प्रवृत्तियों का अनुसरण करेंगे। उनके
कारण सच्चाई का मार्ग बदनाम होगा। 3लोभ के कारण
अपनी बनावटी बातों से वे तुमसे धन कमाएँगे। उनका दंड
परमेश्वर के द्वारा बहुत पहले से निर्धारित किया जा
चुका है। उनका विनाश तैयार है और उनकी प्रतीक्षा कर
रहा है।

4क्योंकि परमेश्वर ने पाप करने वाले दूतों तक को
जब नहीं छोड़ा और उन्हें पाताल लोक की अन्धेरे से
भरी कोठरियों में डाल दिया कि वे न्याय के दिन तक
वहीं पड़े रहें। 5उसने उस पुरातन संसार को भी नहीं छोड़ा
किन्तु नूह की उस समय रक्षा की जब अधर्मियों के
संसार पर जल–प्रलय भेजी गयी थी। नूह उन आठ
व्यक्तियों में से एक था जो जल प्रलय से बचे थे। धार्मिकता
का प्रचारक नूह उपदेश दिया करता था। 6सदोम और
अमोरा जैसे नगरों को विनाश का दण्ड देकर राख
बना डाला गया ताकि अधर्मी लोगों के साथ जो बातें
घटेंगी, उनके लिये यह एक चेतावनी ठहरे।

7उसने लूत को बचा लिया जो एक नेक पुरूष था। वह
उद्दण्ड लोगों के अनैतिक आचरण से दु:खी रहा करता
था। 8वह धर्मी पुरुष उनके बीच रहते हुए दिन–प्रतिदिन
जैसा देखता था और सुनता था, उससे उनके व्यवस्था रहित
कर्मों के कारण, उसकी सच्ची आत्मा तड़पती रहती थी।
9इस प्रकार प्रभु जानता है कि भक्तों को न्याय के दिन तक
कैसे बचाया जाता है और दुष्टों को दण्ड के लिये कैसे रखा
जाता है। 10विशेषकर उनको जो अपनी पापपूर्ण प्रकृति की
बुरी वासनाओं के पीछे चलते हैं और प्रभु की प्रभुता से
घृणा रखते हैं। ये उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी हैं। ये महिमावान
स्वर्गदूतों का अपमान करने से भी नहीं डरते। 11जबकि ये
स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में इन लोगों से बड़े हैं, प्रभु
के सामने उन पर कोई निन्दापूर्ण दोष नहीं लगाते। 12किन्तु
ये लोग तो विचारहीन पशुओं के समान हैं जो अपनी
सहजवृत्ति के अनुसार काम करते हैं। जिनका जन्म ही
इसलिये होता है कि वे पकड़े जायें और मार डाले जायें।
वे उन विषयों के विरोध में बोलते हैं, जिनके बारे में वे
अबोध हैं। जैसे पशु मार डाले जाते हैं, वैसे ही इन्हें भी
नष्ट कर दिया जायेगा। 13इन्हें बुराई का बदला बुराई से
मिलेगा। दिन के प्रकाश में भोग–विलास करना इन्हें
भाता है। ये लज्जापूर्ण धब्बे हैं। ये लोग जब तुम्हारे साथ
उत्सवों में सम्मिलत होते हैं तो 14ये सदा किसी ऐसी स्त्री
की ताक में रहते हैं जिसके साथ व्यभिचार किया जा
सके। इस प्रकार इनकी आँखें पाप करने से बाज़ नहीं
आतीं। ये अस्थिर लोगों को पाप के लिये फुसला लेते हैं।
इनके मन पूरी तरह लालच के आदी हैं। ये अभिशाप के
पुत्र हैं। 15सीधा–सादा मार्ग छोड़कर ये भटक गये हैं। बओर
के बेटे बिलाम के मार्ग पर ये लोग अग्रसर हैं; बिलाम, जिसे
बदी की मज़दूरी प्यारी थी। 16किन्तु उसके बुरे कामों के
लिये एक गदही, जो बोल नहीं पाती, मनुष्य की वाणी में
बोली और उसे डाँटा फटकारा तथा उस नबी के उन्मादपूर्ण
काम को रोका।

17ये झूठे उपदेशक सूखे जल–स्रोत हैं तथा ऐसे जल
रहित बादल हैं जिन्हें तूफ़ान उड़ा ले जाता है। इनके लिये
सघन अन्धकारपूर्ण स्थान निश्चित किया गया है। 18ये
उन्हें जो भटके हुओं से बच निकलने का अभी आरम्भ
ही कर रहे हैं, अपनी व्यर्थ की अहंकारपूर्ण बातों से
उनकी भौतिक वासनापूर्ण इच्छाओं को जगा कर सत् पथ
से डिगा लेते हैं। 19ये झूठे उपदेशक उन्हें छुटकारे का
वचन देते हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति जो उसे जीत लेता है,
वह उसी का दास हो जाता है।

20सो यदि ये हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह
को जान लेने और संसार के खोट से बच निकलने
के बाद भी फिर से उन ही में फंस कर जगत की
बदी से हार गये हैं, तो उनके लिये उनकी यह बाद
की स्थिति, उनकी पहली स्थिति से कहीं बुरी है
21क्योंकि उनके लिये यही अच्छा था कि वे इस
धार्मिकता के मार्ग को जान ही नहीं पाते बजाय इसके
कि जो पवित्र आज्ञा उन्हें दी गयी थी, उसे जानकर
उससे मुँह फेर लेते। 22उनके साथ तो वैसे ही घटी

जैसे कि उन सच्ची कहावतों में कहा गया है: "कुत्ता अपनी उल्टी के पास ही लौटता है।"* और "एक नहलायी हुई सुअरनी कीचड़ में लोट लगाने के लिये फिर लौट जाती है।"

यीशु फिर आयेगा

3 हे प्यारे मित्रो, अब यह दूसरा पत्र है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ। इन दोनों पत्रों में उन बातों को याद दिलाकर मैंने तुम्हारे पवित्र हृदयों को जगाने का जतन किया है 2ताकि तुम पवित्र नबियों द्वारा अतीत में कहे गये वचनों को याद करो और हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता के आदेशों का, जो तुम्हारे प्रेरितों द्वारा तुम्हें दिये गये हैं, ध्यान रखो। 3सबसे पहले तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि अंतिम दिनों में स्वेच्छाचारी हँसी उड़ाने वाले हँसी उड़ाते हुए आयेंगे 4और कहेंगे–"क्या हुआ उसके फिर से आने की प्रतिज्ञा का? क्योंकि हमारे पूर्वज तो चल बसे। पर जब से सृष्टि बनी है, हर बार, वैसे की वैसी ही चली आ रही है।" 5किन्तु जब वे यह आक्षेप करते हैं तो वे यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर के वचन द्वारा आकाश युगों से विद्यमान है और पृथ्वी जल में से बनी और जल में स्थिर है, 6और इसी से उस युग का संसार जल प्रलय से नष्ट हो गया। 7किन्तु यह आकाश और यह धरती जो आज अपने अस्तित्व में हैं, उसी आदेश के द्वारा अग्नि के द्वारा नष्ट होने के लिये सुरक्षित हैं। इन्हें उस दिन के लिए रखा जा रहा है जब अधर्मी लोगों का न्याय होगा और वे नष्ट कर दिये जायेंगे।

8पर प्यारे मित्रो! इस एक बात को मत भूलो: प्रभु के लिये एक दिन हज़ार साल के बराबर हैं और हज़ार साल एक दिन जैसे हैं। 9प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में देर नहीं लगाता। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। बल्कि वह हमारे प्रति धीरज रखता है क्योंकि वह किसी भी व्यक्ति को नष्ट नहीं होने देना चाहता। बल्कि वह तो चाहता है कि सभी मन फिराव की ओर बढ़ें।

10किन्तु प्रभु का दिन चुपके से चोर की तरह आयेगा। उस दिन एक भयंकर गर्जना के साथ आकाश विलीन हो जायेंगे और आकाशीय पिंड आग में जलकर नष्ट हो जाएंगे तथा यह धरती और इस धरती पर की सभी वस्तुएँ जल जाएगी। 11क्योंकि जब ये सभी वस्तुएँ इस प्रकार नष्ट होने को जा रही हैं तो सोचो तुम्हें किस प्रकार का बनना चाहिये? (तुम्हें पवित्र जीवन जीना चाहिये, पवित्र जीवन जो परमेश्वर को अर्पित है तथा हर प्रकार के उत्तम कर्म करने चाहियें)। 12और तुम्हें परमेश्वर के दिन की बाट जोहनी चाहिए और उस दिन को लाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। उस दिन के आते ही आकाश लपटों में जल कर नष्ट हो जायेगा और आकाशीय पिण्ड उस ताप से पिघल उठेंगे। 13किन्तु हम परमेश्वर के वचन के अनुसार ऐसे नये आकाश और नयी धरती की बाट जोह रहे हैं जहाँ धार्मिकता निवास करती है।

14इसलिये हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम इन बातों की बाट जोह रहे हो, पूरा प्रयत्न करो कि प्रभु की दृष्टि में और शांति में निर्दोष और कलंक रहित पाये जाओ। 15हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो। जैसा कि हमारे प्रिय बन्धु पौलुस ने परमेश्वर के द्वारा दिये गये विवेक के अनुसार तुम्हें लिखा था। 16अपने अन्य सभी पत्रों के समान उस पत्र में उसने इन बातों के विषय में कहा है। उन पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है। अज्ञानी और अस्थिर लोग उनके अर्थ का अनर्थ करते हैं। दूसरे शास्त्रों के साथ भी वे ऐसा ही करते हैं। इससे वे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

17सो हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम्हें ये बातें पहले से ही पता हैं इसलिये सावधान रहो कि तुम बुराइयों और व्यवस्थाहीन लोगों के द्वारा भटकाये जा कर अपनी स्थिर स्थिति से डिग न जाओ। 18बल्कि हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता यीशु मसीह की अनुग्रह और ज्ञान में तुम आगे बढ़ते जाओ। अब और अनन्त समय तक उसकी महिमा होती रहे।

कुत्ता ... है नीति. 26:111

1 यूहन्ना

1 यह सृष्टि के आरम्भ से ही था:
हमने इसे सुना है,
अपनी आँखों से देखा, ध्यान से निहारा,
और इसे स्वयं अपने ही हाथों से
हमने इसे छुआ है।
हम उस वचन के विषय में बता रहे हैं जो जीवन है। 2उसी
जीवन का ज्ञान हमें कराया गया। हमने उसे देखा। हम
उसके साक्षी हैं और अब हम तुम लोगों को उसी अनन्त
जीवन की उद्घोषणा कर रहे हैं जो पिता के साथ था और
हमें जिसका बोध कराया गया। 3हमने उसे देखा है और
सुना है। अब तुम्हें भी उसी का उपदेश दे रहे हैं ताकि तुम
भी हमारे साथ सहभागिता रखो। हमारी यह सहभागिता
परम पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। 4हम
इन बातों को तुम्हें इसलिए लिख रहे हैं कि हमारा आनन्द
परिपूर्ण हो जाये।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

5हमने यीशु मसीह से जो सुसमाचार सुना है, वह यह
है: और इसे ही हम तुम्हें सुना रहे हैं: परमेश्वर प्रकाश है
और उसमें लेशमात्र भी अंधकार नहीं है। 6यदि हम कहें
कि हम उसके साझी हैं और पाप के अन्धकारपूर्ण जीवन
को जीते रहें तो हम झूठ बोल रहे हैं और सत्य का
अनुसरण नहीं कर रहे हैं। 7किन्तु यदि हम अब प्रकाश में
आगे बढ़ते हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है–तो हम
विश्वासी के रूप में एक दूसरे के सहभागी हैं। और
परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध कर
देता है।

8यदि हम कहते हैं कि हममें कोई पाप नहीं है तो हम
स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और हममें सच्चाई नहीं है।

9यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो
हमारे पापों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर विश्वसनीय
है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों से
हमें शुद्ध करता है। 10यदि हम कहते हैं कि हमने कोई पाप
नहीं किया तो हम परमेश्वर को झूठा बनाते हैं और उसका
वचन हम में नहीं है।

यीशु हमारा सहायक है

2 मेरे प्यारे पुत्र-पुत्रियों, ये बातें मैं तुम्हें इसलिए
लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई
पाप करता है तो परमेश्वर के सामने हमारे पापों का बचाव
करने वाला एक है और वह है धर्मी यीशु मसीह। 2वह एक
बलिदान है जो हमारे पापों का हरण करता है न केवल
हमारे पापों का बल्कि समूचे संसार के पापों का।

3यदि हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं तो
यही वह मार्ग है जिससे हम निश्चय करते हैं कि हमने
सचमुच उसे जान लिया है। 4यदि कोई कहता है कि, "मैं
परमेश्वर को जानता हूँ!" और उसकी आज्ञाओं का पालन
नहीं करता तो वह झूठा है। उसके मन में सत्य नहीं है।
5किन्तु यदि कोई परमेश्वर के उपदेश का पालन करता है
तो उसमें परमेश्वर के प्रेम ने परिपूर्णता पा ली है। यही वह
मार्ग है जिससे हमें निश्चय होता है कि हम परमेश्वर में
स्थित हैं: 6जो यह कहता है कि वह परमेश्वर में स्थित है,
उसे यीशु के जैसा जीवन जीना चाहिये।

सबसे प्रेम करो

7हे प्यारे मित्रो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ
बल्कि यह एक सनातन आज्ञा है, जो तुम्हें प्रारम्भ में ही दे
दी गयी थी। यह पुरानी आज्ञा वह सुसंदेश है जिसे तुम सुन
चुके हो। 8मैं तुम्हें एक और दूसरी नयी आज्ञा लिख रहा हूँ।
इस तथ्य का सत्य मसीह के जीवन में और तुम्हारे जीवनों
में उजागर हुआ है क्योंकि अन्धकार विलीन हो रहा है
और सच्चा प्रकाश तो चमक ही रहा है।

9जो कहता है, "वह प्रकाश में स्थित है और फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, तो वह अब तक अंधकार में बना हुआ है। 10जो अपने भाई को प्रेम करता है, प्रकाश में स्थित रहता है। उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे कोई पाप में पड़े। 11किन्तु जो अपने भाई से घृणा करता है, अँधेरे में है। वह अन्धकारपूर्ण जीवन जी रहा है। वह नहीं जानता, वह कहाँ जा रहा है। क्योंकि अँधेरे ने उसे अंधा बना दिया है।

12 हे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि यीशु मसीह के कारण
तुम्हारे पाप क्षमा किये गये हैं।
13 हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम, जो अनादि काल से स्थित है
उसे जानते हो।
हे युवको, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।
14 हे बच्चो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम पिता को पहचान चुके हो।
हे पिताओ, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम जो सृष्टि के
अनादि काल से स्थित है, उसे जान गये हो।
हे नौजवानो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम शक्तिशाली हो,
परमेश्वर का वचन तुम्हारे भीतर
निवास करता है और तुमने उस
दुष्ट आत्मा पर विजय पा ली है।

15संसार को अथवा सांसारिक वस्तुओं को प्रेम मत करते रहो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं है 16क्योंकि इस संसार की हर वस्तु:

जो तुम्हारे पापपूर्ण स्वभाव को आकर्षित करती है,
तुम्हारी आँखों को भाती है और इस संसार की
प्रत्येक वह वस्तु, जिस पर लोग इतना गर्व करते हैं।

परम पिता की ओर से नहीं है बल्कि वह तो सांसारिक है। 17यह संसार अपनी लालसाओं और इच्छाओं समेत विलीन होता जा रहा है किन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करता है, अमर हो जाता है।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

18हे प्रिय बच्चो, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है! और जैसा कि तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आ रहा है। सो अब अनेक मसीह–विरोधी प्रकट हो गये हैं। इसी से हम जानते हैं कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है। 19मसीह के विरोधी हमारे ही भीतर से निकले हैं पर वास्तव में वे हमारे नहीं हैं क्योंकि यदि वे सचमुच हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते। किन्तु वे हमें छोड़ गये ताकि वे यह दिखा सकें कि उनमें से कोई भी वास्तव में हमारा नहीं है।

20किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने आत्मा के द्वारा अभिषेक कराया है। इसीलिये तुम सब सत्य को जानते हो। 21मैंने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को नहीं जानते हो? बल्कि तुम तो उसे जानते हो और इसलिये भी कि सत्य से कोई झूठ नहीं निकलता।

22किन्तु जो यह कहता है कि यीशु मसीह नहीं है, वह झूठा है। ऐसा व्यक्ति मसीह का शत्रु है। वह तो पिता और पुत्र दोनों को नकारता है। 23वह जो पुत्र को नकारता है, उसके पास पिता भी नहीं है किन्तु जो पुत्र को मानता है, वह पिता को भी मानता है।

24जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुमने अनादि काल से जो सुना है, उसे अपने भीतर बनाये रखो। जो तुमने अनादि काल से सुना है,यदि तुममें बना रहता है तो तुम पुत्र और पिता दोनों में स्थित रहोगे। 25उसने हमें अनन्त जीवन प्रदान करने का वचन दिया है।

26मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिख रहा हूँ, जो तुम्हें छलने का जतन कर रहे हैं। 27किन्तु जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुममें तो उस परम पवित्र से प्राप्त अभिषेक वर्तमान है, इसलिये तुम्हें तो आवश्यकता ही नहीं है कि कोई तुम्हें उपदेश दे, बल्कि तुम्हें तो वह आत्मा जिससे उस परम पवित्र ने तुम्हारा अभिषेक किया है, तुम्हें सब कुछ सिखाती है। (और याद रखो, वही सत्य है, वह मिथ्या नहीं है।) उसने तुम्हें जैसे सिखाया है, तुम मसीह में वैसे ही बने रहो।

28सो प्यारे बच्चो, उसी में बने रहो ताकि जब हमें उसका ज्ञान हो तो हम आत्मविश्वास पा सकें। और उसके पुन: आगमन के समय हमें लज्जित न होना पड़े। 29यदि तुम यह जानते हो कि वह नेक है तो तुम यह भी जान लो कि वह जो धार्मिकता पर चलता है परमेश्वर की ही सन्तान है।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

3 विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र-पुत्री कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसीलिये संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता। 2हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं कि मसीह के पुन: प्रकट होने पर हम उसी के समान हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे। 3हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र है।

4जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को तोड़ता है क्योंकि नियम का तोड़ना ही पाप है। 5तुम तो जानते ही हो कि मसीह लोगों के पापों को हरने के लिये ही प्रकट हुआ। और यह भी, कि उसमें कोई पाप नहीं है। 6जो कोई मसीह में बना रहता है, पाप नहीं करता रहता और हर कोई जो पाप करता रहता है, उसने न तो उसके दर्शन किये हैं और न ही कभी उसे जाना है।

7हे प्यारे बच्चो, तुम कहीं छले न जाओ। वह जो धर्म पूर्वक आचरण करता रहता है, धर्मी है। ठीक वैसे ही जैसे मसीह धर्मी है। 8वह जो पाप करता ही रहता है, शैतान का है क्योंकि शैतान अनादि काल से पाप करता चला आ रहा है। इसीलिये परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ कि वह शैतान के काम को नष्ट कर दे।

9जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है। 10परमेश्वर की संतान कौन है? और शैतान के बच्चे कौन से हैं? तुम उन्हें इस प्रकार जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर का नहीं है।

परस्पर प्रेम से रहो

11यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही सुना है कि हमें परस्पर प्रेम रखना चाहिये। 12हमें कैन* के जैसा नहीं बनना चाहिये जो उस दुष्टात्मा से सम्बन्धित था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। उसने अपने भाई को भला क्यों मार डाला? उसने इसलिये ऐसा किया कि उसके कर्म बुरे थे जबकि उसके भाई के कर्म धार्मिकता के।

13हे भाइयो, यदि संसार तुमसे घृणा करता है, तो अचरज मत करो। 14हमें पता है कि हम मृत्यु के पार जीवन में आ पहुँचे हैं क्योंकि हम अपने बन्धुओं से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में स्थित है। 15प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई से घृणा करता है, हत्यारा है और तुम तो जानते ही हो कि कोई हत्यारा अपनी सम्पत्ति के रूप में अनन्त जीवन को नहीं रखता। 16मसीह ने हमारे लिये अपना जीवन त्याग दिया। इसी से हम जानते हैं कि प्रेम क्या है? हमें भी अपने भाइयों के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देने चाहियें। 17सो जिसके पास भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को अभावग्रस्त देखकर भी उस पर दया नहीं करता, उसमें परमेश्वर का प्रेम है-यह कैसे कहा जा सकता है? 18हे प्यारे बच्चो, हमारा प्रेम केवल शब्दों और बातों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि वह कर्ममय और सच्चा होना चाहिए।

19इसी से हम जान लेंगे कि हम सत्य के हैं और परमेश्वर के आगे अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे। 20बुरे कामों के लिये हमारा मन जब भी हमारा निषेध करता है तो यह इसलिये होता है कि परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है और वह सब कुछ को जानता है।

21हे प्यारे बच्चो, यदि कोई बुरा काम करते समय हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराता तो परमेश्वर के सामने हमें विश्वास बना रहता है। 22और जो कुछ हम उससे माँगते हैं, उसे पाते हैं। क्योंकि हम उसके आदेशों पर चल रहे हैं और उन्हीं बातों को कर रहे हैं, जो उसे भाती हैं। 23उसका आदेश है: हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम में विश्वास रखें तथा जैसा कि उसने हमें आदेश दिया है हम एक दूसरे से प्रेम करें। 24जो उसके आदेशों का पालन करता है वह उसी में बना रहता है। और उसमें परमेश्वर का निवास रहता है। इस प्रकार, उस आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, हम यह जानते हैं कि हमारे भीतर परमेश्वर निवास करता है।

कैन कैन और अबेल आदम और हव्वा के पुत्र थे। कैन अबेल से जलता था। सो उसने उसे मार डाला। देखें उत्पत्ति 4:1-16

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 हे प्रिय मित्रो, हर आत्मा का विश्वास मत करो बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो कि वे, क्या परमात्मा के हैं? यह मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि बहुत से झूठे नबी संसार में फैले हुए हैं। 2परमेश्वर की आत्मा को तुम इस तरह पहचान सकते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि, "यीशु मसीह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया है।" वह परमेश्वर की ओर से है। 3और हर वह आत्मा जो यीशु को नहीं मानती, परमेश्वर की ओर से नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो मसीह का शत्रु है, जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आ रहा है, बल्कि अब तो वह इस संसार में ही है।

4हे प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो। इसीलिये तुमने मसीह के शत्रुओं पर विजय पा ली है। क्योंकि वह परमेश्वर जो तुममें है, संसार में रहने वाले शैतान से महान है। 5वे मसीह विरोधी लोग सांसारिक हैं। इसीलिये वे जो कुछ बोलते हैं, वह सांसारिक है और संसार ही उनकी सुनता है। 6किन्तु हम परमेश्वर के हैं सो जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है। किन्तु जो परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता। इस प्रकार से हम सत्य की आत्मा को और लोगों को भटकाने वाली आत्मा को पहचान सकते हैं।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

7हे प्यारे मित्रो, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर को जानता है। 8वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है। 9परमेश्वर ने अपना प्रेम इस प्रकार दर्शाया है: उसने अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में भेजा जिससे कि हम उसके पुत्र के द्वारा जीवन प्राप्त कर सकें। 10सच्चा प्रेम इसमें नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि इसमें है कि एक ऐसे बलिदान के रूप में जो हमारे पापों को धारण कर लेता है, उसने अपने पुत्र को भेज कर हमारे प्रति अपना प्रेम दर्शाया है।

11हे प्रिय मित्रो, यदि परमेश्वर ने इस प्रकार हम पर अपना प्रेम दिखाया है तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये। 12परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है किन्तु यदि हम आपस में प्रेम करते हैं तो परमेश्वर हममें निवास करता है और उसका प्रेम हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता है।

13इस प्रकार हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर में ही निवास करते हैं और वह हमारे भीतर रहता है। क्योंकि उसने अपनी आत्मा का कुछ अंश हमें दिया है। 14इसे हमने देखा है और हम इसके साक्षी हैं कि परम पिता ने जगत के उद्धारकर्त्ता के रूप में अपने पुत्र को भेजा है। 15यदि कोई यह मानता है कि, "यीशु परमेश्वर का पुत्र है," तो परमेश्वर उसमें निवास करता है। और वह परमेश्वर में रहने लगता है। 16सो हम जानते हैं कि हमने अपना विश्वास उस प्रेम पर टिकाया है जो परमेश्वर में हमारे लिये है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित रहता है, वह परमेश्वर में स्थित रहता है और परमेश्वर उसमें स्थित रहता है। 17हमारे विषय में इसी रूप में प्रेम सिद्ध हुआ है ताकि न्याय के दिन हमें विश्वास बना रहे। हमारा यह विश्वास इसलिये बना हुआ है कि हम इस जगत में जो जीवन जी रहे हैं, वह मसीह के जीवन जैसा है। 18प्रेम में कोई भय नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण प्रेम तो भय को भगा देता है। भय का संबन्ध तो दंड से है। सो जिसमें भय है, उसके प्रेम को अभी पूर्णता नहीं मिली है।

19हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें प्रेम किया है। 20यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर को प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है। क्योंकि अपने उस भाई को, जिसे उसने देखा है, जब वह प्रेम नहीं करता, तो परमेश्वर को जिसे उसने देखा ही नहीं है, वह प्रेम नहीं कर सकता। 21मसीह से हमें यह आदेश मिला है।

वह जो परमेश्वर को प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिये।

परमेश्वर की सन्तान संसार पर विजयी होती है

5 जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु 'मसीह' है, वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है और जो कोई परम पिता से प्रेम करता है वह उसकी सन्तान से भी प्रेम करेगा। 2इस प्रकार जब हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं तो हम जान लेते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं। 3उसके आदेशों का पालन करते हुए हम यह दर्शाते हैं

कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उसके आदेश अत्यधिक
कठोर नहीं हैं। 4क्योंकि जो कोई परमेश्वर की संतान बन
जाता है, वह जगत पर विजय पा लेता है और संसार के
ऊपर हमें जिससे विजय मिली है, वह है हमारा विश्वास।
5जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है,
वही संसार पर विजयी होता है।

परमेश्वर का कथन : अपने पुत्र के विषय में

6वह यीशु मसीह ही है जो हमारे पास जल और लहू
के साथ आया–केवल जल के साथ नहीं, बल्कि जल
और लहू के साथ। और वह आत्मा है जो उसकी साक्षी
देता है क्योंकि आत्मा ही सत्य है। 7साक्षी देने वाले तीन
हैं–8आत्मा, जल और लहू और ये तीनों साक्षियाँ एक ही
साक्षी देकर परस्पर सहमत हैं। 9जब हम मनुष्य द्वारा दी
गयी साक्षी को मानते हैं तो परमेश्वर द्वारा दी गयी साक्षी
तो और अधिक मूल्यवान है। परमेश्वर की साक्षी
का महत्त्व इसमें है कि अपने पुत्र के विषय में साक्षी
उसने दी है। 10वह जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास
रखता है, वह अपने भीतर उस साक्षी को रखता है।
परमेश्वर ने जो कहा है, उस पर जो विश्वास नहीं रखता,
वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। क्योंकि उसने उस
साक्षी का विश्वास नहीं किया है, जो परमेश्वर ने अपने
पुत्र के विषय में दी है। 11और वह साक्षी यह है: कि
परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और वह जीवन
उसके पुत्र में प्राप्त होता है। 12वह जो उसके पुत्र को
धारण करता है, उस जीवन को धारण करता है। किन्तु
जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास वह
जीवन भी नहीं है।

अब अनन्त जीवन हमारा है

13परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये बातें मैं
इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान लो कि अनन्त
जीवन तुम्हारे पास है। 14हमारा परमेश्वर में यह विश्वास है
कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार उससे विनती करें तो
वह हमारी सुनता है 15और जब हम यह जानते हैं कि वह
हमारी सुनता है–चाहे हम उससे कुछ भी माँगे तो हम यह
भी जानते हैं कि जो हमने माँगा है, वह हमारा हो चुका है।
16यदि कोई देखता है कि उसका भाई कोई ऐसा पाप
कर रहा है जिसका फल अनन्त मृत्यु नहीं है, तो उसे
अपने भाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। परमेश्वर उसे
जीवन प्रदान करेगा। मैं उनके लिये जीवन के विषय में
बात कर रहा हूँ, जो ऐसे पाप में लगे हैं, जो उन्हें अनन्त
मृत्यु तक नहीं पहुँचायेगा। ऐसा पाप भी होता है जिसका
फल मृत्यु है। मैं तुमसे ऐसे पाप के सम्बन्ध में विनती करने
को नहीं कह रहा हूँ। 17सभी बुरे काम पाप हैं। किन्तु ऐसा
पाप भी होता है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता।
18हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन गया,
वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का पुत्र उसकी
रक्षा करता रहता है।* वह दुष्ट उसका कुछ नहीं बिगाड़
पाता। 19हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। यद्यपि यह
समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है। 20किन्तु हमको पता है
कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें वह ज्ञान
दिया है ताकि हम उस परमेश्वर को जान लें जो सत्य है।
और यह कि हम उसी में स्थित हैं, जो सत्य है, क्योंकि हम
उसके पुत्र यीशु मसीह में स्थिर हैं। परम पिता ही सच्चा
परमेश्वर है और वही अनन्त जीवन है। 21हे बच्चो, अपने
आप को झूठे देवताओं से दूर रखो।

बल्कि ... रहता है शाब्दिक "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है।" या "अपने आप को बचाए रखता है।"

2 यूहन्ना

मुझे बुज़ुर्ग की ओर से उस महिला को–जो परमेश्वर
के द्वारा चुनी गयी है तथा उसके बालकों के नाम जिन्हें मैं
सत्य के सहभागी व्यक्तियों के रूप में प्रेम करता हूँ। केवल
मैं ही तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ, बल्कि वे सभी तुम्हें प्रेम
करते हैं जो सत्य को जान गये हैं। 2यह उसी सत्य के
कारण हुआ है जो हममें निवास करता है और जो सदा सदा
हमारे साथ रहेगा।

3परम पिता परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह, दया
और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी तथा परम पिता परमेश्वर
के पुत्र यीशु मसीह की ओर से सत्य और प्रेम में हमारी
स्थिति बनी रहेगी।

4तुम्हारे पुत्र–पुत्रियों को उस सत्य के अनुसार जीवन
जीते देख कर जिसका आदेश हमें परम पिता से प्राप्त
हुआ है, मैं बहुत आनन्दित हुआ हूँ 5और अब हे महिला,
मैं तुम्हें कोई नया आदेश नहीं बल्कि उसी आदेश को
लिख रहा हूँ, जिसे हमने अनादि काल से पाया है हमें
परस्पर प्रेम करना चाहिये। 6प्रेम का अर्थ यही है कि
हम उसके आदेशों पर चलें। यह वही आदेश है जिसे
तुमने प्रारम्भ से ही सुना है कि तुम्हें प्रेमपूर्वक जीना
चाहिये।

7संसार में बहुत से भटकाने वाले हैं। ऐसा व्यक्ति जो यह
नहीं मानता कि इस धरती पर मनुष्य के रूप में यीशु मसीह
आया है, वह छली है तथा मसीह का शत्रु है। 8स्वयं को
सावधान बनाये रखो! ताकि तुम उसे गँवा न बैठो जिसके
लिये हमने कठोर परिश्रम किया है, बल्कि तुम्हें तो तुम्हारा
पूरा प्रतिफल प्राप्त करना है।

9जो कोई बहुत दूर चला जाता है और मसीह के
विषय में दिये गये सच्चे उपदेश में टिका नहीं रहता, वह
परमेश्वर को प्राप्त नहीं करता और जो उसकी शिक्षा में
बना रहता है, परम पिता और पुत्र दोनों ही उसके पास हैं।
10यदि कोई तुम्हारे पास आकर इस उपदेश को नहीं देता है
तो अपने घर उसका आदर सत्कार मत करो तथा उसके
स्वागत में 'नमस्कार' भी मत कहो। 11क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति
का सत्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में भागीदार
बनता है।

12यद्यपि तुम्हें लिखने को मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु
उन्हें मैं लेखनी और स्याही से नहीं लिखना चाहता। बल्कि
मुझे आशा है कि तुम्हारे पास आकर आमने सामने बैठ
बातें करूँगा। जिससे हमारा आनन्द परिपूर्ण हो। 13तेरी बहन*
के पुत्र पुत्रियों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

बहन यहाँ 'बहन' से अभिप्राय उस स्थानीय कलीसिया से मालूम पड़ता है, जहाँ से यूहन्ना ने यह पत्र लिखा है तथा 'पुत्र पुत्रियों, से अभिप्राय है उस कलीसिया के सदस्य जो अपना नमस्कार भेज रहे हैं।

3 यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से: प्रिय मित्र, गयुस के नाम जिसे मैं
सत्य में सहभागी के रूप में प्रेम करता हूँ। 2हे मेरे प्रिय
मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जैसे आध्यात्मिक रूप से
उन्नति कर रहा है, वैसे ही सब प्रकार से उन्नति करता रह
और स्वास्थ्य का आनन्द उठाता रह। 3जब हमारे कुछ
भाइयों ने मेरे पास आकर सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा के
बारे में बताया तो मैं बहुत आनन्दित हुआ। उन्होंने मुझे यह
भी बताया कि तुम सत्य के मार्ग पर किस प्रकार चल रहे
हो। 4मुझे यह सुनने से अधिक आनन्द और किसी में
नहीं आता कि मेरे बालक सत्य के मार्ग का अनुसरण
कर रहे हैं।

5हे मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारे भाइयों के हित में जो
कुछ कर सकते हो, उसे विश्वास के साथ कर रहे हो।
यद्यपि वे लोग तुम्हारे लिये अनजाने हैं! 6जो प्रेम तुमने
उन पर दर्शाया है, उन्होंने कलीसिया के सामने उसकी
साक्षी दी है। उनकी यात्रा को बनाये रखने के लिए कृपया
उनकी इस प्रकार सहायता करना जिसका समर्थन
परमेश्वर करे। 7क्योंकि वे मसीह की सेवा के लिये यात्रा
पर निकल पड़े हैं तथा उन्होंने विधर्मियों से कोई सहायता
नहीं ली हैं।

8इसलिये हम विश्वासियों को ऐसे लोगों की सहायता
करनी चाहिये ताकि हम भी सत्य के प्रति सहकर्मी सिद्ध हो
सकें।

9एक पत्र मैंने कलीसिया को भी लिखा था किन्तु
दियुत्रिफेस जो उनका नेता बनना चाहता है। 10वह जो कुछ
हम कहते हैं, उसे स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण यदि मैं
आऊँगा तो बताऊँगा कि वह क्या कर रहा है। वह झूठे
तौर पर अपशब्दों के साथ मुझ पर दोष लगाता है और इन
बातों से ही वह संतुष्ट नहीं है। वह हमारे बंधुओं के प्रति
आदर सत्कार नहीं दिखाता है बल्कि जो ऐसा करना चाहते
हैं, उन्हें भी बाधा पहुँचाता हैं और उन्हें कलीसिया से बाहर
धकेल देता है।

11हे प्रिय मित्र, बदी का नहीं बल्कि नेकी का अनुकरण
करो! जो नेकी करता है, वह परमेश्वर का है! जो बदी
करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा।

12 दिमेत्रियुस के विषय में हर किसी ने साक्षी दी है।
यहाँ तक कि स्वयं सत्य ने भी। हमने भी उसके विषय में
साक्षी दी है। और तुम तो जानते ही हो कि हमारी साक्षी
सत्य है।

13तुझे लिखने के लिये मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु
मैं तुझे लेखनी और स्याही से वह सब कुछ नहीं लिखना
चाहता। 14बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं तुझसे जल्दी ही
मिलूँगा। तब हम आमने–सामने बातें कर सकेंगे। 15शांति
तुम्हारे साथ रहे। तेरे सभी मित्रों का तुझे नमस्कार
पहुँचे। वहाँ हमारे सभी मित्रों को निजी तौर पर नमस्कार
कहना।

यहूदा

यीशु मसीह के सेवक और याकूब के भाई यहूदा की
ओर से तुम लोगों के नाम जो परमेश्वर के प्रिय तथा
यीशु मसीह के लिये सुरक्षित तथा परमेश्वर द्वारा बुलाये
गये हैं।

2तुम्हें दया, शांति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त होता
रहे।

पापी दण्ड पायेंगे

3प्रिय मित्रो, यद्यपि मैं बहुत चाहता था कि तुम्हें उस
उद्धार के विषय में लिखूँ, जिसके हम भागीदार हैं। मैंने
तुम्हें लिखने की और तुम्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता
अनुभव की ताकि तुम उस विश्वास के लिये संघर्ष करते
रहो जिसे परमेश्वर ने संत जनों को सदा सदा के लिये दे
दिया है। 4क्योंकि हमारे समूह में कुछ लोग चोरी से आ घुसे
हैं। इन लोगों के दण्ड के विषय में शास्त्रों ने बहुत पहले ही
भविष्यवाणी कर दी थी। ये लोग परमेश्वर विहीन हैं। इन
लोगों ने परमेश्वर के अनुग्रह को भोग–विलास का एक
बहाना बना डाला है तथा ये हमारे प्रभु तथा एकमात्र स्वामी
यीशु मसीह को नहीं मानते।

5मैं तुम्हें स्मरण कराना चाहता हूँ (यद्यपि तुम तो इन
सब बातों को जानते ही हो) कि जिस प्रभु ने पहले अपने
लोगों को मिस्र की धरती से बचा कर निकाल लिया था,
बाद में जिन्होंने विश्वास को नकार दिया, उन्हें किस प्रकार
नष्ट कर दिया गया। 6मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ
कि जो दूत अपनी प्रभुसत्ता को बनाये नहीं रख सके, बल्कि
जिन्होंने अपने निजी निवास को उस भीषण दिन के न्याय
के लिये अंधकार में जो सदा के लिये है बन्धनों में रखा है।
7इसी प्रकार मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि
सदोम और अमोरा तथा आस–पास के नगरों ने इन दूतों
के समान ही यौन अनाचार किया तथा अप्राकृतिक यौन
सम्बन्धों के पीछे दौड़ते रहे। उन्हें कभी नहीं बुझने वाली
अग्नि में झोंक देने का दण्ड दिया गया। वे हमारे लिये
उदाहरण के रूप में स्थित हैं।

8ठीक इसी प्रकार हमारे समूह में घुस आने वाले ये
लोग अपने स्वप्नों के पीछे दौड़ते हुए अपने शरीरों को
विकृत कर रहे है। ये प्रभु के सामर्थ्य को उठा कर ताक
पर रख छोड़ते है तथा महिमावान स्वर्गदूतों के विरोध
में बोलते हैं। 9प्रमुख स्वर्गदूत माकाईल जब शैतान के
साथ विवाद करते हुए मूसा के शव के बारे में बहस कर
रहा था तो वह उसके विरुद्ध अपमानजनक आक्षेपों के
प्रयोग का साहस नहीं कर सका। उसने मात्र इतना कहा,
"प्रभु तुझे डाँटे–फटकारे।" 10किन्तु ये लोग तो उन
बातों की आलोचना करते हैं, जिन्हें ये समझते ही नहीं
और ये लोग बुद्धिहीन पशुओं के समान जिन बातों से
सहज रूप से परिचित हैं, वे बातें वे ही हैं जिनसे उनका
नाश होने को है। 11उन लोगों के लिये यह बहुत बुरा है
कि उन्होंने कैन का सा वही मार्ग चुना। धन कमाने के
लिये उन्होंने अपने आपको वैसे ही गलती के हवाले कर
दिया जैसे बिलाम ने किया था। सो वे ही नष्ट हो जायेंगे जैसे
कोरह के विद्रोह में भाग लेने वाले नष्ट कर दिये गये थे।
12ये लोग तुम्हारे प्रीति–भोजों में उन छुपी हुई चट्टानों के
समान हैं जो घातक हैं। ये लोग निर्भयता के साथ तुम्हारे
संग खाते– पीते हैं किन्तु उन्हें केवल अपने स्वार्थ की ही
चिंता रहती है। वे बिना जल के बादल हैं। वे पतझड़ के ऐसे
पेड़ हैं जिन पर फल नहीं होता। वे दोहरे मरे हुए हैं। उन्हें
उखाड़ा जा चुका है। 13वे समुद्र की ऐसी भयानक लहरें हैं,
जो अपने लज्जापूर्ण कार्यों का झाग उगलती रहती हैं। वे
इधर–उधर भटकते ऐसे तारे हैं जिनके लिये अनन्त गहन
अंधकार सुनिश्चित कर दिया गया है।

14आदम से सातवीं पीढ़ी के हनोक ने भी इन लोगों
के लिये इन शब्दों में भविष्यवाणी की थी: "देखो वह
प्रभु अपने हज़ारों–हज़ार स्वर्गदूतों के साथ 15सब लोगों

का न्याय करने के लिए आ रहा है। ताकि लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उन्हें उनके लिये और उन्होंने जो परमेश्वर के विरुद्ध बुरे वचन बोले हैं, उनके लिये दण्ड दे।"

16ये लोग चुगलखोर हैं और दोष ढूँढने वाले हैं। ये अपनी इच्छाओं के दास हैं तथा अपने मुँह से अहंकारपूर्ण बातें बोलते हैं। अपने लाभ के लिये ये दूसरों की चापलूसी करते हैं।

जतन करते रहने के लिये चेतावनी

17किन्तु प्यारे मित्रो, उन शब्दों को याद रखो जो हमारे
प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा पहले ही कहे जा चुके हैं।
18वे तुमसे कहा करते थे कि "अंत समय में ऐसे लोग होंगे
जो परमेश्वर से जो कुछ संबंधित होगा उसकी हँसी उड़ाया
करेंगे।" तथा वे अपवित्र इच्छाओं के पीछे-पीछे चला
करेंगे। 19ये लोग वे ही हैं जो फूट डलवाते हैं।
20ये लोग अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास हैं। इनके
आत्मा नहीं है। किन्तु प्रिय मित्रो तुम एक दूसरे को
आध्यात्मिक रूप से अपने अति पवित्र विश्वास में सुदृढ़
करते रहो। पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो। 21हमारे
प्रभु यीशु मसीह की करुणा की बाट जोहते हुए जो तुम्हें
अनन्त जीवन तक ले जायेगी परमेश्वर की भक्ति में लीन
रहो।
22जो डावाँडोल हैं उन पर दया करो। 23दूसरों को
आगे बढ़ कर आग में से निकाल लो। किन्तु दया दिखाते
समय सावधान रहो तथा उनके उन वस्त्रों तक से
घृणा करो जिन पर उनके पापपूर्ण स्वभाव के धब्बे लगे
हुए हैं।

परमेश्वर की स्तुति

24अब उसके प्रति जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है तथा
उसकी महिमापूर्ण उपस्थिति में तुम्हें महान आनन्द के साथ
निर्दोष करके प्रस्तुत कर सकता है। 25हमारे प्रभु यीशु
मसीह के द्वारा हमारे उद्धारकर्त्ता उस एकमात्र परमेश्वर
की महिमा, वैभव, पराक्रम और अधिकार सदा सदा से
अब तक और युग-युगांतर तक बने रहें। आमीन!

प्रकाशित वाक्य

1 यह यीशु मसीह का दैवी-सन्देश है जो उसे परमेश्वर
द्वारा इसलिये दिया गया था कि जो बातें शीघ्र ही घटने
वाली हैं, उन्हें अपने दासों को दर्शा दिया जाये। अपना स्वर्गदूत
भेज कर यीशु मसीह ने इसे अपने सेवक यूहन्ना को संकेत
द्वारा बताया। 2यूहन्ना ने जो कुछ देखा था, उसके बारे में
बताया। यह वह सत्य है जिसे उसे यीशु मसीह ने बताया था।
यह वह सन्देश है जो परमेश्वर की ओर से है। 3वे धन्य हैं
जो परमेश्वर के इस दैवी सुसन्देश के शब्दों को सुनते हैं
और जो बातें इसमें लिखी हैं, उन पर चलते हैं। क्योंकि
संकट की घड़ी निकट है।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

4-5यूहन्ना की ओर से एशिया प्रान्त* में स्थित सात
कलीसियाओं के नाम: उस परमेश्वर की ओर से जो
वर्तमान है, जो सदासदा से था और जो आनेवाला है, उन
सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के सामने हैं
एवम् उस यीशु मसीह की ओर से जो विश्वास-पूर्ण साक्षी,
मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला तथा धरती के
राजाओं का भी राजा है, तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त
हो। वह जो हमसे प्रेम करता है तथा जिसने अपने लहू से
हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाया है। 6उसने हमें एक
राज्य तथा अपने परम पिता परमेश्वर की सेवा में याजक
होने को रचा। उसकी महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा
होती रहे। आमीन! 7देखो, मेघों के साथ मसीह आ रहा
है। हर एक आँख उसका दर्शन करेगी। उनमें वे भी होंगे,
जिन्होंने उसे बेघा था।* तथा धरती के सभी लोग उसके
कारण विलाप करेंगे। हाँ! हाँ निश्चयपूर्वक ऐसा ही
हो-आमीन!

8प्रभु परमेश्वर वह जो है, जो था और जो आनेवाला है,
जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, "मैं ही अलफा और
ओमेगा हूँ।"*

9मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ और यातनाओं, राज्य तथा
यीशु में, धैर्यपूर्ण सहनशीलता में तुम्हारा साक्षी हूँ। परमेश्वर
के वचन और यीशु की साक्षी के कारण मुझे पत्तमुस*
नाम के द्वीप में देश निकाला दे दिया गया था। 10प्रभु के
दिन मैं आत्मा के वशीभूत हो उठा और मैंने अपने पीछे
तुरही की सी एक तीव्र आवाज सुनी। 11वह कह रही थी,
"जो कुछ तू देख रहा है, उसे एक पुस्तक में लिखता जा
और फिर उसे इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा,
सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया की सातों
कलीसियाओं को भेज दे।"

12फिर यह देखने को कि वह आवाज किसकी है जो
मुझसे बोल रही थी, मैं मुड़ा। और जब मैं मुड़ा तो मैंने
सोने के सात दीपाधार देखे। 13और उन दीपाधारों के बीच
मैंने एक व्यक्ति को देखा जो "मनुष्य के पुत्र" के जैसा
कोई पुरुष था। उसने अपने पैरों तक लम्बा चोगा पहन
रखा था। तथा उसकी छाती पर एक सुनहरी पटका
लिपटा हुआ था।

14उसका सिर तथा केश सफेद ऊन जैसे उजले थे।
तथा उसके नेत्र अग्नि की चमचमाती लपटों के समान थे।
15उसके चरण भट्टी में अभी-अभी तपाये गये उत्तम
काँसे के समान चमक रहे थे। उसका स्वर अनेक
जलधाराओं के गर्जन के समान था। 16तथा उसने अपने

एशिया प्रान्त एशिया माइनर का एक प्रान्त।

जिन्होंने उसे बेघा था देखें यूहन्ना 19:34

अलफा और ओमेगा हूँ मूल में 'मैं ही अलफा हूँ और मैं ही ओमेगा' ये यूनानी की बाहरखड़ी के पहले और अंतिम अक्षरों के नाम हैं। अर्थात् अल्फा यानि 'आदि' और ओमेगा यानी 'अंत', दोनों प्रभु परमेश्वर ही है।

पत्तमुस एइजियन सागर में एशिया माइनर (जो आजकल टर्की कहलाता है) के तट के निकट छोटा द्वीप।

दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए थे। उसके मुख से एक
तेज दोधारी तलवार बाहर निकल रही थी। उसकी छवि
तीव्रतम दमकते सूर्य के समान उज्ज्वल थी।

17मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए
के समान गिर पड़ा। फिर उसने मुझ पर अपना दाहिना
हाथ रखते हुए कहा, "डर मत, मैं ही प्रथम हूँ और मैं ही
अंतिम भी हूँ। 18और मैं ही वह हूँ, जो जीवित है। मैं मर
गया था, किन्तु देख अब मैं सदा-सर्वदा के लिये जीवित
हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक* की कुंजियाँ हैं। 19सो
जो कुछ तूने देखा है, जो कुछ घट रहा है, और जो
भविष्य में घटने जा रहा है, उसे लिखता जा। 20ये जो सात
तारे हैं जिन्हें तूने मेरे हाथ में देखा है और ये जो सात
दीपाधार हैं, इनका रहस्यपूर्ण अर्थ है: ये सात तारे सात
कलीसियाओं के दूत हैं तथा ये सात दीपाधार सात
कलीसियाएँ हैं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

2 "इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम यह
लिख: "वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को
धारण करता है तथा जो सात दीपाधारों के बीच विचरण
करता है; इस प्रकार कहता है: 2मैं तेरे कर्मों कठोर परिश्रम
और धैर्यपूर्ण सहनशीलता को जानता हूँ तथा मैं यह भी
जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को सहन नहीं कर पाता है तथा
तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि वे प्रेरित हैं किन्तु हैं
नहीं। तूने उन्हें झूठा पाया है। 3मैं जानता हूँ कि तुझ में
धीरज है और मेरे नाम पर तूने कठिनाइयाँ झेली हैं और तू
थका नहीं है।

4"किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तूने वह प्रेम
त्याग दिया है जो आरम्भ में तुझ में था। 5सो याद कर कि
तू कहाँ से गिरा है, मनफिरा तथा उन कर्मों को कर जिन्हें
तू प्रारम्भ में किया करता था, नहीं तो, यदि तूने मन न
फिराया, तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरे दीपाधार को
उसके स्थान से हटा दूँगा। 6किन्तु यह बात तेरे पक्ष में है कि
तू नीकुलइयों* के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी
घृणा करता हूँ।

7"जिसके पास कान हैं, वह उसे सुनें जो आत्मा
कलीसियाओं से कह रहा है। "जो विजय पायेगा मैं उसे
परमेश्वर के उपवन में लगे जीवन के वृक्ष से फल खाने
का अधिकार दूँगा।"

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

8"स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख; वह
जो प्रथम है और जो अन्तिम है, जो मर गया था तथा जो
पुनर्जीवित हो उठा है, इस प्रकार कहता है-9मैं तुम्हारी
यातना और तुम्हारी दीनता के विषय में जानता हूँ। (यद्यपि
वास्तव में तुम धनवान हो) जो अपने आपको यहूदी कह
रहे हैं, उन्होंने तुम्हारी जो निन्दा की है, मैं उसे भी जानता
हूँ। (यद्यपि वे यहूदी हैं नहीं।) बल्कि वे तो उपासकों का
एक ऐसा जमघट है जो शैतान से सम्बन्धित है। 10उन
यातनाओं से तू बिल्कुल भी मत डर जो तुझे झेलनी हैं।
सुनो, शैतान तुम लोगों में से कुछ को बंदीगृह में डाल कर
तुम्हारी परीक्षा लेने जा रहा है। और तुम्हें वहाँ दस दिन
तक यातना भोगनी होगी। चाहे तुझे मर ही जाना पड़े, पर
सच्चा बने रहना मैं तुझे अनन्त जीवन का विजय मुकुट
प्रदान करूँगा।

11"जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं
से क्या कह रहा है। जो विजयी होगा उसे दूसरी मृत्यु से
कोई हानि नहीं उठानी होगी।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

12"पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत यह लिख: वह
जो तेज दोधारी तलवार को धारण करता है, इस प्रकार
कहता है: 13मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा है। तू वहाँ रह
रहा है जहाँ शैतान का सिंहासन है और मैं यह भी जानता हूँ
कि तू मेरे नाम को थामे हुए है तथा तूने मेरे प्रति अपने
विश्वास को कभी नहीं नकारा है। तुम्हारे उस नगर में
जहाँ शैतान का निवास है, मेरा विश्वास पूर्ण साक्षी अन्तिपास
मार दिया गया था।

14"कुछ भी हो, मेरे पास तेरे विरोध में कुछ बातें हैं।
तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिलाम की सीख पर
चलते हैं। उसने बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल
के लोगों को मूर्तियों का चढ़ावा खाने और व्यभिचार
करने को प्रोत्साहित करे। 15इसी प्रकार तेरे यहाँ भी कुछ
ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की सीख पर चलते हैं। 16इसलिये

अधोलोक मूल में हेइस अर्थात् वह लोग जहाँ मरने के बाद जाते है।

नीकुलइयों एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयो नाम के व्यक्ति पर किया गया होगा।

मन फिरा नहीं तो मैं जल्दी ही तेरे पास आऊँगा और उनके
विरोध में उस तलवार से युद्ध करूँगा जो मेरे मुख से
निकलती है।

17"जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं
से क्या कह रहा है, "जो विजयी होगा, मैं उसे (स्वर्ग में
छिपा) मन्ना दूँगा। मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा जिस पर
एक नया नाम अंकित होगा। जिसे उसके सिवा और कोई
नहीं जानता जिसे वह दिया गया है।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

18"थूआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम:
"परमेश्वर का पुत्र, जिसके नेत्र धधकती आग के समान
हैं, तथा जिसके चरण शुद्ध काँसे के जैसे हैं, इस प्रकार
कहता है 19मैं तेरे कर्मों, तेरे विश्वास, तेरी सेवा तथा तेरी
धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि अब तू
जितना पहले किया करता था, उससे अधिक कर रहा है।
20किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तू इजेबेल नाम की
उस स्त्री को सह रहा है जो अपने आपको नबी कहती है।
अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों को व्यभिचार के प्रति
तथा मूर्तियों का चढ़ावा खाने को प्रेरित करती है। 21मैंने
उसे मन फिराने का अवसर दिया है किन्तु वह
परमेश्वर के प्रति व्यभिचार के लिये मन फिराना नहीं
चाहती। 22इसलिये अब मैं उसे पीड़ा की शैया पर डालने
ही वाला हूँ। तथा उन्हें भी जो उसके साथ व्यभिचार में
सम्मिलित हैं। ताकि वे उस समय तक गहन पीड़ा का
अनुभव करते रहें जब तक वे उसके साथ किये अपने
बुरे कर्मों के लिये मन न फिराव। 23मैं महामारी से उसके
बच्चों को मार डालूँगा और सभी कलीसियाओं को यह
पता चल जायेगा कि मैं वही हूँ जो लोगों के मन और
उनकी बुद्धि को जानता है। मैं तुम सब लोगों को तुम्हारे
कर्मों के अनुसार दूँगा।

24"अब मुझे थूआतीरा के उन शेष लोगों से कुछ कहना
है जो इस सीख पर नहीं चलते और जो शैतान के तथा
कथित गहन रहस्यों को नहीं जानते। मुझे तुम पर कोई
और बोझ नहीं डालना है। 25किन्तु जो तुम्हारे पास है, उस
पर मेरे आने तक चलते रहो।

26"जो विजय प्राप्त करेगा और जिन बातों का मैंने आदेश
दिया है, अंत तक उन पर टिका रहेगा, मैं उन्हें जातियों पर
अधिकार दूँगा।

27 तथा 'वह उन पर लोहे के
डण्डे से शासन करेगा।
वह उन्हें माटी के भाँडों की तरह
चूर चूर कर देगा।'

भजन संहिता 2:9

28यह वही अधिकार है जिसे मैंने अपने परमपिता से
पाया है। मैं भी उस व्यक्ति को भोर का तारा दूँगा। 29जिसके
पास कान हैं, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कह रहा है।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

3 "सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को इस प्रकार
लिख–ऐसा वह कहता है जिसके पास परमेश्वर
की सात आत्माएँ तथा सात तारे हैं, "मैं तुम्हारे कर्मो को
जानता हूँ, लोगों का कहना है कि तुम जीवित हो किन्तु
वास्तव में तुम मरे हुए हो। 2सावधान रह। तथा जो कुछ
शेष है, इससे पहले कि वह पूरी तरह नष्ट हो जाये, उसे
सुदृढ़ बना क्योंकि अपने परमेश्वर की निगाह में मैंने तेरे
कर्मो को उत्तम नहीं पाया है। 3सो जिस उपदेश को तूने
सुना है और प्राप्त किया है, उसे याद कर। उसी पर चल
और मनफिराव कर। यदि तू जागा नहीं तो अचानक चोर
के समान मैं चला आऊँगा। मैं तुझे कब अचरज में डाल
दूँ, तुझे पता भी नहीं चल पायेगा। 4कुछ भी हो सरदीस में
तेरे पास कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने को अशुद्ध नहीं
किया है। वे श्वेत वस्त्र धारण किये हुए मेरे साथ–साथ
घूमेंगे क्योंकि वे सुयोग्य हैं। 5जो विजयी होगा वह इसी
प्रकार श्वेत वस्त्र धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से
उसका नाम नहीं मिटाऊँगा, बल्कि मैं तो उसके नाम को
अपने परम पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम्मुख मान्यता
प्रदान करूँगा।" 6जिसके पास कान हैं, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

7"फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह
लिख: वह जो पवित्र और सत्य है तथा जिसके पास
दाऊद की कुंजी है जो ऐसा द्वार खोलता है जिसे कोई बंद
नहीं कर सकता, तथा जो ऐसा द्वार बंद करता है, जिसे
कोई खोल नहीं सकता; इस प्रकार कहता है। 8"मैं तुम्हारे
कर्मों को जानता हूँ। देखो मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार

खोल दिया है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मैं जानता
हूँ कि तेरी शक्ति थोड़ी सी है किन्तु तूने मेरे उपदेशों का
पालन किया है तथा मेरे नाम को नकारा नहीं है। 9सुनो
कुछ ऐसे हैं जो शैतान की मण्डली के हैं तथा जो यहूदी
न होते हुए भी अपने को यहूदी कहते हैं, जो मात्र झूठे हैं,
मैं उन्हें यहाँ आने को विवश करके तेरे चरणों तले झुका
दूँगा तथा मैं उन्हें विवश करूँगा कि वे यह जानें की तुम
मेरे प्रिय हो। 10क्योंकि तुमने धैर्यपूर्वक सहनशीलता के
मेरे आदेश का पालन किया है। बदले में मैं भी उस परीक्षा
की घड़ी से तुम्हारी रक्षा करूँगा जो इस धरती पर रहने
वालों को परखने के लिये समूचे संसार पर बस आने ही
वाली है।”

11“मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। जो कुछ तुम्हारे पास है,
उस पर डटे रहो ताकि तुम्हारे विजय मुकुट को कोई तुमसे
न ले ले। 12जो विजयी होगा उसे मैं अपने परमेश्वर के
मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा। फिर कभी वह इस मन्दिर से
बाहर नहीं जायेगा। तथा मैं अपने परमेश्वर का और अपने
परमेश्वर की नगरी का नये यरुशलेम का नाम उस पर
लिखूँगा, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरने
वाली है। उस पर मैं अपना नया नाम भी लिखूँगा।” 13जो
सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कह रहा है?

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह के सन्देश

14लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह
लिख: जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण है तथा सच्चा साक्षी
है, जो परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, इस प्रकार
कहता है:

15“मैं तेरे कर्मों को जानता हूँ और यह भी कि न तो
तू शीतल होता है और न गर्म। 16इसलिए क्योंकि तू
गुनगुना है न गर्म और न ही शीतल, मैं तुझे अपने मुख से
उगलने जा रहा हूँ। 17तू कहता है, मैं धनी हो गया हूँ और
मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है किन्तु तुझे पता
नहीं है कि तू अभागा है, दयनीय है, दीन है, अंधा है और
नंगा है। 18मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू मुझसे आग में
तपाया हुआ सोना मोल ले ले ताकि तू सचमुच धनवान हो
जाये। पहनने के लिए श्वेत वस्त्र भी मोल ले ले ताकि तेरी
लज्जापूर्ण नग्नता का तमाशा न बने। अपने नेत्रों में आँजने
के लिये तू अंजन भी ले ले ताकि तू देख पाये।

19“उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं डाँटता हूँ
और अनुशासित करता हूँ। तो फिर कठिन जतन और
मनफिराव कर। 20सुन, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटा
रहा हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता
है तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठ
कर खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना
खायेगा।

21“जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन
पर बैठने का गौरव प्रदान करूँगा। ठीक वैसे ही जैसे मैं
विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर
बैठा हूँ। 22जो सुन सकता है सुने, कि आत्मा कलीसियाओं
से क्या कह रहा है।”

स्वर्ग के दर्शन

4 इसके बाद मैंने दृष्टि उठाई और स्वर्ग का खुला द्वार
मेरे सामने था। और वही आवाज़ जिसे मैंने पहले
सुना था, तुरही के से स्वर में मुझसे कह रही थी, “यहीं
ऊपर आ जा। मैं तुझे वह दिखाऊँगा जिसका भविष्य में
होना निश्चित है।” 2फिर मैं तुरन्त ही आत्मा के वशीभूत
हो उठा। मैंने देखा कि मेरे सामने स्वर्ग का सिंहासन था
और उस पर कोई विराजमान था। 3जो वहाँ विराजमान
था, उसकी आभा यशब और गोमेद के समान थी। उसके
सिंहासन के चारों ओर एक इन्द्रधनुष था जो पन्ने जैसा
दमक रहा था। 4उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस
सिंहासन और थे। जिन पर चौबीस प्राचीन* बैठे हुए थे।
उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे। उनके सिर पर सोने के मुकुट
थे। 5सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध, घड़घड़ाहट
तथा मेघों का गर्जन–तर्जन निकल रहे थे। सिंहासन के
सामने ही लपलपाती हुई सात मशालें जल रही थीं। ये
मशालें परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। 6सिंहासन के सामने
पारदर्शी काँच का स्फटिक सागर सा फैला था। सिंहासन
के ठीक सामने तथा उसके दोनों ओर चार प्राणी थे।

आमीन आमीन शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरुप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशु के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

चौबीस प्राचीन कदाचित इन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष हैं जो परमेश्वर के संत जनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो। तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हैं।

उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं। 7पहला प्राणी
सिंह के समान था, दूसरा प्राणी बैल के जैसा था, तीसरे
प्राणी का मुख मनुष्य के जैसा था और चौथा प्राणी उड़ते
हुए गरूड़ जैसा था। 8इन चारों ही प्राणियों के छह छह पंख
थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आँखें ही आँखें भरी पड़ीं
थीं। दिन रात वे निरन्तर कहते रहते थे:

"सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रभु
पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

9जब ये सजीव प्राणी उस अजर अमर की महिमा,
आदर और धन्यवाद कर रहे हैं जो सिंहासन पर विराजमान
था तो 10वे चौबीसों प्राचीन उसके चरणों में गिरकर,
उस सदा सर्वदा जीवित रहने वाले की उपासना करते हैं।
वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट डाल देते हैं और कहते
हैं:

11 "हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर!
तू ही महिमा, समादर और
शक्ति पाने को सुयोग्य है।
क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से
सभी वस्तु सरजी हैं।
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है।
और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।"

5

फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान था,
उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ चर्मपत्र*
अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर लपेट दिया जाता
था। जिस पर दोनों ओर लिखावट थी। तथा उसे सात मुहर
लगाकर मुद्रित किया हुआ था। 2मैंने एक शक्तिशाली
स्वर्गदूत की ओर देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा
था–"इस लपेटे हुए चर्मपत्र की मुहरों को तोड़ने और
इसे खोलने में समर्थ कौन है?" 3किन्तु स्वर्ग में अथवा
पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था जो
उस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोले और उसके भीतर
झाँके। 4क्योंकि उस चर्मपत्र को खोलने की क्षमता रखने
वाला या भीतर से उसे देखने की शक्ति वाला कोई भी
नहीं मिल पाया था इसलिए मैं सुबक–सुबक कर रो पड़ा।
5फिर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, "रोना बंद
कर। सुन, यहूदा के वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है
विजयी हुआ है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस
लपेटे हुए चर्मपत्र को खोलने में समर्थ है।"

6फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार
प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में एक
मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो उसकी बलि
चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे और सात आँखें थीं जो
परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। जिन्हें समूची धरती पर
भेजा गया था। 7फिर वह आया और जो सिंहासन पर
विराजमान था, उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा
हुआ चर्मपत्र ले लिया। 8जब उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र
ले लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों ने उस
मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से हरेक के पास
वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री से भरे सोने के धूपदान
थामे थे; जो संत जनों की प्रार्थनाएँ हैं। 9वे एक नया गीत गा
रहे थे:

"तू यह चर्मपत्र लेने को समर्थ है,
और जो इस पर लगी मुहर खोलने को
क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया,
और अपने लहू से तूने
परमेश्वर के हेतु जनों को
हर जाति से, हर भाषा से,
सभी कुलों से, सब राष्ट्रों से मोल लिया।
10 और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया।
और हमारे परमेश्वर के हेतु
उन्हें याजक बनाया।
वहीं धरा पर राज्य करेंगे।

11तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों को
सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के चारों
ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और करोड़ों थी
12वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे:

"वह मेमना जो मार डाला गया था,
वह प्राप्त करने को योग्य है
बल, धन, विवेक
समादर महिमा और स्तुति।"

13फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की पाताल
लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि–हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड
का हर प्राणी कह रहा था:

चर्मपत्र एक लम्बा लपेटा हुआ कागज अथवा चमड़ा जिसे प्राचीन युग में लिखने के काम में लाया जाता था।

"जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना!
वे सदा सदा स्तुति पावें,
पावें आदर, पावें महिमा,
और वे शक्ति को सदा सर्वदा प्राप्त करें।
14फिर उन चारों प्राणियों ने "आमीन" कहा और प्राचीनों
ने नत मस्तक होकर उपासना की।

6 मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को
खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने मेघ
गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना–"आ!" 2जब मैंने दृष्टि उठाई
तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का
सवार धनुष लिये हुए था। उसे विजय–मुकुट पहनाया गया
और वह विजय पाने के लिये विजय प्राप्त करता हुआ
बाहर चला गया।

3जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को
कहते सुना "आ!" इस पर अग्नि के समान लाल रंग का
4एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे सवार को धरती
से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने
को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी
तलवार दे दी गयी।

5मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को
कहते सुना, "आ!" जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ मेरे सामने
एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर बैठे सवार के हाथ में
एक तराजू थी। 6तभी मैंने उन चारों प्राणियों के बीच से
एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, "एक दिन की
मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेंहूँ और एक दिन
की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु
जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।"

7फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी को
मैंने कहते सुना, "आ!" 8फिर जब मैंने दृष्टि उठायी तो मेरे
सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित
था। उस पर बैठे सवार का नाम था 'मृत्यु' और उसके पीछे
सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई
भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों,
महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों
को मार डालें।

9फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने
वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर
के सुसन्देश के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को
उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं।
10ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, "हे पवित्र एवम्
सच्चे प्रभु। हमारी हत्याएँ करने के लिये धरती के लोगों का
न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिये तू कब तक
प्रतीक्षा करता रहेगा? 11उनमें से हर एक को सफेद चोगा
प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस
समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन
साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती
जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की
गयी थी।

12फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा कि
वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़
गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं
तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया है। 13आकाश के
तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे किसी तेज आँधी द्वारा
झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़ से कच्ची अंजीर गिरती
हैं। 14आकाश फट पड़ा था और एक चर्मपत्र के समान
सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप
अपने–अपने स्थानों से डिग गये थे।

15संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी शक्तिशाली
और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम दास लोगों ने पहाड़ों
पर चटटानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा
लिया था। 16वे पहाड़ों और चटटानों से कह रहे थे "हम पर
गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस
मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा लो। 17उनके क्रोध
का भंयकर दिन आ पहुँचा है। ऐसा कौन है जो इसे झेल
सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000 लोग

7 इसके बाद धरती के चारों कोनों पर चार
स्वर्गदूतों को मैंने खड़े देखा। धरती की चारों हवाओं
को उन्होंने पकड़ा हुआ था ताकि धरती पर, सागर पर
अथवा वृक्षों पर उनमें से कोई सी भी हवा चल न पाये।
2फिर मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत है जो पूर्व दिशा से
आ रहा है। उसने सजीव परमेश्वर की मुहर ली हुई थी।
तथा वह उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें धरती और आकाश
को नष्ट कर देने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे स्वर
में पुकार कर कह रहा था, 3"जब तक हम अपने परमेश्वर
के सेवकों के माथे पर मुहर नहीं लगा देते, तब तक तुम
धरती, सागर और वृक्षों को हानि मत पहुँचाओ।" 4फिर

जिन लोगों पर मुहर लगायी गयी थी, मैंने उनकी संख्या
सुनी। वे एक लाख चवालीस हजार थे। जिन पर मुहर लगायी
गयी थी, इस्राएल के सभी परिवार समूहों से थे:

5 यहूदा के परिवार समूह के	12,000
रूबेन के परिवार समूह के	12,000
गाद परिवार समूह के	12,000
6 आशेर परिवार समूह के	12,000
नप्ताली परिवार समूह के	12,000
मनश्शे परिवार समूह के	12,000
7 शमौन परिवार समूह के	12,000
लेवी परिवार समूह के	12,000
इस्साकार परिवार समूह के	12,000
8 जबूलून परिवार समूह के	12,000
यूसुफ परिवार समूह के	12,000
बिन्यामीन परिवार समूह के	12,000

विशाल भीड़

9इसके बाद मैंने देखा कि मेरे सामने एक विशाल भीड़
खड़ी थी जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता था। इस
भीड़ में हर जाति के हर वंश के, हर कुल के तथा हर
भाषा के लोग थे। वे उस सिंहासन और उस मेमने के आगे
खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे और उन्होंने अपने हाथों में
खजूर की टहनियाँ ली हुई थीं। 10वे पुकार रहे थे– "सिंहासन
पर विराजमान हमारे परमेश्वर की जय हो और मेमने की
जय हो।" 11सभी स्वर्गदूत सिंहासन प्राचीनों और उन चारों
प्राणियों को घेरे खड़े थे। सिंहासन के सामने दंडवत प्रणाम
करके इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की उपासना की। 12उन्होंने
कहा, "आमीन!* हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा,
विवेक, धन्यवाद, समादर, शक्ति और बल सदा सर्वदा होते
रहें। आमीन!" 13तभी उन प्राचीनों में से किसी ने मुझसे
प्रश्न किया, "ये श्वेत वस्त्रधारी लोग कौन हैं तथा ये कहाँ
से आये हैं?"

14मैंने उसे उत्तर दिया, "मेरे प्रभु तू तो जानता ही है।"

इस पर उसने मुझसे कहा, "ये वे लोग हैं जो कठोर
यातनाओं के बीच से होकर आ रहे हैं उन्होंने अपने वस्त्रों
को मेमने के लहू से धोकर स्वच्छ एवम् उजला किया है।
15इसीलिये अब ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े
तथा उसके मन्दिर में दिन रात उसकी उपासना करते हैं।
वह जो सिंहासन पर विराजमान है उनमें निवास करते हुए
उनकी रक्षा करेगा। 16न कभी उन्हें भूख सताएगी और न
ही वे फिर कभी प्यासे रहेंगे। सूरज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेगा
और न ही चिलचिलाती धूप कभी उन्हें तपायेगी। 17क्योंकि
वह मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी देखभाल
करेगा। वह उन्हें जीवन देने वाले जल स्रोतों के पास ले
जायेगा और परमेश्वर उनकी आँखों के हर आँसू को पोंछ
देगा।"

सातवीं मुहर

8 फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी तो स्वर्ग में
कोई आधा घण्टे तक सन्नाटा छाया रहा। 2फिर मैंने
परमेश्वर के सामने खड़े होने वाले सात स्वर्गदूतों को देखा।
उन्हें सात तुरहियाँ प्रदान की गयीं थीं।

3फिर एक और स्वर्गदूत आया और वेदी पर खड़ा हो
गया। उसके पास सोने का एक धूपदान था। उसे संत जनों
की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर जो सिंहासन
के सामने थी, चढ़ाने के लिये बहुत सारी धूप दी गयी।
4फिर स्वर्गदूत के हाथ से धूप का वह धुआँ संत जनों की
प्रार्थनाओं के साथ–साथ परमेश्वर के सामने पहुँचा। 5इसके
बाद स्वर्गदूत ने उस धूप दान को उठाया, उसे वेदी की आग
से भरा और उछाल कर धरती पर फेंक दिया। इस पर मेघों
का गर्जन–तर्जन, भीषण शब्द, बिजली की चमकार और
भूकम्प होने लगे।

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियाँ बजाना

6फिर वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थी,
उन्हें फूँकने को तैयार हो गये।

7पहले स्वर्गदूत ने तुरही में जैसे ही फूँक मारी, वैसे ही
लहू ओले और अग्नि एक साथ मिले जुले दिखाई देने लगे
और उन्हें धरती पर नीचे उछाल कर फेंक दिया गया।
जिससे धरती का एक तिहाई भाग जल कर भस्म हो गया।
एक तिहाई पेड़ जल गये और समूची हरी घास राख हो
गयी।

8दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मानो अग्नि का जलता
हुआ एक विशाल पहाड़ सा समुद्र में फेंक दिया गया हो।
इससे एक तिहाई समुद्र रक्त में बदल गया। 9तथा समुद्र के

आमीन जब कोई व्यक्ति आमीन कहता है तो इसका अर्थ होता
है कि वह पूरी तरह उसके साथ सहमत है।

एक तिहाई जीव जन्तु मर गये और एक तिहाई जल पोत नष्ट हो गये।

10तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई तो आकाश से मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल तारा गिरा। यह तारा एक तिहाई नदियों तथा झरनों के पानी पर जा पड़ा।
11इस तारे का नाम था 'नागदौना'* सो समूचे जल का एक तिहाई भाग नागदौना में ही बदल गया। तथा उस जल के पीने से बहुत से लोग मारे गये। क्योंकि जल कड़वा हो गया था।

12जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी तो एक तिहाई सूर्य, और साथ में ही एक तिहाई चन्द्रमा और एक तिहाई तारों पर विपत्ति आई। सो उनका एक तिहाई काला पड़ गया। परिणामस्वरूप एक तिहाई दिन तथा उसी प्रकार एक तिहाई रात अन्धेरे में डूब गये।

13फिर मैंने देखा कि एक गरुड़ ऊँचे आकाश में उड़ रहा है। मैंने उसे ऊँचे स्वर में कहते हुए सुना, "उन बचे हुए तीन स्वर्गदूतों की तुरहियों के उद्घोष के कारण जो अपनी तुरहियाँ अभी बजाने ही वाले हैं, धरती के निवासियों पर कष्ट हो! कष्ट हो! कष्ट हो!"

9 पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तब मैंने आकाश से धरती पर गिरा हुआ एक तारा देखा। इसे उस चिमनी की कुंजी दी गयी थी जो पाताल में उतरती है।
2फिर उस तारे ने उस चिमनी का ताला खोल दिया जो पाताल में उतरती थी और चिमनी से वैसे ही धुआँ फूट पड़ा जैसे वह एक बड़ी भट्टी से निकलता है। सो चिमनी से निकले धुआँ से सूर्य और आकाश काले पड़ गये।
3तभी उस धुआँ से धरती पर टिड्डी दल उतर आया। उन्हें धरती के बिच्छुओं के जैसी शक्ति दी गयी थी।
4किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे न तो धरती की घास को कोई हानि पहुँचायें और न ही हरे पौधों या पेड़ों को। उन्हें तो बस उन लोगों को ही हानि पहुँचानी थी जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं लगी हुई थी।
5टिड्डी दल को निर्देश दे दिया गया था कि वे लोगों के प्राण न लें बल्कि पाँच महीने तक उन्हें पीड़ा पहुँचाते रहें। वह पीड़ा जो उन्हें पहुँचाई जा रही थी, वैसी थी जैसी किसी व्यक्ति को बिच्छू के काटने से होती है।
6उन पाँच महीनों के भीतर लोग मौत को ढूँढते फिरेंगे किन्तु मौत उन्हें मिल नहीं पायेगी। वे मरने के लिये तरसेंगे किन्तु मौत उन्हें चकमा देकर निकल जायेगी।

7और अब देखो कि वे टिड्डी युद्ध के लिये तैयार किये गये घोड़ों जैसी दिख रहीं थीं। उनके सिरों पर सुनहरी मुकुट से बँधे थे। उनके मुख मानव मुखों के समान थे।
8उनके बाल स्त्रियों के केशों के समान थे तथा उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे।
9उनके सीने ऐसे थे जैसे लोहे के कवच हों। उनके पंखों की ध्वनि युद्ध में जाते हुए असंख्य अश्व रथों से पैदा हुए शब्द के समान थी।
10उनकी पूँछों के बाल ऐसे थे जैसे बिच्छू के डंक हों। तथा उनमें लोगों को पाँच महीने तक क्षति पहुँचाने की शक्ति थी।
11पाताल के अधिकारी दूत को उन्होंने अपने राजा के रूप में लिया हुआ था। इब्रानी भाषा में उसका नाम है 'अबद्दोन'* और यूनानी भाषा में वह 'अपुल्लयोन' (अर्थात् विनाश करनेवाला) कहलाता है।

12पहली महान विपत्ति तो बीत चुकी है किन्तु इसके बाद अभी दो बड़ी विपत्तियाँ और आने वाली हैं।

13फिर छठे स्वर्गदूत ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी, वैसे ही मैंने परमेश्वर के सामने एक सुनहरी वेदी देखी, उसके चार सींगों से आती हुई एक ध्वनि सुनी।
14तुरही लिये हुए उस छठे स्वर्गदूत से उस आवाज ने कहा, "उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर दो जो फरात महानदी के पास बँधे पड़े हैं।"
15सो चारों स्वर्गदूत मुक्त कर दिये गये। वे उसी घड़ी, उसी दिन, उसी महीने और उसी वर्ष के लिये तैयार रखे गये थे ताकि वे एक तिहाई मानव जाति को मार डालें।
16उनकी पूरी संख्या कितनी थी, यह मैंने सुना। घुड़सवार सैनिकों की संख्या बीस करोड़ थी।

17उस मेरे दिव्य दर्शन में वे घोड़े और उनके सवार मुझे इस प्रकार दिखाई दिये: उन्होंने कवच धारण किये हुए थे जो धधकती आग जैसे लाल, गहरे नीले और गंधक जैसे पीले थे।
18इन तीन महाविनाशों से यानी उनके मुखों से निकल रही अग्नि, धुआँ और गंधक से एक तिहाई मानव जाति को मार डाला गया।
19इन घोड़ों की शक्ति उनके मुख और उनकी पूँछों में निहित थी क्योंकि उनकी पूँछों सिरदार साँपों के समान थी जिनका प्रयोग वे मनुष्यों को हानि पहुँचाने के लिये करते थे।

नागदौना मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अंग्रेजी पर्याय है वर्मवुड जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिए इसे गहन दु:ख का प्रतीक माना जाता है।

अबद्दोन अर्थात् विनाश का स्थान।

20इस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने जो इन महा विनाशों
से भी नहीं मारे जा सके थे उन्होंने अपने हाथों से किये
कामों के लिए अब भी मन न फिराया तथा भूत–प्रेतों की
अथवा सोने, चाँदी, काँसे, पत्थर और लकड़ी की उन
मूर्तियों की उपासना नहीं छोड़ी, जो न देख सकती हैं, न सुन
सकती हैं और न ही चल सकती हैं। 21उन्होंने अपने द्वारा
की गयी हत्याओं, जादू टोनों, व्यभिचारों अथवा
चोरी–चकारी करने से मन न फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

10 फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते हुए एक और
बलवान स्वर्गदूत को देखा। उसने बादल को ओढ़ा
हुआ था तथा उसके सिर के आसपास एक मेघ धनुष था।
उसका मुखमण्डल सूर्य के समान तथा उसकी टाँगें अग्नि
स्तम्भों के जैसी थीं। 2अपने हाथ में उसने एक छोटी सी
खुली पोथी ली हुई थी। उसने अपना दाहिना चरण सागर में
और बायाँ चरण धरती पर रखा। फिर वह सिंह के समान
दहाड़ता हुआ ऊँचे स्वर में चिल्लाया। उसके चिल्लाने पर
सातों गर्जन तर्जन के शब्द सुनाई देने लगे। 4जब सातों गर्जन
हो चुके और मैं लिखने को ही था, तभी मैंने एक
आकाशवाणी सुनी, "सातों गर्जनों ने जो कुछ कहा है, उसे
छिपा ले तथा उसे लिख मत।"

5फिर उस स्वर्गदूत ने जिसे मैंने समुद्र में और धरती पर
खड़े देखा था, आकाश में ऊपर दाहिना हाथ उठाया। 6और
जो नित्य रूप से सजीव है, जिसने आकाश को तथा आकाश
की सब वस्तुओं को, धरती एवम् धरती पर की तथा सागर
और जो कुछ उसमें है, उन सब की रचना की है, उसकी
शपथ लेकर कहा, "अब और अधिक देर नहीं होगी। 7किन्तु
जब सातवें स्वर्गदूत को सुनने का समय आयेगा अर्थात् जब
वह अपनी तुरही बजाने को होगा तभी परमेश्वर की वह
गुप्त योजना पूरी हो जायेगी जिसे उसने अपने सेवक नबियों
को बता दिया था।"

8उस आकाशवाणी ने, जिसे मैंने सुना था, मुझसे फिर
कहा, "जा और उस स्वर्गदूत से जो सागर में और धरती पर
खड़ा है, उसके हाथ से उस खुली पोथी को ले ले।"

9सो मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे कहा
कि वह उस छोटी पोथी को मुझे दे दे। उसने मुझसे कहा,
"यह ले और इसे खा जा। इससे तेरा पेट कड़वा हो जायेगा
किन्तु तेरे मुँह में यह शहद से भी ज्यादा मीठी बन जायेगी।"
10फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से मैंने वह छोटी सी पोथी ले
ली और मैंने उसे खा लिया। मेरे मुख में यह शहद सी मीठी
लगी किन्तु मैं जब उसे खा चुका तो मेरा पेट कड़वा हो
गया। 11इस पर वह मुझसे बोला, "तुझे बहुत से लोगों राष्ट्रों,
भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी
होगी।"

दो साक्षी

11 इसके पश्चात् नापन के लिये एक सरकंडा मुझे
दिया गया जो नापने की छड़ी जैसा दिख रहा
था। मुझसे कहा गया, "उठ और परमेश्वर के मन्दिर
तथा वेदी को नाप और जो लोग मन्दिर के भीतर उपासना
कर रहे हैं, उनकी गिनती कर। 2किन्तु मन्दिर के बाहरी
आँगन को रहने दे, उसे मत नाप क्योंकि यह अधर्मियों
को दे दिया गया है। वे बयालीस महीने तक पवित्र नगर
को अपने पैरों तले रौंदेंगे। 3मैं अपने दो गवाहों को खुली
छूट दे दूँगा और वो एक हजार दो सौ साठ दिनों तक
भविष्यवाणी करेंगे। वे ऊन के ऐसे वस्त्र धारण किये हुए
होंगे जिन्हें शोक प्रदर्शित करने के लिये पहना जाता है।"
4ये दो साक्षियाँ वे दो जैतून के पेड़ तथा वे दो दीपदान हैं
जो धरती के प्रभु के सामने स्थित रहते हैं। 5यदि कोई भी
उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो उनके मुखों से ज्वाला
फूट पड़ती है और उनके शत्रुओं को निगल जाती है। सो
यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो निश्चित रूप
से उसकी इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। 6वे आकाश को
बाँध देने की शक्ति रखते हैं ताकि जब वे भविष्यवाणी
कर रहे हों, तब कोई वर्षा न होने पाये। उन्हें झरनों के जल
पर भी अधिकार था जिससे वे उसे लहू में बदल सकते थे।
उनमें ऐसी शक्ति भी थी कि वे जितनी बार चाहते, उतनी ही
बार धरती पर हर प्रकार के विनाशों का आघात कर
सकते थे।

7उनके साक्षी दे चुकने के बाद, वह पशु उस महागर्त
से बाहर निकलेगा और उन पर आक्रमण करेगा। वह
उन्हें हरा देगा और मार डालेगा। 8उनकी लाशें उस महानगर
की गलियों में पड़ी रहेंगी। (यह नगर प्रतीक रूप से
सदोम तथा मिस्र कहलाता है।) यहीं उनके प्रभु को भी
क्रूस पर चढ़ा कर मारा गया था। 9सभी जातियों, उपजातियों,
भाषाओं और देशों के लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन
तक देखते रहेंगे तथा वे उनके शवों को कब्रों में नहीं

रखने देंगे। 10धरती के वासी उन पर आनन्द मनायेंगे। वे
उत्सव करेंगे तथा परस्पर उपहार भेजेंगे। क्योंकि इन
दोनों नबियों ने धरती के निवासियों को बहुत दु:ख पहुँचाया
था।

11किन्तु साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर से उनमें
जीवन के श्वास ने प्रवेश किया और वे अपने पैरों पर खड़े
हो गये। जिन्होंने उन्हें देखा, वे बहुत डर गये थे। 12फिर उन
दोनों नबियों ने ऊँचे स्वर में आकाशवाणी को उनसे कहते
हुए सुना, "यहाँ ऊपर आ जाओ।" सो वे आकाश के भीतर
बादल में ऊपर चले गये। उन्हें ऊपर जाते हुए उनके विरोधियों
ने देखा।

13ठीक उसी क्षण वहाँ एक भारी भूचाल आया और
नगर का दसवाँ भाग ढह गया। भूचाल में सात हज़ार
लोग मारे गये तथा जो लोग बचे थे, वे भयभीत हो उठे
और वे स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा का बखान करने
लगे।

14इस प्रकार अब दूसरी विपत्ति बीत गयी है किन्तु
सावधान! तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आने वाली है।

सातवीं तुरही

15सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तो आकाश
में तेज आवाजें होने लगीं। वे कह रही थीं:

"अब जगत का राज्य हमारे प्रभु का है,
और उसके मसीह का ही।
अब वह सुशासन युगयुगों तक करेगा।"

16और तभी परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासनों
पर विराजमान चौबीसों प्राचीनों ने दण्डवत प्रणाम करके
परमेश्वर की उपासना की। 17वे बोले:

"सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
जो है, जो था,
हम तेरा धन्यवाद करते हैं।
तूने ही अपनी महाशक्ति को लेकर
सबके शासन का आरम्भ किया था।
18 अन्य जातियाँ क्रोध में भरी थीं
किन्तु अब तेरा कोप प्रकटे समय
और न्याय का समय आ गया।
उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे।
और समय आ गया कि
तेरे सेवक प्रतिफल पावें
सभी नबी जन, तेरे सब जन
और सभी जो तुझको आदर देते।
और सभी जो छोटे जन हैं
और सभी जो बड़े बने हैं
अपना प्रतिफल पावें।
उन्हें मिटाने का समय आ गया,
धरती को जो मिटा रहे हैं।"

19फिर स्वर्ग में स्थित परमेश्वर के मन्दिर को खोला
गया तथा वहाँ मन्दिर में वाचा की वह पेटी दिखाई दी। फिर
बिजली की चकाचौंध होने लगी। मेघों का गर्जन– तर्जन
और घड़घड़ाहट के शब्द भूकम्प और भयानक ओले
बरसने लगे।

स्त्री और विशालकाय अजगर

12 इसके पश्चात् आकाश में एक बड़ा सा संकेत
प्रकट हुआ: एक महिला दिखायी दी जिसने
सूरज को धारण किया हुआ था और चन्द्रमा उसके पैरों
तले था। उसके माथे पर मुकुट था जिसमें बारह तारे
जड़े थे। 2वह गर्भवती थी। और क्योंकि प्रसव होने ही
वाला था इसलिए प्रजनन की पीड़ा से वह कराह रही
थी। 3स्वर्ग में एक और संकेत प्रकट हुआ। मेरे सामने
ही एक लाल रंग का विशालकाय अजगर खड़ा था।
उसके सातों सिरों पर सात मुकुट थे। 4उसकी पूँछ ने
आकाश के तारों के एक तिहाई भाग को सपाटा मार कर
धरती पर नीचे फेंक दिया। वह स्त्री जो बच्चे को जन्म देने
ही वाली थी, वह अजगर उसके सामने खड़ा हो गया
ताकि वह जैसे ही उस बच्चे को जन्म दे, वह उसके बच्चे
को निगल जाये। 5फिर उस स्त्री ने एक बच्चे को जन्म
दिया जो एक लड़का था। उसे सभी जातियों पर लौह
दण्ड के साथ शासन करना था। किन्तु उस बच्चे को
उठाकर परमेश्वर और उसके सिंहासन के सामने ले जाया
गया। 6और वह स्त्री निर्जन वन में भाग गयी। एक ऐसा
स्थान जो परमेश्वर ने उसी के लिये तैयार किया था ताकि
वहाँ उसे एक हजार दो सौ साठ दिन तक जीवित रखा जा
सके।

7फिर स्वर्ग में एक युद्ध भड़क उठा। मीकाईल और
उसके दूतों का उस विशालकाय अजगर से संग्राम हुआ।
उस विशालकाय अजगर ने भी उसके दूतों के साथ
लड़ाई लड़ी। 8किन्तु वह उन पर भारी नहीं पड़ सका,

सो स्वर्ग में उनका स्थान उनके हाथ से निकल गया। [9]और
उस विशालकाय अजगर को नीचे धकेल दिया गया। यह
वही पुराना महानाग है जिसे दानव अथवा शैतान कहा गया
है। यह समूचे संसार को छलता रहता है। हाँ, इसे धरती पर
धकेल दिया गया था।

[10]फिर मैंने ऊँचे स्वर में एक आकाशवाणी को कहते
सुना: "यह हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी है। उसने
अपनी शक्ति और संप्रभुता का बोध करा दिया है। उसके
मसीह ने अपनी शक्ति को प्रकट कर दिया है क्योंकि
हमारे बन्धुओं पर परमेश्वर के सामने दिन-रात लांछन
लगाने वाले को नीचे धकेल दिया गया है। [11]उन्होंने मेमने
के बलिदान के रक्त और उनके द्वारा दी गयी साक्षी से उसे
हरा दिया है। उन्होंने अपने प्राणों का परित्याग करने तक
अपने जीवन की परवाह नहीं की। [12]सो हे स्वर्गो, और
स्वर्गो के निवासियो, आनन्द मनाओ। किन्तु हाय, धरती
और सागर, तुम्हारे लिए कितना बुरा होगा क्योंकि शैतान
अब तुम पर उतर आया है। वह क्रोध से आग बबूला हो
रहा है। क्योंकि वह जानता है कि अब उसका बहुत थोड़ा
समय शेष है।"

[13]जब उस विशाल काय अजगर ने देखा कि उसे
धरती पर नीचे धकेल दिया गया है तो उसने उस स्त्री का
पीछा करना शुरू कर दिया जिसने पुत्र जना था। [14]किन्तु
उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिये प्रदान किये
गये ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाये, जो उसके
लिये तैयार किया गया था। साढ़े तीन साल तक वहीं उस
विशाल काय अजगर से दूर उसका भरण-पोषण किया
जाना था। [15]तब उस महानाग ने उस स्त्री के पीछे अपने
मुख से नदी के समान जल धारा प्रवाहित की ताकि वह
उसमें बह कर डूब जाये। [16]किन्तु धरती ने अपना मुख
खोल कर उस स्त्री की सहायता की और उस विशालकाय
अजगर ने अपने मुख से जो नदी निकाली थी, उसे
निगल लिया। [17]इसके बाद तो वह विशालकाय अजगर
उस स्त्री पर बहुत क्रोधित हो उठा और उसके उन वंशजों
के साथ जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और
यीशु की साक्षी को धारण करते हैं, युद्ध करने को निकल
पड़ा।

[18]तथा सागर के किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

13 फिर मैंने सागर में से एक पशु को बाहर आते
देखा। उसके दस सींग थे और सात सिर थे। तथा
अपने सीगों पर उसने दस राजसी मुकुट पहने हुए थे। उसके
सिरों पर दुष्ट नाम अंकित थे।

[2]मैंने जो पशु देखा था, वह चीते जैसा था। उसके पैर
भालू के पैर जैसे थे और उसका मुख सिंह के मुख के
समान था। उस विशालकाय अजगर ने अपनी शक्ति, अपना
सिंहासन और अपना प्रचुर अधिकार उसे सौंप दिया। [3]मैंने
देखा कि उसका एक सिर ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे उस
पर कोई घातक घाव लगा हो किन्तु उसका वह घातक
घाव भर चुका था। समूचा संसार आश्चर्य चकित होकर
उस पशु के पीछे हो लिया। [4]तथा वे उस विशालकाय अजगर
को पूजने लगे। क्योंकि उसने अपना समूचा अधिकार उस
पशु को दे दिया था। वे उस पशु की भी उपासना करते हुए
कहने लगे, "इस पशु के समान कौन है? और ऐसा कौन है
जो उससे लड़ सके?"

[5]उसे अनुमति दे दी गयी कि वह अहंकारपूर्ण तथा निन्दा
से भरे शब्द बोलने में अपने मुख का प्रयोग करे। उसे
बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के प्रयोग का अधिकार
दिया गया। [6]सो उसने परमेश्वर की निन्दा करना आरम्भ
कर दिया। वह परमेश्वर के नाम और उसके मन्दिर तथा
जो स्वर्ग में रहते हैं, उनकी निन्दा करने लगा। [7]परमेश्वर
के संत जनों के साथ युद्ध करने और उन्हें हराने की
अनुमति उसे दे दी गयी। तथा हर वंश, हर जाति, हर
परिवार-समूह हर भाषा और हर देश पर उसे अधिकार
दिया गया। [8]धरती के वे सभी निवासी उस पशु की
उपासना करेंगे जिनके नाम उस मेमने की जीवन-पुस्तक
में संसार के आरम्भ से ही नहीं लिखे जिसका बलिदान
किया जाना सुनिश्चित है। [9]यदि किसी के कान हैं तो वह
सुने:

10 बंदीगृह में बंदी होना, जिसकी नियति बनी है
वह निश्चय ही बंदी होगा।
यदि कोई असि से मारेगा तो
वह भी उस ही असि से मारा जायेगा।

इसी में तो परमेश्वर के संत जनों से धैर्यपूर्ण सहनशीलता
और विश्वास की अपेक्षा है।

[11]इसके पश्चात् मैंने धरती से निकलते हुए एक और
पशु को देखा। उसके मेमने के सींगों जैसे दो सींग थे।

किन्तु वह एक महानाग के समान बोलता था। 12उस
विशालकाय अजगर के सामने वह पहले पशु के सभी
अधिकारों का उपयोग करता था। उसने धरती और धरती
पर सभी रहने वालों से उस पहले पशु की उपासना करवाई
जिसका घातक घाव भर चुका था। 13दूसरे पशु ने बड़े–बड़े
चमत्कार किये। यहाँ तक कि सभी लोगों के सामने उसने
धरती पर आकाश से आग बरसवा दी। 14वह धरती के
निवासियों को छलता चला गया क्योंकि उसके पास पहले
पशु की उपस्थिति में चमत्कार दिखाने की शक्ति थी।
दूसरे पशु ने धरती के निवासियों से उस पहले पशु को
आदर देने के लिये जिस पर तलवार का घाव लगा था और
जो ठीक हो गया था–उसकी मूर्ति बनाने को कहा। 15दूसरे
पशु को यह शक्ति दी गयी कि वह पहले पशु की मूर्ति में
प्राण प्रतिष्ठा करे ताकि पहले पशु की वह मूर्ति न केवल
बोल सके बल्कि उन सभी को मार डालने का आदेश भी
दे सके जो इस मूर्ति की उपासना नहीं करते। 16-17दूसरे
पशु ने छोटों–बड़ों, धनियों–निर्धनों, स्वतन्त्रों और दासों–सभी
को विवश किया कि वे अपने–अपने दाहिने हाथों या माथों
पर उस पशु के नाम या उसके नामों से सम्बन्धित संख्या
की छाप लगवायें ताकि उस छाप को धारण किये बिना
कोई भी ले बेच न कर सके। 18जिसमें बुद्धि हो, वह उस
पशु के अंक का हिसाब लगा ले क्योंकि वह अंक किसी
व्यक्ति के नाम से सम्बन्धित है। उसका अंक है छ: सौ
छियाषठ।

मुक्त जनों का गीत

14 फिर मैंने देखा कि मेरे सामने सिय्योन पर्वत पर
मेमना खड़ा है। उसके साथ ही एक लाख
चवालीस हजार वे लोग भी खड़े थे जिनके माथों पर
उसका और उसके पिता का नाम अंकित था। 2फिर मैंने
एक आकाशवाणी सुनी, उसका महा नाद एक विशाल
जल प्रपात के समान था या घनघोर मेघ गर्जन के जैसा था।
जो महानाद मैंने सुना था, वह अनेक वीणा वादकों
द्वारा एक साथ बजायी गयी वीणाओं से उत्पन्न संगीत के
समान था। 3वे लोग सिंहासन, चारों प्राणियों तथा प्राचीनों
के सामने एक नया गीत गा रहे थे। जिन एक लाख
चवालीस हजार लोगों को धरती पर फिरौती देकर बन्धन
से छुड़ा लिया गया था उन्हें छोड़ अन्य कोई भी व्यक्ति
उस गीत को नहीं सीख सकता था। 4वे ऐसे व्यक्ति थे
जिन्होंने किसी स्त्री के संसर्ग से अपने आपको दूषित नहीं
किया था। क्योंकि वे कुंवारे थे जहाँ कहीं मेमना जाता, वे
उसका अनुसरण करते। सारी मानव जाति से उन्हें फिरौती
देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था। वे परमेश्वर और
मेमने के लिये फसल के पहले फल थे। 5उन्होंने कभी झूठ
नहीं बोला था, वे निर्दोष थे।

तीन स्वर्गदूत

6फिर मैंने आकाश में ऊँची उड़ान भरते एक और
स्वर्गदूत को देखा। उसके पास धरती के निवासियों, प्रत्येक
देश, जाति, भाषा और कुल के लोगों के लिये सुसमाचार
का एक अनन्त सन्देश था। 7ऊँचे स्वर में वह बोला,
"परमेश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो। क्योंकि उसके
न्याय करने का समय आ गया है। उसकी उपासना करो,
जिसने आकाश पृथ्वी, सागर और जल–स्रोतों की रचना
की है।"

8इसके पश्चात् उसके पीछे एक और स्वर्गदूत आया
और बोला, "उसका पतन हो चुका है, महान नगरी बाबुल
का पतन हो चुका है। उसने सभी जातियों को अपने
व्यभिचार से उत्पन्न क्रोध की वासनामय मदिरा पिलायी
थी।"

9उन दोनों के पश्चात् फिर एक और स्वर्गदूत आया
और ऊँचे स्वर में बोला "यदि कोई उस पशु और उसकी
मूर्ति की उपासना करता है और अपने हाथ या माथे पर
उसका छाप धारण करता है 10तो वह परमेश्वर के
प्रकोप की मदिरा पीयेगा। ऐसी अमिश्रित तीखी मदिरा जो
परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे में तैयार की गयी है। उस
व्यक्ति को पवित्र स्वर्गदूतों और मेमने से सामने धधकती
हुई गंधक में यातनाएँ दी जायेंगी। 11युग–युगान्तर तक
उनकी यातनाओं से धूआँ उठता रहेगा। और जिस किसी
पर भी पशु के नाम की छाप अंकित होगी और जो
उसकी और उसकी मूर्ति की उपासना करता होगा, उन्हें
रात–दिन कभी चैन नहीं मिलेगा।" 12इसी स्थान पर
परमेश्वर के उन संत जनों की धैर्यपूर्ण सहनशीलता की
अपेक्षा है जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु में अपने
विश्वास का पालन करती है।

13फिर एक आकाशवाणी को मैंने यह कहते सुना, "इसे
लिख अब से आगे वे ही लोग धन्य होंगे जो प्रभु में स्थित हो
कर मरे हैं।"

आत्मा कहता है, "हाँ, यही ठीक है। उन्हें अपने परिश्रम
से अब विश्राम मिलेगा क्योंकि उनके कर्म, उनके साथ
हैं।"

धरती की फसल की कटनी

14फिर मैंने देखा कि मेरे सामने वहाँ एक सफेद बादल
था। और उस बादल पर एक व्यक्ति बैठा था जो मनुष्य
के पुत्र* जैसा दिख रहा था। उसने सिर पर एक स्वर्ण
मुकुट धारण किया हुआ था और उसके हाथ में एक तेज
हँसिया था। 15तभी मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत बाहर
निकला। उसने जो बादल पर बैठा था, उससे ऊँचे स्वर में
कहा, "हँसिया चला और फसल इकट्ठी कर क्योंकि
फसल काटने का समय आ पहुँचा है। धरती की फसल
पक चुकी है।" 16सो जो बादल पर बैठा था, उसने धरती
पर अपना हँसिया चलाया तथा धरती की फसल काट ली
गयी।

17फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत
बाहर निकला। उसके पास भी एक तेज हँसिया था।
18तभी वेदी से एक और स्वर्गदूत आया। अग्नि पर उसका
अधिकार था। उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में कहा, "अपने
तेज हँसिये का प्रयोग कर और धरती की बेल से अंगूर के
गुच्छे उतार ले क्योंकि इसके अंगूर पक चुके हैं।" 19सो
उस स्वर्गदूत ने धरती पर अपना हँसिया झुलाया और
धरती के अंगूर उतार लिये और उन्हें परमेश्वर के भयंकर
कोप की धानी में डाल दिया। 20अंगूर नगर के बाहर की
धानी में रौंद कर निचोड़ लिये गये। धानी में से लहू बह
निकला। लहू घोड़े की लगाम जितना ऊपर चढ़ आया और
कोई तीन सौ किलो मीटर की दूरी तक फैल गया।

अंतिम विनाश के दूत

15 आकाश में फिर मैंने एक और महान एवम्
अद्भुत चिह्न देखा। मैंने देखा कि सात दूत हैं जो
सात अंतिम महाविनाशों को लिये हुए हैं। ये अंतिम विनाश
हैं क्योंकि इनके साथ परमेश्वर का कोप भी समाप्त हो
जाता है।

2फिर मुझे काँच का एक सागर सा दिखायी दिया
जिसमें मानो आग मिली हो। और मैंने देखा कि उन्होंने उस
पशु की मूर्ति पर तथा उसके नाम से सम्बन्धित संख्या पर
विजय पा ली है, वे भी उस काँच के सागर पर खड़े हैं।
उन्होंने परमेश्वर के द्वारा दी गयी वीणाएँ ली हुई थीं। 3वे
परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने का यह गीत गा रहे
थे:

"वे कर्म जिन्हें तू करता रहता, महान है।
तेरे कर्म अदभुत, तेरी शक्ति अनन्त है,
हे प्रभु परमेश्वर,
तेरे मार्ग सच्चे और धार्मिकता से भरे हुए हैं।
सभी जातियों का राजा,
4 हे प्रभु, तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे।
तेरा नाम लेकर सब जन स्तुति करेंगे
क्योंकि तू मात्र ही पवित्र है।
सभी जातियों तेरे सम्मुख उपस्थित हुई
तेरी उपासना करें।
क्योंकि उजागर तथ्य यही है
हे प्रभु, तू जो करता वही न्याय है।"

5इसके पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग के मन्दिर अर्थात्
वाचा के तम्बू को खोला गया 6और वे सातों दूत जिनके
पास अंतिम सात विनाश थे, मन्दिर से बाहर आये। उन्होंने
चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहने हुए
थे। अपने सीनों पर सोने के पटके बाँधे हुए थे। 7फिर उन
चार प्राणियों में से एक ने उन सातों दूतों को सोने के कटोरे
दिये जो सदा-सर्वदा के लिये अमर परमेश्वर के कोप से
भरे हुए थे। 8वह मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी
शक्ति के धुएँ से भरा हुआ था ताकि जब तक उन सात दूतों
के सात विनाश पूरे न हो जायें, तब तक मन्दिर में कोई भी
प्रवेश न करने पाये।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

16 फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से एक ऊँचा स्वर
उन सात दूतों से कह रहा है, "जाओ और
परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को धरती पर उँड़ेल
दो।"

2सो पहला दूत गया और उसने धरती पर अपना प्याला
उँड़ेल दिया। परिणामस्वरूप उन लोगों के, जिन पर उस
पशु का चिह्न अंकित था और जो उसकी मूर्ति को पूजते थे,
भयानक पीड़ा पूर्ण छाले फूट आये।

मनुष्य के पुत्र देखें दानि. 7:13-14 यीशु स्वयं अपने लिए प्राय:
इन नाम का प्रयोग किया करता था।

3इसके पश्चात् दूसरे दूत ने अपना कटोरा समुद्र पर
उँड़ेल दिया और सागर का जल मरे हुए व्यक्ति के लहू के
रूप में बदल गया और समुद्र में रहने वाले सभी जीव–जन्तु
मारे गये।

4फिर तीसरे दूत ने नदियों और जल के झरनों पर
अपना कटोरा उँड़ेल दिया। और वे लहू में बदल गये 5तभी
मैंने जल के स्वामी स्वर्गदूत को यह कहते सुना:

"वह तू ही है जो न्यायी
जो है, जो था सदा–सदा से
तू ही है जो पवित्र।
तूने जो किया है वह न्याय है।
6 उन्होंने संत जनों का
और नबियों का लहू बहाया।
तू न्यायी है
तूने उनके पीने को बस रक्त ही दिया,
क्योंकि वे इसी के योग्य रहे।"
7 फिर मैंने वेदी से आते हुए ये शब्द सुने:
"हाँ, हे सर्वशक्तिमान
प्रभु परमेश्वर!
तेरे न्याय सच्चे और नेक हैं।"

8फिर चौथे दूत ने अपना प्याला सूरज पर उँड़ेल दिया।
सो उसे लोगों को आग से जला डालने की शक्ति प्रदान कर
दी गयी। 9और लोग भयानक गर्मी से झुलसने लगे। उन्होंने
परमेश्वर के नाम को कोसा क्योंकि इन विनाशों पर उसी
का नियन्त्रण है। किन्तु उन्होंने कोई मन न फिराया और न
ही उसे महिमा प्रदान की।

10इसके पश्चात् पाँचवे दूत ने अपना प्याला उस पशु के
सिंहासन पर उँड़ेल दिया और उस का राज्य अंधकार में
डूब गया। लोगों ने पीड़ा के मारे अपनी जीभ काट ली।
11अपनी–अपनी पीड़ाओं और छालों के कारण उन्होंने
स्वर्ग के परमेश्वर की भर्त्सना तो की, किन्तु अपने कर्मों
के लिए मन न फिराया।

12फिर छठे दूत ने अपना कटोरा फरात नामक महानदी
पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया। इससे पूर्व
दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो गया। 13फिर
मैंने देखा कि उस विशालकाय अजगर के मुख से, उस
पशु के मुख से और कपटी नबियों के मुख से तीन
दुष्टात्माएँ निकलीं, जो मेंढक के समान दिख रहीं थीं।
14ये शैतानी दुष्ट आत्माएँ थीं और उनमें चमत्कार दिखाने
की शक्ति थी। वे समूचे संसार के राजाओं को परम शक्तिमान
परमेश्वर के महान दिन, युद्ध करने के लिये एकत्र करने
को निकल पड़ीं।

15"सावधान! मैं दबे पाँव आकर तुम्हें अचरज में डाल
दूँगा। वह धन्य है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्रों को
अपने साथ रखता है ताकि वह नंगा न फिरे और लोग उसे
लज्जित होते न देखें।"

16इस प्रकार वे दुष्टात्माएँ उन राजाओं को इकट्ठा
करके उस स्थान पर ले आई, जिसे इब्रानी भाषा में
हरमगिदोन कहा जाता है।

17इसके बाद सातवें दूत ने अपना प्याला हवा में उँड़ेल
दिया। और सिंहासन से उत्पन्न हुई एक घनघोर ध्वनि
मन्दिर में से यह कहती निकली, "यह समाप्त हो गया।"
18तभी बिजली कौंधने लगी, गड़गड़ाहट और मेघों का
गर्जन–तर्जन होने लगा तथा एक बड़ा भूचाल भी आया।
मनुष्य के इस धरती पर प्रकट होने के बाद का यह सबसे
भयानक भूचाल था। 19वह महान् नगरी तीन टुकड़ों में
बिखर गयी तथा अधर्मियों के नगर ध्वस्त हो गये। परमेश्वर
ने बाबुल की महानगरी को दण्ड देने के लिए याद किया
था। ताकि वह उसे अपने भभकते क्रोध की मदिरा से भरे
प्याले को उसे दे दे। 20सभी द्वीप लुप्त हो गये। किसी पहाड़
तक का पता नहीं चल पा रहा था। 21चालीस चालीस किलो
के ओले, आकाश से लोगों पर पड़ रहे थे। ओलों के इस
महाविनाश के कारण लोग परमेश्वर को कोस रहे थे
क्योंकि यह एक भयानक विपत्ति थी।

पशु पर बैठी स्त्री

17 इसके बाद उन सात दूतों में से जिनके पास
सात कटोरे थे, एक मेरे पास आया और बोला,
"आ, मैं तुझे बहुत सी नदियों के किनारे बैठी उस महान
वेश्या के दण्ड को दिखाऊँगा। 2धरती के राजाओं ने उसके
साथ व्यभिचार किया है और वे जो धरती पर रहते हैं वे
उसकी व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए।"

3फिर मैं आत्मा से भावित हो उठा और वह दूत मुझे
बीहड़ वन में ले गया जहाँ मैंने एक स्त्री को लाल रंग के
एक ऐसे पशु पर बैठे देखा जो परमेश्वर के प्रति अपशब्दों
से भरा था। उसके सात सिर थे और दस सींग। 4उस स्त्री
ने बैजनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। वह सोने,
बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सजी हुई थी। वह अपने

हाथ में सोने का एक कटोरा लिये हुए थी जो बुरी बातों
और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ
था। 5उसके माथे पर एक प्रतीकात्मक शीर्षक था: "महान
बाबुल:

वेश्याओं और धरती पर
की सभी अश्लीलताओं की जननी।"

6मैंने देखा कि उस स्त्री ने संत जनों और उन व्यक्तियों
के लहू पीने से मतवाली हुई है। जिन्होंने यीशु के प्रति
अपने विश्वास की साक्षी को लिये हुए अपने प्राण त्याग
दिये।

उसे देखकर मैं बड़े अचरज में पड़ गया। 7तभी उस दूत
ने मुझसे पूछा, "तुम अचरज में क्यों पड़े हो? मैं तुम्हें इस
स्त्री के और जिस पशु पर वह बैठी है, उसके प्रतीक को
समझाता हूँ। सात सिरों और दस सीगों वाला यह पशु 8जो
तुमने देखा है, पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित
नहीं है। फिर भी वह पाताल से अभी निकलने वाला है।
और तभी उसका विनाश हो जायेगा। फिर धरती के वे
लोग जिन के नाम सृष्टि के प्रारम्भ से ही जीवन की पुस्तक
में नहीं लिखे गये हैं, उस पशु को देखकर चकित होंगे
क्योंकि कभी वह जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है,
पर फिर भी वह आने वाला है।

9यही वह बिन्दु है जहाँ विवेकशील बुद्धि की आवश्यकता
है। ये सात सिर, वे सात पर्वत हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। वे
सात सिर, उन सात राजाओं के भी प्रतीक हैं, 10जिनमें से
पहले पाँच का पतन हो चुका है, एक अभी भी राज्य कर
रहा है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है। किन्तु जब वह
आयेगा तो उसकी यह नियति है कि वह कुछ देर ही टिक
पायेगा।

11वह पशु जो पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित
नहीं है, स्वयं आठवाँ राजा है जो उन सातों में से ही एक है,
उसका भी विनाश होने वाला है।

12जो दस सींग तुमने देखे हैं, वे दस राजा हैं, उन्होंने
अभी अपना शासन आरम्भ नहीं किया है परन्तु पशु के
साथ घड़ी भर राज्य करने को उन्हें अधिकार दिया जायेगा।
13इन दसों राजाओं का एक ही प्रयोजन है कि वे अपनी
शक्ति और अपना अधिकार उस पशु को सौप दें। 14वे
मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे किन्तु मेमना अपने बुलाए हुओं,
चुने हुओं और अनुयायिओं के साथ उन्हें हरा देगा। क्योंकि
वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।"

15उस दूत ने मुझसे फिर कहा, "वे नदियाँ जिन्हें तुमने
देखा था, जहाँ वह वेश्या बैठी थी, विभिन्न कुलों, समुदायों,
जातियों और भाषाओं की प्रतीक है। 16वे दस सींग जिन्हें
तुमने देखा, और वह पशु उस वेश्या से घृणा करेंगे तथा
उससे सब कुछ छीन कर उसे नंगा छोड़ जायेंगे। वे शरीर
को खा जायेंगे और उसे आग में जला डालेंगे। 17अपने
प्रयोजन को पूरा कराने के लिये परमेश्वर ने उन सब को
एक मत करके, उनके मन में यही बैठा दिया है कि वे,
जब तक परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हो जाते, तब तक
शासन करने का अपना अधिकार उस पशु को सौंप दें।
18वह स्त्री जो तुमने देखी थी, वह महानगरी थी, जो धरती
के राजाओं पर शासन करती है।"

बाबुल का विनाश

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश
से बड़ी शक्ति के साथ नीचे उतरते देखा। उसकी
महिमा से सारी धरती प्रकाशित हो उठी। 2शक्तिशाली स्वर
से पुकारते हुए वह बोला:

"वह मिट गयी, बाबुल नगरी मिट गयी।
वह दानवों का आवास बन गयी थी।
हर किसी दुष्टात्मा का वह बसेरा बन गयी थी
हर किसी घृणित पक्षी का वह बसेरा बन गयी थी!
हर किसी अपवित्र, निन्दा–योग्य पशु का।
3 क्योंकि उसने सब जनों को व्यभिचार के क्रोध की
मदिरा पिलायी थी।
इस जगत के शासकों ने जो स्वयं जगाई थी
उससे व्यभिचार किया था।
और उसके भोग व्यय से
जगत के व्यापारी सम्पन्न बने थे।

4आकाश से मैंने एक और स्वर सुना जो कह रहा था:

"हे, मेरे जनो, तुम वहाँ से बाहर निकल आओ
तुम उसके पापों में कहीं साक्षी न बन जाओ;
कहीं ऐसा न हो,
तुम पर ही वे नाश गिरें जो उसके रहे थे,
5 क्योंकि उसके पाप की ढेरी
बहुत ऊँची गगन तक है।
परमेश्वर उसके बुरे कर्मों को याद कर रहा है।
6 हे! तुम भी तो उससे ठीक
वैसा व्यवहार करो जैसा

तुम्हारे साथ उसने किया था।
जो उसने तुम्हारे साथ किया
उससे दुगुना उसके साथ करो।
दूसरों के हेतु उसने
जिस कटोरे में मदिरा मिलाई
वही मदिरा तुम उसके
हेतु दुगनी मिलाओ।
7 क्योंकि जो महिमा और वैभव
उसने स्वयं को दिया
तुम उसी ढँग से उसे यातनाएँ और पीड़ा दो
क्योंकि वह स्वयं अपने
आप ही से कहती रही है,
'मैं अपनी नृपासन विराजित महारानी
मैं विधवा नहीं फिर शोक क्यों करूँगी?'
8 इसलिए वे नाश जो महा मृत्यु, महारोदन
और वह दुर्भिक्ष भीषण है।
उसको एक ही दिन घेर लेंगे,
और उसको जला कर भस्म कर देंगे
क्योंकि परमेश्वर प्रभु जो बहुत सक्षम है,
उसी ने इसका यह न्याय किया है।

9जब धरती के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार
किया और उसके भोग–विलास में हिस्सा बटाया, उसके
जलने से निकलते घुआँ को देखेंगे तो वे उसके लिये रोयेंगे
और विलाप करेंगे। 10वे उसके कष्टों से डर कर वहीं से
बहुत दूर ही खड़े हुए कहेंगे:

"हे! शक्तिशाली नगर बाबुल!
भयावह ओ, हाय भयानक! तेरा दण्ड
तुझको बस घड़ी भर में मिल गया।"

11इस धरती पर के व्यापारी भी उसके कारण रोयेंगे
और विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएँ अब कोई और
मोल नहीं लेगा, 12वस्तुएँ–सोने की, चाँदी की, बहुमूल्य रत्न,
मोती, मलमल, बैजनी, रेशमी और किरमिजी वस्त्र, हर
प्रकार की सुगंधित लकड़ी हाथी दाँत की बनी हुई हर
प्रकार की वस्तुएँ, अनमोल लकड़ी, काँसे लोहे और
संगमरमर से बनी हुई तरह–तरह की वस्तुएँ 13दार चीनी,
गुलमेंहदी, सुगंधित धूप, रस गंध, लोहबान, मदिरा, जैतून
का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़े, घोड़े और रथ, दास, हाँ,
मनुष्यों की देह और उनकी आत्माएँ तक।

14 "हे बाबुल! वे सभी उत्तम वस्तुएँ,
जिनमें तेरा हृदय रमा था,
तुझे सब छोड़ चली गयी हैं
तेरा सब विलास वैभव भी आज नहीं है।
अब न कभी वे तुझे मिलेंगी।"

15वे व्यापारी जो इन वस्तुओं का व्यापार करते थे
और उससे सम्पन्न बन गये थे, वे दूर–दूर ही खड़े रहेंगे
क्योंकि वे उसके कष्टों से डर गये हैं। वे रोते–बिलखते
16कहेंगे:

"कितना भयावह और कितना भयानक है,
महानगरी! यह उसके हेतु हुआ।
उत्तम मलमली वस्त्र पहनती थी
बैजनी किर और मिजी!
और स्वर्ण से बहुमूल्य रत्नों से
सुसज्जित मोतियो से सजती ही रही थी।'
17 और बस घड़ी भर में
यह सारी सम्पत्ति मिट गयी।"

फिर जहाज का हर कप्तान, या हर वह व्यक्ति जो जहाज
से चाहे कहीं भी जा सकता है तथा सभी मल्लाह और वे
सब लोग भी जो सागर से अपनी जीविका चलाते हैं, उस
नगरी से दूर ही खड़े रहे 18और जब उन्होंने उसके जलने से
उठती धुआँ को देखा तो वे पुकार उठे, "इस विशाल नगरी
के समान और कौन सी नगरी है?"

19फिर उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए
रोते–बिलखते कहा,

"महानगरी! हाय यह कितना भयावह!
हाय यह कितना भयानक।
जिनके पास जलयान थे,
सिंधु जल पर सम्पत्तिशाली बन गये,
क्योंकि उसके पास सम्पत्ति थी
पर अब बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी।
20 उसके हेतु आनन्द मनाओ
तुम हे स्वर्ग! प्रेरित! और नबियो!
तुम परमेश्वर के जनों आनन्द मनाओ!
क्योंकि प्रभु ने उसको ठीक
वैसा दण्ड दे दिया है
जैसा वह दण्ड उसने तुम्हें दिया था।

21फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसी
एक बड़ी सी चट्टान उठाई और उसे सागर में फेंकते हुए
कहा,

"महानगरी! हे बाबुल महानगरी!
ठीक ऐसे ही तू गिरा दी जायेगी
तू फिर लुप्त हो जायेगी,
और तू नहीं मिल पायेगी।
22 तुझमें फिर कभी नहीं वीणा बजेगी,
और गायक कभी भी स्तुति पाठ न कर पायेंगे।
वंशी कभी नहीं गूँजेंगी
कोई भी तुरही तान न सुनेगा,
तुझमें अब कोई कला शिल्पी कभी न मिलेगा
अब तुझमें कोई भी कला न बचेगा!
अब चक्की पीसने का स्वर
कभी भी ध्वनित न होगा।
23 दीप की किंचित किरण
तुझमें कभी भी न चमकेगी,
अब तुझमें किसी वर की किसी वधु की
मधुर ध्वनि कभी न गुंजेगी।
तेरे व्यापारी जगती के महा मनुज थे
तेरे जादू ने सब जातों को भरमाया
24 नगरी ने नबियों का संत जनों का
उन सब ही का लहू बहाया था।
इस धरती पर जिनको बलि
पर चढ़ा दिया था।"

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

19 इसके पश्चात् मैंने भीड़ का सा एक ऊँचा
स्वर सुना। लोग कह रहे थे:

"हल्लिलूय्याह!
परमेश्वर की जय हो, जय हो!
महिमा और सामर्थ्य सदा हो!
2 उसके न्याय सदा सच्चे हैं, धर्म युक्त हैं,
उस महती वेश्या का उसने न्याय किया है
जिसने अपने व्यभिचार से
इस धरती को भ्रष्ट किया था
जिनको उसने मार दिया उन दास जनों की
हत्या का प्रतिशोध हो चुका।"

3 उन्होंने यह फिर गाया:
"हल्लिलूय्याह!
जय हो उसकी उससे धुआँ युग युग उठेगा।"

4फिर चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने सिंहासन
पर विराजमान परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया और
उसकी उपासना करते हुए गाने लगे:

"आमीन!
हल्लिलूय्याह"
जय हो उसकी

5स्वर्ग से फिर एक आवाज आयी जो कह रही थी:

"हे उसके सेवको,
तुम सभी हमारे परमेश्वर का
स्तुति गान करो तुम चाहे छोटे हो,
चाहे बड़े बने हो, जो उससे डरते रहते हो।"

6फिर मैंने एक बड़े जन समुद्र का सा शब्द सुना जो एक
विशाल जल-प्रवाह और मेघों के शक्तिशाली गर्जन-तर्जन
जैसा था। लोग गा रहे थे:

"हल्लिलूय्याह!
उसकी जय हो,
क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर!
सर्वशक्ति सम्पन्न राज्य कर रहा है।
7 सो आओ, खुश हो-हो कर आनन्द मनाएँ
आओ, उसको महिमा देवें!
क्योंकि अब मेमने के ब्याह का समय आ गया
उसकी दुल्हन सजी-धजी तैयार हो गयी
8 उसको अनुमति मिली
स्वच्छ धवल पहन ले वह निर्मल मलमल।"

(यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक है।)

9फिर वह मुझसे कहने लगा, "लिखो वे धन्य हैं जिन्हें
इस विवाह भोज में बुलाया गया है।" उसने फिर कहा, "ये
परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

10और मैं उसकी उपासना करने के लिये उसके चरणों
में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, "सावधान। ऐसा मत
कर। मैं तो तेरे और तेरे बंधुओं के साथ परमेश्वर का संगी
सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा साक्षी दिये गये सन्देश के
प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर की उपासना कर क्योंकि
यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश इस बात का प्रमाण है कि
उनमें एक नबी की आत्मा है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

11फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने
एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार 'विश्वसनीय' और
'सत्य' कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह निर्णय करता
है और युद्ध करता है। 12उसकी आँखें ऐसी थीं मानों अग्नि
की लपट हो। उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे। उस पर
एक नाम लिखा था, जिसे उसके अतिरिक्त कोई और नहीं
जानता। 13उसने ऐसा वस्त्र पहना था जिसे लहू में डुबाया
गया था। उसे नाम दिया गया था–"परमेश्वर का वचन।"
14सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएँ उसके पीछे पीछे
चल रही थीं। उन्होंने शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र पहने थे।
15अधर्मियों पर प्रहार करने के लिये उसके मुख से एक
तेज धार की तलवार बाहर निकल रही थी। वह उन पर
लोहे के दण्ड से शासन करेगा और सर्वशक्ति-सम्पन्न
परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में वह अंगूरों का रस
निचोड़ेगा। 16उसके वस्त्र तथा उसकी जाँघ पर लिखा था:

राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु

17इसके बाद मैंने देखा कि सूर्य के ऊपर एक स्वर्गदूत
खड़ा है। उसने ऊँचे आकाश में उड़ने वाले सभी पक्षियों से
ऊँचे स्वर में कहा, "आओ, परमेश्वर के महा भोज के
लिये एकत्र हो जाओ 18ताकि तुम शासकों सेनापतियों प्रसिद्ध
पुरुषों, घोड़ों और उनके सवारों का माँस खा सको। और
सभी लोगों स्वतन्त्र व्यक्तियों, सेवकों छोटे लोगों और
महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की देहों को खा सको।"

19फिर मैंने उस पशु को और धरती के राजाओं को
देखा। उनके साथ उनकी सेना थी। वे उस घुड़सवार और
उसकी सेना से युद्ध करने के लिये एक साथ आ जुटे थे।
20पशु को घेर लिया गया था। उसके साथ वह झूठा नबी भी
था जो उसके सामने चमत्कार दिखाया करता था और
उनको छला करता था जिन पर उस पशु की छाप लगी थी
और जो उसकी मूर्ति की उपासना किया करते थे। उस
पशु और झूठे नबी दोनों को ही जलते गंधक की भभकती
झील में जीवित ही डाल दिया गया था। 21घोड़े के सवार के
मुख से जो तलवार निकल रही थी, बाकी के सैनिक उससे
मार डाले गये फिर पक्षियों ने उनके शवों के माँस को भर
पेट खाया।

हज़ार वर्ष

20 फिर आकाश से मैंने एक स्वर्गदूत को नीचे
उतरते देखा। उसके हाथ में पाताल की चाबी
और एक बड़ी साँकल थी। 2उसने उस पुराने महा सर्प
को पकड़ लिया जो दैत्य यानी शैतान है फिर एक हजार
वर्ष के लिये उसे साँकल से बाँध दिया। 3तब उस स्वर्गदूत
ने उसे महा गर्त में धकेल कर ताला लगा दिया और उस
पर कपाट लगा कर मुहर लगा दी ताकि जब तक हजार
साल पूरे न हो जायें वह लोगों को धोखा न दे सके।
हजार साल पूरे होने के बाद थोड़े समय के लिये उसे छोड़ा
जाना है।

4फिर मैंने कुछ सिंहासन देखे जिन पर कुछ लोग बैठे
थे। उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। और
मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर, उस
सत्य के कारण, जो यीशु द्वारा प्रमाणित है, और परमेश्वर
के संदेश के कारण काटे गये थे, जिन्होंने उस पशु या
उसकी प्रतिमा की कभी उपासना नहीं की थी। तथा जिन्होंने
अपने माथों पर या अपने हाथों पर उसका संकेत चिह्न
धारण नहीं किया था। वे फिर से जीवित हो उठे और उन्होंने
मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य किया। 5(शेष
लोग हज़ार वर्ष पूरे होने तक फिर से जीवित नहीं हुए।) यह
पहला पुनरुत्थान है। 6वह धन्य है और पवित्र भी है जो
पहले पुनरुत्थान में भाग ले रहा है। इन व्यक्तियों पर दूसरी
मृत्यु को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। बल्कि वे तो परमेश्वर
और मसीह के अपने याजक होंगे और उसके साथ एक
हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

7फिर एक हज़ार वर्ष पूरे हो चुकने पर शैतान को
उसके बंदीगृह से छोड़ दिया जायेगा। 8और वह समूची धरती
पर फैली जातियों को छलने के लिये निकल पड़ेगा। वह
गोग और मागोग को छलेगा। वह उन्हें युद्ध के लिये एकत्र
करेगा। वे उतने ही अनगिनत होगें जितने समुद्र तट के
रेत-कण। 9शैतान की सेना समूची धरती पर फैल जायेगी
और वे संत जनों के डेरे और प्रिय नगरी को घेर लेंगे।
किन्तु आग उतरेगी और उन्हें निगल जाएगी, 10इस के
पश्चात् उस शैतान को जो उन्हें छलता रहा है भभकती
गंधक की झील में फेंक दिया जायेगा जहाँ वह पशु और
झूठे नबी, दोनों ही डाले गये हैं। सदा-सदा के लिये उन्हें रात
दिन तड़पाया जायेगा।

संसार के लोगों का न्याय

11फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन को और उसे
जो उस पर विराजमान था, देखा। उसके सामने से धरती
और आकाश भाग खड़े हुए। उनका पता तक नहीं चल
पाया। 12फिर मैंने छोटे और बड़े मृतकों को देखा। वे
सिंहासन के आगे खड़े थे। कुछ पुस्तकें खोली गयीं। फिर
एक और पुस्तक खोली गयी। यही 'जीवन की पुस्तक है।
उन कर्मों के अनुसार जो पुस्तकों में लिखे गये थे, मृतकों
का न्याय किया गया। 13जो मृतक सागर में थे, उन्हें
सागर ने दे दिया, तथा मृत्यु और पाताल ने भी अपने अपने
मृतक सौंप दिये। प्रत्येक का न्याय उसके कर्मो के
अनुसार किया गया। 14इसके बाद मृत्यु को और पाताल
को आग की झील में झोंक दिया गया। यह आग की झील
ही दूसरी मृत्यु है। 15यदि किसी का नाम 'जीवन की पुस्तक'
में लिखा नहीं मिला, तो उसे भी आग की झील में धकेल
दिया गया।

नया यरूशलेम

21 फिर मैंने एक नया स्वर्ग और नयी धरती
देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली धरती
लुप्त हो चुके थे। और वह सागर भी अब नहीं रहा था।
2मैंने यरुशलेम की वह पवित्र नगरी भी आकाश से बाहर
निकल कर परमेश्वर की ओर से नीचे उतरते देखी। उस
नगरी को ऐसे सजाया गया था जैसे मानों किसी दुल्हन
को उसके पति के लिये सजाया गया हो। 3तभी मैंने
आकाश में एक ऊँची ध्वनि सुनी। वह कह रही थी,
"देखो अब परमेश्वर का मन्दिर मनुष्यों के बीच है और
वह उन्हीं के बीच घर बनाकर रहा करेगा। वे उसकी
प्रजा होंगे और स्वयं परमेश्वर उनका परमेश्वर होगा।
4उनकी आँख से वह हर आँसू पोंछ डालेगा। और वहाँ
अब न कभी मृत्यु होगी, न शोक के कारण कोई रोना–धोना
और नहीं कोई पीड़ा। क्योंकि वे सब पुरानी बातें अब
समाप्त हो चुकी हैं।"

5इस पर जो सिंहासन पर बैठा था, वह बोला, "देखो, मैं
सब कुछ को नया किये दे रहा हूँ।" उसने फिर कहा, "इसे
लिख ले क्योंकि ये वचन विश्वास करने योग्य हैं और सत्य
हैं।"

6वह मुझसे फिर बोला, "सब कुछ पूरा हो चुका है। मैं
ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही आदि हूँ और मैं ही
अन्त हूँ।" जो भी प्यासा है मैं उसे जीवन–जल के स्रोत से
सेंत–मेत में मुक्त भाव से जल पिलाऊँगा। 7जो विजयी होगा,
उस सब कुछ का मालिक बनेगा। मैं उसका परमेश्वर
होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा। 8किन्तु कायरों
अविश्वासियों, दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना
करने वालों मूर्ति–पूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को
भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा बँटाना
होगा। यही दूसरी मृत्यु है।"

9फिर उन सात दूतों में से, जिनके पास सात अंतिम
विनाशों से भरे कटोरे थे, एक आगे आया और मुझसे
बोला, "यहाँ आ। मैं तूझे वह दुल्हिन दिखा दूँ जो मेमने की
पत्नी है।" 10अभी मैं आत्मा के आवेश में ही था कि वह मुझे
एक विशाल और ऊँचे पर्वत पर ले गया। फिर उसने मुझे
यरुशलेम की पवित्र नगरी का दर्शन कराया। वह परमेश्वर
की ओर से आकाश से नीचे उतर रही थी।

11वह परमेश्वर की महिमा से मण्डित थी। वह सर्वथा
निर्मल यशब नामक महामूल्यवान रत्न के समान चमक
रही थी। 12नगरी के चारों ओर एक विशाल ऊँचा परकोटा
था जिसमें बारह द्वार थे। उन बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत
थे। तथा बारहों द्वारों पर इस्राएल के बारह कुलों के नाम
अंकित थे। 13इनमें से तीन द्वार पूर्व की ओर थे, तीन द्वार
उत्तर की ओर, तीन द्वार दक्षिण की ओर और तीन द्वार
पश्चिम की ओर थे। 14नगर का परकोटा बारह नीवों पर
बनाया गया था तथा उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के
नाम अंकित थे।

15जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसके पास
सोने से बनी नापने की एक छड़ी थी जिससे वह उस
नगर को, उसके द्वारों को और उसके परकोटे को नाप
सकता था। 16नगर को वर्गाकार में बसाया गया था। यह
जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। उस स्वर्गदूत ने उस
छड़ी से उस नगरी को नापा। वह कोई बारह हज़ार
स्टोडिया पायी गयी। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई
एक जैसी थी। 17स्वर्गदूत ने फिर उसके परकोटे को
नापा। वह कोई एक सौ चवालीस हाथ था। उसे मनुष्य के
हाथों की लम्बाई से नापा गया था जो हाथ स्वर्गदूत का
भी हाथ है। 18नगर का परकोटा यशब नामक रत्नें का
बना था तथा नगर को काँच के समान चमकते शुद्ध सोने
से बनाया गया था। 19नगर के परकोटे की नीवें हर
प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सजाई गयी थी। नींव का

पहला पत्थर यशब का बना था, दूसरी नीलम से, तीसरी स्फटिक से, चौथी पन्ने से, 20पाँचवीं गोमेद से, छठी मानक से, सातवीं पीत मणि से, आठवीं पेरोज से, नवीं पुखराज से, दसवीं लहसनिया से, ग्यारहवीं धूम्रकांत से, और बारहवीं चन्द्रकाँत मणि से बनी थी। 21बारहों द्वार बारह मोतियों से बने थे, हर द्वार एक–एक मोती से बना था। नगर की गलियाँ स्वच्छ काँच जैसे शुद्ध सोने की बनी थीं।

22नगर में मुझे कोई मन्दिर दिखाई नहीं दिया। क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे। 23उस नगर को किसी सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उसे प्रकाश दें; क्योंकि वह तो परमेश्वर के तेज से आलोकित था। और मेमना ही उस नगर का दीपक है। 24सभी जातियों के लोग इसी दीपक के प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे। और इस धरती के राजा अपनी भव्यता को इस नगर में लायेंगे। 25दिन के समय इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे और वहाँ रात तो कभी होगी ही नहीं। 26जातियों के कोष और धन सम्पत्ति को उस नगर में लाया जायेगा। 27कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

22

इसके पश्चात् उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन देने वाले जल की एक नदी दिखाई। वह नदी स्फटिक की तरह उज्ज्वल थी। वह परमेश्वर और मेमने के सिंहासन के निकलती हुई 2नगर की गलियों के बीच से होती हुई बह रही थी। नदी के दोनों तटों पर जीवन वृक्ष उगा था। उन पर हर साल बारह फसल लगा करतीं थीं। इसके प्रत्येक वृक्ष पर प्रतिमास एक फसल लगती थी तथा इन वृक्षों की पत्तियाँ अनेक जातियों को निरोग करने के लिये थीं। 3वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप नहीं होगा। परमेश्वर और मेमने का सिंहासन वहाँ बना रहेगा। तथा उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे 4तथा उसका नाम उनके माथों पर अंकित रहेगा। 5वहाँ कभी रात नहीं होगी और न ही उन्हें सूर्य के अथवा दीपक के प्रकाश की कोई आवश्यकता रहेगी। क्योंकि उन पर प्रभु परमेश्वर अपना प्रकाश डालेगा और वे सदा सदा शासन करेंगे।

6फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने सेवकों को, जो कुछ शीघ्र ही घटने वाला है, उसे जताने के लिये अपना स्वर्गदूत भेजा है।"

7"सुनो! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। धन्य हैं वह जो इस पुस्तक में दिये गये उन वचनों का पालन करते हैं जो भविष्यवाणी हैं।" 8मैं यूहन्ना हूँ। मैंने ये बातें सुनी और देखी हैं। जब मैंने ये बातें देखी सुनी तो उस स्वर्गदूत के चरणों में गिर कर मैंने उसकी उपासना की जो मुझे ये बातें दिखाया करता था। 9उसने मुझसे कहा, "सावधान, तू ऐसा मत कर। क्योंकि मैं तो तेरा, तेरे बंधु नबियों का जो इस पुस्तक में लिखे वचनों का पालन करते हैं, एक सह–सेवक हूँ। बस परमेश्वर की ही उपासना कर।"

10उसने मुझसे फिर कहा, "इस पुस्तक में जो भविष्यवाणियाँ दी गयी हैं, उन्हें छुपा कर मत रख क्योंकि इन बातों के घटित होने का समय निकट ही है। 11जो बुरा करते चले आ रहे हैं, वे बुरा करते रहें। जो अपवित्र बने हुए हैं, वे अपवित्र ही बने रहें। जो धर्मी हैं, वे धर्मी ही करते रहें। जो पवित्र हैं वे पवित्र बने रहें।"

12"देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ और अपने साथ तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। 13मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और मैं ही अन्तिम हूँ।" मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।

14"धन्य हैं वह जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं। उन्हें जीवन–वृक्ष के फल खाने का अधिकार होगा। वे द्वार से होकर नगर में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे। 15किन्तु 'कुत्ते', जादू–टोना करने वाले, व्यभिचारी, मूर्ति–पूजक या प्रत्येक वह जो झूठ पर चलता है और झूठ को प्रेम करता है, बाहर ही पड़े रहेंगे।"

16"स्वयं मुझ यीशु ने तुम लोगों के लिये और कलीसियाओं के लिये, इन बातों की साक्षी देने को अपना स्वर्गदूत भेजा है। मैं दाऊद के परिवार का वंशज हूँ। मैं भोर का दमकता हुआ तारा हूँ।"

17आत्मा और दुल्हिन कहती है "आ!" और जो इसे सुनता है, वह भी कहे, "आ" और जो प्यासा हो वह भी आये और जो चाहे वह भी इस जीवन दायी जल के उपहार को मुक्त भावसे गृहण करे।

18मैं शपथ पूर्वक उन व्यक्तियों के लिये घोषणा कर
रहा हूँ जो इस पुस्तक में लिखे भविष्यवाणी के वचनों को
सुनते हैं: उनमें से यदि कोई भी उनमें कुछ भी और
जोड़ेगा तो इस पुस्तक में लिखे विनाश परमेश्वर उस पर
ढायेगा। 19और यदि नबियों की इस पुस्तक में लिखे
वचनों में से कोई कुछ घटायेगा तो परमेश्वर इस पुस्तक
में लिखे जीवन–वृक्ष और पवित्र नगरी में से उसका भाग
उससे छीन लेगा।

20यीशु जो इन बातों का साक्षी है, वह कहता है, "हाँ! मैं
शीघ्र ही आ रहा हूँ।"

आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

21प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे! आमीन।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html